नईदुनिया फिल्म विशेषांक १९९५

विश्व सिनेमा

1895 से 1995



साथ में उपहार ◆ गॉसिप के गलियारे ◆

मूल्य रु. ४०/-



एक छत्र राज

क्या आप जानते हैं, पपीते के लिए सारा विश्व भारत की ओर कुछ इस तरह देखता है जिस तरह पेट्रोल के लिए अरब की ओर...

अनुकूल जलवायु होने के कारण
पपीते की पैदावार करने वाले विश्व के
गिने चुने राष्ट्रों में भारत का स्थान सर्वोपरि है.
पपीते के दूध से निकाल कर शुद्ध किए हुए पदार्थ
पपेन का इस्तेमाल अनेकों उद्योगों में
किया जाता है. पपेन का यही बहु-उपयोगी स्वरुप
उसकी अन्तराष्ट्रीय मांग को दर्शाता है.
और हमें एक अवसर देता है
सिम्फनी पपेन में आपको आमंत्रित करने के लिए.
बहु-उपयोगी पपीते में लाभदायक साझेदारी के लिए ...

पपीते में लाभदायक साझेदारी-आपकी हमारी

सिम्फनी पपेन के अंतर्गत आपकी प्रति यूनिट साझेदारी
का उपयोग कंपनी के नर्मदा किनारे स्थित
फलोद्यान (500 एकड़ से अधिक) पर
पपीते के व्यावसायिक वृक्षारोपण में किया जाएगा.
पपीते की पैदावार से पपेन निकाला
एवं तत्पश्चात् शुद्ध किया जाएगा.

रु. 2,500 + 6 वर्ष = रु. 8,000

सि म्फ नी

पपेन

पपीते से पनपता
एक लाभदायक रिश्ता

सिम्फनी फार्म एंड फारेस्ट प्रा. लि.

कॉर्पोरेट कार्यालयः F-20, वात्सल्य चेम्बर, द्वितीय तल
31 स्नेह नगर मेन रोड़, इन्दौर-452 001
फोन: (0731) 462168, 468633. फैक्स: 91-0731-468622

आपकी भागीदारी - आपका लाभ

- प्रति यूनिट दर रू.2,500/-
- प्रति यूनिट भुगतान दो सुविधाजनक विकल्पों में:
- A-छः वर्ष पश्चात् एकमुश्त रू.8,000/-
- B-वार्षिक प्रतिफल के साथ कुल रु.7,500/-
- भुगतान राशि कृषि आय होने से कर-मुक्त
- लाभयुक्त राशि का भुगतान देय तिथि के चेक द्वारा
- आपके चाहने पर 1000 वर्ग फीट भूमि की प्रतिभूति प्रति यूनिट के एवज में बतौर जमानत रहेगी
- नामांकरण एवं हस्तांतरण सुविधा
- अपनी राशि कभी भी निकाल सकने की सुविधा
- योजना 20,000 यूनिट्स के विक्रय तक सीमित

द गार्जियन, मिस्टी हिल्स एवं वुडलेण्डस्
जैसी सफलतम वृक्षारोपण योजनाओं के पश्चात्
सिम्फनी फार्म एंड फॉरेस्ट प्रा. लि. द्वारा प्रवर्तित
सिम्फनी पपेन अपने आप में एक परिपूर्ण योजना है
जो आपको देती है सुनिश्चित एवं सुरक्षित लाभ.

ग्वालियर शाखाः सीनियर हाउस, गश्त का ताज़िया, लश्कर. पिन: 474 001 फोन: 328327 **जबलपुर शाखाः** 15-A मित्रा एन्क्लेव, नेपियर टाउन. पिन: 482 001 फोन: 312362
इन्दौर शाखाः 31 स्नेह नगर मेन रोड़. पिन: 452 001 फोन: 462168, 468633 **भोपाल शाखाः** E-4/269, अरेरा कॉलोनी. पिन: 462 016 फोन: 565267

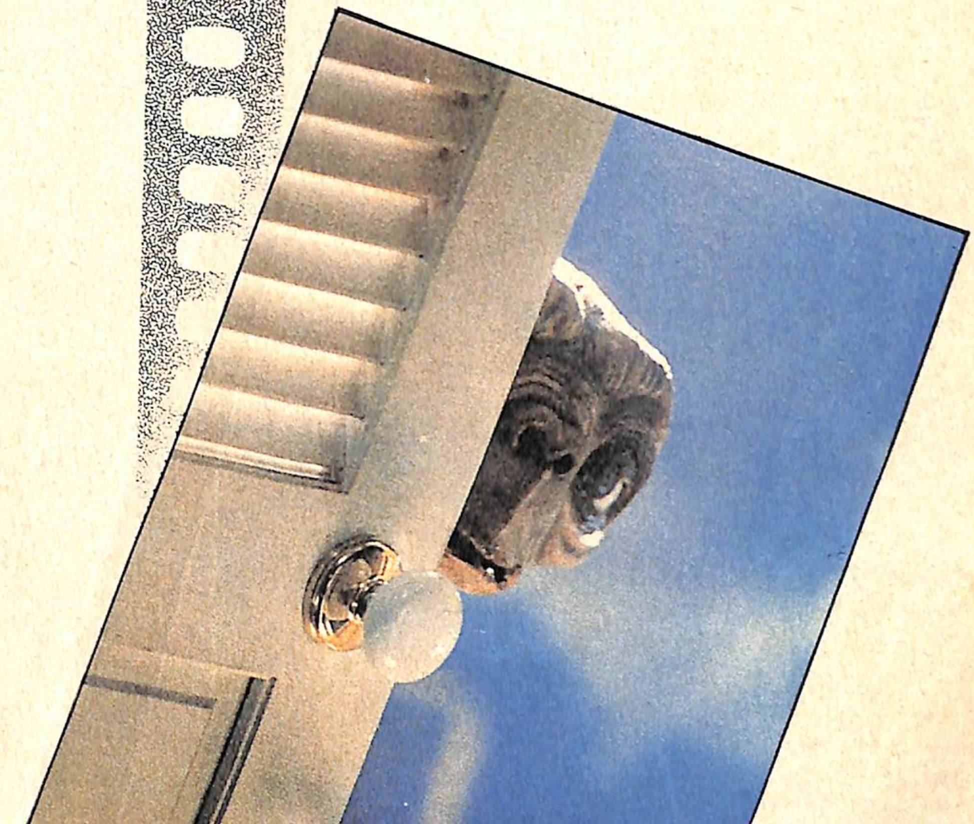
अधिक जानकारी एवं व्यावसायिक प्रतिनिधित्व के लिए कंपनी के शाखा कार्यालय अथवा प्रतिनिधि से संपर्क करें.

Equation/SFFL/010695

नईदुनिया की
सातवीं प्रस्तुति

विश्व सिनेमा
1895 से 1995

विश्व सिनेमा पर केन्द्रित फिल्म विशेषांक (१)



□ प्रधान सम्पादक
अभय छजलानी

□ सहयोगी सम्पादक
महेन्द्र सेठिया

□ सौजन्य सम्पादक
श्रीराम ताम्रकर

□ अभिकल्प
दिलीप चिंचालकर

- **मूल्य : चालीस रुपए** (साधारण संस्करण)
- **एक सौ पच्चीस रुपए** (डीलक्स संस्करण)

■ संपादकीय

विश्व सिनेमा का काल-पात्र

इस सदी की विराट देन मनोरंजन प्रधान सिनेमा ने मानवीय संवेदनाओं से अपनी यात्रा का आरंभ किया। धीरे-धीरे उसने विचार से अपना रिश्ता कायम किया और वह देश-काल की सीमाओं को पार कर जीवन के हर अनुशासन में हस्तक्षेप करने में समर्थ हो गया। इतिहास/ कला/ समाज/ राजनीति तथा भविष्य की रूपरेखाओं में सिनेमा संभावनाओं की गहराई तक गया और उनका समूचा दोहन किया। यही वजह थी कि सिनेमा की एक समानांतर दुनिया उभर कर सामने आई। उसने स्वप्न और यथार्थ के अंतर को कम किया और स्वप्नलोक की ऐसी दुनिया रच दी, जिसे देख मनुष्य अपना मन- बहलाव कर सके। यह सिनेमा का ही सामर्थ्य था कि उसने जहाँ 'व्यक्ति' को उसके सोच और संवेदना के स्तर पर झिंझोड़ा, वहीं 'समष्टि' को भी चेतना के स्तर पर बदला। यह उसकी वामन और विराट की दोहरी भूमिका थी।

मनोरंजन से 'मूल्यों' तक पहुँचने वाली सैल्युलाइड की यह दुनिया दो सिरों पर अपना वर्चस्व कायम किए रही। उसके पड़ाव के रूप में 'द ग्रेट ट्रेन रॉबरी' से 'बर्थ ऑव ए नेशन' तक की यात्रा समाहित है। विचार को प्रतिबद्धता से जोड़कर सिनेमा ने विश्व नागरिक को जिस तरह से वशीभूत किया वह अपने आप में अद्भुत तथा अद्वितीय है। दुनिया की कोई भी कला ऐसा सामर्थ्य नहीं दिखा पाई।

इतना ही नहीं मानव सभ्यता के लिए भविष्य के गर्भ में छुपी जो चुनौतियाँ और खतरे थे, उनसे वर्षों पहले उसने आगाह कर दिया। 'टावरिंग इन्फर्नो'/ 'स्टार ट्रेक' और 'बेक टू द फ्यूचर' फिल्मों में मानव जाति के भावी खतरों को समय से पूर्व कुछ इस अंदाज में प्रस्तुत किया गया था कि आगे चलकर ऐसी बातें सच प्रमाणित हुईं। यह विश्व सिनेमा के चरित्र की ऐसी विशेषता है, जिसे भारतीय सिनेमा अपने में समाविष्ट नहीं कर पाया। मूलतः भारतीय सिनेमा दर्शक के इर्दगिर्द एक काल्पनिक मनोरंजन की तलाश करता रहा, जिसका जीवन के यथार्थ से कोई रिश्ता नहीं रहा। भारतीय फिल्मों में अच्छाई और बुराई या राम और रावण के आपसी द्वंद्व तो अनेक रूपों में प्रस्तुत हुए लेकिन विश्व धरातल पर वे बौने साबित होकर रह गए।

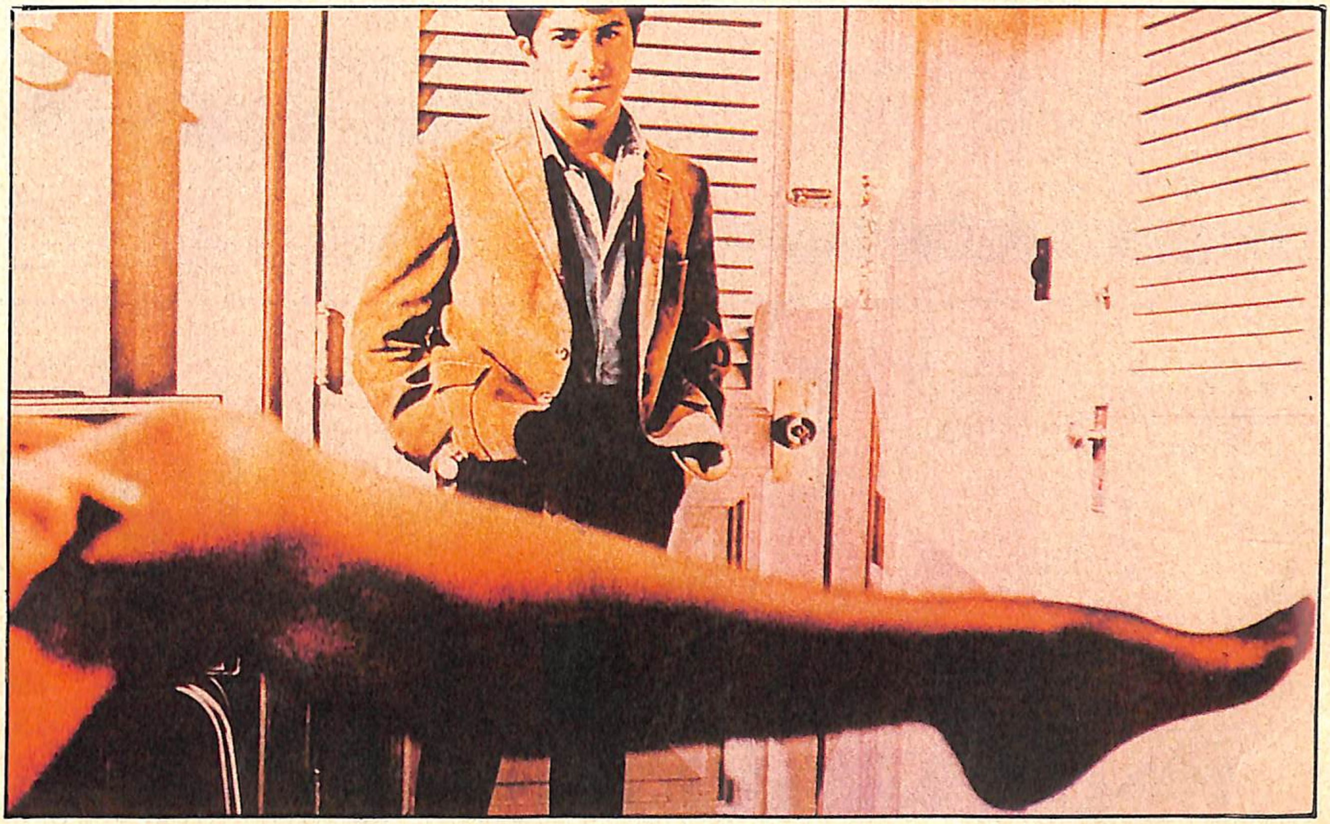
वाद और विचार से ऊपर उठकर अगर सारी दुनिया को किसी ने वैश्विक आधार दिया है, तो वह सिर्फ सिनेमा है। उसने 'ग्लोबलाइजेशन' नहीं वरन् 'युनिवर्सलाइजेशन' किया, जो किसी भी अनुशासन का कालातीत कला में बदल जाना है। आज सिनेमा की चिंता किसी एक देश या समाज की न होकर समूचे संसार की चिंता का पर्याय बन गई है। चैप्लिन/ बर्गमन/ कुरुसोवा/ तारकोवस्की/ फैलिनी/ त्रूफाँ/ गोदार्द या सत्यजीत राय किसी एक देश की संपदा नहीं हैं, बल्कि कला, संस्कृति और सभ्यता की विश्व नागरिकताएँ हैं। 'इन्फरमेशन टेक्नालॉजी' ने इन दिनों आक्रामक रुख अपनाते हुए एक भरपूर सदी की उम्र वाले सिनेमा को 'अस्तित्व के संकट' से घेर दिया है, निश्चित ही यह एक दुर्घटना है। 'टेक्नालॉजी इनोवेशन' ने सिनेमा को आज तकनीकी 'उत्पाद' का मातहत बना दिया है। बहुत संभव है आने वाले किसी दिन 'कम्प्युटराइज्ड एनिमेशन' और 'सिंथेटिक इमेज फार्मेशन' के जरिए हजारों कलाकारों/ लेखकों/ लोगों और जगहों को हाशिए में धकेल दिया जाए। वह दिन हजारों दृष्टियों और मौलिक संवेदनाओं के संहार का समय होगा।

ऐसे माहौल में जब यह बूढ़ी-सदी हाथ हिलाकर आखिरी बिदा ले रही है, तब हम ल्युमिएर- बंधुओं की सनक तथा जिद्द से जन्मे इस मायावी संसार को दस्तावेजों में बदल कर रख दें, यह एक ईमानदार कोशिश होगी। दृश्य की इस दुनिया को कुछ अक्षरों में समेट कर नहीं रखा जा सकता। यह एक ऐसा कठिन और निर्मम समय है कि इतिहास अब काल-पात्रों के जरिए ही बचाया जा सकता है। नईदुनिया का यह अंक विश्व-सिनेमा की स्मृति का एक छोटा-सा काल-पात्र है, जिसे हम आपको सौंप रहे हैं। यह महज दो सौ पन्नों का अंक भर नहीं बल्कि हमारी सामाजिक और सांस्कृतिक स्मृति का एक छोटा-सा अंग है। उम्मीद है आज जबकि रिश्ते 'यूज एंड थ्रो' की भेंट चढ़ रहे हों ऐसे में हम इस अंक को सहेज कर रखने योग्य बना सकें, यह हमारी विनम्र कोशिश है। हममें यह साहस निश्चय ही हमारे असंख्य पाठकों की अब तक मिलती रहने वाली सदाशयता से ही आया है।

अभय छजलानी

अनुक्रम

□ मुखपृष्ठ : मर्लिन मनरो

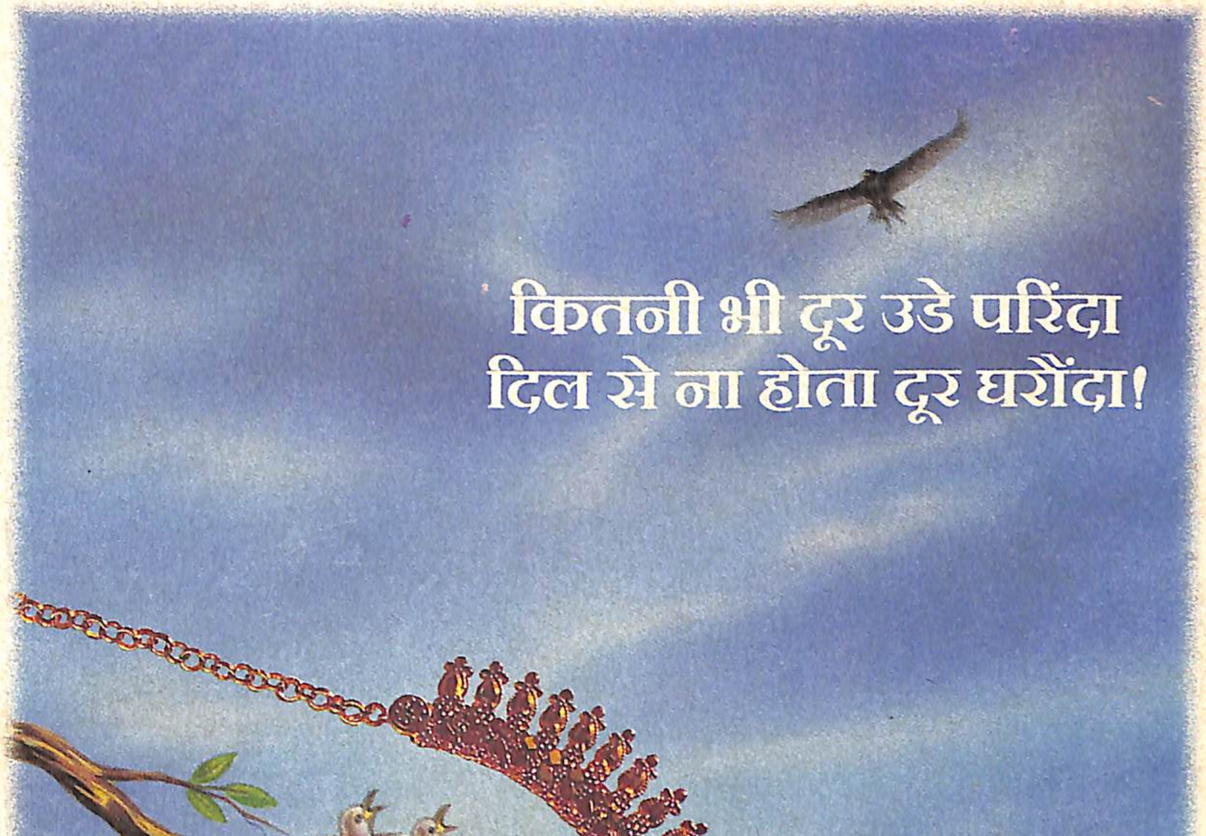


चित्र-सामग्री सौजन्य :

○ राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय (पुणे), भारतीय फिल्म निदेशालय (नई दिल्ली), चेक् दूतावास (दिल्ली), स्वीडिश राजदूतावास (दिल्ली), हंगेरियन, जनसंपर्क (दिल्ली), नईदुनिया संदर्भ, फिल्म कल्चर (इंदौर), सोवियत सिनेमा ○ किनो फिल्म्स, भारत में आयोजित अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह १९७८ से १९९५ के अवसर पर प्रसारित प्रेस मटेरियल्स एवं फोटोग्राफ्स।

शोध-कार्य, लेखन तथा प्रस्तुति :

□ मनमोहन चड्ढा, डॉ. वसंत पेंढारकर, चरणसिंह अमी, राहुल ब्रजमोहन, लोकेन्द्र चतुर्वेदी, दिलीप गुप्ते, डॉ. नीहार गीते, निर्मला भुराड़िया, श्रीराम ताम्रकर
□ व्यंग्य चित्र : देवेन्द्र शर्मा


कितनी भी दूर उडे परिंदा
दिल से ना होता दूर घरौंदा!
पारखी और सौंदर्य प्रेमी कही भी हो पर
सोने के आभूषणों की चाहत उन्हें खींच
लाती है जलगांव में. 'नयनतारा' आभूषणों
का मन मोहनेवाला प्यारा घरौंदा


The Cache
Associated Alcohols & Breweries Ltd.
is pleased to reveal its haul for the 90's.
To the cursory eye it may seem an interesting range*.
But for the initiated,
it is reason enough to keep the celebrations going.
Rejoice.
QUORUM
GOLD SEAL
ROYAL FALCON
LONDON BRIDGE
JAMES McGILL
JAMAICAN MAGIC
MATURED RUM
*Glass bottles and designer glasses.
4th floor, Silver Arc Plaza, 20/1 New Palasia, Indore.

विश्व सिनेमा
खण्ड : १

द ग्रेटेस्ट शो ऑन अर्थ

अभिव्यक्ति के सर्वाधिक शक्तिशाली माध्यम सिनेमा की जन्म-शताब्दी दुनिया के अधिकांश देशों में अपने स्तर पर मनाई जा रही है। एक सदी से अधिक समय हुआ, व्यक्ति ने कल्पना की थी कि मनुष्य की दुनिया के समानांतर परछाइयों की अपनी एक निराली दुनिया हो। उसमें मनुष्य की तरह जिंदगी जीने, संघर्ष करने, भावनाओं के ताने-बाने और रिश्तों के सरल तथा जटिल समीकरण भी हों। कभी वास्तविक जीवन परदे से झाँकता दिखाई दे, तो कभी परदे की परछाइयों के बिम्ब-प्रतिबिम्ब समाज में मौजूद मिलें। मनुष्य इस दुनिया को रचने में सफल रहा। आज टी.वी. और सैटेलाइट चैनलों के विस्तार के साथ सिनेमा की व्यापकता तथा प्रभाव में कई गुना वृद्धि हुई है। वह पूर्व में समाज का एक अंग था, आज हर व्यक्ति के जीवन का आवश्यक अंग बन गया है।

विश्व सिनेमा कल, आज और कल

श्रीराम ताम्रकर

विश्व में सिनेमा का आविष्कार एक चमत्कार के रूप में हुआ। व्यक्ति, समय/ स्थान और घटना का जहाँ साक्षी था, वही सब कुछ हूबहू उसने अपने सामने परदे पर चलते-फिरते दौड़ते देखा। वह इस जादू से ठगा-सा होकर रह गया। दुनिया भर के दर्शकों ने इसे जादुई-चमत्कार की तरह अपनाया। १९०३ में जब फिल्म 'द ग्रेट ट्रेन रॉबरी' बनी, तो इस माध्यम का उपयोग एक विचार के रूप में करने की इच्छा बलवती हुई। फिल्मकार डी.डब्ल्यू. ग्रिफिथ ने १९१६ में 'बर्थ ऑव ए नेशन' फिल्म बनाकर इस विचार को आकार दिया।

अपने शैशवकाल में सिनेमा गूँगा था। एक, दो और तीन रीलों की छोटी-छोटी फिल्में चटपटे किस्से/ कहानियों और रोचक प्रसंगों पर आधारित होकर दर्शकों का मनोरंजन करती थीं। फ्रांस में मेलिए प्रयत्नशील थे, तो अमेरिका में ग्रिफिथ/ सिसिल बी.डी.मिल और चार्ली चैप्लिन अपने सिनेमा को आकार देने में संलग्न थे। इधर भारत में दादा फालके ने 'लाइफ ऑव क्राइस्ट' (१९१०) फिल्म देखकर 'राजा हरिश्चंद्र' का विचार अपने मानस में गढ़ लिया था। इसके बाद प्रथम विश्व युद्ध का शंखनाद हुआ। फीचर फिल्मों का बहाव न्यूजरील और डाक्यूमेंटरी की ओर मुड़ गया। युद्ध के बादल छँटने पर फिर पौराणिक/ धार्मिक/ ऐतिहासिक चरित्रों की विश्व सिनेमा में शुरूआत हो गई। इसके पीछे यह भावना थी कि दर्शक के परिचित चरित्र परदे पर आएँगे, तो बगैर संवादों के भी दर्शकों को समझने में आसानी होगी। १९१७ में सोवियत संघ में क्रांति हुई और वहाँ सिनेमा को सरकारी नियंत्रण में ले लिया गया। सर्गेई आइसंस्टाइन और पुडोवकिन जैसे आरंभिक फिल्मकारों ने अपने स्तर पर सिनेमा की भाषा/ व्याकरण और मुहावरे गढ़े, जो आगे चलकर विश्व सिनेमा की धरोहर बन गए। आइसंस्टाइन की फिल्म 'द बैटलशिप पोटेमकिन' (१९२५) ने पश्चिमी फिल्मकारों को हतप्रभ कर दिया। इसलिए कि सिनेमा की भाषा का उन पर जबरदस्त प्रभाव हुआ था। चार्ली चैप्लिन 'गोल्ड रश' के माध्यम से आदमी की भूख/ करुणा और पीड़ा को दर्शा रहे थे।

द्वितीय विश्वयुद्ध में योरप के अधिकांश देशों ने अपने नागरिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए सिनेमा का उपयोग किया। इसमें हिटलर और जर्मनी अव्वल रहे। युद्ध के बाद बर्बाद हुए योरपीय देशों की फिल्मों में युद्ध के बाद के व्यापक प्रभाव १९६५ तक चित्रित किए जाते रहे। विशेषकर साम्यवादी देशों ने सिनेमा के मुहावरों का उपयोग नए समाज की रचना करने और संकल्प शक्ति विकसित करने में किया। ऐसा करते समय वे सत्ता के साथ हो लिए और लाल झंडे, लाल चौक में सैनिकों की कदमताल या फिर नेताओं के भाषण के दृश्य नियमित रूप से देने लगे। इसे 'प्रोपेगंडा' कहा गया और साम्यवादी देशों की फिल्मों को प्रदर्शन हेतु विश्व धरातल नसीब नहीं हुआ। अपवाद स्वरूप कुछ सोवियत फिल्मकार ऐसे हुए- आंद्रेई तारकोवस्की- जिन्हें अपने ही देश में निर्वासित जीवन जीने को बाध्य होना पड़ा। १९७० के बाद जब सोवियत सिनेमा में उदारीकरण की हवा बहने लगी, तो उम्मीद बँधी थी कि मानवीय मूल्यों पर आधारित फिल्में बनने लगेंगी। लेकिन अफसोस कि यह महाबली देश टूटकर बिखर गया और आज सोवियत सिनेमा जैसा सिनेमा इतिहास के पन्नों में सिमट कर



द ग्रेट ट्रेन रॉबरी

रह गया है। इतना ही नहीं योरप के अन्य साम्यवादी देशों- पोलैंड/ हंगरी/ युगोस्लाविया/ चेकोस्लोवाकिया/ बल्गेरिया/ का सिनेमा भी बिखर गया है। एक समय (१९५० से १९७०) ऐसा था जब विश्व के फिल्म समारोहों में इन देशों की फिल्मों की प्रतीक्षा की जाती थी। आन्द्रे वाजदा/ रोमन पोलांस्की/ जिरी मेंजल/ मिकलोस जेन्सो/ वेरा चितिलोवा जैसे फिल्मकार नक्षत्र बनकर विश्व सिनेमा के आकाश में जगमगाने लगे थे। उधर इटली के फेडरिको फैलिनी और अंतोनियोनी की फिल्में धूम मचा रही थीं।

यदि हॉलीवुड की फिल्मों में सेक्स/ भव्यता/ स्टार कास्ट/ बिग-बजट के तत्व मौजूद थे, तो योरप के सिनेमा में विचार थे। मानवीय मूल्यों की रक्षा के प्रयत्न थे। युद्ध के प्रति विरोध और शांति के प्रति लगाव था।

फ्रांस ने अपने को सदैव योरप और हॉलीवुड के प्रभाव से अछूता रखा। वहाँ के परंपरागत सिनेमा को नई विचारधारा के निर्देशकों रॉबर्ट ब्रेसाँ/ ज्याँ लुक गोदार्द/ त्रूफाँ ने फ्रांस की सिनेमा की धारा बदल दी और दुनिया के फिल्मकारों को बताया कि सिनेमा ऐसा भी होता है। जब इटली में विटोरियो द सीका की नवयथार्थवादी फिल्म बायसिकल थीव्ज ने नई जमीन तोड़ी, तो फ्रांस के इन युवा फिल्मकारों ने एक नई लहर के जरिए सिनेमाई सागर में तूफान ला दिया। आज स्थिति एकदम विपरीत है। फिल्म निर्माण की लागत इतनी बढ़ गई है कि योरप का कोई भी देश अपने बलबूते पर फिल्म निर्माण का विचार नहीं ला सकता। इसलिए तमाम राजनीतिक एवं भौगोलिक सीमाएँ टूट कर अब इटली, फ्रांस, जर्मन, स्वीडन या फिर ऐसे ही चार-पांच देश जुड़कर एक साथ फिल्म निर्माण करने लगे हैं। स्वाभाविक है कि जब देशों की संख्या अधिक होगी, तो फिल्म निर्माण पर दबाव बढ़ने लगेंगे। योरप के सिनेमा ने इन दिनों लगभग अपनी पहचान खो दी है। विश्व के फिल्म समारोहों में इन देशों की फिल्में प्रविष्टि के रूप में आती जरूर हैं लेकिन वह पहले जैसी बात अब नहीं रही। न वे महान फिल्मकार रहे और न वे महान फिल्में, जिन्हें 'कालजयी' श्रेणी में रखा जाए अथवा जिन्हें बार-बार देखकर उनका अध्ययन किया जा सके।

योरप के सिनेमा की यह 'ग्रेट-ट्रेजेडी' है। इसके मूल में अमेरिकी सिनेमा का फैलता बाजार है। हल्की-फुल्की चलताऊ किस्म की सेक्स कॉमेडी या ट्रेजेडी फिल्में पूरे विश्व में जबरन प्रचारित-प्रसारित की जा रही हैं। पूँजीवादी सभ्यता के जरिए फिल्मों को भी 'उत्पाद' बनाकर भयावह तथा लुभावने प्रचार-प्रसार द्वारा योरप, भारत, तीसरी दुनिया के देशों में बेचा जा रहा है। नतीजे में गंभीर सिनेमा और मानव मूल्यों का सिनेमा आहत हुआ है। स्टीवन स्पीलबर्ग की चमत्कारिक डायनासोर पर आधारित फिल्म 'जुरासिक पार्क' ने संपूर्ण विश्व के देशों में सर्वाधिक व्यापार कर अपनी सफलता के नगाड़े बजाए हैं। जुरासिक पार्क महज एक चमत्कारिक फिल्म है। स्पीलबर्ग के फिल्मकार की खरी कसौटी उनकी श्वेत-श्याम फिल्म 'शिंडलर्स लिस्ट' है, जिसके लिए वे सदैव श्रद्धा से याद किए जाते रहेंगे। लेकिन जमाना और तकाजा 'पल्प फिक्शन/ बेसिक इंस्टिंक्ट जैसी फिल्मों का है। भारत के फिल्म बाजार पर भी हॉलीवुड की ब्लॉक बस्टर तथा लोकप्रिय फिल्मों का दबाव पिछले एक साल से बढ़ता जा रहा है। ये फिल्में यूनिवर्सल सोल्जर/ स्पीड/ अलादीन/ जुरासिक पार्क- हिंदी में डब होकर भारतीय फिल्मों का धंधा चौपट करने में लगी हैं। लातिनी अमेरिकी और अफ्रीकी देशों के फिल्म बाजार में नहीं उभरने का एकमात्र कारण हॉलीवुड की कचरा फिल्में हैं, जिन्होंने दर्शकों को लबालब सेक्स/ वायलेंस की लालीपॉप से उलझा रखा है।

एशिया महाद्वीप के सिनेमा की दशा भी चमकती हुई नहीं है। भारत सिर्फ फिल्म निर्माण में संख्या की दृष्टि से अव्वल है। यहाँ का हिंदी सिनेमा पिछले पंद्रह बरसों से सिर्फ दोहराव का सिनेमा है। फिजूल की हिंसा/ रोमांस/ मारधाड़ और अण्डरवर्ल्ड को ग्लेमराइज करने का सिनेमा मुम्बई के कारखानों से साबुन-टिकिया की तरह बाहर आ रहा है। समांतर सिनेमा आंदोलन एक दर्जन फिल्मकार, दो दर्जन कलाकार और चार दर्जन फिल्मों की फसल के बाद बंजर हो गया है। क्षेत्रीय सिनेमा से जरूर आशा की किरणें कभी-कभार जगमगाती रहती हैं। लेकिन सत्यजीत राय/ ऋत्विक घटक/मृणाल सेन/ जी. अरविंदन जैसे महारथियों की पूरी पीढ़ी खामोश होकर रह गई है। पाकिस्तान/ बांग्लादेश/ नेपाल/ मलेशिया और श्रीलंका का सिनेमा भारत की परछाई बनकर अपनी सार्थकता खो चुका है। ऑस्ट्रेलिया के फिल्मकार पॉल काक्स स्वयं अमेरिकी हमले से आहत हैं। चीन के सिनेमा ने जरूर अपना चेहरा भीड़ में सबसे अलग-थलग रखा है। इसकी पृष्ठ-भूमि में वहाँ बंद दरवाजों का साम्यवाद है। शोषण/ अन्याय/ अत्याचार और मानवीय रिश्तों का सुंदर चित्रण चीन के कुछ निर्देशक अपनी सीमाओं में कर रहे हैं। उत्तरी-दक्षिणी कोरिया का सिनेमा अपने प्राकृतिक सौंदर्य के साथ सेक्स की मिलावट वाले कथानकों पर अधिक केंद्रित है। जापान का नाम अकीरा कुरुसोवा/ ओशिमा/ ओजू के कारण विश्व में जाना जाता है। पीरियड फिल्म/ समुराई फिल्म और विशिष्ट शैली की जापानी फिल्में वहाँ के दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करने में सफल हैं। जापानी-चीनी फिल्मों के विश्वव्यापी प्रदर्शन यदाकदा ही हो पाते हैं।

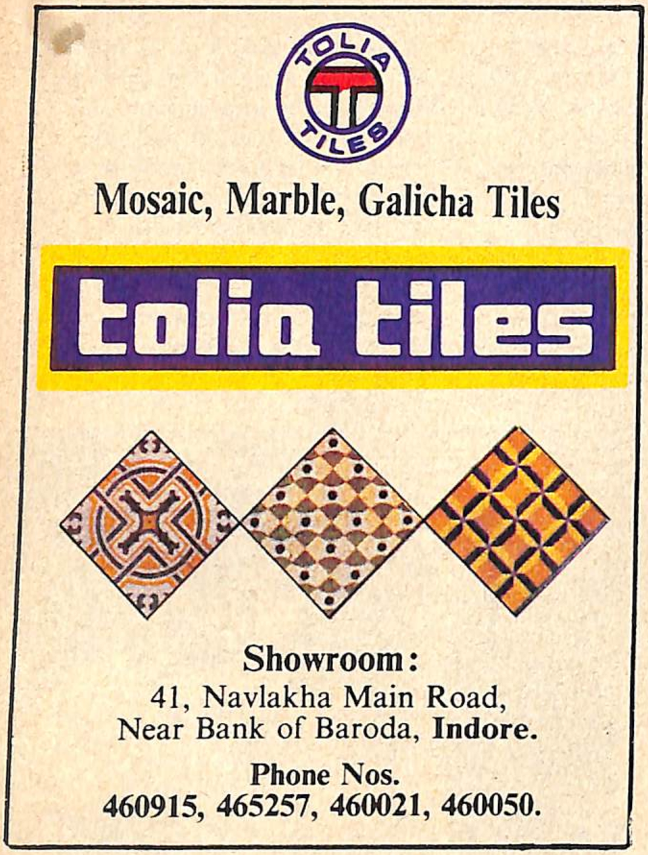
विश्व सिनेमा का स्वर्ण-युग १९४० से १९७० तक रहा है जब महान पौराणिक/ महान ऐतिहासिक/ महान युद्ध और महान रोमांटिक फिल्में दुनिया के हर देश में बनी और क्लॉसिक का दर्जा पा गई। इसी दौर में फिल्म माध्यम की भाषा/ व्याकरण/ मुहावरे गढ़े गए। १९७० के बाद तो फिल्मों और फिल्मकारों ने अपनी तमाम सीमाएँ लाँघकर 'बंधन-मुक्त' फिल्मों का निर्माण कर फिल्म की चौखट को छिन्न-भिन्न कर दिया है।

आज पूरे विश्व का सिनेमा संकट के दौर से गुजर रहा है। फिल्म निर्माण का बढ़ता बजट बाजार से अपनी लागत वापस चाहता है, जो संभव नहीं रहा। सैटेलाइट चैनल/ केबल पे-चैनल और टीवी के विस्तार ने



उमा थुर्मन : पल्प फिक्शन

सिनेमा को व्यापक जनाधार तो दिया, लेकिन सिनेमा को सस्ता बना दिया। अधिकांश सिनेमाघर टूट गए या टूट रहे हैं। दर्शक की मानसिकता घर की आराम कुर्सी पर बैठकर हाथ में रिमोट कंट्रोल लेकर फिल्म से खेलने और जी बहलाने की हो गई है। वह सिनेमाघर नहीं जाना चाहता। अच्छे फिल्मकार टीवी की ओर मुड़ गए। ऐसी दशा में सिनेमा का संकट और गहरा गया है। हॉलीवुड की तमाम बड़ी कंपनियाँ और स्टुडियो नदारद हो गए हैं। कम्प्यूटर क्रांति से संभव है भविष्य में फिल्में स्टुडियो के बजाए छोटे कमरों में बनने लगें, जहाँ कलाकार मौजूद नहीं होंगे, सिर्फ उनके नाम और चेहरे के उपयोग के अधिकार-पत्र रहेंगे। फिल्मों ने ८ एमएम से ७० एमएम तक अपना सफर तय किया है। अब वे काम्पेक्ट-डिस्क में आने लगेंगी। मेज की एक ड्रावर में पाँच सौ फिल्मों की डिस्क आसानी से रखी जा सकेंगी। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में जो क्रांति हुई है, उसने सिने-कला के लिए अनेक खतरे और चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। मनुष्य द्वारा रची गई परछाइयों की इस सृष्टि का भविष्य रोशनी में होते हुए भी अँधेरे के साथ है। ■


TOLIA TILES
Mosaic, Marble, Galicha Tiles
tolia tiles
Showroom:
41, Navlakha Main Road,
Near Bank of Baroda, Indore.
Phone Nos.
460915, 465257, 460021, 460050.


सर्वशक्तिमान
जे.के.सुपर
43 ग्रेड सीमेंट
विश्वसनीय जे.के. सीमेंट
पेशेवरों की पसंद


The Handy Way To Electricity
Vinay®
Electricals Accessories
ISI
cozy
Gaurav Agencies
36, Siyaganj (Gajendra Bhawan, First Floor), INDORE ■ Phone : 22460


RITZ
AQUAPURE
THE HOUSE of KEDIA
Isi Mein Dum Hai
Baba Sehgal

हॉलीवुड : दैट इज एंटरटेनमेंट

विश्व सिनेमा

खण्ड : दो



क्लार्क गेबल एण्ड
विवियन ली
फिल्म : गॉन विद द विंड

हॉलीवुड विश्व सिनेमा का आरम्भ से प्रेरणा-स्रोत रहा है और भविष्य में भी बना रहेगा। यदि अमेरिका के लिए यह राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक धरोहर है, तो समूचे विश्व में फिल्म संस्कृति के विकास में हॉलीवुड की महिमा अपरम्पार है। शिखर फिल्मकारों की सृजन स्थली हॉलीवुड ने सिनेमा को बीसवीं सदी की सर्वश्रेष्ठ कला के रूप में स्थापित किया है। दुनियाभर के फिल्मकारों ने यहीं से प्रेरणा लेकर अपनी फिल्मों के मुहावरे गढ़े हैं। बड़ी कम्पनियाँ, बड़े स्टुडियो, स्टार सिस्टम, क्लॉसिक फिल्में और सितारों के रोमांस की गरमाहट से सदैव जगमग रहा है हॉलीवुड!

विश्व सिनेमा का हिमालय हॉलीवुड

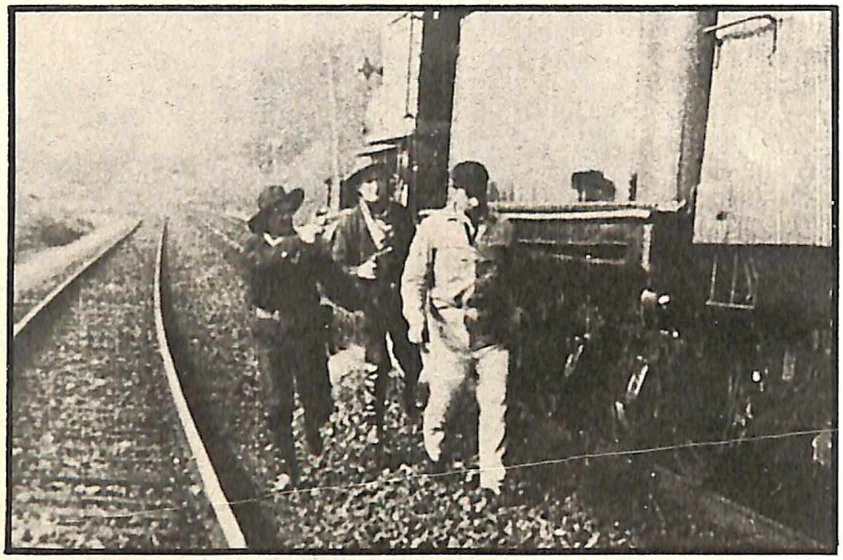
● डॉ. वसंत पेंढारकर

हॉलीवुड का नाम लेते ही आँखों के सामने आती है ग्लेमर-चमक-दमक से भरपूर स्वप्न नगरी। वहाँ के विराट स्टुडियो। बड़ी कम्पनियाँ। आसमान में भी नहीं होंगे इतने सितारे। कद से बड़े अभिनेता/अभिनेत्रियाँ।स्टार सिस्टम। सर्वशक्तिमान निर्देशक। करोड़ों डॉलर्स का कारोबार। हजारों फिल्में। और इन फिल्मों की अरबों परछाइयाँ एक सदी से दर्शकों की आँखों में उतरकर सीधे मन को छूती रही हैं। गूँगे बिम्ब जो फिल्मों के विकास के साथ बोलने भी लगे। चलने-फिरने भी लगे। श्वेत-श्याम बिम्ब जो प्रौद्योगिकी की पायदानों पर चढ़कर रंगीन हो गए। विराट पर्दों पर सजते रहे। आवाज के साथ दृश्य-श्रव्य आनंद की अनुभूति देते रहे। हॉलीवुड का विकास होता गया। बहुत कुछ बदलता रहा। किन्तु ये बिम्ब नहीं बदले हैं। टेलीविजन क्रांति से ये बिम्ब छोटे पर्दे पर भी अवतरित होने लगे हैं। वीडियो क्रांति के बाद तो ठेठ घर में घुस आए हैं। बिम्ब वही हैं और दर्शक है कि दुनियाभर में प्रतिदिन इन बिम्बों को ग्रहण करता रहा है।

हॉलीवुड क्या है? अमेरिका के लॉस एंजेलिस के एक कोने में छोटी पहाड़ियों पर बसी, खुशनुमा आबोहवा की, ढेर सारी सूरज की रोशनी में नहाती स्वप्न सृष्टि। पहले यह फिल्म नगरी हॉलीवुड लैंड से जानी जाती रही (ठेठ १८९२ से)। लेकिन १९४३ से हॉलीवुड रह गई है। डी.डब्ल्यू. ग्रिफिथ १९१० में हॉलीवुड आ गए। सेसिल बी. डिमाइल ने १९१३ में यहाँ आकर फिल्मों का निर्माण शुरू किया। ग्रिफिथ ने १९१५ में द बर्थ ऑव ए नेशन बनाई। यहीं से हॉलीवुड की पहचान बन गई। अमेरिका के शेष भाग से, योरप से, दुनिया भर से फिल्मों से संबंधित सभी क्षेत्रों से रिश्ता रखने वाले हॉलीवुड की ओर आते रहे। और हॉलीवुड बढ़ता गया। छोटी-छोटी कम्पनियों की जोड़तोड़ से बड़ी कम्पनियाँ बनीं। विराट स्टुडियो स्थापित हो गए। बड़े पैमाने पर बड़ी फिल्में बनने लगीं। खूब बनने लगीं। सारी दुनिया में देखी जाने लगीं। दर्शक बढ़े। सिनेमागृह बने। खूब धन बॉक्स ऑफिस पर बरसने लगा। फिल्मों में व्यावसायिक तत्व हावी होते गए। फिल्मों की संख्या के साथ गुणात्मकता भी आने लगी। सिनेमा निर्माण के हर पहलू में सुधार आया। फिल्में देखना दर्शकों की आदत बन गई। सिनेमा एक कला के रूप में विकसित हुआ। व्यावसायिकता से घिरी फिल्में कलात्मकता की कसौटियों पर परखी जाती रहीं। श्रेष्ठ फिल्में पुरस्कृत होने लगीं। और पुरस्कृत फिल्में दुनियाभर में व्यापार करने लगीं।

हॉलीवुड फिल्म निर्माण में दुनिया की राजधानी रहा है। समूचे विश्व की आँखें (एवं कान भी!) हॉलीवुड की ओर लगी रहीं। स्टुडियो सर्वशक्तिमान हुए। स्टार सिस्टम पनपा। सितारों में भी ईर्ष्या पनपने लगी। स्कैंडल्स पनपते रहे। हॉलीवुड का गॉसिप का बाजार भी गर्म रहा। फिल्मी पत्र-पत्रिकाओं ने सितारों की बातें घर-घर में फैला दीं। दुनिया में दो विश्व युद्ध हो गए। हॉलीवुड लगभग अछूता रहकर सपनों का निर्माण करता रहा। तीस के दशक से ही फिल्मों में विविधता, श्रेष्ठता आ गई थी। नई तकनीक विकसित हुई तो फिल्मों का प्रभाव क्षेत्र बढ़ा। टेलीविजन आया तो पहले हॉलीवुड लड़खड़ाया। चुनौती का प्रत्युत्तर देने की प्रक्रिया में हॉलीवुड और निखरकर खड़ा हुआ। बड़ी तथा भव्य फिल्मों का ब्लॉक बस्टर युग आया। बड़ा पर्दा और बड़ा हो गया। सिनेमा स्कोप से लेकर सिनेरामा और ठेठ सर्करामा तक। सिक्स ट्रैक स्टीरियोफोनिक साउण्ड सिस्टम तक। फिल्मों का प्रदर्शन इतना गुणात्मक हो गया कि दर्शक फिर सिनेमागृहों की ओर लौट आए। अब, विशाल पर्दे पर ऐसा कुछ आने लगा, जिसका आनंद घर में बैठे ठाले छोटे पर्दे पर नहीं आ सकता था।

नए टैलेन्ट, नई कल्पनाएँ लिए नए निर्देशक/निर्माता/संगठन आए। नई आकांक्षाएँ/नई अपेक्षाएँ, नए सपने आए। युवा, उत्साही, महत्वाकांक्षी, अभिनेता और अभिनेत्रियाँ भी आईं। फिल्मों की विषयवस्तु में, प्रस्तुति में नयापन आया। हॉलीवुड इन सभी को समेटकर परिष्कृत होता रहा। व्यावसायिक संतुलन बिगड़े, परिवर्तित हुए तो स्टुडियोज की शक्ति सीमित हो गई। स्टार सिस्टम बिखर गया। स्वयंभू निर्माता-निर्देशकों ने फिल्मों का रंग-ढंग बदल दिया था, किन्तु हॉलीवुड फिल्में बनाता ही रहा। टेलीविजन एवं सिनेमा सहअस्तित्व की ओर, एक-दूसरे के पूरक बन गए। हॉलीवुड में सत्तर के दशक में प्रारंभ में थोड़ी मायूसी रही। दशक के उत्तरार्ध में सारी मायूसी छूँट गई। दुनिया भी अवकाशयुग (स्पेस एज) में प्रवेश कर चुकी थी। अस्सी के दशक में हॉलीवुड में ऐसा नवजीवन आ गया, ऐसी बहार आ गई कि हॉलीवुड का अतीत का गौरव लौट आया। फिल्म निर्माण में, दुनिया में अग्रसर रहने में हॉलीवुड पर वैसे आँच तो कभी नहीं आई, किन्तु



द ग्रेट ट्रेन रॉबरी (१९०३)

जीन हार्लो



बॉक्स ऑफिस पर मंदी रही थी। बस स्टारवार्स (१९७७) के साथ वह धुँध छँट गई। अस्सी के दशक से लेकर नब्बे के दशक के मध्यांतर तक हॉलीवुड की फिल्मों की बॉक्स ऑफिस पर ऐसी धूम मची हुई है कि हर साल पुराने कीर्तिमान टूट रहे हैं और नए कीर्तिमान रचे जा रहे हैं।

कम्प्यूटर क्रांति के फलस्वरूप आजकल हॉलीवुड की फिल्मों में भी जो क्रांति आ रही है, उसमें पर्दे पर ऐसा कुछ आने लगा है जो अब तक अकल्पनीय था। जुरासिक पार्क (१९९३) में कम्प्यूटर की सहायता से डायनोसोर का झुण्ड दौड़ा था, किन्तु फारेस्ट गम्प (१९९४) में तो टाइम ट्रैवल सम्भव कर दिखाया है। पर्दे पर फिल्म का नायक प्रेसीडेन्ट केनैडी से हाथ मिलाकर वार्तालाप कर रहा है। अहो, आश्चर्यम्! ...हॉलीवुड में अब ऐसा हो रहा है, जो अद्भुत है। हॉलीवुड की फिल्मों में ऐसे आयाम जुड़ते ही रहेंगे जो हॉलीवुड को अमरत्व प्रदान करने वाले सिद्ध होंगे। हॉलीवुड का प्रभाव अब तक दुनिया भर की फिल्मों पर पड़ता रहा है। अभिनेता/ अभिनेत्रियाँ/ निर्देशकों पर पड़ता रहा। अब हॉलीवुड का प्रभाव भारत जैसे देश पर जबर्दस्त पड़ने लगा है। जुरासिक पार्क के हिन्दी संस्करण ने बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाई और लगभग छह सौ फिल्में हिन्दी में (या अन्य भारतीय भाषाओं में भी) डब होकर आ रही हैं। कथानक में विविधता, तकनीकी कुशलता और श्रेष्ठ स्तर की प्रस्तुति के साथ आने वाली ये फिल्में बॉलीवुड में हलचल मचा देंगी। खैर हॉलीवुड की इस चुनौती से भारत में फिल्म निर्माण प्रक्रिया में अनेक परिवर्तन आते हैं, तो वह हॉलीवुड की भारत को देन होगी।

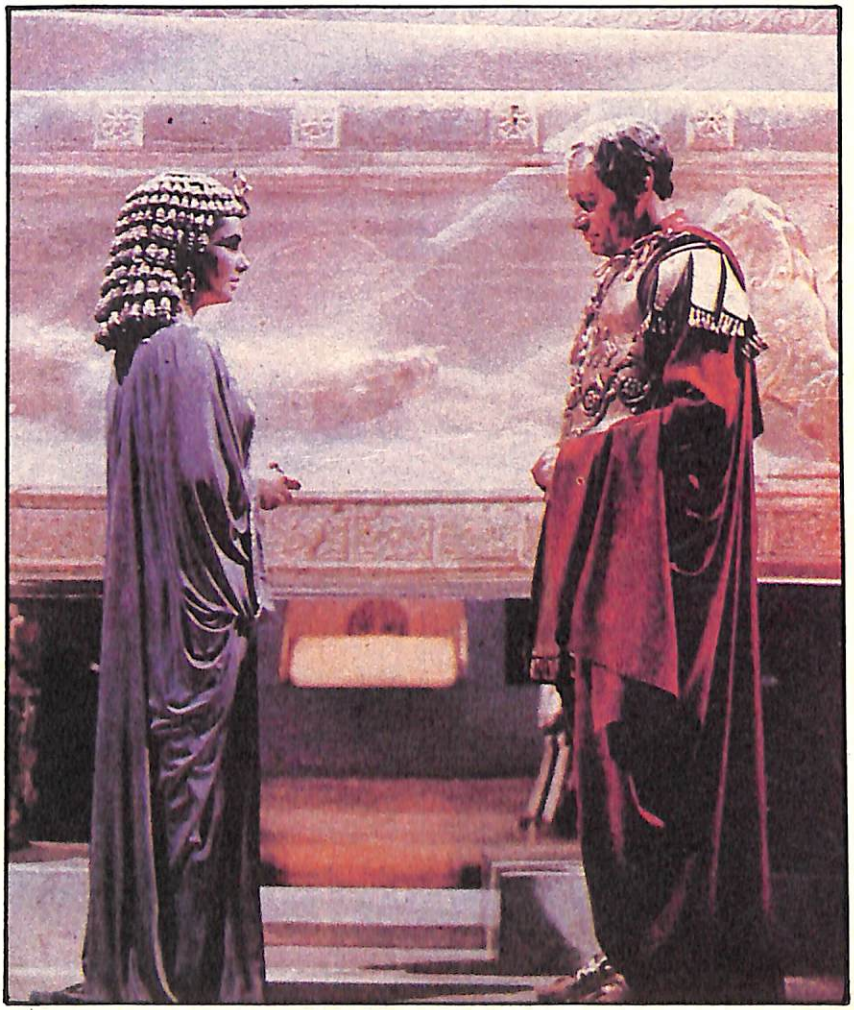
हॉलीवुड ऐसे ही प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से दुनियाभर को खूब देता रहा है। विश्व सिनेमा को हॉलीवुड की देन अपरंपार है। इस शताब्दी में सिनेमा के विश्वपटल पर अपनी छवि/अपना नाम/ अपना काम/ अपनी छाप अंकित करने की आकांक्षाएँ रखने वाले हर कलाकार/ लेखक/ तंत्रज्ञ ने हॉलीवुड से प्रेरणा ली है। हॉलीवुड से कुछ सीखा है। या फिर सीधे हॉलीवुड के विकास में योगदान दिया है। फिल्मों को बीसवीं शताब्दी की सर्वश्रेष्ठ कला के रूप में प्रस्थापित करने में भी हॉलीवुड का योगदान सर्वाधिक है। हॉलीवुड एक पावन कला क्षेत्र के रूप में भी रहा है-और पतित, विशुद्ध पेशेवर, कठोर व्यावसायिक प्रतियोगिता एवं व्यापार क्षेत्र के रूप में भी देखा जाता रहा है। हॉलीवुड में अनगिनत खराब, घटिया, स्तरविहीन फिल्में भी बनी हैं, किन्तु अनगिनत श्रेष्ठ, कालजयी, मजेदार, सामाजिक दस्तावेज कही जाने योग्य फिल्में भी बनी हैं। आज, हॉलीवुड की बनी श्रेष्ठ फिल्में भी इतनी हैं कि यदि कोई जीवनभर केवल हॉलीवुड की बनी अच्छी फिल्में देखना चाहे तो भी ऐसी फिल्में जीवनभर कम नहीं होंगी। और क्या चाहिए?

नई शताब्दी की दस्तक हॉलीवुड पर भी स्पष्ट है। हॉलीवुड एक विभिन्न संस्कृतियों का मेल्टिंग पॉट बन गया है। ब्लैक सिनेमा की पृथक पहचान स्थापित हो गई है। महिला-निर्देशिकाएँ फिल्मों में अभी तक अछूते पहलू ला रही हैं। निर्माता-निर्देशक-अभिनेता अब त्रिदेव बन गए हैं। फिल्मों में ताजगी बनी हुई है। पुराना संस्थागत ढाँचा चरमरा गया है। नया व्यक्तिप्रधान ढाँचा लचीला है। नई ऊर्जा से ओतप्रोत है। हॉलीवुड की फिल्मों की हिंसा/यौनाचार शेष विश्व की फिल्मों में हावी हो रही है। किन्तु हॉलीवुड में इसके गौरवान्विकरण पर प्रश्नचिन्ह भी लग रहे हैं। विशुद्ध, पारिवारिक, मनोरंजक फिल्मों का निर्माण अविरत चल रहा है।

हॉलीवुड अभी भी विश्व सिनेमा को प्रभावित किए हुए है। परदे पर आने वाले कुछ बिम्ब बदल भी रहे हैं तो क्या? सभी सामाजिक संस्थाएँ बदलाव/परिवर्तन की प्रक्रिया में गुजर रही हैं। हॉलीवुड भी ढाँचे में बदला है। लेकिन प्रकारान्तर से तो हॉलीवुड वही है। विश्व सिनेमा में हॉलीवुड का योगदान महत्वपूर्ण बना हुआ है। जीन हार्लो के स्थान पर गोल्डी हॉन आ रही है। क्लार्क गेबल के स्थान पर माइकेल डगलस आ रहा है। विजार्ड आव ओज से लेकर मास्क तक फन्तासी वही है। स्मार्ट मनी से लेकर द अनटचेबल्स तक बंदूक की नली से धुआँ वैसा ही है। डेस्टिनेशन मून से लेकर यात्राएँ जुरासिक पार्क हो रही हैं। ग्रेटा गार्बो का स्थान शेरोन स्टोन ले रही हैं। एरॉल फ़िलन की तलवारबाजी के स्थान पर हैरिसन फोर्ड के चाबुक के करिश्मे आ गए हैं। हॉलीवुड की देन में कहीं कोई कमी नहीं आई है। द ग्रेटेस्ट शो ऑन अर्थ बाकायदा चल रहा है।

हॉलीवुड विश्व सिनेमा का प्रेरणास्रोत रहा है-भविष्य में भी रहेगा। और विश्व सिनेमा पर उसका प्रभाव बना रहेगा। भारत के फिल्मकार सत्यजीत रॉय ने भी हॉलीवुड के ऋण को माना है। यह ऋण मनोरंजक, आल्हादकारी, आनंददायी ऋण है। अमेरिका ने लॉस एंजेलिस की पहाड़ियों पर स्थित हॉलीवुड के नामपट्ट को (पचास फुट ऊँचे हॉलीवुड के नौ अक्षर) अमेरिका की ऐतिहासिक सांस्कृतिक विरासत घोषित किया है। लेकिन हॉलीवुड तो विश्व सिनेमा की सारी दुनिया की फिल्म प्रेमियों की विरासत है। जब तक धरती पर सिनेमा रहेगा, तब तक हॉलीवुड अमर रहेगा। ■

क्लियोपैट्रा : एलिजाबेथ टेलर



फिल्म निर्माण के कारखाने कम्पनियाँ स्टुडियो

कम्पनी वह बैनर है, जिसका नाम सुनते ही दर्शक के पाँव सिनेमाघर की ओर चल पड़ते हैं। हॉलीवुड की फिल्म कम्पनियों और स्टुडियोज की धाक पूरे संसार में कुछ इस तरह फैली कि परदे पर 'शेर की दहाड़' सुनते ही दर्शक तालियाँ बजाकर स्वागत करने लगते थे। इन कम्पनियों और स्टुडियोज ने एक इतिहास रचकर ऐसी कालजयी फिल्में प्रस्तुत की हैं, जो सदियों तक मनुष्य का मनोरंजन करते हुए मार्गदर्शन करती रहेंगी।



कम्पनियों के प्रतीक चिन्ह

थामस एडिसन, लुमिएर बंधु, जॉर्ज मोलिस किसी को भी यह कल्पना नहीं थी कि फिल्म उद्योग एक दिन इतना विराट हो जाएगा। कुछ तो यही मानते रहे कि फिल्म प्रदर्शन फेरीवालों का काम बना रहेगा। व्यावसायिक फिल्म निर्माण के प्रारंभिक दो दशकों में यह स्पष्ट हो गया था कि फिल्म विधा की संभावनाएँ अपार हैं। केवल दो और दशकों में लगभग सारी संभावनाएँ क्षितिज पर साफ दिखाई देने लगी थीं। १९३५ तक हॉलीवुड विश्व सिनेमा का केंद्र बिन्दु हो गया था। दर्जनों छोटी-बड़ी फिल्म कम्पनियाँ बनीं और इनकी जोड़-तोड़ की प्रक्रिया पूरी होकर विराट स्टुडियो स्थापित हो चुके थे। हॉलीवुड के शैशवकाल की बायोग्राफ/ विटाग्राफ/ मजेस्टिक/ ट्रैन्गल/ कीस्टोन/एस्साने जैसी कम्पनियाँ इस प्रक्रिया में सर्वशक्तिमान स्टुडियो बन चुके थे। इन स्टुडियोज में बड़े पैमाने पर फिल्म निर्माण इतना हुआ कि इन्हें कारखाने कहना उचित होगा। इन कारखानों से निकलने वाली फिल्मों के प्रदर्शनों के लिए आलीशान सिनेमागृह भी बने। इनमें से कई इन बड़ी कम्पनियों के एवं स्टुडियो के स्वामित्व के रहे। फिल्म निर्माण, वितरण और प्रदर्शन सारा कारोबार इन सर्वशक्तिमान स्टुडियो के आधीन रहा। लाखों-करोड़ों डालर्स में फिल्मों का व्यापार होने लगा।

ऐसा केवल हॉलीवुड में ही नहीं हुआ। दुनिया के लगभग सभी देशों में हुआ है। साम्यवादी देशों में फिल्म निर्माण की प्रक्रिया राज्य के आधीन रही। वहाँ भी विराट स्टुडियो बने-जैसे, रूस में मॉस फिल्म्स। पूँजीवादी देशों में व्यक्तिगत निर्माता, उनके न्यास फिल्म निर्माण की सारी सुविधाएँ एक छत के नीचे उपलब्ध कराते रहे। ब्रिटेन में भी शेपर्टन/पाइनवुड स्टुडियो बने। हॉलीवुड की बात न्यारी रही।

हॉलीवुड की फिल्म कम्पनियाँ और स्टुडियो विश्वस्तर के फिल्म निर्माण के अनुकूल बने। फिल्म की पहचान, सितारों का जमावड़ा, निर्देशकों की आस्थाएँ भी इन कम्पनियों/ स्टुडियो से जुड़ी रहीं। मेट्रो गोल्डविन मेयर/वार्नर ब्रदर्स/ कोलम्बिया/ यूनिवर्सल/ पैरामाउन्ट/ डिज़नी स्टुडियो (ब्यूनाविष्टा)/ ट्वेंटिएथ सेंचुरी फाक्स के प्रतीक चिन्ह जैसे ही परदे पर फिल्म के साथ जुड़े आते दर्शकों की आकांक्षाएँ/अपेक्षाएँ उफान पर आतीं। इनमें से कई कम्पनियाँ और स्टुडियो आज भी फिल्म निर्माण में रत हैं। भले ही वे पहले जैसे सर्वशक्तिमान नहीं रहे हों। हाथी कमजोर हो जाए तो भी रहता तो हाथी ही है। अस्सी के दशक में ओरिआन/ ट्राइस्टार/ एम्बलिन/ टचस्टोन/ लुकास फिल्म्स जैसी कई नई कम्पनियाँ आई हैं। सारी प्रक्रिया वैसे ही चल रही है। हॉलीवुड की कुछ प्रमुख कम्पनियाँ और स्टुडियो सिनेमा को बीसवीं शताब्दी की सर्वश्रेष्ठ कला बनाने में सहयोग देती रही हैं। इन कम्पनियों/स्टुडियो के निर्माण/ विकास की एवं प्रमुख योगदान की जानकारी आधारभूत महत्व की है।

मेट्रो-गोल्डविन-मेयर/ एम.जी.एम.

हॉलीवुड के स्टुडियोज़ में सबसे विख्यात एमजीएम स्टुडियो रहा है। इस स्टुडियो का दावा रहा कि आसमाँ में नहीं हैं इतने सितारे उसके पास हैं। एमजीएम का मतलब रहा-ग्लैमर/चमक-दमक। इस स्टुडियो का सूत्र रहा अच्छी फिल्में बनाओ। भव्य फिल्में बनाओ। स्तर की फिल्में बनाओ। एमजीएम

का बोधवाक्य रहा, आर्ट्स ग्रेसिया आर्टिस-कला के लिए कला। किन्तु एमजीएम ने धन भी कमाया। मेट्रो पिक्चर्स/ गोल्डविन पिक्चर्स (जिसमें सैम गोल्डविन नहीं था!)/ एवं मेयर (लुइस बी. मेयर) कम्पनियाँ मिलकर १९२४ में मेट्रो गोल्डविन मेयर बना। आर्थिक मामले मार्क्स लोई सम्हालता रहा, और स्टुडियो का प्रबंध लुइस बी मेयर एवं इर्विंग थालबर्ग सम्हालते रहे। इस स्टुडियो को वास्तव में सँवारा सितारों ने।

एमजीएम का विश्वविख्यात शेर पहली बार व्हाइट शैडोज आव द साऊथ (१९२८) फिल्म में दहाड़ा था-और आज भी उसकी गूँज बाकी है। रेमॉन नेवारो/ग्रेटा गार्बो/ लिओनेल बैरिमूर/ जॉन क्राफर्ड/ जॉन बेरिमूर/ रॉबर्ट टेलर/ क्लार्क गेबल/ विवियन ले आदि सितारे इस स्टुडियो की हॉट प्रापर्टी रहे। जीन केली/ फ्रेडे अस्टेअर/ ज्यूडी गार्लण्ड/ जैसे नर्तक एवं विन्सेन्ट मिनेली, विक्टर फ्लेमिंग जैसे निर्देशकों ने एमजीएम को प्रतिष्ठित किया। म्युजिकल्स श्रेणी की फिल्में एमजीएम की विशेषता रही। कुछ महँगी म्युजिकल्स ने एमजीएम को सत्तर के दशक में दिवालिया बना दिया। एमजीएम की सम्पत्ति बिकने लगी। अस्सी के दशक में जाकर स्थिति में सुधार हुआ, किन्तु वे दिन लौटकर नहीं आए। आखिर, एमजीएम का विलय यूनाइटेड आर्टिस्ट्स (यूए) के साथ हो गया। एमजीएम/यूए के तत्वावधान में फिल्में तो अभी भी बन रही हैं और स्टुडियो किराए पर चलता भी है किन्तु एम.जी.एम. का वह दहाड़ता शेर अब बूढ़ा हो गया है।

एमजीएम स्टुडियो जिन फिल्मों के कारण माना जाता रहा, उनमें से प्रमुख रही हैं बेनहर (१९२५, १९५९), द बिग परेड (१९२५), कैमिली (१९३६), ग्रांड होटल (१९३२), म्युटिनी ऑन द बाऊन्टी (१९३५), गान वीथ द विण्ड (१९३९), अॅन अमेरिकन इन पैरिस (१९५१), मीट मी इन सेंट लुईस (१९४४), सिंगिंग इन द रेन (१९५२), कोवादिस (१९५२), हाऊ द वेस्ट वाज्मन (१९६२), डॉ. जिवागो (१९६५), द डर्टी डजन (१९६७) एवं २००१-ए स्पेस ओडेसी (१९६८)। बॉक्स ऑफिस पर सर्वाधिक धन कमाने वाली एमजीएम की फिल्में रहीं-रैनमेन (१९८८), गान वीथ द विण्ड (१९३९), रॉकी भाग ४ (१९८५), रॉकी भाग ३ (१९८२), डॉ. जिवागो (१९६५), द गुडबाई गर्ल (१९७७), वार गेम्स (१९८३), पोल्टर जीस्ट (१९८२), बेन हर (१९५९) एवं मून स्ट्रक (१९८७)।



ग्रेटा गार्बो एण्ड जॉन बेरीमूर : ग्रॉण्ड होटल (१९३२)

पैरामाऊन्ट पिक्चर्स

अडोल्फ जुकोर एवं जेसी लास्की ने अपनी छोटी कम्पनियों को मिलाकर पहले फिल्म वितरण के क्षेत्र में प्रवेश किया, फिर फिल्म निर्माण में। कई नाम बदलकर अंततः १९३३ में पैरामाउन्ट पिक्चर्स की स्थापना हुई। जुकोर की व्यावसायिक सूझबूझ के कारण किसी समय तो पैरामाउन्ट सबसे बड़ा स्टुडियो बन गया था। फिल्म निर्माण, वितरण एवं प्रदर्शन इस स्टुडियो ने अपने ही आधीन रखा था। एमजीएम स्टुडियो की टक्कर के सितारे भी पैरामाऊन्ट ने जुटा लिए थे। निर्देशक भी और तंत्रज्ञ भी। आज नब्बे के दशक तक इस स्टुडियो की निकली फिल्में यह प्रमाणित करती हैं कि पैरामाऊन्ट का योगदान कितना महत्व रखता है।

सेसिल बी डिमाइल/ मेरी पिकफोर्ड/ डगलस फेअरबैन्क/ रुडोल्फ वैलेन्टिनो/ रोनाल्ड कोलमन/ मार्क्स बंधु/ मे वेस्ट/ डब्ल्यू सी फिल्ड्स/ गैरी कूपर/ क्लडिट कोलबर्ट/ मार्लिन डीट्रिच/ मारिस शिवेलिए/ बिंग क्रास्बी/ बॉब होप/ बेटी ग्रेबल/ डोरोथी लेमूर/ अॅलन लैड/ हेडी लेमार/ विक्टर मैचुअर/ जेम्स स्टुअर्ट/ ग्रेस केली/ बिली वाईल्डर/ रोमन पोलस्की/ फ्रांसिस फोर्ड कोपोला आदि कितने ही सितारे एवं निर्देशक पैरामाउन्ट से जुड़े रहे। इतने सारे टैलन्ट्स पैरामाउन्ट के साथ जुड़े रहे तो श्रेष्ठ फिल्मों का अम्बार तो रचा जाना ही था। और खूब उथल-पुथल होना थी। अंततः 'द गॉड फादर' (१९७२) फिल्म के साथ पैरामाऊन्ट खूब सँवर भी गया। गल्फ एंड वेस्टर्न कम्पनी ने पैरामाऊन्ट खरीद लिया। जुकोर का जमाना चला गया, लेकिन पैरामाऊन्ट स्टुडियो पैरामाउन्ट महत्व का स्टुडियो रहा।

पैरामाऊन्ट की कई फिल्में यादगार फिल्में रहीं हैं-द शेख (१९२१)/ द टेन कमाण्डमेन्ट्स (१९२३/१९५६), द कवर्ड वैगन (१९२३), क्लिओपात्रा (१९३२), शंघाई एक्सप्रेस (१९३२), सैमसन एंड डिलाइला (१९४९), द ग्रेटेस्ट शो आन अर्थ (१९५१), शेन (१९५३), रिअर विण्डो (१९५४), साइको (१९६०), कारपेट बैगर्स (१९६४), रोजमरीज बेबी (१९६८), लव स्टोरी (१९७०), द गॉड फादर भाग १ एवं २ (क्रमशः १९७२ एवं १९७४), सटरडे नाइट फिवर (१९७७), ग्रीज (१९७८) और इंडियाना जोन्स की फिल्में। अस्सी एवं नब्बे के दशक में भी पैरामाऊन्ट की फिल्मों का दबदबा बना रहा। बॉक्स ऑफिस पर सफलतम फिल्मों में पैरामाऊन्ट की फिल्में भी खूब रही हैं-रैंडर्स ऑव द लॉस्ट आर्क (१९८१), इंडियाना जोन्स एंड द लास्ट क्रुसेड (१९८९), इंडियाना जोन्स एंड द टेम्पल ऑव डूम (१९८४), बिवर्ली हिल्स कॉप (१९८४), घोस्ट (१९९०), ग्रीज (१९७८), द गाड

सेमसन एण्ड डिलाइला



फादर (१९७२), बिवर्ली हिल्स कॉप्स-भाग २ (१९८७), टॉपगन (१९८६) एवं द फर्म (१९९३)।

ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी फॉक्स

विलियम फॉक्स पहले तो चवन्नी छाप थिएटर चलाता रहा, बाद में उसने सिनेमागृह चित्रमहल बनाए। फिल्म वितरण भी हाथ में लिया। १९१४ में फॉक्स फिल्म कम्पनी बनाई। फीचर फिल्मों के साथ सूवीटोन न्यूजरीलें बनाते हुए १९३३ में ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी फॉक्स स्टुडियो की नींव रखी। डेकाइल जनुक एवं जोसेफ शैन्क की ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी कम्पनी के साथ फॉक्स कम्पनी का यह मिलान फॉक्स ने अपना हिस्सा बेचकर किया था, क्योंकि १९२९ के स्टॉक मार्केट के पतन में फॉक्स बर्बाद हो गया था। ट्वेन्टिएथ सेन्चुरी फॉक्स स्टुडियो को हमेशा फॉक्स के नाम से ही जाना जाता रहा है। फॉक्स को विख्यात बनाए रखने में तीस के दशक में शर्ले टेम्पल नाम की नन्ही परी ने एवं सिनेमा स्कोप जैसी क्रांतिकारी विधा के प्रयोग ने खूब योगदान किया है। फॉक्स का दबदबा उसके सितारे टायरॉन पावर एवं मरलिन मनरो के कारण भी बना रहा। १९८५ में रुपर्ट मर्डोक ने इस स्टुडियो को खरीद लिया। आज भी फॉक्स में फिल्में बन रही हैं और ट्वेन्टिएथ सेंचुरी टेलीविजन बैनर के अंतर्गत टेलीविजन के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन योग्य कई श्रृंखलाएँ तैयार की जा रही हैं।

फॉक्स स्टुडियो की कई फिल्में पूरी दुनिया में नाम कमाती रहीं-द लिटिल प्रिन्सेस (१९३९), ड्रम्स अलाँग द मोहाक (१९३९), द ग्रेप्स आव रैथ (१९४०), द सॉन्ग ऑव बर्नाडेटी (१९४३), द स्नेक पिट (१९४८), द रोब (१९५३, पहली सिनेमास्कोप फिल्म), जन्टलमेन प्रिफर ब्लाण्ड्स (१९५३), द सेवन इयर ईच (१९५५), क्लिओपात्रा (१९६३), द साउण्ड ऑव म्युजिक (१९६५), बुच कैसिटी एंड द सनडेन्स किड (१९६७), मैश (१९७०), पैटन (१९७०), स्टार वार्स (१९७७) एवं स्टारवार्स श्रृंखला की अन्य फिल्में और द ओमेन (१९७६) आदि। अभी एलियन (१९७९) श्रृंखला की एलियन्स (१९८६) एवं एलियन ३ (१९९२) भी फॉक्स की विख्यात फिल्में रही हैं। बॉक्स ऑफिस पर फॉक्स को खूब धन बटोरने में सहायक फिल्में रही हैं-स्टारवार्स (१९७७), रिटर्न ऑव द जेडाई (१९८३), द एम्पायर स्ट्राइक्स बैक (१९८०), होम अलोन (१९९०), मिसेस डाऊटफायर (१९९३), होम अलोन-२ : लास्ट इन न्यूयॉर्क (१९९२), द साऊन्ड ऑव म्युजिक (१९६५), डाई हार्ड-२ डाई हार्डर (१९९०), नाईन टू फाईव (१९८०) और पार्की (१९८२)।

वार्नर स्टुडियो

चार भाई थे-अलबर्ट, हैरी, सैम और जैक वार्नर। पहले तो सिनेमागृह चलाया। बाद में फिल्म वितरण के व्यवसाय में उतरे और १९२३ में वार्नर ब्रदर्स कम्पनी बनाकर फिल्म निर्माण के क्षेत्र में आ गए। वार्नर स्टुडियो गूँगी फिल्मों को आवाज देने में अग्रणी रहा, द जाज सिंगर (१९२७) के रूप में पहली म्युजिकल वार्नर ने ही बनाई है। म्युजिकल्स से गैंगस्टर फिल्में, फिर एक्शन एडवेंचर और फिर ड्रामा श्रेणी की श्रेष्ठ फिल्में बनाकर वार्नर स्टुडियो ने हॉलीवुड की धाक बनाए रखने में जबरदस्त योगदान दिया है। वार्नर स्टुडियो के पास कई नामी सितारे और निर्देशक रहे और पब्लिसिटी गिमिक्स भी। रिन टिन टिन नाम के कुत्ते ने भी वार्नर की कई फिल्मों में काम किया है। एडवर्ड जी रॉबिनसन/जेम्स कैग्ने/ पॉल मुनी/ एरॉल फ्लीन/ बेटी डेविस/ हम्फ्री बोगार्ट/ इन्ग्रिड बर्गमन/ किलेन्ट इस्टवुड/ बार्बारा स्टैसेण्ड/ रॉबर्ट रेडफोर्ड आदि कई नामी सितारे वार्नर की फिल्मों में चमकते रहे। इन सभी में सबसे चमक जेम्स डीन की रही। इस्ट ऑव इडन (१९५५) एवं रिबेल विदाऊट ए कॉज (१९५५) में जेम्स डीन को देखना एक अविस्मरणीय अनुभूति है।

अर्नेस्ट लुबित्ज/अल्फ्रेड हिचकॉक/एलिय कजान/ जार्ज स्टिवन्स/ अलन पाकुला/ स्टीवन स्पीलबर्ग जैसे विख्यात निर्देशक भी वार्नर के साथ जुड़े रहे। इसलिए वार्नर की फिल्मों की भी दुनियाभर में धूम मची। लिटिल सीजर (१९३०), द पब्लिक एनिमी (१९३१), कैप्टन ब्लड (१९३५), द एडवेंचर्स आव रॉबिनहुड (१९३८), द गुड अर्थ (१९३७), ऑव ह्युमन बाण्डेज (१९३५), द कन्फेक्शन ऑव ए नाजी स्पाई (१९३९), द माल्टीसी फाल्कन (१९४१), कासाब्लाँका (१९४३), द बिग स्लीप (१९४६), द

रोप (१९४८), डायल एम फार मर्डर (१९५३), ए स्टार इज बॉर्न (१९५४), बॉनी एंड क्लाइड (१९६७), माई फेयर लेडी (१९६४), द एक्जोर्सिस्ट (१९७३), सुपर मेन द मूवी (१९७९), द टावरिंग इनफर्नो (१९७५), ऑल द प्रेसिडेन्ट्स मेन (१९७६) फिल्मों के साथ अब वार्नर स्टूडियो वार्नर कम्युनिकेशन्स के नाम से मास मीडिया के लगभग सभी क्षेत्रों में फैल गया है-ठेठ पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में भी।

वार्नर स्टूडियो की बॉक्स ऑफिस पर नाम एवं दाम कमाने वाली प्रमुख फिल्में रहीं-बेटमैन (१९८९), बैटमेन रिटर्न्स (१९९२), द फ्युजिटिव (१९९३), द एक्जोर्सिस्ट (१९७३), रॉबिन हुड द प्रिन्स ऑव थीव्ज (१९९१), सुपर मेन (१९७९), लेथल वेपन भाग ३ (१९९३), ग्रेमलिन्स (१९८४), लेथल वेपन (१९८९) एवं सुपर मेन पार्ट २ (१९८१)।

रेडियो-कैथ - आरफियम (आरकेओ/रेडियो)

छोटी कम्पनियाँ मिलकर एक कारपोरेशन रेडियो-कैथ-आरफियम कारपोरेशन के नाम से तीस के दशक की शुरूआत में शुरू हुआ और डेविड सेल्जनिक इसके पहले निर्माण प्रमुख रहे। बाद में १९४८ में होवार्ड ह्यूजेस ने इस स्टूडियो को खरीदा। १९५७ में इस स्टुडियो की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। १९५८ में इसे डेसिलु लुसिली बाल ने खरीदा। आरकेओ बहुत बड़ा स्टुडियो कभी भी नहीं रहा। इस स्टुडियो की बनी फिल्में बहुत महत्वपूर्ण रही हैं। आर्थिक कठिनाइयों से जूझते आखिर इस स्टुडियो का दुःखद अंत हुआ। आर.के.ओ. की अंतिम फिल्म १९६० में बनी थी। इस स्टुडियो की बनी फिल्में अमेरिका में युनिवर्सल इंटरनेशनल (यूनिवर्सल) द्वारा वितरित की गई।

आर.के.ओ. ने फ्रैड अस्टेअर /जिंजर रोजर्स की कई म्युजिकल्स (नृत्य) फिल्में बनाई हैं। इनमें टॉप हैड (१९३५), स्विंग टाइम (१९३६), शैल वुई डान्स (१९३७) विशेष रही हैं। मेरियन सी कूपर कैथरिन हेपबर्न, जॉन फोर्ड, चार्ल्स लाटन, जान वेन, ग्रेगरी पेक, रॉबर्ट मिचम, कैरी ग्रान्ट, फ्रैन्क काप्रा, जेन रसेल, रॉबर्ट रान, जेन ग्रीअर जैसे सितारे निर्देशक आर.के.ओ. से संलग्न रहे। आर्सन वेल्स की कालजयी फिल्म सिटिजन केन (१९४१) को धन इसी स्टुडियो ने उपलब्ध कराया था। फिल्म नाईरे श्रेणी की कई फिल्में भी आरकेओ स्टुडियो से आई हैं। आरकेओ की प्रमुख फिल्में रही हैं -टाप हैट (१९३५), केअर फ्री (१९३८), किंगकाँग (१९३३), द हन्चबैक आव नोट्रेडेम (१९३९), द मैग्निफिशिएन्ट अम्बरसन (१९४२), बैक टु बातान (१९४५), आउट आव द पास्ट (१९४७), क्रॉस फायर (१९४७), हट्ज ए वन्डरफुल लाइफ (१९४६)।

डस्टिन हॉफमन : टूटसी (१९८२)



कोलम्बिया पिक्चर्स

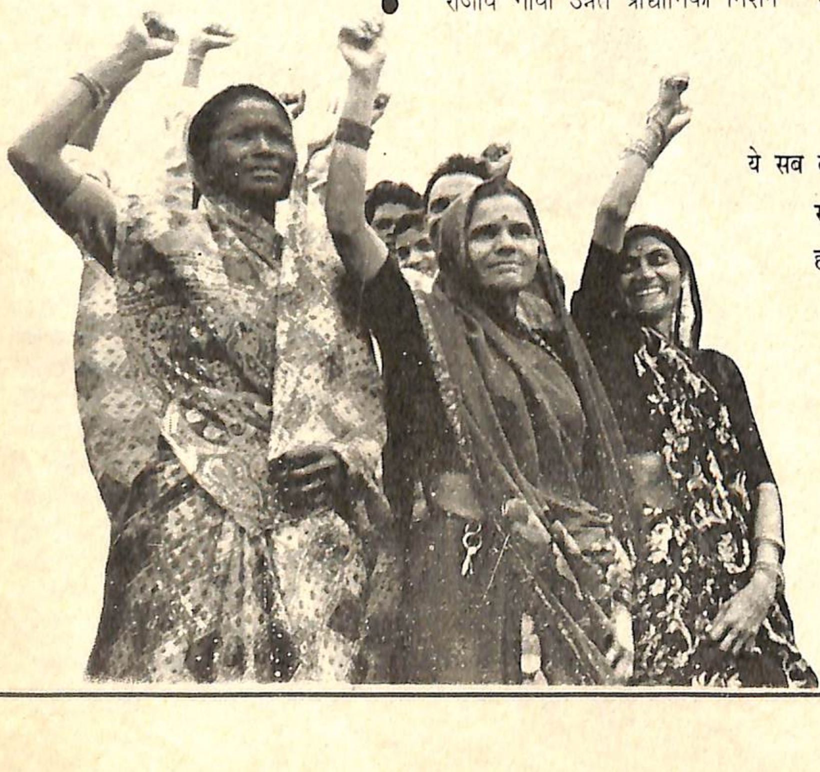
कोलम्बिया पिक्चर्स की स्थापना १९२४ में हुई, इसके मालिक जैक एवं हैरी कोहेन थे। इनमें हैरी की सत्ता अधिक थी। प्रारंभ के बीस वर्षों तक तो यह एक छोटा स्टुडियो ही रहा। बाद में इस स्टुडियो ने विराट रूप ले लिया। फिल्म प्रदर्शन के क्षेत्र में (थिएटर बनाने) कोलम्बिया कभी नहीं गया। इसलिए १९४८ के लगभग जब बड़े स्टुडियोज को अपने थिएटर बेचने की नौबत आई तब कोलम्बिया उस झमेले से बचा रहा। श्रेष्ठ फिल्में बनाने और खूब धन कमाने पर भी कोहेन खुश नहीं था। वह कहता था-यह भी कोई धंधा है। ये तो रैकेट है। यह स्टुडियो कोका-कोला कम्पनी ने ले लिया था। आखिर अस्सी के दशक में जापान की मल्टीनेशनल सोनी कारपोरेशन ने कोलम्बिया स्टुडियो खरीद लिया। कोहेन के द्वारा निर्मित साम्राज्य बिखर गया। केवल स्टुडियो बना रहा। फिल्म निर्माता डेविड पुटमन १९८६-८८ के बीच इसे चलाता रहा।

काप्रा की इट हैपन्ड वन नाइट (१९३४) से ही कोलम्बिया की फिल्मों ने लोकप्रियता के उच्चांक अर्जित करना शुरू किया था। गैरी कूपर की मिस्टर डीडस गोज टू टाउन (१९३६)/काप्रा की हिज गर्ल फ्राइडे, (१९४०) /रिटा हैवर्थ की कवर गर्ल (१९४५) खूब लोकप्रिय रहीं। पचास के दशक में ऑल द किंग्ज मेन/बार्नर यस्टरडे, ऑन द वाटर फ्रन्ट, फ्राम हियर टु इटरनिटी, द ब्रिज ऑन द रिवर कवाई, गेस हू इज कमिंग टु डिनर, फनी गर्ल, ईजी राईडर, ए मैन फार ऑल सीजन्स ... ये सभी फिल्में और सत्तर के दशक तक फैली सूची कालजयी सदाबहार फिल्मों की है, जो कोलम्बिया की देन है। और सत्तर के दशक के बाद स्पीलबर्ग की क्लोज एनकाऊन्टर्स ऑव द थर्ड काईण्ड (१९७७), हाफमन की क्रेमर वर्सेस क्रेमर (१९७९), टूटसी (१९८२), घोस्ट बस्टर्स (१९८४) एवं कराटे किड (१९८४) ने कोलम्बिया के परचम को हमेशा ऊँचा रखा है। कोलम्बिया की बॉक्स ऑफिस पर सफलतम फिल्में रही हैं-द घोस्ट बस्टर्स (१९८४), टूटसी (१९८२), क्लोज एनकाऊन्टर्स ऑव द थर्ड काईण्ड (१९७७), ए फ्यू गुडमेन (१९९२), सिटी स्लिकर्स (१९९१), घोस्ट बस्टर्स भाग २ (१९८९), क्रेमर

जिंदगी का रुख बदलने के लिए

राजीव गांधी मिशन

- राजीव गांधी शिक्षा मिशन - पूर्ण साक्षरता और हर बच्चे को प्राथमिक शिक्षा का लक्ष्य 1998 तक
- राजीव गांधी जलग्रहण क्षेत्र विकास मिशन - अगले पांच वर्षों में 12 लाख हेक्टेयर भूमि के जलग्रहण क्षेत्र का विकास
- राजीव गांधी ग्रामोद्योग मिशन - ग्रामोद्योग के क्षेत्र में 1996 तक 200,000 नौकरियों की क्षमता विकसित
- राजीव गांधी मत्स्योद्योग विकास मिशन - प्रदेश के मछुआरों की कार्यक्षमता और आय दुगनी करने का लक्ष्य
- राजीव गांधी अतिसार नियंत्रण मिशन - स्वास्थ्य शिक्षा द्वारा डायरिया से होने वाली मृत्युदर में कमी करने का लक्ष्य
- राजीव गांधी आयोडीन अल्पता निवारण मिशन - प्रदेश में 1995 तक आयोडीन नमक के प्रसार से आयोडीन अल्पता से होने वाले रोगों में कमी
- राजीव गांधी उन्नत प्रौद्योगिकी मिशन - उच्च तकनीकी के प्रयोग से ग्राम विकास



ये सब करने के लिए जरूरी है कि हम सब साथ हों।
सब साथ होने से ही चमत्कार होते हैं, हुए हैं,
हमारा साथ रहना ही संभव बनाता है चमत्कार।

मध्यप्रदेश माध्यम/4/95

राजीव गांधी मिशन, मध्यप्रदेश

वर्सेस क्रेमर (१९७९), स्टिर क्रैजी (१९८०), द कराटे किड भाग-२ (१९८६) एवं ए लीग आव देयर ओन (१९९२) आदि।

यूनिवर्सल स्टुडियो

यदि आप कैलिफोर्निया जाएँ तो यूनिवर्सल को अवश्य भेंट दें-यह खुला निमंत्रण यूनिवर्सल स्टुडियो हमेशा देता रहा है। यूनिवर्सल स्टुडियो क्या है, एक फिल्मसिटी है। इसे यूनिवर्सल सिटी के रूप में ही कार्ल लाईमले ने १९१५ में बनाया। पहले तो कई छोटी फिल्में बनती रहीं। तीस के दशक के साथ यूनिवर्सल का नाम खूब चमकने लगा। ऑल क्वाएट ऑन द वेस्टर्न फ्रन्ट (१९३०) से लेकर जुरासिक पार्क (१९९३) तक, इस स्टुडियो की फिल्मों की तो बात ही और रही। पहले हॉरर फिल्में-बेला लुगोसी की ड्राकुला (१९३१)/फ्रैन्केन्स्टाइन (१९३१), द ममी (१९३२) और द इनविजिबल मैन (१९३३) के बाद ड्रामा श्रेणी में द एग एण्ड आई (१९४७), रीटन आन द विण्ड (१९५६), द मग्निफेशिअन्ट आब्सेशन (१९५४), इमिटेशन आव लाइफ (१९५९), द टार्निश्ड एनजेन्लस (१९५८) आदि कई फिल्मों ने खूब लोकप्रियता अर्जित की है।

सत्तर के दशक के बाद यूनिवर्सल इंटरनैशनल बैनर के नीचे यह स्टुडियो शक्तिमान बना रहा है। एयरपोर्ट (१९७०), द स्टिन्ग (१९७३), जॉज् (१९७५), स्पीलबर्ग की ही ईटी द एक्स्ट्रा टेरिस्ट्रीअल (१९८२), बैक टु द फ्युचर श्रृंखला की तीन फिल्मों ने और आऊट आव अफ्रीका (१९८५) ने यूनिवर्सल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठा दी है। और सिलसिला जारी है। यूनिवर्सल की बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाने वाली फिल्में रही हैं-ईटी द एक्स्ट्रा टेरिस्टरीअल (१९८२), जुरासिक पार्क (१९९३), जॉर्ज (१९७५), बैक टु द फ्युचर (१९८५), द स्टिन्ग (१९७३), बैक टु द फ्यूचर भाग- २ (१९८९), नेशनल लैम्पूनस् अनिमल हाऊस (१९७८), ऑन गोल्डन पॉण्ड (१९८१), स्मोकी एंड द बैंडिट (१९७७) और स्केवेरजेनेगर डैनी डी विटो की द ट्विन्स (१९८८)। यूनिवर्सल की कार्टून शॉर्ट्स विशेष रूप से वूडी वूडपेकर की फिल्में भी खूब लोकप्रिय हुई।

ब्यूना विस्टा/ वाल्ट डिज़नी स्टुडियो

विश्व सिनेमा को वाल्ट डिज़नी स्टुडियो का योगदान सबसे अनमोल रहा है। सबसे अलग और अद्भुत भी। वाल्ट डिज़नी का व्यक्तित्व ही अद्भुत रहा। अद्भुत कल्पनाशीलता, अद्भुत कार्यकुशलता, अद्भुत व्यावसायिक सूझबूझ और अद्भुत सफलता का अद्भुत समागम केवल डिज़नी में मिलता है। बाकी सारे स्टुडियो एवं कंपनियों के योगदान से डिज़नी का योगदान अलग है। बहुमुखी और गुणात्मकता में श्रेष्ठ है। सिनेमा इतिहास में वाल्ट डिज़नी जैसा प्रतिभाशाली और सम्मानित व्यक्तित्व कोई नहीं रहा। ठेठ १९२८ में स्टीम बोट विली में मिकी माऊस के अवतरण से ही डिज़नी का हाल आव फेम के लिए नामांकन हुआ था और जीवनभर डिज़नी को एवं डिज़नी की फिल्मों को ३५ से अधिक ऑस्कर, ५ से अधिक एमी पुरस्कार, ५ से अधिक मानद उपाधियाँ और ९०० से अधिक अन्य सम्मान चिन्ह, मानपत्र मिले हैं। ब्रितानी कार्टूनिस्ट सर डेविड लो ने तो वाल्ट डिज़नी को लिओनार्डो दा विन्सि स्तर का जीनियस कहा है। वाल्ट डिज़नी के डिज़नीलैंड, डिज़नीवर्ल्ड और अप्कॉट सेन्टर जैसे प्रयोग तो अलग ही हैं। डिज़नी स्टुडियो (हाईपरीआन) की स्थापना १९२३ में हुई और १९९५ में भी डिज़नी स्टुडियो की फिल्में दुनियाभर में धूम मचा रही हैं। अभी दुनियाभर में करोड़ों दर्शक डिज़नी की द लॉयन किंग (१९९४) का सपरिवार आनंद ले रहे हैं।

डिज़नी ने एनिमेशन विधा में अनुपमेय फिल्में दीं। पारिवारिक फिल्मों का अम्बार रच दिया। विश्व साहित्य पर्दे पर प्रस्तुत किया। टूलाइफ एडवेंचर श्रृंखला में अन्य कई वन्य जीवन (वाईल्ड लाइफ) फिल्में बनाई। आधुनिक परिकथाएँ बनाई। प्रेटी वूमन १९९०, परम्परागत परिकथाएँ भी खूब बनाई। सिण्ड्रेला (१९५०) और २०००० लीगस अण्डर द सी से लेकर द ब्लेक होल तक की साइन्स फिक्शन फिल्में भी, डेवी क्राकेट जैसी साहस कथाएँ और मेरी



मर्लिन मनरो

पॉपिन्स (१९६४) जैसी म्युजिकल्स भी। एनिमेशन एवं लाइव एक्शन का मिश्रण भी कर दिखाया-हू फ्रेमड् रोजर रौबेट (१९८८) और ट्रॉन (१९८२) फिल्म के द्वारा कम्प्यूटर के पर्दे के पार की इलेक्ट्रॉनिकी दुनिया की सैर भी कराई है। सभी आयु, वर्ग, राष्ट्रीयता के लोगों के लिए सैकड़ों फिल्में बनाकर ऐसी मिसाल प्रस्तुत की है कि विश्व सिनेमा के इतिहास में एक सुनहरा अध्याय जुड़ गया है और एक अजूबा डिज़नी फिनोमिना के रूप में दर्शकों के दिल और दिमाग पर हमेशा के लिए अंकित हो गया है। डिज़नी की फिल्मों पर और डिज़नी स्टुडियो पर इतने ग्रंथ लिखे जा चुके हैं कि और लिखने-पढ़ने जैसा शायद ही कुछ बचा हो।

डिज़नी की फिल्मों की सूची भी एक पुस्तक जैसी लम्बी और मोटी होगी-डिज़नी की सैकड़ों एनिमेटेड चरित्रों की हजारों फिल्में हैं-टेलीविजन के लिए विशेष डिज़नी चैनल के लिए बनी फिल्में हैं और शैक्षिक फिल्मों की (एज्युकेशनल) लम्बी सूची है। डिज़नी के सहयोग से बनी अन्य फिल्मों की भी सूची है-जैसे स्पीलबर्ग की हू फ्रेमड् रोजर रैबिट (१९८८), वारेन बीटी की डिक ट्रैसी (१९९०) और टिम बर्टन की नाईटमेअर बिफोर क्रिसमस (१९९४)हैं।

डिज़नी की प्रमुख एनिमेशन फिल्में हैं-स्नोव्हाइट एंड द सेवन डवार्फस् (१९३७), पिनोचिओ (१९४०), फेन्टासिआ (१९४०), द रिलकरन्ट ड्रैगान (१९४१), डम्बो (१९४१), बाम्बी (१९४२), सैलुडोज अमिगो (१९४३), विक्ट्री थ्रु एअर पॉवर (१९४३), द थ्री कैबेलेरोज (१९४५), मेक माईन म्युजिक (१९४६), द साँग आव द साऊथ (१९४६ : आंशिक एनिमेशन), फन एंड फैन्सी फ्री (१९४७), मेलोडी टाइम (१९४८), द एडवेंचर्स आव इचाबॉड एंड मि. टोड (१९४९), सिन्ड्रेला (१९५०), एलिस इन वन्डरलैंड (१९५०), पीटर पैन (१९५३), लेडी एंड द ट्रैम्प (१९५५), स्लीपिंग ब्यूटी (१९५९), वन हन्ड्रेड एंड वन डालमेशन्स (१९६१), द स्वोर्ड इन द स्टोन (१९६३), मेरी पॉपिन्स (१९६४ : आंशिक एनिमेशन), द जंगल बुक (१९६७), द अॅरिस्टोकैट्स (१९७०), बेडनॉब्स एंड ब्रूमस्टिक्स (१९७१ : आंशिक एनिमेशन), रॉबिन हुड (१९७३), द रेस्क्यूअर्स (१९७७), पेट्स ड्रैगॉन (१९७७ : आंशिक एनिमेशन), द फॉक्स एंड द हाऊण्ड (१९८०), द ब्लैक कोल्ड्रन (१९८५), ब्रेसिल द ग्रेट माऊस डिटेक्टिव (१९८६), ऑलिवर एंड कम्पनी (१९८७), द लिटिल मरमेड (१९८८), द ब्यूटी एंड द बीस्ट (१९९१), अलादीन (१९९२), द लॉयन किंग (१९९४)।

डिज़नी की वन्य जीवन फिल्मों में प्रमुख फिल्में हैं-ट्रू लाइफ एडवेंचर श्रृंखला की फीचर फिल्में-द वैनिशिंग प्रेअरीज/ द बीवर व्हैली, द आफ्रिकन लायन, द व्हाइट वाईल्डरनेस, द लिविंग डेजर्ट एवं सील आईलैंड। अन्य फिल्में हैं-द इनक्रेडिबल जर्नी, दोज कैलोवेज, द बेअर एंड आई, ओल्ड येलर एवं नेवर क्राई वूल्फ आदि। डिज़नी की विभिन्न श्रेणियों की महत्वपूर्ण फिल्में हैं-द अबसेन्ट माईण्डेड प्रोफेसर/डेवी क्रॉकेट-द किंग ऑव द वाईल्ड फ्रंटियर, रॉबिन हुड एंड हिज मेरीमेन, स्विस फैमिली रॉबिनसन, ट्रेजर आईलैंड, द आर्टलैंड अट द टॉप आव द वर्ल्ड, ट्वेन्टी थाऊजन्ड लीगस अण्डर द सी, द लव बग, हर्बी राईड्स अगेन, हर्बीगोज बनानाज, हर्बीगोज टु मान्टोकार्लो, द स्ट्रॉन्गेस्ट मैन ऑन अर्थ, ब्ल्यूबीअर्डस घोस्ट, कैट फ्राम आऊटर स्पेस, दैट डार्न कैट, एस्केप टु विच माऊन्टेन, इन सर्च आव द कास्ट अवेज, किडनैप्ड, नेवर ए डल मोमेन्ट, वन आव आवर डायनोसोरस इज मिसिंग, पोपाया, रिटर्न फ्राम विच माऊन्टेन, रिटर्न टु ट्रेजर आईलैंड, राबराय, द शैगी डॉग, सो डीयर टु माई हार्ट, सन आव फनबर, ए टाईगर वाक्स, विण्ड इन द विलोज, स्प्लैश, हनी आई श्रन्क द किड्स, ट्रान, द ब्लैक होल, रिटर्न टु ओज।

डिज़नी स्टुडियो की फिल्मों में बॉक्स ऑफिस पर सबसे अधिक धन बटोरने वाली टॉप टेन फिल्में हैं-अलादीन (१९९२), प्रेटी वूमन (१९९०), थ्री मेन एंड ए बेबी (१९८७), हू फ्रेमड रॉजर रैबिट (१९८८), हनी आई श्रन्क द किड्स (१९८९), ब्यूटी एंड द बीस्ट (१९९१), वन हन्ड्रेड वन डालमेशन्स (१९६१), सिस्टर अॅकट (१९९२), स्नो व्हाइट एंड द सेवन डवार्फस् (१९३७ : शुरुआत में आरकेओ द्वारा रीलिज), और द जंगल बुक (१९६७)।

अन्य, फिल्म कम्पनियाँ

फिल्म निर्माण में अस्सी के दशक से कई नई कम्पनियों ने प्रवेश कर अपनी धाक जमाई है। स्वयंभू निर्माताओं और निर्देशकों ने ऐसी कई कम्पनियाँ बनाई हैं,जिनकी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर सफलता के साथ ही ऑस्कर पुरस्कारों को बटोरने में भी तत्परता दिखाई है। जार्ज लुकास की लुकास फिल्मस्, स्टीवन स्पीलबर्ग की ऑम्बिन और टच स्टोन पिक्चर्स आदि तो प्रमुख हैं। ट्राईस्टार और ओरिऑन जैसी कम्पनियों का योगदान भी उल्लेखनीय रहा है। ओरिअन कम्पनी के बैनर के नीचे बनी फिल्मों में बॉक्स ऑफिस पर सफलतम फिल्में हैं-डान्सेस वीथ वुल्वज (१९९०), प्लैटून (१९८६), द साईलेन्स ऑव द लैम्बस (१९९१) और अमेडिअस (१९८४) को तो सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर भी मिला है, ओरिअन की आर्थर (१९८१), बैक टू स्कूल (१९८६), १०

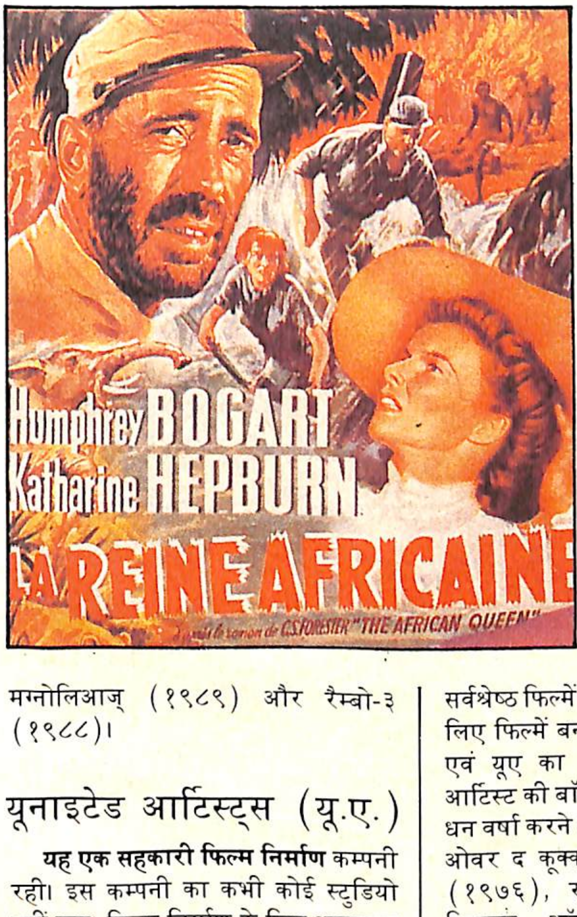


टर्मिनेटर-२ : द जजमेंट डे

(१९७९), थ्रो मोमा फ्राम द ट्रेन (१९८७), रोबोकॉप (१९८७) और फर्स्ट ब्लड (१९८७) भी बॉक्स ऑफिस पर सफल रही हैं।

ट्राईस्टार तो और भी नई कम्पनी है-इस कम्पनी की फिल्में भी लोकप्रिय हुई हैं। ऑस्कर की होड़ में यह कम्पनी ओरिआन से पीछे रही है। ट्राईस्टार कम्पनी की बॉक्स ऑफिस पर सफल फिल्में हैं-टर्मिनेटर-२ : द जजमेन्ट डे (१९९१), रैम्बो : फर्स्ट ब्लड भाग-२ (१९८५), लुक हू इज टाकिंग (१९८९), हूक (१९९१), स्लीपलेस इन सीएटल (१९९३), टोटल रिकॉल (१९९०), बेसिक इस्टिन्क्ट (१९९२), क्लिफ हैन्गर (१९९३), स्टील मग्नोलिआज् (१९८९) और रैम्बो-३ (१९८८)।

अफ्रीकन क्वीन



यूनाइटेड आर्टिस्ट्स (यू.ए.)

यह एक सहकारी फिल्म निर्माण कम्पनी रही। इस कम्पनी का कभी कोई स्टुडियो नहीं रहा। फिल्म निर्माण के लिए आवश्यक सुविधाएँ यह कम्पनी किराए पर ही जुटाती रही। इस कम्पनी के निर्माता हॉलीवुड के भी आधार स्तम्भ रहे। **चार्ली चैप्लिन** डगलस फ्रेअर बैन्कस, मेरी पिक फोर्ड, ग्रिफिथ। फिल्म निर्माण एवं वितरण में इस कम्पनी ने कई उतार-चढ़ाव देखे। तीस के दशक से इस कम्पनी की फिल्में अच्छा मुनाफा कमाने लगी थीं। सहकारी कम्पनी होने से सभी इसके साथ आसानी से जुड़ते भी रहे। चैप्लिन से लेकर बस्टर कीटन तक, रोनाल्ड कोलमन से लेकर लारेन्स आलिविए तक। जेम्स बॉण्ड की फिल्मों ने इस कम्पनी को खूब धन कमाकर दिया है। रॉकी फिल्मों की शृंखला में पिंक पैन्थर (पीटर सेलर्स) शृंखला की फिल्में भी खूब चली हैं। यूनाइटेड आर्टिस्ट्स का सबसे बड़ा योगदान यही रहा कि बड़े सर्वशक्तिमान स्टुडियो के चंगुल से अभिनेताओं को छुड़ाने का काम इस कम्पनी ने किया। कई फिल्मों को (बॉण्ड की फिल्में) पूँजी उपलब्ध कराने का कार्य भी किया।

यूनाइटेड आर्टिस्ट कम्पनी की कई फिल्मों ने खूब नाम कमाया है-ल मिजरेबल (१९३५), द काल आव द वाइल्ड (१९३५), डेड एंड (१९३७), रेबेका (१९४०), जॉन फोर्ड की विख्यात वेस्टर्न स्टेजकोव (१९३९), चैप्लिन की द ग्रेट डिक्टेटर (१९४०), हिचकॉक की स्पेलब्राऊण्ड (१९५०), हम्फ्री बोगार्ट की द अफ्रीकन क्वीन (१९५२), गैरी कूपर की हाई नून (१९५२), माईक टॉड की अराउण्ड द वर्ल्ड इन एटी डेज (१९५६), अविस्मरणीय फिल्में रही हैं। कितनी ही फिल्में ऑस्कर पुरस्कारों को भी जीतती रहीं। बॉक्स ऑफिस पर भी सफल हुईं। वेस्ट साइड स्टोरी, टॉम जोन्स, मिड-नाइट काउबाय, वन फ्ल्यू ओवर द कूक्कूज नेस्ट, सर्वश्रेष्ठ फिल्में रहीं। वूडी अलन ने भी यूए के लिए फिल्में बनाई हैं। १९८१ में एमजीएम एवं यूए का विलय हो गया। यूनाइटेड आर्टिस्ट की बॉक्स ऑफिस पर सबसे अधिक धन वर्षा करने वाली फिल्में रही हैं-वन फ्ल्यू ओवर द कूक्कूज नेस्ट (१९७५), रॉकी (१९७६), रॉकी भाग २ (१९७९), फिडलर ऑन द रूफ (१९७१), ॲपोकैलिप्स नाऊ (१९७९), मूनरेकर (१९७९), थण्डरबॉल (१९६५), रिवेन्ज आव द पिंक पैन्थर (१९७८), द स्पाई हू लव्ड मी (१९७७) और अराऊण्ड द वर्ल्ड इन एटी डेज (१९५६)। ट्रांस अमेरिका कारपोरेशन के आधीन जाने के बाद से १९६७ से इस कम्पनी को वीडियो संस्करणों से भी लाभ मिलता रहा है। ■

■ रोमांटिक फिल्में

प्यार की रुनझुन

धुआँधार आँसू बहाने के लिए, महिला प्रेक्षकों को रिझाने के लिए, परिपूर्ण पारिवारिक फिल्में बॉक्स ऑफिस पर हमेशा धूम मचाती रही हैं, समूची दुनिया में। रोमांस ऐसी फिल्मों का कई बार कारण रहा है। कई बार परिणाम भी।आलोचकों के एक वर्ग ने हमेशा ही ऐसी फिल्मों को लताड़ा है। फिल्म तो वही होती है, जो दर्शकों को भाती है। रोमांस श्रेणी की फिल्में प्रेम भावना पर आधारित होती हैं। भावना प्रधान होती हैं। पृष्ठभूमि में नाट्य मंच घटनाओं के रहते भी रोमांस फिल्मों का केंद्र बिन्दु प्रेम होता है। विश्व साहित्य की कई अनमोल रचनाएँ भी इस श्रेणी में पर्दे पर आई हैं। रोमांस श्रेणी की फिल्मों में भाव-अभिव्यक्ति अभिनय के साथ संवाद भी महत्व रखते हैं। चरित्र के विविध पहलू संवादों द्वारा ही उजागर हो सकते हैं। इसलिए रोमांस श्रेणी की फिल्में तब संभव हुई, जब फिल्में बोलने लगीं।

रोमांस फिल्मों के प्रमुख तत्व रहे हैं प्रेम/ बलिदान/ परिवार के काम आना/ दुखों को झेलना/ दूसरों की भलाई करना/ स्वार्थ के परे परमार्थ अपनाना। इन सबके साथ प्रेम-प्यार के बंधनों में बँध जाना। ये फिल्में बड़ी लुभावनी रही हैं। पर्दे पर हिंसा/ नफरत/ प्रतिशोध/ संघर्ष न चाहने वाले दर्शकों का बहुत बड़ा वर्ग रोमांस श्रेणी की फिल्मों का भक्त रहा है। रोमांस फिल्मों की ओर महिलाओं का विशेष लगाव रहा। ऐसी फिल्मों को कभी दर्शकों की कमी नहीं पड़ी। रोमांस फिल्मों का सबसे बड़ा साथ तो मध्यम वर्ग ने दिया है। मध्यम वर्ग की सारी धारणाएँ-कारण-प्रभाव का युक्तिवाद, निर्णय लेने एवं परिणामों को सहन करने/ भुगतने की तैयारी इन फिल्मों के कथानकों का आधार रहा है। महिलाओं से संबंधित कई कहानियाँ/ उपन्यास पर्दे पर आ गए और लोकप्रिय भी हुए।

तीन बहनों की पारिवारिक कहानी लिटिल वुमन (१९३३) के साथ तीस के दशक से लेकर पचास के दशक तक रोमांस श्रेणी की कई यादगार फिल्में रुपहले पर्दे पर



ब्रूक शील्ड : द ब्ल्यू लैगून

अवतरित हुई हैं। स्टेला डलास (१९३७), रैण्डम हार्वेस्ट (१९४२), कासाब्लान्का (१९४२), फारएवर एम्बर (१९४७), जॉनी बेलिण्डा (१९४८), डिजाइरी (१९५४) आदि कई फिल्में दर्शकों में खूब लोकप्रिय रहीं। कासाब्लान्का फिल्म तो संबंधित सभी तत्वों के मिश्रण से एक साधारण प्रयास से कालजयी फिल्म तक पहुँच गई है। पचास के दशक में विलियम इन्गे के नाटक पिकनिक पर जोशुआ लोगन ने इसी शीर्षक से १९५५ में फिल्म बनाई तो किम नोवाक एवं विलियम होल्डन के अभिनय ने (साथ ही मून ग्लो थीम साँग के कारण भी) पिकनिक को बॉक्स ऑफिस पर पहुँचा दिया और इस फिल्म से प्रेरणा लेकर दर्जनों रोमांस श्रेणी की फिल्मों का अम्बार लग गया।

फ्रॉम हिअर टू ईटर्निटी (१९५३) फिल्म के बर्ट लैंकास्टर-डेबारा केर के समुद्र तट के रोमांटिक दृश्यों ने खूब खलबली मचा दी थी। कई ने आलोचना की, किन्तु यह फिल्म वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ऑस्कर' भी बटोरकर ले गई। मॅग्नीफिशियन्ट आब्सेशन (१९५४), सायोनारा (१९५८), पेटन प्लेस (१९५७), लव इज ए मेनी स्प्लेन्डर्ड थिंग (१९५५) के साथ दुनियाभर के लोकेशन्स जापान-हाँगकाँग तक पर्दे पर आ गए। द वर्ल्ड आव सुजी वाँग (१९६०) तक तो रोमांटिक फिल्मों का वर्चस्व बना रहा। साठ के दशक में और सत्तर के दशक तक रोमांस श्रेणी की फिल्में पूरी दुनिया में लोकप्रिय हुईं। प्रेम एवं विवाह के प्रपंच में रॉनस् डॉटर (१९७०) एवं मेयरलिंग (१९६८) में विवाहबाह्य रोमांस भी जुड़ गया। बलिदान एवं पश्चाताप के साथ पुर्नमिलन की थीम भी चलती रही (क्रेमर वर्सेस क्रेमर १९७९)।

कई फिल्मों में रोमांस दुखद अंत में परिणत हुआ। फिल्म लव स्टोरी (१९७०) ने ऐसी फिल्मों को बढ़ावा भी दिया। अनमैरीड वुमन (१९७८) के साथ समाज की समस्याएँ भी इन फिल्मों के साथ पर्दे पर आने लगीं। द ग्रीन रूम/ मोमेन्ट बाय मोमेन्ट एवं प्रामिसेस इन द डार्क फिल्मों में रोमांस को मृत्यु की त्रासदी में परिणत होता देख दर्शकों ने नाराजी भी प्रदर्शित की किन्तु रोमांस श्रेणी की फिल्में बनती ही रहीं। द वे वुई वेअर (१९७३) एवं अदर साइड आव मिडनाइट (१९७७) फिल्मों के साथ रोमांस बोल्ड भी होता गया।

रोमांस श्रेणी की फिल्मों के साथ लोकेशन फिल्मांकनों की विविधता के साथ महत्वपूर्ण रही है। श्रेष्ठ अभिनेत्रियों की श्रेष्ठतम भाव अदायगी भी। इन फिल्मों में क्लोज अप्स का उपयोग बड़ी कलात्मकता के साथ अपनाया जाता रहा है। ग्रीड गार्सन, मार्गरिट सलविन, डेबारा केर, जोन फोन्टेन, इन्ग्रिड बर्गमन, लाना टर्नड के भावपूर्ण चेहरों को पूरे पर्दे पर देखना हमेशा ही आनंददायी रहा है। रोमांस फिल्मों ने अकेलेपन के, पश्चाताप के, पूर्ण समर्पण के, त्याग बलिदान के कई श्रेष्ठ दृश्य भी पर्दे पर प्रस्तुत किए हैं जो अविस्मरणीय रहेंगे। जैसे बरसते पानी में भरे नैनों से बेली बेनेट का अपनी बेटी को उसके विवाह अवसर पर भरभराकर देखना (स्टेला डलास)। हम्फ्री बोगार्ट के कॅसाब्लान्का हवाई अड्डे पर इन्ग्रिड बर्गमन के आखिरी दीदार। जेनिफर जोन्स द्वारा हाँगकाँग की वीरान पहाड़ी पर मृत पड़े विलियम होल्डन का कल्पना दृश्य (लव इज ए मेनी स्प्लेन्डर्ड थिंग)। ग्रोअर

लव स्टोरी की राम कहानी

'रूमानी' फिल्मों में सदाबहार फिल्म लव-स्टोरी टिकट खिड़की पर सफल रही। फिल्म १९७० में प्रदर्शित हुई थी। इन फिल्म ने केवल अमेरिका और कनाडा में ही ५०० लाख डॉलर से अधिक मुनाफा कमाया था। इस फिल्म के निर्माण की कहानी मजेदार है। एरिक सिगल ने लव स्टोरी पर पटकथा लिखकर हॉलीवुड के सभी स्टुडिओ के चक्कर काटे। छह बड़े स्टुडिओ इस कथा को ठुकरा चुके तब मुश्किल से पैरॉमाउन्ट ने रॉबर्ट इवान्स के आग्रह पर विचार करना स्वीकार किया। रॉबर्ट इवान्स इस फिल्म की नायिका के लिए अपनी पत्नी एली मॅक्ग्रा का चयन कर चुके थे। इवान्स ने लेखक सिगल से आग्रह कर इस पटकथा पर एक उपन्यास लिखने को कहा और फिल्म रिलीज होने के पहले ही उपन्यास बाजार में लाने की व्यवस्था की।

प्रकाशक बड़ी मुश्किल से पाँच हजार प्रतियाँ छापने को राजी हुआ। इवान्स ने पच्चीस हजार डॉलर प्रचार में लगाकर उपन्यास की प्रतियाँ पच्चीस हजार कर दी। जब फिल्म रिलीज हुई तो इस उपन्यास ने रेकॉर्ड तोड़ सफलता अर्जित की। सजिल्द एवं सॉफ्ट कवर दोनों में ही यह पुस्तक 'बेस्ट सेलर्स' की सूची में पहली पायदान पर थी।

लैरी पिअर्स एवं बाद में अन्थोनी हार्वे निर्देशक के रूप में आए और गए। आखिर आर्थर हिलर ने बेमन से ही निर्देशक बनना स्वीकार किया। पाँच प्रमुख अभिनेताओं को नायक की भूमिका देने के प्रस्ताव गए। सभी ने ठुकरा दिया। रॉन ओ'नील नायक बना। और... 'लव स्टोरी' बनी, दिसंबर १९७० में। रिलीज हुई तो ऐसी 'हिट' फिल्म सिद्ध हुई कि रूमानी श्रेणी की फिल्मों में यह फिल्म 'आल टाइम ग्रेट' मानी जाती है।

गार्सन द्वारा ग्रेगरी पेक से आए पत्रों के अम्बार को देखते रहना और फिर भी प्रत्युत्तर न देने का निर्णय लेना (व्हॅली ऑव डिसिजन)।

सत्तर एवं अस्सी के दशकों में महिलाओं से संबंधित प्रश्नों पर प्रेम एवं रोमांस से उठकर वृहत विषयों पर पुस्तकें आती रहीं। उपन्यास छपते रहे। किन्तु रोमांस फिल्मों का वह दौर थमा रहा। अब नई महिला स्वतंत्र महिला को लेकर कुछ फिल्में अस्सी के दशक में बनी हैं। नब्बे के दशक में भी बन रही हैं-ऑर्डिनरी पीपुल (१९८०), टर्मस आव एनडीअरमेंट (१९८३), आउट ऑव अफ्रीका (१९८५) जैसी फिल्में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के ऑस्कर भी जीत रही हैं। हॉलीवुड थोड़ा सा रूमानी होने लगा है।

रोमांस श्रेणी की बॉक्स ऑफिस पर लोकप्रिय फिल्में- ◇ लव स्टोरी (१९७०) ◇ सायोनारा (१९५८) ◇ रैण्डम हार्वेस्ट (१९४२) ◇ सिन्स यू वेन्ट अवे (१९४४) ◇ वैली ऑव डॉल्म (१९६७) ◇ वैली ऑव डिसिजन (१९४५) ◇ ट्रैपिजी (१९५६) ◇ कासाब्लान्का (१९४३) ◇ समर आव फॉर्टी टू (१९७१) ◇ रोमियो एण्ड ज्युलिएट (१९६८) ◇ वन्स अपान ए हनीमून (१९४२) ◇ लिटिल वुमन (१९४९) ◇ रिटर्न ऑव द विण्ड (१९५६) एवं ◇ द ब्लू लैगून (१९८०)। ■

■ म्युजिकल फिल्में

मन को पंख लगाए संगीत ...

फिल्में बोलने लगीं और फिल्मों की एक अनूठी श्रेणी विकसित हुई- 'म्युजिकल्स।' गूँगे युग में यह संभव नहीं था। पहली 'बोलती' (और गाती) फिल्म 'द जाज़ सिंगर' (१९२७) के न्यूयार्क प्रीमियर पर आश्चर्यचकित दर्शकों को गाते गाते रुककर अल जोलसन ने कहा- 'थोड़ा ठहरिए। आपने अभी तक कुछ नहीं सुना है।' म्युजिकल्स के रूप में एक पूरी श्रेणी अभी दर्शकों के सामने जो आ रही थी वह तो शुरूआत थी। तीस के दशक से लेकर सत्तर के दशक तक 'म्युजिकल्स' की श्रेणी में जो फिल्में पर्दे पर आई हैं- दर्शकों के कान तृप्त हो गए हैं। 'म्युजिकल्स के साथ नृत्य-संगीत के आयाम भी जुड़ते गए हैं। दर्शकों की आँखें, मन एवं मस्तिष्क भी तृप्त हुए हैं। म्युजिकल्स श्रेणी की फिल्मों की विविधता एवं समृद्ध प्रस्तुतियों ने दर्शकों को न केवल श्रोता श्रेष्ठ बनाया है बल्कि संगीत लहरियों ने पर्दे पर 'प्रतिस्वर्ग' निर्मित कर दिया। गंधर्व गाते रहे हैं। अप्सराएँ नृत्य करती रही हैं। साठ एवं सत्तर के दशकों में दर्शक नए पलायनवादी आयाम ढूँढने लगा। पिचकती कारों की आवाजों ने एवं बंदूक की गोलियों की बौछारों में हाहाकार आया तो 'म्युजिकल्स' की श्रेणी अतीत में समा गई।



मेरी पिक फोर्ड

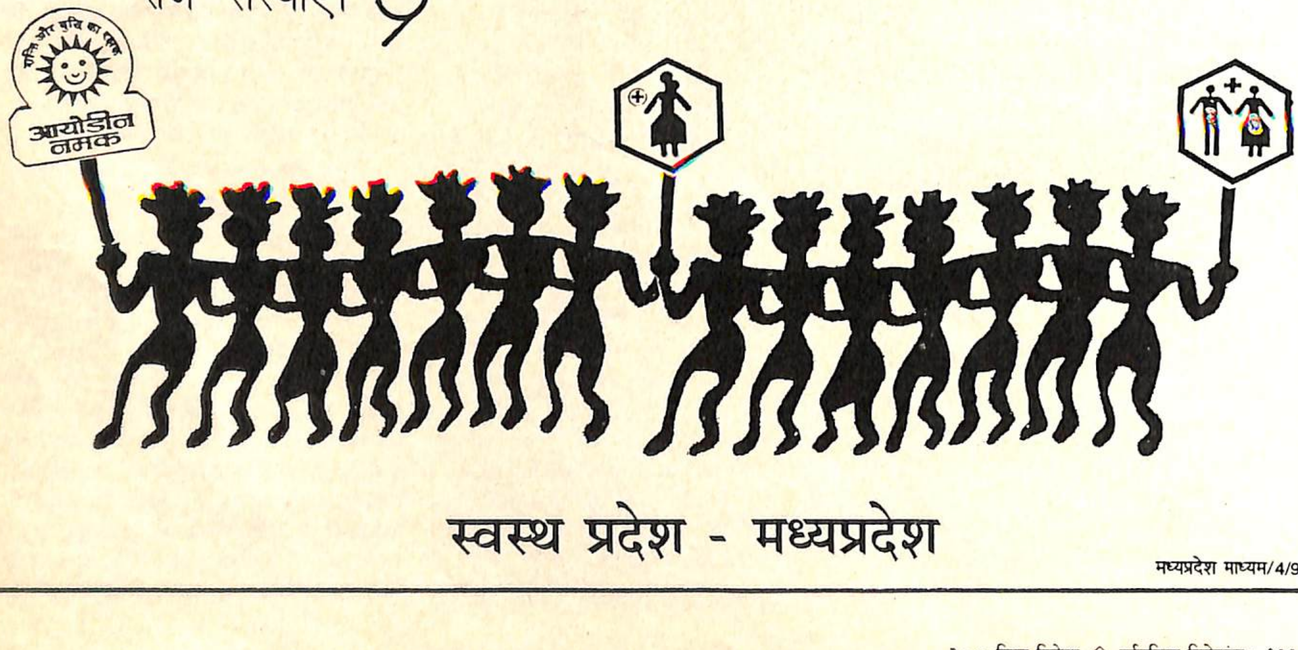
'म्युजिकल्स' का भी जमाना रहा और दर्शकों की माँग को पूरा करते 'म्युजिकल्स' निर्माण करते-करते निर्माता और स्टुडिओज किसी समय तो लाचार हो गए थे। 'म्युजिकल्स' के साथ इतने विविध कथानक और इतने टैलेंट्स एकत्रित हुए कि सारी साधन सामग्री टटपूंजी सिद्ध हुई। सबसे आसान तरीका यही रहा कि मंच से सीधा उठाकर 'स्टेज शो' पर्दे पर लाए जाने लगा। यूनिवर्सल ने शो बोट (१९२९), मार्क्स ब्रदर्स द कोकोनट एवं आर.के.ओ. कंपनी ने रिओ रिटा ऐसे ही बनाई। एम.जी.एम. स्टुडिओ 'म्युजिकल्स' श्रेणी की फिल्मों के निर्माण में अग्रणी रहा। द ब्राडवे मेलोडी (१९२९) एवं द ग्रेट जीगफेल्ड (१९३०) तो ऐसी भव्य 'म्युजिकल्स' रहीं कि दर्शकों ने इन फिल्मों को सिर पर उठा लिया। यूनिवर्सल (किंग आव जॉज, १९३०)एवं वार्नर स्टुडिओज (शो आव शोज, १९२९) भी प्रतियोगिता में उतर गए। तीस के दशक में एक नृत्य निपुण सितारा फ्रेड अस्टेअर पर्दे पर आया जो फ्लाइंग डाऊन टु रिओ (१९३३) से लेकर फिनियनंस रेनबो (१९६८) तक रूपहले पर्दे पर छाया रहा। फ्रेड अस्टेअर के साथ जिंजर रोजर्स की जोड़ी ने 'म्युजिकल्स' श्रेणी को ऊँचाई तक पहुँचा दिया।

तीस के दशक में प्रारंभ में 'म्युजिकल्स' ने निराश किया। १९३० में ७० 'म्युजिकल्स' फिल्में बनी थीं। १९३१ में दस से भी कम। फिल्म पंडितों को लगा कि आवाज का 'नयापन' का जादू उतर गया। वार्नर स्टुडिओज और उसकी तीन फिल्मों ने 'म्युजिकल्स' में फिर आस्थाएँ जगाई। तीस के दशक में मॉरिस शेवेलिए के रूप में एक और गायक-नर्तक आ गया। आर.के.ओ. कंपनी द्वारा निर्मित फ्रेड अस्टेअर-जिंजर रोजर्स की फिल्मों ने द गाय डायवोर्स (१९३४), एम.जी.एम. की मेटाइम (१९३७), यूनिवर्सल की थ्री स्मार्ट गर्ल्स (१९३६), पेरामाउन्ट ने बिंग क्रास्बी को लेकर और ट्वेंटी एथ-सेन्चुरी-फॉक्स ने मॉरिस शेवेलिए को लेकर 'म्युजिकल्स' का ऐसा अम्बार रचा कि म्युजिकल्स बॉक्स आफिस पर कमाऊ सिद्ध होने लगीं। फॉलिज बर्जेरे (१९३५), ऑन द रिविएरा (१९५१) ने तो लोकप्रियता का इतिहास रचा। नन्हीं तारिका शीर्ले टेम्पल के रैप डान्सेस भी दर्शकों को पसंद आए।

युद्ध के दौरान एवं बाद में चालीस के दशक में भी म्युजिकल्स दर्शकों को रिझाती रहीं। यॉकी डूडल डैन्डी (१९४२), धिस इज द आर्मी (१९४३) सफलतम रहीं। एम.जी.एम. स्टुडिओज के पास जीन केली एवं स्टैनले डोनान जैसे नर्तक एवं विन्सेन्ट मिनेली जैसे निर्देशक थे। जुडी गार्लेंड/मिकी रूने/फ्रैन्क सिनात्रा/जेन पॉवेल सितारों के साथ कुशलतम तंत्रज्ञ एवं वादक जुड़ गए। तैराकी में कुशल एस्थर विलियम्स आ गई तो पानी पर नृत्य भी संयोजित होने लगे। भव्य सेट्स बने। कल्पनातीत सिचुएशन्स विकसित की गईं। 'म्युजिकल्स' में विविधता आ गई। मिट मी इन सेंट लुईस (१९४४), जिगफेल्ड फालीज (१९४६), द जोलसन स्टोरी (१९४६), समर हॉलिडे

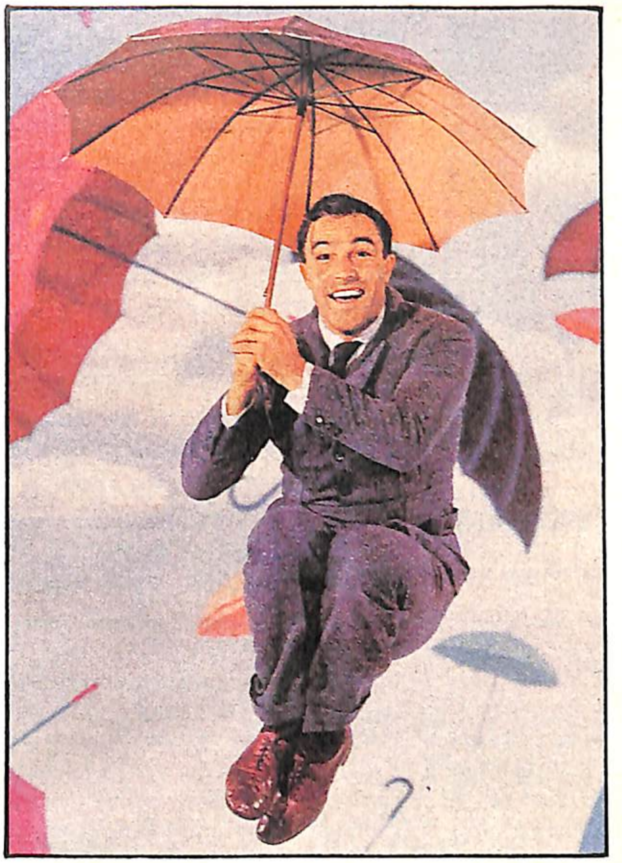
स्वस्थ लोगों का अर्थ है, एक प्रगतिशील राज्य। इस बात को ध्यान में रखकर चलाया जा रहा है प्रदेशव्यापी जनस्वास्थ्य शिक्षा का अनूठा अभियान। इसके तहत डायरिया से होने वाली मौतों पर नियंत्रण के लिए 19 अप्रैल से 18 जून तक प्रदेशव्यापी अभियान चलाया जा रहा है। अभियान में लोगों को ओ.आर.एस., मां के दूध के महत्व, घरेलू उपचार और आयोडीन नमक के विषय में बताया जाएगा।
अभियान में भागीदार होंगी पंचायती राज संस्थाएं।

अभियान - सबके स्वास्थ्य के लिए



स्वस्थ प्रदेश - मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश माध्यम/4/95



सिनगिन इन द रैन

फिल्में जहाँ भी लगीं सारा सिनेमा-थिएटर नाचने लगा था। भारत में भी 'रॉक अराउण्ड द क्लॉक' फिल्म ने धूम मचाई थी। बिल हैले का कॉमेट रॉक-ग्रुप इस फिल्म की सफलता में महत्वपूर्ण रहा। एल्विस प्रिस्ले के नृत्य भी खूब पसंद किए गए और प्रिस्ले तो एक जीवित किंवदंती बन गया था।

म्युजिकल्स का निर्माण इतना जटिल एवं महँगा रहा कि मंच पर सफलता प्राप्त 'शोज' ही फिल्मों में परिणत करने की नीति बन गई, क्योंकि फिर 'म्युजिकल' फिल्म की सफलता निश्चित हो जाती थी। द किंग एंड आय (१९५६), साउथ पैसिफिक (१९५८), वेस्ट साइड स्टोरी (१९६१) एवं द साउण्ड आव म्युजिक (१९६५) और ऑलिवर! (१९६८) के साथ भी यही निश्चितता काम आई। 'माय फेअर लेडी' (१९६४) के साथ वेस्ट साइड स्टोरी/साउण्ड ऑव म्युजिक और ऑलिवर तो वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर भी जीत ले गईं। बाद में 'म्युजिकल्स' बनाने की रिस्क कोई स्टुडिओज/निर्माता उठाने को तैयार नहीं हुआ। द लास्ट होरायजन (१९७३) एवं पेन्ट युवर वैगन (१९६९) की बॉक्स आफिस पर असफलता ने भी निर्माताओं को निरुत्साहित किया। दस वर्ष पहले अमेडिअस (१९८४) 'म्युजिकल' ने वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीता भी लेकिन अब 'म्युजिकल्स' श्रेणी में फिल्में नहीं बन रही हैं... हाँ पुरानी सदाबहार म्युजिकल्स के नृत्य गीतों की संकलित फिल्में 'दैट इज इंटरटेनमेंट भाग १, २ एवं ३ अवश्य आई हैं (क्रमशः १९७४, १९७६ एवं १९९४ में) म्युजिकल्स 'नोस्तालजिआ' के रूप में प्रखर है। ■

(१९४८) फिल्मों ने म्युजिकल्स श्रेणी को समृद्ध करने में जबर्दस्त योगदान दिया।

पचास के दशक में अँन अमेरिकन इन पैरिस (१९५१) वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर पुरस्कार लेने वाली म्युजिकल रही। जीन केली की फिल्म सिंगिग इन द रेन (१९५२) तो अद्भूत म्युजिकल है। आज भी यह फिल्म देखते ही बनती है। ऐसी फिल्में अब बन ही नहीं सकती। पचास के दशक में 'रॉक एण्ड रॉल' नृत्य विधा लोकप्रिय हुई। 'रॉक अराउंड द क्लॉक' (१९५६) और डोन्ट नॉक द रॉक (१९५६)

□ बॉक्स-आफिस पर लोकप्रिय म्युजिकल्स फिल्में -

◇ ग्रीज (१९७८) ◇ द साउण्ड आव म्युजिक (१९६५) ◇ सदरडे नाइट फिवर (१९७७) ◇ अमेरिकन ग्राफिती (१९७३) ◇ द बेस्ट लिटिल व्होअर हाऊस इन टेक्सास (१९८२) ◇ मेरी पॉपिन्स (१९६४) ◇ फिडलर ऑन द रूफ (१९७१) ◇ अँनी (१९८२) ◇ ए स्टार इज बोर्न (१९७६) ◇ फ्लैश डान्स (१९८३) ◇ कोल माइनर्स डॉटर (१९८३) ◇ फूटलूज (१९८४) ◇ पर्पल रेन (१९८४) ◇ हैन्स क्रिश्चियन अँण्डर सेन (१९५२) ◇ द रोड टु मोरोक्को (१९४२) ◇ सेवन ब्राइड्स फॉर सेवन ब्रदर्स (१९५४) ◇ द विजार्ड आव ओज (१९३९), ओक्लाहोमा (१९५५) एवं पोपाया (१९८०)।

हॉलीवुड : फिल्म श्रेणियाँ

हॉलीवुड और भारत की फिल्मों में गुण एवं मात्रा में बड़ा अंतर मिलता है। वह है श्रेणियों का। भारत में लगभग सभी फिल्मों में सभी रस होते हैं। अधिकांश फिल्मों की लम्बाई अधिक मिलती है। हॉलीवुड की फिल्मों में आधारभूत विषय होता है और इस तत्व से फिल्म को श्रेणी में रखा जा सकता है। हॉलीवुड की अधिकतर फिल्में डेढ़ घंटे की (९० मिनट) होती हैं। कुछ दो घंटे की। बहुत कम अधिक लम्बाई की होती हैं। हॉलीवुड में म्युजिकल्स की श्रेणी की फिल्मों में ही नृत्य संगीत होता है। एक्शन एडवेंचर श्रेणी में मारधाड़ होती है। ऐसा नहीं होता कि एक ही फिल्म में सब कुछ ठूँसा गया हो। हॉलीवुड की फिल्मों में भी ऑल स्टार कास्ट फिल्में होती हैं। फॉर्मूला फिल्में भी। वहाँ फ्लॉप और घटिया फिल्में भी खूब बनती हैं। हॉलीवुड की फिल्मों को कई पुस्तकों में, फिल्म सूचियों में श्रेणीवार रखा जाता है। कुछ श्रेणियाँ सभी में सामान्य रूप से सम्मिलित मिलती हैं-जैसे वेस्टर्न्स, कॉमेडीज, म्युजिकल्स, हॉरर, साइंस-फिक्शन, फंतासी, एक्शन एडवेंचर, ड्रामा ये श्रेणियाँ शुद्ध श्रेणियाँ हैं। सर्वमान्य हैं। डेविड पिअरे ने अनाँटामी आव मूवीज पुस्तक में थ्रिलर्स, रोमांस को भी उल्लेखित किया है तो अँडल्ट एवं चिल्डेन फिल्मों की पृथक श्रेणियाँ नहीं ली हैं। पीटर वे मार्क वन थाऊजण्ड बेस्ट मूवीज ऑन वीडियो में अँडल्ट एवं थ्रिलर्स फिल्मों को सम्मिलित करता है। किन्तु रोमांस एवं चिल्डेन फिल्मों को नहीं।

हॉलीवुड की फिल्मों की विशेषता रही है विविधता।



स्कारलेट स्ट्रीट (१९४५)

सनसनी का दूसरा नाम

थ्रिलर्स

थ्रिलर्स श्रेणी की फिल्मों का मूलमंत्र होता है सनसनी और तनाव। अपने आप में ये तत्व काफी नहीं होते। दर्शकों को लगातार सनसनीखेज दृश्यों के द्वारा तनाव की स्थिति में रखा ही नहीं जा सकता। ऐसा हो तो वह कैसी कला और कैसा मनोरंजन कहलाएगा...! जब तक इन तत्वों को कोई नैतिक दिशा न दी जाए। मानव के सामाजिक रिश्तों के प्रति जागरूकता न आए। इसीलिए सनसनी एवं तनाव के साथ फिल्मों में और भी कई तत्व जुड़ जाते हैं। थ्रिलर्स श्रेणी की फिल्मों में कई रूप मिलते हैं जैसे एक्शन- एडवेंचर। गुंडा-गर्दी वाले थ्रिलर्स। मनोवैज्ञानिक थ्रिलर्स। पीछा करो थ्रिलर्स। कॉमेडी थ्रिलर्स। रहस्य-खोजी थ्रिलर्स। थ्रिलर्स श्रेणी की फिल्में आजकल परिपक्वता की ओर, विकसित हो रही हैं। मजेदार होने के साथ ही यह श्रेणी खूब कमाऊ सिद्ध हो रही है।

लुमिएर की पहली फिल्म अराइवल ऑव द ट्रेन (१८९५) के साथ थ्रिलर्स श्रेणी की फिल्मों की शुरूआत हुई है। गूँगे युग में द कैबिनेट ऑव डॉक्टर केलिगरी (१९१९) एवं द पेनल्टी (१९२०) से इन फिल्मों में निखार आया है। द पेनल्टी के बाद द हन्च बैक ऑव नोत्रेडम (१९२३) में लॉन चैने एक अभिनेता के रूप में स्थापित हुआ। हन्च बैक एक हॉरर-थ्रिलर रही। लगभग १९२६ में थ्रिलर श्रेणी वास्तव में परिपक्व हुई- अल्फ्रेड हिचकॉक के साथ। फिल्म थी द लॉजर। लंदन में एक हत्यारा सुनहरे बालों वाली महिलाओं की हत्या करता है। काले लम्बे लबादे से लदा हत्यारा एक काला बैग लिए रहता है। क्या है इस बैग में?- हिचकॉक की पहचान स्थापित करने वाली यही फिल्म है। आगे चलकर हिचकॉक सस्पेंस का बेताज बादशाह बन गया।

जोसेफ वान स्टर्नबर्ग अंडर वर्ल्ड (१९२६), फित्जेराल्ड के उपन्यास पर आधारित द ग्रेट गॅटस्बी (१९२५) के साथ श्रेष्ठ कथानक थ्रिलर्स फिल्मों के आधार में आए। तीस का दशक तो थ्रिलर्स का दशक रहा। जेम्स कैग्ने, एडवर्ड जी. रॉबिनसन, पाल मुनी, पीटर लारी जैसे महारथी थ्रिलर्स फिल्मों में चमकने लगे। लिटिल सीजर (१९३०), पब्लिक एनिमी (१९३१) एवं स्कारफेस (१९३२) के साथ गैंगस्टर थ्रिलर्स लोकप्रिय हो गई। क्विक मिलियंस (१९३१) के साथ स्पेंसर ट्रैसी भी एंटी हीरो की इमेज में जम गया। हम्फ्री बोगार्ट द माल्टिसी फाल्कन (१९३१) के साथ थ्रिलर्स श्रेणी में प्रतिष्ठा आ गई। हिचकॉक ने द मॅन हू न्यू टू मच (१९३४), द थर्टी नाइन स्टेप्स (१९३५), द सीक्रेट एजेंट (१९३६), सेबोटेज (१९३६) एवं द लेडी वेनिरोस (१९३८) के साथ जॉन बचन, सॉमरसेट मॉम, जोसेफ कोनरॉड जैसे साहित्य के सितारों की कृतियाँ भी पर्दे पर आ गई। यह माना जाता रहा कि द थर्टी नाइन स्टेप्स का फिल्माया जाना ही असंभव होगा। किंतु हिचकॉक ने इस असंभव को संभव बना दिया। बाद में १९६३ में द बर्ड्स को फिल्माकर हिचकॉक ने फिर ऐसा किया।

आर्सन वेल्स की सिटिजन केन (१९४१) के साथ तो थ्रिलर्स श्रेणी ऐसी परिष्कृत हुई कि इस फिल्म को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पच्चीस फिल्मों में पहला क्रम मिलता है। हिचकॉक की रेबेका (१९४०) वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर प्राप्त करने वाली फिल्म रही। अब ग्राहाम ग्रीन/ रेमंड शांडलर/ एरिक अम्बलर/जैसे सस्पेंस उपन्यासों के लेखकों की खूब चलती रही। मन हंट (१९४१), मिनिस्ट्री ऑव फिअर (१९४४), हिचकॉक की सस्पिशियन (१९४१) के साथ स्पेलबाउंड (१९४५) एवं नोटोरिअस (१९४६) ने मनोवैज्ञानिक थ्रिलर्स की शुरूआत की। बाद में सायको (१९६०) के साथ थ्रिलर्स मनोविज्ञान आधारित बन गई। चालीस के दशक की विशेष उल्लेखनीय थ्रिलर्स रही है- द स्पाइरल स्टेअरकेस (१९४६), द किलर्स (१९४६) एवं द पोस्टमन आल्वेज रिंग्स ट्वाइस (१९४६)।

अल्फ्रेड हिचकॉक ने थ्रिलर्स फिल्मों के इतिहास में एक नया और सुनहरा अध्याय जोड़ा है। थ्रिलर्स फिल्म देखते समय दर्शक अंधेरे में सनसनी और तनाव में साँस लेता है!

पचास का दशक हिचकॉक दशक रहा। एक से बढ़कर एक अनगिनत थ्रिलर्स हिचकॉक टच (स्पर्श) से सोना बन गई हैं। स्ट्रेंजर्स ऑन ए ट्रेन (१९५१), आय कन्फेस (१९५३), रिअर विण्डो (१९५४), द मॅन हू न्यू टू मच (१९५६ में पुनश्च), द रॉग मॅन (१९५६), वर्टिगो (१९५८) और सबसे बढ़कर नॉर्थ बाय नॉर्थ वेस्ट (१९५९)। पचास के दशक में सोशल थ्रिलर्स भी बनी। एलिया कजान की ऑन द वाटरफ्रंट (१९५४) आंशिक थ्रिलर रही। ब्लैक बोर्ड जंगल (१९५६), द हार्डर दे फॉल (१९५६), फिअर स्ट्राइक्स आउट (१९५७) विशेष उल्लेखनीय रही।

साठ के दशक में पहली बॉण्ड फिल्म डॉक्टर नो (१९६२) के साथ थ्रिलर्स की नई शैली पर्दे पर आ गई। जेम्स बॉण्ड की फिल्में तो एक तहलका रहीं। बॉक्स आफिस पर नए कीर्तिमान स्थापित हुए। आर्थर पेन की बोनी एंड क्लाइड (१९६७) के साथ तो ऐसी ग्राफिक हिंसा पर्दे पर आ गई, ऐसी बौद्धिक स्तरीयता के साथ कि थ्रिलर्स को नया आयाम मिल गया। जो ठेठ नैचरल बॉर्न किलर्स (१९९४) तक आकर परिष्कृत हुआ है। बोनी एंड क्लाइड का क्लाईमेक्स तो एक जादुई प्रभाव वाला फिल्मांकन रहा। इस फिल्म से हिंसा/अपराध का गौरवान्वीकरण शुरू हुआ है। ■

थ्रिलर्स श्रेणी की लोकप्रिय प्रमुख फिल्में : ◇जॉज (१९७५) ◇द गॉड फादर (१९७२) एवं द गॉड फादर पार्ट टू(१९७४) ◇थंडरबॉल (१९६५) ◇गोल्ड फिंगर (१९६४) ◇द फ्रेंच कनेक्शन (१९७१) ◇फ्राम रशिया विद लव (१९६४) ◇डर्टी हैरी (१९७१) ◇द चायना सिन्ड्रोम (१९७९) ◇श्री डेज आव द कोन्डोर (१९७५) ◇द स्पाई हू लव्ड मी (१९७७) ◇अनाटामी आव ए मर्डर (१९५९) ◇टू कैच ए थीफ (१९५५) ◇द बिग स्लीप (१९४६) ◇इन द हीट आव द नाइट (१९६७) ◇द अनटचेबल्स (१९८४) ◇केपफिअर (१९९२) ◇द फ्युजिटिव (१९९३) ◇द फर्म (१९९४) ◇पेलिकन ब्रिफ (१९९४) ◇नेचरल बॉर्न किलर्स (१९९४) ◇गुड फेलाज (१९९०) ◇प्रिजिज ऑनर (१९८५) ◇द कॉटन क्लब (१९८४) एवं मैरीड टू द मॉब (१९८८)।

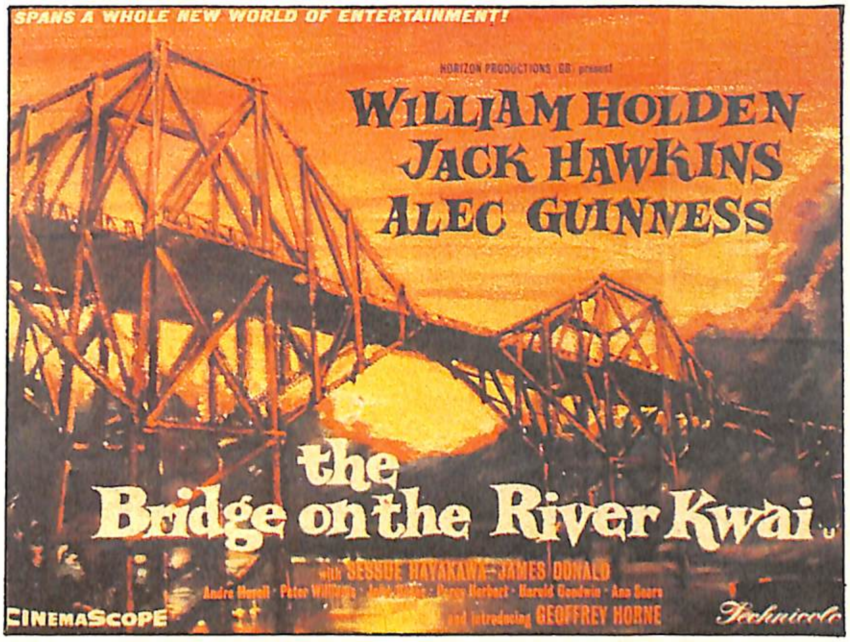
बहुरूपिया फिल्में
एक्शन- एडवेंचर

एक्शन- एडवेंचर श्रेणी की फिल्में बहुरूपिया होती हैं। तलवारबाजी से लेकर तोपों की गर्जना इनमें सुनाई देती हैं। इस कैनवास पर महाकाव्य भी है और खेल भी।

एक्शन- एडवेंचर श्रेणी की फिल्में बहुरूपिया फिल्में हैं। इन फिल्मों में कई श्रेणियाँ समा जाती हैं। तलवारबाजी वाली फिल्मों से लेकर युद्ध फिल्मों तक। बाइबिल आधारित फिल्मों से लेकर आधुनिक दुर्घटनाप्रधान फिल्मों तक। कॉस्ट्यूम फिल्मों से लेकर स्पोर्ट्स फिल्मों तक।

एक्शन- एडवेंचर श्रेणी की फिल्मों का स्पेक्ट्रम बड़ा है। एक्शन- एडवेंचर श्रेणी की फिल्मों में बजट भी बड़ा रहता है। टिकट-खिड़की पर ये फिल्में मुनाफा भी कमाती हैं। दर्शक इन फिल्मों को बड़े चाव से देखते भी हैं। साधारण दर्शक की मानसिकता यही बनी है कि एक्शन नहीं, तो मजा ही नहीं। फिल्मों के निर्माण में भी एक्शन-एडवेंचर फिल्मों से सारा अतीत पटा मिलता है। फिल्म निर्माण के प्रारंभिक दौर से (१९१५ से १९३१ तक) ही बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाने वाली एक दर्जन फिल्मों में आधे से अधिक एक्शन- एडवेंचर श्रेणी की फिल्में ही रही हैं। दस के दशक से लेकर नब्बे के दशक तक ग्रिफिथ-डिमाइल से लेकर स्पीलबर्ग- कैमरून तक, द बर्थ आव ए नेशन (१९१५) से लेकर ठेठ ट्रू लाइज (१९९४) तक सब दूर एक्शन और एडवेंचर भरा मिलता है।

रूडोल्फ वैलेन्टिनो द फोर हार्समैन आव द अपोकैलिप्स (१९२१) से एरॉल क्लीन तक (द एडवेंचर्स आव राबिनहुड १९३८) और सिल्वेस्टर स्टेलोन, अरनॉल्ड स्केवरजेनेगर तक (फर्स्ट ब्लड (१९८२) एवं द लास्ट एक्शन हीरो (१९९३) क्रमशः) सारे जगमगाते सितारे एक्शन- एडवेंचर के बलबूते पर ही शिखर-पुरुष सिद्ध हुए हैं। एक्शन- एडवेंचर की फिल्मों की महिमा न्यारी है। गूँगी फिल्मों के युग में भी केवल एक्शन- एडवेंचर के कारण कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाती रहीं। इन फिल्मों में अर्थात तलवारबाजी की फिल्में अधिक रहीं। रेमाँ नोवारो की द प्रिजनर आव जेन्डा (१९२२), स्कारामाउश (१९२३), डगलस फेअरबैंक की द मार्क आव जोरो (१९२०), द आयर्न मास्क (१९२९), बेनहर (१९२६), द टेन कमांडमेंट्स (१९२३), द थीफ आव बगदाद (१९२४), द वाइकिंग (१९२९), कई और फिल्में भी केवल एक्शन- एडवेंचर के तत्वों के कारण लोकप्रिय हुईं।

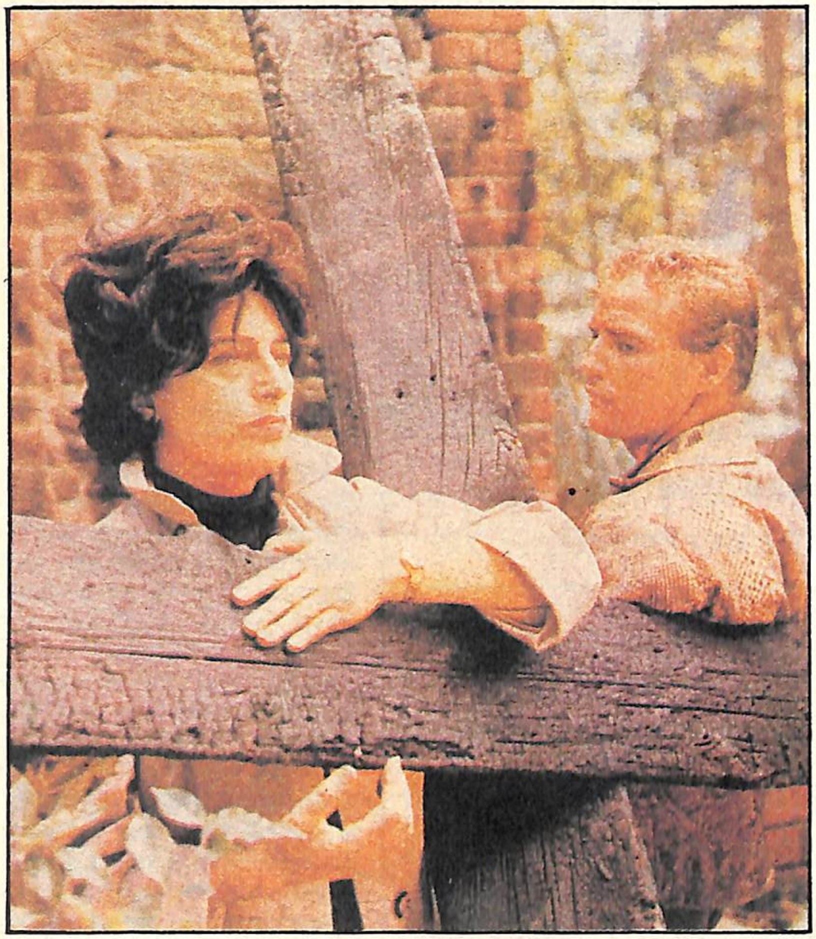


ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई

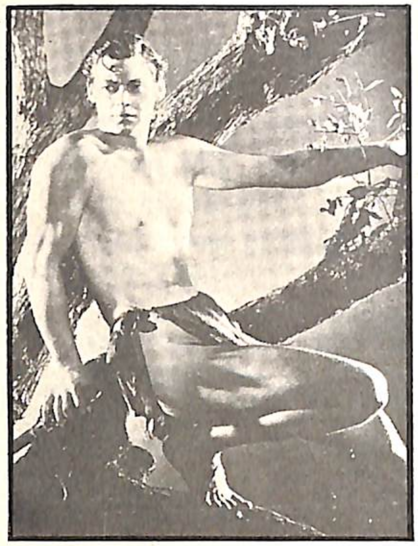
तीस के दशक में एक्शन-एडवेंचर श्रेणी की फिल्मों को युद्ध का नया विषय भी मिल गया। युद्ध की स्थितियाँ तो अपार एक्शन और एडवेंचर की संभावनाएँ प्रस्तुत करने वाली होती हैं। विंग्ज (१९२७) को पहला सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर पुरस्कार मिला। द डॉन पेट्रोल (१९२७), क्लार्क गेबल की पहली फिल्म हेल डाइवर्स (१९३१) के साथ ऑल क्वाएट ऑन द वेस्टर्न फ्रंट (१९३०) ने युद्ध फिल्मों को स्थापित कर दिया। ऑल क्वाएट... को भी सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर मिल गया। तीस के दशक में कास्ट्यूम प्रधान फिल्में भी बनीं। इतिहास के पृष्ठों से उठाए कथानकों में क्लिओपात्रा (१९३४), द चार्ज आव द लाइट ब्रिगेड (१९३६), गंगादिन (१९३९), द लास्ट डेज आव पोम्पेई (१९३५), द रेंस केम (१९३९) फिल्मों ने लोकप्रियता अर्जित की।

युद्ध के दौरान युद्ध-फिल्में बनती रहीं। होवार्ड हॉक की फिल्म सार्जेंट यॉर्क (१९४१) में गैरी कूपर को ऑस्कर पुरस्कार मिला। इस दौरान एरॉल फ्लीन, एडवर्ड जी. रॉबिनसन और जेम्स कैग्ने जैसे महानायक युद्ध फिल्मों में चमकते रहे। युद्ध के बाद फिर तलवारबाजी की फिल्मों का युग आया। तब तक टेक्नीकलर परिष्कृत हो गया था। सिंदबाद द सेलर (१९४७), ए एडवेंचर्स आव डॉन जुआन (१९४८) और जीन केली की सदाबहार फिल्म द थ्री मस्केटीअर्स (१९४८) लोकप्रिय हुईं। पचास के दशक ने दस्तक देना शुरू किया था कि भव्य-विराट फिल्मों का युग आ गया। डिमाइल की सैमसन एंड डिलाइला (१९४९) तो आज भी बड़े चाव से देखी जा रही है। डेविड एंड बाथ्शेबा (१९५१) वर्ष की सबसे अधिक कमाऊ फिल्म बन गई। कोवादिस (१९५२) ने दुनियाभर में प्रतिष्ठा अर्जित की। टेलीविजन की चुनौतियों का उत्तर देने के लिए रुपहला पर्दा अब वाइड स्क्रीन बन गया। फॉक्स के द रोब (१९५३) के साथ सिनेमा स्कोप आ गया। दिस इज सिनेरामा (१९५२), द सेवन वंडर्स आव द वर्ल्ड (१९५६) के साथ सिनेरामा तकनीक और अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज (१९५६) के साथ माइकेल टॉड का टॉड-एओ प्रोसेस भी आ गया।

विराट-भव्य फिल्मों के दौर में बाइबिल आधारित फिल्में तो सर्वाधिक बनी हीं। ऐतिहासिक पीरियड प्रधान और कास्ट्यूम प्रधान फिल्में भी। सभी फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर ऐसी अभूतपूर्व सफलता अर्जित की कि ब्लाक बस्टर फिल्मों के रूप में इस दौर को अलग से पहचाना जाता है। इन फिल्मों की सारी निर्माण प्रक्रिया में ही कुछ ऐसा असामान्य भव्य था कि इन बड़े बजट की, नामी सितारों की, विश्व प्रसिद्ध निर्देशकों की इन फिल्मों को एपिक्स (महाकाव्य) कहा जाता है। क्वेन्टिन डुरवर्ड (१९५५), स्टुअर्ट ग्रेंजर की तूफानी तलवारबाजी की फिल्में प्रिजनर आव जेंडा (१९५२) एवं स्कारामाऊश (१९५२) के



अन्ना मेगनानी-मर्लिन ब्राण्डो :
द फ्यूजीटीव



टारजन द एप मेन : जॉनी वेसमूलर

साथ ही युद्ध फिल्मों में भी नया युग आ गया। बैटल क्राई (१९५५) एवं द सी चेस (१९५५) के शुरू हुए इस युद्ध फिल्मों के दौर में निर्माता सैम स्पाईगल निर्देशक डेविड लीन की फिल्म द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई (१९५७) ने लोकप्रियता में प्रतिमान स्थापित किए और वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर पुरस्कार भी जीता।

एक्शन- एडवेंचर फिल्मों की सूची लम्बी है। द सिल्वर चैलिस (१९५५), द प्रॉडिगल (१९५५), सलोमी (१९५३), अलेक्जांडर द ग्रेट (१९५६), यूलिसिस (१९५४) कई फिल्में विश्व बाजार में सफलतम सिद्ध हुई है। लेकिन सोलोमन एंड शीबा (१९५९) और स्पाटकिस (१९६०) के साथ भव्य फिल्मों का युग जाता रहा। सैमुअल ब्रॉनस्टन के एल सिड (१९६१) एवं किंग आव किंग्ज (१९६१) के साथ बाराबस (१९६२), क्लिओपात्रा (१९६३) और द बाइबिल (१९६६) के साथ तो बाइबिल आधारित फिल्मों का निर्माण लगभग खत्म हो गया।

साठ के दशक में कुछ युद्ध फिल्में बनीं: लारेंस आव अरेबिया (१९६२), द गन्स आव नॅवरोन (१९६१), द लाँगेस्ट डे (१९६२), वॉन रॉन एक्सप्रेस (१९६५), द डर्टी डजन (१९६७) और पैटन (१९७०) एवं टोरा! टोरा! टोरा (१९७०)। ये बॉक्स ऑफिस पर लोकप्रिय रहीं। सत्तर का दशक आते ही एक्शन- एडवेंचर श्रेणी में डिजास्टर (दुर्घटना) फिल्मों का युग आ गया।

सत्तर के दशक में एक्शन- एडवेंचर श्रेणी में स्पोर्ट्स मूवीज की उपश्रेणी भी प्रखर हुई। स्पोर्ट्स (खेल) भी एक्शन- एडवेंचर के तत्वों से लबालब होते हैं- खासकर, आधुनिक प्रौद्योगिकी प्रधान खेल। रॉबर्ट अलाड्रिच की अमेरिकन फुटबॉल से संबंधित फिल्म द लाँगेस्ट यार्ड (१९७४) ने ऐसी फिल्मों की शुरुआत की। सिल्वेस्टर स्टेलोन की रॉकी (१९७६) ने स्पोर्ट्स फिल्म को प्रतिष्ठा दी। रॉकी को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर मिला। पैरामाउंट की द बैड न्यूज बेअर्स (बास्केटबॉल) एवं बर्ट रैनोल्ड की सेमी-टफ (फुटबॉल), पॉल न्यूमन की स्लैप शाट (बर्फ-हॉकी), वन-बाई-वन (बास्केटबॉल), नार्थ उलास फॉर्टी (फुटबॉल), ब्रेकिंग अवे (साइकलिंग) आदि के साथ स्पोर्ट्स मूवीज का दौर खत्म हुआ। खासकर डिजनी के खेमे से स्पोर्ट्स-कॉमेडीज श्रेणी की फिल्में लगातार आती रही हैं। अवसेंट माइंडेड प्रोफेसर (बास्केटबॉल) से लेकर द एंजेलस इन द आउटफील्ड (बेसबॉल) तक डिजनी की फिल्में नब्वे के दशक में दाखिल हो गई हैं।

भव्य-महँगी एक्शन- एडवेंचर श्रेणी की फिल्मों में अब आने वाले कथानक अतीत के नहीं, वर्तमान से संबंधित होते हैं। युद्ध-फिल्मों में विएतनाम युद्ध की पृष्ठभूमि में बनी फिल्मों का सिलसिला भी प्लैटून (१९८६) के बाद थम सा गया है। प्लैटून को वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। ■

बॉक्स आफिस पर सफल युद्ध-फिल्में: ◇ प्लैटून (१९८६) ◇ गुड मॉर्निंग विएतनाम (१९८७) ◇ अपोकैलिप्स नाऊ (१९७९) ◇ एम.ए.एस.एच. (१९७०) ◇ पैटन (१९७०) ◇ द डीअर हंटर. (१९७८) ◇ फुल मेटल जैकेट (१९८७) ◇ मिडवे (१९७६) ◇ द डर्टी डजन (१९६७) ◇ ए ब्रिज टू फार (१९७७) ◇ हंट फॉर रेड ऑक्टोबर (१९९०) ◇ टॉप गन (१९८६) ◇ द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई (१९५७) ◇ द लाँगेस्ट डे (१९६२) ◇ द गन्स आँव नॅवरोन (१९६१) ◇ टू हेल एंड बैक (१९५५)। **प्रमुख तलवारबाजी की फिल्में:** ◇ द मार्क ऑव जोरो (१९२०) ◇ द आयर्न मास्क (१९२९) ◇ एडवेंचर्स आव रॉबिनहूड (१९३८) ◇ सिंदबाद द सेलर (१९४७) ◇ द थ्री मस्केटीअर्स (१९४८) ◇ प्रिजनर आव जेंडा (१९५२) ◇ स्कारामाऊश (१९४८) ◇ फ्लेम एंड द ॲरो (१९५०) ◇ कोनान द बार्बेरिअन (१९८२) ◇ स्वैशबकलर (१९७६) ◇ आईवानो (१९५२)। **प्रमुख खेल (स्पोर्ट्स) फिल्में:** ◇ रॉकी (१९७६) ◇ रॉकी सेकंड (१९७९) ◇ द लाँगेस्ट यार्ड (१९७४) ◇ सेमी टफ (१९७७) ◇ द बैड न्यूज बेअर्स (१९७७) ◇ द चेरिअट्स ऑव फायर आदि।

हवा में छलाँग लगाना। आग की लपटों में झुलस जाना। हवाई जहाज या पहाड़ से कूदना। मोटर में बैठकर एक्सीडेंट करना। ये तमाम दृश्य 'स्टंट' कहलाते हैं और इनका अभिनय करने वाले जाँबाज, यमराज से सीधे हाथ मिलाते हैं।

खतरों से खेलती स्टंट फिल्में

समय बड़ा बलवान है। गूँगी फिल्मों के दौर में थोड़े से ही स्टंटमेन रहे वे या तो जख्मी हुए, मर गए या फिल्मों की दुनिया से बाहर हो गए। आज भी स्टंटमेन जख्मी होते हैं। किन्तु उनकी सुरक्षा के लिए संगठन बने हैं। प्रौद्योगिकी सहायक हो रही है। हर एक स्टंट के लिए अब इतना धन मिलने लगा है कि स्टंटमेन भी सितारों से किसी तरह कम नहीं होते। हॉलीवुड में तो स्टंटमेन अच्छे- खासे सितारे माने जाते हैं। हाई प्वाइन्ट (१९७९) फिल्म के लिए स्टंटमेन डार रॉबिन्सन को एक लाख डॉलर मिले थे। काम भी वैसा ही था। टोरन्टो की १८२२ फुट ऊँची बिल्डिंग सीएन टावर्स से छलांग लगाना था। उसने छलांग लगाई। १२५ मील प्रतिघंटे की रफ्तार से नीचे आते समय जमीन से ३७५ फुट पर छुपे पैराशूट से सहायता लेकर वनपीस धरती पर उतर सका। लेकिन कई बार गलती हो जाती है। और स्टंटमेन की मौत या जीवन भर के लिए अपाहिज बन जाता है।

कई बार पर्दे पर जो स्टंट्स दिखते हैं, वे स्टंट्स होते ही नहीं हैं। कैमरे का कमाल होता है या कोई चकमा। बुच कैसिडी एंड द सनडेन्स किड (१९६९) में रॉबर्ट रेडफोर्ड एवं पाल न्यूमन लगता है खूब ऊँची चट्टानों से नीचे पानी में कूद रहे हैं। वे कूदे कुछ फुट ही थे। पर्दे पर दिखने वाली सारी मारपीट में एक-दूसरे को छूते तक नहीं हैं। मुक्के हवा में चलते हैं। कभी कोई स्टंटमेन मुक्का खाता है तो अतिरिक्त पाँच सौ डॉलर्स लेता है। थोबड़ा फूटेगा तो पैसे भी मिलते हैं। लेकिन अधिकतर स्टंट्स कूदाफाँदी के और उड़ने के ही होते हैं। तारों के सहारे हवा में उड़ानें लेना। सुपरमेन (१९७८) एवं एम्पायर स्ट्राइक्स बैक (१९८०) में ऐसी उड़ानें हैं। डेरेक वेअर नामक स्टंटमेन ने इन स्टंट्स को अंजाम दिया था। डेरेक नौ साल का था तब से पीटर पैन नाटक में स्टेज पर ऐसी उड़ानें लेता था। इट्स ए मैड-मैड-मैड-मैड वर्ल्ड (१९६३) में अंत में कई स्टंट कारनामे हैं।

स्टंट्स प्रमुख रूप से छलाँगें लगाने/ घुड़सवारी/ मोटर कारों की दौड़/ टक्कर/ आगजनी/ दुर्घटना के दृश्यों में, आग की लपटों में घिर जाने/लपटों से झुलसने/ जलने के दृश्यों में, अधिकतर उपयोग में आते हैं। कारें/मोटर बोट्स भी छलाँगें लगाती हैं। चालक स्टंटमेन होते हैं। जेम्स बॉण्ड की फिल्मों में हमेशा ही जबर्दस्त स्टंट्स संयोजित होते रहे हैं। लिव एंड लेट डाई (१९७३) फिल्म में मोटरबोट की छलाँग थी तो स्टंट का एक भाग किन्तु विश्व रेकॉर्ड के रूप में वह स्टंट गिनीज बुक ऑव वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में लगातार कई वर्षों तक सम्मिलित होता रहा था। अरनॉल्ड स्केवेरजेनेगर/ सिल्वेस्टर स्टैलोन/ हैरिसन फोर्ड जैसे सितारों की कई फिल्मों में जबर्दस्त स्टंट्स हैं। द फ्युजिटिव (१९९३), केपफिअर (१९९३), गेटअवे (१९९३), एक्शन एडवेंचर श्रेणी की फिल्मों में कई दर्शनीय स्टंट्स सम्मिलित किए गए हैं।



टू लाइज (१९९४)

स्टंट्स में केवल मानव प्राणी की जान ही जोखिम में नहीं पड़ती। घुड़सवारी वाले कारनामों में युद्ध दृश्यों में कई घोड़े भी आहत हुए हैं। बेनहर (१९२५) और द चार्ज ऑव द लाइट ब्रिगेड (१९३६) फिल्म की शूटिंग के दौरान सैकड़ों की संख्या में घोड़े मरे थे। आगजनी के दृश्यों में भी स्टंटमेन कई बार गंभीर रूप से झुलस जाते हैं-जैसा द टावरिंग इनफर्नो (१९७४) के फिल्मांकन के दौरान हुआ था। बॉण्ड की कई फिल्मों में जहाँ बड़े पैमाने पर धमाके/आगजनी दर्शाई जाती रही, वहाँ भी कई बार दुर्घटनाएँ होती रही हैं। द स्पाई हू लव्ड मी (१९७७) के दौरान एक समय तो लगभग चार सौ स्टंटमेन धमाकों के बीच भागते दर्शाए गए हैं। इस फिल्म के निर्देशक लुईस गिलबर्ट ने कहा था-बॉण्ड की फिल्म में यदि आप दुर्घटना से बचे रहें तो भाग्यशाली ही कहलाए जाएँगे।

स्टंटमेन से तात्पर्य यह नहीं कि केवल पुरुष ही स्टंट्स के क्षेत्र में उतरते हैं। जाँबाज महिलाएँ भी स्टंट्स के क्षेत्र में पुरुषों के समकक्ष रही हैं। दशकों से स्टंट्स के क्षेत्र में कई महिलाएँ खूब विख्यात रही हैं। अस्सी के दशक में किटी ओ नील नाम की गूँगी-बहरी महिला स्टंट्स के क्षेत्र में अग्रणी थी। १८० फुट तक तो वह बड़ी आसानी कूद पड़ती थी और ६१८ मील प्रति घंटे की रफ्तार लैण्ड स्पीड रेकार्ड था उसका। स्टंट्स के क्षेत्र में एक कहावत चलती रहती-अस्पताल वालों से गहरी दोस्ती जम जाए। वे अच्छी तरह से पहचानने लगें तो समझ लो स्टंटमेन बन गए। अभी १९९४ में प्रदर्शित स्पीड और टू लाइज के स्टंट्स को देखकर लगता है कि स्टंट्स के लिए कथानकों/ विषय वस्तुओं की कोई कमी नहीं है। आखिर ये फिल्में चली भी क्यों हैं? स्टंट्स के अलावा इन फिल्मों में दर्शनीय कुछ और है ही नहीं! ■

बड़े बजट, नामी सितारों की चमक-दमक से सजी

'ब्लाक बस्टर' फिल्म

विश्व सिनेमा में १९५५ से १९६५ का दशक ब्लाक बस्टर फिल्मों का युग कहलाता है। अब न रोम जलेगा और न नीरो अपने अनमोल आँसुओं को काँच की कुप्पी में समेटेगा। चंगेज खान के घोड़ों की टाप और नॅवरोन की तोपें भी नहीं गरजेंगी। सब कुछ इतिहास में समा गया है।

ब्लाक बस्टर फिल्मों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि सारी फिल्में भव्य पैमाने पर बनीं। इन फिल्मों में खूब धन लगाया गया। नामी सितारों एवं निर्देशकों द्वारा इन फिल्मों को दुनियाभर में प्रचारित किया गया। ये फिल्में तकनीकी दृष्टि से समय की श्रेष्ठतम प्रस्तुतियाँ रहीं। दुनियाभर में इन फिल्मों ने टिकिट-खिड़की पर धूम मचाई। ब्लाक बस्टर फिल्मों की शुरुआत हॉलीवुड के प्रारंभिक काल से हुई। ठेठ गूँगे युग में ऐसी फिल्में बनीं जैसे- द बर्थ आव ए नेशन (१९१५) और इनटालरेन्स (१९१६)। नब्बे के दशक में भी ऐसी फिल्में बन रही हैं जैसे जुरासिक पार्क १९९३। अस्सी और नब्बे के दशकों में दस फिल्मों ने १५६ लाख डॉलर्स से लेकर ३२० लाख डॉलर्स तक मुनाफा किया है। इन दस फिल्मों में भी छह नब्बे के दशक की हैं। ब्लाक बस्टर्स के रूप में जिन फिल्मों को भव्यता के आधार पर प्रायः पृथक रूप से देखा/रखा जाता है, वे फिल्में हॉलीवुड में १९५५ से १९६५ के दशक में बनी हैं। इन फिल्मों का निर्माण १९५० से शुरू हुआ और १९७० तक चलता रहा। अधिकतर फिल्में १९५५ से १९६५ के बीच ही बनीं और इसी युग को ब्लाक बस्टर युग भी कहा जाता है।

हॉलीवुड के इस ब्लाक बस्टर युग के लिए खास उत्तरदायी कारण रहा- टेलीविजन का आगमन। टेलीविजन के आगमन के साथ दर्शकों ने सिनेमागृहों से मुँह मोड़ लिया। १९४५ से १९५५ तक दर्शकों की संख्या आधी रह गई थी। दर्शक घर में बैठकर छोटे पर्दे पर फिल्में देखना चाहते थे। उन्हें घर से बाहर निकालकर सिनेमागृहों तक खींच लाने के लिए अतिरिक्त आकर्षण जरूरी हो गया। इस छट-पटाहट में तकनीकी तौर पर कई प्रयोग हुए- थ्री-डी (त्रिमितिय) फिल्में बनी (ब्वाना डेविल, १९५२), ड्राइव इन थिएटर आ गए। फिल्मांकन की नई विधियाँ आईं। पैरामाउंट में विस्टाविजन तकनीक (मोशन पिक्चर हाई फिडैलिटी) प्रस्तुत की। फॉक्स ने पर्दे को और बड़ा (सिनेमा स्कोप) बना दिया। सिनेमा स्कोप में पहली फिल्म- द रोब (१९५३) प्रदर्शित की। सिक्स ट्रैक स्टिरिओफोनिक साउंड सिनेमा हॉल में चारों ओर से गूँजने लगा। इतना भी पर्याप्त नहीं था तो सिनेरामा में पर्दे को पहले से तीन गुना बड़ा करतीन प्रोजेक्शन सिस्टम के साथ फिल्म पर्दे पर आने लगी। माइक टॉड ने टॉड-एओ प्रोसेस विकसित कर अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज (१९५६) प्रस्तुत की। और सिनेरामा के एक सौ अस्सी के कोण के पर्दे को पूरे तीन सौ साठ में परिणत कर सर्करामा तकनीक भी विकसित हुई।

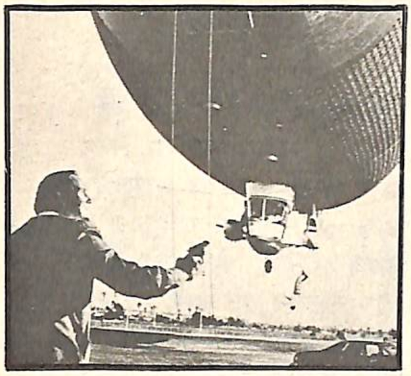
इन तमाम अन्वेषणों के साथ यह भी जरूरी हुआ कि फिल्मों के कथानक ही भव्यता के अनुरूप हो। इतिहास के स्वर्णिम अध्याय/ महाकाव्य/ पौराणिक कथाएँ/ भव्य-दर्शनीय जितना था पर्दे पर लाया जाने लगा। छोटे पर्दे के साथ प्रतियोगिता में बड़े पर्दे पर ऐसा कुछ करना तय हुआ जिसका आनंद छोटे पर्दे पर आ नहीं सकता। टेन कमांडमेंट्स और बेनहर जैसी फिल्में पुनः बनीं। दर्शकों ने बॉक्स आफिस पर इतनी भीड़ कर दी कि ब्लाक बस्टर फिल्मों का उद्देश्य पूरा हो गया। दर्शक फिर से सिनेमागृहों की ओर आने लगे। कई फिल्में तो दर्शकों ने बार-बार देखी। इन तमाम फिल्मों के कथानक भी ऐसे रहे कि पूरे परिवार के साथ फिल्म देखी जा सके।



पीटर ओ टूल : लारेंस ऑव अरेबिया

ब्लाक बस्टर युग की प्रमुख फिल्में :

◇द अल्मो (१९६०) ◇अलेक्जांडर द ग्रेट (१९५६) ◇अराउंड द वर्ल्ड इन एटी डेज (१९५६) ◇बाराबस (१९६२) ◇बैटल आव द बल्ज (१९६६) ◇बेन हर (१९२५ एवं पुनश्च १९५६) ◇ द बाइबल... (१९६६) ◇द चार्ज आव द लाइट ब्रिगेड (१९६८) ◇एलसिड (१९६१) ◇ क्लिओपात्रा (१९३४ एवं पुनश्च १९६३) ◇डॉ. जिवागो (१९६५) ◇द फाल आव द रोमन एम्पायर (१९६४) ◇५५ डेज इन पेकिंग (१९६३) ◇चंगेज खान (१९६५) ◇गॉन वीथ द विण्ड (१९३९) ◇ग्रांड प्री (१९६६) ◇द ग्रेटेस्ट स्टोरी एवर टोल्ड (१९६४) ◇द ग्रेट रेस (१९६५) ◇गन्स आव नॅवरोन (१९६०) ◇इलेलुजा ट्रेल (१९६५) ◇हाऊ द वेस्ट वाज वन (१९६२) ◇इट्ज ए मैड, मैड, मैड, मैड वर्ल्ड (१९६३) ◇जीजस आव नजरेथ (१९७५) ◇ज्युलिअस सीजर (१९६९) ◇खार्टुम (१९६६) ◇किंग आव किंग्ज (१९६१) ◇लारेंस आव अरेबिया (१९६२) ◇द लांगेस्ट डे (१९६२) ◇म्युटिनी आन द बाउंटी (१९६२) ◇कोवादिस्त (१९५१) ◇द रोब (१९५३) ◇सैमसन एंड डिलाइला (१९५०) ◇सोडोम एंड गोमोरा (१९६२) ◇सोलोमन एंड शीबा (१९५९) ◇स्पाटकिस (१९६०) ◇तारस बुल्बा (१९६२) ◇द टेन कमांडमेंट्स (१९२३ एवं पुनश्च १९५६) ◇द वाइकिंग्स (१९५८) ◇वार एंड पीस (१९५६) ◇द वाड लार्ड (१९६५) ◇जुलु (१९६३)।



ब्लेक सण्डे (१९७७)

सिनेमा को नवजीवन देने का श्रेय इन्हीं ब्लाक बस्टर फिल्मों को है। बेनहर (१९५९) फिल्म ने सर्वाधिक ग्यारह ऑस्कर पुरस्कार जीतकर कीर्तिमान बनाया कि आज तक वह खंडित नहीं हो सका है। बेनहर फिल्म की रथों की शर्त के दृश्यों का संयोजन तो अविश्वसनीय तौर पर सुंदरतम है। दुनियाभर के करोड़ों दर्शकों ने इन ब्लाक बस्टर फिल्मों को देखा। एक के बाद फिल्में आती रहीं और दर्शक देखते-देखते टिकिट-खिड़की पर धन बरसाते रहे।

क्लिओपात्रा (१९६३) पर इतना धन लगाया गया कि लाख प्रयासों के बाद भी लगाया धन वापस नहीं आया। फ्लॉप केवल क्लिओपात्रा ही नहीं हुई 'द फाल आव द रोमन एम्पायर' (१९६४) भी घाटे में गई। दर्शकों की अपेक्षाएँ आसमान छूने लगी थीं। या यूँ कहा जाए कि देखना था वह सब पर्दे पर आ चुका था। ब्लाक बस्टर फिल्मों का सिलसिला क्षीण हुआ। द बाइबल.. इन द बिगिनिंग (१९६६) भी पिट गई। भव्य, पौराणिक विषयों के स्थान पर नए कथानक कुछ हद तक स्वीकार भी हुए (जैसे- माँटेकार्लो ऑर बस्ट, १९६९/ कॉमेडी या २००१ ए स्पेस ओडेसी, १९६९/ साइंस फिक्शन) किंतु आमतौर पर भव्य, विराट कैनवास की ब्लाक बस्टर्स अतीत की आड़ में चली गई। पहले म्युजिकल फिर हॉरर फिर दुर्घटना प्रधान डिजास्टर फिल्मों ने और अंत में साइंस-फिक्शन फिल्मों ने ब्लाक बस्टर युग की फिल्मों की विषय वस्तु को बाहर कर दिया। भव्य-विराट फिल्मों का युग खत्म हुआ।

अब ब्लाक बस्टर युग की फिल्में विरासत बन गई हैं। क्या सितारे थे, क्या निर्देशक। क्या दृश्य! ऐसा ब्लाक बस्टर युग अब कभी लौट कर नहीं आने वाला। अब न तो अलेक्जांडर पर्दे पर आएगा, न रथों की वह शर्त होगी। न रोम पर्दे पर जलेगा, न नीरो अपने अनमोल आँसुओं को काँच की कुप्पी में समेट लेगा। न चंगेज खान की घोड़ों की टाप सुनाई देने वाली है। न नॅवरोन की तोपें नष्ट होंगी। न मसखरों की टोली गढ़े खजाने के लिए अंधाधुंध दौड़ पड़ेंगी। न सागर फटकर मोजेस केलिए राह बनाएगा...। अब जमाना आ गया है पल्प-फिक्शन का। द साइलेंस आव द लैम्ब्स का और बड़े पर्दे पर भव्य दृश्यों में आ रहे हैं- नेचरल बार्न किलर्स। ■

साहित्य को रजतपट पर प्रस्तुत करने के प्रयास हमेशा होते रहे और इन पर विवाद भी निरंतर चलते रहे। कई बार मुद्रित पृष्ठ अधिक सार्थक माने गए और कई बार साहित्य को पीछे छोड़ फिल्म अधिक सराही गई।

साहित्य समाज का दर्पण है। फिल्में भी समाज के विभिन्न पहलुओं को एक सामाजिक दस्तावेज के रूप में प्रस्तुत करती हैं। 'ड्रामा' श्रेणी की फिल्मों में तो यह और प्रखर रूप में है। मानवीय जीवन की भावनाएँ/अभिव्यक्तियाँ/अनुभूतियाँ/और नाट्यमय प्रसंग साहित्य के पन्नों में विशिष्ट शैली में प्रस्तुत हैं। इन्हीं पर आधारित फिल्में 'ड्रामा' श्रेणी में आती हैं। जब तक फिल्में 'गूँगी' रहीं तब तक विश्व साहित्य पर्दे पर नहीं आ सका था। जैसे ही फिल्में सवाक् हुई, 'ड्रामा' श्रेणी की फिल्में एवं साहित्य की विभिन्न विधाएं पर्दे पर आने लगीं। साहित्य, संस्कृति का प्रमुख उपादान है, इसलिए साहित्य प्रधान फिल्मों में विभिन्न जीवन यापन के ढंग पर्दे पर प्रभावी ढंग से प्रस्तुत होने लगे। संस्कृतियों की विविधता में एकता भी स्पष्ट होने लगी। मानव मन के साथ नजदीक का संबंध 'ड्रामा' या साहित्य निर्मित कर सकता है। ड्रामा/साहित्य की फिल्में भावना प्रधान होने के साथ उनमें एक अजीब 'अपील' रही। जब-जब विश्व साहित्य की 'अमर' कृतियाँ न्यायपूर्ण ढंग से पर्दे पर आती रहीं इस 'विराट दर्शन' से दर्शक अभिभूत होते रहे। 'ड्रामा'/साहित्य प्रधान फिल्मों में एक ओर जहाँ शेक्सपीयर/हेमिंग्वे/मॉम/तालस्ताय/चेखव/डिकन्स/टेनिसी विलियम जैसे साहित्य-नाटकों के 'महारथी' पर्दे पर आए, वहीं 'पल्प-फिक्शन' के लेखक भी। 'नोबेल-पुलित्जर' प्रतिष्ठा-पुरस्कारों से विभूषित लेखकों की कृतियों ने भी 'रुपहले' पर्दे पर अवतार लिया है। ऐसी फिल्में पूरी दुनिया की सांस्कृतिक विरासत भी बन गई हैं। 'ड्रामा'/साहित्य श्रेणी की फिल्मों ने केवल बॉक्स आफिस पर धूम ही नहीं मचाई है, 'ऑस्कर' पुरस्कार भी जीते हैं। दर्शकों के

किताब के

अंतर्मन को छुआ है। 'फिल्म-फार्मेट' के लिए कई बार पटकथा लेखकों को मूल साहित्य में वांछित परिवर्तन करना पड़े हैं। कई बार विवाद और मतभेद भी उभरे हैं। साहित्य से कोसों दूर रहने वाले दर्शक साहित्य के अवतरण से लाभान्वित होते रहे। ड्रामा/साहित्य की फिल्मों ने समूची दुनिया में समझाइश/सहिष्णुता/सहअस्तित्व को अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित करने में सहायता की है।

'ड्रामा'/साहित्य श्रेणी की फिल्मों के अधिकतर आधार पहले से प्रकाशित कहानियाँ/उपन्यास/नाटक रहे हैं। समाचार

शेक्सपीयर साहित्य की फिल्में

शेक्सपीयर की लगभग सभी नाट्यकृतियाँ विश्वभर में रुपहले पर्दे पर आ गई हैं। फिल्मकारों के लिए शेक्सपीयर 'हॉट-प्रापर्टी' रहे हैं। फिल्में गूँगी थीं तभी से फिल्मकार शेक्सपीयर-अभिमुख होते रहे हैं। "हैमलेट" केअब तक ५० से अधिक संस्करण पर्दे पर आ गए हैं। नब्बे के दशक में भी फिल्मकारों का शेक्सपीयर-मोह बना हुआ है। नब्बे के दशक में मेल गिब्सन की भूमिका की हैमलेट (१९९०) सबसे अधिक कमाऊ सिद्ध हुई। मच अडो अबाउट नथिंग का केनेथ ब्रैनाग का १९९३ का संस्करण भी अच्छा व्यवसाय कर चुका है। वैसे, फ्रैन्को जेफेरेली की रोमिओ एण्ड ज्युलिएट (१९६८), शेक्सपीयर पर आधारित फिल्मों में टिकट खिड़की पर सबसे सफलतम फिल्म मानी जाती है।

ड्रामा/साहित्य की सफल फिल्में :

◇ गॉन वीथ द विण्ड (१९३९) ◇ डॉ. जिवागो (१९६५) ◇ द बेस्ट इयर्स आव आवर लाइव्ज (१९४६) ◇ वन फ्लू ओवर द कक्कूज नेस्ट (१९७६) ◇ द ग्रेटेस्ट शो आन अर्थ (१९५२) ◇ गेस हू ईज कमिंग टू डिनर (१९६८) ◇ द कारपेटबैगर्स (१९६४) ◇ हवाई (१९६६) ◇ द लास्ट वीकएण्ड (१९४५) टू सर, वीथ लव (१९६७) हू इज अफ्रेड आव वर्जिनिआ वूल्फ? (१९६६) ◇ कैट ऑन ए हॉट टिन रूफ (१९५८) ◇ द स्नोज् आव किलिमान्जारो (१९५२) ◇ द रेजर्स एज् (१९४६) ◇ वॉर एण्ड पीस (१९५७) ◇ द हाई एण्ड द माइटी, (१९५४) ◇ हाउ ग्रीन वाज् माई व्हैली (१९४१) ◇ आइलैण्ड इन द सन् (१९५७) ◇ ईस्ट आव ईडन (१९५५) ◇ ग्रैंड हाटेल (१९३२) ◇ 'सडनली लास्ट समर (१९६०) ◇ द ग्रेट गैटसबी (१९७४)।

द स्टार सिस्टम

'स्टार सिस्टम' लगभग हर देश में स्टुडिओज एवं बड़े-नामी निर्माता-निर्देशकों के साथ जुड़ी व्यवस्था रही है। इस व्यवस्था के भले-बुरे परिणाम स्टुडिओज को झेलने पड़े हैं। स्थापित स्टुडिओज या निर्माता-निर्देशक किसी सितारे की खोज कर उसे चमका देते, तो उस पर अधिकार भी जताते रहे। सितारे एक बार चमक प्राप्त करने पर किसी के साथ बँधा रहना, अपने विकास की राह में अवरोध मानते हैं। 'स्टार-सिस्टम' के अंतर्गत कुछ सितारे बुलंदी के ऐसे शिखर पर पहुँच गए जहाँ से नीचे उतर पाना तो दूर साधारण जीवन बसर कर पाना तक मुश्किल हो गया। स्टुडिओज की शक्ति क्षीण हुई तो 'स्टार सिस्टम' भी खत्म हुआ। भारत में भी और हॉलीवुड में भी।

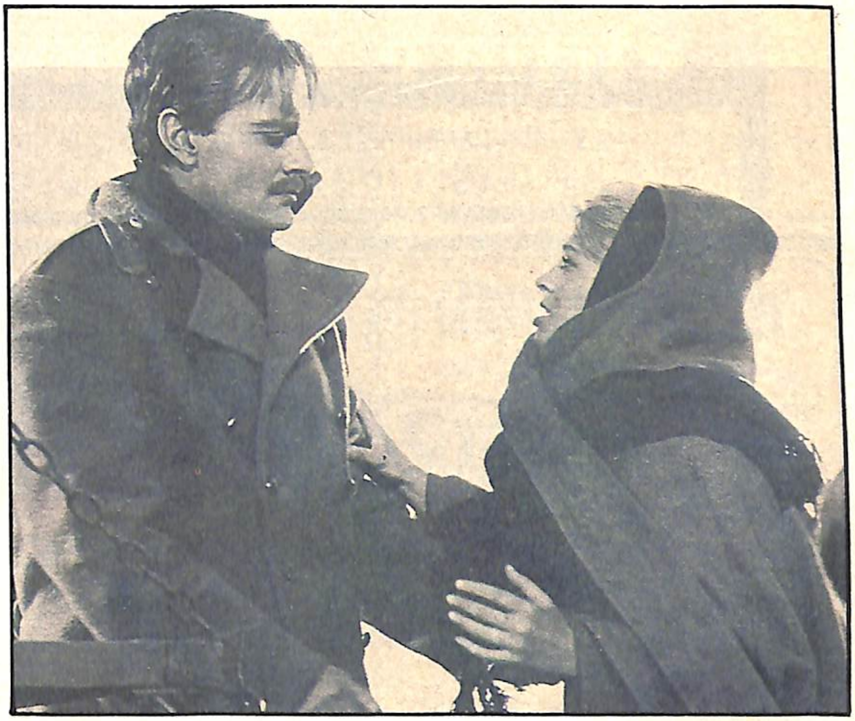
हॉलीवुड में बीस के दशक के साथ ही योरप से निर्देशक-अभिनेता-अभिनेत्रियाँ आकर अपनी किस्मत आजमाने लगे थे। तीस और चालीस के दशक में यह प्रक्रिया बनी रही। किसी नामी सितारे को एक स्टुडिओज से तोड़कर दूसरे में लाने की हरकतें भी खूब हुईं। साम-दाम दण्ड-भेद का सहारा लिया जाता रहा। जैसे एमजीएम **'विजार्ड ऑव ओज'** के लिए बाल अभिनेत्री शीले टेम्पल को फॉक्स स्टुडिओज से अपनी ओर खिंचना चाहता रहा। **ग्रेटा गार्बो** 'एमजीएम'के साथ जुड़ी रही, तो **बेटी डेविस** 'वार्नर' के साथ। विक्टर सिएस्ट्रोम, मॉरिट्ज स्टिलर, एरिक वॉन स्ट्रान हेम, अर्नेस्ट लुबित्ज, मिशेल कर्टिज आदि निर्देशक भी इस स्टार-सिस्टम को पनपाने में सहायक रहे। **मार्लिन डिट्रिच** से लेकर मर्लिन मनरो तक की अभिनेत्रियाँ इसी स्टार-सिस्टम की देन रहीं। मनरो की १९६२ में मृत्यु भी इसी सिस्टम का प्रतिफल था। खैर, स्टुडिओज जैसे-जैसे शक्तिहीन हुए वैसे ही 'स्टार-सिस्टम' का अंत हुआ।

पन्नों से रजतपट पर

पत्रों में प्रकाशित 'समाचारों पर आधारित फिल्में लोकप्रिय हुई हैं-जैसे आई विल क्राय टुमारो (१९५५) डाग डे आफ्टरनून (१९७५)। नोएल कोआर्ड के नाटक पर आधारित कैवलकेड (१९३३) हो या मार्गरेट मिशेल के उपन्यास पर बनी "गॉन वीथ द विण्ड' (१९३९) हो-कागज पर लिखना और है और पर्दे पर उतारना अलग। सबसे बड़ी दिक्कतें तो तब रहीं जब मूल उपन्यास बहुत बड़े हों। फिल्म के लिए क्या लिया जाए क्या छोड़ा जाए-यही समस्या बनी रही। अंततः ऐसी कई फिल्मों की लम्बाई (सामान्य फिल्मों की तुलना में) अधिक रही। "गॉन वीथ द विण्ड" (२२० मिनट) फॉर हूम द बेल टॉल्स (१६८ मिनट) द बेस्ट इयर्स आव आवर लाइव्ज़ (१७२ मिनट) और डॉक्टर ज़िवागो (१९३ मिनट)।

'ड्रामा'/ साहित्य की फिल्मों के साथ प्रायः श्रेष्ठ अभिनेता/अभिनेत्रियाँ तो जुड़ी रही ही-निर्देशक भी प्रतिष्ठित रहे। इन निर्देशकों के लिए इन फिल्मों का निर्माण भी प्रतिष्ठाजनक रहा। 'गॉन वीथ...' के साथ विक्टर फ्लेमिंग (व पर्दे के पीछे जॉर्ज कुकोर), 'जिवागो...' के साथ डेविड लीन, 'द बेस्ट ईयर्स...' के साथ विलियम वाइलर जुड़े रहे। विकी बॉम के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय उपन्यास पर आधारित ग्रेन्डे हॉटेल (१९३२) ने वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ऑस्कर' जीता और 'ड्रामा'/साहित्य की फिल्में विश्व में खूब कमाऊ भी सिद्ध हुई। द स्टोरी आव लुइस पाश्चर (१९३५) एवं द लाइफ आव एमिल जोला (१९३७) में पॉल मुनी के अभिनय से रंगत आ गई। तीस के दशक में उपन्यासों पर आधारित कई फिल्मों ने वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर जीता। ठेठ "ऑल क्वाएट ऑन द वेस्टर्न फ्रन्ट' (युद्ध-फिल्म) से लेकर कैवलकेड (१९३२), म्युटिनी आन द बाउन्टी (१९३५) और, गॉन वीथ द विण्ड (१९३९)।

चालीस के दशक में यह प्रतिष्ठा बनी रही-डाफने डी मॉरिअर के उपन्यास रेबेका (१९४०), चार्लस् जैक्सन के उपन्यास पर द लॉस्ट वीकएण्ड. (१९४५), मैक्किन्ले कैन्टार के उपन्यास पर द बेस्ट इयर्स आव आवर लाइव्ज (१९४६), शेक्सपीयर के नाटक पर हैमलेट (१९४८), ऑल द किंग्ज़ मेन (१९४९) ने भी वर्ष के सर्वश्रेष्ठ फिल्म के 'ऑस्कर' जीते। यह सिलसिला अस्सी एवं नब्बे के दशक तक बना रहा (आउट ऑफ अफ्रीका १९८५)। ड्रामा/साहित्य की फिल्मों में शराबखोरी (द लास्ट वीकएण्ड), यौन प्रवृत्तियाँ (कैट आन ए हॉट टिन रूफ), मनोविकृतियाँ (हू इज अफ्रेड आव वर्जिनिया वूल्फ?) रंगभेद (टू किल ए मॉकिंग बर्ड) कई सामाजिक समस्याएँ भी पर्दे पर प्रभावी ढंग से आई। इनमें से कई तो ठेठ नब्बे के दशक तक- द साइलेन्स आव द लैम्ब्स् १९९१ बनी हुई प्रस्तुतियाँ हैं। केन केसे के उपन्यास पर आधारित वन फ्लू ओवर द कक्कूज नेस्ट (१९७५) ने वर्ष के सभी प्रमुख 'ऑस्कर' जीते हैं। ■



ओमर शेरीफ-ज़ूली क्रिस्टी : डॉ. जिवागो

असल अमेरिकी फिल्म

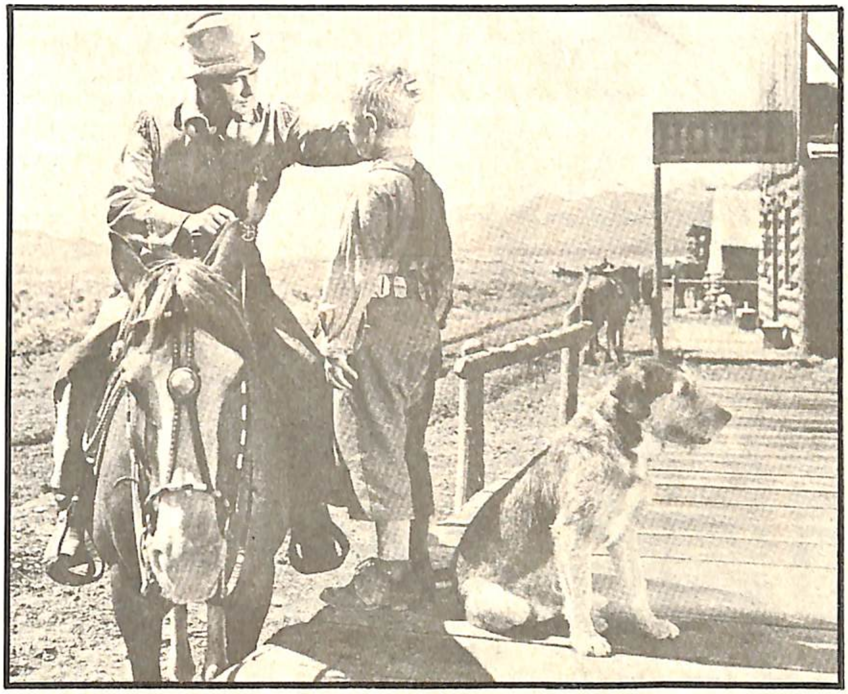
वेस्टर्न्स

वेस्टर्न्स विशुद्ध रूप से 'अमेरिकी' फिल्म-श्रेणी है। उत्तरी एवं मध्य अमेरिका में उत्प्रवासियों की बसाहट, मूल रहवासियों (रेड-इंडियन्स) के साथ उनकी मुठभेड़ के साथ इन फिल्मों के कथानक अमेरिकी इतिहास के विशिष्ट कालखंड/ परिस्थितियों/ प्रकृति की चुनौतियों/ तपते-निखरते व्यक्तित्वों/ किंवदंतियों/ मनमौजी जाँबाज नायकों/ तेज गति से चलती पिस्तौलों/ गड़े- खजानों की खोज/ बदमाशों को पकड़वा देने के लिए घोषित बड़े इनामों/वीरान- खामोश वाईल्ड वेस्टर्न भूगोल/ और मेक्सिकन गाँवों से संबंधित रहे हैं। वाह! क्या मसाला रहा है इन फिल्मों का। केवल अमेरिकी दर्शक ही नहीं गैर-अमेरिकी भी इन फिल्मों को देखते रहे हैं। अमेरिकी दर्शकों के लिए तो ये फिल्में नोस्तालजिआ रही हैं।

अमेरिकी फिल्मों की शुरूआत वेस्टर्न श्रेणी की फिल्म से- 'द ग्रेट ट्रेन रॉबरी' (१९०३)- हुई है। इसी फिल्म के साथ वेस्टर्न फिल्मों की अपार संभावनाएँ उजागर हुईं। हॉलीवुड के 'गूँगे' युग में ही वेस्टर्न फिल्मों में श्रेष्ठ प्रस्तुतियाँ पर्दे पर आने लगी थीं। इस शताब्दी के बीस के दशक से लेकर ठेठ नब्बे के दशक तक 'वेस्टर्न' फिल्मों का एक ऐसा अम्बार है कि बॉक्स-आफिस पर ही नहीं ऑस्कर पुरस्कारों की होड़ में भी वेस्टर्न फिल्में समय-समय पर अव्वल आती रही हैं। प्रमाण है डान्सेस वुइथ वूल्वज् (१९९०) एवं अनफरगिवन (१९९२) दोनों ही वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों के रूप में पुरस्कृत हुई हैं।

हॉलीवुड के गूँगे युग की द कवर्ड वैगन (१९२३) एवं द आयर्न हॉर्स (१९२४) फिल्में तो 'महाकाव्य' (एपिक) मानी जाती हैं। फिल्में जैसे ही 'टॉकी' हो गईं वेस्टर्न श्रेणी की फिल्मों में संवादों का तत्व जुड़ गया। सिमारॉन (१९३१), स्टेज कोच (१९३९) और जेसी जेम्स (१९३९) जैसी फिल्मों ने वेस्टर्न श्रेणी की फिल्मों में गुणात्मकता बढ़ाई। हॉलीवुड के कई नामी सितारे वेस्टर्न फिल्मों में चमकने लगे। कई निर्देशक भी इन फिल्मों में निखार लाने लगे। किंग विडोर एवं सेसिल बी डिमाईल जैसे प्रतिष्ठित निर्देशकों ने युद्ध के दौरान भी नार्थवेस्ट पैसेज (१९४०) नार्थवेस्ट माऊन्टेड पोलिस (१९४०) जैसी फिल्में दीं। यहाँ तक कि एरॉल फ्लीन जैसा तलवारबाज (अडवेन्चर्स आव रॉबिनहुड) भी सांता की ट्रेल (१९४०) जैसी वेस्टर्न फिल्म में आया।

युद्ध पश्चात काल में हॉलीवुड में वेस्टर्न फिल्मों की लोकप्रियता बनी रही। स्टेजकोच के बाद जॉन फोर्ड ने माइ डार्लिंग क्लेमेन्टाईन (१९४६), होवार्ड हॉक ने रेड रिवर (१९४८) के साथ तो किंग विडोर ने ड्यूएल इन द सन (१९४६) के साथ वेस्टर्न श्रेणी की फिल्मों को गॉन विद द विण्ड जैसी सहाबहार कालजयी फिल्म के स्तर पर उठा लिया। होवार्ड हयुजेस की फिल्म द आउटला (१९४६) के साथ जेन रसेल का प्रिमिटिव लव ठेठ पोस्टर्स पर चित्रित हुआ। पचास के दशक से वेस्टर्न फिल्मों में मनोवैज्ञानिक प्रभाव प्रखर हुए। डेलमर डेवज की ब्रोकन ॲरो (१९५०) के साथ दो फिल्में और आई- हाइ नून (१९५२) एवं शेन (१९५३)। इन फिल्मों की नाट्यमय गुणात्मकता एवं मिथकीय शुद्धता अनुपमेय रही है। क्रोधित भीड़ का अन्याय विलियम वेलमन की फिल्म ऑक्स-बो इन्सिडेन्ट (१९४३) में अलोकप्रिय हुआ था- उसके स्थान पर 'हाइ नून' की सामाजिक प्रतिबद्धता अधिक प्रभावित करती है।



शेन (१९५३)

जाँबाज नायक। कमर में पिस्तौल। अचूक निशाने। सिर पर हेड/ हमेशा घोड़ों पर सवार होकर धाँय-धाँय। इधर लूटपाट, उधर मौजमस्ती। अनोखा आलम मिलता है वेस्टर्न्स फिल्मों में।

निकोलस रे की जॉनी गिटार (१९५४) एवं अन्थोनी मान की द फ्यूरीज (१९५०) में पारिवारिक राजनीति की त्रासदी मन को छूती है। इसी दौर की आर्थर पेन की द लेफ्ट हैन्डेड गन (१९५८), किंग विडोर की द ब्रेवडोज (१९५८) एवं हेन्री किंग की द गनफायटर (१९५०) भी विशेष उल्लेखनीय फिल्में रही हैं। नायक के रूप में जॉन वेन सबसे अधिक लोकप्रिय 'वेस्टर्न' हीरो रहे। मेक्सिको की आदर्शवादी क्रांति 'वेस्टर्न' फिल्मों का विषय रही। रॉबर्ट

◇ वेस्टर्न श्रेणी' की सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्में - ◇ डान्सेस विद वूल्वज (१९९०) ◇ बुच कैसिडी एंड द सनडेन्स किड (१९६९) ◇ अनफरगिवन (१९९२) ◇ जेरेमिआ जॉनसन (१९७२) ◇ हाऊ द वेस्ट वाज वन (१९६२) ◇ पेल राइडर (१९८५) ◇ यंग गन्स (१९८८) ◇ यंग गन्स पार्ट-२ (१९९०) ◇ ब्रोन्को बिली (१९८०) एवं 'द लिटिल बिग मॅन' (१९७०) ◇



एल्ड्रिच की वेरा क्रूज (१९५४) एवं सैम पेकिन्या की द वाइल्ड बन्च (१९६९) फिल्में कलात्मक वेस्टर्न फिल्में हैं। साठ के दशक में इतालवी मूल के सर्जिओ लिओन ने वेस्टर्न फिल्मों में घुसपैठ कर बेहतरीन प्रस्तुतियाँ दी है। इन स्पगेटी वेस्टर्न्स में ए फिस्टफुल आव डॉलर्स (१९६४) फॉर ए फ्यू डॉलर्स मोर (१९६६) द गुड द बैड एंड द अग्ली (१९६६) एवं वन्स अपॉन ए टाइम इन द वेस्ट (१९६८) ने तो वेस्टर्न फिल्मों को लोकप्रियता के ऐसे शिखर पर पहुँचाया है कि भारत में भी ये फिल्में पसंद की जा रही हैं। इन्हीं फिल्मों के साथ वेस्टर्न फिल्मों को एक नया नायक दिया है- क्लिन्ट ईस्टवुड। ईस्टवुड की फिल्म अनफरगिवन (१९९२) वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार जीत चुकी है।

साठ के दशक से ही 'वेस्टर्न' फिल्मों के कारण अमेरिका के मूल निवासी 'रेड इंडियन्स' के प्रति दृष्टि बदल गई। इस बदले दृष्टिकोण का आधार द सर्चर्स (१९५६) फिल्म रही है, जिसे दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पच्चीस फिल्मों में सम्मिलित किया जाता है। रिचर्ड ब्रूक की फिल्म द प्रोफेशन्स (१९६६) आर्थर पेन की द लिटिल बिग मॅन (१९७०) एवं जेरेमिआ जॉनसन (१९७२) वेस्टर्न फिल्मों के साथ इन फिल्मों का दौर थमा- पैट गैरेट एंड बिली द किड (१९७३) एवं 'मिसोरी ब्रेक' जैसी फिल्में अपवादात्मक रूप में बनती भी रहीं। किंतु, नब्बे के दशक में अब वेस्टर्न श्रेणी फिर लोकप्रिय हो रही है। केविन कास्नर की फिल्म डान्सेस विद वुल्वज (१९९०) ने वर्ष का सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार (एवं अन्य छह ऑस्कर) जीतकर 'वेस्टर्न' श्रेणी की फिल्मों को शिखर पर ला रखा है।

देर से आई दुनिया में छाई...

साइंस-फिक्शन फिल्म

साइंस-फिक्शन फिल्मों की श्रेणी ऐसी रही जिसने फिल्में बोलती होने के बाद भी, स्थापित होने में चालीस साल लगा दिए। लो-बजट की फिल्मों से उठकर साइंस-फिक्शन फिल्मों की श्रेणी आज सबसे अधिक आलीशान और कमाऊ है। 'साइंस-फिक्शन' उपन्यास तो दशकों आगे चलते रहे। किंतु फिल्में पिछड़ी रहीं। सत्तर के दशक के बाद इस श्रेणी की फिल्मों में ऐसी तूफ़ानी गति आई है कि आज अन्य श्रेणियाँ पीछे छूट गई हैं। सत्तर के दशक के बाद की कई 'साइंस-फिक्शन फिल्में तो महज 'परिकथाएँ' या पलायनवादी हैं। दर्शकों में ये फिल्में इतनी लोकप्रियता अर्जित कर रही हैं कि निर्माता भी इन फिल्मों के निर्माण में सब कुछ दाँव पर लगाने के लिए तैयार हैं।

साइंस-फिक्शन फिल्मों के आधार में विज्ञान रहता है। और कुछ कोरी कल्पनाएँ। इस श्रेणी की फिल्मों में हॉरर फिल्मों के समान कुछ बेहतरीन बनी हैं। कई साधारण और सबसे अधिक घटिया। 'उटपटांग' कल्पनाओं पर आधारित। कई तो महज 'एक्शन-एडवेंचर' श्रेणी में रखने योग्य होती हैं। सत्तर के दशक में विशेष रूप से जॉर्ज लुकास एवं स्टीवन स्पीलबर्ग ने इस श्रेणी में चमत्कारी तत्वों को 'स्पेशल इफेक्ट्स' को लाकर 'साइंस-फिक्शन' श्रेणी का भविष्य बदल दिया है। 'साइंस-फिक्शन' श्रेणी के सितारे अब 'सीथ्रीपीओ/आरटूडीटू' जैसे रोबोट होते हैं या स्पेशल-इफेक्ट्स की सहायता से निर्मित अजूबे।

इन फिल्मों का प्रारंभ १९०२ की जार्जेस मेलीज की जुल्स वर्न के साइंस-फिक्शन उपन्यास ट्रिप टू द मून से हुआ। बाद में फ्रिटज लैन्ग की मेट्रोपोलिस (१९२७) से यह श्रेणी ज्ञात हुई। मेट्रोपोलिस में आठ प्रमुख चरित्र थे। एक हजार पाँच सौ एक्स्ट्राज। हजारों की संख्या में भीड़। तीन सौ दस दिन व साठ रातों की शूटिंग के बाद फिल्म पूरी हुई थी।

तीस के दशक में बनी 'साइंस-फिक्शन' श्रेणी की फिल्मों में अलेक्ज़ाण्डर कॉरडा की थिंगस टू कम (१९३६) प्रमुख रही। तीन लाख पौण्ड की लागत से बनी इस फिल्म ने कोई मुनाफा नहीं कमाया। इस दौर में 'कॉमिक्स' का चलन चल पड़ा था। इन 'कॉमिक्स' के चरित्र पर्दे पर भी

ई.टी.



■ प्रमुख 'साइन्स-फिक्शन' एवं 'फैंटसी' फिल्में हैं: इ. टी/द एक्स्ट्रा टेरिस्टरीअल (१९८२) ◇ स्टार वार्स (१९७७) ◇ द रिटर्न आव द जेडाई (१९८३) ◇ बैटमॅन (१९८९) ◇ द एम्पायर स्ट्राइक्स बैक (१९८०) ◇ घोस्ट बस्टर्स (१९८४) ◇ टर्मिनेटर-२ : द जजमेन्ट डे (१९९१) ◇ बैक टू द फ्युचर (१९८५) ◇ क्लोज एनकॉउन्टर्स आव द थर्ड काइण्ड (१९७७) ◇ हनी आई श्रन्क्ड किड्स (१९८९) ◇ टिनएज म्युटन्ट निन्जा टर्टलस् (१९९०) ◇ टोटल रिकॉल (१९९०) ◇ सुपरमॅन (१९७९) ◇ स्टार ट्रेक द मूवी (१९७९) ◇ ए क्लॉकवर्क ऑरेन्ज (१९७१) ◇ जर्नी टू द सेन्टर आव अर्थ (१९५९) एवं २०००० लीगस अण्डर द सी (१९५४)।

सीरियल्स के रूप में अवतरित होने लगे थे। इनमें से कुछ तो लोकप्रिय हुए। फ्लैश गार्डन (१९३६) बक रॉजर्स (१९३९), एडवेंचर्स ऑव कैप्टन मारवल (१९४१) दुनिया भर में देखे गए। फ्लैश गार्डन कॉनकर्स द यूनिवर्स (१९४०) के साथ तो इन फिल्मों ने वास्तव में दुनिया जीत ली थी। चालीस के दशक में भी 'कॉमिक्स-बुक्स' के हीरो किताबों के पन्नों से उतरकर पर्दे पर अवतरित होते रहे, जैसे कैप्टन अमेरिका (१९४३) और किंग आव द रॉकेट मेन (१९४९)।

पचास के दशक में यह प्रमाणित हुआ कि साइंस-फिक्शन फिल्में भी कमाऊ हो सकती हैं। जॉर्ज पाल की फिल्म डेस्टिनेशन मून (१९५०) ने यह चमत्कार किया। रॉबर्ट हैनलेन के उपन्यास स्पेसशिप गैलिलिओ पर आधारित इस दस लाख डॉलर लागत वाली फिल्म ने बॉक्स आफिस पर ऐसी धूम मचाई कि साइंस फिक्शन फिल्मों में नवजीवन आ गया। एल लिपर्ट ने इसी वर्ष रॉकेटशिप एक्स-एम फिल्म में चौरान्बे हजार डॉलर लगाए और एक माह में एक लाख टिकट खिड़की पर कमा लिए। फिर क्या था १९५१ से साइंस फिक्शन फिल्मों में बाढ़ आ गई। वर्नर वान ब्रॉन के द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान के रॉकेट प्रयोगों से यह स्पष्ट हो गया था कि शीघ्र ही मानव के लिए अंतरिक्ष यात्रा संभव होगी।

इस दौड़ की प्रमुख फिल्में थीं द डे अर्थ स्टूड स्टिल (१९५१), व्हेन वर्ल्ड्स कोलाइड (१९५१), वार आव द वर्ल्ड्स (१९५३), इट केम फ्रॉम आउटर स्पेस (१९५३), इनवेडर्स फ्रॉम मार्स (१९५३), कान्कवेस्ट आव स्पेस (१९५५), फॉरबिडन प्लैनेट (१९५६) एवं 'क्वाटरमास ट्रिलॉजी की तीन फिल्में।

इस दौरान 'त्रिमिती (थ्रीडी) फिल्म विधा भी आई-और 'साइंस-फिक्शन' श्रेणी में छा गई। 'द थ्री-डी रिवेन्ज आव द क्रीएचर' (१९५५) में क्लिन्ट इस्टवूड लेबोरेटरी असिस्टन्ट के रूप में पर्दे पर आया। इनवीजन आव द बॉडी स्नैचर्स (१९५६) के साथ 'साइंस-फिक्शन' फिल्में परिष्कृत होने लगी थीं। साठ के दशक में दो फिल्मों ने इस श्रेणी को प्रतिष्ठा दी- प्लैनेट आव द एपस (१९६८) एवं आर्थर सी. क्लार्क की २००१-ए स्पेस ओडेसी (१९६८) ने। 'स्पेस-ओडेसी' तो विश्व सिनेमा के इतिहास में एक मील का पत्थर मानी जाती है। विश्व की सर्वश्रेष्ठ पच्चीस फिल्मों में यह फिल्म सम्मिलित है। इसी फिल्म ने स्टारवार्स (१९७७) और अस्सी एवं नब्बे के दशकों की साइंस-फिक्शन फिल्मों को दिशा दी है। स्टीवन स्पीलबर्ग की क्लोज एनकाउन्टर्स आव द थर्ड काइण्ड (१९७७), एलियन (१९७९), डिजनी की द ब्लैक होल (१९७९) के साथ तो साइंस-फिक्शन फिल्में अब सबसे अधिक प्रतिष्ठित बन गई हैं। इस श्रेणी के कारण मानव सुपरमैन (१९७९) बनकर आज स्टारगेट (१९९४) पर खड़ा है। यही भविष्य का सिनेमा है और यही है सिनेमा का भविष्य। ■

स्पेशल इफेक्ट्स का जादू!

पर्दे पर आने वाले बिम्ब, कथावस्तु की आवश्यकतानुसार जब विशेष प्रभावों के साथ प्रस्तुत हो जाते हैं, तभी दर्शकों के ज्ञान इन्द्रियों पर वे दृश्य वांछित परिणाम निर्मित करने में सफल होते हैं। ये विशेष प्रभाव दृश्य एवं श्राव्य दोनों होते हैं। साधारण दृश्य भी इन प्रभावों के फलस्वरूप असाधारण बन जाता है।



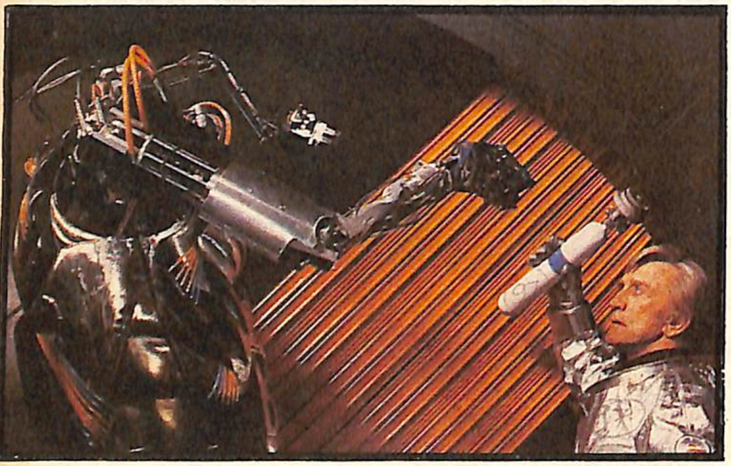
चमत्कार: द बीस्ट फ्राम २०००० फेदम्स

विश्व सिनेमा में व्यावसायिक फिल्मों के आगमन के पहले से ही ऐसे प्रभाव निर्मित करने के प्रयोग होते रहे। १८९४ मे ही थॉमस एडिसन की प्रयोगशाला में (न्यूजर्सी, अमेरिका) द एक्जीक्यूशन आव मेरी, क्वीन ऑव स्काट स्लाट मशीन पीप शो में (काइनेटोस्कोप में) विश्व के पहले स्पेशल इफेक्ट्स कैमरामेन ने (अल्फ्रेड क्लार्क) उपस्थित मेहमानों को अचम्भित कर दिया था। क्वीन मेरी का सिर कलम करने के लिए जल्लाद ने कुल्हाड़ी उठाई, कैमरा रुका, अभिनेताओं ने अपनी पोज स्थिर कर ली। क्वीन मेरी के पात्र के स्थान पर डमी रखी गई। कैमरा फिर चालू हुआ और कुल्हाड़ी ने अपना काम पूरा किया। जॉर्ज मेलिस तो कैमरे का बाजीगर था। वायेज दान्स ला लू ने (वायेज टू द मून १८९६) फिल्म में पृथ्वी से राकेट चंद्रमा पर जाकर उतरा और चाँद रो पड़ा था। बैटलशिप पोटोम्किन (१९२५) में ओडेसा की सीढ़ियों पर के दृश्य संयोजन भी इन्हीं स्पेशल प्रभावों से इतने जीवित हो उठे हैं। फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट्स का उपयोग कोई नई पहल नहीं है।

आजकल तो हर एक फिल्म स्पेशल इफेक्ट्स से लैस होती है। दृश्य श्राव्य क्रांति जो आ गई है। पहले स्पेशल इफेक्ट्स सीमित रूप में प्रयोग में लिए जाते थे। पचास के दशक के बाद साइन्स फिक्शन श्रेणी की फिल्मों की लहर आने के बाद इन प्रभावों का जादू विशेष रूप से दिखाई देने लगा है। फिल्मों के गूँगे युग में भी ट्रिक फोटोग्राफी का उपयोग होता था। प्रिन्सेस निकोटिन (१९०९), द लॉस्ट वर्ल्ड (१९२५), किंगकाँग (१९३३), द क्रास ऑव लोरैन (१९४४) आदि कई फिल्मों में विविध विज्युअल प्रभाव रहे हैं। डबल एक्सपोजर के तकनीक से ओवर साइज्ड प्रापर्टी के निर्माण से, स्टाप मोशन विधा से और पेंटिंग्ज् की सहायता से ऐसे अद्भुत प्रभाव पर्दे पर आते रहे कि दर्शक अचम्भित होते रहे हैं। आज से तीस-पैंतीस वर्ष

फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट्स और कम्प्यूटर तकनीक ने ऐसा चमत्कार कर दिखाया है कि इतिहास भी उलट-पुलट होने लगा है। मुम्बई में बैठा मोगाम्बो व्हाइट हाऊस के राष्ट्रपति से हाथ मिला सकता है।

पहले तक स्पेशल इफेक्ट्स का निर्माण अधिकतर स्टुडिओज के विभागों में होता था। अब विशेषज्ञ एवं विशेष समूह इन प्रभावों को निर्मित करने के व्यवसाय में आ गए हैं। फिल्म २००१ : ए स्पेस ओडेसी (१९६८) के लिए अमेरिकी एवं ब्रितानी विशेषज्ञों ने (इन्हें इफेक्ट्स आर्टिस्ट्स कहा जाता रहा है) एक साथ मिलकर नई विधियाँ ईजाद कीं। फ्रंट प्रोजेक्शन विधा एवं मोशन कन्ट्रोल विधा, क्लोज एनकाउन्टर्स आव द थर्ड काइण्ड (१९७७) में एक विशालकाय स्पेसशिप पृथ्वी पर आता है। डिजनी की कम्प्यूटर ग्राफिक्स के विशेष प्रभावों से सजी ट्रॉन (१९८२) में तो एक वीडियोगेम ही सजीव हो जाता है। ट्रॉन फिल्म के लगभग पंद्रह मिनट के दृश्य कम्प्यूटर से निर्मित हैं। विगत बारह वर्षों में कम्प्यूटर्स की प्रौद्योगिकी ने तो दृश्य प्रभावों में ऐसी क्रांति ला दी है कि अब पर्दे



'साइंस से संभव स्पेशल इफेक्ट'

पर कुछ भी दर्शाया जा सकता है।

स्टारवार्स (१९७७) के साथ जॉर्ज लुकास की टीम इस क्षेत्र में आ गई और विश्व का पहला विज्युअल इफेक्ट्स का स्टुडियो इन्डस्ट्रियल लाइट एंड मैजिक नाम से प्रस्थापित हुआ। स्पेशल इफेक्ट्स की माँग भी लगातार बढ़ती गई तो कई और विशेषीकृत संगठन अब इस क्षेत्र में सेवाएँ प्रदान करने लगे हैं। स्टार वार्स एवं क्लोज एनकाउन्टर्स... बॉक्स ऑफिस पर सफल रही तो भव्य प्रभावों की फिल्मों का निर्माण उफान पर आ गया। द एम्पायर स्ट्राइक्स बैक (१९८०) और भी जबरदस्त रही। धातु के बने ६० से.मी. वाले जायन्ट किलर्स के मॉडेल्स पर्दे पर ऐसे दिखाई देते हैं, जैसे १५ मीटर ऊँचे दैत्याकार हों। घोस्टबस्टर्स (१९८४) में तो लगभग २०० स्पेशल शॉट्स हैं। लाइव एक्शन एवं एनिमेशन को एक साथ मिलाने के कई प्रयोग डिज़नी स्टुडियो में और मेट्रो गोल्डविन मेयर में होते रहे। किन्तु हू फ्रेमड् रोजर रैबिट (१९८८) जैसा अद्भुत प्रभाव स्पेशल इफेक्ट्स का ही जादू रहा है।

टर्मिनेटर-२ : द जजमेन्ट डे (१९९१) में तो स्पेशल इफेक्ट्स की प्रभावशीलता देखते ही बनती है।(वैसे इस फिल्म को स्पेशल साऊण्ड इफेक्ट्स का ऑस्कर मिला है!) डिजिटल टेक्नालॉजी एवं कम्प्यूटर इमेजरी ने ऐसे प्रभाव निर्मित किए हैं कि दर्शक दाँतों तले ऊँगली दबा ले। यही हाल जुरासिक पार्क (१९९३) का भी रहा और मास्क (१९९४) का भी...। अब तो एक्शन-एडवेंचर/ हॉरर/ कॉमेडी सभी श्रेणी की फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट्स सुपर स्टार्स हो रहे हैं। डेथ बिकम्स हर (१९९२) हॉरर/ कॉमेडी रही और स्पेशल इफेक्ट्स के जादू ने सारी फिल्म को अपनी गिरफ्त में ले रखा है। यहाँ तक कि फारेस्ट गम्प (१९९४) में तो स्पेशल इफेक्ट्स के जादूगरों ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया है-इतिहास को उलट-पलट कर। इस फिल्म में नायक आज का टॉम हेन्कस् कम्प्यूटर इमेजरी की सहायता से ठेठ अमेरिका के राष्ट्राध्यक्ष जॉन एफ केनेडी से हाथ मिला रहा है। वार्तालाप कर रहा है।

आजकल सभी स्टुडिओज/ निर्माता गुणवत्ता, बजट एवं सफलता को एक साथ जोड़कर चल रहे हैं। स्पेशल इफेक्ट्स में माँग तो खूब है। किंतु फिल्मांकन एवं फिल्मों का विपणन दोनों ही महँगा हो रहा है। ऐसे में ४०० से ५०० लाख डॉलर्स खर्च कर बनी फिल्में जब पिटती हैं, तब हाहाकार मचता है। मिटिआर (१९७९) इसीलिए फ्लॉप गई। स्टार ट्रेक द मूवी (१९७९) भी नहीं चली। जबकि स्पेशल इफेक्ट्स पर १६० लाख डॉलर्स व्यय किए गए थे। कुछ फिल्में तो केवल स्पेशल इफेक्ट्स के कारण विशेष यादगार बनीं, जैसे द टेन कमाण्डमेन्ट्स (१९५६) के रेड सी का विभाजन का दृश्य या क्लोज एनकाऊंटर्स आव द थर्ड काइण्ड (१९७७) के वे अविस्मरणीय रूप से भव्य दृश्य, जब स्पेसशिप नीचे उतरता है। सुपरमेन (१९७८) की आकाश में उड़ान भी ऐसी ही अद्भुत है। फिल्म २००१ : ए स्पेस ओडेसी (१९६८) में ब्रह्माण्ड में विचरण के दृश्य। ■

स्पेशल इफेक्ट्स प्रधान प्रमुख फिल्में : जुरासिक पार्क (१९९३) ◇ टर्मिनेटर-२ (१९९१) ◇ द अबीस (१९८९) ◇ एलियन (१९७९) ◇ ककून (१९८५) ◇ कोनान द डिस्ट्रायर (१९८४) ◇ ड्रेगॉनस्लेयर (१९८१) ◇ डयुन (१९८४) ◇ ईटी द एक्स्ट्रा टेरीस्टरीअल (१९८२) ◇ एम्पायर स्ट्राइक्स बैक (१९८०) फन्टास्टिक वायेज (१९६६) ◇ इनक्रेडिबल थिन्किग मेन (१९५७) ◇ रैडर्स आव द लास्ट आर्क (१९८१) ◇ स्टारवार्स (१९७७) ◇ क्लोज एनकाउन्टर्स आव द थर्ड काइण्ड (१९७७) ◇ सुपरमैन (१९७८) ◇ ट्रान (१९८२) ◇ द मास्क (१९९४) ◇ स्टारगेट (१९९४)।

एनिमेशन फिल्म

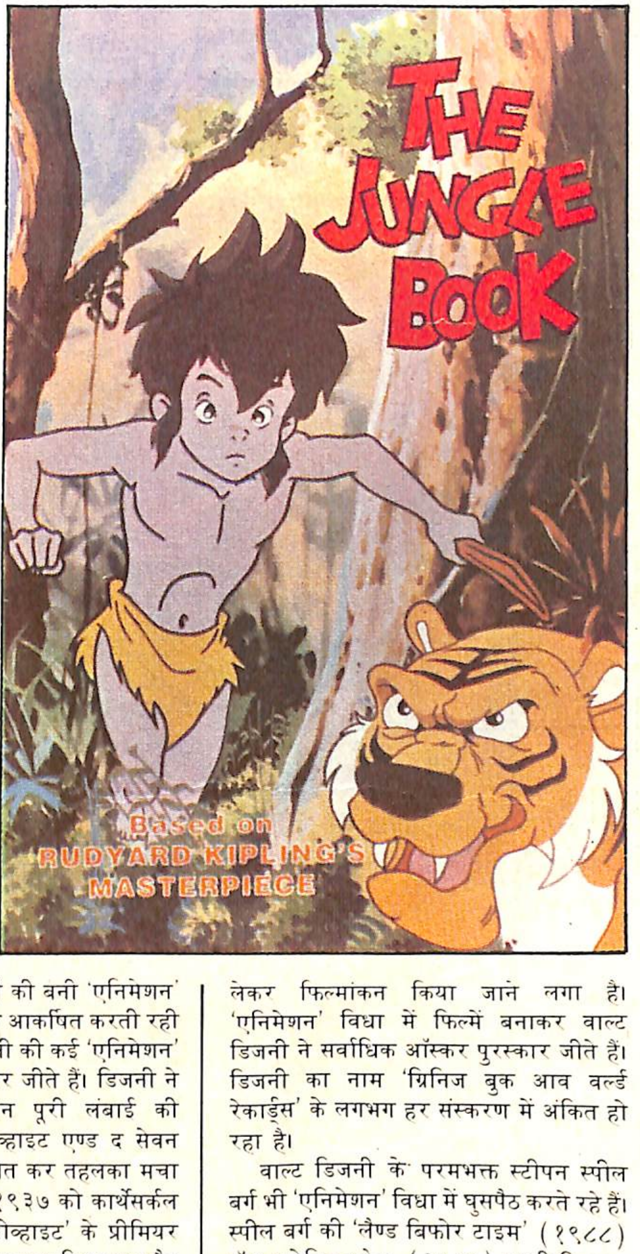
तमाम फिल्म विधाओं में सबसे चुनौतीपूर्ण, सबसे महँगी, सबसे अधिक समय खर्च करने वाली, किन्तु, सबसे अधिक कलात्मक श्रेणी **'एनिमेशन'** रही है। सबसे अधिक आनंदमयी फिल्में भी इसी श्रेणी की हैं। लाइव, एक्शन फिल्मों से 'एनिमेशन' फिल्में एकदम अलग हैं। लाइव- एक्शन फिल्मों में जीवित चरित्रों का फिल्मांकन किया जाता है। 'एनिमेशन' फिल्मों में चरित्रों की संकल्पना कर उनके संबंधित पृष्ठभूमि एवं अन्य डिटेल्स के साथ चित्र बनाए जाते हैं। फिल्म में सजीवता के आभास निर्मित करने के लिए 'मूवमेंट' के चित्र बनते हैं। चित्र, कथानक/घटनाक्रम/ चरित्र/ हावभाव/ संवाद के अनुकूल बनाए जाते हैं। इन चित्र- पारदर्शी 'सेल' को बाद में क्रमवार फिल्म पर अंकित कर लिया जाता है। 'संवाद' जोड़े जाते हैं। संपादन में एकसूत्रता लाई जाती है। त्रिमिती (थ्री-डायमेन्शनल) प्रभाव के लिए चित्रों को ही लाइट/शेड, 'पर्स्पेक्टिव यथायोग्य कलरशेडस् के चित्रित किया जाता है। एनिमेशन फिल्मों का फिल्मांकन विशेष कैमरों के साथ किया जाता है। संक्षिप्त में 'एनिमेशन' फिल्मों में हर चरण पर अलग ढंग के कलाकार (चित्रकार) एवं तंत्रज्ञ होते हैं।

'एनिमेशन' फिल्मों की अवधि अधिकतम ९० मिनट की रहती है। अपवाद में डिजनी की फैन्टासिआ (१९४०) लगभग १२० मिनट की है। औसत ७० मिनट की 'एनिमेशन' फिल्म के लिए २० से २५ लाख रंगीन चित्र बनते हैं। हरेक फ्रेम हाथ से बनती है। इसलिए यह अतिरिक्त भार 'एनिमेशन' फिल्मों के लिए महँगा हो जाता है। लगभग ३०० से ४०० चित्रकार एवं तंत्रज्ञ और ३/४ वर्षों की अवधि लगती है व लगभग ५०० लाख डॉलर्स लागत। आजकल तो 'एनिमेशन' फिल्मों में संगीत का पक्ष प्रबल हो गया है। अलादीन (१९९३) या थम्बेलिना (१९९४) जैसी 'एनिमेशन' फिल्में ही देखें- कि 'एनिमेशन' फिल्म बनाना बड़ा

'जोखिम' भरा काम हो गया है। विश्व के लगभग विकसित देश अमेरिका/ योरप/ जापान, यहाँ तक कि 'साम्यवादी' खेमे के देश भी- इस विधा में बड़े प्रशंसनीय प्रयोग करते रहे और कलात्मक फिल्में बनाते रहे हैं। अभी, जापान ने भी भारत के सहयोग से 'एनिमेशन' फिल्म रामायण (१९९२) बनाई है।

'एनिमेशन' फिल्मों के सबसे परिष्कृत रूप देने में वाल्ट डिजनी एवं उनके सहयोगी (नाइन ओल्ड मेन) साधुवाद के पात्र हैं। टू रिलर्स 'शार्ट्स' के रूप में डिजनी की बनी 'एनिमेशन' फिल्में १९२८ से ही दर्शक आकर्षित करती रही हैं। तीस के दशक में डिजनी की कई 'एनिमेशन' शार्ट्स ने ऑस्कर पुरस्कार जीते हैं। डिजनी ने १९३७ में पहली रंगीन पूरी लंबाई की 'एनिमेशन' फिल्म स्नो व्हाइट एण्ड द सेवन ड्वार्फस् (१९३७) प्रदर्शित कर तहलका मचा दिया था। दिसंबर २१, १९३७ को कार्थेसर्कल थिएटर, हॉलीवुड में 'स्नोव्हाइट' के प्रीमियर पर थिएटर में सारा हॉलीवुड उपस्थित था और थिएटर के बाहर ३०००० दर्शक थे। स्नो व्हाइट ने वाल्ट डिजनी को 'टाइम' पत्रिका के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित किया। इस फिल्म के लिए उन्हें १ बड़ा और सात 'बौने' ऑस्कर प्राप्त हुए थे।

एनिमेशन फिल्मों की दुनिया निराली है। इस पद्धति की फिल्मों में प्रकृति और समस्त चराचर चित्रों में बदलकर एक ऐसी भाषा में बात करते हैं, जो दर्शकों की समझ में आ जाए। वाल्ट डिज़ने ने एनिमेशन फिल्मों को सारे संसार में हर उम्र के दर्शकों में लोकप्रिय बनाया है। इन फिल्मों के पात्र तो बच्चों को अपने भाई-बहनों जैसे प्यारे लगते हैं।



लगभग ६० वर्षों में केवल डिजनी स्टूडिओ ने ही लगभग ३५ पूरी लम्बाई की 'एनिमेटेड' फीचर फिल्में, और एक हजार से अधिक 'एनिमेटेड' कार्टून- शार्ट्स निर्मित की है। मिकी माउस/ डोनाल्ड डक/ मिनी-डैजी/ स्क्रूज/ गूफी चिप एंड डेल आदि दर्जनों चरित्रों को लेकर बनी ये फिल्में हर आयु के दर्शकों ने देखी हैं। अब कम्प्यूटर की सहायता एनिमेशन में ली जा रही है। 'एनिमेशन' विधा में भी नए प्रयोग होते रहे हैं। 'स्टॉप मोशन' 'पपेट्स' (कठपुतलियाँ) लेकर फिल्मांकन किया जाने लगा है। 'एनिमेशन' विधा में फिल्में बनाकर वाल्ट डिजनी ने सर्वाधिक ऑस्कर पुरस्कार जीते हैं। डिजनी का नाम 'ग्रिनिज बुक आव वर्ल्ड रेकार्ड्स' के लगभग हर संस्करण में अंकित हो रहा है।

वाल्ट डिजनी के परमभक्त स्टीपन स्पील बर्ग भी 'एनिमेशन' विधा में घुसपैठ करते रहे हैं। स्पील बर्ग की 'लैण्ड बिफोर टाइम' (१९८८) अँन, अमेरिकन टेल, (१९८६) काफी विख्यात रही हैं। राल्फ बकसी की फ्रिट्स द कैट, (१९७२), एवं लार्ड्स आव द रिंग (१९७८) भी सम्मानित रही हैं। डिजनी के चरित्रों के अलावा लगभग दो सौ और चरित्रों को लेकर जिनमें चार्ली ब्राऊन की गैंग/ ट्विटी-सिल्वेस्टर/ योगी बेअर/ रोजर रैबिट/ डूपी/ बाबर/ बगस बनी एवं गैंग/ गम्बी/ टॉम एण्ड जेरी/ वूडी वूडपेकर एवं गैंग और पिंक पैन्थर को लेकर लगभग सौ नामी एनिमेटर्स की हजारों 'एनिमेशन- शार्ट्स' बनी हैं। इन सबके अलावा परिकथाएँ, प्राणीकथाएँ एवं विश्वसाहित्य की अमर कृतियों पर 'एनिमेशन' फिल्में हैं।

'एनिमेशन' फिल्मों को लेकर अब विश्व स्तर पर फिल्म समारोह आयोजित होने लगे हैं। 'एनिमेशन' विधा के प्रति दर्शकों में जागरूकता आ रही है। १९३७ में जब डिजनी ने स्नोव्हाइट एण्ड द सेवन ड्वार्फ्स' फिल्म एनिमेशन में बनाने की कल्पना की थी तब आलोचकों ने प्रश्न किया था- ७५ मिनट तक 'एनिमेशन' फिल्म कौन देखना चाहेगा? दुनियाभर के करोड़ों लोगों ने चाव से इस फिल्म को देखा। जब इस फिल्म का विशेष वीडियो संस्करण जारी हुआ तो एक सप्ताह में २५० लाख कैसेट बिके।

नब्बे के दशक के पूर्वार्ध में फिर दस' में एक (अलादीन)/१९९२) एनिमेशन फिल्म है और अभी लॉयन किंग (१९९४) टिकिट खिड़की पर धन बटोर रही हैं।

अब, 'एनिमेशन' फिल्में लोकप्रिय हो रही हैं- भारत/ जापान सहयोग से निर्मित 'रामायण' (१९९२) अभी व्यावसायिक तौर पर रिलीज होनी है। और 'थम्बेलिना' (१९९४) और नाइट बिफोर क्रिसमस (१९९४) फिल्मों के साथ एनिमेशन फिल्मों का भविष्य उज्ज्वल है। अभी तक वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर 'एनिमेशन' विधा की फिल्म को नहीं मिला है (जबकि अलादीन और लायन किंग के साथ १९९१ की 'द ब्यूटी एण्ड द बीस्ट तक इसके लिए नामांकित की गई थी)।

◆**वाल्ट डिजनी की टॉप-टेन एनिमेशन फिल्में** ◇अलादीन (१९९२) ◇हू फ्रेम्ड रोजर रैबिट (आंशिक एनिमेशन, १९८८) द ब्यूटी एण्ड द बीस्ट, (१९९१) ◇१०१ डालमेशन्स, (१९६१)◇ स्नोव्हाइट एण्ड द सेवन ड्वार्फस, (१९३७) ◇जंगल बुक, (१९६७) ◇ बाम्बी, (१९४२)◇फन्टासिआ (१९४०) ◇सिण्ड्रेला (१९४९) और ◇पिनोचिओ (१९४०)।

◆**अन्य प्रमुख एनिमेशन फिल्में :-** ◇डम्बो (१९४०) ◇द थ्री कैबेलेरोज, (१९४५) ◇एलिस इन वन्डरलैण्ड, (१९५०) पीटर पैन (१९५३) ◇लेडी एण्ड द ट्रैम्प, (१९५५) ◇स्लीपिंग ब्यूटी, (१९५९) द एवोर्ड इन द स्टोन, (१९६३) ◇द अरिस्टोकैट्स (१९७०) ◇राबिन हुड (१९७३) ◇द रेस्कुअर्स (१९७७) ◇द फॉक्स एण्ड द हाऊण्ड (१९८०) ◇द ब्लैक कॉल्ड्रन (१९८५) ◇बेसिल, द ग्रेट माऊस डिटेक्टिव (१९८६) ◇आलिवर एण्ड कंपनी (१९८७) ◇द लिटिल मरमेड (१९८८) ◇रामायण (१९९२) ◇ थम्बेलिना, (१९९४) ◇नाईटमेअर बिफोर क्रिसमस (१९९४)। ■

हॉरर फिल्म

दिल थाम के बैठो अब मेरी बारी आई

डरावनी फिल्में दर्शकों को डराती हैं। धक्का देती हैं। पर्दे पर छाया प्रकाश के तत्व होते हैं। पृष्ठभूमि में विशिष्ठ आवाजें होती हैं। दर्शक औपचारिक रूप से फिल्म देखने बैठता है और कुछ ऐसा प्रभाव निर्मित होता है कि दर्शक डरकर चीखता है। यह सब बड़ा अजीब है। दर्शक जानता है वह सब कुछ पर्दे पर देख रहा है फिर भी दिल है कि मानता ही नहीं है। यह माहौल का प्रभाव है। इसलिए हॉरर फिल्में बनाना चुनौतीपूर्ण कार्य है। डर/खौफ दो तरह का होता है। एक जो केवल कल्पना में बसा रहता है। दूसरा वह जिसे आप अनुभव करते हैं। दोनों ही हॉरर फिल्मों के कथानकों के आधार हैं। लोक



द फ्रेंजी

फिल्म-दर्शक भी अजीब होता है। पहले पैसा अदा करता है। फिर सिनेमा हॉल के अँधेरे में बैठ कर कभी रोता है, कभी हँसता है तो कभी डरता है! फिल्म 'सायको' की चीख सुनकर कई दर्शक बेहोश हो गए थे।

कथाओं से लेकर आधुनिक उपन्यासों तक भय/डर एक 'रस' के रूप में कथाओं, कहानियों, किस्सों को रंगते रहा है। किसी और रंग में नहीं, स्याह रंग में। 'हॉरर' फिल्मों का निर्माण भी मूलतः दर्शकों का मनोरंजन करना होता है- हॉरर फिल्में इसलिए नहीं बनती कि दर्शक डरकर थिएटर छोड़कर भाग जाए। या शॉक से अपनी सीट पर ही दम तोड़ दे। हॉरर फिल्मों में हॉरर के तत्व कब, कितने, किस रंग-रूप में परोसे जाते हैं, उन पर 'हॉरर' फिल्मों की सफलता/ लोकप्रियता/ कलात्मकता निर्भर करती है।

हॉरर फिल्मों की श्रेणी एक प्रतिष्ठित श्रेणी है। इस श्रेणी में बनी कुछ फिल्म श्रेष्ठ रही। बहुत सारी साधारण और अनेक घटिया हैं। फिल्मों के गूँगे दौर में ग्रिफिथ की द अवेंजिग कानसायंस (१९१४), एडगर ॲलन पो की द टेल-टेल हार्ट कहानी पर आधारित थी। लान चैने की फैन्टम आव द ऑपेरा (१९२५) ने इस श्रेणी को स्थापित किया। प्रारंभ में हॉरर फिल्मों में जर्मन प्रभाव शक्तिशाली रहा- द कैबिनेट आव डॉ. कैलिगरी (१९१९) मे हॉलीवुड की हॉरर फिल्में विशेष प्रभावित रही। गूँगे युग की प्रमुख हॉरर फिल्में रही- रोलांड वेस्ट की द बैट (१९२६), टॉड ब्राउनिंग की लंडन आफ्टर मिडनाइट (१९२७), बेंजामिन क्रिस्तिनसेन की द हाउस आव हॉरर (१९२९)/ सेवन फुट प्रिंट्स आव सातान (१९२९)।

फिल्मों में आवाज आते ही हॉरर फिल्मों में भी साउंड के तत्व ने कोहराम मचाया। जेम्स व्हेल की फिल्म फ्रेंकेनस्टैन (१९३१) के साथ बोरिस कार्लोफ जैसा सशक्त अभिनेता पर्दे पर आ गया। यह फिल्म आज भी एक कालजयी फिल्म है। तीस के दशक में हॉरर फिल्मों में यौन (सेक्स) के तत्व जुड़ गए। हॉरर फिल्मों में उत्तानता (इकोटिसिस्म) आ गई, तो हॉरर फिल्मों को एक ऐसा आयाम मिल गया जो समय के साथ और गहराता गया। ड्राकुला (१९३१), मर्डरस् आन रू मार्ग (१९३२), डॉक्टर जैकल एंड मि. हाईड (१९३२) से लेकर ठेठ किंग कॉंग (१९३३) तक कई श्रेष्ठ हॉरर फिल्में पर्दे पर आ गई। किंग कॉंग के साथ हॉरर फिल्मों में स्पेशल इफेक्ट्स भी आ गए। हॉरर फिल्में और डरावनी हो गई। किंग कॉंग के साथ ऐसी अपार लोकप्रियता रही कि भयभीत होने के लिए लोग पैसे खर्च कर सिनेमागृहों पर ऐसी भीड़ करने लगे कि हॉरर फिल्मों की धन बटोरने की ताकत प्रमाणित हो गई। सत्ता के खिलाफ विद्रोह के तत्व भी कुछ हॉरर फिल्मों में आ गए। अर्ल केंटन की आईलैंड आव लॉस्ट सोलस (१९३२) फिल्म चार्लस लॉटन को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करती रही। इस दौर की प्रमुख हॉरर फिल्में रही- द मोस्ट डेन्जरस गेम (१९३२), द ब्लैक केट (१९३४), द इनविजिबल मैन (१९३३) और डेविल डॉल (१९३६)।

हेज आफिस के कोड के साथ आई सेंसरशिप ने थोड़े समय के लिए हॉरर फिल्मों को निरुत्साहित किया। वैसे भी हॉरर फिल्में ऊट-पटांग कथानकों पर बनने लगी थीं कहीं द ब्राईड आव फ्रैन्केनस्टैन (१९३९), कहीं सन आव ड्राकुला (१९४३) के रूप में भूतों-दैत्यों के खानदान पर्दे पर आने लगे थे। हॉरर फिल्मों का दौर जो थमा, वह थमा ही रहा जब तक हैमर फिल्म्स के बैनर के नीचे द कर्स आव फ्रैंकेनस्टैन (१९५७) और ड्राकुला (१९५८) जैसी फिल्मों ने फिर से दर्शकों को डराना शुरू नहीं किया। ड्राकुला से काऊट ड्राकुला के रूप में क्रिस्तोफर ली ने चमत्कार कर दिया। यह फिल्म ड्राकुला श्रृंखला की तमाम फिल्मों में सर्वश्रेष्ठ कही जा सकती है। फ्रैंसिस फोर्ड कोपोला की ड्राकुला (१९९२) से भी बेहतर। हॉरर फिल्मों के साथ हैमर फिल्म्स का गठबंधन ऐसा जबरदस्त रहा कि कई हॉरर फिल्में तो हैमर हॉरर के नाम से चली हैं। इसी दौरान रोजन कोरमन ने पो की कहानियों पर कुछ श्रेष्ठ हॉरर फिल्में बनाई हैं- हाउस आव ऊशर (१९६०), द पिट एण्ड द पेंडुलम (१९६१)।

पचास के दशक में हॉरर फिल्मों के साथ साइंस-फिक्शन श्रेणी के तत्व भी जुड़ गए हैं- द

वीम्स्ट फ्रॉम २०००० फैदमस् (१९५३), देम! (१९५४), द इनक्रेडिबल श्रिन्किंग मैन (१९५७) और द फ्लाय (१९५८)। डॉन सीगेल की इनवैजन आव द बॉडी स्नैचर्स (१९५६) भी इस दौड़ की बेहतरीन हॉरर फिल्म रही है। हिचकॉक की सायको (१९६०) ने तो हॉरर फिल्मों में मनोवैज्ञानिक तत्व लाकर हॉरर फिल्मों का ताना-बाना ही बदल दिया। सायको एक कालजयी फिल्म ही नहीं, हॉरर फिल्मों के पाठ पढ़ाने वाली पाठ्य पुस्तक जैसी दस्तावेजी है। व्हाट एवर हैपंड टू बेबी जेन? (१९६२) में बेटी डेविस और जोन क्राफर्ड का द्वंद्व इतना आकर्षक है जितना सायको का वह शॉवर सीन।

सत्तर, अस्सी एवं नब्बे के दशकों में भी हॉरर फिल्में खूब बनी हैं। वर्ष का सर्वश्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर पाने वाली द साइलेंस आव द लैम्ब्स् (१९९१), हॉरर हॉल आव फेम का वर्ष का सर्वश्रेष्ठ हॉरर फिल्म का पुरस्कार भी प्राप्त कर रही है। हालात हॉरिफाइंग हो रहे हैं। ■

चार्ल्स ग्रे : द डेविल राइड्स आउट



लोकप्रिय हॉरर फिल्में: ◇द एक्जोर्सिस्ट (१९७३) ◇ड्राकुला (१९५८) एवं (१९९२) ◇एलियंस (१९७९) ◇पोल्टरजीस्ट (१९८२) ◇ओमिटवीले हॉरर (१९७९) ◇सायको (१९६०) ◇द ओमेन (१९७६) ◇रोजमरीज बेबी (१९६८) ◇हैलोविन (१९७८) ◇ओमेन-२ : डैमिअन (१९७८) ◇रेस वीथ द डेविल (१९७५) ◇विलेज आव द डैम्ड (१९६१) ◇द शाइनिंग (१९८०) ◇ड्रेस्ड टू किल (१९८०)।

दुनियाभर में 'वयस्कता' का पैमाना उम्र को माना गया है। लेकिन उम्र की इस कसौटी से किसी को वयस्क अथवा अवयस्क करार देना प्राकृतिक न्याय नहीं है। जब साहित्य पढ़ने में 'वयस्कता' आड़े नहीं आती, फिर फिल्म देखने पर यह बंधन क्यों?

केवल 'वयस्कों' के लिए

फिल्मों का निर्माण टार्गेट दर्शकों को ध्यान में रखकर होता है। इसलिए फिल्म किसके लिए है? इस प्रश्न का उत्तर निर्माता के पास होता है। फिल्म एक व्यावसायिक उत्पादन होने से निर्माता लाभ के लिए यह चाहेगा कि अधिक से अधिक दर्शक उसे मिलें। इस उद्देश्य के लिए निर्माता यह चाहेगा कि फिल्म में ऐसे तत्व अधिक से अधिक हों, जो अधिक दर्शकों को आकर्षित कर सकें। निर्माता की यही चाह फिल्मों में अवांछित तत्वों की घुसपैठ के लिए जिम्मेदार होती है। तीस के दशक में हेज आफिस के कोड के कारण एवं साठ के दशक में मोशन पिक्चर्स प्रोड्यूसर्स एसोसिएशन की ओर से प्रस्तावित रेटिंग प्रणाली से अब फिल्मों को उनके टार्गेट दर्शकों के संदर्भ में वर्गीकृत प्रमाणित करना संभव हो गया है।

शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक रूप से परिपक्व (एवं स्वस्थ) व्यक्ति तो कोई भी कैसी भी फिल्म देखे-फिल्म उसे कुप्रभावित नहीं करती। वयस्कों की फिल्में (यौन अभिमुख फिल्में) यदि बच्चे देखें, तो बच्चों के मन प्रदूषित हो सकते हैं। बात सिर्फ यौन या नग्नता की नहीं है। हिंसाचार, व्यभिचार की अति के प्रदर्शन की भी है। खास है फिल्म के चरित्रों द्वारा प्रयोग में ली जाने वाली भाषा! अस्सी के दशक से हॉलीवुड की फिल्मों में भाषा इतनी बेहूदी प्रयोग में ली जाने लगी है कि हद है। भाषा भी इतनी हिंसक हो रही है (स्लैन्ग के नाम पर ऐसी भाषा की वकालत नहीं की जा सकती) कि दर्शकों को इस हिंसा की अनावश्यक खुराक से बचाना जरूरी है। वयस्कों के लिए फिल्मों का निर्माण भी होता रहता है क्योंकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है और दर्शक भी स्वतंत्र है। वयस्क (अॅडल्ट) फिल्मों से तात्पर्य ऐसी फिल्मों से है जो वयस्क दर्शकों को ध्यान में रखकर बनाई गई हो और जिन्हें बच्चे/नाबालिग न देखें। इस निषेधाज्ञा को इसलिए लागू किया जाता है क्योंकि इन फिल्मों के विषय/प्रसंग/ कथानक बच्चों के लिए प्रतिकूल होते हैं। भाषा असभ्यता की हद को पार कर अश्लील होती है। इन फिल्मों में यौन/ हिंसा/ व्यभिचार के दृश्य एवं नग्नता अधिक होती है।

लगभग सभी श्रेणी की फिल्मों में से ऐसी फिल्मों को पृथक किया जा सकता है जो

वयस्क श्रेणी के योग्य हो। हॉरर श्रेणी की लगभग सारी फिल्में वयस्कों के लिए होती हैं। थ्रिलर्स एवं एक्शन एडवेंचर श्रेणी की फिल्मों में भी आजकल ऐसी फिल्में अधिक बनी हैं, जो वयस्कों के लिए कही जा सकती हैं। ड्रामा फिल्मों में हिंसा तो नहीं, किन्तु यौन व्यभिचार एवं असभ्य अश्लील भाषा तथा नग्नता प्रखर रही है। ऐसी फिल्मों को भी केवल वयस्कों के लिए लेबल लगाकर पृथक किया जा सकता है।

हम एक बात तो आपको कहना भूल ही गए। केवल वयस्कों के लिए यौन व्यभिचार हिंसा से भरपूर अश्लीलतम भाषा के साथ या उसके बिना विशेष रूप से बनी ऐसी फिल्में भी हैं, जो खास वयस्कों की फिल्में कही जाती हैं। ये फिल्में बाकायदा वयस्कों के लिए बनाई जाती हैं। ये फिल्में उन फिल्मों से अलग हैं, जिन्हें ब्ल्यू फिल्में/ अण्डरग्राउंड फिल्में/ पोर्नो या ट्रिपल एक्स रेटेड फिल्में कहा जाता है। ये वयस्क श्रेणी की फिल्में अधिकतर अमेरिका/फ्रांस की बनी मिलती हैं। इटली, वेस्ट जर्मनी (पहले की) और जापान की बनी भी कई हैं। लगभग सभी अँगरेजी में डब की होती हैं। ऐसी फिल्मों में संवादों का विशेष महत्व नहीं होता। इन वयस्क फिल्मों में कुछ तो बड़ी कलात्मक होती हैं। इनमें से माइल्ड रूप से बनी फिल्मों को आर रेटिंग प्राप्त होता रहा है। स्ट्राँग फिल्मों को एक्स। एक्स्ट्रा स्ट्राँग, डबल एक्स' और ट्रिपल एक्स उत्पादनों को इस विवेचन से बाहर रखने में ही सबकी भलाई है। अमेरिका में एक्स रेटिंग का मतलब हार्डकोअर-पोर्नोग्राफी है। किन्तु ब्रिटेन एक्स रेटिंग सॉफ्टकोअर है।

ड्रामा श्रेणी की फिल्मों में कुछ उपन्यासकार या उपन्यास ही ऐसे रहे जो प्रकाशित होते ही विवाद के घेरे में अश्लील करार दिए गए। जैसे डी.एच. लारेन्स का उपन्यास लेडी चैटर्लीज लवर इस उपन्यास पर १९५९ में ब्रिटेन-फ्रांस के सहयोग से बाद में अमेरिका में १९८१ में फिल्म बनी। यह फिल्म वयस्क श्रेणी की आर रेटेड फिल्म है। लोलिता (१९६२) फिल्म प्रदर्शित हुई, तब भी खूब सनसनी फैली थी। द ब्ल्यू लैगून (१९८०), टार्जन द एपमॅन (१९८१)



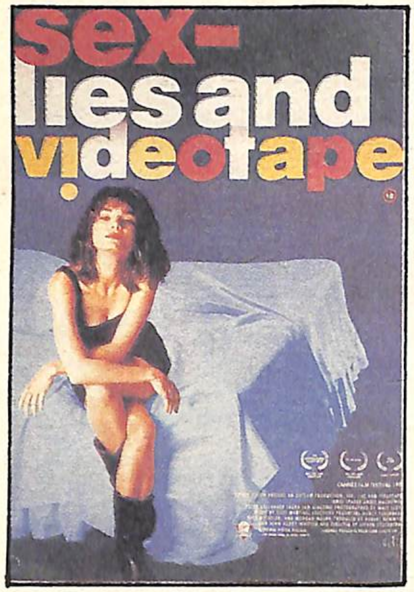
सेंटा बर्गर

वयस्क श्रेणी की प्रमुख फिल्में : अमेरिका : केज्ड हीट (१९७४) ◇ डेसपरेट लिविंग (१९७७) ◇ फिमेल ट्रबल (१९७४) ◇ फ्लेश (१९६९) ◇ फ्रिट्स द कैट (१९७१/एनिमेशन) ◇ हीट (१९७२) ◇ लोनसम काऊबायज् (१९६८) ◇ मल्टिपल मेनिआक्स् (१९७०) ◇ ट्राश (१९७०) ◇ ट्रक स्टापस् वुमन (१९७४) ◇ विक्सेन (१९६८) ◇ बेसिक इन्स्टिंक्ट (१९९२) ◇ नैचरल बॉर्न किलर्स (१९९४)।

फ्रांस-◇ बिलिटिस (१९७६) ◇ कजिन्स इन लव (१९८०) ◇ इमान्युएली (१९७४ एवं बाद के कई भाग) ◇ इमॉर्टल टेल्स (१९७४) ◇ श्री इमार्टल वुमेन (१९७८)।

अन्य-द डेकामेरान (१९७०) ◇ एम्पायर ऑव पैशन (१९७८) ◇ ला केज आऊकस फॉलीज (१९७८) ◇ द डैम्ड (१९६९)।

अन्य श्रेणियों की वयस्क फिल्में-अपोकैलिप्स नाऊ (१९७९) ◇ मैड मैक्स (१९७९) ◇ बाब एण्ड करोल एंड टेड एंड एलिस (१९६९) ◇ द ग्रेजुएट (१९७०) ◇ ए मिडसमर नाइट्स सेक्स कॉमेडी (१९८२) ◇ अनादर वे (१९८२) डॉग डे ऑफ्टरनून (१९७५) ◇ मिडनाइट एक्सप्रेस (१९७८) ◇ द नाइट पोर्टर (१९७३) ◇ ओल्ड बायफ्रेन्ड्स (१९७८) ◇ प्रेटी बेबी (१९७८) ◇ प्रॉस्टिट्यूट (१९८०) ◇ टैक्सी ड्राइवर (१९७६) ◇ विक्टिम (१९६१) ◇ अल्टर्डस्टेटस (१९८०) ◇ कैबरे (१९७२) ◇ बानी एण्ड क्लाइड (१९६७) ◇ चाइना टाऊन (१९७४) ◇ ड्रेस्ड टू किल (१९८०) ◇ केपफिअर (१९९२) ◇ द साइलेन्स ऑव द लैम्बस (१९९१)।



फिल्मों में अपार नग्नता है। ब्रुक शील्ड्स एवं बो डेरेक जैसी सुंदरियों को इन फिल्मों में इसलिए सम्मिलित किया गया था। वयस्क श्रेणी की फिल्मों में ऐसी फिल्में भी सम्मिलित हैं जिनके मूल कथानक नग्नता पर आधारित हैं। अब वयस्क श्रेणी की फिल्मों में नग्नता के साथ हिंसा के तत्व आवश्यकता से अधिक जुड़ रहे हैं, जैसे बेसिक इन्स्टिन्क्ट (१९९२)।

वयस्क फिल्मों में सबसे प्रतिष्ठित फिल्म इमान्युएली (१९७४) है-और फ्रांस की इस फिल्म में सिल्विया क्रिस्टेल ने प्रमुख भूमिका निभाई है। सुखद फोटोग्राफी एवं लोकेशन शूटिंग वाली यह फिल्म एक फ्रांसीसी राजनयिक की पत्नी के बँकाक के यौन एडवेंचर्स पर केंद्रित है। इमान्युएली के भाग आते रहे और सिल्विया क्रिस्टेल और वयस्क फिल्मों में नग्न होती रही हैं (लेडी चैटर्लीज लवर १९८१) निर्देशक/ एनिमेटर राल्फ बक्सी की एनिमेशन फिल्म 'फ्रिट्ज द कैट' (१९७१) वयस्क श्रेणी में बनी एकमेव एनिमेशन फिल्म है। (अमेरिका/ रंगीन/ अवधि ७८ मिनट)। बाद में इस फिल्म का एक और भागभी बना द नाइन लाइव्ज ऑव फ्रिट्ज द कैट (१९७४)।

१९९४ में बनी बहुप्रतिष्ठित (पुरस्कारों की होड़ में सम्मिलित) फिल्में पल्प फिक्शन (१९९४) एवं नैचरल बॉर्न किलर्स (१९९४) हिंसा/ सेक्स/ अश्लील भाषा से लबालब फिल्में हैं। इन्हें भी वयस्क श्रेणी में रखा जाता है। लगता है इक्कीसवीं सदी फिल्मों को और भी वयस्क बना देगी। अण्डी वोरहाल, पॉल मॉरिसी जैसे निर्देशकों के प्रयास आखिर रंग लाएँगे। ■

सब कुछ कॉमेडी से शुरू हुआ। किसी ने पानी का होज पाइप लेकर पानी उड़ेल दिया और सिनेमा बन गया। बाग में पानी देता माली लुमिएर के सिनेमाटोग्राफ का विषय था १८९५ में। और दर्शक पेट पकड़ कर हँसते गए। कॉमेडी दर्शकों को हँसाने के लिए बनी है। कॉमेडी का दर्शक १९९५ में भी हँस रहा है। हँसाने वाला बदल गया है। हँसने वाले बदल गए हैं। चैप्लिन, कीटन का स्थान विलियम रॉबिनसन (मिसेस डाउट फायर, १९९४) या जिम कैरी (मास्क, १९९४) ले रहा है। दर्शक पैसा देकर हँस रहे हैं। उट-पटांग भाग-दौड़। विचित्र अंगविक्षेप। सब कुछ आज भी वैसा ही है। कीस्टोन कॉप्स जैसी ही स्लैपस्टिक कॉमेडी आज भी पर्दे पर आ रही है (बेबीज डे आऊट १९९४)। दर्शकों में अभी भी भाग-दौड़ और हँसोड़ कारनामों के प्रति आकर्षण है।

गूँगे युग में सबसे श्रेष्ठ कॉमेडी बनी है। संवाद तो थे नहीं। जो कुछ था वह चेहरे से एवं उट-पटाँग हरकतों से अभिव्यक्त होता रहा। कॉमेडी फिल्मों में इनसे काम चलता रहा। मसखरों की एक ऐसी टोली हमेशा ही उपलब्ध रही है। हँसी, कॉमेडी का आधार रही। बस्टर कीटन तमाम मसखरों में सर्वश्रेष्ठ था- द नेविगेटर (१९२४) एवं द जनरल (१९२६) आज भी देख लें। चैप्लिन तो सिनेमा का पहला सुपर-स्टार है। आज भी एक किवदंती बनी हुआ है। गूँगे युग में कीटन एवं चैप्लिन के साथ हैरोल्ड लाइड भी जबरदस्त मसखरा रहा (द फ्रेशमन, १९२५)। चार्ली चैप्लिन ने आरंभिक दौर में खूब शार्ट्स (टू-रीलर्स) में अपनी उपस्थिति दर्ज की। बाद में वे पूरी लंबाई की फिल्मों में आए (द किड १९२१ एवं द गोल्ड रश१९२५)।

तीस के दशक में मसखरों की टोली में और नाम जुड़ गए- डब्ल्यू.सी. फिल्ड एवं मा वेस्ट के। फिल्ड की इट्ज ए गिफ्ट (१९३४) एवं फिल्ड एवं वेस्ट की माई लिटिल चिकाडी (१९३९) सदाबहार कॉमेडी है। स्टैन लॉरेल एवं आलिवर हार्डी ने आकर तो धमाका ही कर दिया। कॉमेडी विस्फोटक स्तर पर पहुँच गई। द म्युजिक बॉक्स (१९३२) में लॉरेल-हार्डी की जोड़ी ने ऐसा मजा ला दिया कि इस जोड़ी का नाम दर्शकों की जुबान पर छा गया। तीस के दशक में मसखरों के साथ अलग परिष्कृत कॉमेडी भी बनी। फ्रैंक काप्रा की फिल्म इट हैपंड वन नाइट (१९३४) ने स्क्रू बॉल कॉमेडी का

लारेल एण्ड हार्डी



कॉमेडी की सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्में : ◇होम अलोन (१९९१) ◇मिसेस डाउट फायर (१९९३) ◇बिवर्ली हिल्स कॉप्स (१९८४) ◇घोस्ट (१९९०) ◇होम अलोन-२ लॉस्ट इन न्यूयॉर्क (१९९२) ◇टूट्सी (१९८२) ◇प्रेटी वुमन (१९९०) ◇थ्रीमेन एंड ए बेबी (१९८७) ◇बिवर्ली हिल्स कॉप्स-भाग २ (१९८७) ◇द स्टिंग (१९७३) ●अन्य लोकप्रिय कॉमेडी फिल्में : क्रोकोडाइल डून्डी (१९८६) ◇लूक हू इज टॉकिंग (१९८९) ◇स्मोकी एंड द बैंडिट (१९७७) ◇ॲनिमल हाऊस (१९७८) ◇अमेरिकन ग्राफिती (१९७३) ◇हेवन कैन वेट (१९७८) ◇द ऑड कपल (१९६८) ◇ऑपरेशन पेटिकोट (१९६०) ◇सिल्वर स्ट्रीक (१९७७) ◇द लव बग (१९६९)।

कॉमेडी फिल्म्स

हँसने के लिए खरीदिए टिकट!

कॉमेडी की शानदार शुरुआत हुई। द लास्ट मैरीड कपल इन अमेरिका (१९८०) तक सेक्सुअल कॉमेडी का दौर चलता रहा।

सत्तर के दशक के अंत में स्टीवन स्पीलबर्ग ने १९४१ (१९७९) फिल्म में कॉमेडी के क्षेत्र में घुसपैठ की किंतु कोई उल्लेखनीय सफलता हाथ नहीं लगी। सत्तर के दशक में मेल ब्रूक्स ने कॉमेडी के क्षेत्र में आकर ऐसा चमत्कार कर दिया कि ब्रूक्स को जीनिअस कहा जाता है। फिल्मों की विविध श्रेणियों को एक-एक कर ब्रूक्स ने अपनी फिल्में बनाई हैं- ये पेरौडी फिल्में हैं। रॉबर्ट

अपने पर कोई हँसना नहीं चाहता। सब दूसरों पर हँसना चाहते हैं। इसके लिए चाहिए एक हँसाने वाला। और जब दर्शक हँसना चाहता है, तो उसे टिकट-खिड़की पर इसकी कीमत जमा करना होती है। बहुत मुश्किल काम है हँसना और दूसरों को हँसाना।

युग ही ला दिया। इस फिल्म ने वर्ष के महत्वपूर्ण ऑस्कर पुरस्कार भी जीते। कॉमेडी पुरस्कृत भी हो गई। होवार्ड हॉक की फिल्म ब्रिगिंग अप बेबी (१९३८) भी लोकप्रिय हुई। क्लार्क गेबल/कैरी ग्रांट, कैथरिन हेपबर्न/ गंभीर फिल्मों के सितारे थे- लेकिन सिच्युएशनल कॉमेडी फिल्मों में रम गए।

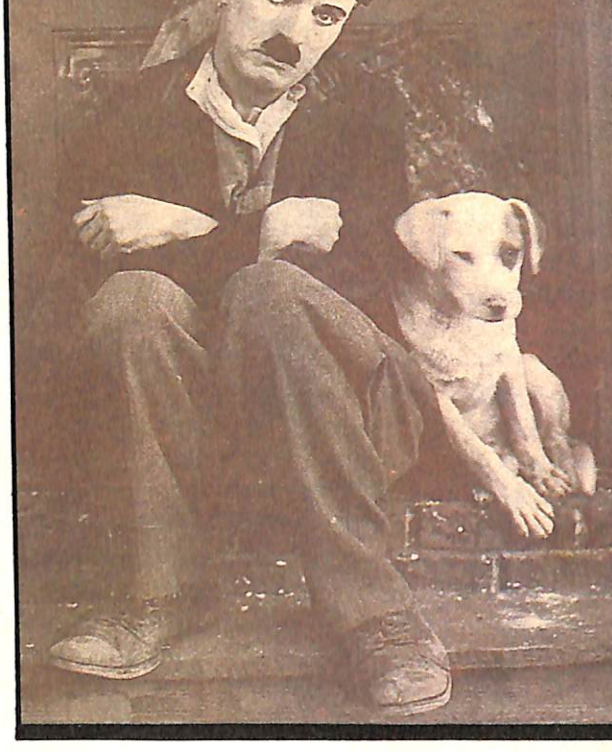
युद्ध आ गया तो कॉमेडी सेन्टिमेंटल हो गई। बिग क्रास्बी की गोइंग माइ वे (१९४४) एवं द बेल्स आव संट मेरीज (१९४५) खूब चली। हार्पो/ग्रोहुचो/चिको इन मार्क्स बंधुओं का, बेन टर्पिन का, हैरी लैंग्डन का लारेल-हार्डी का युग अब अतीत की ओट में जा रहा था। बिंग क्रास्बी के साथ बॉब होय जुड़ गए। डोरोथी लेमूर के ग्लैमर के साथ इन तीनों ने रोड टू श्रृंखला में एक से बढ़कर एक कॉमेडी फिल्में बनाई। रोड टू जांजीबार, रोड टू मोरोक्को, रोड टू उटोपिया, रोड टू रिओ... १९४० से १९६२ तक बनी इन फिल्मों की लम्बी सूची है। पचास के दशक में कॉमेडी के क्षेत्र में एक सेक्स बॉम्ब आ धमका- मर्लिन मनरो/मनरो की हाऊ टू मैरी ए मिलिओनर (१९५३) सिनेमा स्कोप में बनी। इस फिल्म में मनरो के साथ लॉरेन बॅकाल और बेटी ग्रैबल भी थी। इसी वर्ष मनरो की जैंटलमन प्रिफर ब्लॉण्ड्स (१९५३) में जेन रसेल भी थी। कॉमेडी का क्षेत्र सुंदरियों से पट गया। बिली वाइल्डर जैसे सिद्धहस्त निर्देशक ने मनरो के साथ पहले तो द सेवन इयर इच (१९५५) में टॉम इवेल को लेकर और बाद में सम लाइक इट हॉट (१९५९) में जैक लेमन एवं टॉनी कर्टिस को लेकर ऐसा मजा ला दिया है। अब कॉमेडी सोफिस्टीकेटेड हो गई है। मार्लिन ब्रैंडो भी एक कॉमेडी फिल्म में द टी हाऊस इन द ऑगस्त मून (१९५६) अपनी विशिष्ट छाप छोड़ गए हैं।

साठ के दशक में डेविड निवेन के रूप में श्रेष्ठ



कॉमेडियन पर्दे पर अवतरित हो गए। अवतरित हुआ पीटर सेलर्स भी। डॉ. स्ट्रेंज लव (१९६४) और पिंक पैंथर श्रृंखला में पीटर सेलर्स को देखते ही पेट में बल पड़ जाते हैं। स्टैनले क्रेमर के इट्ज ए मैड, मैड, मैड, मैड वर्ल्ड (१९६३) में तो मसखरों की पूरी टोली ने स्लैपस्टिक कॉमेडी का जमाना वापस पर्दे पर लाया है। दोज् मग्निफिशिएंट मेन इन देअर फ्लाइंग मशींस (१९६५) और द ग्रेट रेस (१९६५) में भी ऐसी धमाल मचती है कि हँस-हँस कर गाल दुखने लग जाते हैं। द ग्रैजुएट (१९६७) में सेक्सुअल

चार्ली चेप्लिन



अल्कमान ने मैश (१९७०) बनाकर ऐसा ही प्रयास किया किंतु मेल ब्रूक्स अनुपमेय है। गूँगी फिल्मों पर द साइलेंट मूवी, हॉरर फिल्मों पर यंग फ्रैंकेन्स्टीन, सस्पेंस फिल्मों पर हाई ॲग्जाइटी, वेस्टर्न फिल्मों पर द क्लेजिंग सैडल्स, ब्लॉक बस्टर फिल्मों पर द हिस्ट्री आव द वर्ल्ड-पार्ट वन, साइंस-फिक्शन फिल्मों पर द स्पेसबॉल्स बनाकर ब्रूक्स ने गजब किया है।

अस्सी और नब्बे के दशक में भी कॉमेडी रंग ला रही है। बर्ट रैनोल्ड्स/ डूडले मूर/ डॉन अक्रिड/ जिम कैरी/ रॉबिन विलियम्स/ गोल्डी होन/ आदि के साथ ब्रूस विलिस/ मेरिल स्ट्रीप भी कॉमेडी की रिंग में उतर रहे हैं। डेथ बिकम्स हर (१९९२), द मास्क (१९९४) और मिसेस डाउट फायर (१९९४) बॉक्स ऑफिस पर सफल रही हैं।

बेस्ट लवः किड्स इन हॉलीवुड



गोद में सवार बच्चों की बाल फिल्में

बच्चों की फिल्मों से तात्पर्य फिल्मों की ऐसी श्रेणी से है, जो बच्चों को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इन फिल्मों को वयस्क भी देख सकते हैं, क्योंकि हर वयस्क में एक 'बालक' छिपा होता है। इनमें से कई फिल्में पूरे परिवार को आनंदित कर सकती हैं। लगभग सभी बच्चों की फिल्में पारिवारिक हो सकती हैं, किन्तु सभी पारिवारिक बच्चों की फिल्में नहीं होतीं। बात केवल समझाइश के स्तर की नहीं, फिल्मों की विषयवस्तु, कथानक, चरित्रों की भी है। बच्चों की फिल्में एक्शन एडवेंचर/कॉमेडी/म्यूजिकल/ साइन्स फिक्शन/फन्तासी हो सकती हैं। लेकिन बच्चों की फिल्मों में हॉरर/हिंसा/अनाचार/अत्याचार/एक्शन एडवेंचर के तत्वों का प्रवेश वर्जित होता है।

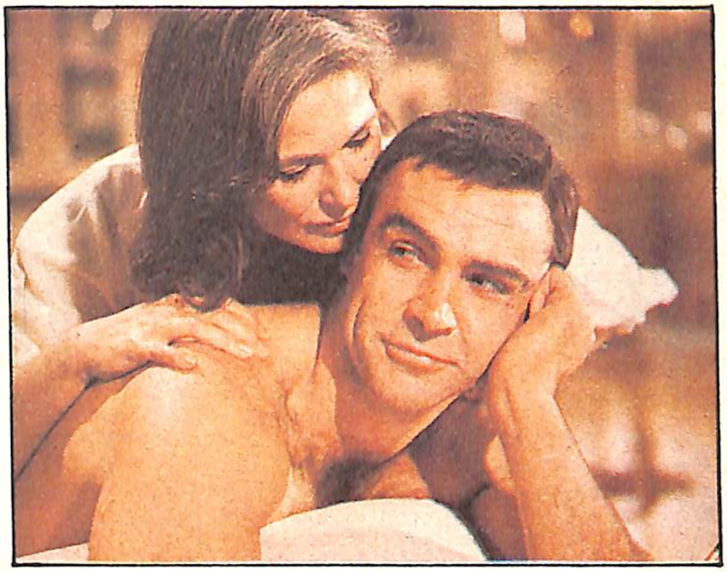
बच्चों की फिल्मों में सबसे प्रमुख विश्व बाल साहित्य से लिए कथानक पर आधारित फिल्में खूब मिलती हैं। फिर, क्रम आता है परिकथाओं और प्राणी कथाओं का। गूँगी फिल्मों के दौर में कॉमेडी श्रेणी में बनी चार्ली चैप्लिन/बेन टर्पिन/ लॉरेल हार्डी की लघु फिल्में बच्चों की पसंदगी की रही हैं। आज भी बच्चे इन फिल्मों को चाव से देखते हैं। तीस के दशक में आवाज के आगमन के साथ विश्व बाल साहित्य पर्दे पर अवतरित होने लगा-द एडवेंचर्स ऑव टॉम सायर, १९३८ और वह सिलसिला आज भी जारी है-द ब्लैक ब्यूटी, १९९४। तीस के दशक में परिकथाएँ भी पर्दे पर आने लगी (द विजार्ड ऑव ओज १९३९)। चालीस के दशक में प्राणी कथाएँ (ब्लैक ब्यूटी १९४६) पर्दे पर आई और पचास के दशक के साथ अन्य श्रेणियों में बच्चों की फिल्में सामान्य हो गईं (२०,०००लीग्स अण्डर द सी, १९५४)। पचास के दशक के साथ बच्चों की फिल्मों में विविधता में लगातार

बच्चों की अन्य फिल्में-द एडवेंचर्स आव टॉम सायर (१९३८), द ॲपल डम्पिंग गैंग (१९७४), बेडनॉब्स एंड ब्रूमस्टिक्स (१९७१), ब्लैक बिअर्ड्स घोस्ट (१९६७), द ब्वॉय हू टू टर्न्ड यलो(१९७२), कैण्डल शू(१९७७), चिट्टी चिट्टी बैन्ग बैन्ग (१९६८), डेवी क्रॉकेट (१९५५), ड्रैगॉन स्लेअर (१९८१), द ग्रेट मपेट केपर (१९८१), द लव बग (१९६८), मेरी पॉपिन्स (१९६४), नेवर ए डल मोमेन्ट (१९६७), द रेलवे चिल्ड्रेन (१९७०), स्नोबॉल एक्सप्रेस (१९७२), द स्विस फैमिली रॉबिनसन (१९६०), द वाटर बेबीज (१९७८), द विजार्ड आव ओज (१९३९), अबसेन्ट माइण्डेड प्रोफेसर (१९६१), द ब्लैक स्टैलिआन (१९७९), द एनचैन्टेड फॉरेस्ट (१९४५), एस्कापेड इन जापान (१९५७), द गर्ल हू स्पेल्ड फ्रीडम (१९८५), हनी आई श्रन्क द किड्स (१९८९), जंगल बुक (१९४२ एवं १९९४), द प्रिन्स एंड द पॉपर (१९३७), सांताक्लाज द मूवी (१९८५), सोडिअर टू माई हार्ट (१९४९), स्टोरी ऑव रॉबिनहुड (१९५२), दोज कैलोवेज (१९६५), ट्रेजर आईलैंड (१९५०) ई.टी. द एक्स्ट्रा टेरिस्टरीअल (१९८२), बैक टू द फ्यूचर (१९९२), होम अलोन (१९९०), जुरासिक पार्क (१९९३), बेबीज डे आउट (१९९४)।

वाल्ट डिज़नी यह बात अच्छी तरह जानता था कि बच्चों की फिल्में बनाने का मतलब है पूरे परिवार को सिनेमाघर आने का निमंत्रण!

वृद्धि होती रही है। अब तो प्रकृति फिल्में भी बनने लगी हैं (दोज़ कैलोवेज़ १९६५) और द टेल्स ऑव बीट्रिक्स पॉटर (१९७१) जैसी बच्चों की फिल्मों में रॉयल बैले ट्रुप के नर्तक सदस्य प्राणियों के मुखौटे पहनकर बच्चों की कहानियों को रुपहले पर्दे पर प्रस्तुत करने लगे हैं।

बच्चों की पारिवारिक फिल्मों के निर्माण में डिज़नी स्टुडियो अग्रणी रहा। डिज़नी ने बच्चों के लिए एनिमेशन फिल्मों का अम्बार रचा। लाइव एक्शन फिल्में भी खूब दी हैं। डेवी क्राकेट (१९५५), द इनक्रेडिबल जर्नी (१९६३), एस्केप टू विच माउन्टेन (१९७४) और ड्रैगॉन स्लेयर (१९८१) डिज़नी स्टुडियो की बच्चों को देन है। वाल्ट डिज़नी व्यावसायिक तौर पर होशियार था। वह जानता था कि बच्चों की फिल्में बनाएँगे तो देखने केवल बच्चे ही नहीं, उनके परिवार के अन्य सदस्य भी आएँगे। ■



सीन कॉनेरी ए फाइन मेडनेस

□ जेम्स बॉण्ड

न भूतो, न भविष्यति !

जेम्स बॉण्ड की फिल्मों ने पच्चीस वर्षों से अधिक समय तक बॉक्स ऑफिस पर राज किया। आज भी बॉण्ड फिल्मों के वीडियो- संस्करण धडल्ले से देखे जाते हैं। अठारह फिल्मों के निर्माण के बाद बॉण्ड फिल्मों का ज्वर उतार पर रहा था। १९९४ में नई बॉण्ड फिल्म (नए जेम्स बॉण्ड- पीअर्स ब्रास्नान के साथ) समाचारपत्रों की सुर्खियों में रही है। शायद १९९५ के अंत तक द गोल्डन आय प्रदर्शित होगी। फिल्म लेखक एवं समीक्षक बॉण्ड फिल्मों की अपार लोकप्रियता से अचम्भित रहे हैं। 'बॉण्ड-फिनोमेना' पर इतना लिखा जा चुका है कि फिल्म इतिहास में बॉण्ड- फिल्मों को लेकर एक पृथक अध्याय जुड़ गया है। दुनिया भर में एक अरब से अधिक टिकट बॉण्ड फिल्मों के लिए कटे हैं और इन फिल्मों ने १०००० लाख डॉलर्स से अधिक मुनाफा कमाया है। दुनिया भर में बॉण्ड फिल्मों की नकल भी हुई। ठेठ हॉलीवुड में भी। अनुकरण की दौड़ में लेडी जेम्स बॉण्ड भी आई और साहित्य से लेकर (मराठी में जनु बॉण्डे!) विज्ञापनों तक (कैडबरी जेम्स) जेम्स बॉण्ड छाया रहा है। बॉण्ड फिल्मों को इसीलिए एक 'अजूबा' कहा जाता है। लोग जेम्स बॉण्ड के इस कदर दीवाने रहे हैं कि फिल्मों की 'यादगार' प्रॉपर्टी के नीलामी में जेम्स बॉण्ड द्वारा गोल्ड फिंगर (१९६४) फिल्म में प्रयोग में ली गई अष्टान मार्टिन डीबी ५ कार लगभग एक लाख अस्सी हजार पौंड स्टर्लिंग में बिकी।

जेम्स बॉण्ड की प्रारंभिक फिल्में तो इआन फ्लेमिंग के उपन्यासों पर (बारह) आधारित रही। १९६४ में फ्लेमिंग के निधन के बाद दूसरे लेखकों ने फ्लेमिंग की लघु कथाओं को विकसित कर फार युवर आइज

लूक हू इज टॉकिंग



बच्चों की फिल्मों में प्रमुख परिकथाएँ- सिण्ड्रेला (१९८५), द डांसिंग प्रिन्सेस (१९८४), लिटिल मरमेड (१९८४), स्लिपिंग ब्यूटी (१९८३)। **प्रमुख प्राणी कथाएँ-**ब्लैक ब्यूटी (१९७१ एवं १९९४), द इनक्रेडिबल जर्नी (१९६३), ओल्ड येलर (१९५७), दैट डार्न कैट (१९६५), ए टाइगर वॉक्स (१९६४)।


कोमल त्वचा को चाहिये
फ़ौलादी संरक्षण
नर्म-नाज़ुक त्वचा की फ़ौलादी सुरक्षा के लिये नया जेट 45 शक्तिशाली लिक्विड मॉस्किटो डेस्ट्रायर.
यह सुविधाजनक है
सिर्फ़ एक जेट 45 बॉटल चले 45 रातों तक. अब हर रात मैट बदलने की झंझट ही नहीं. बस, स्विच ऑन या ऑफ़ कीजिये. इस से बढ़कर सुविधा और क्या होगी.
यह शक्तिशाली है
इसका शक्तिशाली फ़ार्मूला, सुरक्षित, मगर मच्छरों के ख़िलाफ अपनी भाप सारी रात समान रूप से फैलाता रहता है.
प्रभावी भी, कम ख़र्चीला भी
बॉटल का प्रति दिन ख़र्च मैट के बराबर ही है. साथ ही ज़्यादा शक्तिशाली और अधिक सुविधाजनक. और तो और जेट 45 बॉटल हर मशीन में फिट.
कोमल त्वचा की फ़ौलादी सुरक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ पर ही भरोसा कीजिये.
NEW
Jet 45®
The 45 night Liquid Mosquito Destroyer
Creative Unit 8826 Hin.

अज़ब बॉण्ड : गज़ब कारनामे

कैसिनो रॉयल उपन्यास के लगभग दस वर्षों बाद २६ फरवरी १९६२ को लंदन के पाइन वुड स्टुडियो में इयान फ्लेमिंग का यह मानस पुत्र सशरीर अवतरित हुआ। मौका था लेखक की एक और कृति पर आधारित एक फिल्म का मुहूर्त। नाम था डॉक्टर नो। जेम्स बॉण्ड बना एक मॉडल जिसका नाम था सीन कॉनरी। इयान फ्लेमिंग के उपन्यास पर बनी यह पहली फीचर फिल्म है।

इयान फ्लेमिंग के पहले उपन्यास 'कैसिनो रॉयल' पर एक फिल्म बन चुकी है, मगर वह एक टीवी धारावाहिक थी। यह हर गुरुवार को प्राइम टाइम रात साढ़े आठ से नौ पर दिखाई जाती थी। पहली कड़ी ७ अक्टूबर १९५४ को दिखाई गई और अंतिम कड़ी जून१९५८को। यह धारावाहिक बहुत लोकप्रिय हुआ था। जेम्सबॉण्ड बने थे बैरी नेल्सन। बॉण्डकन्या बनी थी लिण्डा क्रिश्चियन। यह धारावाहिक लाइव बताया जाता था, इसलिए इसकी एक भी प्रति उपलब्ध नहीं है।

इयान फ्लेमिंग ने जेम्सबॉण्ड के बारे में जितने शब्द नहीं लिखे होंगे, उतने रिचर्ड मायबॉम ने लिखे, जो जेम्स बॉण्ड फिल्मों के पटकथाकार थे। रिचर्ड के लिए फिल्मी पटकथा लिखना नई बात नहीं थी। वे तीस बरसों से हॉलीवुड में सक्रिय थे। वे सेना में भी थे। जब वे सेवानिवृत्त हुए तो कर्नल के ओहदे पर थे। उनकी भेंट निर्माता कबी ब्राकोनी से हुई। इन दोनों की जोड़ी ने आगे चलकर जेम्स बॉण्ड को फिल्मी बनाया। दोनों ने जेम्स बॉण्ड के व्यक्तित्व पर काफी बहसें कीं। उसकी वेशभूषा, सिगरेट-शराब का ब्रॉण्ड, उसके हथियारों आदि के बारे में निर्णय लिया। डॉक्टर नो के निर्देशक थे टेरेंस यंग। इन्हें जेम्स बॉण्ड का जनक कहा जाता है। डॉक्टर नो का स्वागत बड़ी गर्मजोशी से किया गया। इससे निर्माताओं के हौसले बढ़े। उन्होंने अगली फिल्म बनाई फ्रॉम रशिया विद लव, जो काफी विवादास्पद रही। डेविड लीन को यह फिल्म बहुत पसन्द थी। डेविड और सीन कॉनरी पहले भी एक फिल्म में साथ-साथ काम कर चुके थे।

थंडरबॉल, गोल्ड फिंगर फिल्मों ने सीन कॉनरी को जेम्स बॉण्ड के रूप में स्थापित कर दिया। यही बात उनकी मुसीबत बन गई। वे इस चोले से बाहर आने के लिए छटपटाने लगे। आखिर लिव एंड लेट डाई (१९७३) से नए अभिनेता रॉजर मूर को जेम्स बॉण्ड बनाना पड़ा। गोल्ड फिंगर की लोकप्रियता का आलम यह था कि न्यूयॉर्क में यह फिल्म लगातार चौबीस घंटे चलती रही। इस अखंड प्रदर्शन में बाधा तब आई, जब इसे आधे घंटे के लिए रोक देना पड़ा। सिनेमाघर में घुटने-घुटने पॉपकॉर्न जमा हो गए थे।

रॉजर मूर के बाद जॉर्ज लेजेन्बी और टिमोथी डाल्टन जेम्स बॉण्ड बने। जेम्स बॉण्ड का चरित्र कुछ ऐसा है कि वह कुछ भी कर सकता है। भूखे चूहों से भिड़ सकता है। लोहे के दाँत वाले खलनायक से लड़ सकता है। हेलिकॉप्टर से छलांग लगा सकता है। वह लड़कियों का इस्तेमाल अपने स्वार्थ के लिए करता है। हर फिल्म के अंत में वह किसी लड़की से प्रेम करता नजर आता है। प्रेम तो साधारण बिस्तर पर भी किया जा सकता है, मगर जेम्स बॉण्ड असाधारण है, इसलिए वह जलशैया पर प्रेम करता है। उसमें हिंसा और सेक्स का अनुपात बराबर है। वह भावुक नहीं है। वह कभी भी पुस्तक पढ़ते हुए नहीं दिखाया गया है।

जेम्स बॉण्ड की फिल्मों ने जासूसी कला को सम्मान दिया। आम दर्शक यही समझते रहे कि खतरों से खेलने वाले का लड़कियों के शरीर से खेलना आपत्तिजनक नहीं है। भारत में जैसे औघड़ बाबाओं को भी सेक्स के मामले में छूट है। जेम्स बॉण्ड की फिल्मों में हिंसा और सेक्स को लेकर पश्चिमी देशों में काफी हो-हल्ला मचा था। उसे खुलकर पैसा फूँकने की आजादी थी। दरअसल उसके खर्चे सरकार के खर्चे से भी ज्यादा थे। उसके दर्शक जानते थे कि वह कब मुसीबत में पड़ेगा, मगर वे तो जानना चाहते थे कि वह उनमें से किस तरह निकलता है।

इयान फ्लेमिंग का यह काल्पनिक पात्र सिनेमाई जादू के कारण हाड़माँस का चरित्र मालूम होता है जो भौगोलिक सीमाओं के बंधनों से मुक्त है।

बॉण्ड से मिले बॉण्ड : रोजर मूर-सीन कॉनेरी



● **दिलीप गुप्ते**

◆ ◆ ◆

ओनली, (१९८१), आक्टोपुसी (१९८३) एवं द लिविंग डेलाइट (१९८७) को कथानक बनाए। नेवर से नेवर अगेन (१९८३) तो पहले ही बॉण्ड फिल्म थंडरबाल, (१९६५) का ही रिमेक रहा, जबकि ए व्हयू टू ए किल (१९८५) एवं लायसेन्सड टू किल, (१९८९) के कथानक फ्लेमिंग के लेखन से कोई संदर्भ लिए बिना ही बने हैं। ईआन फ्लेमिंग ने १९५३ में 'कैसिनो कायेल' उपन्यास लिखकर अपने मानसपुत्र जेम्स बॉण्ड को जन्म दिया। फ्लेमिंग ने अपने सुपर स्पाई जेम्स बॉण्ड का नामकरण करते समय ब्रिटेन के पक्षीविज्ञानी जेम्स बॉण्ड (जिनकी पुस्तक ब्रिटिश बर्डस आव द वेस्टइंडिज फ्लेमिंग के हाथ लग गई थी) से प्रेरणा लेकर किया। मूल जेम्स बॉण्ड को तो बहुत कम लोग जानते हैं। फ्लेमिंग का मानसपुत्र जेम्स बॉण्ड दुनिया के कोने- कोने में विख्यात हैं। ईआन फ्लेमिंग पहले एक पत्रकार रहा। फिर ब्रितानी मिलिटरी इंटलीजेन्स में जलसेना



बॉण्ड-लोक की अप्सराएँ

जेम्स बॉण्ड का चरित्र बिना लड़कियों के अधूरा है। लड़कियाँ जेम्स बॉण्ड की फिल्मों की जरूरी आवश्यकता हैं। वे सभी जेम्स बॉण्ड को प्यार करती हैं। उसे पाने की इच्छा रखती हैं। उसके साथ सोती हैं। बॉण्ड भले ही काम निकल जाने के बाद उन्हें छोड़ दे, ये लड़कियाँ बॉण्ड से इतना लगाव रखती हैं कि उसकी जान बचाने के लिए अपनी जान तक दे देती हैं। कई लड़कियाँ तो उसे मार डालना चाहती हैं। एक बात ध्यान देने लायक है कि फिल्मों मे ये लड़कियाँ कम उम्र की नहीं होतीं। वे मर्द का अनुभव कर चुकी होती हैं। रूसी अखबार प्रावदा के अनुसार ये लड़कियाँ पूँजीवाद का शिकार हैं। इन पर बलात्कार करना, इन पर अत्याचार करना पूँजीवादी मर्दानगी है। फिर भी यह तय है कि इन लड़कियों के बिना जेम्स बॉण्ड अपने मिशन में सफल नहीं हो पाता। निर्माता इन लड़कियों का चयन भी सावधानी से करते थे।

पहली बॉण्ड गर्ल थी उर्सुला ऐंड्रेस। यह स्विस बाला सबसे पहले डॉक्टर नो में आई थी। इस फिल्म के एक दृश्य में वह बिकनी में पानी से बाहर निकलती है। यह दृश्य इतना प्रभावी रहा कि बाद में कई फिल्मों में इसी प्रकार के दृश्य रखे गए। उर्सुला ने कैसिनो रॉयल में भी बॉण्ड गर्ल की भूमिका की थी।

बॉण्ड गर्ल के बारे में बताया जाता है कि उसकी जिन्दगी तब खत्म हो जाती है, जब वह जेम्स बॉण्ड के साथ सो लेती है। उसे कोई काम नहीं रहता है और वह ऐशो-आराम के साथ जिंदगी बिताती है। जिनका कोई भविष्य नहीं होता, उनकी जिंदगी ऐसी ही कटती है।

दूसरी बॉण्ड गर्ल डैनियला बियांची भूरे बालों वाली थी। अब वह फिल्मों से दूर है लेकिन पुरानी फिल्में चाव से देखती हैं। तीसरी बॉण्ड कन्या पुसी गेलोर ठीक वैसी नजर आती है जैसी इयान फ्लेमिंग ने गोल्ड फिंगर में बताई है। यहाँ तक कि उसकी आँखें भी बैंगनी हैं। चौथी बाँड गर्ल है क्लाडीन ऑगर जो कभी मिस फ्रांस रह चुकी हैं।

अभी तक की चारों बॉण्ड कन्याएँ पश्चिमी देशों की रही हैं। यू ओनली लिव ट्वाइस में दो जापानी बालाएँ थीं अक्की और मी हामा। अक्की बॉण्ड को दिया जाने वाला जहरीला माँस खाकर मर जाती है। हामा बॉण्ड की पत्नी बन जाती है। डायना रिग ऑन हर मैजेस्टीज सीक्रेट सर्विस में बॉण्ड की पत्नी बनती है, मगर मर जाती है। यानी कोई भी लड़की बॉण्ड की होकर नहीं रह सकती। जिल जॉन फिल्म के पात्र की ही तरह बहुत अनुभवी थी। वह तीन विवाह कर चुकी थी, मगर उसका आई क्यू १६२ था।

द मैन विद द गोल्डन गन की लड़की ब्रिट एकलैंड वास्तव में पीटर सेलर्स और रॉट स्टुअर्ट की पत्नी रह चुकी थी। अपनी बेटी की पढ़ाई जारी रख सके, इसलिए वह फिल्मों में काम करती थी। बारबरा बैच का विवाह बीटल्स समूह के एक सदस्य के साथ हुआ था। वह फैशन मॉडल थी और बाद में इटली की कुछ फिल्मों में आई। मून रैकर में काम करने वाली लोइस चिलेस खुद होकर भूमिका माँगने गई थी। वह कपड़ों में भी सेक्सी नजर आती थी। फॉर योर आइज ओनली में अभिनय करने वाली कैरोल बकेट अपने काम से काम रखती थी और बाद में भी अपने फिल्मी जीवन के बारे में ज्यादा बात नहीं करती थी। मॉड एडम्स (ऑक्टोपसी) को एक बात का श्रेय दिया जाना चाहिए कि बॉण्ड की तमाम फिल्मों में उसे ही सबसे बेहतरीन भूमिका मिली है। दर्शकों को उसके गालों की उभरी हुई हड्डियों में भी सेक्स नजर आया।

तेज गति का कथानक। खूँखार खलनायक। हैरतअंगेज कारनामे। सुंदरियों का जमघट। दिल दहला देने वाले इरादे के साथ जेम्स बॉण्ड हमेशा दुष्टों का दमन कर मानव-सभ्यता को बचाता रहा है।

कमाण्डर। दुनिया भर के जासूसी संगठनों के बारे में फ्लेमिंग का ज्ञान मौलिक था। उसने जेम्स बॉण्ड को अपने प्रतिरूप में ढाला- कमाण्डर जेम्स बॉण्ड।

निर्माताद्वय साल्जमन एवं ब्रोकोनी ने केवल ९ लाख डॉलर्स दाँव पर लगाकर डॉक्टर नो (१९६२) बनाई। पर्दे पर सीन कॉनरी ने जेम्स बॉण्ड के रूप में अवतरित होकर बॉण्ड अजूबे की शुरूआत की। टाइटलस् शुरू होते ही बॉण्ड फिल्में दर्शकों को सम्मोहित करती रहीं। साल्जमन एवं ब्रोकोनी की लाख कोशिशों के बाद भी 'कैसिनो रायेल' के अधिकार नहीं खरीद सके। वार्नर एवं युनाइटेड आर्टिस्ट द्वारा बनी अन्य बॉण्ड फिल्मों की बॉक्स ऑफिस पर धूम देखकर चार्ल्स फिल्डमन को सूझा तो कोलम्बिया के सहयोग से फिल्डमन ने 'कैसिनो रायेल' (१९६७) को एक 'मैडकैप' कॉमेडी बना दिया। पीटर सेलर्स/ डेविड निवेन/ वुडी अलन जैसे मसखरों के साथ उसुर्ला अन्ड्रैस/ डेबारा केर और दुनिया भर की अन्य दो सौ सुंदरियों को और हॉं- ऑर्सन वेल्स को भी लेकर बॉण्ड फिल्मों की ऐसी 'पैरोडी' प्रस्तुत की है कि जेम्स बॉण्ड चरित्र की फजीहत कर दी है। 'कैसिनो रायेल' बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप रहीं। किन्तु पैसे की पर्वाह किसे थी। सुपर स्पाई का मजाक उड़ाने में १८ लाख डॉलर्स का घाटा हुआ।

बॉण्ड फिल्मों के साथ बॉण्ड बने अभिनेता भी अमर हो गए हैं। सीन कॉनरी ने सात/ रोजर मूर ने सात/ टिमोथी डाल्टन ने दो और जार्ज लेजेम्बी ने एक बॉण्ड फिल्म में जेम्स बॉण्ड के चरित्र को अंजाम दिया है। अब पीअर्स ब्रास्नान की बारी है। कैसिनो रायेल में एक 'असली' जेम्स बॉण्ड है- डेविड निवेन, जो सेवानिवृत्त सर जेम्स बॉण्ड है। इस फिल्म में कई और नकली बॉण्ड भी हैं। खैर, कैसिनो रायेल की सारी बातें ही निराली है। सीन कॉनरी 'कठोर' बॉण्ड रहा। रोजर मूर ने बॉण्ड को थोड़ा हल्का- फुल्का बनाया। इतना निश्चित है दुनिया भर में बॉण्ड के रूप में सीन कॉनरी अधिक चहेते रहे। अधिकतर बॉण्ड फिल्में १२० मिनट की अवधि की है। पैनाविजन में फिल्मांकित है। 'थ्रिलर्स' श्रेणी की फिल्मों के निर्देशक गे हैमिल्टन/ टेरेंस यंग/ जॉन ग्लोन/ लुईस गिलबर्ट/ पीटर हन्ट बॉण्ड फिल्मों में जुड़े रहे। सभी फिल्मों में संगीत का पक्ष शक्तिशाली रहा और मान्टीनार्मन/ जॉन बेरी/ टॉम जोन्स/ शील बास/ नैन्सी सिनामा/ पाल मैक्आर्टनी/ डुरान- डुरान/ 'अ-हा' जैसे संगीत समूह बॉण्ड फिल्मों से जुड़े रहे।



मॉड एडम्स्: फिल्म आक्टोपूसी

गजब के सेट्स/ अद्भुत लोकेशन्स/ तेज गति के कथानक/ अचम्भित कर देने वाले उपकरण/ खूँखार खलनायक/ दुनिया को दहला देने वाले मंसूबे/ खूबसूरत नायिकाएँ/ नॉन-स्टाप एक्शन्स/ हैरत अंगेज कारनामे/ उत्कंठा की परिसीमा को ले जाने वाले कलाइमेक्स और बीच-बीच में कॉमिक टचेस बॉण्ड फिल्मों में यह सभी एक साथ रहा है। पहले की फिल्म से अगली फिल्म में और अधिक रहा है। दर्शक जो चाहते हैं वह सब बॉण्ड फिल्मों में तबीयत से मिलाया गया। तबीयत से परोसा गया। दर्शक 'तृप्त' हो जाए। पहली दो फिल्मों के बाद (डॉक्टर नो एवं फ्राम रशिया विद लव) तो बॉण्ड फिल्मों के कथानक मूल कथानकों से भी भटकते रहे और 'गोल्ड फिंगर' के साथ ही बॉण्ड फिल्में फार्मूलों में बनने लगीं। किन्तु दर्शक जमे रहे। बॉण्ड फिल्मों के 'गैजेट्स' उपकरण भी 'सितारे' ही रहे। एटम बमों को चुराने से लेकर दुनिया का विध्वंस कर देने तक और जैवीय कीटाणु युद्ध से लेकर 'सिलिकॉन व्हैली' नष्ट कर देने के कारनामों पर जेम्स बॉण्ड काबू पाता रहा है। खलनायकों का विनाश कर बॉण्ड बार- बार इस सभ्यता को बचाता रहा है।

जेम्स बॉण्ड की फिल्मों में सुंदरता बिखेरती रहीं कई नायिकाएँ पर्दे की परियाँ रही हैं। उर्सूला ॲन्ड्रैस/ डैनिएला बिआन्शी/

बॉण्ड फिल्में- टॉप-टेन

१. ऑक्टोपुसी
२. मूनरेकर
३. थण्डरबॉल
४. नेवर से नेवर अगेन
५. द लीविंग डेलाइट्स
६. फॉर यूवर आइज ओनली
७. ए व्यू टु ए किल
८. द स्पाइ हू लव्ड् मी
९. गोल्ड फिंगर
१०. डायमन्डस् आर फार एवर

जेन सेमोर/ होनोर ब्लैकमेन/ मरिअम डी अबो। कई सुंदरियाँ बॉण्ड फिल्मों को सजाती रहीं। बॉण्ड फिल्मों के खलनायक तो ऐसे शक्तिशाली एवं दर्शकों के 'चहेते' रहे कि रोजर मूर को भी लगता रहा कि जेम्स बॉण्ड की जगह बॉण्ड फिल्मों में खलनायकी मिलती तो अच्छा होता। जोसेफ वाईजमन/ क्रिस्टोफर ली/ रॉबर्ट शॉ/ ग्रे फोब/ कर्ट जर्गन्स/ कबीर बेदी/ टेली सिलावास/ डोनाल्ड प्लेजन्स/ चार्ल्स ग्रे/ रिचर्ड कील (लोहे के दाँतों वाला सात फुट का राक्षस)। बॉण्ड फिल्मों के 'स्टन्ट्स' भी इतने उल्लेखनीय रहे हैं कि डेन्जर मेन पुस्तक में एक पृथक अध्याय केवल बॉण्ड की फिल्मों के स्टन्ट्स पर रही है। बॉण्ड की एक फिल्म लिव एंड लेट डाई (१९७३) की मोटर-बोट की छलाँग का स्टंट तो गिनिज बुक आव वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में विश्व रेकॉर्ड के रूप में वर्षों तक अंकित रही। पैरिस का आइफेल टावर हो (ए व्हयू टु ए किल) या उदयपुर का लेक पैलेस हाटेल बॉण्ड गजब के उपकरणों से हमेशा लैस रहता।

अधिकतर बॉण्ड फिल्में ब्रिटेन में बनी हैं। मूल जेम्स बॉण्ड है ही ब्रितानी। अमेरिका में १९५४ में ही कैसिनो रायेल पर एक अमेरिकी फिल्म बनी भी थी और इस अमेरिकी बॉण्ड फिल्म में जेम्स बॉण्ड का अमेरिकी संस्करण जिम्मी बॉण्ड पर्दे पर आ गया। टेलीविजन के लिए फिल्म थी इसलिए छोटे पर्दे पर आया था। किन्तु कोई खास बात बनी नहीं। ■

■ **बॉण्ड फिल्में** : डॉक्टर नो (१९६२)/ फ्राम रशिया वीथ लव (१९६३-भारत में यह फिल्म फ्राम ००७ वीथ लव शीर्षक से आई थी)/ गोल्ड फिंगर (१९६४)/ थण्डरबॉल (१९६५)/ यू ओनली लिव ट्वाइस (१९६७)/ कैसिनो रायेल (१९६७ : मैडकैप कॉमेडी)/ ऑन हर मैजेस्टीज् सीक्रेट सर्विस (१९६९)/ डायमन्ड्स आर फार एवर (१९७१)/लिव एण्ड लेट डाइ (१९७३)/' द मैन विद द गोल्डन गन (१९७४)/ मून रेकर (१९७५)/ द स्पाइ हू लव्ड् मी (१९७७)/ फॉर यूवर आइज ओनली (१९८१)/ ऑक्टोपुसी (१९८३ : आंशिक रूप में भारत में बनी)/ नेवर से नेवर अगेन (१९८३ : थण्डरबॉल का रिमेक)/ ए व्हू टु ए किल (१९८५)/ द लीविंग डेलाइट्स (१९८५)/ लायसेन्स टू किल (१९८९) एवं द गोल्डन आई (निर्माणाधीन)।

मुझे पता है कि दो इंसान और एक कुत्ता इस फिल्म को प्यार करते हैं! फिल्में ख्वाब होती हैं। और ख्वाब में 'हिट' क्या और 'फ्लॉप क्या? सब सच है!



रिचर्ड बर्टन एण्ड एलिजाबेथ टेलर : क्लियोपेत्रा

फ्लॉप! और सुपर फ्लॉप!!

कोई भी स्टुडिओ/ निर्माता फिल्म इसीलिए बनाता है कि वह चले खूब चले। फिल्म निर्माण में वह अपनी ओर से वह सब करता है, जिससे फिल्म चले। फिल्म निर्माण की प्रक्रिया जटिल होने से, और अंततः सब कुछ दर्शकों की पसंद पर निर्भर होने से किसी फिल्म के चलने या न चलने का भविष्य तय होता है। साधारण तौर पर फिल्मों को तब 'फ्लॉप' श्रेणी में रखा जाता है जब वह घाटा दे। जिसे दर्शक टिकट खिड़की पर नापसंद कर दें।

फिल्म के साथ कौन जुड़े हैं (निर्देशक/ अभिनेता/ तत्रंज्ञ) केवल इस पर ही फिल्म का भविष्य निर्भर नहीं करता। वह कब? कहाँ? प्रदर्शित हो रही है और उस समय प्रदर्शित हो रही अन्य फिल्में कौन सी हैं? ये तत्व फिल्म का भविष्य निर्धारित करते हैं। और सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है दर्शकों की पसंद। एक बड़े शहर में पास-पास के दो थिएटरों में दो फिल्में लगीं। एक थी वाल्ट डिजनी की साइंस-फिक्शन फिल्म 'द ब्लैक होल'। दूसरी थी 'द ब्लैक स्टालिआन'। एक के दर्शकों की कतार सड़क पर आ गई थी। राहगीर सोचते रहते डिजनी की फिल्म के लिए होगी। लेकिन वह कतार 'द ब्लैक स्टालिआन' की थी। कुछ हफ्ते में द ब्लैक होल

उतर गई। स्टालिआन चलती रही।

फिल्मों की असफलता के तीन कारण मिलते हैं। एक, फिल्मों का ऐसा विषय, जो दर्शकों को समझ नहीं आए। दूसरा अभिनेता/ अभिनेत्रियों का ऐसा जमघट जो यह नहीं जानते कि दर्शक क्या चाहते हैं? तीसरा, सिनेमा को शिक्षा या संस्कृति का साधन बनाने के महत्वाकांक्षी प्रयास। फिल्म तकनीक में जब नए प्रयोग होते हैं तब प्रारंभ में फिल्में फ्लॉप होती हैं, जैसे पहली टेक्नीकलर फिल्म 'बेकी शार्प' (१९३५)दूसरी 'टेक्नीकलर फिल्म द ट्रेल आव द लोनसम पाईन (१९३६) दर्शकों ने स्वीकार कर ली। माइक टॉड ने सेंट आव मिस्टरी (१९६०)के लिए 'स्मेल-ओ-विजन' प्रक्रिया ईजाद की तो दर्शकों ने फिल्म को ठुकरा दिया। पहले १९५६ में टॉड ने टॉड-ए-ओ प्रक्रिया अपनाकर 'अराऊण्ड द वर्ल्ड इन एटी डेज' (१९५६) बनाई तो लोगों ने सराही। वह वर्ष का सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ऑस्कर' भी ले गई। पहली थ्री-डी फिल्म थ्री डायमेन्शन मर्डर (१९३८) दर्शकों ने इसलिए नापसंद की कि स्पेशल चश्मा पहनने की झंझट थी। किंतु १९५२ में ब्वाना डेविल (थ्री-डी) बनी तो लोगों ने चश्मे पहनकर भी उसे देखा।

कुछ फिल्मों को कहीं से कोई पुरस्कार मिल जाता है तो वह पसंद की जाने लगती हैं। जॉन फोर्ड की द इनफार्मर (१९३५) के साथ ऐसा ही हुआ। द ग्रॅज्युएट (१९६७) के रीलिज होने के पहले लगा था कि फिल्म 'फ्लॉप होगी। किंतु, हुआ उलटा ही। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस को जीत लिया।हैरी लैंग्डान एवं नॉर्मन विस्डम बड़े नामी मसखरे थे किंतु जैसे ही उन्होंने अपनी फिल्मों को निर्देशित करना शुरू किया- उनकी फिल्में फ्लॉप हुई। सितारे टाइप्ड भूमिकाओं से दूर हो जाते हैं तब भी दर्शक उन्हें नकार देता है। कुछ फिल्में बड़ी कलात्मक होने का दावा करती हैं। 'खोखली' निकलती हैं और 'फ्लॉप हो जाती हैं। जीन केली जैसे विख्यात नर्तक ने इनवायटेशन टू डान्स (१९५६) में लाइव-एक्शन के साथ एनिमेशन जोड़ने के प्रयास किए, फिल्म फ्लॉप हो गई। डिजनी ने मेरी पॉपिन्स (१९६५) में ऐसा प्रयास किया खूब चली। पाँच 'ऑस्कर' ले गई। डिजनी का संगीत को एनिमेशन के साथ जोड़ने का प्रयास 'फन्तासिया' (१९४०) बॉक्स ऑफिस पर असफल सिद्ध हुआ। शेक्सपीयर का नाम भी कुछ फिल्मों को डूबने से नहीं बचासका- 'हैमलेट' (१९४८) भले ही सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 'ऑस्कर' आसन वेल्स की हैमलेट (१९४८), पोलन्स्की की मॅक्बेथ (१९७१), चार्ल्स हेस्टन की अन्टोनी एंड क्लिओपात्रा (१९७२) सब 'फ्लॉप' रहीं।जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की मेजर बार्बरा (१९४१) और सीजर एंड क्लिओपात्रा (१९४५) भी 'फ्लॉप' रही।

कई 'ब्लाकबस्टर' फिल्में फ्लॉप हुई हैं। वाटर लू (१९६९), द फाल आव द रोमन एम्पायर (१९६४)क्लिओपात्रा (१९६२), द ग्रेटेस्ट स्टोरी एवर टोल्ड (१९६५), टोरा टोरा ! टोरा ! (१९७०), म्युटिनीआन द बाऊन्टी (१९६२), ५५ डेज एट पेकिंग (१९६३) ए ब्रिज टू फार (१९७७)। जेम्स बॉण्ड की तमाम फिल्में बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाती रहीं, किंतु कैसिनो रॉयल (१९६७), बॉण्ड का कॉमेडी संस्करण फ्लॉप रहा। इस फिल्म में आर्सन वेल्स/ पीटर सेलर्स/ डेविड निवेन/ डेबारा केर/ वुडी अँलेन/ उर्सुला अन्ड्रेस जैसे नामी सितारों के साथ दुनिया भर की दो सौ सुंदरियाँ थीं। जब फिल्म डूबनी होती है, तब कोई तिनका भी उसे नहीं बचाता।

द रेड टेन्ट (१९७१) एक्स्प्लोअर्स के साहस की फिल्म है। मन को छू लेती है। किंतु, इटली-सोवियत संघ द्वारा संयुक्त रूप से निर्मित अँगरेजी में डब इसको भी बॉक्स ऑफिस पर ऐसी मार पड़ी कि नब्बे लाख डॉलर्स का घाटा हुआ। 'वॉन टॉन टॉन, द डॉग हू सेव्ड हालीवुड फिल्म के फ्लॉप होने पर निर्माता ने जो कहा वही अंतिम सत्य है मुझे पता है कि दो इंसान और एक कुत्ता इस फिल्म को प्यार करते हैं। फिर पैसे की चिंता कौन करता है? फिल्में ख्वाब हैं। ख्वाब में 'हिट' क्या और फ्लॉप क्या? सब सच है। ■

■ **बॉक्स ऑफिस पर 'फ्लॉप' प्रमुख फिल्में: (अधिकतम घाटा चार करोड़ इक्यासी लाख डॉलर्स)** ◇ द एडवेंचर्स ऑव बैरॉन मुंचास्सेन (१९८८), ◇ हडसन हॉक (१९९१), ◇ इन्चॉन (१९८१), ◇ द कॉटन क्लब (१९८४), ◇ द सांता क्लाज (१९८५), ◇ हेवन्स गेट (१९८०), ◇ बिली बाथगेट (१९९१), ◇ पाइरेट्स (१९८६), ◇ रैम्बो पार्ट ३ (१९८८), ◇ रेझ द टिटैनिक (१९८०), ◇ वाटरलू (१९६९), ◇ डार्लिंग लिलि (१९७०), ◇ द फाल ऑव द रोमन एम्पायर (१९६४), ◇ क्लिओपात्रा (१९६३), ◇ हरिकेन (१९७५), ◇ द ग्रेटेस्ट स्टोरी एवर टोल्ड (१९६५), ◇ द आईलैंड (१९८०), ◇ स्टार! (१९६८), ◇ टोरा! टोरा! टोरा! (१९७०), ◇ द विज (१९७८), ◇ म्युटिनी ऑन द बाऊन्टी (१९६२), ◇ बैटल ऑव ब्रिटेन (१९६९), ◇ द रेड टेन्ट (१९७१), द प्राइवेट लाइफ ऑव शेरलॉक होम्स् (१९७०), ◇ हेलो डॉली (१९६९), द प्रिजनर ऑव जेन्डा (१९७९), ◇ द ओनली गेम इन टाउन (१९७०), ◇ द लास्ट होराइजन (१९७३), ◇ पेन्ट युवर वैगन (१९६९), ◇ द लॉग राइडर्स (१९८०), ◇ ५५ डेज इन पेकिंग (१९६३), ◇ ड्राकुला (१९७९), ◇ हेअर (१९७९), ◇ निकोलस एंड अलेक्जाण्ड्रा (१९७१), ◇ स्वीट चैरिटी (१९६९), द बाइबल (१९६६) ◇ ए ब्रिज टू फार (१९७७) ◇ चिट्टी-चिट्टी बैन्ग- बैन्ग (१९६८) ◇ बैरी लिण्डेन (१९७५) ◇ न्यूयॉर्क-न्यूयॉर्क (१९७७) ◇ जनाडु (१९८०) ◇ कैसिनो रॉयल (१९६७) ◇ केमेलॉट (१९६७) ◇ लकी लेडी (१९७५)।

१८९५

पहली-पहली बार

२२ मार्च :

☐ 'कारखाने से बाहर आते मजदूर' नामक फिल्म का एक इंजीनियर सोसाइटी में पहला सार्वजनिक प्रदर्शन।

३० मार्च

☐ ऑक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज नौका दौड़ (लंदन) का ब्रिटिश पायनिअर बर्ट एक्रेस द्वारा फिल्मांकन।

२१ अप्रैल :

☐ अमेरिका के न्यूयार्क शहर में पहली बार फिल्म प्रदर्शन।

२० मई

☐ सार्वजनिक रूप से बॉक्सिंग मैच पर फिल्मांकित 'यंग ग्रिफो' का न्यूयार्क में प्रदर्शन।

२० जून :

☐ कील नहर पर आधारित बर्ट एक्रेस की पहली 'न्यूज रील' का प्रदर्शन।

२८ दिसंबर :

☐ लुई तथा ऑगस्टर ल्यूमिएर बंधुओं की फिल्मों का पेरिस के इंडिया ग्रांड कैफे में पहली बार टिकट द्वारा प्रदर्शन। फिल्में थीं- अराइवल ऑव द ट्रेन/ सी-बाथ। डिमालिशन ऑव ए वाल/ फीडिंग द बेबी वाटरिंग द गार्डन/ वर्कर्स लीविंग द फैक्टरी।

ए टच ऑव क्लास : संसार की श्रेष्ठ फिल्म

सिनेमा की सही समझ के लिए यह आवश्यक है कि दर्शक अपने स्तर पर विश्व सिनेमा की श्रेष्ठ फिल्मों का आस्वादन करे। दरअसल फिल्मों की भाषा, व्याकरण और मुहावरों को विश्व के श्रेष्ठ फिल्मकारों ने परदे पर प्रस्तुत किया है। उसे देखे बगैर फिल्म माध्यम की ताकत का पता नहीं चलता। मानव-व्यापार की अबूझ पहेली को हजारों फिल्मकारों ने अपनी लाखों फिल्मों के द्वारा सुलझाने की कोशिश की है और सभ्यता- संस्कृति की एक विरासत तैयार की है। इस खंड में विश्व सिनेमा की विविध विषयों की श्रेष्ठ फिल्मों का गुलदस्ता लोकप्रिय और गंभीर सिनेमा में दिलचस्पी रखने वाले दर्शकों को ध्यान में रखकर संजोया गया है। इसके चयनकर्ता हैं -□डॉ. वसंत पेंढारकर □दिलीप गुप्ते और □श्रीराम ताम्रकर





द लास्ट एम्परर

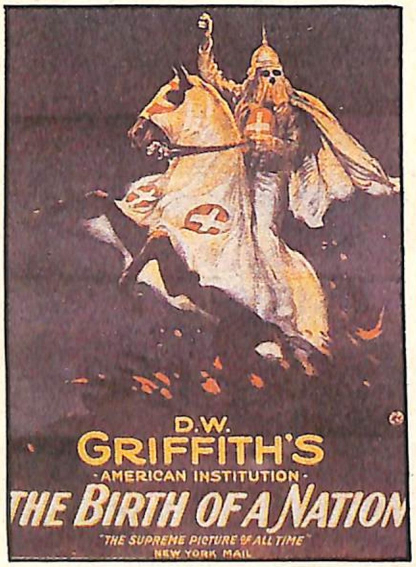
मूक-युग की टॉप टेन फिल्म

१. द बर्थ ऑव ए नेशन : १९१५
२. द बिग परेड : १९२५
३. बेनहर : १९२६
४. द टेन कमान्डमेन्ट्स : १९२३
५. वाट प्राइस ग्लोरी : १९२६
६. द कवर्ड वेगन : १९२३
७. वे डॉउन ईस्ट : १९२१
८. हार्ट्स ऑव द वर्ल्ड : १९१८
९. विंग्स : १९२७
१०. द फोर हार्समेन ऑव द एपोकेलिप्स : १९२१

द बर्थ ऑव ए नेशन

ग्रिफिथ की ब्लाक बस्टर फिल्म 'द बर्थ ऑव ए नेशन' जब ३ मार्च १९१५ को न्यूयार्क के लिबर्टी थिएटर में प्रदर्शित हुई, तब समीक्षकों ने कहा कि फिल्म निर्माण में यह फिल्म पूर्ण विराम लगाती है। वास्तव में तो यह भव्य हॉलीवुड मार्का फिल्मों की शुरूआत थी। सिविल वार को आधार लेकर बनी इस फिल्म में फिल्मांकन में नए तकनीक प्रयोग में लिए गए हैं। कु क्लाक्स क्लान के उदय को भी यह फिल्म रेखांकित करती है। वर्णभेद के आधार पर बाद में इस फिल्म को आलोचना सहना पड़ी थी। ग्रिफिथ इस फिल्म से ही हॉलीवुड के पितामह बने हैं। इस फिल्म पर व्यय हुआ था तीन लाख डॉलर्स। इसी फिल्म से हॉलीवुड की फिल्म निर्माण केंद्र के रूप में पृथक पहचान बनी है।

☆ १९१५ ☆ गूँगी फिल्म ☆ निर्माण : ग्रिफिथ/ईपाक/डिक्सान/ यू.एस. ☆ निर्माता : डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ एवं हैरी ई. ऐटकेन ☆ निर्देशक : डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ ☆ प्रमुख



द बर्थ ऑव ए नेशन

भूमिकाएँ : हेनरी बी. वालथाल/मिरियम कूपर/मा मार्श/ लिलियन गिश/ राल्फ लुईस/ जार्ज सिगमन/ ☆ श्वेत-श्याम ☆ अवधि : १८७ मिनट।

द किड

यह फिल्म कुछ-कुछ चार्ली चैप्लिन की आत्मकथा है। चार्ली की अन्य फिल्मों के मुकाबले यह फिल्म गंभीर है। बालक जैकी कूगन को चार्ली ने लॉस एंजिलस के एक कार्यक्रम में देखा था। दोनों के बीच जो तालमेल बैठा उसी का नतीजा इस फिल्म की सफलता थी। इस फिल्म ने दस लाख डॉलर का मुनाफा कमाया। सिर्फ 'बर्थ ऑव ए नेशन' की कमाई ही इससे अधिक है। जैकी कूगन इस फिल्म से स्टार बन गया। हिन्दी में इस कथानक पर 'मस्ताना' और 'कुँवारा बाप' फिल्में बनी हैं।

☆ अमेरिका ☆ १९२० ☆ मूक फिल्म ☆ ९० मिनट ☆ निर्माता : फर्स्ट नेशनल ☆ निर्देशक /पटकथाकार : चार्ली चैप्लिन ☆ भूमिका : चार्ली चैप्लिन/जैकी कूगन (बालक)/ एडना पर्वियन्स (बालक की माँ)/ कार्ल मिलर/ टॉम विल्सन।

नैनूक ऑव द नॉर्थ

फ्लाहर्टी ने अपने जीवन के सोलह महीने उत्तरी कनाड़ा के एस्किमो के बीच सिर्फ इसीलिए गुजारे कि एक लुप्त होती जीवन पद्धति फिल्मा सकें। उनके समर्पण से एस्किमो बहुत प्रभावित हुए। खास तौर पर नैनूक और उसके परिवार ने हरसंभव मदद की। वे दरियाई घोड़े के शिकार के लिए भी तैयार हो गए थे जो कि एक जानलेवा आखेट है। एक फर बनाने वाली कंपनी ने इसे वित्तीय सहायता प्रदान की। न्यूयार्क में इसकी बेहद प्रशंसा हुई, क्योंकि यह एक विचित्र अनुभव था। छायांकन, संपादन और निर्देशन की चुस्ती के कारण यह वृत्तचित्र किसी कथा चित्र से कमतर नहीं है। सन् १९४७ के पचास मिनट के संस्करण में संगीत और कमेंट्री जोड़ कर इसे और प्रभावी बनाया गया है।

☆ अमेरिका ☆ १९२२ ☆ ६० मिनट ☆ निर्देशक : राबर्ट जे. फ्लाहर्टी।

द किड



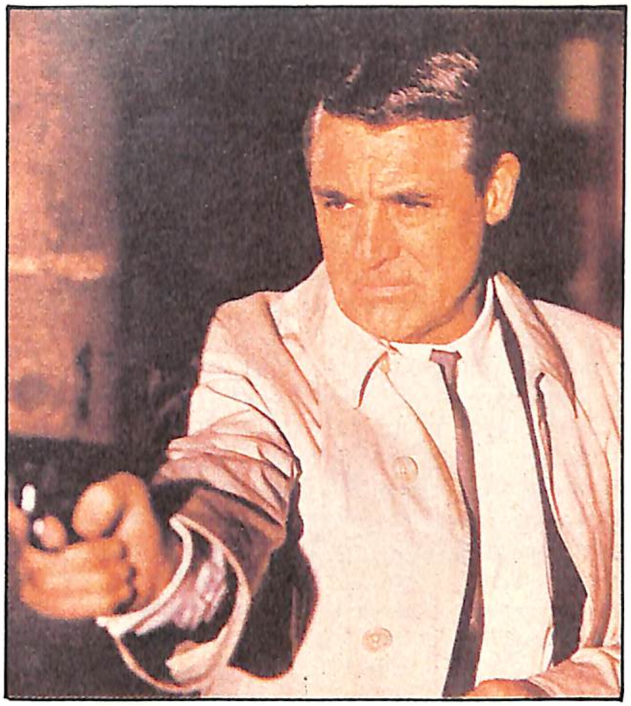
द नेविगेटर

बस्टर कीटन सबसे विख्यात मसखरा इसलिए माना जाता रहा है, क्योंकि उसके चेहरे पर कभी कोई भाव उभरता ही नहीं था। पत्थर-सा-चेहरा (स्टोन फेस) होकर भी पर्दे पर कीटन जो धूम मचाता रहा वह अद्भुत है। इस फिल्म में कीटन 'अण्डरवाटर' है। सारा फिल्मांकन 'ट्रिक' सीन्स से है। कीटन की बोट पर उछलकूद, डेविल-फिश के साथ मजेदार जंग, सारा मसाला दर्शकों को लोटपोट कर देने के लिए पर्याप्त है। वह स्लेपस्टिक कॉमेडी का जमाना था, और, कीटन, चैप्लिन के समकक्ष स्तर का (कई समीक्षकों की राय में चैप्लिन से भी अधिक गुणी) मसखरा था।

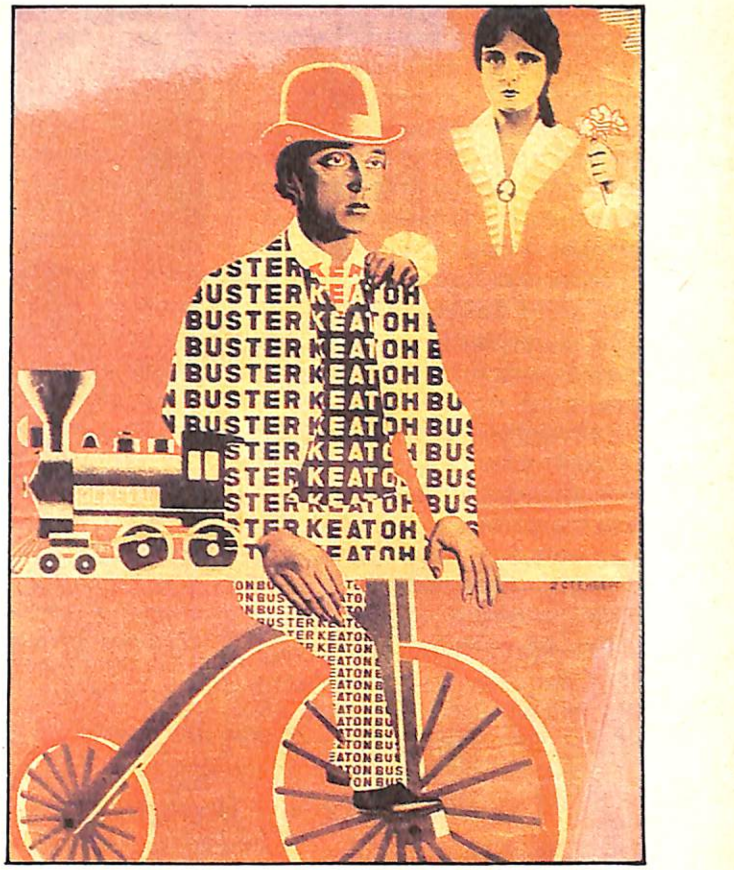
☆ १९२४ ☆ गूँगी ☆ निर्माण : मैट्रो-गोल्डविन ☆ यू.एस. ☆ निर्देशक : डोनाल्ड क्रिस्प, बस्टर कीटन ☆ कलाकार : बस्टर कीटन/कैथरिन मैकग्वायर/फ्रेडरिक व्रूम ☆ श्वेत श्याम ☆ अवधि : ६० मिनट।

द बेटलशिप पोटेमकिन

यह फिल्म सन् १९०५ की क्रांति की याद में बनाई गई थी। निर्देशक आइसंस्टाइन ने थोड़ी हकीकत थोड़ा फसाना लेकर युद्ध पोत पोटेमकिन पर हुई सैनिक क्रांति की पटकथा लिखी। यह युद्धपोत काले सागर के बेड़े में से एक था। यह फिल्म कला और प्रचार का विशिष्ट नमूना है। फिल्म की स्पष्टता और असर इसके सादे मगर शक्तिशाली वर्णन का नतीजा है। निर्देशक ने विशेष चरित्र को लेकर फिल्म को पेचीदगी से बचाया है। तकनीकी दृष्टि से भी यह फिल्म संतोषजनक है। नए लोगों को लेकर किया गया यह प्रयोग सफल हुआ। जहाज पर हो रहे नरसंहार के दृश्य रोंगटे खड़े कर देते हैं।



केरी ग्रांट



बस्टर कीटन

भावुकता का सहारा लेकर अंत में पत्थरों के शेरों को भी जनता के समर्थन में उठ खड़े होने के दृश्य हैं। इसका संपादन दर्शकों को बाँधे रखता है। यह फिल्म बहुत लोकप्रिय हुई थी। जर्मनी में इस फिल्म के साथ ऑर्केस्ट्रा भी बजाया गया था जो अब साउंड ट्रेक का काम करता है। सीढ़ियों पर गोलियों की बौछार में भागते लोग और बच्चे सहित पैराम्बुलेटर का सीढ़ियों पर लुढ़कना इस फिल्म का यादगार दृश्य है।

☆ सोवियत संघ ☆ वर्ष : १९२५ अवधि : ७५ मिनट ☆ निर्माता : गोस्किनो ☆ निर्देशक/ पटकथाकार : सर्गेई आइसंस्टाइन ☆ कलाकार : ए. एन्तोनोव/ ब्लादिमीर बार्स्की/ एम. गोमोरोव/ ग्रिगोरी एलेक्जेंद्रोव/ लाल नौसैनिक/ ओडेसा के नागरिक।

जॉज सिंगर

जॉज सिंगर दुनिया की पहली बोलती-गाती फिल्म है। इसने वार्नर ब्रदर्स की लड़खड़ाती दुनिया को सहारा देकर उसे वित्तीय सुदृढ़ता प्रदान की। अल जॉनसन ने एक गायक पुत्र की भूमिका निभाई थी। यह ज्यू लोगों की भावनाओं और दुःखों का चित्रण करती है। इस फिल्म का पहला प्रदर्शन ६ अक्टूबर १९२७ को न्यूयॉर्क के वार्नर थियेटर में हुआ था। ब्रिटेन में यह फिल्म साल भर बाद प्रदर्शित हो पाई थी।

☆ १९२७ ☆ ९० मिनट ☆ निर्माता : वार्नर ब्रदर्स ☆ निर्देशक : अलन क्रॉसलैंड। ☆ कलाकार : अल जॉनसन/जैक रॉबिन/ मे मैकएवॉय/ वार्नर ओलैंड।

ब्ल्यू एंजिल

अधेड़ उम्र के शाला अध्यापक रैथ एक सस्ते से कैफे में गाने वाली लोला लोला के प्रेमपाश में बँध जाते हैं। उससे विवाह कर लेते हैं। लोला उनका निरन्तर अपमान करती है और उन्हें रंगमंच का विदूषक बना देती है। जब लोला उन्हें छोड़कर एक अन्य पुरुष के साथ चल देती है तो वे टूट जाते हैं। वे अपनी पाठशाला में लौटते हैं और अपनी डेस्क पर मर जाते हैं। इस फिल्म में दर्शाई गई गिरावट और परपीड़न बरसों तक पर्दे पर सेक्स पेश करने का अचूक फारमूला मानी गई। आज भी जाँघों तक काली जुराबें, रेशमी टोप, गेटिस और खुली जंघाएँ सेक्स का प्रतीक मानी जाती हैं। मैरलिन का फुसफुसाहट भरी आवाज में गाया गीत 'फॉलिंग इन लव अगेन' उत्तेजना बढ़ाता है। इसी फिल्म ने उन्हें रातों रात स्टार बना दिया।

एमिल जानिंग की भूमिका भारी थी। उनके हावभाव बहुत पुराने थे। यहाँ तक कि सन् १९३० तक भी वे अप्रचलित हो गए थे। स्टर्नबर्ग का निर्देशन भी उतना ही भारी था। इसके बावजूद यह फिल्म दृश्य संयोजन, विशाल सेट और विस्तृत ब्योरे के कारण याद रखने योग्य है। यह अँगरेजी और जर्मन भाषाओं में बनी थी। भारत में शांताराम ने इसी को आधार बना कर हिन्दी-मराठी फिल्म पिंजरा बनाई थी।

☆ जर्मनी ☆ १९३० ☆ १०५ मिनट ☆ निर्माता : एरिच पॉमर ☆ निर्देशक : जोसेफ वॉन स्टर्नबर्ग ☆ हेनरी मान के उपन्यास 'प्रोफेसर अनरैथ' पर आधारित। ☆ भूमिका : एमिल जेनिंग्स/मैरलिन डिट्रीच/ रोजा वेल्टी/ हैंस अलबर्स।

ऑल क्वाइट ऑन द वेस्टर्न फ्रंट

यह फिल्म शक्ति और यथार्थवाद की युद्ध विरोधी घोषणा है जो समय के साथ धीरे-धीरे लुप्त हो गई। यह जर्मनी के विचारों को निर्भयता से प्रकट करती है। सात स्कूली छात्रों को लेकर उनमें देशभक्ति और जोश की भावना भर दी जाती है। उन्हें खंदक युद्ध के कष्टों और संत्रास झेलने के लिए भेजा जाता है। अनुभवों के कारण उनका भ्रम दूर हो जाता है। छह लड़के युद्ध में मारे जाते हैं। उनका स्थान लेने और रंगरूट आ जाते हैं। इस फिल्म में ध्वनि का प्रभावशाली उपयोग किया गया था। उन दिनों संपादन के लिए एक ही ट्रैक होता था। माइलस्टोन ने इसी सुविधा का सूझबूझ से प्रयोग किया। खंदक युद्ध के दृश्य रोमांचक थे। शायद पहली बार नागरिकों को सैनिकों की खंदक की जिंदगी के बारे में कुछ कल्पना हुई। युद्ध के दृश्य क्रेन पर कैमरा रखकर फिल्माए गए जो काफी प्रभावशाली बने। जर्मनी में नाजियों ने इस फिल्म पर प्रतिबंध लगा दिया था।

☆ अमेरिका ☆ १९३० ☆ १५० मिनट ☆ निर्माता : यूनिवर्सल ☆ निर्देशक : लुइस माइलस्टोन ☆ एरिच मारिया रेमार्क के उपन्यास पर आधारित। ☆ कलाकार : ल्यू आयर्स, लुइ वोल्हेम/जॉन रे।

सिटी लाइट्स

चार्ली चैप्लिन इस फिल्म पर तब से काम कर रहे थे जब उनकी फिल्म 'सर्कस' (१९२८)

खत्म हुई थी। आवाज के आने से उन्होंने काम रोक दिया था। उनका मानना था कि संवाद उनकी कॉमेडी का प्रभाव कम कर देंगे। अंतरराष्ट्रीय अपील में भाषा बाधा बनेगी। उन्होंने संवाद नहीं रखने का तय किया और सिर्फ संगीत और ध्वनियों का इस्तेमाल किया। समय के साथ न चलते हुए भी यह प्रयोग सफल हुआ। एक यायावर कई संयोगों से गुजरता हुआ एक नेत्रहीन फूलवाली लड़की की दृष्टि वापस लाता है। इस फिल्म में कई मनोरंजक दृश्य हैं जो आज भी हँसाते हैं। बैलेनुमा बॉक्सिंग, सिवैया खाने के दृश्य हँसा-हँसा कर लोटपोट कर देते हैं। सांध्यकालीन चाय पार्टी में चार्ली एक सीटी निगल जाते हैं और उनके गले से सीटी की आवाज निकलती है। इस दृश्य से हँसते-हँसते पेट में दर्द होने लगता है। मगर इंसानियत की भावना भी उतनी ही तीव्र है। चार्ली के त्याग को देखकर मन भर आता है।

☆ अमेरिका ☆ १९३१ ☆ ९० मिनट ☆ निर्माता/निर्देशक/पटकथाकार : चार्ली चैप्लिन ☆ कलाकार : चार्ली चैप्लिन/ वर्जीनिया चेरिल/हैरी मेयर्स।

अवर डेली ब्रेड

मंदी के दौर में बेरोजगारी की समस्या विकराल हो गई थी। इन्हीं दिनों एक प्रोफेसर ने सुझाया कि बेरोजगारी से निबटने के लिए सहकारिता सबसे बड़ा हथियार है। यही आलेख इस फिल्म का आधार बना। इसे किसी बैंक ने वित्तीय सहायता नहीं दी और इसलिए यह छोटे बजट पर पूरी आजादी के साथ बनाई जा सकी। इसमें शहर से गाँव लौटे एक युवा दंपत्ति द्वारा सहकारिता के आधार पर खेती करने और नहर द्वारा सिंचाई करने की योजना है। फिल्म को समीक्षकों ने भी सराहा और आम दर्शकों ने भी। फिर भी इस पर राजनीतिक विचारधारा का ठप्पा लग गया। कुछ लोगों ने इसे वामपंथी विचारधारा का पोषक कहा। अगर इसे 'पूँजीवादी प्रचार' का धब्बा नहीं लगता तो मॉस्को के १९३५ के फिल्म समारोह में इसे पहला पुरस्कार मिलता। फिर भी इसने दूसरा पुरस्कार जीता। विडोर ने साबित कर दिया कि वे सिनेमा में छिपी संभावनाओं से अपरिचित नहीं हैं। समसामयिक समस्याओं को व्यावसायिक सिनेमा में उभारने का यह बिरला प्रयास था।

☆ अमेरिका ☆ १९३४ ☆ ७५ मिनट ☆ निर्माता/निर्देशक : किंग विडोर ☆ कलाकार : करेन मोर्ली/ टॉम कीने।

तीस के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. गॉन विद द विन्ड : १९३९
२. स्नो व्हाइट एंड सेवन ड्वार्फस् : १९३७
३. द विजार्ड ऑव ओज : १९३९
४. किंग-कांग : १९३३
५. सेनफ्रांसिस्को : १९३६
६. मि. स्मिथ गोज टू वाशिंगटन : १९३९
७. लास्ट होरिजन : १९३७
८. हेल्स एंजेल्स : १९३०
९. मेटाइम : १९३७
१०. सिटी लाइट्स : १९३१

इट हैपन्ड वन नाइट

एक रईस की बेटी पिता की मर्जी के विरुद्ध शादी करना चाहती है। पिता मानता नहीं तो वह भाग जाती है। लंबे बस के सफर में उसकी मुलाकात एक रिपोर्टर से होती है। पिता ने गुमशुदा की तलाश पर बड़ा इनाम रखा है। 'इट हैपन्ड...' बड़ी मजेदार फिल्म रही है। भारत में इस फिल्म पर दो संस्करण निकले 'चोरी-चोरी' एवं 'दिल है कि मानता नहीं' ...किन्तु मूल फिल्म का आनंद ही और है। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाई थी। आज यह एक सदाबहार कालजयी फिल्म मानी जाती है।

☆ फिल्म : इट हैपन्ड वन नाइट ☆ १९३४ ☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कोलम्बिया ☆ यू.एस. ☆ निर्माता/निर्देशक : फ्रैंक काप्रा ☆ कलाकार : क्लार्क गेबल/क्लाडेटे कोलबर्ट ☆ श्वेत श्याम ☆ अवधि : १०४ मिनट ☆ पुरस्कार- पाँच ऑस्कर- सर्वश्रेष्ठ फिल्म/ निर्देशक/ सर्वश्रेष्ठ अभिनेता/अभिनेत्री–, कहानी।

एलिस इन वण्डरलैण्ड

यह बाल फिल्म लुइ कैरोल की दो क्लासिक कृतियों- 'एलिस्ज एडवेंचर्स इन वंडरलैंड (१८६५) और 'थ्रू द लूकिंग ग्लास' (१८७२) को मिलाकर बनाई गई है। इस फिल्म में पैरामाउंट के कई सितारों ने उपस्थित होकर मनोरंजन किया है। इसी नाम और इसी विषय पर कुछ और फिल्में बनी है। सिसिल हेपवर्थ की एक रील वाली फिल्म (१९०६), वाल्ट डिज्नी की पूरी लंबाई वाली कार्टून फिल्म (१९५१) और ब्रिटिश-फ्रेंच प्रॉडक्शन की आगफा कलर में (१९४८)। अंतिम फिल्म में एलिस को छोड़कर सभी पाँच कठपुतलियाँ थे। एलिस की भूमिका कैरोल मार्श ने निभाई थी। सन् १९७२ में भी इसी नाम से एक फिल्म ब्रिटेन के निर्देशक विलियम स्टर्लिंग ने बनाई थी।

☆ अमेरिका ☆ १९३४ ☆ ७५ मिनट ☆ निर्देशक : नॉर्मन मैकलियाड ☆ निर्माता : पैरामाउंट ☆ कलाकार : चार्लोट हेनरी/ गैरी कूपर/ कैरी ग्रांट/ डब्ल्यू. सी. फील्ड्स।

अन्ना कैरेनिना

सोवियत संघ में १९१० से फिल्में बनानी शुरू हुई। तब से लगाकर आज तक लियो ताल्स्तॉय के इस अमर उपन्यास (१८७८) पर कम से कम पंद्रह फिल्में बन चुकी हैं। एक सुन्दर और संभ्रान्त रूसी महिला एक अयोग्य प्रेमी की खातिर अपने बच्चे और सामाजिक सम्मान को बलि चढ़ा देती है। रूस के फिल्म निर्माताओं और दर्शकों का यह प्यारा विषय रहा है। गार्बो ने दो बार अन्ना की भूमिका निभाई थी। पहली बार सन् १९२८ में जब फिल्में गूँगी हुआ करती थीं और दूसरी बार सन् १९३५ में। निर्माता अलेक्जेंडर कोर्डा की अन्ना कैरेनिना (१९४८) में रूस के उच्चभू समाज का सही चित्रण था मगर निर्देशक जूलियन दुविवियर फिल्म की नायिका विवियन ली से संतोषजनक अभिनय नहीं करवा पाए। व्रान्स्की की भूमिका में केरन मूर को अब तक सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

सोवियत संघ में सन् १९६७ में सत्तर मिली-मीटर और सोवोकलर में बनी 'अन्ना कैरेनिना' ने पुरानी फिल्मों की वर्जनाओं को नकार कर तॉलस्ताय द्वारा लिखित अन्ना के संबंधों, विवाह आदि स्थितियों के साथ न्याय किया। केतन मेहता की हिन्दी फिल्म माया मेम साब अन्ना कैरेनिना के जीवन पर ही आधारित है।

मॉडर्न टाइम्स

चार्ली चैप्लिन की सबसे मजेदार फिल्म है- मॉडर्न टाइम्स। यह मशीन पर काम करने वाले मजदूर की कहानी है। चैप्लिन का पैन्टोमाइन देखने योग्य है। महात्मा गाँधी से भेंट करने के बाद मानव और मशीन का दिलचस्प द्वंद्व इस फिल्म का आधार है। चैप्लिन की फिल्में विश्व सेना की अनमोल विरासत है। उनकी फिल्मों को भारत में किसी अतिरिक्त परिचय की कभी जरूरत नहीं रही है। भारत में ही क्यों, दुनिया भर के दर्शकों के बारे में भी यही सच है।

☆ १९३६ ☆ संवाद नगण्य ☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : युनाइटेड आर्टिस्टस ☆ यू.एस. ☆ निर्माता एवं निर्देशक : चार्ली चैप्लिन ☆ कलाकार : चार्ली चैप्लिन/पॉलेटी गोदार्द/ हेनरी बर्गमन ☆ श्वेत श्याम ☆ अवधि : ८५ मिनट।

स्नो व्हाइट एण्ड द सेवन ड्वार्फस्

डिजनी की यह फिल्म एक अविस्मरणीय अनुभव है। परिकथा पर बनी यह पूरी लंबाई की पहली एमिनेशन फिल्म है। अत्यंत कलात्मकता के साथ ही अत्यधिक आनंददायी भी है। तीन वर्षों से लगभग सात सौ चित्रकार एवं तंत्रज्ञ इस



विजार्ड ऑव ओज़

फिल्म के निर्माण में लगे रहे। इसी फिल्म ने वॉल्ट डिजनी को टाइम पत्रिका के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित कराया था। अभी १९९४ में इस फिल्म की विशेष वीडियो कैसेट जारी हुई, तो चन्द दिनों में ही २७० लाख कैसेट बिक गई।

☆ १९३७ ☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : डिजनी एवं आर.के.ओ. ☆ यू.एस. ☆ निर्माता: वाल्ट डिजनी ☆ निर्देशक : डेविड हैन्ड/एनिमेशन फिल्म ☆ रंगीन ☆ अवधि : ८० मिनट ☆ पुरस्कार १९३७ में ऑस्कर नामांकन म्युजिकल स्कोअर के लिए, किंतु १९३८ में महत्वपूर्ण स्क्रीन इनोवेशन का ऑस्कर अर्जित।

अलेक्जेंडर नेवस्की

निर्देशक सर्गेई आइसंस्टाइन ने 'ओल्ड एंड न्यू' (१९२९) के बाद कई फिल्में अधूरी छोड़ी। 'अलेक्जेंडर नेवस्की' का निर्देशन उन्होंने अपने साथियों की कड़ी चौकसी में किया। यह फिल्म एक महागाथा साबित हुई। इस फिल्म का नायक जनता के सहयोग से जर्मनी के बर्बर ट्यूटानी हमलावरों को रूस की पवित्र भूमि से खदेड़ देता है। रूस में यह फिल्म काफी लोकप्रिय हुई थी।

जर्मनी-रूस संधि (१९३९) के समय यह फिल्म प्रदर्शन के लिए रोक दी गई थी। बाद में जब रूस ने जर्मनी पर घुसपैठ की तभी यह फिल्म फिर से प्रदर्शित की जा सकी। आइसंस्टाइन के प्रशंसकों को फिल्म के परंपरागत अप्रोच पर निराशा हुई। फिर भी यह फिल्म आँखों के लिए एक सौगात है। बर्फ पर लड़ी गई लड़ाई रोमांचक थी।

☆ सोवियत संघ ☆ १९३८/ ☆ अवधि: १०५ मिनट। ☆ निर्देशक एस. आइसंस्टाइन ☆ कलाकार: निकोलाई चेरकास्सोव/ निकोलाई ओख्लोपोव/अलेक्जेंडर अब्रिकोसोव/ दि्मित्री ऑर्लोव।

स्टेजकोच

वेस्टर्न श्रेणी की इस कालजयी फिल्म में इस श्रेणी की सारी विशेषताएँ बखूबी सम्मिलित हैं। टुक्सान से न्यू मेक्सिको जा रही 'स्टेजकोच' में चार यात्री हैं- एक वेश्या, एक भद्र गर्भवती महिला, एक शराबी और एक बैंक डकैती कर फरार। इन्हें रास्ते में मिलता है रिंगो किड (जॉन वेन)। मानुमेन्ट व्हेली का प्रामाणिक फिल्मांकन, प्रामाणिक चरित्र चित्रण, हास्य के पुट और साहस, सभी का सर्वश्रेष्ठ मिश्रण है। वेस्टर्न श्रेणी की फिल्मों में हाइनून शेन जैसी और भी कालजयी फिल्में हैं- किंतु 'स्टेजकोच' सबमें अव्वल रही है। १९६६ में इसका 'रिमेक' आया। किंतु १९३९ की फिल्म का कोई जवाब नहीं है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : यूनाइटेड आर्टिस्ट्स ☆ यू.एस.ए. ☆ निर्माण वर्ष : १९३९ ☆ निर्माता : वाल्टर वैन्गर ☆ निर्देशक जॉन फ़ोर्ड ☆ कलाकार : क्लेअर ट्रेवोर/जॉन वेन ☆ श्वेत श्याम ☆ अवधि : ९५ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन सात, ऑस्कर पुरस्कार : २, सर्वश्रेष्ठ म्युजिकल स्कोअर एवं सहायक अभिनेता।

द विजार्ड ऑव ओज

एल. फ्रैन्क बॉम के बाल साहित्य की अमर कृति पर आधारित यह फिल्म बच्चों के लिए बनी फिल्मों में आज भी कालजयी मानी जाती है। एक छोटी लड़की 'डोरोथी' की यह साहस गाथा है। उसके साथी 'स्केअरक्रो टिनमॅन एवं शेर की। सभी आयु के दर्शकों में यह फिल्म लोकप्रियता के शिखर पर रही। अभिनय, चटखते रंगों में फिल्मांकन/चुस्त निर्देशन/ गीत-नृत्यों की भरमार। इस फिल्म का मूल संदेश है- घर जैसी और कोई जगह नहीं। चुटीले कटाक्षों से इस फिल्म के शिक्षात्मक पहलुओं को भी दर्शकों ने सराहा है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९३९ ☆ निर्माता : मेर्विन लोरॉय ☆ निर्देशक : विक्टर फ्लेमिंग एवं किंग विडोर ☆ कलाकार : ज्युडी गार्लेण्ड/ फ्रेंक मॉर्गन/रॉय बाल्जर/बर्ट लेहर ☆ रंगीन, किंतु प्रारंभ एवं अंत में श्वेत श्माम ☆ अवधि : १०० मिनट। ☆ पुरस्कार : नामांकन ५ किंतु दो ऑस्कर पुरस्कार।

गॉन विद द विण्ड

इस फिल्म के सारे पहलू -निर्माण प्रक्रिया से लेकर प्रदर्शन तक ऐसे अद्भुत रहे कि फिल्म की नायिका का चुनाव भी समाचार पत्रों की सुर्खियों में रहा। महत्वाकांक्षी, अति सफल, अति

क्लार्क गेबल-विवियन-ली : गॉन विद द विण्ड



पुरस्कृत (बेनहर के आगमन तक) यह फिल्म मार्गरेट मिशेल के विराट उपन्यास को विराट रूप में पर्दे पर लाती है। अमेरिकन सिविल वार की पृष्ठभूमि में यह एक ड्रामा है। आज भले ही वह एक 'सोप-आपेरा' जैसा लगे इस फिल्म ने लोकप्रियता का बॉक्स ऑफिस पर इतिहास रचा है। हॉलीवुड की श्रेष्ठतम फिल्मों में अग्रणी इस फिल्म को कोई सिनेमाप्रेमी नजरअंदाज कर ही नहीं सकता। सभी कलाकारों एवं निर्देशक के प्रयासों की पराकाष्ठा है। परिणाम स्पष्ट है। सर्वाधिक दर्शकों द्वारा देखी गई फिल्म है यह!

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : सेल्जनिक स्टुडियो ☆ यू.एस.ए. ☆ निर्माण वर्ष : १९३९ ☆ निर्माता : डेविड ओ. सेल्जनिक ☆ निर्देशक : विक्टर फ्लेमिंग एवं अन्य (खास तौर पर जॉर्ज कुकोर) ☆ प्रमुख कलाकार : विविअन ले./क्लार्क गेबल/ऑलिविआ डी. हैविलैण्ड/लिसली होवार्ड ☆ रंगीन ☆ अवधि : २१७ मिनट ☆ पुरस्कार नामांकन : १४, अर्जित ऑस्कर : ९।

द थीफ ऑव बगदाद

थीफ ऑव बगदाद आँखों को सुकून देने वाली 'लैविश' फिल्म है। बड़े-बड़े सेट्स। दृश्यों का आनंददायी संयोजन। अचंभित कर देने वाले स्पेशल इफेक्ट्स एवं साबू की अदायगी। सभी फिल्म को कालजयी बनाने में सहयोगी रहे हैं। अरेबियन नाइट्स का कथानक। उड़ने वाला लकड़ी का घोड़ा। बोतल में बंद विशालकाय जिन्न। विराट मकड़ी। उड़न गलीचा। तिलस्मी कारनामे। आज भी इस फिल्म की लोकप्रियता खासकर बच्चों में अपार है। कोनराड वैड्ट् का ग्रान्ड वजीर तो अविस्मरणीय ही है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कार्डा ☆ यू.के. एवं यू.एस. ☆ निर्माण वर्ष : १९४० ☆ निर्माता : अलेक्जाण्डर कार्डा ☆ निर्देशक : लुडविग बर्जर ☆ संगीत : मिकलास रोजा ☆ प्रमुख कलाकार : कानराड वैड्ट्/ साबू/ रेक्स इनग्राम

चालीस के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. बाम्बी : १९४२
२. फेन्टासिआ : १९४०
३. सिन्ड्रेला : १९४९
४. पिनोचियो : १९४०
५. साँग ऑव द साउथ : १९४६
६. मॉम एंड डैड : १९४४
७. सेमसन एंड डिलाइला : १९४९
८. द बेस्ट इअर्स ऑव अवर लाइव्ज : १९४६
९. ड्युएल इन द सन : १९४६
१०. दिस इज द आर्मी : १९४३



ग्रेट रोमांसः कासाब्लांका (१९४२)

☆ रंगीन : ☆ अवधि : १०६ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ४, ऑस्कर अर्जित ३।

सिटीजन केन

प्रेस जगत के शलाका पुरुष कैन की जनाडू स्थित अपने महल में मृत्यु हो जाती है। उनके अंतिम शब्द थे 'रोजबड़।' समाचार पत्रिका 'द मार्च ऑव टाइम' का संवाददाता इस शब्द का महत्व जानने के लिए नियुक्त किया जाता है। वह कई लोगों से मिलता है। भेंटवार्ताओं से यह जाहिर होता है कि कैन की सामाजिक छवि इन लोगों के विचारों से मेल नहीं खाती। फिल्म की कहानी के प्रमुख पात्र कैन और एक समाचार पत्र प्रकाशक विलियम रैंडाल्फ के चरित्र में समानता पाई जाने के कारण हल्ला मचा और फिल्म का प्रदर्शन खिंच गया। रैंडाल्फ ने इस फिल्म के खिलाफ जिहाद छेड़ दिया और इसके प्रदर्शन पर रोक लगाने की माँग की। आखिर में इसका प्रेस शो रखा गया। न्यूयार्क में इसे फिल्म आलोचकों का पुरस्कार मिला। बड़े शहरों में यह फिल्म अच्छी चली मगर छोटे शहरों-कस्बों में बैठ गई। कई वितरकों ने यह फिल्म प्रदर्शित ही नहीं की। इसे दो क्रिटिक अवॉर्ड और सर्वश्रेष्ठ मौलिक पटकथा के लिए ऑस्कर (१९४१) मिला। इस फिल्म के निर्माण के समय ही निर्माता और निर्देशक में ठन गई थी। इस फिल्म का हॉलीवुड पर गहरा असर पड़ा। पटकथा लेखन में परिवर्तन आया। पहले पटकथा मूलकथा की तरह क्रमबद्ध लिखी जाती थी, इस फिल्म के बाद यह नियम टूट गया। निर्देशक वेल्स ने वाइड एंगल और डीप फोकस लेंस का इस्तेमाल किया। एक ही फ्रेम में एक्शन कैसे विकसित करना इसी फिल्म ने सिखाया। वेल्स ने ध्वनि प्रयोग भी किए। अपनी सम्पन्नता और प्रभाव के कारण यह फिल्म आज भी दुनिया की श्रेष्ठ फिल्मों में से एक गिनी जाती है। हर दस साल में ब्रितानी फिल्म पत्रिका साइट एण्ड साउण्ड के सर्वेक्षण में सिटीजन केन विश्व की दस श्रेष्ठ फिल्मों में आज भी बरकरार है।

☆ अमेरिका ☆ १९४१ ☆ १२० मिनट ☆ निर्माता : आरकेओ ☆ निर्देशक : ऑर्सन वेलेस ☆ कलाकार : ऑर्सन वेलेस/ एग्नेस मूरहेड/ डोरोथी कॉमिगोर।

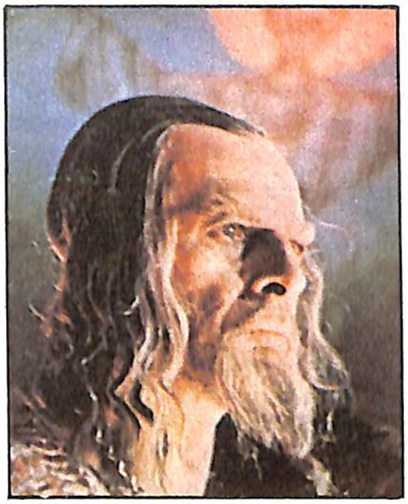
कासाब्लान्का

एक साधारण फिल्म के रूप में बनाई फिल्म अंततः एक असाधारण फिल्म कैसे बन जाती है इसका प्रमाण है कासाब्लान्का।सनसनी वह भी युद्ध समय की कथानक के पृष्ठभूमि में रही है। फिल्म पर रोमांस के तत्व हावी हैं। पूर्व प्रेमिका के प्रति प्रेम का नवजागरण, किंतु त्याग-बलिदान के मूल्यों को उभारती यह फिल्म सिनेमाविधा की एक 'पाठ्य पुस्तक' है। श्वेत श्याम फिल्मांकन सुखद है। सभी चरित्रों ने अभिनय से ऐसा समाँ बाँधा है कि फिल्म बार-बार देखने योग्य बन गई है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९४२ ☆ निर्माता : हाल बी. वालिस ☆ निर्देशक : मिशेल कुर्तिज ☆ प्रमुख कलाकार : हम्फ्री बोगार्ट, इन्ग्रिड बर्गमन, पॉल हैनरिड, क्लाड रैनस/कानराड वैड्ट ☆ श्वेत श्याम। ☆ अवधि : ९९ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ८। ऑस्कर अजित ३।

इवान द टेरिबल

यह फिल्म सोलहवीं शताब्दी के जार इवान चतुर्थ के जीवन पर आधारित है जिसने अलग-अलग जागीरों में बँटे रूस को एकता में



इवान द टेरिबल

पिरोया था। पहले भाग में इवान का खुद को जार के रूप में स्थापित करने का संघर्ष है। उसका अनास्तासिया से प्रेम प्रसंग भी है जिसकी जहर से मृत्यु हो जाती है। इस मृत्यु के पश्चात् इवान की सारी शक्तियाँ राजनीतिक लक्ष्य की ओर केंद्रित हो जाती हैं। दूसरे भाग में इवान का चर्च से संघर्ष और उसकी बोअर के विरुद्ध नृशंसता दिखाई गई है। आइसंस्टाइन ने मनोवैज्ञानिक जटिलताओं से इवान का चरित्र पूरा किया। स्तालिन ने इसका दूसरा भाग आपत्तिजनक पाया था। यह भाग स्तालिन की मौत के बाद ही प्रदर्शित हो पाया। नायक के रूप में चेरकासोव का अभिनय बुलंदियों पर था। निर्देशक ने लाइट शेड्स के अनोखे प्रयोग कर फिल्म व्याकरण को कई नए मुहावरे दिए हैं।

☆ सोवियत संघ ☆ पहला भाग १९४४ ☆ दूसरा भाग १९५८ ☆ ९० मिनट प्रत्येक ☆ निर्माता : आलम आरा और मॉस फिल्म स्टुडियो ☆ निर्देशक : सर्गेई आइसंस्टाइन ☆ कलाकार : निकोलाई चेरकासोव/ ल्यूदमिला त्सेलिकोव्स्काया/ सराफिमा बिरमन।

सैमसन एण्ड डिलाइला

ब्लॉक बस्टर फिल्मों के युग की शुरूआत करने वाली यह 'बाइबल' पर आधारित भव्य फिल्म है। भारत में सर्वाधिक लोकप्रियता अर्जित करने वाली, दर्शकों को विदेशी फिल्मों की ओर आकृष्ट करने वाली, पर्दे पर 'सतरंगी' छटाएँ बिखेरकर आँखों को तृप्त करने वाली यह फिल्म कालजयी है। सैमसन की सारी शक्ति उसके बालों में है। शेर से लड़ाई करने वाला सैमसन डिलाइला के स्थान पर उसकी बहन की ओर आकृष्ट होता है तो डिलाइला प्रतिशोध की भावना से उसे ध्वस्त करना चाहती है। धोखे से उसे अपने मोहजाल में फँसाती है। क्लाइमेक्स के पागन मंदिर के ध्वस्त करने के दृश्यों ने दर्शकों को मोह लिया था। भारत में प्रेमनाथ- बीनाराय की फिल्म "औरत" इसी फिल्म के कथानक पर बनी है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : पैरामाउन्ट ☆ यू.एस. ☆ निर्माण वर्ष : १९५० ☆ निर्माता एवं निर्देशक : सेसिल बी. डिमाइल ☆ प्रमुख कलाकार : विक्टर मैच्युअर/ हैडी लेमार/ जॉर्ज सैण्डर्स/ एन्जेला लेन्सबरी/ रस टम्बलिन। ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२० मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ५, ऑस्कर अर्जित २।

रशोमान

रशोमान दो कहानियों पर आधारित है। एक ही अपराध के चार समान रूप से जिम्मेदार लोगों के सत्य और स्वभाव का परीक्षण बड़े प्रभावशाली सिनेमाई अंदाज में हुआ है। फिल्म का चाक्षुष स्तर प्रभावशाली है। कैमरा हमेशा गतिमान रहता है। अभिनय के मामले में सभी ने प्रशंसनीय कार्य किया है। इसे सन् १९५१ के वेनिस फिल्म समारोह में ग्राँ-प्री पुरस्कार मिला था। पश्चिमी देशों का ध्यान जापानी फिल्मों पर रशोमान से ही गया। इस फिल्म में मूल रूप से यह तथ्य प्रतिपादित किया गया है कि हर आदमी का सच अपना-अपना होता है, उसे सब पर लागू नहीं किया जा सकता।

☆ जापान ☆ १९५० ☆ ९० मिनट ☆ निर्देशक : अकीरा कुरुसोवा। ☆ भूमिका तोशिरो मिफ्यून, मसायूकी मोरी, माचिको क्योआ, ताकाशी शिमुरा।

द अफ्रीकन क्वीन

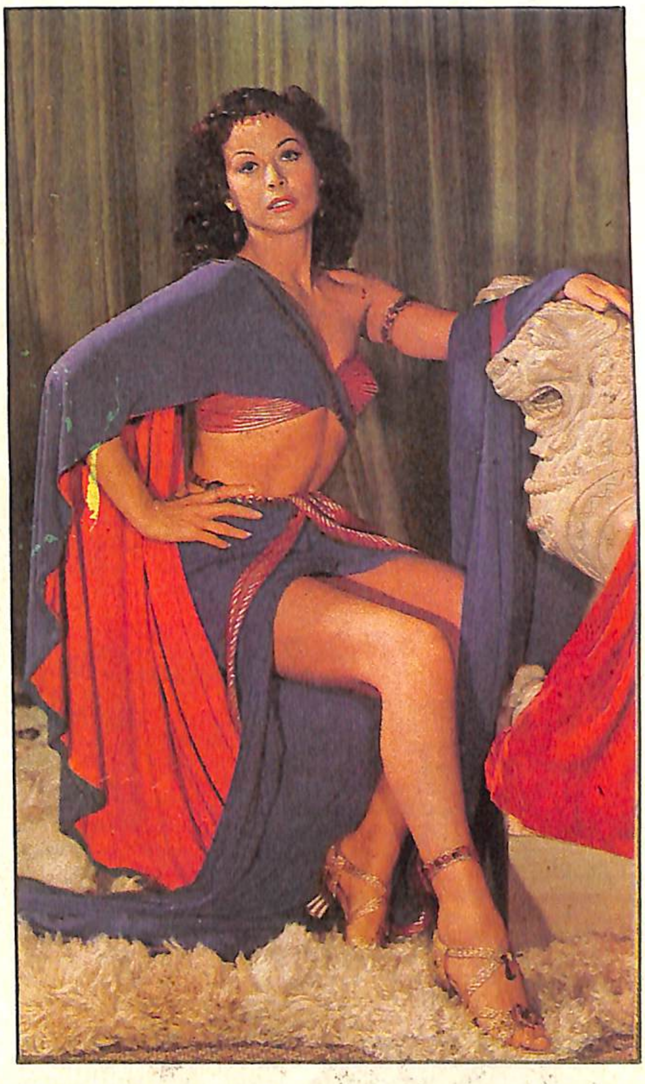
यह कहानी है एक मिशनरी लड़की और पहले महायुद्ध के दौरान युद्ध की विभीषिका भोगे हुए एक जर्मन व्यापारिक नौका के कप्तान की। इस फिल्म में रोमांच और रोमांस है। इसमें सहन शक्ति से निकला प्रेम है। कहीं-कहीं हँसी- मजाक भी है। इस फिल्म में हम्फ्री बोगार्ट और कैथरीन हेमबर्न के संवाद प्रमुख हैं। हम्फ्री बोगार्ट एक असभ्य, लक्ष्यहीन, असावधान व्यक्ति से एक मेहनती, लगनशील व्यक्ति में परिवर्तित होते हैं। बोगार्ट को अपने जीवन का एकमात्र ऑस्कर इसी भूमिका के लिए मिला था। कैथरीन हेमबर्न ने अपनी भूमिका यादगार बनाने में काफी मेहनत की। वे एक तकल्लुफ वाली चिर कुमारिका बनी हैं, जिसकी बुद्धिमत्ता आगे चलकर सहनशीलता और गर्मजोशी में तब्दील हो जाती है। अभिनय के अलावा इस फिल्म में चरित्र चित्रण भी सूझबूझ से किया गया है। उम्दा फोटोग्राफी और लोकेशन इस फिल्म की विशेषताएँ हैं।

☆ ग्रेट ब्रिटेन ☆ १९५२ ☆ टेक्नीकलर ☆ १०५ मिनट ☆ निर्माता : रोमलस होराइजन ☆ मूल लेखक : सी.एस. फॉर्स्टर ☆ पटकथा : जेम्स एजी ☆ कलाकार : कैथरीन हेमबर्न/ हम्फ्री बोगार्ट।

सिंगिंग इन द रेन

मजेदार। साफ-सुथरी/ नृत्य-संगीत/ हँसी-मजाक से भरपूर इस फिल्म का कथानक

हेडी लेमर : सेमसन एण्ड डिलाइला



१९२७ के उस काल के हॉलीवुड से संबंधित है, जब फिल्मों में आवाज का अवतरण हो रहा था। एक नर्तक के फिल्मी अभिनेता बनने के प्रयासों, उसके मसखरे मित्र के सहयोग एवं एक साधारण गायिका-नर्तक से अभिनेत्री बनने वाली एक साधारण लड़की की यह कहानी है। पूरी फिल्म सहज सुंदर है। श्रेष्ठ नृत्यों,मीठे संगीत से भरपूर है। दुख यही है कि ऐसी सुंदर फिल्में आज हॉलीवुड में नहीं बन रहीं। सिंगिंग इन द रेन (केली) एवं मेक देम लाफ् (कोनोर) गीत-नृत्य तो अमर रहेंगे। पूरे परिवार के साथ बार-बार देखी जा सकती है यह फिल्म।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५२ ☆ निर्माता : आर्थर फ्रीड ☆ निर्देशक : जीन केली-स्टैनली डीनन ☆ प्रमुख कलाकार : जीन केली/ डोनाल्ड ओ' कोनोर/ डेबी रेनाल्ड्स/ जीन होगेन/ सिड चैरिस/ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १०२ मिनट।



हैन्स क्रिश्चियन एन्डरसन

डेनमार्क के विख्यात परीकथा लेखक हैन्स क्रिश्चियन एन्डरसन की भूमिका में डैनी के जैसे विश्वविख्यात मसखरे को प्रस्तुत कर इस फिल्म ने पर्दे पर एक परीकथा प्रस्तुत की है। एन्डरसन के व्यक्तित्व को, उसकी आत्मा को, उसके समूचे जीवनदर्शन को डैनी के ने इतनी सहजता से एवं सुंदरता से प्रस्तुत किया है कि सभी आयु के दर्शक दंग रह जाते हैं। पर्दे पर एन्डरसन की कृति द लिटिल मरमेड बैले के रूप में इतनी कलात्मकता से प्रस्तुत की गई है, कि दर्शक आनंद में डूब जाते हैं। फिल्म के सेटस् देखते ही बनते हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : गोल्डविन, आर.के.ओ. ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५२ ☆ निर्माता : सैम्युएल गोल्डविन ☆ निर्देशक : चार्ल्स विडोर ☆ प्रमुख कलाकार : डैनी के/ फार्ले ग्रेन्जर/ जीजी जीन मेअरी/ जो वाल्श ☆ रंगीन ☆ अवधि : ११२ मिनट।

हाउस ऑव वैक्स

बेहद डरावनी-सनसनीखेज इस फिल्म ने प्रदर्शन पर हाहाकार मचाया था। गैस-लाइट दौर के लंदन शहर में मोम के पुतलों के अजायबघर के आग के दृश्य इतने सजीव रहे हैं, कि दर्शकों ने इस फिल्म को आशा के विपरीत सफलता दिलाई। विनसेन्ट प्राइस का खलनायक यादगार प्रस्तुति है। उसके सहायक के रूप में गूँगा चार्ल्स ब्रान्सन भी प्रभावित करता है। श्रेष्ठ फोटोग्राफी, मौलिक कथानक एवं कलात्मक सेट्स इस फिल्म को दर्शनीय बनाते हैं। इस फिल्म का त्रिमिती (थ्री-डी) संस्करण भी बना था। दोनों संस्करणों ने बॉक्स आफिस पर सफलता अर्जित की।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५३ ☆ निर्माता : बायरन फाय ☆ निर्देशक : आन्द्रे डी टाट ☆ प्रमुख कलाकार : विनसेन्ट प्राइस/ फ्रेन्के लवज्वाय/ करोलिन जोनस/ चार्ल्स ब्रान्सन/ ☆ रंगीन ☆ अवधि : ९० मिनट ☆ त्रिमिती (थ्रीडी) संस्करण में भी उपलब्ध।

ग्रेगरी पेक

रोमन हॉली डे

रोमन हॉली डे फिल्म मन मस्तिष्क को तरोताजा कर देने वाली फिल्म है। कथानक परीकथानुमा है। किंतु समयकाल आज का है। गति से चलता कथाक्रम, फोटोग्राफी, कॉमेडी के तत्व और ग्रेगरी पेक। आर्द्रे हेपबर्न की अभिनय निपुणता से यह फिल्म एक क्लासिक बन गई है। एक राजकन्या विद्रोह कर भाग निकलती है। पत्रकार ग्रेगरी पेक को मिलती है। और, रोम शहर में छुट्टी बिताती है। अंततः कर्तव्यबोध से वापस राजमहल पहुँच जाती है,उन सारी यादों को समेटकर। बेहद मनोरंजक प्रसंग फिल्म में हैं। चुस्त पटकथा। निर्देशन- कुशलता ने इस फिल्म को यादगार बनाया है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : पैरामाऊन्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५३ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : विलियम वाइलर ☆ प्रमुख कलाकार : ग्रेगरी पेक/ आद्रे हेपबर्न/ एडी अलबर्ट/ ☆ श्वेत श्याम ☆ अवधि : ११८ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन १०। ऑस्कर पुरस्कार अर्जित ३।

नियाग्रा

विश्वविख्यात नियाग्रा प्रपात की पृष्ठभूमि की इस फिल्म में जलप्रपात नियाग्रा दर्शनीय है। मर्लिन मनरो भी। लालसा, हत्या की कहानी है। सनसनीखेज है। जोसेफ काटन का खलनायक लाजवाब है। हनीमून के लिए आई एक युगल जोड़ी की कथा इस हत्या के षड्यंत्र से अनायास जुड़ती है। क्लाइमेक्स के नियाग्रा प्रपात के प्रवाहों के दृश्य तो बहुत ही जानदार हैं। फोटोग्राफी कमाल की है। प्रपात को और मर्लिन मनरो की सुंदरता को फिल्म उभारती है। मर्लिन मनरो की गंभीर भूमिका वाली फिल्म 'बस-स्टॉप' मसखरी भूमिका वाली 'सम लाइक इट हॉट' और 'सेवन इयर इच' से, इस फिल्म की भूमिका एकदम अलग है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ट्वेंटीएथ सेंचुरी फॉक्स ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५३ ☆ निर्माता : चार्ल्स ब्रैक्रेटे ☆ निर्देशक : हेनरी हैथवे ☆ प्रमुख कलाकार : मर्लिन मनरो/ जोसेफ कॉटन/ जीन

पचास के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. द टेन कमान्डमेंट्स : १९५६
२. लेडी एंड द ट्रेम्प : १९५५
३. पीटर पेन : १९५३
४. बेनहर : १९५९
५. अराउन्ड द वर्ल्ड इन ऐटी डेज : १९५६
६. स्लीपिंग ब्यूटी : १९५९
७. साउथ पेसीफिक : १९५८
८. द रोब : १९५३
९. ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई : १९५७
१०. दिस इज सिनेरामा : १९५२

पीटर्स/ कैसे अँडमस् ☆ रंगीन ☆ अवधि : ८९ मिनट।

ट्रबल इन स्टोअर

चार्ली चैपलिन, जेरी लुईस, डैनी के आदि मसखरों के स्तर की लोकप्रियता ब्रितानी मसखरे नार्मन विजडम को भी मिली है। ट्रबल इन स्टोअर नार्मन की पहली फिल्म है। खूब धमाल मचाई है नार्मन ने इस फिल्म में। एक बड़े डिपार्टमेंटल स्टोअर में साधारण कर्मचारी नार्मन अनायास बॉस से भिड़ता है। मार्गारेट रुदरफोर्ड उठाईगीर है। मार्गारेट के भी कई मजेदार प्रसंग इस फिल्म में हैं। हँसा-हँसाकर लोट-पोट कर देने की क्षमता नार्मन विजडम में रही है। किसी समय विजडम की कई कॉमेडी फिल्में भारत में प्रदर्शित हुई हैं और लोकप्रिय भी! भारत में दूरदर्शन पर भी ये फिल्में प्रदर्शित हुई हैं। नार्मन विजडम की एक ओर मजेदार 'स्लैपस्टिक' कॉमेडी है- 'आन द बीट' (१९६२)।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : टू सिटीज ☆ यू.के. ☆ वर्ष : १९५३ ☆ निर्माता : मॉरिस कौवान ☆ निर्देशक : जॉन पैडी कारस्ट्रेअर्स ☆ प्रमुख कलाकार : नार्मन विजडम/ मार्गारेट रुदरफोर्ड/ माईरा लिस्टर। ☆ श्वेत श्याम ☆ अवधि ८५ मिनट

ट्वेंटी थाउजण्ड लीगस् अण्डर द सी

वाल्ट डिजने की यह फिल्म -एक तो लाइव-एक्शन साहस गाथा है। दूसरा फिल्मांकन की बेहतरीन मिसाल है। 'कथ्य' को आश्चर्यजनक रूप से पर्दे पर प्रस्तुत किया गया है। इस फिल्म के लिए डिजने ने पैसा पानी की तरह बहाकर ऐसी फिल्म निर्मित की है, जो सदाबहार है। ज्यूलवर्न के विख्यात विज्ञान-उपन्यास पर कथानक आधारित है। 'नॉटिलस' पनडुब्बी की आंतरिक सजावट तो अविश्वसनीय रूप से कलात्मक है और 'आक्टोपस (अष्टपाद प्राणी) के साथ भिड़ंत के सारे दृश्य श्रेष्ठतम हैं। जेम्स मैसन की कैप्टन नेमो की भूमिका अविस्मरणीय है। फिल्म में कोई महिला चरित्र (प्रमुखता से) नहीं है। सागर की साहस गाथा है।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वाल्ट डिजने ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५४ ☆ निर्माता : वाल्ट डिजने ☆ निर्देशक : रिचर्ड फ्लेचर ☆ प्रमुख कलाकार : कर्क डगलस/ जेम्स मैसन/ पाल लुकास/ पीटर लॉरी/ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२० मिनट/ पुरस्कार : नामांकन ३, ऑस्कर अर्जित २।

कोवादिस

'कोवादिस' सभी दृष्टि से भव्य फिल्म रही है। पीटर उस्तिनोव की रोम के बादशाह नीरो



द टेन कमाण्डमेंट्स

की भूमिका अविस्मरणीय है। रॉबर्ट टेलर की रोमन सेनानी की भूमिका, डेबारा केर की साधारण (किंतु असाधारण रूप से सुंदर) ईसाई विश्वास की बाला भी आकर्षक है। रोम जलने के दृश्य प्रभावी हैं। हिंसक पृष्ठभूमि में नाजुक प्रेमकथा की बुनावट आकर्षक है। क्लाइमेक्स के दृश्यों में रोमन सर्कस में शेरों का ईसाइयों पर आक्रमण, जिंदा जलाए जाने के दृश्य 'सजीव' हैं। इस फिल्म को भारत के दर्शकों ने बॉक्स आफिस पर खूब लोकप्रियता दिलाई है।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५१ ☆ निर्माता : सैम जिम्बालिस्ट ☆ निर्देशक : मरविन ली रॉय ☆ प्रमुख कलाकार : रॉबर्ट टेलर/ डेबारा केर/ पीटर उस्तिनोव/ लीओ जीन ☆ रंगीन ☆ अवधि : १७१ मिनट ☆ नामांकन ७ ऑस्कर। अर्जित कोई नहीं।

रॉक अराऊण्ड द क्लॉक

जब रॉक म्युजिक जोरों पर था। 'रॉक अराऊण्ड द क्लॉक' में रॉक ग्रुप्स नृत्यकारों की कई टोलियाँ रॉक म्युजिक को प्रस्तुत करती हैं। एक बैण्ड का मैनेजर हैले कॉमेट्स को पहाड़ियों पर खोजता है। पूरे देश में डांसिंग (रॉक एन रोल नृत्य) कैसे घर- घर में प्रवेश करता है इसकी कहानी फिल्म में है। द कॉमेट्स के साथ लिसा गे एक नृत्यकार के रूप में इस फिल्म से उभरी है। यह फिल्म जहाँ- जहाँ भी प्रदर्शित हुई थी, सारे समय तक पूरा सिनेमागृह नृत्यमंच बन जाता था। पूरी फिल्म में सवा घंटे तक एक के बाद एक नृत्य- संगीत का सिलसिला चलता है। 'रॉक- रॉक- रॉक- रॉक एवरीबडी' पर हिंदी फिल्मों में 'लाल- लाल- गाल जान पे है...' जैसे कई गीत रचे गए हैं।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : क्लोवर, कोलम्बिया ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५६ ☆ निर्माता : सैम काट्जमन ☆ निर्देशक : फ्रेड एफ. सीअर्स ☆ प्रमुख कलाकार : बिल हैल एवं द कॉमेट्स/ द प्लैटर्स/ टोनी मार्टिनेज/ उसका बैंड / फ्रेडी बेल एवं उसके बेलब्वाईज/ अँलन फ्रीड/ लिसा गे ☆ श्वेत- श्याम ☆ अवधि : ७६ मिनट।

द टेन कमाण्डमेन्ट्स

भारत में सैमसन एंड डिलाइला फिल्म के समान ही द टेन कमाण्डमेन्ट्स फिल्म को भी दर्शकों ने पसंद किया है। डिमाइल ने पहले १९२३ में आंशिक रंगीन तथा श्वेत- श्याम फिल्म इसी विषय पर, इसी शीर्षक से बनाई थी। इसमें अतीत एवं वर्तमान के कथानकों का मिश्रण था। १९५६ की फिल्म मोजेस की कहानी है। डिमाइल ने १९२३ की फिल्म में बाद में आवाज भी जोड़ दी। पुराना संस्करण खूब चला था। किन्तु १९५६ का संस्करण तो अनुपमेय है। विस्टाविज प्रक्रिया में दृश्यों में गहराई आई है। श्रेष्ठतम कलाकारों का जमघट/ श्रेष्ठ कास्ट्यूम्स/ भव्य सेट्स/ तकनीकी कुशलता (खास कर समुद्र में राह बनाना) और हजारों एक्स्ट्राज वाले मॉब सीन्स। फिल्म के कई छोटे-छोटे प्रसंग भी कलात्मक रूप से पर्दे पर आए हैं।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : पैरामाऊन्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५६ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : सेसिल बी डिमाइल ☆ प्रमुख कलाकार : चार्लटन हेस्टन/ युल ब्राइनर/ अँने बैंकस्टर/ एडवर्ड जी. रॉबिनसन/ यॉनी डी कार्लो ☆ रंगीन ☆ अवधि : २१९ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ७। ऑस्कर पुरस्कार अर्जित एक।

विटनेस फार द प्रॉसिक्युशन

अगाथा क्रिस्ती के नाटक पर आधारित यह फिल्म हत्या के कथित मुकदमे के कथानक सनसनीखेज तरीके से प्रस्तुत करती है। तीन

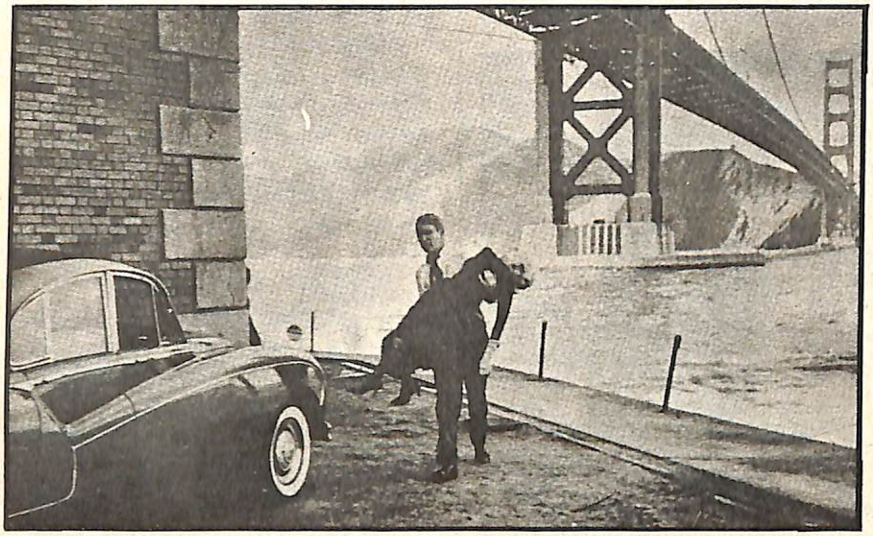
दिग्गज कलाकारों ने परिष्कृत अदायगी की है। (पॉवर, डीट्रिच एवं सबसे सरताज लॉटन!), निर्देशन सधा हुआ है। फिल्म देखना एक अनुभव हो जाता है। एक रईस विधवा की हत्या होती है। हत्यारा होशियारी से बच जाता है। वकील अकलमंदी से उसे बचा लेता है। कहानी का सारांश प्रकट नहीं करना ही उचित होगा। ...लॉटन की वकील की भूमिका अविस्मरणीय है। सनसनीखेज कोर्ट- रूम ड्रामे में कॉमेडी के पुट हैं। क्लाइमेक्स यही संदेश देता है कि इंसानी न्याय प्रणाली के ऊपर भी एक और प्रणाली है जो न्याय करती है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण: यूनाइटेड आर्टिस्ट ☆ यू.एस. ☆ निर्माता: आर्थर हॉर्नब्लो ☆ बिली वाइल्डर ☆ प्रमुख कलाकार: टायरोन/ पॉवर/ मार्लीन डीट्रिच/ चार्ल्स लॉटन/ एल्सा लैन्चेस्टर ☆ श्वेत- श्याम ☆ अवधि: ११४ मिनट।

सेसु हायाकावा ☆ रंगीन ☆ अवधि: १६१ मिनट ☆ पुरस्कार: नामांकन ८, ऑस्कर अर्जित ७।

वर्टिगो

हिचकॉक टच की प्रतिनिधि फिल्म विश्व की सर्वश्रेष्ठ पच्चीस फिल्मों में यह सम्मिलित है। पुलिस ऑफिसर (स्टुअर्ट) अपराधी का पीछा करते समय अपने साथी की ऊँचाई से गिरकर मौत देखता है, तो स्वयं ऊँचाई से डरने लगता है। अक्रोफोबिया का शिकार हो जाता है। पुराना मित्र उसे अपनी पत्नी की विचित्र आदतों के कारण उस पर नजर रखने के काम के प्रति उत्प्रेरित करने में सफल हो जाता है। और, स्टुअर्ट के आँखों के सामने मित्र की पत्नी छलांग लगाकर आत्महत्या (?) कर लेती है। ...किन्तु उसे वह फिर से बाजार में दिख जाती हैं। हिचकॉक की विशिष्ट शैली में बर्नार्ड हेरमन की



अल्फ्रेड हिचकॉक की 'वर्टिगो'

धुनों की पृष्ठभूमि में हत्या का एक भयावह षड्यंत्र प्रकट होता है। स्टुअर्ट सहन ही नहीं कर पाता कि उसे मोहरा बनाया गया था। और, एक श्रेष्ठ फिल्म बन जाती है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण: पैरामाऊन्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष: १९५८ ☆ निर्माता एवं निर्देशक: अल्फ्रेड हिचकॉक ☆ प्रमुख कलाकार: जेम्स स्टुअर्ट/ किम नोवाक/ बार्बारा बेल गेडेस/ टॉम हेलमोर। ☆ रंगीन ☆ अवधि: १२६ मिनट ☆ संगीत: बर्नार्ड हेरमन।

द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई

सभी दृष्टि से सूझबूझ से बनी, दर्शकों को बाँधकर रखने वाली यह फिल्म मानवीय पहलुओं को श्रेष्ठतम रूप में प्रस्तुत करती है। सीलोन की सुंदर पृष्ठभूमि का फिल्मांकन प्रस्तुत करने वाली यह फिल्म युद्ध की निरर्थकता स्पष्ट करती है। युद्ध बंदियों से काम करवा कर जापानी सेनाधिकारी एक ब्रिज बनवाना चाहते हैं। खूब कष्ट देते हैं। अंततः जब युद्ध बंदियों का नेता (गिनिज) समझाता है तब ब्रिज बनाया भी जाता है। किन्तु अंत कुछ और ही होता है। युद्ध बंदियों के द्वारा काम करते जाने के वक्त बजाई जाने वाली सीटी की धुन भारत में खूब लोकप्रिय हुई थी। ढेर सारे ऑस्कर पुरस्कारों से सम्मानित यह फिल्म कालजयी है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण: होराइजन ☆ यू.के. ☆ वर्ष: १९५७ ☆ निर्माता: सैम स्पाइगल ☆ निर्देशक: डेविड लीन ☆ प्रमुख कलाकार: विलियम होल्डन/ अलेग गिनिज/ जैक हॉकिन्स/

नार्थ बाय नार्थ वेस्ट

नार्थ बाय नार्थ वेस्ट हिचकॉक की सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्म है। हिचकॉक शैली के सारे तत्व इस फिल्म में हैं। हिचकॉक ने युनाइटेड नेशंस की न्यूयॉर्क की बिल्डिंग्स से लेकर माऊन्ट रशमोर मान्युमेन्ट तक, तमाम 'लोकेशंस' इतनी कुशलता से फिल्मांकन के लिए लेकर एक अविस्मरणीय फिल्म बनाई है। एक साधारण व्यक्ति (ग्रान्ट) एक अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रकारी गिरोह में गलतफहमी से फँसता है। गिरोह का सरगना जेम्स मैसन है। कहानी दिलचस्प एवं अकल्पनीय मोड़ लेती है। एक के बाद एक विशिष्ठ दृश्य संयोजन पर्दे पर आते हैं। दवाई छिड़कने वाले हवाई जहाज की मार का दृश्यांकन तो एक 'विजुअल' ट्रीट है कि दर्शक तृप्त हो जाते हैं। फिल्म में हास्य- व्यंग्य के पुट भी हैं। असहनीय संस्पेस भी।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण: एम.जी-एम ☆ यू.के. ☆ वर्ष: १९५९ ☆ निर्माता एवं निर्देशक: अल्फ्रेड हिचकॉक ☆ प्रमुख कलाकार: कैरी ग्रान्ट/ इवा मारिआ सेंट/ जेम्स मैसन/ जेसी रायस लैण्डिस आदि ☆ संगीत: बर्नार्ड हेरमन ☆ रंगीन ☆ अवधि: १३६ मिनट।

हिरोशिमा मॉन आमोर

फिल्म का कथानक है- एक फ्रांसीसी अभिनेत्री फिल्म निर्माण के सिलसिले में जापान आती है। यहाँ उसका प्रेम एक जापानी से होता है। इस प्रणय प्रसंग के दौरान वह मृत्यु और पीड़ा की विभीषिका झेलते हुए इस जापानी शहर का वर्तमान देखती है जो भयावह भूतकाल के अभिशाप से ग्रस्त है। उसे अपने उस पहले प्यार की मधुर स्मृति भी झकझोरती है, जो स्वदेश में तब हुआ था, जबकि महायुद्ध जारी था। उसका जर्मन प्रेमी भी युद्ध में मारा गया था। महायुद्ध की विभीषिका की पृष्ठभूमि में निजी भावनाओं का सशक्त प्रदर्शन इस फिल्म की विशेषता है। हिरोशिमा को लेकर साहित्यिक सिनेमा के निर्माण की दिशा में अभिनव प्रयोग एवं संभावनाओं के द्वार यह फिल्म खोलती है। लिखित दस्तावेज की मौलिकता भी इसमें है। ध्वनि/ प्रतिबिम्ब तथा संगीत के प्रयोग ने इस फिल्म को कालजयी बना दिया है। हिरोशिमा पर अणु बम गिराए जाने के बाद इस विषय पर जितनी भी फिल्में बनी हैं, उनमें यह पाठ्य-पुस्तक जैसी मानी जाती है।

☆ फ्रांस एवं जापान द्वारा १९५९ में निर्मित ☆ अवधि: ९० मिनट ☆ निर्देशक: एलन रेसनायस ☆ निर्माता: आर्गोस फिल्म्स ☆ कलाकार: एमेन्युएल रिवा/ इजी ओकाड़ा/ बर्नार्ड फ्रेसन/ स्टेला दासास।

बेनहर

हॉलीवुड की सर्वाधिक प्रतिष्ठित, पुरस्कृत, भव्य ब्लॉक बस्टर फिल्म यही है। रोम के सिने-सिटा स्टुडियो में दस माह में निर्मित इस फिल्म में ३०० सेट्स खड़े किए गए थे। विशालतम सेट। 'रथों की शर्त' का स्टेडियम रहा। इस शर्त का पर्दे पर ४० मिनट का दृश्यांकन अद्भुत है। मानवीय पहलुओं से ओतप्रोत जुड़ी बेनहर की कहानी मन को छू लेती है। महानतम फिल्म को सर्वाधिक 'ग्यारह' ऑस्कर प्राप्त हुए थे, जो एक कीर्तिमान है। बेनहर (हेस्टन) एवं मेसाला (ब्वायड) की अदायगी काबिले तारीफ है। पूरी फिल्म ही

इतनी रोचक है कि फिल्म की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। विश्व भर में इस फिल्म को करोड़ों दर्शकों ने बड़े चाव से बार- बार देखा है। पर्दे पर ईसा की प्रस्तुति दिल को छूने वाली है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी. एम ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९५९ ☆ निर्माता : सैम जिम्बालिस्ट ☆ निर्देशक : विलियम वाइलर ☆ संगीत : मिकलास रोजा ☆ प्रमुख कलाकार : चार्लटन हेस्टन/ जैक हॉकिन्स/ स्टीफन बायड/ हया हयारीत/ ह्यूज ग्रिफिथ/ सैम जैफा। ☆ रंगीन ☆ अवधि : २१२ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन १२ ऑस्कर। अर्जित : ११।

बेलाड ऑव ए सोल्जर

युवा सिपाही अल्योशा मैडल स्वीकार नहीं करता। उसकी बजाए रणभूमि से छुट्टी लेकर अपनी माँ से मिलने निकल पड़ता है। अपनी रेल यात्रा, ट्रक यात्रा और पदयात्रा के दौरान वह कई लोगों से मिलता है। ये सभी युद्ध से पीड़ित होते हैं। अपंग सैनिक। हँसोड़ संत्री। वफादार पत्नियाँ। बेवफा पत्नियाँ। उसे एक लड़की भी मिलती है जिससे वह प्रेम करने लगता है। चुकरोव का निर्देशन सहज और निष्कपट है। तकनीकी दृष्टि से यह फिल्म उत्तम बनी है। सोवियत संघ की यह पहली फिल्म थी जो कि किसी अमेरिकन फिल्म समारोह (१९६०) में शामिल हुई थी। इसे पहला पुरस्कार मिला था। इसी साल इसने कॉन में भी एक पुरस्कार जीता था।

☆ सोवियत संघ ☆ वर्ष :१९५९ ☆ अवधि :९० मिनट ☆ निर्माता- मॉस फिल्म ☆ निर्देशक : ग्रिगोरी चुकरोव ☆ कलाकार : ब्लादिमीर इवाशेव/ अंतोनिया/ मैक्सिमोवा/ शेर्मा प्रोकोरेंको।

सायको

सायको हिचकॉक के कैरियर की सर्वाधिक विवादास्पद, किन्तु विख्यात प्रस्तुति है। इस फिल्म में वीभत्सता है। 'ग्राफिक' हिंसा है। अपवादात्मक मानसिकता का प्रदर्शन है और कथानक यहाँ- वहाँ भटकता रहता है। कई आरोप इस फिल्म के विरोध में कहे गए। किन्तु 'सायको' एक विलक्षण प्रभावशाली प्रस्तुति सिद्ध हुई है। हिचकॉक की दर्शकों को 'मैनुप्युलेट' करने की अपार क्षमता इस फिल्म में उजागर हुई है। भारत में यह फिल्म बड़े शहरों में, प्रबुद्ध दर्शकों में लोकप्रिय रही। हिचकॉक की शैली का प्रमाण है यह फिल्म और खासकर पर्दे पर दर्शाया ४५ सेकंड का 'हत्या' का प्रसंग, जिसे फिल्मांकित करने में सात दिन लग गए थे। इस फिल्म के प्रदर्शन पर भारत में दर्शकों को भी अनुशासित रहना पड़ा था। फिल्म शुरू हो जाने के बाद किसी को थिएटर में प्रवेश नहीं मिलता था, दर्शक पूरी फिल्म सीट पर तने रहकर देखते रहते थे। इसकी चीख सुनकर कई कमजोर दिल दर्शक सिनेमा हॉल में बेहोश हो जाते थे।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : पैरामाउन्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६० ☆ निर्माता एवं निर्देशक : अल्फ्रेड हिचकॉक ☆ प्रमुख कलाकार : अन्थोनी पार्किन्स जेनेट ली/ वेरा माइल्स/ जॉन गाविन। ☆श्वेत- श्याम ☆अवधि १०९ मिनट।

ला डोल्सा विटा

मार्सिलो एक गप्पबाज पत्रकार है, जो गंभीर लेखक बनने की इच्छा पाले हुए है। अपनी पत्नी की आत्महत्या का प्रयास, एक अमेरिकन फिल्म स्टार, उसके पिता की भेंट आदि बातों से यह तो पता चलता है कि उसके जीवन में रोमांच तो है, मगर सच्चे संबंध और व्यक्तिगत संतोष नहीं है। इस फिल्म ने काफी सनसनी मचाई थी। अपने फिल्मांकन के दौरान यह स्कैंडलों से घिरी रही। इसमें रोमन समाज के बारे में कुछ आपत्तिजनक बातें थीं। वेटिकन सिटी ने भी इसका विरोध किया। संयुक्त राज्य में इस फिल्म को सफलता मिली थी। ब्रिटेन में इसका डब किया संस्करण दिखाया गया था।

☆ इटली ☆ फ्रांस ☆ वर्ष : १९६० ☆ टोटल स्कोप ☆ अवधि : १८० मिनट ☆ निर्माता : रायमा (इटली)/ पाथे कॉन्सोर्टियम सिनेमा (फ्रांस) ☆ निर्देशक : फेडरिको फैलिनी ☆ कलाकार : मार्सिलो मैइस्ट्रोइयानी/ अनोउक ऐमी/ यूबोन फर्नाक्स/ अनिता स्क्बर्ग।

द गन्स ऑव नेवरोन

द गन्स ऑव नेवरोन एक सफलतम युद्ध फिल्म है। बॉक्स ऑफिस पर पूरी दुनिया भर में इस फिल्म ने धूम मचाई थी। अलिस्टेअर मैकलिन के उपन्यास पर आधारित इस फिल्म में एक टोली जर्मनों के किले में घुसकर वहाँ स्थित दो विशालकाय तोपों को नष्ट करती है। इस फिल्म के निर्माण में अपार धन/ परिश्रम/ आस्था लगी। समस्याएँ आई, किन्तु अंततः फिल्म 'विजयेता' सिद्ध हुई। शुरूआत से लेकर अंत तक फिल्म विलक्षण गति से चलती है। पहाड़ी चढ़ने एवं अंतिम क्लाइमेक्स के दृश्यों का फिल्मांकन तो श्रेष्ठतम है। सारे सितारे विख्यात हैं। स्पेशल इफेक्ट्स, जबर्दस्त है। कहानी दिलचस्प है। पूरी फिल्म ऐसा विलक्षण प्रभाव छोड़ती है कि कुछ अभूतपूर्व देखने का अहसास होता है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कोलम्बिया ☆ यू.के. ☆ वर्ष : १९६१ ☆ निर्माता सोसेल बी. फोर्ड ☆ निर्देशक : ली जे थाम्प्सन ☆ प्रमुख कलाकार : ग्रेगरी पेक/ डेविड निवेन/ अन्थानी क्विन/ स्टैनले बेकर/ अन्यानी क्वेल/ जेम्स डैरेन/ हरिना पापास एवं गिआं स्काला ☆रंगीन ☆अवधि : १५७ मिनट ☆पुरस्कार नामांकन : ७, 'ऑस्कर।' अर्जित एक।

गन्स ऑव नेवरोन



कम सेप्टेंबर

भारत में जब भी बैण्ड पर लोग थिरकते हैं (अधिकतर बारातों में या युवा उत्सवों में) तब 'कम सेप्टेंबर' की धुन पर ही सब थिरकते हैं। 'कम सेप्टेंबर' एक मजेदार कॉमेडी है। नृत्य-गीतों से भरपूर। एक अमेरिकी रईस व्यवसायी (हडसन) लगभग सेप्टेंबर मास में छुट्टियाँ बिताने इटली के अपने 'विला' पर आता है। उसकी अनुमति बिना उसका मैनेजर शेष समय में इस विला को होटल बना देता है। लोलोब्रिगिडा प्रेयसी के रूप में 'सेक्स अपील' के कारण प्रभावित करती है। बॉबी डारीन जैसे श्रेष्ठ गायक ने गीत गाए हैं, किन्तु मूल कॉमेडी में वे खो गए हैं। 'सिच्युएशनल' कॉमेडी का बड़ा सुंदर प्रतिमान है। भारत में इस प्रकार की एक और फिल्म शिले मॅकलेन की 'व्हाट ए वे टु गो' भी दर्शकों ने पसंद की थी।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : यूनिवर्सल ☆ यू.एस.

सम्पूर्ण साक्षरता को

किसी भी देश, समाज और व्यक्ति की उन्नति के लिए साक्षरता एक अनिवार्य शर्त है। साक्षरता वर्तमान युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मध्यप्रदेश में भी शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ किया जाना है, क्योंकि प्रदेश में 43.5 प्रतिशत आबादी ही साक्षर है जो राष्ट्रीय औसत 52 प्रतिशत से काफी कम है। महिला साक्षरता में प्रदेश का 28 प्रतिशत का औसत 39.4 प्रतिशत के राष्ट्रीय औसत से बहुत पीछे है। प्रदेश में 6 से 11 वर्ष की उम्र के कोई 30.4 प्रतिशत बच्चे प्राथमिक शालाओं में दर्ज नहीं हैं।

इस स्थिति में संतोषजनक बदलाव तभी संभव है जब 'स्कूल चलो' का जज्बा हर आदमी के दिल में पैदा हो। मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह का मानना है कि प्रदेश की तरक्की के लिए मानव संसाधन के इस दुरुपयोग को रोका जाना बहुत जरूरी है। इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए मध्यप्रदेश सरकार ने सर्वोच्च प्राथमिकता के क्षेत्रों में प्रारंभ किए गए सात राजीव गाँधी मिशनों में राजीव गाँधी शिक्षा मिशन को शामिल किया है।

राजीव गाँधी शिक्षा मिशन का उद्देश्य हर बच्चे को प्राथमिक शिक्षा की सुविधा उपलब्ध कराना है। इसके साथ ही हर बच्चा कम से कम पाँच साल तक पढ़ सके, प्रौढ़ साक्षरता और बालिकाओं तथा अनुसूचित जाति जनजाति के बच्चों पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाए, सीखने-सिखाने की क्रिया रोचक बने, शिक्षकों के कौशल को बढ़ाया जाए और उनकी सहभागिता में वृद्धि हो, शिक्षा के लोक व्यापीकरण की सभी कार्यवाहियाँ समन्वित रूप से चलें, शिक्षातंत्र स्थानीय समुदाय के प्रति जवाबदेह बने, शिक्षा के प्रशासन और प्रबंध में सुधार हो, अध्ययन, नवाचारों और प्रयोगों को प्रोत्साहन मिले आदि बिन्दु भी मिशन के उद्देश्यों में शामिल किए गए हैं।

प्रदेश में चल रहे जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम, सम्पूर्ण साक्षरता कार्यक्रम और औपचारिकेत्तर शिक्षा कार्यक्रम को समन्वित रूप से चलाने के लिए यह मिशन एक कारगर माध्यम सिद्ध होगा। सबके लिए शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से इस मिशन के कार्यों में समाज, शिक्षक वर्ग तथा स्वयं सेवी संस्थाओं का सहयोग प्राप्त कर इसे जन-आंदोलन का रूप दिया जा रहा है।

प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के तहत प्रदेश में शिक्षा की दृष्टि से पिछड़े 19 जिलों में जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम लागू किया गया है। इस कार्यक्रम के लिए भारत शासन द्वारा दस करोड़ रुपयों की स्वीकृति दी गई है। इस कार्यक्रम की अवधि सात वर्ष निर्धारित है। कार्यक्रम के तहत प्रथम वर्ष की गतिविधियाँ चल रही हैं। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत गठित प्रथम संयुक्त निरीक्षण दल ने प्रदेश में अब तक किए गए कार्यों की प्रशंसा की है।

कार्यक्रम के तहत सभी जिलों में वातावरण निर्माण का कार्य पूरी गति से जारी है। शिक्षक समाख्या शैली में प्राथमिक शाला के शिक्षकों को प्रेरित किया गया है। शालाओं को आकर्षक बनाने और शिक्षण पद्धति को बाल केन्द्रित बनाने के लिए विशेष उन्मुखीकरण कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। जनसमुदाय की अधिकाधिक भागीदारी और ग्राम शिक्षा समिति के समन्वय से ग्राम स्तर पर शिक्षा की योजनाएँ तैयार की गई हैं। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए भी कारगर प्रयास किए जा रहे हैं। इस सिलसिले में एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर बालिका शिक्षा में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारणों को अंकित किया गया और इनके निवारण के लिए उचित रणनीति भी तैयार की गई। जिला योजनाओं में इस रणनीति का आवश्यकतानुसार समावेश किया जाएगा। बालिका शिक्षा में सुधार के लिए प्रदेश के तीन जिलों के एक-एक विकासखंड में प्रायोगिक रूप से महिला समाख्या कार्यक्रम संचालित करने का निर्णय भी लिया गया है।

वास्तव में सम्पूर्ण साक्षरता अभियान और प्राथमिक शिक्षा के लोकव्यापीकरण के कार्य एक दूसरे के पूरक हैं और इनमें परस्पर समन्वय से कार्य करना आवश्यक है। इसी दृष्टि से संपूर्ण साक्षरता अभियान भी इस वर्ष से स्कूल शिक्षा विभाग के अंतर्गत लाया गया है। प्रदेश के सभी 45 जिलों में संपूर्ण साक्षरता परियोजनाएँ स्वीकृत हो गई हैं। अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए राज्य स्तरीय मिशन प्राधिकरण का गठन किया गया है। प्रदेश में साक्षरता के लिए निर्धारित 15 से 35 वर्ष आयु समूह के लगभग 110 लाख निरक्षरों को वर्ष 1997 के अंत तक साक्षर बनाने का लक्ष्य है। सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के क्रियान्वयन के लिए 2865.80 लाख रुपयों की राशि उपलब्ध की गई है। इसमें से 632.04 लाख रु. राज्य शासन द्वारा दिए गए हैं।

प्रदेश के 8 जिलों में पठन-पाठन का कार्य पूर्ण कर लिया गया है। इन जिलों में अब उत्तर साक्षरता अभियान संचालित है। प्रदेश के 13 जिलों में पठन-पाठन का कार्य प्रगति पर है। शेष जिलों में पठन-पाठन के पूर्व की गतिविधियाँ संचालित हैं। नव साक्षरों को उत्तर साक्षरता एवं सतत् शिक्षा अभियान से जोड़े रखने के उद्देश्य से 2818 जन शिक्षण निलियम संचालित किए जा रहे हैं।

समर्पित एक मिशन

प्रदेश में त्रिस्तरीय पंचायतीराज की स्थापना के बाद स्कूल शिक्षा के संबंध में प्रथम चरण में विभिन्न अधिकार ग्राम पंचायतों, जनपद पंचायतों और जिला पंचायतों को सौंपे गए हैं। इनमें विभाग के अधीन चल रहे सभी स्कूलों का नियंत्रण जनपद पंचायतों को सौंपा जाना, नवीन स्कूलों की स्थापना, शिक्षा कर्मियों की नियुक्ति तथा विभिन्न योजनाओं के संचालन का उत्तरदायित्व शामिल है। स्कूल शिक्षा में समाज की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रदेश के प्रत्येक गाँव में ग्राम शिक्षा समिति का गठन किया गया है। शाला विकास समिति को समाप्त कर उसके सारे अधिकार एवं कर्त्तव्य ग्राम शिक्षा समिति को सौंपे गए हैं। समिति की गतिविधियों को बहुआयामी और प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों की उपस्थिति, शालाओं के नियंत्रण एवं पर्यवेक्षण, शाला में प्रवेश योग्य आयु वर्ग के बच्चों को शालाओं में दर्ज कराने और बीच में ही शिक्षा छोड़ने की प्रवृत्ति को नियंत्रित करने संबंधी सभी अधिकार प्रदान किए गए हैं।

शिक्षकों को सशक्त बनाने और अपने व्यवसाय के प्रति आदर का भाव बढ़ाने की दृष्टि से प्रदेश के पाँच जिलों में यूनिसेफ की सहायता से संचालित शिक्षक समाख्या योजना के उत्साहवर्धक परिणाम मिले हैं। इन्हें देखते हुए प्रदेश के सभी जिलों में शिक्षा समाख्या योजना मंजूर की गई है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए शिक्षकों के लिए संदर्शिका 'शिक्षक पोथी' का प्रकाशन किया गया है। अध्यापन के स्तर तथा छात्रों की शिक्षा के स्तर को सुधारने की दृष्टि से कक्षा पाँचवीं तथा आठवीं बोर्ड की परीक्षाएँ पुनः प्रारंभ की गई हैं। वर्ष 93-94 में इन परीक्षाओं को समाप्त कर देने से शिक्षा के क्षेत्र में गिरावट महसूस की गई थी।

स्कूलों में छात्रों के साथ होने वाली दुर्घटनाओं पर आर्थिक संबल प्रदान करने के लिए प्रदेश में विद्यार्थी सुरक्षा बीमा योजना प्रारंभ की गई है। इस योजना के तहत प्रत्येक छात्र को प्रतिवर्ष केवल 60 पैसे की अल्प राशि जमा करना होगी। दुर्घटना होने पर दुर्घटना के प्रकार के अनुसार प्रभावित छात्र को दस हजार रुपयों तक की धनराशि उपलब्ध हो सकेगी।

एक तरफ जहाँ बढ़ती हुई आबादी, निरक्षरों की संख्या में वृद्धि तथा बच्चों की शिक्षा का प्रश्न है, वहीं बच्चों के स्कूल नहीं जाने तथा मध्य में शिक्षा छोड़ देने और प्राथमिक शिक्षा के अप्रभावी होने जैसे सवाल भी हैं परंतु दूसरी ओर यदि राजीव गाँधी शिक्षा मिशन के उद्देश्यों पर दृष्टि डालें तो यह मिशन इन सभी प्रश्नों का समाधान है।

मिशन के तहत शिक्षा अभियान को एक जन आंदोलन का रूप देने के उद्देश्य से आगामी शिक्षा सत्र में स्कूल चलो अभियान प्रारंभ किया जा रहा है। इस अभियान की तैयारियाँ शुरू कर दी गई हैं। इस अभिनव अभियान के तहत स्कूल जाने योग्य सभी बच्चों को आगामी सत्र में स्कूलों में भर्ती किया जाएगा। यह अभियान इस मायने में अनूठा है कि इसे प्रदेश की हर पंचायत द्वारा अपनाया जाएगा। हर पंच द्वारा शिक्षक की मदद से अपने गाँव के हर उस बच्चे की पहचान की जाएगी, जिसे पहली कक्षा में दाखिला दिलाया जा सकता है। इन बच्चों के नाम जनपद पंचायतों को तथा जनपद पंचायत से जिला परिषद को भेजे जाएँगे। जिला स्तर पर विभिन्न लक्ष्यों को मिला कर जिला पंचायत अध्यक्ष व कलेक्टर द्वारा जिले का समन्वित लक्ष्य निर्धारित किया जाएगा। इसके बाद घर-घर जाकर अभिभावकों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने तथा पढ़ाई-लिखाई निरंतर जारी रखने के लिए प्रेरित किया जाएगा। बालिकाओं को स्कूलों में भर्ती पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इस अभियान के परिणामों को सार्वजनिक रूप से बताया जाएगा। इसके साथ ही अगले वर्ष यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि ये बच्चे दूसरी कक्षा में भर्ती हों। इससे बच्चों द्वारा बीच में ही शाला छोड़ देने की प्रवृत्ति पर रोक लगेगी और शिक्षा के लोकव्यापीकरण का उद्देश्य पूरा करने में मदद मिलेगी। पूर्व में चलाए गए सभी अभियान बच्चों को स्कूलों में भर्ती कराने तक ही सीमित थे लेकिन इस अभियान का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी है कि बच्चे पढ़ाई जारी रखें।

वैसे, विभिन्न जिलों में साक्षरता के प्रति जनरुझान निरंतर बढ़ रहा है और साक्षरता की समझ जड़ पा रही है। दुर्ग जिले के डोण्डी लौहारा विकासखंड के ग्राम पीपरखारा की 25 नवसाक्षर आदिवासी महिलाओं ने मत्स्य पालन सहकारी समिति का गठन कर साक्षरता की उपयोगिता प्रमाणित की है। यह समिति न केवल मध्यप्रदेश बल्कि समूचे हिन्दी भाषी राज्यों में आदिवासी महिलाओं की प्रथम सहकारी समिति है, जिसने मत्स्य उद्योग को अपने आर्थिक विकास का माध्यम बनाया है। बिलासपुर जिले के ग्राम ओंरापानी की उपलब्धि भी उल्लेखनीय है। निरक्षर आदिवासियों के इस गाँव में अभियान से प्रेरित होकर बिना किसी सरकारी मदद के केवल जनसहयोग से ही बच्चों के लिए स्कूल भवन का निर्माण किया है। निरक्षरता के विरुद्ध जंग में ये प्रयास एवं उपलब्धि मील का पत्थर है। इनसे आशा बंधती है कि राजीव गाँधी शिक्षा मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन से सभी को शिक्षा उपलब्ध कराने का स्वप्न साकार होगा।



जीना लोलोब्रिगिडा : गो नेकेड इन द वर्ल्ड

☆ वर्ष : १९६१ ☆ निर्माता : रॉबर्ट आर्थर ☆ निर्देशक : रॉबर्ट मुलीगन ☆ प्रमुख कलाकार : रॉक हडसन/ जीना लोलोब्रिगिडा/ सैण्ड्रा डी/ बॉबी डरीन/ वाल्टर स्लेजेक ☆ रंगीन ☆ अवधि : ११२ मिनट।

एल सिड

एल सिड एक युद्ध फिल्म है। ११ वीं शताब्दी के स्पैनिश योद्धा की कहानी है, जो मर कर भी 'जीता' है। और युद्ध जिता देता है। युद्ध के दृश्य विराट हैं। शायद ही ऐसे दृश्य किसी और फिल्म में आए हों। और इस फिल्म के 'ट्रायल बाय काम्बट' द्वंद्व युद्ध का फिल्मांकन 'बेनहर' फिल्म के 'रथों की शर्त' के दृश्यों से कम नहीं है। सोफिया लारेन तो फिल्म की शोभा है। स्पेनिश राज दरबार के किले के, सेना के दृश्य भव्य हैं। साहस/ दिलेरी/ पारस्परिक विश्वास/ प्रेम/ आस्था कई चिरंतन मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती यह फिल्म एक कालजयी है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : बॉन्स्टान ☆ यू.एस. स्पेन- इटली ☆ वर्ष : १९६१ ☆ निर्माता : सैम्युएल ब्रॉन्स्टान ☆ निर्देशक : अन्थोनी मान ☆ प्रमुख कलाकार : चार्ल्टन हेस्टन/ सोफिया लारेन/ राफ वेलान/ गैरी रेमण्ड/ जॉन फ्रेजर/ जिनिविव पेज ☆ रंगीन ☆ अवधि : १८० मिनट।

हटारी

हटारी पूरे परिवार के साथ बैठकर देखने की फिल्म है। बच्चों को तो यह फिल्म खूब भाती है। तांगान्यिका के जंगलों में, मैदानों पर गेंडे को पकड़ने वाले (और अन्य प्राणियों को भी) एवं प्राणी संग्रहालयों में भेजने वाले समूह के साहस की यह कथा है। इस फिल्म की 'बेबी एलिफन्ट वॉक' धुन तो भारत में खूब लोकप्रिय है। 'हटारी' के सितारे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हैं। वेन (अमेरिका), क्रुगर (जर्मनी) एवं ब्लेन (फ्रांस) विशेष प्रभावशाली हैं। रेड बटन्स कॉमेडी को पुट लाता है। भारत में 'हटारी', 'बुई आर फार हिपोपोटेमस', 'रोअर' आदि कई जंगली प्राणियों की, जंगल जीवन की साहस कथाओं पर बनी फिल्में विशेष आकर्षण रखती हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : पैरामाउन्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६२ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : होवार्ड हॉक ☆ प्रमुख कलाकार : जॉन वेन/ हार्डी क्रुगर/ एल्सा मार्टिनेली/ गेराल्ड ब्लेन/ रेड बटन्स ☆ रंगीन ☆ अवधि : १५९ मिनट।

डॉ. नो

बॉण्ड फिल्मों का 'अजूबा' समूचे विश्व में फैलाने वाली यह पहली ही फिल्म रही और इस फिल्म की चुस्ती ने, कथानक की गति ने, सुपर



चार्ल्टन हेस्टन : एल सिड (१९६१)

'सिक्रेट एजेंट' जेम्स बॉण्ड ने अपना रंग जमाना शुरू किया। बॉण्ड की बाद की फिल्में मूल कथानक से दूर जाती रहीं। तड़क-भड़क में श्रेष्ठतम छूती रही। केवल डॉ. नो एवं फ्राम रशिया विद लव में कथानक की पकड़ देखी जाती है। सीन कॉनरी के बॉण्ड ने एक कल्ट- फिगर पर्दे पर प्रस्तुत की। इस फिल्म में जोसेफ वाइजमन एवं उर्सूला अँन्ड्रेस ने क्रमशः खलनायक एवं गायिका के रूप में रंग लाया है। भारत में भी बॉण्ड फिल्मों की लोकप्रियता का पच्चीस वर्षों का सिलसिला इसी फिल्म से प्रारंभ हुआ है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : युनाईटेड आर्टिस्ट्स ☆ यू.के. ☆ वर्ष : १९६२ ☆ निर्माता : साल्जमन एवं ब्रोकोली ☆ निर्देशक : टेरेंस यंग ☆ प्रमुख कलाकार : सीन कॉनरी/ उर्सूला अँन्ड्रेस/ जोसेफ वाइजमन/ जैक लार्ड/ बर्नार्ड ली ☆ रंगीन ☆ अवधि : ११० मिनट।

द लांगेस्ट डे

कार्नेलियस रान की विख्यात पुस्तक पर आधारित इस युद्ध फिल्म में 'डी- डे.' (जून ६, १९४४) के अलाइड सेना पथकों के 'नार्मंडी' तट पर अवतरण की घटना का, युद्ध के दोनों पक्षों के प्रमुख सेनानियों के क्रियाकलापों के विवरण के साथ, पर्दे पर ऐसा प्रस्तुतिकरण है, जो एक 'दस्तावेजी' फिल्म मानी जाती है। लगभग ४३ बड़े सितारे इस फिल्म में हैं। युद्ध के दृश्य ऐसे विराट हैं कि किसी और फिल्म में नहीं मिलते। श्वेत-श्याम फिल्मांकन की प्रभावशाली परिणति इसी फिल्म में स्पष्ट होती है। इस फिल्म के निर्माण में युद्ध सामग्री का उपयोग इतने भव्य पैमाने पर हुआ है कि उस दिन वास्तविक युद्ध भी इतना जबर्दस्त नहीं लड़ा गया था। इसे कहते हैं पर्दे की ताकत। इतिहास को पर्दे पर लाना कठिन होता है। इस फिल्म ने वह संभव कर दिखाया है।

☆अँगरेजी ☆ निर्माण जनुक एवं ट्वेंटीएथ सेन्चुरी फॉक्स। ☆ यू.एस. ☆ वर्ष १९६२ ☆ निर्माता डरहिल एफ. जनुक☆ निर्देशक: केन अँनाकिन ☆ प्रमुख कलाकार जॉन वेन/ रॉबर्ट मिचम/ हेन्री फोन्डा... रॉबर्ट रान/ रिचर्ड टॉड/ रिचर्ड बर्टन। ☆ श्वेत-श्याम ☆ अवधि १८० मिनट/ पुरस्कार: नामांकन ५ ऑस्कर/ अजित २।

हाउ द वेस्ट वाज वन

इस फिल्म में कई उपकथाएँ हैं जिनमें पचास वर्ष की घटनाएँ फिल्माई गई हैं। इसकी दृश्यावली रोमांच जगा है। भैंसों का झुंड, भगदड़, भारतीयों का रेल वैगन पर हमला। युद्ध का दृश्य और नौका चालन के दृश्य बहुत सजीव हैं। हैथअवे ने फिल्म के शुरू के और अंतिम भाग का निर्देशन किया है। गृहयुद्ध के दृश्यों का निर्देशन जॉन फोर्ड ने किया है। रेल के दृश्य और भैंसों के झुंड के दृश्य जॉर्ज मार्शल ने फिल्माए हैं। ब्रिटेन में अधिकांश स्थानों पर यह फिल्म सिनेमा स्कोप में प्रदर्शित की गई।

☆ संयुक्त राज्य ☆ १९६२ ☆ १५० मिनट ☆ टेक्नीकलर। ☆ निर्माता एम.जी.एम. ☆ सिनेरामा ☆ निर्देशक- हेनरी हैथअवे, जॉन फोर्ड, जॉर्ज मार्शल। ☆ कलाकार एग्नेस मूरहेड / कैरोल बेकर/ जेम्स स्टेवार्ट/

ग्रेगरी पेक/ जॉन वेन/ रिचर्ड विडमार्क/ हैनरी फोंडा।

लोलिता

यह एक कामोन्मादित लड़की की कहानी है जो एक प्रौढ़ व्यक्ति से रोमांस करने लगती है। समाज द्वारा इस संबंध को नकारने के भय में हंबर्ट अपने प्रतिद्वंद्वी क्विल्टी से भी अलग हो जाता है। इस फिल्म में अमेरिकी समाज के जड़ से उखड़े लोगों का चित्रण है।

☆ ग्रेट ब्रिटेन ☆ १९६२ ☆ १५० मिनट ☆ निर्माता- जेम्स बी. हैरिस ☆ निर्देशक- स्टेनले कुब्रिक ☆ कलाकार: जेम्स मैसन/ शेली विंटर्स/ पीटर सेलर्स/ स्यूलियॉन ☆ ब्लादिमीर नबोकोव के उपन्यास पर आधारित।

एट एंड हॉफ

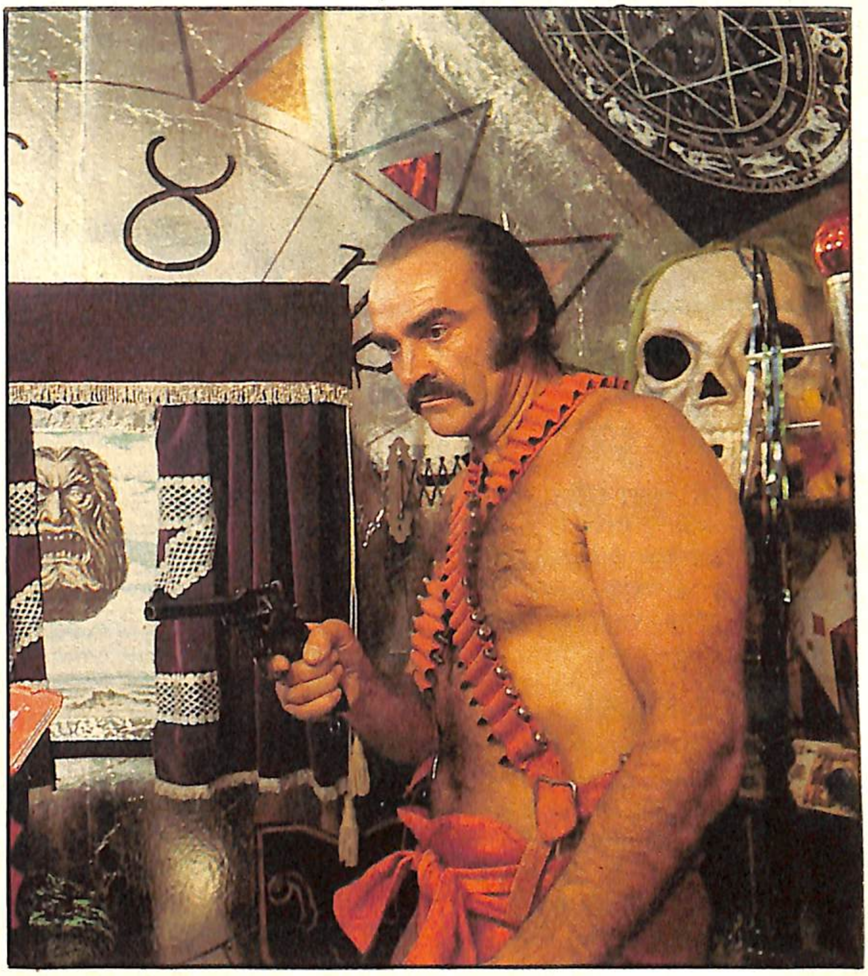
गिडो एक फिल्मकार है। उसे अपनी नई फिल्म के लिए विषय नहीं सूझ रहा है। उसे अपने आसपास के सभी लोग तंग करते हैं। वह इनसे बचने के लिए अपनी बचपन की यादों की कल्पना करता है। गिडो का चरित्र असल में निर्देशक फेडरिको का ही चरित्र है। फिल्म को शीर्षक 'साढ़े आठ' दरअसल उनके द्वारा बनाई गई साढ़े आठ फिल्मों को ध्यान में रखकर ही दिया गया है। रचनात्मकता की संघर्षमय प्रक्रिया के बारे में सुस्पष्ट अंतर्दृष्टि द्वारा फैलिनी ने रचनात्मकता और प्रेरणा के स्वभाव के बारे में अकाट्य वक्तव्य दिया है। साथ ही समाज पर टिप्पणी भी की है। वह सूक्ष्म निरीक्षण का परिणाम है। इस फिल्म में भावनाएँ हैं तो बौद्धिकता भी है। रोमांचक दृश्य हैं और दुरुहता भी। इसका संगीत भी उच्च कोटि का है। इस फिल्म को मॉस्को के १९६३ के फिल्म समारोह में पहला पुरस्कार मिला था।

☆ इटली ☆ १९६३ ☆ वाइड स्क्रीन ☆ १८० मिनट ☆ निर्माता - सिनेरिज ☆ निर्देशक: फेडरिको फैलिनी। ☆ कलाकार: मार्सिलो मैइस्ट्रोइयानी/ अनौक एमी/ क्लाडिया कार्डिनेल।

द ग्रेट एस्केप

यह फिल्म सत्य घटना पर आधारित है। युद्ध बंदियों के अपने दुश्मनों के चंगुल से भाग निकलने के कई किस्से हैं। कई फिल्में भी ऐसे कथानकों पर आधारित बनी हैं। 'द ग्रेट एस्केप' ऐसी सभी फिल्मों में सर्वाधिक लोकप्रिय एवं बॉक्स ऑफिस पर सफलतम मानी जाती है। इस फिल्म के युद्ध बंदियों में एक-एक चरित्र विशिष्ट है। नामी सितारों ने इन चरित्रों को पर्दे पर हूबहू प्रस्तुत किया है। कुछ कॉमेडी पुट भी है। कई युद्ध बंदी भाग निकलने में सफल हो जाते हैं। किंतु अधिकतर पकड़ लिए जाते हैं। कई को गोलियों से भुन दिया जाता है। सारी योजना अद्भुत है। स्टिव मॅक्विन की क्रासकंट्री मोटर साइकल की दौड़ अविस्मरणीय है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : यूनाईटेड आर्टिस्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष १९६३ ☆ निर्माता-निर्देशक: जॉन स्टर्जेस ☆ प्रमुख कलाकार: स्टिव मॅक्विन/ जेम्स गार्नर/ रिचर्ड अटनबरो/ चार्ल्स ब्रान्सन/ डोनाल्ड प्लेजिन्स/ जेम्स कोबर्न/ ☆ रंगीन ☆ अवधि: १६९ मिनट।



इट'ज ए मैड, मैड, मैड, मैड वर्ल्ड

कीस्टोन कॉपस जैसी गूँगे युग की फिल्मों की याद ताजा करने वाली यह फिल्म इतनी जबर्दस्त कॉमेडी है कि हँसाहँसाकर लोटपोट कर देती है। जिम्मी डुरेंड से लेकर जेरी लुईस तक अनगिनत मसखरे इस फिल्म में छोटी-छोटी भूमिकाओं में हैं और कई बड़े सितारों का जमघट प्रमुख भूमिकाओं में है। इस फिल्म की कहानी इतनी सरल है कि दुर्घटना का शिकार एक बूढ़ा मरने के पहले, एक गड़े खजाने का संकेत देता है। एक दर्जन दौलत के दीवाने सब काम छोड़कर उस खजाने को प्राप्त करने दौड़ पड़ते हैं। एक पुलिसवाला, दो टैक्सी वाले भी इनमें जुड़ जाते हैं। तीन घंटे से अधिक लगातार ऐसी धमाल मचती है कि शब्दों में बयान असंभव है। फिल्म के 'टाइटल्स' भी कमाल के हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण: यूनाईटेड आर्टिस्ट्स। ☆ यू.एस. ☆ वर्ष १९६३ ☆ निर्माता एवं निर्देशक: स्टॅनले क्रेमर ☆ प्रमुख कलाकार : स्पेन्सर ट्रेसी/ मिल्टन बर्ले/ सिड सीजर/ मिकी रुने/ इथेल मरमेन / फिल सिल्वर्स। ☆ रंगीन ☆ अवधि: १९० मिनट। पुरस्कार नामांकन ६, ऑस्कर/ अर्जित- एक।

सीन कॉनेरी

टोपकापी

चोरी/ डकैती/ उठाईगिरी आदि की कितनी ही श्रेष्ठ फिल्में हैं। हाउ टू स्टील ए मिलियन/ द इटालियन जॉब / ग्रांड स्लैम आदि। इनमें सबसे श्रेष्ठ हैं 'टोपकापी'। एक टोली इस्तम्बुल के टोपकापी राजमहल में से (म्यूजियम) एक रत्नजड़ा खंजर चुराने की योजना बनाती है। योजना बड़ी कुशलता से सफल भी होती है। लेकिन किस्मत खराब है। फिल्म के सभी अंतरराष्ट्रीय स्तर के विख्यात सितारों ने श्रेष्ठतम अभिनय प्रस्तुत कर फिल्म में योगदान किया है। 'लोकेशन' शूटिंग के कारण फिल्म में एक 'तिलस्मी' मौलिकता आ



दिस इज ए मैड-मैड-मैड-मैड वर्ल्ड

गई है।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण: यूनाईटेड आर्टिस्ट्स ☆ यू.एस. ☆ वर्ष १९६४ ☆ निर्माता-निर्देशक ज्युलस दासिन ☆ प्रमुख कलाकार: मेलिना मरकोरो, परिक डास्तेनोव/ मैकसामोलेयन शेल/ रॉबर्ट मोरले आदि। ☆ रंगीन ☆ अवधि १२० मिनट। पुरस्कार : ऑस्कर : सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता।

मेरी पॉपिन्स

मेरी पॉपिन्स के रूप में डिजनी ने एक ऐसी स्वप्नों की दुनिया निर्मित की है, जिसमें छोटे बच्चों के लिए एक नैनी आकाश में से धरती पर अवतरित होती है। एक परिवार में आनंद निर्मित कर फिर हवा का रुख बदलता है तो वापस आकाश में उड़कर चली जाती है। केवल फन्तासी में ही संभव ऐसे आश्चर्यों से वह उन बच्चों को परिचित कराती है। डिक वैन डाइक उसका मनमौजी साथी है। चिमनियाँ साफ करने वाला। डिजनी ने इस फिल्म में (और बाद में बेडनॉब्स एंड ब्रुमस्टिक्स में भी) लाइफ-एक्शन के साथ एनिमेशन को भी संलग्न कर ऐसी परिष्कृत फिल्मांकन तकनीक विकसित की है, जो देखते ही देखते दर्शकों को जादुई दुनिया में ले [illegible] फिल्म। [illegible] हैं जो [illegible] देखते ही देखते दर्शकों [illegible] जाती है। फिल्म में सुंदर नृत्य हैं। गीत हैं जो [illegible] बिनाका हिट परेड में किसी [illegible] पर धूम मचाते रहे हैं।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वाल्ट डिजनी स्टुडिओ ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६४ ☆ निर्माता : वाल्ट डिजनी ☆ निर्देशक : राबर्ट स्टीवनसन ☆ प्रमुख कलाकार : ज्युली अण्ड्रुज/ डिक वैन डाइक/ डेविड टॉमलिनसन/ ग्लिनिस जोनस ☆ रंगीन ☆ अवधि : १४० मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ११ 'ऑस्कर/ अजित ५।

द ग्रेट रेस

इस फिल्म के साथ १९०८ की न्यूयार्क-पैरिस आटो मोबाइल रेस/ लारेल-हार्डी की स्लैपस्टिक का सारा 'नोस्तालजिआ पर्दे पर आया है। साथ में द प्रिजनर ऑव जेण्डा जैसा एपिसोड भी जुड़ा है। कुल मिलाकर दर्शकों को हँसा-हँसाकर लोट-पोट करने वाली एक भव्य महँगी, आलीशान फिल्म है। जैक लेमन एवं टोनी कर्टिस की जोड़ी ने मजा ला दिया है। जैक लेमन है स्याह (खलनायक सा) प्रोफेसर फेट और टोनी कर्टिस है (सुपर नायक) द ग्रेट लेस्ली। लेस्ली को मात्र नीचा दिखाने के प्रोफेसर के प्रारंभिक सारे प्रयास तो कल्पनातीत रूप में 'अफलातूनी' हैं। महिला मुक्ति आंदोलन वाली नटाली वुड रिपोर्टर के रूप में रेस में भाग लेती हैं। टोनी कर्टिस, जैक लेमन ने मर्लिन मनरो के साथ सम लाइक इट हॉट में भी मनोरंजन किया है।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६५ ☆ निर्माता : मार्टिन जुरो ☆ निर्देशक : एडवर्ड ब्लेक ☆ प्रमुख कलाकार : जैक लेमन/ टोनी कर्टिस/ नटाली वुड/ पीटर फाक/ कीनान विन/ आर्थर ओ को नेल ☆ रंगीन ☆ अवधि : १५७ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन : ५ ऑस्कर। अजित एक।

माय फेयर लेडी

संगीत नाटक की व्यावसायिक सफलता को देखकर यह फिल्म बनाई गई थी। रेक्स हैरिसन ने नाटक और फिल्म दोनों में ही प्रोफेसर हिगिंज की भूमिका निभाई थी। नाटक में नायिका की भूमिका जूली ऐंड्र्यूस ने की थी। इस फिल्म को चार ऑस्कर मिले थे। मराठी में इस नाटक पर 'ती फुलराणी' नाटक बनाया गया था। हिंदी में इस फिल्म के आधार पर 'नीली' (१९५०), मनपसंद (१९८०) फिल्में बन चुकी हैं।
☆ संयुक्त राज्य ☆ १९६४ ☆ सुपर पैनाविजन ☆ १६५ मिनट ☆ टेक्नीकलर ☆ निर्माता : वार्नर ब्रदर्स ☆ फर्स्ट नैशनल ☆ निर्देशक जॉर्ज क्युकोर ☆ जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के संगीत नाटक 'पिग्मेलियन' पर आधारित। ☆ कलाकार : आड्रे हेपबर्न/ रेक्स हैरिसन/ स्टैनली हॉलोवे/ विल्फिड हाइड वाइट/ जेरेमी ब्रेट/ ग्लैडिस कूपर।

द गुड, द बैड एंड द अग्ली

यह **'वेस्टर्न'** श्रेणी विशुद्ध अमेरिकी फिल्म है। इटली के सर्जियो लिओन ने (इसीलिए इन फिल्मों को 'स्पेगेटी' वेस्टर्न्स कहा जाता है) वेस्टर्न श्रेणी की ऐसी शानदार फिल्में बनाई हैं, जो दुनिया भर में लोकप्रिय हुई। फार ए फ्यू डालर्स मोर। फिस्टफुल ऑव डालर्स। और, वन्स अपान ए टाइम इन द वेस्ट के साथ सर्जिओ लिओन एवं क्लिन्ट इस्टवुड दोनों ही विश्व विख्यात हुए हैं। द गुड, द बैड एंड द अग्ली में तीन चरित्र हैं- एक अच्छा। दूसरा खराब। तीसरा घृणित। और एक अनाम कब्र में गड़ा खजाना है। वेस्टर्न फिल्मों के तमाम तत्व, कर्णप्रिय पृष्ठभूमि की धुन, एक्शन-एडवेंचर और कुछ कॉमेडी के पुट मिलकर यह कालजयी फिल्म बनी है। अच्छे का भला होता है। बुरे का मुँह काला। मालामाल दोनों ही होते हैं।
☆ अँगरेजी/ इटली ☆ निर्माण : पीईए ☆ वर्ष : १९६६ ☆ निर्माता : अलबर्टो गिमाल्डी

साठ के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. द साउण्ड ऑव म्युजिक : १९६५
२. १०१ डालमेशियंस : १९६१
३. द जंगल बुक : १९६७
४. डॉ. जिवागो : १९६५
५. बुच कैसिडी एंड द सनडांस किड : १९६९
६. मेरी पॉपिन्स : १९६४
७. द ग्रेजुएट : १९६८
८. माई फेअरलेडी : १९६४
९. थन्डर बॉल : १९६५
१०. फनी गर्ल : १९६८

☆ निर्देशक : सर्जिओ लिओन ☆ प्रमुख कलाकार : क्लिन्ट इस्टवुड/ एलीवालाश/ ली वैन क्लीफ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १६१ मिनट।

द डर्टी डजन

एक दर्जन सैनिक अपराधियों को जो वर्ना जेल में ही सड़ते रहने के लिए अभिशप्त हैं, बाहर निकालकर प्रशिक्षित किया जाता है। फिर दुश्मन पर छोड़ दिया जाता है। ये सैनिक फिर जो कहर बरसाते हैं उसकी कहानी है इस फिल्म में। ली मार्विन इस दल का नेतृत्व करता है। इस फिल्म का सारा कथानक लगता तो काल्पनिक है



रेक्स हैरिसन एण्ड आड़े हेपबर्न : माय फेअर लेडी (१९६४)

किंतु एक 'अजीब' प्रामाणिकता भी जुड़ी मिलती है। इससे फिल्म रोचक हो गई है। हिंसक तथा वीभत्स दृश्यों की भरमार है। किंतु ये असहनीय नहीं होते। द डर्टी डजन के सारे चरित्र नमूने हैं। चरित्र चित्रण को कुशलता से प्रस्तुत किया है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.के. ☆ वर्ष १९६७ ☆ निर्माता : केनेथ हाइमन ☆ निर्देशक : रॉबर्ट अल्ड्रिच ☆ प्रमुख कलाकार : ली मार्विन/ अर्नेस्ट बोर्गेन/ चार्ल्स ब्रान्सन/ जिम ब्राउन/ जॉन कासावेटस/ जार्ज केनेडी ☆ रंगीन ☆ अवधि : १४९ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन २। ऑस्कर अर्जित एक।

द जंगल बुक

रुडियार्ड किपलिंग की पुस्तक द जंगल बुक का नायक मौगली भारत के सारे बच्चों को प्रिय है। वाल्ट डिजने के व्यक्तिगत प्रत्यक्ष निरीक्षण में निर्मित हुई अंतिम एनिमेशन कृति है। इस फिल्म के निर्माण में ४० लाख डॉलर्स खर्च हो गए थे। ४२ माह के प्रयासों से यह फिल्म निर्मित हुई है। एक मानव शिशु भेड़िए के झुंड में पलता है। बालू भालू एवं बाघेरा बाघ उसके दोस्त हैं। यह बालक शेर खान का मुकाबला करता है। मजेदार कहानी/ यादगार गीतों के साथ/ मनमोहक नृत्यों के साथ पर्दे पर जादुई असर निर्मित करती है। बेअर नेसेसिटिज् एवं बंदरों के झुंड का 'वाना बी लाइक यू' तो बहुत ही श्रेष्ठ गीत है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वाल्ट डिजने स्टुडियो ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६७ ☆ निर्माता : वाल्ट डिजने ☆ निर्देशक : वूल्फ गैन्ग रैथरमन ☆ एनिमेशन फिल्म ☆ रंगीन ☆ अवधि : ७८ मिनट।

बोनी एण्ड क्लाइड

अमेरिका के आर्थिक मंदी के युग के एक आपराधिक युगल बोनी पार्कर एवं क्लाइड बैरो की वास्तविक कहानी पर आधारित यह फिल्म है। इस फिल्म के साथ पर्दे पर ग्राफिक हिंसा प्रदर्शित होने लगी। उसकी परणति आज नैचरल बॉर्न किलर्स (१९९४) जैसी फिल्मों में हो रही है। बोनी एण्ड क्लाइड एक पीरिएड ड्रामा है। अपराध के साथ कॉमिक टच फिल्म में है। फया उनवे की बोनी तो एकदम लाजवाब है। प्रेम प्रसंगों का फिल्मांकन भावुक है। क्लाइमेक्स के दृश्य जिसमें बोनी एवं क्लाइड को पुलिस गोलियों की बौछार से गाड़ी समेत छलनी कर देते हैं, जो एक प्रतिमान है। फिल्म गतिशील है। दृश्यों का संयोजन सजीव है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६७ ☆ निर्माता : वारेन बीटी ☆ निर्देशक : आर्थर पेन ☆ प्रमुख कलाकार : वारेन बीटी/ फया उनवे/ मिशेल जे. पोलार्ड/ जीन हैकमेन/ एस्ट्रेला पार्सनस्/ डेनवर पायल ☆ रंगीन ☆ अवधि : १११ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ९, ऑस्कर। अर्जित २।

२००१-ए स्पेस ओडेसी

यह फिल्म विश्व सिनेमा में एक मील का पत्थर मानी जाती है। साइंस फिक्शन लेखक आर्थर सी. क्लार्क के मूल कथानक पर बनी यह फिल्म दार्शनिकता लिए हुए है। पूर्वार्ध में थोड़ी धीमी गति से चलती है। नाट्यमयी घटनाएँ भी कम हैं। उत्तरार्ध में चमत्कारिक प्रभाव निर्मित करती है। इस फिल्म में भविष्य की अवकाश यात्राओं का अद्भुत चित्रण है। फिल्म में संवाद बेहद कम हैं। क्लाइमेक्स के लगभग तीस मिनट आँखों को तृप्ति देते हैं। इसी फिल्म से साइंस फिक्शन युग उभर कर आया है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.के. ☆ वर्ष : १९६८ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : स्टॅनले कुब्रिक ☆ प्रमुख कलाकार : कैअर डयुलिआ/ गैरी लॉकवुड/ विलियम सिल्वेस्टर/ डैनिएल रिचटर/ डगलस रैन ☆ रंगीन ☆ अवधि : १६० मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ४, ऑस्कर। अर्जित एक।

क्राइम एंड पनिशमेंट

दॉस्तोव्स्की का यह उपन्यास १८६५ में प्रकाशित हुआ था। यह कई फिल्मों की कहानियों का आधार बना। एक गरीब विद्यार्थी साहूकार और उसकी बहन को लूट कर उनकी हत्या कर देता है। हत्यारा अपने काम को उचित ठहराता है। उसे साइबेरिया की जेल में भेज दिया जाता है। इस विषय पर दो मूक फिल्में १९०६ और १९२३ में बनी हैं। बाद वाली फिल्म अभिनय और चरित्र चित्रण के कारण उल्लेखनीय है। अमेरिका में इस पर पहली बार १९३५ में एक फिल्म बनी थी। इसी वर्ष फ्रांस में भी इसी कथानक पर फिल्म बनी। इस फिल्म में फोकस जज और अभियुक्त के संवादों पर रखा गया था। सन् १९४५ में स्वीडिश भाषा में भी यह फिल्म बनी थी जिसके निर्देशक थे हेंप फॉस्टमैन। सन् १९५१ में इसी कथानक पर क्राइमेन या कास्टिगो फिल्म बनी। इसके निर्देशक थे जॉर्ज लैंपिन। सन् १९५६ में बनी फिल्म क्राइम एट चाटीमेंट में फ्रांस की तत्कालीन परिस्थिति जोड़ी गई थी। संयुक्त राज्य में इसे सन् १९५८ में छोटे बजट पर बनाया गया था। सोवियत संघ में १९६९ में जाकर इस पर फिल्म बनी। हिंदी में रमेश सहगल ने इस कथानक पर फिर सुबह होगी (१९५८) फिल्म बनाई थी।

मॅकेनाज गोल्ड

मॅकेनाज गोल्ड फिल्म भारत में खूब लोकप्रियता अर्जित करने में सफल हुई। वैसे कहानी अकल्पनीय तथा अविश्वसनीय है।



दिस इज ए मैड-मैड-मैड-मैड वर्ल्ड

गई है।
☆ *अँगरेजी ☆ निर्माणः यूनाईटेड आर्टिस्ट्स ☆ यू.एस. ☆ वर्ष १९६४ ☆ निर्माता-निर्देशक ज्युलस दासिन ☆ प्रमुख कलाकारः मेलिना मरकोरी, परिक डास्तेनोव/ मैकसामोलेयन शेल/ रॉबर्ट मोरले आदि। ☆ रंगीन ☆ अवधि १२० मिनट। पुरस्कार : ऑस्कर : सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता।*

मेरी पॉपिन्स

मेरी पॉपिन्स के रूप में डिजनी ने एक ऐसी स्वप्नों की दुनिया निर्मित की है, जिसमें छोटे बच्चों के लिए एक नैनी आकाश में से धरती पर अवतरित होती है। एक परिवार में आनंद निर्मित कर फिर हवा का रुख बदलता है तो वापस आकाश में उड़कर चली जाती है। केवल फन्तासी में ही संभव ऐसे आश्चर्यों से वह उन बच्चों को परिचित कराती है। डिक वैन डाइक उसका मनमौजी साथी है। चिमनियाँ साफ करने वाला। डिजनी ने इस फिल्म में (और बाद में बेडनॉब्स एंड ब्रूमस्टिक्स में भी) लाइफ-एक्शन के साथ एनिमेशन को भी संलग्न कर ऐसी परिष्कृत फिल्मांकन तकनीक विकसित की है, जो देखते ही देखते दर्शकों को जादुई दुनिया में ले जाती है। फिल्म में सुंदर नृत्य हैं। गीत हैं जो रेडियो सीलोन पर बिनाका हिट परेड में किसी समय पहली पायदान पर धूम मचाते रहे हैं।

☆ *अँगरेजी ☆ निर्माण : वाल्ट डिजनी स्टुडिओ ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६४ ☆ निर्माता : वाल्ट डिजनी ☆ निर्देशक : राबर्ट स्टीवनसन ☆ प्रमुख कलाकार : ज्युली अण्ड्रूज/ डिक वैन डाइक/ डेविड टॉमलिनसन/ ग्लिनिस जोनस ☆ रंगीन ☆ अवधि : १४० मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ११ 'ऑस्कर/ अर्जित ५।*

द ग्रेट रेस

इस फिल्म के साथ १९०८ की न्यूयार्क-पैरिस आटो मोबाइल रेस/ लारेल-हार्डी की स्लैपस्टिक का सारा 'नोस्तालजिआ पर्दे पर आया है। साथ में द प्रिजनर ऑव जेण्डा जैसा एपिसोड भी जुड़ा है। कुल मिलाकर दर्शकों को हँसा-हँसाकर लोट-पोट करने वाली एक भव्य महँगी, आलीशान फिल्म है। जैक लेमन एवं टोनी कर्टिस की जोड़ी ने मजा ला दिया है। जैक लेमन है स्याह (खलनायक सा) प्रोफेसर फेट और टोनी कर्टिस है (सुपर नायक) द ग्रेट लेस्ली। लेस्ली को मात्र नीचा दिखाने के प्रोफेसर के प्रारंभिक सारे प्रयास तो कल्पनातीत रूप में 'अफलातूनी' हैं। महिला मुक्ति आंदोलन वाली नटाली वुड रिपोर्टर के रूप में रेस में भाग लेती हैं। टोनी कर्टिस, जैक लेमन ने मर्लिन मनरो के साथ सम लाइक इट हॉट में भी मनोरंजन किया है।
☆ *अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६५ ☆ निर्माता : मार्टिन जुरो ☆ निर्देशक : एडवर्ड ब्लेक ☆ प्रमुख कलाकार : जैक लेमन/ टोनी कर्टिस/ नटाली वुड/ पीटर फाक/ कीनान विन/ आर्थर ओ को नेल ☆ रंगीन ☆ अवधि : १५७ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन : ५ ऑस्कर। अर्जित एक।*

माय फेयर लेडी

संगीत नाटक की व्यावसायिक सफलता को देखकर यह फिल्म बनाई गई थी। रेक्स हैरिसन ने नाटक और फिल्म दोनों में ही प्रोफेसर हिगिंज की भूमिका निभाई थी। नाटक में नायिका की भूमिका जूली ऐंड्रयूस ने की थी। इस फिल्म को चार ऑस्कर मिले थे। मराठी में इस नाटक पर 'ती फुलराणी' नाटक बनाया गया था। हिंदी में इस फिल्म के आधार पर 'नीली' (१९५०), मनपसंद (१९८०) फिल्में बन चुकी हैं।
☆ *संयुक्त राज्य ☆ १९६४ ☆ सुपर पैनाविजन ☆ १६५ मिनट ☆ टेक्नीकलर ☆ निर्माता : वार्नर ब्रदर्स ☆ फर्स्ट नैशनल ☆ निर्देशक जॉर्ज क्युकोर ☆ जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के संगीत नाटक 'पिग्मेलियन' पर आधारित। ☆ कलाकार : आड्रे हेपबर्न/ रेक्स हैरिसन/ स्टैनली हॉलोवे/ विल्फ्रिड हाइड वाइट/ जेरेमी ब्रेट/ ग्लैडिस कूपर।*

द गुड, द बैड एंड द अग्ली

यह **'वेस्टर्न'** श्रेणी विशुद्ध अमेरिकी फिल्म है। इटली के सर्जियो लिओन ने (इसीलिए इन फिल्मों को 'स्पेगेटी' वेस्टर्न्स कहा जाता है) वेस्टर्न श्रेणी की ऐसी शानदार फिल्में बनाई हैं, जो दुनिया भर में लोकप्रिय हुई। फार ए फ्यू डालर्स मोर। फिस्टफुल ऑव डालर्स। और, वन्स अपान ए टाइम इन द वेस्ट के साथ सर्जिओ लिओन एवं क्लिन्ट इस्टवुड दोनों ही विश्व विख्यात हुए हैं। द गुड, द बैड एंड द अग्ली में तीन चरित्र हैं- एक अच्छा। दूसरा खराब। तीसरा घृणित। और एक अनाम कब्र में गड़ा खजाना है। वेस्टर्न फिल्मों के तमाम तत्व, कर्णप्रिय पृष्ठभूमि की धुन, एक्शन-एडवेंचर और कुछ कॉमेडी के पुट मिलकर यह कालजयी फिल्म बनी है। अच्छे का भला होता है। बुरे का मुँह काला। मालामाल दोनों ही होते हैं।
☆ *अँगरेजी/ इटली ☆ निर्माण : पीईए ☆ वर्ष : १९६६ ☆ निर्माता : अलबर्टो गिमाल्डी*

साठ के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. द साउण्ड ऑव म्युजिक : १९६५
२. १०१ डालमेशियंस : १९६१
३. द जंगल बुक : १९६७
४. डॉ. जिवागो : १९६५
५. बुच कैसिडी एंड द सनडांस किड : १९६९
६. मेरी पॉपिन्स : १९६४
७. द ग्रेजुएट : १९६८
८. माई फेअरलेडी : १९६४
९. थंडर बॉल : १९६५
१०. फनी गर्ल : १९६८

☆ *निर्देशक : सर्जिओ लिओन ☆ प्रमुख कलाकार : क्लिन्ट इस्टवुड/ एलीवालाश/ ली वैन क्लीफ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १६१ मिनट।*

द डर्टी डजन

एक दर्जन सैनिक अपराधियों को जो वर्ना जेल में ही सड़ते रहने के लिए अभिशप्त हैं, बाहर निकालकर प्रशिक्षित किया जाता है। फिर दुश्मन पर छोड़ दिया जाता है। ये सैनिक फिर जो कहर बरसाते हैं उसकी कहानी है इस फिल्म में। ली मार्विन इस दल का नेतृत्व करता है। इस फिल्म का सारा कथानक लगता तो काल्पनिक है



रेक्स हैरिसन एण्ड आड्रे हेपबर्न : माय फेअर लेडी (१९६४)

किंतु एक 'अजीब' प्रामाणिकता भी जुड़ी मिलती है। इससे फिल्म रोचक हो गई है। हिंसक तथा वीभत्स दृश्यों की भरमार है। किंतु ये असहनीय नहीं होते। द डर्टी डजन के सारे चरित्र नमूने हैं। चरित्र चित्रण को कुशलता से प्रस्तुत किया है।

☆ *अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.के. ☆ वर्ष १९६७ ☆ निर्माता : केनेथ हाइमन ☆ निर्देशक : रॉबर्ट अल्ड्रिच ☆ प्रमुख कलाकार : ली मार्विन/ अर्नेस्ट बोर्गेन/ चार्ल्स ब्रान्सन/ जिम ब्राउन/ जॉन कासावेटस/ जार्ज केनेडी ☆ रंगीन ☆ अवधि : १४९ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन २। ऑस्कर अर्जित एक।*

द जंगल बुक

रुडियार्ड किपलिंग की पुस्तक द जंगल बुक का नायक मौगली भारत के सारे बच्चों को प्रिय है। वाल्ट डिजने के व्यक्तिगत प्रत्यक्ष निरीक्षण में निर्मित हुई अंतिम एनिमेशन कृति है। इस फिल्म के निर्माण में ४० लाख डॉलर्स खर्च हो गए थे। ४२ माह के प्रयासों से यह फिल्म निर्मित हुई है। एक मानव शिशु भेड़िए के झुंड में पलता है। बालू भालू एवं बाघेरा बाघ उसके दोस्त हैं। यह बालक शेर खान का मुकाबला करता है। मजेदार कहानी/ यादगार गीतों के साथ/ मनमोहक नृत्यों के साथ पर्दे पर जादुई असर निर्मित करती है। बेअर नेसेसिटिज् एवं बंदरों के झुंड का 'वाना बी लाइक यू' तो बहुत ही श्रेष्ठ गीत है।

☆ *अँगरेजी ☆ निर्माण : वाल्ट डिजने स्टुडियो ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६७ ☆ निर्माता : वाल्ट डिजने ☆ निर्देशक : वूल्फ गैन्ग रैथरमन ☆ एनिमेशन फिल्म ☆ रंगीन ☆ अवधि : ७८ मिनट।*

बोनी एण्ड क्लाइड

अमेरिका के आर्थिक मंदी के युग के एक आपराधिक युगल बोनी पार्कर एवं क्लाइड बैरो की वास्तविक कहानी पर आधारित यह फिल्म है। इस फिल्म के साथ पर्दे पर ग्राफिक हिंसा प्रदर्शित होने लगी। उसकी परणति आज नैचरल बॉर्न किलर्स (१९९४) जैसी फिल्मों में हो रही है। बोनी एण्ड क्लाइड एक पीरिएड ड्रामा है। अपराध के साथ कॉमिक टच फिल्म में है। फया उनवे की बोनी तो एकदम लाजवाब है। प्रेम प्रसंगों का फिल्मांकन भावुक है। क्लाइमेक्स के दृश्य जिसमें बोनी एवं क्लाइड को पुलिस गोलियों की बौछार से गाड़ी समेत छलनी कर देते हैं, जो एक प्रतिमान है। फिल्म गतिशील है। दृश्यों का संयोजन सजीव है।

☆ *अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६७ ☆ निर्माता : वारेन बीटी ☆ निर्देशक : आर्थर पेन ☆ प्रमुख कलाकार : वारेन बीटी/ फया उनवे/ मिशेल जे. पोलार्ड/ जीन हैकमेन/ एस्ट्रेला पार्सनस्/ डेनवर पायल ☆ रंगीन ☆ अवधि : १११ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ९, ऑस्कर। अर्जित २।*

२००१-ए स्पेस ओडेसी

यह फिल्म विश्व सिनेमा में एक मील का पत्थर मानी जाती है। साइंस फिक्शन लेखक आर्थर सी. क्लार्क के मूल कथानक पर बनी यह फिल्म दार्शनिकता लिए हुए है। पूर्वार्ध में थोड़ी धीमी गति से चलती है। नाट्यमयी घटनाएँ भी कम हैं। उत्तरार्ध में चमत्कारिक प्रभाव निर्मित करती है। इस फिल्म में भविष्य की अवकाश यात्राओं का अद्भुत चित्रण है। फिल्म में संवाद बेहद कम हैं। क्लाइमेक्स के लगभग तीस मिनट आँखों को तृप्ति देते हैं। इसी फिल्म से साइंस फिक्शन युग उभर कर आया है।

☆ *अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. ☆ यू.के. ☆ वर्ष : १९६८ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : स्टॅनले कुब्रिक ☆ प्रमुख कलाकार : कैअर डयुलिआ/ गैरी लॉकवुड/ विलियम सिल्वेस्टर/ डैनिएल रिचटर/ डगलस रैन ☆ रंगीन ☆ अवधि : १६० मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ४, ऑस्कर। अर्जित एक।*

क्राइम एंड पनिशमेंट

दॉस्तोव्स्की का यह उपन्यास १८६५ में प्रकाशित हुआ था। यह कई फिल्मों की कहानियों का आधार बना। एक गरीब विद्यार्थी साहूकार और उसकी बहन को लूट कर उनकी हत्या कर देता है। हत्यारा अपने काम को उचित ठहराता है। उसे साइबेरिया की जेल में भेज दिया जाता है। इस विषय पर दो मूक फिल्में १९०६ और १९२३ में बनी हैं। बाद वाली फिल्म अभिनय और चरित्र चित्रण के कारण उल्लेखनीय है। अमेरिका में इस पर पहली बार १९३५ में एक फिल्म बनी थी। इसी वर्ष फ्रांस में भी इसी कथानक पर फिल्म बनी। इस फिल्म में फोकस जज और अभियुक्त के संवादों पर रखा गया था। सन् १९४५ में स्वीडिश भाषा में भी यह फिल्म बनी थी जिसके निर्देशक थे हेंप फॉस्टमैन। सन् १९५१ में इसी कथानक पर क्राइमेन या कास्टिगो फिल्म बनी। इसके निर्देशक थे जॉर्ज लैपिन। सन् १९५६ में बनी फिल्म क्राइम एट चाटीमेंट में फ्रांस की तत्कालीन परिस्थिति जोड़ी गई थी। संयुक्त राज्य में इसे सन् १९५८ में छोटे बजट पर बनाया गया था। सोवियत संघ में १९६९ में जाकर इस पर फिल्म बनी। हिंदी में रमेश सहगल ने इस कथानक पर फिर सुबह होगी (१९५८) फिल्म बनाई थी।

मॅकेनाज गोल्ड

मॅकेनाज गोल्ड फिल्म भारत में खूब लोकप्रियता अर्जित करने में सफल हुई। वैसे कहानी अकल्पनीय तथा अविश्वसनीय है।

पहाड़ियों के बीच, रहस्यमयी राहों पर, साधारण मानवीय प्रयासों से अगम्य, ऐसा दर्रा जो सोने से भरा है। अंधा एडवर्ड.जी रॉबिनसन वर्णन करता है वैसा ही गोल्ड एवरीवेअर (सब दूर सोना ही सोना!) इस साहस गाथा का सारा आकर्षण है दृश्यों की सुंदरता, घुड़दौड़ व स्पेशल विज्युअल इफेक्ट्स। दर्शक अनायास ही इस फिल्म में ऐसे डूब जाते हैं और फिल्म इतनी मनोरंजक बन जाती है कि प्रस्तुति की कलात्मकता की दाद देनी ही पड़ती है। एक वेस्टर्न फिल्म के सारे तत्व इस फिल्म में ठूँस-ठूँस कर भरे हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कोलम्बिया स्टुडियो ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९६९ ☆ निर्माता : कार्ल फोरमन ☆ निर्देशक : जे.ली थॉम्प्सन ☆ प्रमुख कलाकार : ग्रेगरी पेक/ ओमर शेरिफ/ टेली सावालास/ ज्यूली न्यूमर/ कैमिला स्पार्व ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२८ मिनट।

वेअर इगल्स डेअर

अलिस्टेयर मॅकलीन की कहानी काल्पनिक है। सनसनीखेज एक्शन एडवेंचर से लबालब है। एक क्षण भी फिल्म की गति धीमी नहीं होती। एक अमेरिकन 'जनरल' को नाजियों के कब्जे से बवेरिअन किले से छुड़ाना है। किले में जाने के लिए केवल रोपवे की ट्रॉली है। कहानी में दिलचस्प मोड़ है। ठंडे दिमाग से, कुशलता से, अपार सूझबूझ से और अपार साहस से अपने काम को अंजाम देने वाली इस टोली का मुखिया बर्टन है। प्रभावित करता है, सर्वाधिक, क्लिंट इस्टवुड। सभी आयु के दर्शक इस फिल्म का आनंद ले सकते हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : एम.जी.एम. विन्कास्ट ☆ यू.एस., यू.के ☆ वर्ष : १९६९ ☆ निर्माता : इलियाट कास्टनर ☆ निर्देशक : ब्रायन जी. हुटन ☆ प्रमुख कलाकार : रिचर्ड बर्टन/ क्लिन्ट इस्टवुड/ मेरी उर/ मिशेल हॉर्डन/ पेट्रिक वेमार्क/ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १५८ मिनट।

द फ्रेंच कनेक्शन

द फ्रेंच कनेक्शन सत्य कथा पर आधारित फिल्म है। इतनी चुस्त और वास्तविकता वादी कि लगता है सारी घटनाएँ सामने घटित हो रही हों। न्यूयॉर्क में नशीले पदार्थों की बड़ी खेप आना है। नारकोटिक्स विभाग के अफसर के रूप में हैकमन एवं शीडर ने जीवंत अभिनय किया है। एक परिपूर्ण योजना के अनुसार पुलिस को चकमा देते हुए भी पदार्थों को न्यूयॉर्क में लाया जाता है। आखिर, पुलिस सारी गैंग को पकड़ लेती है, सिवा सरगने के। ऊपर से धड़धड़ाती ट्रेन का नीचे से मोटर कार से पीछा करने के दृश्य फिल्म इतिहास के दस्तावेज बन गए हैं। सारा फिल्मांकन न्यूयॉर्क शहर में हुआ है इससे फिल्म की विश्वसनीयता बढ़ी है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ट्वेंटीएथ सेंचुरी फॉक्स ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९७१ ☆ निर्माता : फिलिप डी. अन्टोनी ☆ निर्देशक : विलियम फाइडाकेन ☆ प्रमुख कलाकार : जीन हैकमन/ फर्नांडो रे/ रॉय शीडर/ टोनी लो बिआन्को/ मार्सेल बोजुफी/ फ्रेडरिक डी पासक्वाला ☆ रंगीन : ☆ अवधि : १०४ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ८, ऑस्कर। अजित ५।

लास्ट टैंगो इन पेरिस

मध्यम आयु का एक निर्वासित अमेरिकन और एक फ्रेंच महिला एक फ्लैट में संयोग से मिल जाते हैं। पुरुष के आग्रह पर दोनों में एक अजीब रिश्ता कायम हो जाता है जो सिर्फ शारीरिक होता है। दोनों एक-दूसरे का नाम भी नहीं जानते। अंत में पुरुष इस रिश्ते को संपूर्णता देने की माँग करता है। निष्ठुर संबंध और खुल्लम-खुल्ला यौन दृश्यों के कारण यह फिल्म काफी चर्चित हुई थी। इस फिल्म ने फिल्मों में उत्तेजक तत्वों का समावेश करने का फॉर्मूला खोज निकाला। इस फिल्म के प्रदर्शकों के विरुद्ध कुछ संस्थाओं ने कदम भी उठाए थे। बहसों और स्कैंडलों ने इस फिल्म को भारी व्यावसायिक सफलता दिलाई। यह सिर्फ पॉल के परपीड़न पर ही नजर नहीं डालती, बल्कि दंभ, कष्टों और दुखों को भी समेटती है। पॉल की पत्नी अपने रहस्यमय स्वभाव से पॉल को जीर्ण-शीर्ण कर देती है और अंत में आत्महत्या कर लेती है। उभरते हुए फिल्मकार टॉम को यह अपनी फिल्म का विषय लगता है। अंत में जीनी,पॉल की माँगों से त्रस्त होकर उसकी हत्या कर देती है। मार्लन ब्रांडो का अभिनय फिल्म में बुलंदियों पर है। पटकथा ने उन्हें भरपूर मौका दिया है। फिर भी यह फिल्म सफल दुखांत नहीं बन पाई। इसमें वैविध्य नहीं है। मानव जीवन में सिर्फ अकेलापन या क्रूरता ही नहीं है और भी बहुत कुछ है और यही बात लास्ट टैंगो इन पेरिस नहीं कह पाई।

☆ इटली-फ्रांस ☆ वर्ष : १९७२ ☆ टेक्नीकलर ☆ अवधि : १२० मिनट ☆ निर्माता : पीईए सिनेमैटोग्राफिका (रोम) और लेस आर्टिस्ट असोसीज (पेरिस) ☆ निर्देशक : बर्नाडो बर्टोलुसी ☆ प्रमुख कलाकार : मार्लन ब्रांडो/ मारिया श्नेडर/ जीन पियेरे लेयड।

एन्टर द ड्रैगॉन

ब्रुस ली की यह अंतिम फिल्म रही। सर्वश्रेष्ठ भी। इस फिल्म से कुंग फु/ जूडो/ कराटे/ अन्य मार्शल आर्ट्स की फिल्मों का ऐसा सिलसिला अमेरिका एवं हाँगकाँग में शुरू हुआ है, जो थमने का नाम नहीं ले रहा है। आज भी ऐसी फिल्मों का निर्माण हो रहा है किंतु 'एन्टर द ड्रैगॉन' एकदम क्लासिक है। ली जेम्स बॉण्डनुमा भूमिका निभाता है। इस फिल्म में वह नशीले पदार्थों के बड़े अड्डे को खत्म करता है। ली का साथ जॉन सेकसन ने खूब दिया है। फिल्म का अतिरिक्त आनंद जिम केली है। ब्रुस ली सबसे श्रेष्ठ हैं। ली ने किसी और फिल्म में इतनी श्रेष्ठ अदायगी नहीं दी है। भारत में इस फिल्म ने

रिचर्ड बर्टन : वेअर इगल्स डेअर





मारिया श्नेडर : लास्ट टैंगो इन पेरिस

बॉक्स ऑफिस पर धूम मचाई थी।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर कानकॉर्ड ☆ यू.एस.-हाँगकाँग ☆ वर्ष : १९७३ ☆ निर्माता : फ्रेड विनट्रॉब, रेमण्ड चाऊ ☆ निर्देशक : रॉबर्ट क्लाऊस ☆ प्रमुख कलाकार : ☆ ब्रुस ली/ जॉन सेकसन/ जिम केली/ शिहकिएन/ बॉबवाल ☆ रंगीन ☆ अवधि : ९८ मिनट।

द एकजोर्सिस्ट

द एकजोर्सिस्ट में हॉरर कथा कुशलता से पर्दे पर उतारी गई है। भूत-पिशाच द्वारा किसी व्यक्ति को झपट लेने से एक सामान्य व्यक्ति जो समझता है, बस वही इस फिल्म में दर्शाया गया है। इसलिए यह फिल्म इतनी भयावह है कि भारत में भी दर्शकों ने चीखें निकाली हैं। निर्माता ब्लैटी ने स्वयं १९४९ की एक सत्यकथा की छानबीन कर अपने निष्कर्ष निकालकर उपन्यास लिखा, जिस पर यह फिल्म आधारित है। उत्खनन में प्राप्त कुछ सामग्री से कई मौतें होती हैं। एक किशोरी भूतबाधा से पीड़ित होती है। इस भूत को भगाने के सारे प्रयास पर्दे पर ऐसी भयावहता प्रस्तुत करते हैं कि सभी दर्शक सहम जाएँ। डरावनी फिल्मों में सबसे कलात्मक इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर लोकप्रियता अर्जित की है। १९७७ एवं १९९० में इस फिल्म के दो भाग और बने।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर यू.एस. ☆ वर्ष : १९७३ ☆ निर्माता : विलियम पीटर ब्लैटी ☆ निर्देशक : विलियम फ्राइडकिन ☆ प्रमुख कलाकार : एलेन बर्स्टीन/ मैक्स वान सायडो/ ली जे कॉब/ किटी विन/ लिण्डा ब्लेअर ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२१ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ९ ऑस्कर, अजित २।

द टावरिंग इनफर्नो

दुर्घटना प्रधान फिल्मों में द टावरिंग इनफर्नो सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति मानी जाती है। तकनीकी कुशलता के कमाल से ही इस फिल्म का निर्माण संभव हुआ है। लगभग १४० लाख डॉलर्स खर्च कर इस फिल्म का निर्माण हुआ है। यह व्यय पर्दे पर साफ दिखता है। सैन फ्रान्सिस्को शहर में एक १३० मंजिला इमारत में आग लगती है। इस आग पर काबू पाने के प्रयास इस फिल्म में



द टावरिंग इनफर्नो

विराट स्तर पर पर्दे पर आते हैं। इस फिल्म के निर्माण में हॉलीवुड के दो बड़े स्टुडिओज फॉक्स एवं वार्नर ने अपने साधन जुटाए हैं। फिल्म इतनी जबर्दस्त गति से चलती है कि पूरा समय दर्शकों को बाँधे रखती है। भारत में बनी बर्निंग ट्रेन फिल्म इसी फिल्म की प्रेरणा पर है।

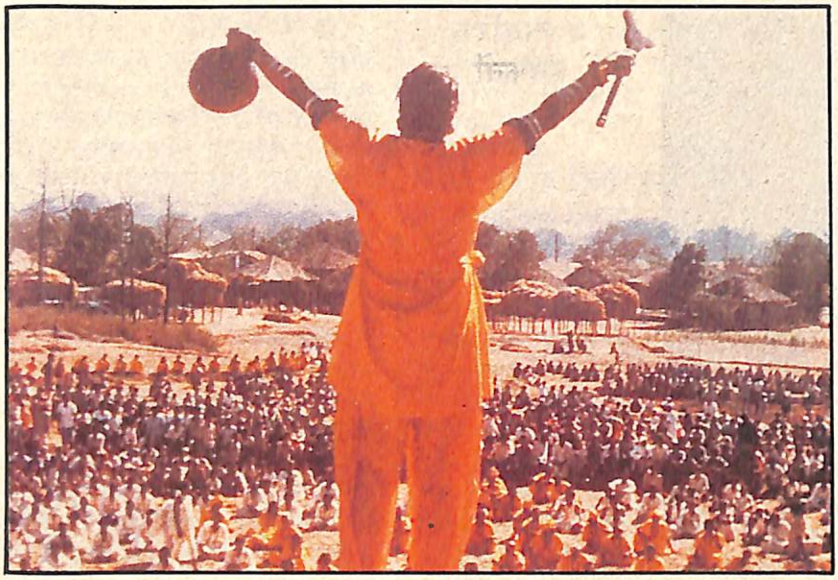
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ट्वेंटिएथ सेन्चुरी फॉक्स एवं वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९७४ ☆ निर्माण : इर्विंग अलेन ☆ निर्देशक : जॉन गुलिरमन एवं इर्विंग अलेन ☆ प्रमुख कलाकार : स्टिव मैक्विन/ पॉल न्यूमन/ विलियम होल्डन/ फया उनवे/ रॉबर्ट वान/ रिचर्ड चेम्बर. लैन ☆ रंगीन ☆ अवधि : १६५ मिनट। पुरस्कार ☆नामांकन ८ ऑस्कर। अजित ३।

जॉज

पीटर बेंचली के बेस्ट सेलर उपन्यास पर आधारित जॉज ने इतिहास रचा है। गॉन विद द विण्ड एवं द साउण्ड ऑव म्युजिक के पुराने कीर्तिमान खण्डित कर नए कीर्तिमान रचे हैं। इस फिल्म का बेहतर प्रचार/ प्रसार किया गया। टी -शर्ट्स बेचे गए। एक तटवर्ती पर्यटक रिसार्ट पर शार्क मछलियों के हिंसक आक्रमणों से हाहाकार मचता है। आखिर मछली को मार दिया जाता है। फिल्म इतनी सनसनीखेज बनी है कि दर्शकों के रोंगटे खड़े हो जाएँ। सनसनी/ भय/ एवं तनाव का बेहतरीन मिश्रण है। १२४ मिनट में से पहले ८२ मिनट तक वह भयावह मछली पर्दे पर नहीं आती। फिल्म निर्माण के सभी पहलुओं का कुशलता से उपयोग कर स्पीलबर्ग ने कमाल किया है। बाद में इसके तीन और भाग बने। किंतु मूल फिल्म की तो बात ही और है।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : यूनिवर्सल ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९७५ ☆ निर्माता : रिचर्ड डी जनुक ☆ निर्देशक : स्टीवन स्पीलबर्ग ☆ प्रमुख कलाकार : राय शीडर/ रॉबर्ट शॉ/ रिचर्ड ड्रेफस/ लोरैन गैरी/ मूरे हैमिल्टन ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२४ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ४ ऑस्कर। अजित ३।

क्लोज एनकाउंटर्स ऑव द थर्ड काइण्ड

इस फिल्म से स्पीलबर्ग ने ब्रह्माण्ड के 'अजूबे' उड़न तश्तरियों की टोह ली है। इस फिल्म के क्लाइमेक्स के पैंतीस मिनट तो ऐसे अद्भुत हैं कि दर्शक अवाक रह जाते हैं। फिल्म के अंतिम दृश्यों में ऐसी महाकाय उड़न तश्तरी मदरशिप पृथ्वी पर अवतरित होती दर्शाई गई है, जो स्पेशल इफेक्ट्स की सर्वोच्च उपलब्धि है। साइंस फिक्शन श्रेणी में यह फिल्म सर्वश्रेष्ठ है। पृथ्वी पर रहस्यमयी घटनाएँ घटती हैं। उनका उद्गम दूसरे ग्रहों से है। एक कुशल कथावाचक की तर्ज पर स्पीलबर्ग कहानी के सारे सूत्र अद्भुत रूप से गूँथकर दर्शकों को अचम्भित कर देता है। परग्रहीजीव पृथ्वी पर उतरते हैं। ब्रह्माण्ड के साथ पृथ्वी के निवासी सहयोगात्मक संबंध स्थापित करते हैं। माध्यम है संगीत। फ्रांस का निर्देशक त्रूफाँ इस फिल्म में वैज्ञानिक की भूमिका में हैं।



अँगरेजी ☆ निर्माण : कोलम्बिया ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९७७ ☆ निर्माता : ज्युलिआ एवं मिशेल फिलिप्स ☆ निर्देशक : स्टीवन स्पीलबर्ग ☆ प्रमुख कलाकार : रिचर्ड ड्रेफस/ फ्रैन्काइज त्रूफॉं/ मेलिना डिलॉन/ कैरी गूफी / बाब बलाबान/ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १३५ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ९ ऑस्कर। अजित २।

स्टार वार्स

पुरानी सीरियल्स एवं एक्शन फिल्मों बक रॉजर्स/ कैप्टन मार्वल से प्रेरणा लेकर जार्ज लुकास ने स्टार वार्स श्रृंखला (बाद में एम्पायर स्ट्राइक्स बैक एवं द रिटर्न आव द जेडाइ) के रूप में ऐसी फन्तासी एवं परी कथाएँ साइंस फिक्शन श्रेणी में प्रस्तुत की हैं, जिनसे बॉक्स ऑफिस पर सारे कीर्तिमान खंडित होकर फिल्मों को एक नया आयाम मिला है। ये फिल्में पलायनवादी हैं। किंतु दर्शकों ने इन फिल्मों को सिर आँखों पर बैठाया। इन फिल्मों से नया 'फिल्मी जादू (मूवी मैजिक) पर्दे पर आया है। जॉन विलियम्स का भविष्य का संगीत, आर टू डी टू एवं सी-थ्री पी ओ जैसे रोबोट एवं स्पेशल इफेक्ट्स इस फिल्म के वास्तविक सितारे हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ट्वेंटिएथ सेन्चुरी फाक्स ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९७७ ☆ निर्माता : गैरी कुर्तज ☆ निर्देशक : जॉर्ज लुकास ☆ प्रमुख कलाकार : मार्क हैमिल/ हैरिसन फोर्ड/ कारी फिशर/ पीटर कशिंग/ अलेक गिनिज / अन्थोनी डैनिएलस ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२१ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन १० ऑस्कर। अजित ७।

सुपरमैन

बच्चों की कॉमिक्स का हीरो सुपरमैन विराट पर्दे पर आ गया। तकनीकी कुशलता से निर्मित इस फिल्म का यही जबर्दस्त योगदान रहा है। बाद में और तीन फिल्में भी आईं, लेकिन सुपरमैन का आकर्षण बना रहा। क्रिप्टान ग्रह

द क्लोज एनकाउंटर ऑव थर्ड काइण्ड

विस्फोटित होता है। उससे पहले नन्हें बालक को पृथ्वी पर भेज दिया जाता है। फिल्म के ये प्रारंभिक दृश्य तो अद्भुत हैं। सुपरमैन का बालक अवस्था में शक्ति प्रदर्शन एवं बाद में आकाश विचरण फिल्मांकन के संदर्भ में तकनीकी अजूबा है। सुपरमैन की दोहरी जिंदगी, एक तो क्लार्क केन्ट के रूप में समाचारपत्र की नौकरी की और दूसरी सुपरमैन के रूप में दुनिया की सुरक्षा करने वाले सुपर हीरो, मजेदार रूप से पर्दे पर आती है।



सुपरमैन

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर एवं सालकिण्ड ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९७८ ☆ निर्माता : पीअरे स्पैन्गलर ☆ निर्देशक : रिचर्ड डोनान ☆ प्रमुख कलाकार : मार्लन ब्रांडो/ जीन हैकमन/ क्रिस्टोफर रीव/ मार्गोट किडर/ नेड बीटी/ ग्लीन फोर्ड ☆ रंगीन ☆ अवधि : १४३ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ४, ऑस्कर। अजित एक।

द गॉडस् मस्ट बी क्रैजी

दक्षिण अफ्रीका की एक फिल्म निर्माण की टोली है। इस टोली में एक सदस्य है, जो सब कुछ कर सकता है। मसलन एक्टिंग से लेकर निर्माता/ निर्देशन भी। इस हरफनमौला का नाम है- जामी उस! यह फिल्म बोटस्वाना में बनी एवं ऑस्ट्रेलिया से अमेरिका गई। इस फिल्म में तीन उपकथानक है। बड़े मनोरंजक ढंग से तीनों कहानियाँ एक- दूसरे में मिलती है। एक आदिम कबीले में हवाई जहाज से फेंकी गई कोका कोला की बोतल तूफान मचाती है। दूसरी ओर विद्रोही गुट सत्ता कर कब्जा करना चाहता है। तीसरी ओर प्यार पलता है। श्रेष्ठ कॉमेडी के रूप में यह फिल्म सीख भी देती है। आधुनिक जीवनयापन की शैली पर कटाक्ष भी करती है। मनोरंजन भी करती है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कैट बोटस्वाना ☆ वर्ष : १९८१ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : जामी उस ☆ प्रमुख कलाकार : मारिअस वेयेर्स/ सान्ड्रा प्रिन्सलू/ एनजाउ/ लारे वरवे/ मिशेल थीस/ जामी उस ☆ रंगीन ☆ अवधि : १०८ मिनट।

रैडर्स ऑव द लॉस्ट आर्क

यह **मैटिनी** शो में लगने वाली फिल्मों के समान सनसनीखेज एक्शन फंतासी फिल्म है। इंडियाना जोन्स एक चाबुक चलाने वाला पुरातत्वशास्त्री है। विश्वविद्यालय में पढ़ाता है। शौकिया खतरों को मोल लेता है। कथानक तीस के दशक के उत्तरार्ध का है। हर पल खतरों से खेलता इन्डी फिल्म के प्रारंभ में ही दक्षिण अमेरिका के घने जंगलों में हाथ में आया एक खजाना छोड़ने पर मजबूर होता है। बाद में नात्जी जिस आर्क ऑव द कोवेनन्ट की खोज में है जिससे दैवी शक्ति पाकर नात्जी अमरत्व प्राप्त करना चाहते हैं, उसी की टोह में इन्डी भी है। दिलचस्प मोड़ लेकर ढेर सारे स्पेशल इफेक्ट्स से चकाचौंध फिल्म का सुखद अंत होता है। इस फिल्म के दो और भाग बनाए गए हैं।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : पैरामाउन्ट ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९८१ ☆ निर्माता : फ्रैन्क मार्शल ☆ निर्देशक : स्टीवन स्पीलबर्ग ☆ प्रमुख कलाकार : हैरिसन फोर्ड/ कारेन एलेन/ डेनहोम इलिऑट/ पॉल फ्रीमन/ रोनाल्ड लासे ☆ रंगीन ☆ अवधि : ११५ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ९, ऑस्कर। अजित ५।

चैरियट्स ऑव फायर

इस ब्रिटिश फिल्म में १९२४ के पेरिस ओलंपिक खेलों में दो धावकों की कहानी है।

दोनों धावकों ने एरिक लिडेल एवं हैरोल्ड अब्राहमस् ने इस ओलिंपिक में इनाम जीते थे। जीत की तमन्ना क्या होती है? और क्यों होती है? इन आधारभूत प्रश्नों की खोज करती यह फिल्म एक मानवीय दस्तावेज है। जीत व्यक्तिगत नहीं होती। इस फिल्म में एक खिलाड़ी जीत चाहता है, ईश्वर की महिमा के लिए, दूसरा पूर्वाग्रह से पीड़ित समाज में स्थान प्राप्त करने। ईश्वरीय एवं सामाजिक उद्देश्यों का मार्मिक विवेचन इस फिल्म के संवादों से प्रकट होता है। फिल्म के कई दृश्य भावनात्मक उत्कटता की ऊँचाई अर्जित करने वाले हैं।



चेरिअट्स ऑव फायर

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : अलाइड स्टारस एव एनिग्मा ☆ यू.के. ☆ वर्ष : १९८१ ☆ निर्माता : डेविड पुटनम ☆ निर्देशक : ह्यूज हडसन ☆ प्रमुख कलाकार : बेन क्रॉस/ इयान चार्लसन/ निगेल हैवर्स/ एलिस क्रिग/ जॉन गिलगुड/ लिण्डसे अण्डरसन ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२३ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ७, ऑस्कर। अर्जित ४।

फर्स्ट ब्लड

स्टैलोन पूर्व सैनिक है। दोस्त से मिलने एक शांत कस्बे में आता है। दोस्त के निधन का समाचार मिलने से दुखी होकर वापस जाना ही चाहता है कि शेरिफ अनावश्यक रूप से उससे पंगा लेता है। स्टैलोन एक अनियंत्रित संहारक मशीन जैसा बन जाता है। अकेला सारे पुलिस फोर्स से मुकाबला करता है। अंततः एक पुराने सेनाधिकारी की समझाइश से स्वयं को कानून व्यवस्था के प्रति समर्पित कर देता है। सरल- सी कहानी पर्दे पर सनसनीखेज प्रस्तुति बन गई है। इस फिल्म में वास्तविक खलनायक समाज है। सुंदर पृष्ठभूमि में चुस्त गति से चलने वाली यह फिल्म एक विद्रोही एंटी हीरो रैम्बो को स्थापित करती है। बाद में रैम्बो पर दो और फिल्में बनी हैं, किन्तु फर्स्ट ब्लड अव्वल है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ओरिऑन ☆ यू.एस ☆ वर्ष : १९८२ ☆ निर्माता : बज फैटशॉंस ☆ निर्देशक : टेड कॉचेफ ☆ प्रमुख कलाकार : सिल्वेस्टर स्टैलोन/ रिचर्ड क्रेना/ ब्रायन डेनेही/ डेविड कारूसो ☆ रंगीन।

इ.टी. द एक्स्ट्रा टेरिस्टरीअल

क्लोज एनकाउन्टर्स ऑव द थर्ड काइण्ड जैसी मौलिक साइंस- फिक्शन फिल्म बनाने के बाद स्पीलबर्ग ने इ.टी. बनाकर बच्चों के लिए ही नहीं, वयस्कों के लिए भी एक परिकथा प्रस्तुत की है। स्पीलबर्ग पर वाल्ट डिजने का प्रभाव सर्वाधिक है और इ.टी. फिल्म डिजने शैली की स्पीलबर्ग की फिल्म मानी जाती है। परग्रह से आया एक जीव पृथ्वी पर अटक जाता है। थॉमस नाम के बालक के घर पर आश्रय लेता है। यह परग्रही जीव जादुई क्षमताएँ रखता है। कार्लो रैमबाल्डी द्वारा निर्मित यह जीव पर्दे पर देखना एक अद्भुत अनुभव है। अंततः यह जीव अपने बिछुड़े परग्रही जीवों से जा मिलता है। पूरी फिल्म स्पीलबर्ग के जादुई स्पर्श से आलोकित है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : यूनिवर्सल ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९८२ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : स्टीवन स्पीलबर्ग ☆ प्रमुख कलाकार : डी वैलेस/ हेनरी थॉमस/ पीटर कोयोट/ रॉबर्ट मॅक नॉटन/ ड्र बैरीमूर ☆ रंगीन ☆ अवधि : ११५ मिनट। ☆ पुरस्कार : नामांकन १०, ऑस्कर। अर्जित ४।

सत्तर के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. स्टार वार्स : १९७७
२. जॉज : १९७५
३. ग्रीज : १९७८
४. द एक्जार्सिस्ट : १९७३
५. द गॉड फादर : १९७२
६. सुपरमेन : १९७८
७. क्लोज एनकाउन्टर्स ऑव द थर्ड काइन्ड : १९७७/८०
८. द स्टिंग : १९७३
९. सेटर-डे नाइट फीवर : १९७७
१०. नेशनल लेम्पून्स एनीमल हाउस : १९७८

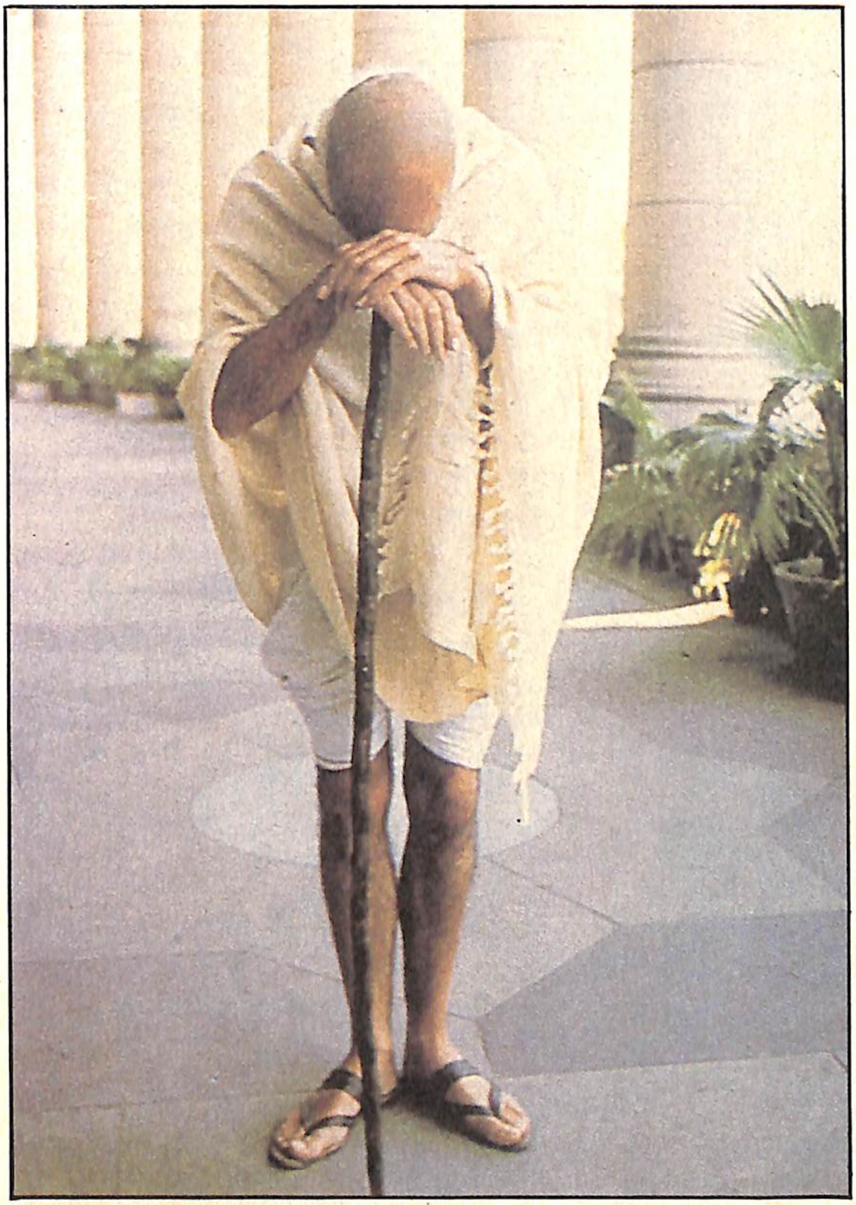
गाँधी

गाँधी एक फिल्म नहीं एक सामाजिक- राजनीतिक- सांस्कृतिक दस्तावेजी कृति है। रिचर्ड अटनबरो की यह फिल्म विशाल कैनवास पर भारत के स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में महात्मा गाँधी के अवतरण को पर्दे पर प्रस्तुत करती है। चुस्त, तकनीकी दृष्टि से परिपूर्ण, सधा अभिनय, सजीवता एवं वास्तविकता से पूर्ण यह फिल्म पर्दे पर एक महाकाव्य जैसी गंभीर और प्रभावशाली है। बेन किंग्सले द्वारा गाँधी की भूमिका अभिनय की श्रेष्ठ अभिव्यक्ति है। जलियाँवाला कांड, दांडी मार्च से लेकर अंतिम त्रासदी तक सारे दृश्यों का संयोजन बेहद प्रभावी है। इस फिल्म को नामांकित ११ में से आठ ऑस्कर प्राप्त हुए थे।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कोलम्बिया- आईएफआई, गोल्डक्रेस्ट- एनएफडीसी ☆ यू.के., यू.एस.ए., भारत ☆ वर्ष : १९८२ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : रिचर्ड अटनबरो/ सहनिर्मात्री : रानी दुबे ☆ संगीत : रविशंकर एवं जॉर्ज फेन्टान ☆ प्रमुख कलाकार : बेन किंग्सले/ कैन्डिस बर्जन/ एडवर्ड फॉक्स/ जॉन गिलगुड/ ट्रेवर होवार्ड/ जॉन मिल्स/ रोहिणी हटंगड़ी/ रोशन सेठ ☆ रंगीन ☆ अवधि : १८८ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ११ ऑस्कर। अर्जित ८।

पोलिस एकेडेमी

पोलिस एकेडेमी की कल्पना अफलातूनी है। एकेडेमी सभी नागरिकों के लिए खुली है, जो चाहे भर्ती हो जाए। ऐसे में चंद नमूने पोलिस एकेडेमी में भर्ती होकर ट्रेनिंग प्राप्त करने लगते हैं। खूब मजेदार प्रसंग है। इस फिल्म में... मिशेल विन्स्लो जो किसी भी प्रकार की आवाज निकालने की क्षमता रखता है, मजा ला देता है। दृश्य छोटे- छोटे हैं। बिखरे भी हैं। फिल्म में



गाँधी : बेन किंगसले

अच्छी- खासी कॉमेडी, कई स्टंट्स और कई गैग्स् हैं। इस फिल्म के बाद में पाँच भाग बने हैं।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : वार्नर, लैड कं ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९८४ ☆ निर्माता : पॉल मासलान्स्की ☆ निर्देशक : ह्यूज विल्सन ☆ प्रमुख कलाकार : स्टीव गटनबर्ग/ जी. डब्ल्यू. बैली/ जॉन गेनेस/ मिशेल विन्स्लो/ किम काटरेल/ बुबा स्मिथ ☆ रंगीन ☆ अवधि : ९५ मिनट।

बैटमन

बैटमन डी.सी. कॉमिक्स में नियमित आता रहा है। १९६६ में ट्वेंटिएथ सेंचुरी फॉक्स ने ॲडम वेस्ट को बैटमेन बनाकर फिल्म बनाई और बैटमन के तमाम दुश्मन मसलन जोकर/ कैट वुमन/ पेनग्वुन/ रिडलर इस फिल्म में थे। बैटमन का साथी रॉबिन भी था। किन्तु १९८९ की टिम बर्टन की बैटमन फिल्म तकनीकी एवं कथानक की दृष्टि से स्टाइलिश है। जैक निकोलसन का जोकर तो अद्भुत है। दृश्यों के संयोजन में इतनी सुंदरता है। संगीत भी बेहतरीन है। केवल बच्चों को ही नहीं, बड़ों को भी लुभाने वाली फिल्म है यह। बाद में १९९२ में बैटमन रिटर्न के रूप में टिम बर्टन ने मिशेल कीटन एवं डैनी डी विटो, मिशेली फिफर को लेकर फिल्म बनाई किन्तु बाद की फिल्म वीभत्स है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ग्युबर- पीटर्स, वार्नर ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९८९ ☆ निर्माता : जोन पीटर्स, पीटर ग्युबर ☆ निर्देशक : टिम बर्टन ☆ प्रमुख कलाकार : मिशेल कीटन/ जैक निकोलसन/ किम बोसेन्जर/ रॉबर्ट वूहल ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२६ मिनट ☆ पुरस्कार : एक ऑस्कर।

टर्मिनेटर- २ : द जजमेन्ट डे

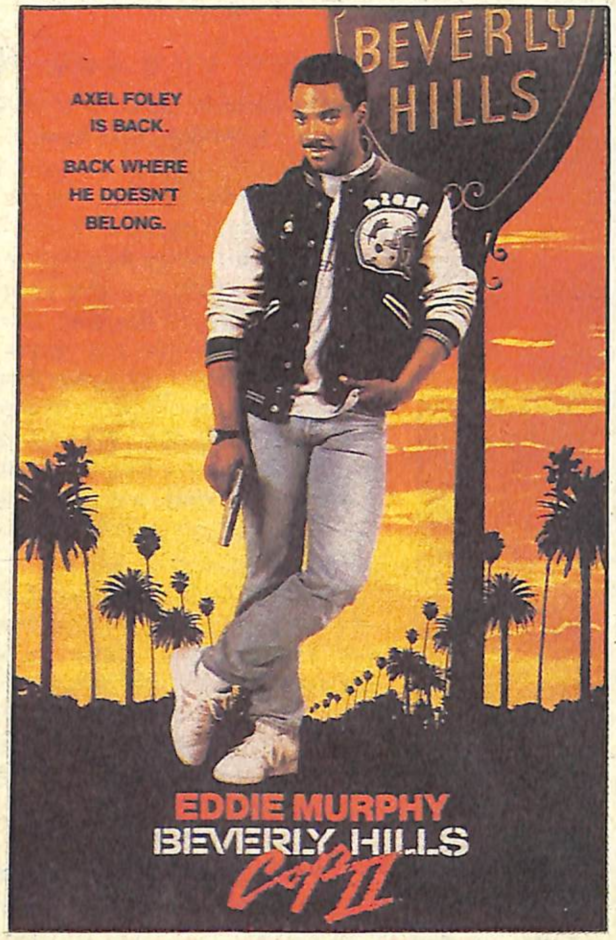
जेम्स कैमेरून के निर्देशन में द टर्मिनेटर फिल्म १९८४ में बनी है। उसकी कहानी के सूत्र लेकर टर्मिनेटर- २ बनी है। यह दूसरा भाग अधिक प्रभावशाली है। इन्डस्ट्रियल लाइट्स एंड मशीनस् संगठन की सहायता से टर्मिनेटर- २ में अकल्पनीय स्पेशल इफेक्ट्स निर्मित किए गए हैं। इस फिल्म का बजट १००० लाख डॉलर्स था और यह व्यय पर्दे पर महसूस भी होता है। भविष्य के युद्ध के दृश्य बहुत भयावह हैं। आधारभूत रूप से इस साइंस फिक्शन फिल्म में हॉरर (डरावने) तत्व भी जुड़ गए हैं। कथानक ई.स. २०२१ से पीछे वर्तमान में आता है। दर्शक इन तथ्यों को भले ही न पकड़ सके, फिल्म की दर्शकों पर पकड़ इतनी जबर्दस्त है कि दर्शक कहानी की गहराई में जाना ही भूल जाते हैं। बस देखते- सुनते रहते हैं।
☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : कोरोल को, पॅसिफिक वेस्टर्न ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९९१ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : जेम्स कैमेरून ☆ प्रमुख कलाकार : अरनाल्ड स्केवेरजेनेगर/ लिन्डा हैमिल्टन/ एडवर्ड फरलाँग/ रॉबर्ट पैट्रिक ☆ रंगीन ☆ अवधि : १३६ मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ६, ऑस्कर। प्राप्त चार।

अलादीन

अलादीन मूल अँगरेजी फिल्म होकर भारत में हिंदी के साथ अन्य भाषाओं में डब होकर प्रदर्शित हुई। जुरासिक पार्क/ टू लाइज जैसा व्यवसाय नहीं करने पर भी बॉक्स ऑफिस पर सफल रही है। अलादीन और उसके जादुई चिराग की कहानी सभी को ज्ञात है। डिजनी

श्वेत-श्याम : टॉप टेन फिल्म

१. यंग फ्रेंकस्टीन : १९७४
२. शिंडलर्स लिस्ट : १९९३
३. ब्लेक रैन : १९९०
४. पेपर मून : १९९३
५. मेनहट्टन : १९७०
६. मॉम एंड डैड : १९४४
७. हूज अफ्रेड ऑव व्ृजिनिया वुल्फ : १९६६
८. इजी मनी : १९८३
९. द लास्ट पिक्चर-शो : १९७१
१०. फ्रॉम हिअर टू इटरनिटी : १९५३



एडी मरफी

अस्सी के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. ई.टी. (द एक्सट्रा टेरिस्टरीअल):१९८२
२. रिटर्न ऑव द जेडी : १९८३
३. बेटमेन : १९८९
४. द एम्पायर स्ट्राइक्स बेक : १९८०
५. घोस्ट बस्टर्स : १९८४
६. रेडर्स ऑव द लास्ट आर्क : १९८१
७. इंडिआना जोन्स एंड द लास्ट क्रूसेड : १९८९
८. इंडिआना जोन्स एंड द टेम्पल ऑव ड्रम : १९८४
९. बेबरली हिल्स कॉप : १९८४
१०. बेक टू द फ्यूचर : १९८५

नब्बे के दशक की टॉप टेन फिल्म

१. जुरासिक पार्क : १९९३
२. होम अलोन : १९९०
३. टरमिनेटर-२ : १९९१
४. होम अलोन-२ (लास्ट इन न्यूयार्क) : १९९२
५. बेटमेन रिटर्नस् : १९९२
६. मिसेज डाउटफायर : १९९३
७. घोस्ट : १९९०
८. द फ्युजिटीव : १९९३
९. रॉबिन हुड : प्रिंस ऑव थीव्ज : १९९१
१०. अलादीन : १९९२

●प्रस्तुति : आदर्श गर्ग

स्टुडिओ ने इस कहानी में फेरबदल कर उसमें गीत- नृत्य- संगीत जोड़कर नवीनता लाई है। मूल अँगरेजी संस्करण में रॉबिन विलियम्स ने जीन को आवाज दी है। डिजनी परंपरा के अनुरूप अलादीन में एनिमेशन परिष्कृत है। साइकीडेलिक रंग संगति आकर्षक है। इस फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि इस फिल्म के साथ डिजनी स्टुडिओ एनिमेशन के क्षेत्र में पुनश्च अग्रणी सिद्ध हुआ है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माता : डिजनी स्टुडिओ ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९९२ ☆ निर्माता एवं निर्देशक : जॉन मस्कर, रॉन क्लेमेन्ट्स ☆ एनिमेशन फिल्म ☆ रंगीन ☆ अवधि : ९० मिनट ☆ पुरस्कार : नामांकन ५ ऑस्कर। अर्जित २।

जुरासिक पार्क

स्पीलबर्ग की जुरासिक पार्क फिल्म भारत में हिंदी संस्करण में भी आई है और बॉक्स ऑफिस पर इतनी धूम मचाई कि अच्छी- अच्छी हिंदी फिल्में धराशाई हो गई। स्पीलबर्ग की जुरासिक पार्क फिल्म एक अजूबा है। साइंस- फिक्शन फंतासी है। जेनेटिक इंजीनियरिंग के क्लिष्ट विषय पर कथानक आधारित है। डायनोसोर जैसे अतीत के विलुप्त महाकाय प्राणियों से संबंधित है। बच्चे- बूढ़े सभी इस फिल्म के अनूठेपन को लेकर इस फिल्म की ओर ऐसे आकर्षित हुए कि भारत के फिल्म निर्माण व्यवसाय में तूफान खड़ा हो गया। स्पीलबर्ग ने इस फिल्म के दृश्यों के लिए डायनोसोर के विशाल चलित मॉडेल बनाए। कम्प्यूटर की सहायता से भी अकल्पनीय दृश्य निर्मित किए हैं।

☆ अँगरेजी निर्माण : यूनिवर्सल एवं ऑम्ब्लेन ☆ यू.एस. वर्ष : १९९३☆ निर्माता : कैथलिन केनेडी, गेराल्ड आर. मोलेन ☆ निर्देशक : स्टीवन स्पीलबर्ग ☆ प्रमुख कलाकार : सैम नील/ लॉरा डर्न/ जैफ गोल्ड ब्लम/ रिचर्ड अटनबरो/ बाब पेक/ मार्टिन फेरेरो ☆ रंगीन ☆ अवधि : १२६ मिनट ☆ पुरस्कार : ३ ऑस्कर अर्जित।

स्पीड

स्पीड फिल्म हिंदी में डब होकर भारत भर में प्रदर्शित हुई और इस फिल्म के नॉन स्टाप एक्शन ने दर्शकों को प्रभावित किया है। फिल्म भले ही अविश्वसनीय लगे, किन्तु जिस गति से पर्दे पर आती है, दर्शकों को दंग कर देने में सफल रही है। फिल्म में तीन भाग हैं- पहला २३ मिनट का प्रस्तावना का भाग डाई हार्ड से मिलता-जुलता लिफ्ट में आतंक का है। दूसरा भाग ६७ मिनट का है जो श्रेष्ठ है। बस की गति ५० से कम होगी, तो बस में बम विस्फोट होगा। बस कथानक दौड़ता रहता है। अंतिम २५ मिनट अंडर ग्राउंड ट्रेन के हैं। अंत में ट्रेन सड़क पर आ जाती है। डेनिस हॉपर का खलनायक श्रेष्ठ है किनु रीव्ज का नायक तो सुपर हीरो है।

☆ अँगरेजी ☆ निर्माण : ट्वेंटिएथ सेंचुरी फॉक्स ☆ यू.एस. ☆ वर्ष : १९९४ ☆ निर्माता : मार्क गार्डन ☆ निर्देशक : जान डी बॉन्ट ☆ प्रमुख कलाकार : कीनु रीव्ज/ डेनिस हॉपर/ साण्ड्रा बुलाक/ जो मोर्टन/ जेफ डैनिएल्स/ ॲलन रक ☆ रंगीन ☆ अवधि : ११५ मिनट ☆ पुरस्कार : दो ऑस्कर पुरस्कार।

■

ऑल अंडर द सन

सितारों का सुनहरा संसार

विश्व सिनेमा

खण्ड : चार

लॉरेन और एनेट बेनिंग:
फिल्म 'बग्सी' १९९१



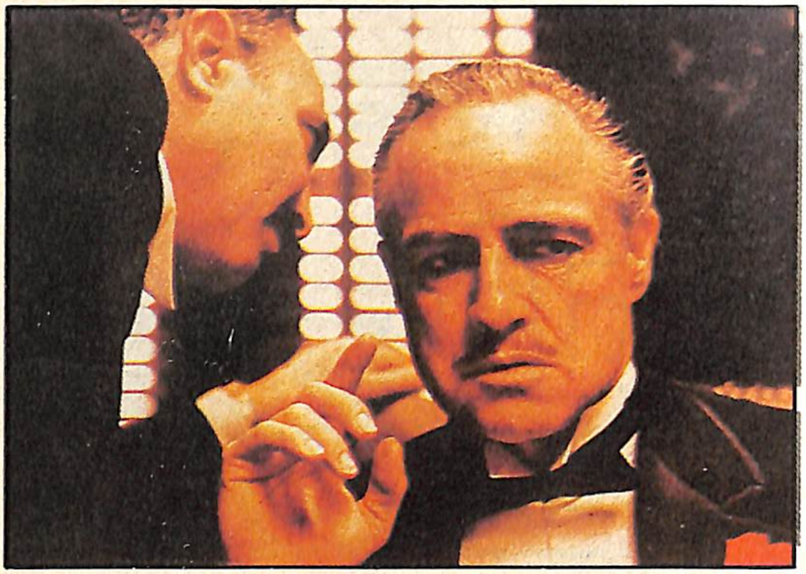
रजतपट की अपनी सतरंगी रोशनी से जगमग करते हैं फिल्मी सितारे। प्रकाश की इन परछाइयों की एक मायावी दुनिया होती है, जो पूरी दुनिया के लोगों को अपने जादू से सम्मोहित कर रखती है। भ्रम और सम्मोहन का यह सिलसिला पूरे सौ साल से चला आ रहा है। समाज और पीढ़ियों को ये सितारे अपने आचरण तथा प्रभा मण्डल से प्रभावित करते हैं। इन सितारों का निजी जीवन और संघर्ष, कथा-व्यथा आम आदमी के दुःख-दर्द और पीड़ा के समान ही होती है। फिल्म माध्यम का निर्देशक ही ऐसा व्यक्ति होता है, जो 'लाइम-लाइट' में लाकर सड़क के आदमी को सितारा बना देता है। विश्व सिनेमा के ऐसे लोकप्रिय और बहुचर्चित कलाकारों एवं फिल्मकारों के जीवन का संक्षिप्त वृत्तांत इस खण्ड में है। प्रस्तुतकर्त्ता हैं-
□ लोकेन्द्र चतुर्वेदी □ राहुल ब्रजमोहन और □ श्रीराम ताम्रकर

मार्लन ब्राण्डो

'गॉडफादर' न केवल हॉलीवुड बल्कि विश्व सिनेमा की सबसे सफल फिल्म के बतौर जानी जाती है। इसमें केंद्रीय भूमिका निभाने वाले अभिनेता 'मार्लन ब्राण्डो' कैरियर के अंतिम वर्षों में लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गए थे। ब्राण्डो को उनके पुरुषोचित व्यक्तित्व और विशिष्ट अभिनय शैली के लिए जाना जाता है। १९४७ में टेनेसी विलियम्स के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'ए स्ट्रीटकार नैम्ड डिजायर' से ब्राण्डो ने एक्टिंग कैरियर की शुरूआत की थी। एक युवा सैनिक की भूमिका में उन्होंने दर्शकों को काफी प्रभावित किया। इसी प्रकार क्रांतिकारी नेता के रोल के लिए वह फिल्म वीवा जपाटा (१९५२) में सराहे गए। 'द वाइल्ड वन' में उन्होंने लुटेरों के एक दल के मुखिया की भूमिका निभाई थी। फिल्म को हिंसा के अत्यधिक चित्रण के लिए इंग्लैंड में प्रतिबंधित करना पड़ा। लेकिन फिल्म 'वाइल्ड वन' अपनी किस्म की हिंसापरक फिल्मों के लिए प्रेरणास्रोत बन गई थी। योरपीय देशों में इसके बाद मारधाड़ आधारित फिल्मों को काफी ज्यादा पसंद किया जाने लगा। जूलियस सीजर/ डिजायरे/ गायस एंड डॉल्स/ वन आइड जैक आदि फिल्मों में मार्लन ब्राण्डो ने मिथकीय एवं औपन्यासिक धरातल वाले चरित्र निभाए। द म्यूटिनी ऑन बाउंटी (१९६२) और द चेस (१९६६) ब्राण्डो को कलात्मक सिनेमा में पहचान दिलाने के लिए सहायक रहीं। मार्लन ब्राण्डो अपने जीवन में रंगभेद के कड़े विरोधी रहे हैं। क्वीमादा (१९६८) फिल्ममें उन्होंने एक हब्शी व्यक्ति की भूमिका के जरिए अपनी नस्लभेद विरोधी विचारधारा को परदे पर प्रस्तुत किया। १९७१ में निर्मित फिल्म 'गॉडफादर' में माफिया सरगना की भूमिका के लिए ब्राण्डो लोकप्रिय सिनेमा के दर्शकों में अत्यधिक पसंद किए गए। द 'लास्ट टैंगो इन पेरिस' (१९७२) उनके कैरियर की अंतिम महत्वपूर्ण फिल्म थी। भारतीय फिल्म अभिनेता संजय दत्त ने ब्राण्डो की विशिष्ट केशविन्यास शैली अपनाई है। उनके अलावा कई अन्य भारतीय सिने कलाकार मार्लन ब्राण्डो के प्रशंसक हैं। व्यावसायिक सिनेमा में सफलता के लिए ब्राण्डो जैसा 'करिश्मा' सितारों के लिए जरूरी है।

टॉप टेन माफिया फिल्म

१. द गॉड फादर : १९७२
२. द फर्म : १९९३
३. द गॉडफादर, पार्ट थ्री : १९९०
४. द अनटचेबल्स : १९८७
५. द गॉडफादर, पार्ट टू : १९७४
६. स्कार फेस : १९८३
७. गुडफेलास : १९९०
८. प्रिजीज ऑनर : १९८५
९. द कॉटन क्लब : १९८४
१०. मेरीड टू द मॉब : १९८८



द गॉड फादर : मार्लन ब्राण्डो

वेनेसा रेडग्रेव

सर माइकेल रेडग्रेव की इस प्रतिभा शालिनी पुत्री को अभिनय विरासत में मिला। लंदन के सेंट्रल स्कूल ऑफ ड्रामा एंड स्पीच में प्रशिक्षण प्राप्त कर रंगमंच अभिनेत्री के रूप में उन्होंने अपना कैरियर शुरू किया। रंगमंच पर सफलता प्राप्त करने के बाद 'बिहाइण्ड द मास्क' (१९५९) में पहली बार परदे पर आईं। ब्लोअप (१९६६) में उनकी अभिनय प्रतिभा को समालोचकों ने सराहा। मार्गन (१९६६) में अपने उत्कृष्ट अभिनय के कारण उन्होंने सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के ऑस्कर अवार्ड हेतु नामांकित होने में सफलता पाई। विवादास्पद एवं चुनौतीपूर्ण भूमिकाएँ वे सहजता से स्वीकार करती रहीं। 'आइसाडोरा' (१९६८) में भूमिका के कारण एक ओर तो उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का अवार्ड मिला वहीं दूसरी ओर वेटिकन के धर्मगुरुओं के कोप का शिकार होना पड़ा। 'मेरी क्वीन आफ स्कॉट' (१९७१) में वे पुनः श्रेष्ठ अभिनेत्री के रूप में पुरस्कृत हुईं। अभिनय के साथ वामपंथी राजनीतिक विचारधारा के कारण वे सदा विवादों से घिरी रहीं। 'अगाथा' (१९७९) में उन्होंने उपन्यास लेखिका अगाथा क्रिस्टी की भूमिका की। मर्चेंट आइवरी की फिल्मों 'बोस्टोनियन्स' (१९८४) तथा 'हावर्ड्स एंड (९२) में सशक्त अभिनय के लिए वे ऑस्कर अवार्ड हेतु नामांकित की गईं। 'वाट एवर हेपन्ड टू बेबी जेन?' में वे अपनी बहन लिन के साथ आईं। उनकी दोनों पुत्रियाँ भी अभिनेत्री हैं।

विलियम होल्डन

रातोंरात स्टार बन जाने वाले सौभाग्यशाली अभिनेता विलियम होल्डन जैसे हॉलीवुड में कम ही हैं। जूनियर स्कूल के सामान्य विद्यार्थी के रूप में अभिनय करते हुए उन्हें पैरामाउण्ट फिल्म कंपनी के प्रतिनिधि ने देखा। इस खूबसूरत किशोर को फौरन अनुबंधित कर लिया गया। शूटिंग के दौरान पाया गया यह अनुभवहीन युवक निर्देशक को बुरी तरह निराश कर रहा है। एक स्थिति ऐसी भी आई कि इसे फिल्म से निकाल दिया जाए। यह फिल्म थी गोल्डन बॉय (१९३९)। फिल्म की कहानी ऐसे बॉक्सर युवक की थी, जो वायलिन वादक बन जाता है। इस फिल्म के बाद उसकी माँग लगातार बढ़ती गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान होल्डन ने अमेरिकी फौज में अधिकारी के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। सन् १९४७ से वे परदे पर पुनः लौटे तथा 'वेरायटी गर्ल' और 'ब्लेज ऑफ जून' में उत्कृष्ट अभिनय कर दर्शकों के चहेते बने। महायुद्ध के बाद उनके अभिनय में काफी परिपक्वता आई। 'सनसेट बोलीवार्ड' (१९५०) तथा 'द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई' में उनके अभिनय को फिल्मी समालोचकों ने सराहा। उनकी अन्य फिल्मों में अवर टाउन (१९४०)/ बॉर्न यस्टर डे (१९५१)/ सेब्रिना (१९५४)/ पिकनिक (१९५६)/ द की (१९५७) प्रमुख हैं।

एंथनी क्विन

सर्वतोमुखी प्रतिभा वाले इस अभिनेता ने६ दशक तक फिल्मी दुनिया में अभिनेता के तौर पर अपनी सशक्त पहचान बनाए रखी। चरित्र अभिनेता के रूप में हर तरह की भूमिका को बखूबी अदा करते रहने के साथ यदाकदा वे शीर्ष भूमिकाओं में भी आए हैं। आइरिश पिता और मैक्सिकन माता की इस संतान ने १९३६ में छोटी-मोटी भूमिकाओं के जरिए फिल्मों में

प्रवेश किया। पैरामाउण्ट के लिए १९४० तक काम करते हुए वे गुण्डे/ बदमाश और रेड इण्डियन के रूप में परदे पर आते रहे। इस दौरान उनकी प्रमुख फिल्मों में 'द पेन्समेन' (१९३६)/ 'द लास्ट ट्रेन फ्रॉम मेड्रिड' (१९३७)/ 'किंग ऑफ अलमार्श' (१९३८)// 'रोड टू सिंगापुर (१९४०) प्रमुख हैं। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान क्विन वार्नर ब्रदर्स एवं फॉक्स के लिए काम करते रहे। निर्देशक सेसिल बी डीमिल की पुत्री कैथरीन से उनका विवाह हुआ। 'सिटी फॉर कांक्वेस्ट' (१९४०)// 'ब्लाड एण्ड सेण्ड' (१९४१)/ब्लैक स्वान (१९४२)// रोड टू मोरक्को (१९४२)/गैंगस्टर (१९४४) उनकी प्रमुख फिल्में प्रदर्शित हुईं। पत्नी कैथरीन के साथ वे ब्लैक गोल्ड (१९४७) में परदे पर आए। इस फिल्म में एक दयावान रेड इण्डियन रईस के रूप में उन्होंने अपने जीवन का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया। 'सिन्दबाद द सेलर' (१९४७)//द ब्रेव बुल (१९५१) ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। उत्कृष्ट अभिनय के लिए पहला एकेडमी अवार्ड 'विवा झपाटा' (१९५२) में मिला। इस फिल्म में वे मैक्सिको के क्रांतिकारी (मार्लो ब्राण्डो द्वारा अभिनीत) के भाई के रूप में अभिनय कर रहे थे। 'ला स्ट्राडा' (१९५४)// यूलेसिस (१९५५)// लास्ट फॉर लाइफ (१९५६) इस फिल्म में उत्कृष्ट सहायक भूमिका के लिए क्विन को पुनः ऑस्कर मिला। 'द विण्ड (१९५७) में वे फिर से ऑस्कर हेतु नामांकित किए गए। झोरबा द ग्रीक (१९६४) में उन्हें पुनः एकेडमी अवार्ड मिला। सन १९६५ में उन्होंने अपनी पत्नी कैथरीन को तलाक दे दिया। लास्ट एक्शन हीरो (१९९४) उनकी ताजी फिल्म है।



एंथनी क्विन

जूली क्रिस्टी

ब्रितानवी अभिनेत्री जूली क्रिस्टी लोकप्रिय और गंभीर सिनेमा में समान रूप से सक्रिय रही हैं। जॉन श्लेसिंगर की फिल्म 'बिली लायर' (१९६३) से जूली ने अभिनय कैरियर की शुरूआत की थी। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक ग्लैमरस अभिनेत्री के रूप में उनकी पहचान १९६५ में प्रदर्शित फिल्म 'डार्लिंग' से बनी। इसमें उन्होंने एक फैशन मॉडल की भूमिका निभाई थी। स्वाभिमानी, शोख, आधुनिका के किरदार में जूली को आम दर्शक वर्ग के बीच बेहद पसंद किया गया। प्रसिद्ध फ्रांसीसी निर्देशक त्रूफो की दो साहित्यिक पृष्ठभूमि वाली फिल्मों 'फेरनहाइट- ४५१' और 'फॉर फ्रॉम द मैडिंग क्राउड' (१९६७) में प्रभावोत्पादक अभिनय के द्वारा जूली ने गंभीर सिनेमा के धरातल पर अपनी पहचान स्थापित की। पिट्युलिया (१९६८), इन सर्च ऑफ ग्रेगरी (१९७०) और 'द गो बिटविन' (१९७१) जैसी फार्मूला फिल्मों के लिए जूली ने हॉलीवुड का रुख किया। इसके बाद वे पुनः ब्रिटेन लौटीं। वापसी के उपरांत उनकी अगली फिल्म 'मैकाबे एंड मिसेस मिलर' (१९७१) के लिए उन्हें ऑस्कर अवॉर्ड हेतु मनोनीत किया गया। जूली क्रिस्टी ने अपने कैरियर में विविध रंगी भूमिकाएँ निभाईं। १९७५ में निर्मित फिल्मों 'शैम्पू' और 'हैवन केन वेट' में उनकी हास्यप्रधान भूमिका थी। डोन्ट लुक नाऊ (१९७३) और 'नैशविल' (१९७५) में उन्होंने मिथकीय चरित्र निभाए। डेमॉन सीड (१९७७) जूली की बेहद चर्चित फिल्म थी, जिसमें एक कम्प्यूटर फिल्म की नायिका के साथ बलात्कार करता है। उम्र की ढलान पर पहुँचने के बावजूद जूली क्रिस्टी ने सिनेमा के परदे पर अपना दबदबा बरकरार रखा। रिटर्न ऑफ द सोल्जर (१९८१), हीट एंड डस्ट (१९८३), पॉवर (१९८६) और फूल्स एंड फार्च्यून (१९९०) जूली द्वारा हाल के वर्षों में अभिनीत फिल्में थीं। उनकी नवीनतम फिल्म 'रेलवे स्टेशन मेन' (१९९२) पिछले दिनों ब्रितानवी दूरदर्शन पर प्रदर्शित की गई। तीन दशक से भी अधिक अरसे तक ग्लैमर की दुनिया में सक्रिय रहने वाली जूली क्रिस्टी विश्व सिनेमा की चुनिंदा तारिकाओं के परिप्रेक्ष्य में हैं। □



जूली क्रिस्टी

कैथरीन हेपबर्न

अमेरिका की इस अद्भुत अभिनेत्री ने अपना अभिनय कैरियर रंगमंच से शुरू किया। "अ बिल ऑफ डाइवोर्समेंट" (१९३२) में वह पहली बार परदे पर आई। उसकी अगली फिल्म "मॉर्निंग ग्लोरी" (१९३३) थी। इस फिल्म में उत्कृष्ट अभिनय के कारण उसे "ऑस्कर अवॉर्ड" से अलंकृत किया गया। अपने पूरे फिल्मी कैरियर में उसे ग्यारह बार इस अवॉर्ड से अलंकृत किया गया– 'द लिटिल वुमन' (१९३३)// 'द लिटिल मिनिस्टर' (१९३४)// 'एलिस एडम्स' (१९३५)// 'मेरी ऑफ स्कॉटलैंड'//। प्रारंभिक



हेनरी फोण्डा एण्ड कैथरीन हेपबर्न : ऑन गोल्डन पौंड (१९८२)

फिल्मों में उसकी उत्कृष्ट अदाकारी को समालोचकों ने स्वीकारा। अपने साधारण रूप रंग और ग्लेमरहीन व्यक्तित्व के कारण वह वितरकों तथा फिल्म निर्माताओं को कम ही रास आई। कई फिल्म व्यवसाइयों ने उसे 'बॉक्स आफिस पायजन' तक कह दिया। हेपबर्न अपनी इस शारीरिक कमियों को जानती थी। वह फिल्मों के साथ-साथ रंगमंच पर भी काम करती रही। तत्कालीन विख्यात अभिनेता कैरी ग्रांट के साथ उसकी जोड़ी काफी कामयाब रही। दोनों ने रोमांटिक भूमिकाओं द्वारा, 'ब्रिंगिंग अप बेबी' (१९३८), 'हॉलीडे' (१९३८) तथा 'फिलाडेल्फिया स्टोरी' (१९४०) जैसी फिल्मों को यादगार बना दिया।

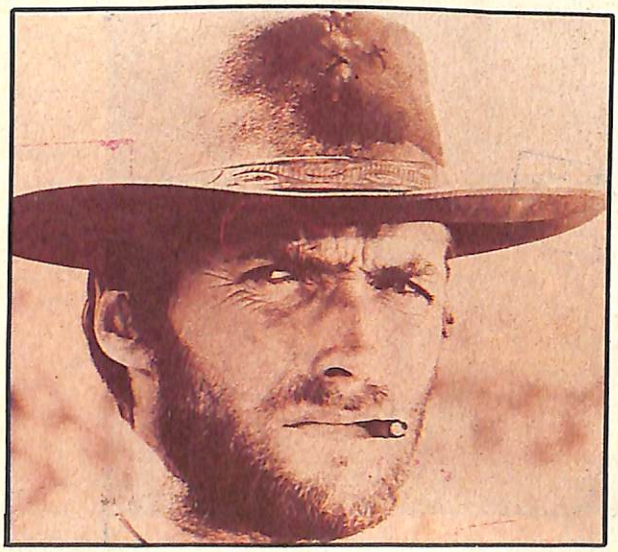
'वूमन ऑफ द इयर' (१९४२) में वह स्पेन्सर ट्रेसी के साथ परदे पर आई। यह जोड़ी भी परदे पर कामयाब रही। अगले २५ वर्षों में यह जोड़ी ८ फिल्मों में एक साथ आई। व्यक्तिगत जीवन में भी दोनों के रिश्ते आजीवन कायम रहे। 'विदाउट लव' (१९४५), 'एडम्स रिब' (१९४९), 'पेट एंड माइक' (१९५२) फिल्मों ने इस जोड़ी को दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाया। 'अफ्रीकन क्वीन' (१९५१) में अपने अभिनय के कारण उसे ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया। 'गेस हू इज कमिंग टू डिनर' (१९६७) तक वह एक परिपक्व अभिनेत्री बन चुकी थी। इस फिल्म ने उसे दूसरा ऑस्कर दिलवाया। अगले वर्ष वह 'द लायन इन विंडर' में आई और असामान्य उत्कृष्ट अभिनय के कारण उसे पुनः 'ऑस्कर' मिला। उसने सभी विख्यात निर्देशकों के साथ काम किया- जॉन फोर्ड/ जॉन हस्टन/ जार्ज कुकर तथा डेविड लीन।

क्लिंट इस्टवुड

हॉलीवुड के अभिनेता निर्देशक क्लिंट इस्टवुड का कैरिअर उतार-चढ़ावों से भरा रहा है। एक्शन फिल्मों में धाँय-धाँयनुमा भूमिकाएँ निभाने के बाद उन्होंने कला फिल्में निर्देशित कीं। फिल्म जगत में प्रवेश से पूर्व वे एक कारखाने में मजदूर के बतौर कार्यरत थे। किस्मत उन्हें स्वप्न नगरी हॉलीवुड ले आई और युनिवर्सल पिक्चर्स के कर्ता-धर्ता ऑर्थर लुबिन की कृपादृष्टि पाकर क्लिंट हीरो बन गए। उनका लंबा कद, रोबीला व्यक्तित्व और पुरुषोचित आवाज इस उपलब्धि के धरातल थे। युनिवर्सल बैनर के अंतर्गत इस्टवुड ने फ्रांसिस इन द नेवी/ रिवेंज ऑफ द क्रीचर/ टारांच्यूला फिल्मों में केंद्रीय भूमिका निभाने के बाद इस फिल्म कंपनी से अलग हो गए। १९५९ में इस्टवुड को एक रोमांचक पृष्ठभूमि वाले टी.वी. सीरियल 'रॉहाइड' में काम मिला। अगले कुछ वर्षों तक वे टेलीविजन धारावाहिकों से सम्बद्ध रहे।

१९६४ में इस्टवुड ने इटली जाकर एक फिल्म 'ए फिस्टफुल ऑफ डॉलर्स' में काम किया। इसकी बेशुमार सफलता से प्रेरित होकर क्लिंट दो अन्य इतालवी फिल्मों 'फॉर ए फ्यू डॉलर मोर' और 'द गुड, द बेड,द अग्ली' में बतौर नायक उपस्थित हुए। इन फिल्मों ने अमेरिका में भी अच्छी सफलता अर्जित की। 'द मेन विद नो नेम' क्लिंट ईस्टवुड को ख्याति के शिखर पर पहुँचाने वाली फिल्म साबित हुई। इसमें उन्होंने एक उसूल पसंद, निष्ठावान, स्वाभिमानी व्यक्ति की भूमिका निभाई थी, जिसके आक्रामक मिजाज को दर्शकों ने बेहद पसंद किया। निर्देशक डॉन सीगल के साथ इस्टवुड की फिल्में पॉईंट योर वेगन/ कूगन्स ब्लफ/ टू मूल्स फॉर सिस्टर सारा/ द बिगाइल्ड और डर्टी हैरी साठ के दशक में हॉलीवुड की चर्चित सिने कृतियों में गिनी गईं। इन फिल्मों ने इस्टवुड को एक ऐसे एक्टर के बतौर प्रतिष्ठित किया, जो करिश्माई ताकत रखता था। रोबीला, रंगरूटनुमा भूमिकाओं ने इस्टवुड को अभूतपूर्व ख्याति दिलवाई।

१९७१ में इस्टवुड ने अपनी पहली निर्देशकीय कृति तैयार की, प्ले मिस्टी फॉर मी।' इस रोमांच प्रधान फिल्म के निर्माण के बाद उन्होंने अपनी निजी फिल्म कंपनी 'माल्पासो' के बैनर तले लगातार हिट फिल्में बनाईं। हाई प्लेन ड्रिफ्टर/ द आउट लॉ/ जोसी वेल्स/ द गॉन्टलेट/ एस्केप विद एलकेट्रेज/ टाइट रोप/ पेल राइडर/ हर्टब्रेक रिंज आदि के नाम इनमें प्रमुख थे। उम्र की ढलान पर पहुँचने के बावजूद क्लिंट फिल्म निर्माण के क्षेत्र में सक्रिय रहे। १९८८ में जॉज गायक चार्बी पार्कर के जीवन पर उनके द्वारा निर्मित फिल्म 'बर्ड' बेहद सराही गई थी। अभिनेता/ निर्देशक की दोहरी भूमिकाओं में इस्टवुड के कैरियर की नवीनतम महत्वपूर्ण फिल्में व्हाइट हंटर, ब्लैक हर्ट/ अनफॉरगिवन/ पर्फेक्ट वर्ल्ड और इन द लाइन ऑफ फायर रही हैं। 'अनफॉरगिवन' के लिए इस्टवुड को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का अकादमी पुरस्कार मिला। अभिनय और निर्देशन के क्षेत्र में क्लिंट इस्टवुड हॉलीवुड की चुनिंदा शख्सियतों में से एक हैं।



क्लिंट इस्टवुड

रीटा हेवर्थ

रीटा हेवर्थ- अमेरिका की इस बहुचर्चित अभिनेत्री का असली नाम मार्गेरिटा कान्सिनो था। नाचना इसका खानदानी पेशा था। इसलिए बारह वर्ष की उम्र से ही मार्गेरिटा ने नाइट क्लबों में नाचना शुरू कर दिया। जब वह १७ वर्ष की थी तब फिल्म कंपनी फॉक्स के एक अधिकारी ने उसे हॉलीवुड के नाइट क्लब में नाचते देखा। नृत्य प्रतिभा के कारण उसे 'अंडर द पाम्पाज मून' (१९३५) में लेटिन नर्तकी की

भूमिका मिल गई। रीटा कान्सिनो के फिल्मी नाम से उसने कई फिल्मों में काम किया। इस चतुर चालाक सुंदरी ने अपना फिल्मी कैरियर बनाने के लिए एक अधेड़ व्यापारी एडवर्ड जुडसन से विवाह कर लिया। जुडसन की मदद से उसे अमेरिका की प्रतिष्ठित 'कोलम्बिया' कंपनी का अनुबंध मिला। इसके बाद वह रीटा हेवर्थ के नाम से एक रहस्य फिल्म 'द रोडो' (१९३७) में आई। रीटा को फिल्में तो लगातार मिलती रहीं मगर उसकी महत्वाकांक्षा बढ़ती गई। शिखर की नायिकाओं में शामिल होने के लिए उसने अपना वजन कम किया। संवाद उच्चारण तकनीक सीखी। 'ब्लड एंड सेंड' (१९४१) में उसने सशक्त अभिनय के द्वारा फिल्मी पंडितों से प्रशंसा प्राप्त करने में सफलता पाई। इस बीच वह अमेरिका की सर्वाधिक चर्चित पिनअप गर्ल बन चुकी थी। अपने बूढ़े पति जुडसन को तलाक देकर १९४२ में उसने सॉल कोस्टर विक्टर मेच्युअर से विवाह कर लिया। अपने इस पति को भी साल भर में ही छोड़कर उसने आर्सन वैलेस से ब्याह रचा लिया। बड़े बजट की भव्य टेक्नीकलर फिल्म 'कवर गर्ल' (१९४४) ने उसे स्टार की श्रेणी में ला दिया। प्रिंस अलाय खान से विवाह कर वह काफी चर्चित हुई। 'सेक्स की देवी', 'प्रेम की देवी' जैसे कई विशेषणों से अलंकृत यह नायिका अपने झगड़ालू स्वभाव के कारण चर्चित बनी रही। एक अभिनेत्री के रूप में उसने 'द स्टोरी ऑफ पेज वन' (१९५९) में अच्छी भूमिका निभाई। 'द रैथ ऑफ गॉड' (१९७२) उसकी आखिरी फिल्म थी। मृत्यु के बाद १९८३ में लिण्डा कार्टर ने उसके जीवन पर एक टी.वी. फिल्म, रीटा हेवर्थ, द लव गॉडेस का निर्माण किया था।

आड्रे हेपबर्न

अमेरिका की इस विख्यात अभिनेत्री का जन्म बेल्जियम में हुआ था। लंदन में नृत्य की शिक्षा लेकर उसने १९५१ में 'लेवेण्डर हिल मॉब' तथा 'सीक्रेट पीपुल' के माध्यम से फिल्मों में प्रवेश किया। इन दो प्रारंभिक फिल्मों के बाद 'द रोमन हॉलीडे' ने उसे व्यापक लोकप्रियता दी। १९५३ में प्रदर्शित इस रोमांटिक कॉमेडी में एक मासूम शोख बाला के रूप में उसने दर्शकों पर अपनी अमिट छाप छोड़ी। दर्शकों एवं समालोचकों से सराहना प्राप्त करने के साथ-साथ उसने 'ऑस्कर अॅवार्ड' भी प्राप्त किया। अगली फिल्म सेब्रिना (१९५४) में सशक्त अभिनय के कारण उसे पुनः ऑस्कर से अलंकृत किया गया। वार एंड पीस (१९५६) में नताशा की भूमिका को जीवंत बना कर वह शिखर की अभिनेत्रियों में गिनी जाने लगी। 'फनी फेस' (१९५७) तक उसकी अभिनय क्षमता निखार पर थी। हेपबर्न के पति मेल फेरर भी फिल्मी दुनिया से जुड़े थे। 'वार एंड पीस' में वे उसके साथ अभिनय भी कर चुके थे। 'ग्रीन मेंशन्स' (१९५९) में उन्होंने निर्देशक के रूप में काम किया। इस फिल्म में हेपबर्न का अभिनय अधिक प्रभावशाली नहीं रहा। इसके बाद इसी वर्ष प्रदर्शित हुई फिल्म 'द नन्स स्टोरी' में उसने अपनी तत्कालीन हमपेशा अभिनेत्रियों को भावुक अभिनय में काफी पीछे छोड़ दिया। इसके बाद वह शिखर की अभिनेत्रियों में शामिल हो गई। 'माय फेवर लेडी' (१९६४) तक उसकी अभिनय प्रतिभा परिपक्व हो चुकी थी।

वेट अन्टिल डार्क (१९६७) में हेपबर्न ने दहशतजदा अंधी महिला की भूमिका की। इस भूमिका के लिए उसे ऑस्कर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इस फिल्म के बाद उसनें पति और फिल्मी दुनिया दोनों को त्याग दिया। मानवता की सेवा में स्वयं को समर्पित करते हुए वह यूनिसेफ की गतिविधियों से जुड़ गई। परदे



रीटा हेवर्थ

की दुनिया में उसने एक बार फिर कदम रखा। 'रॉबिन एंड मेरियन' (१९७६) में वह सीन कॉनेरी के साथ आई। उसकी आखिरी फिल्म अपने बेटे के साथ थी 'दे ऑल लॉफ्ड' (१९८१)। सन् १९९३ में उसे ऑस्कर उत्सव में जीन हरशोल्ट ह्यूमेनटेरियन अवॉर्ड से (मरणोपरांत) सम्मानित किया गया।

जूडी गारलैंड

अभिनेत्री/ गायिका जूडी गारलैंड नैसर्गिक प्रतिभा का श्रेष्ठ उदाहरण रही हैं। हॉलीवुड की इस सितारा कलाकार ने मात्र तीन वर्ष की उम्र से एक्टिंग कैरियर की शुरूआत कर दी थी। एम.जी.एम. कंपनी के लुई मेयर ने एक स्टेज शो में जूडी का प्रभावी अभिनय देखकर उन्हें बाल कलाकार केबतौर अनुबंधित कर लिया। १० जून १९२२ को ग्रॉंड रेपिड् (मिशिगन) में जन्मीं जूडी गारलैंड ने एक षोडशी कन्या के रूप में फिल्म 'ब्रॉड वे मेलडी' (१९३५) के जरिए दर्शकों के दिल में जगह बनाई। इसके लिए एक गीत भी उन्होंने अपनी आवाज में रिकॉर्ड करवाया था। जूडी के गाए इस गाने 'यू मेड मी लव यू' ने अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल की। औपन्यासिक पृष्ठभूमि पर आधारित जूडी की अगली फिल्म 'द विजार्ड ऑफ ओज' के लिए उन्हें तरुण कलाकारों का विशेष ऑस्कर प्रदान किया गया। एम.जी.एम. के बैनर में निर्मित जूडी की आरंभिक फिल्मों थॅरोब्रेडस डोंट क्राय/ स्ट्राइक अप द बैंड/ गर्ल क्रेजी में अभिनेता मिकी रूनी के साथ उनकी युवा जोड़ी बेहद पसंद की गई।

२८ वर्ष की आयु का स्पर्श करने तक जूडी गारलैंड पाँच बार विवाह कर चुकी थी। निर्देशक विन्सेंट मिनाली के साथ उनका दाम्पत्य जीवन कुछ हद तक स्थाई रह सका। जिन्होंने जूडी की मीट मी इन सेंट लुईस/ द पायरेट्स/ ईस्टर परेड और द क्लॉक जैसी चर्चित फिल्में निर्देशित की थीं। पचास के दशक की शुरूआत जूडी गारलैंड के लिए अच्छी नहीं रही। इस दौर में प्रदर्शित उनकी पहली फिल्म 'समर स्टॉक' को बुरी तरह असफलता का मुँह देखना पड़ा था। अगली ही फिल्म 'ए स्टार इज बोर्न' (१९५४) के द्वारा जूडी ने एक बार फिर प्रतिष्ठा अर्जित कर ली। 'जजमेंट एट न्यूरेमबर्ग' के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का ऑस्कर अवॉर्ड मिला। जूडी

गारलैंड की आखिरी फिल्म थी, 'आय कुड गो ऑन सिंगिंग।' इस संगीत प्रधान फिल्म में जूडी की सांगीतिक प्रतिभा अपने शबाब पर थी। जीवन के अंतिम दिन जूडी ने बेहद परेशानियों के बीच गुजारे। उन्हें हॉलीवुड के फिल्म जगत में उपेक्षा का शिकार होना पड़ा। उनकी वैवाहिक जिंदगी उथल- पुथल की शिकार हुई। कड़ी परेशानियों और तनाव के बीच जूडी ने नींद की गोलियों का अधिक सेवन कर २२ जून १९६९ को खुदकुशी कर ली। □

यूल ब्रायनर

अंतरराष्ट्रीय राजनीति के धरातल पर रूस और अमेरिका एक- दूसरे के प्रबल विरोधी रहे हैं। लेकिन कला और क्रीड़ा जगत में इन दोनों देशों के बीच साहचर्य का संकेत मिलता है। रूस में जन्मे कई लेखक, खिलाड़ी और संगीतकार अमेरिका में जाकर बसे और अपनी पहचान की परिधि विस्तृत की। फिल्म अभिनेता यूल ब्रायनर का नाम इसी संदर्भ में लिया जा सकता है। १२ जनवरी १९१५ को 'सखालिन' (सोवियत संघ) में पैदा हुए ब्रायनर ने अपनी कर्मभूमि अमेरिका को बनाया। ब्राडवे के स्थापित रंगमंचीय संस्थानों से उन्होंने एक्टिंग की शुरूआत की। सिने परिदृश्य पर बतौर नायक उनका आगमन १९५१ में निर्मित संगीत प्रधान फिल्म 'द किंग एंड आई' के जरिए हुआ। इस फिल्म में उन्होंने एक निरंकुश शासक की भूमिका निभाई थी, जिसके लिए वे ऑस्कर के हकदार बने। यूल ब्रायनर ने प्रमुखतः महानायकत्व की छवि वाली भूमिकाएँ अभिनीत की। उनका देशज व्यक्तित्व और खुशमिजाज स्वभाव आम दर्शकों के बीच लोकप्रिय हुआ है। एनेस्टेसिया/ टेन कमांडमेंट्स/ किंग ऑफ द सन/ एस्केप फ्रॉम जहरीन/ सोलोमन एंड शिबा/ ट्रिपल क्रॉस और बैटल ऑफ नेरेट्रेवा, यूल ब्रायनर की वे फिल्में थीं, जिनमें उन्होंने एक्शन और रोमांस-प्रधान भूमिकाएँ निभाईं। प्रसिद्ध रूसी लेखक के उपन्यास 'ब्रदर्स कारामजोव' के फिल्म रूपांतरण में यूल ब्रायनर ने यादगार अभिनय किया था। 'फ्यूचर वर्ल्ड' (१९७६) नामक एक विज्ञान कथा पर आधारित फिल्म के लिए ब्रायनर परदे पर मशीनी मानव बन कर उपस्थित हुए। अत्यधिक धूम्रपानजनित कैंसर की वजह से यूल ब्रायनर की १० अक्टूबर १९८५ को मृत्यु हो गई। जीवन के आखिरी दिनों में उन्होंने धूम्रपान के विरुद्ध प्रचार शुरू कर दिया था।

लिव उलमान

नार्वे की इस अभिनेत्री ने विश्व सिनेमा के मंच पर बहुत चपलता के साथ अपनी पहचान बनाई। उत्तरी ध्रुव के करीब बसे देश नार्वे का प्रतिनिधित्व करने वाली लिव उलमान ने सिने जगत में इंगमार बर्गमैन जैसे प्रख्यात निर्देशक की फिल्म 'पर्सोना' (१९६६) से प्रवेश किया था। इसमें उन्होंने दोहरे चरित्र वाली एक महिला की भूमिका असरदार ढंग से निभाई। फिल्मी कैरियर की शुरूआत के पहले उलमान थिएटर का गहरा अनुभव ले चुकी थीं। फिल्म 'पर्सोना' में उनके यादगार अभिनय से प्रभावित होकर निर्देशक बर्गमैन ने उन्हें अपनी अनेक फिल्मों में अवसर दिया। अवर ऑफ द वुल्फ/ पेशन ऑफ एना/ क्राइज एंड विस्पर/ सर्पेन्ट एज और ऑटम सोनाटा जैसी फिल्मों के बाद लिव उलमान को बर्गमैन की स्थाई नायिका मान लिया गया। १९६८ में निर्मित 'शेम' और 'सीन्स फ्रॉम ए मैरेज' उलमान की अविस्मरणीय भूमिकाएँ थीं। दांपत्य जीवन के कड़वे- मीठे अनुभवों पर केंद्रित इन फिल्मों के निर्देशक बर्गमैन ही थे। 'फेस टू फेस' लिव उलमान की सर्वाधिक प्रशंसनीय फिल्म मानी जाती है। इसमें उनका चरित्र एक ऐसी मनःचिकित्सक का था, जो रोगियों का उपचार करते हुए स्वयं विक्षिप्त हो जाती है। भारतीय फिल्म 'खामोशी' में नायिका वहीदा रहमान का चरित्र उलमान की इस भूमिका के समान है। लिव उलमान को 'फेस टू फेस' के लिए ऑस्कर हेतु मनोनीत किया गया। बर्गमैन की छत्रछाया से अलग होकर भी लिव उलमान अपनी पहचान बरकरार रखने में सफल रहीं। द एमिग्रेंट/ न्यू लैंड और लॉस्ट होरायजन उनकी वे फिल्में थीं, जिनका निर्माण स्वीडन और नार्वे से बाहर अमेरिका में हुआ। एक प्रकार से लिव उलमान ने अपने अभिनय में विभिन्न देशों की तहजीब की झाँकी प्रस्तुत की है। इस बेहद खूबसूरत तारिका का जन्म जापान के टोकियो शहर में हुआ था। उनकी परवरिश नार्वे में हुई और उन्होंने अपनी कर्मस्थली स्वीडन एवं अमेरिका को बनाया। लिव उलमान विश्व सिनेमा के धरातल पर विविध संस्कृतियों के समागम का प्रतिनिधित्व करती हैं। □



लिव उलमान-इंग्रिड बर्गमैन

हम्फ्री बोगार्ट

हम्फ्री बोगार्ट हॉलीवुड के लीजेंड अभिनेताओं में जाने जाते हैं। साधारण शक्ल सूरत के बावजूद बोगार्ट ने अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के दर्शकों के बीच जो लोकप्रियता एक फिल्मी सितारे के बतौर हासिल की, उसकी मिसाल नहीं दी जा सकती। अपनी शानदार अभिनय प्रतिभा के बूते पर उन्होंने लम्बे अरसे तक हॉलीवुड के सिने संसार में शीर्ष मुकाम पर मौजूदगी बनाए रखी। २३ जनवरी १८९९ को न्यूयार्क में जन्मे बोगार्ट के पिता एक जाने- माने शल्य चिकित्सक थे। स्वयं हम्फ्री ने कुछ समय तक चिकित्साशास्त्र की विधिवत शिक्षा प्राप्त करने के बाद नौसेना में नौकरी कर ली। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान वे मोर्चे पर बुरी तरह घायल हुए। इसी वजह से उनके चेहरे का एक भाग लकवाग्रस्त हो गया। ऊपरी ओंठ पर निर्मित चोट का निशान फिल्म जीवन में प्रवेश करने के बाद परदे पर उनकी पहचान बन गया था। सिने जगत में हम्फ्री बोगार्ट की पहली कामयाब फिल्म थी, 'द पेट्रीफाइड फॉरेस्ट।' इसमें उन्होंने एक क्रूर हत्यारे की भूमिका निभाई थी। इसके पूर्व १९३० में वे एक फिल्म 'ब्रॉडवे लाइक वैट' में छोटी सी भूमिका निभा चुके थे।

बोगार्ट ने अपने कैरियर की आरंभिक फिल्मों में मुख्यतः खलपात्रों को अभिनीत किया। डेड एंड (१९३७), टाइम ऑव फ्यूरी (१९३७), द ड्राइव बाय नाइट, मार्क्ड वूमन, एंजल्स विद डर्टी फेस और रोआरिंग ट्वेंटीस जैसी फिल्में बोगार्ट को एक आक्रामक अभिनेता के बतौर स्थापित करने के लिए जिम्मेदार रहीं। 'द फाल्कन' (१९४१) हम्फ्री बोगार्ट की सर्वाधिक प्रशंसित फिल्मों में गिनी जाती है। इस

सस्पेंस प्रधान फिल्म में बोगार्ट ने समाज से विलग अपने में खोए रहने वाले व्यक्ति की भूमिका निभाई थी। उसे उनकी विशिष्ट छवि का प्रतिबिंब माना गया। 'फाल्कन' ने टिकट खिड़की पर जोरदार कामयाबी अर्जित की थी। १९४३ में निर्मित 'कासा ब्लांका' से दर्शकों ने हम्फ्री बोगार्ट की सर्वथा नई छवि के दर्शन किए। इस फिल्म में उन्होंने एक सुंदर सजीले नौजवान प्रेमी की भूमिका निभाई थी। 'कासा ब्लांका' के लिए बोगार्ट को पहली बार ऑस्कर अवार्ड हेतु मनोनीत किया गया। प्रणयोत्सुक युवा नायक की छवि को बोगार्ट ने 'टू हैव आर हैव नाट' में भी दोहराया। इस फिल्म के निर्माण काल के दौरान उन्होंने हॉलीवुड की प्रसिद्ध अभिनेत्री लॉरेन बैकाल के साथ परिणय सूत्र जोड़े। बोगार्ट का विशिष्ट अलमस्त, आत्म केंद्रित मिजाज उनकी अन्य फिल्मों द बिग स्लीप (१९४६), की लार्गो (१९४८), इन ए लोनली प्लेस (१९५०), केन म्युटिनी (१९५४) और द डेस्परेट अवर्स (१९५५) में स्पष्ट महसूस किया जा सकता है। 'द हार्डर दे फाल (१९५६), बोगार्ट की आखिरी फिल्म थी। गले के कैंसर की वजह से फिल्म कैरियर को उन्हें अलविदा कहना पड़ा। मूलतः बोगार्ट रोबीली संजीदा भूमिकाओं के लिए ही जाने जाते हैं, मगर ऑल थ्रू द नाइट (सबरीना) वी आर नो एंजल्स जैसी फिल्मों में उन्होंने सहजता के साथ हास्य प्रधान भूमिकाएँ भी निभाई थीं। द अफ्रीकन क्वीन (१९५१) के लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का ऑस्कर अवार्ड दिया गया। बोगार्ट हॉलीवुड के स्वर्ण काल की चुनिंदा हस्तियों में अपना स्थान रखते हैं।

पॉल मुनि

मुनि पॉल के माता-पिता दोनों ही अभिनय के क्षेत्र से जुड़े थे। रंगमंच के अभिनेता के रूप में सन् १९२६ में 'वी अमेरिकन्स' ने उन्हें चर्चित बनाया। फॉक्स से अनुबंधित होकर वे 'द वेलिएण्ट' में परदे पर आए। इस फिल्म में अपने जीवंत अभिनय के कारण उन्हें ऑस्कर अवॉर्ड के लिए नामांकित किया गया। स्कारफेस (१९३२) के बाद प्रदर्शित हुई 'आई एम ए फ्यूगिटिव फ्रॉम ए चेन गेंग' (१९३२) ने उन्हें दूसरी बार ऑस्कर के नामांकन का हकदार बनाया। वार्नर ब्रदर्स की फिल्म 'वर्ल्ड चेंजेस' ने मुनि को अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा दिलवाई। 'द स्टोरी ऑफ लुई पास्चर' (१९३६) में उत्कृष्ट अभिनय के कारण मुनि ने ऑस्कर अवॉर्ड अर्जित किया। 'द गुड अर्थ' (१९३२) में चीनी किसान के रूप में उनकी भूमिका को समालोचकों ने मुक्त कंठ से सराहा। 'लाइफ ऑफ एमिल्री जोला' (१९३७) तथा वी आर नॉट अलोन (१९३९) के बाद वे वार्नर से अलग होकर फ्री लांसिंग करने लगे। इसके बाद उन्होंने कई टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण किया। □

मेरिल स्ट्रीप

नए दौर की सर्वाधिक प्रतिभाशाली अभिनेत्रियों में मेरिल स्ट्रीप का नाम लिया जाता है। विविध भूमिकाओं के अनुसार स्वयं को ढाल लेने में स्ट्रीप सिद्धहस्त हैं। गंभीर और फार्मूला फिल्मों में उन्होंने समान रूप से पहचान स्थापित की। न्यूयार्क थिएटर अकादमी की छात्रा मेरिल स्ट्रीप १९७७ में निर्मित फिल्म 'जूलिया' के जरिए रातों- रात चर्चा में आई थीं। इसके बाद अगली दो फिल्मों 'होलोकास्ट' और 'डियर हंटर' के लिए उन्हें अकादमी पुरस्कार हेतु मनोनीत किया गया। १९७९ में मेरिल स्ट्रीप की तीन फिल्में सेडक्शन ऑफ जो टिनेन/ मेन-हट्टन और क्रेमर वर्सेस क्रेमर एक साथ प्रदर्शित हुई। इन फिल्मों ने मेरिल स्ट्रीप को हॉलीवुड की सफलतम नायिकाओं के बीच प्रतिष्ठित कर दिया। क्रेमर फिल्म में शानदार अभिनय के लिए वे ऑस्कर पुरस्कार की हकदार बनीं। हॉलीवुड के सिने परिदृश्य पर स्ट्रीप का उदय बड़ी तेजी से हुआ। १९८२ में निर्मित 'सोफीज च्वॉइस' मेरिल की सर्वाधिक प्रशंसित फिल्म थी इसमें उन्होंने नाजी उत्पीड़न की शिकार पोलिश महिला का पात्र बेहद खूबसूरती के साथ अभिनीत किया। फ्रेंच लेफ्टिनेंट्स वुमन/ सिल्कवुड/ आउट ऑफ अफ्रीका/ क्राय इन द डार्क/ शी डेविल/ हर्टबर्न और प्लेंटी मेरिल स्ट्रीप की अन्य प्रमुख फिल्में थीं। इन सभी फिल्मों में उदास, परित्यक्त और हताश मिजाज वाली भूमिकाएँ निभाने के कारण निजी जीवन में भी गहरे अवसाद से ग्रस्त हो गई थीं।



मेरिल स्ट्रीप :
द फ्रेंच लेफ्टिनेंट्स वुमन (१९८१)

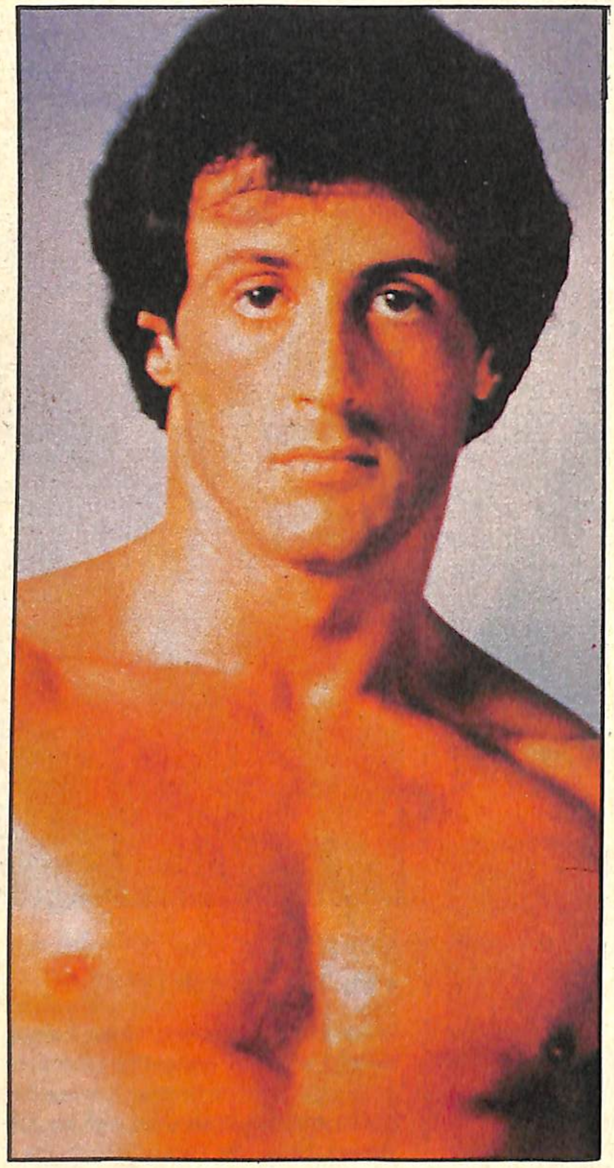
सर रैक्स हैरिसन

इस छैल-छबीले नायक ने रंगमंच से अभिनय के क्षेत्र में प्रवेश किया था। इस ब्रिटिश नायक की पहली फिल्म 'मेन आर नॉट गाड्स' (१९३७) थी। इसके बाद वे लगातार फिल्म उद्योग से जुड़े रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय हैरिसन ने ब्रिटेन की रॉयल एयर फोर्स में अधिकारी के रूप में कार्य किया। 'प्रोग्रेस' (१९४६) में वे अपनी पहली पत्नी लिली पामर के साथ परदे पर आए। 'ट्वेंटीएथ सेंचुरी फॉक्स' के अनुरोध पर वे हॉलीवुड आए। हैरिसन ने 'अन्ना एंड द किंग ऑव ,सियाम' (१९४५)/ 'द फॉक्सेस ऑव हेटो'/ द घोस्ट एंड मिसेज म्यूर जैसी फिल्मों में कार्य किया। सन् १९४८ में हैरिसन ने अभिनेत्री लिली पामर से विवाह कर लिया। सैक्सी रैक्सी के इस विवाह से निराश होकर उसकी वर्षों पुरानी प्रेमिका अभिनेत्री केरोल लेण्डीज ने आत्महत्या कर ली। रैक्स ब्रिटेन वापस लौटे तथा 'एस्केप्ड' (१९४८) में अभिनय कर अपनी लोकप्रियता को बरकरार रखने में कामयाब हुए। इसके बाद वे एक बार फिर रंगमंच से जुड़े।

उम्र की अधिकता के कारण रैक्स ने चरित्र अभिनेता के रूप में काम करना शुरू किया। 'माय फेयर लेडी' (१९६५) के फिल्मी संस्करण में प्रो. हिगिन्स की सशक्त भूमिका के लिए उन्हें 'ऑस्कर' से सम्मानित किया गया। इस फिल्म के रंगमंचीय संस्करण में वे पहले ही काम कर चुके थे। हैरिसन ने १९७४ में अपनी आत्मकथा 'रैक्स' शीर्षक से लिखी। अपने जीवनकाल में छह विवाह करने वाले इस अभिनेता का निधन २ जून १९९० को कैंसर से हुआ। निधन के एक वर्ष पूर्व १९८९ में ब्रिटिश सरकार ने अभिनय के क्षेत्र में उनकी सेवाओं का आदर करते हुए उन्हें नाइटहुड (सर की उपाधि) से अलंकृत किया। □

सिल्वेस्टर स्टेलॉन

हॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता सिल्वेस्टर स्टेलॉन नई पीढ़ी के नौजवानों के लिए भगवान की हैसियत रखते हैं। बलिष्ठ शरीर और आकर्षक सूरत के मालिक स्टेलॉन को एक्शन भूमिकाओं का सरताज माना जाता है। उनकी फिल्मी छवि एक्शन नायक 'रैम्बो' के चरित्र से जुड़ी हुई है। स्टेलॉन ने अपने कैरियर की शुरूआत प्रिजनर ऑफ सेकंड एवेन्यू/ डेथ रेस/ कैननबाल जैसी बी ग्रेड फिल्मों में एक्स्ट्रा की भूमिकाओं से की थी। लगभग ५ वर्ष तक हॉलीवुड के फिल्म जगत में संघर्षरत रहने के बाद भी जब वे विलन मंडली के सदस्य की हैसियत से ऊपर नहीं उठ पाए तो उन्होंने स्वयं अपने लिए एक फिल्म की कहानी लिखी। 'रॉकी' (१९७६) नाम से प्रदर्शित इस फिल्म ने उन्हें रातों- रात स्टार बना दिया। कम बजट में निर्मित यह फ़िल्म असाधारण व्यवसाय करने में



सिल्वेस्टर स्टेलॉन : राकी-३

सफल रही। 'रॉकी' के लिए स्टेलॉन' सर्वश्रेष्ठ अभिनय और पटकथा लेखन के अकादमी पुरस्कार हेतु मनोनीत किए गए। इस अनपेक्षित कामयाबी से उत्साहित होकर स्टेलॉन ने रॉकी (भाग-२) का निर्माण किया। इसके बाद उनके लिए मुश्किल यह आई, कि दर्शक उन्हें 'रॉकी' जैसी एक्शन भूमिका के सिवाए किसी अन्य छवि में देखना ही नहीं चाहते थे। यही वजह थी कि पैराडाइज एलाय/ नाइट हॉक और विक्ट्री जैसी एक्शन रहित फिल्मों में स्टेलॉन नकार दिए गए। एक बार फिर उन्होंने आक्रामक भूमिकाओं का सहारा लिया और 'फर्स्ट ब्लड' (१९८२) शीर्षक से उनकी अगली कामयाब फिल्म प्रदर्शित हुई। इसमें स्टेलॉन ने जॉन रैम्बो नामक एक सिपाही की भूमिका निभाई थी। यह चरित्र इस कदर पसंद किया गया कि रैम्बो सीरिज के भाग-२ और ३ भी सफल रहे। रॉकी के साए से निकलकर स्टेलॉन रैम्बो की पहचान के साथ जुड़ गए। उनकी अन्य प्रमुख फिल्मों में स्टेइंग अलाइव/ कोब्रा/ ओवर द टॉप/ लॉक अप/ टैंगो एंड क्लेश/ स्टॉप और माथ मॉम विल शूट के नाम शामिल हैं। इनके साथ मिश्रित सफलता का ग्राफ जुड़ा रहा। सिल्वेस्टर स्टेलॉन अब तक के प्रभावशाली कैरियर के लिहाज से टिकट खिड़की पर मजबूत छवि रखते हैं। उनकी नवीनतम फिल्मों क्लिफहैंगर (१९९३) डिमोलिशन मेन और द स्पेशलिस्ट (१९९४) में क्लिफ हैंगर ने जबरदस्त सफलता अर्जित की है। □

इन्ग्रिड ट्यूलिन

स्वीडन विश्व सिनेमा की अनेक प्रतिभाशाली तारिकाओं की जन्मभूमि रहा है। ग्रेटा गार्बो और इन्ग्रिड बर्गमेन जैसी विश्व- विख्यात अभिनेत्रियाँ इसी देश से ताल्लुक रखती थीं। एक अन्य चर्चित सिने अभिनेत्री का नाम इस कड़ी में जोड़ना अनुचित नहीं होगा और वह है, इन्ग्रिड ट्यूलिन। खूबसूरती और प्रतिभा का अद्‌भुत संगम इस अभिनेत्री में दर्शकों को नजर आया। ट्यूलिन रंगमंच की मजबूत बुनियाद के साथ फिल्म जगत से जुड़ीं। आरंभिक तौर पर कुछ महत्वहीन भूमिकाओं में इन्ग्रिड दिखलाई देती रहीं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनको विख्यात बनाने वाली फिल्म थी, निर्देशक इंगमार बर्गमेन की 'वाइल्ड स्ट्राबेरीज' (१९५७)।

एक संवेदनशील नायिका. के बतौर उन्हें इस फिल्म के बाद पहचाना गया। उनकी अगली महत्वपूर्ण फिल्म 'सो क्लोज टू लाइफ' भी १९५७ में प्रदर्शित हुई, जिसके लिए वे कान फिल्मोत्सव में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के अवॉर्ड से सम्मानित की गईं। 'द फोर हॉर्समेन ऑफ द एपोकेलिप्स' 'ला गेअर एस्ते फाइन' ट्यूलिन की अन्य प्रमुख फिल्में थीं। १९७० में प्रदर्शित 'द डेम्ड' के जरिए उन्होंने पुनः समीक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया। इसके निर्देशक लुशिनो विस्कोंटी थे।

डीन मार्टिन

इस लंबे-खूबसूरत गायक अभिनेता ने नाइट क्लबों के मनोरंजक कार्यक्रमों से अपना कैरिअर शुरू किया। फिल्मों में जब उनकी जोड़ी जेरी लेविस के साथ आई तब इन दोनों के हास्य दृश्यों ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। सन् १९५६ में उनकी जोड़ी टूट गई। इसके बाद मार्टिन ने स्वयं फिल्मों का निर्माण शुरू किया। मार्टिन की उल्लेखनीय फिल्मों में 'सम केम रनिंग' (१९५८)/ रियो ब्रेवो (१९५९)/ किस मी स्टुपिड (१९६४)/ सन्स ऑफ केटी एल्डर (६५)/ एयर पोर्ट (१९७०) प्रमुख हैं। मार्टिन द्वारा टेलीविजन पर प्रस्तुत धारावाहिक 'द डीन मार्टिन शो' ने १९६५ से १९७४ तक दर्शकों को प्रभावित किया था।

जैक लेमन

अमेरिका के इस विशिष्ट निर्देशक और अभिनेता ने 'इट शुड हैप्पन टू यू' (१९५४) में अपने अभिनय की विशिष्ट छाप छोड़ी थी। हास्य अभिनय के लिए उन्हें 'मिस्टर राबर्ट्स (१९५५) में ऑस्कर से सम्मानित किया गया। लेमन की प्रतिभा केवल हास्य अभिनय के दायरे में ही सीमित नहीं थी। 'डेज ऑफ वाइन एंड रोजेज' (१९६२) में उन्होंने एक शराबी की गंभीर भूमिका सहजता से निभाई। इसके बाद वे हास्य की ओर मुड़े तथा अपनी निजी कंपनी के बैनर तले हाउ टू मर्डर यूअर वाइफ '(१९६४) में हास्य भूमिका की। 'द फारच्यून कुकी' (१९६६) से लेमन एवं वाल्टर मथाउ की जोड़ी बनी। इस जोड़ी ने वैवाहिक जीवन की विसंगतियों को केंद्र बनाकर जीवंत हास्य का सृजन किया। 'कोच' (१९७१) में मथाउ ने शीर्ष भूमिका की तथा निर्देशन किया लेमन ने। लेमन की हास्य भूमिकाओं में पीड़ा की सूक्ष्म अभिव्यक्ति भी परिलक्षित होती है, जो उनके प्रदर्शन में असामान्य तनाव पैदा करती है।

टॉनी कर्टिस

टॉनी कर्टिस काफी लम्बे अरसे से हॉलीवुड के सिने परिदृश्य पर एक प्रभावशाली अभिनेता के बतौर अपनी चमकदार उपस्थिति बनाए हुए हैं। कर्टिस ने हॉलीवुड के प्रमुख सिने प्रतिष्ठानों की सरपरस्ती में अपने कैरियर का विकास किया। मनोरंजन प्रधान फिल्मों के वे अग्रणी अभिनेता माने जाते हैं। अमेरिका में बसे हंगेरियाई मूल के आप्रवासियों की ज्येष्ठ संतान टॉनी कर्टिस का वास्तविक नाम था, बर्नार्ड श्वार्ज। विश्व युद्ध के दिनों में अमेरिकी नौसेना के लिए श्वार्ज ने कुछ समय तक नौकरी की। शोहरत की भूख उन्हें फिल्मी दुनिया की ओर खींच लाई। युनिवर्सल बैनर के तहत उन्होंने सौ डॉलर प्रतिमाह के पारिश्रमिक पर एक्टिंग का अनुबंध किया। रजतपट के लिए उनका नाम बदल कर रखा गया एंथनी 'टॉनी' कर्टिस। बर्नार्ड उर्फ टॉनी कर्टिस अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और घुड़सवारी, एक्शन, तलवारबाजी, संवाद

अदायगी जैसी विविध विधाओं में सिद्धहस्त होने के कारण लोकप्रिय सिनेमा में बहुत जल्दी बतौर नायक स्वीकार कर लिए गए।

टॉनी कर्टिस ने शुरूआत में प्रमुख रूप से ऐतिहासिक और मिथकीय चरित्र वाली भूमिकाएँ निभाई। फ्रांसिस/ प्रिंस हू वाज ए थीफ/ सन ऑफ अलीबबा/ पर्पल मास्क/ स्क्वेयर जंगल और ब्लैक शील्ड ऑफ फॉलवर्थ टॉनी कर्टिस की आरंभिक फिल्में थीं। १९५६ में निर्मित फिल्म 'ट्रेपीज' से पहली बार कर्टिस भावप्रवण अभिनेता के बतौर समीक्षकों के बीच सराहे गए। इसके बाद लम्बे अरसे तक टॉनी गंभीर भूमिकाओं से जुड़े रहे। स्वीट स्मेल ऑफ सक्सेस/ द डेफियंट वन/ आउटसाइडर्स/ ग्रेट रेस/ सपोज दे गेव ए वार एंड नोबडी केम और द लास्ट टायकून साठ और सत्तर के दशक में निर्मित कर्टिस की प्रमुख फिल्में थीं, जिनमें उन्होंने अपनी बहुमुखी अभिनय प्रतिभा का परिचय दिया। १९६८ में प्रदर्शित 'द बोस्टन स्ट्रेंगलर' टॉनी की सर्वाधिक चर्चित फिल्म थी। इसमें उन्होंने एक पेशेवर हत्यारे का किरदार बेहद कुशलतापूर्वक निभाया। टॉनी कर्टिस की नई फिल्मों में ब्लैक कमांडो/ स्कारलेट/ इनसिगनिफिकेंस के नाम महत्वपूर्ण हैं।

बारबरा स्ट्रीसेंड

प्रतिभा के बहुआयामी प्रतिबिंब यदि किसी एक कलाकार में तलाशने की प्रक्रिया अपनाई जाए, तो अमेरिकी अभिनेत्री बारबरा स्ट्रीसेंड को बतौर आदर्श सामने रखा जा सकता है। हॉलीवुड की यह लोकप्रिय नायिका अभिनय के अलावा गायन, नृत्य और फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में भी समान रूप से दखल रखती रही है। बारबरा ने अपना कैरियर बतौर गायिका शुरू किया था। उनके गाए गीतों के एलबम साठ के दशक में बेहद लोकप्रिय हुए। १९६८ में निर्मित फिल्म 'फनी गर्ल' से बारबरा की परदे पर पहचान बनी। इस फिल्म में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए उन्हें ऑस्कर अवार्ड दिया गया। हैलो डॉली/ ऑन ए क्लीयर डे/ द आउल एंड पूसीकैट/ अप द सैंड बॉक्स जैसी फिल्मों ने बारबरा स्ट्रीसेंड की ख्याति हॉलीवुड की सफलतम नायिकाओं के बीच निर्मित की। द वे वी वेथर (१९७३) स्ट्रीसेंड की सबसे आकर्षक संवेदनशील भूमिका मानी गई।

बारबरा स्ट्रीसेंड उन चुनिंदा कलाकारों में से हैं, जिन्हें गायन, अभिनय और निर्देशन तीनों विधाओं में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अकादमी पुरस्कार मिले। १९७६ में निर्मित 'ए स्टार इज बोर्न' बारबरा की एक महत्वपूर्ण फिल्म थी, जिसके लिए पार्श्व गायन की जिम्मेदारी भी उन्होंने निभाई। बतौर श्रेष्ठ गायिका इस फिल्म के लिए वे ऑस्कर से सम्मानित की गई थीं। स्ट्रीसेंड ने 'द मेन इवेंट और' ऑल नाइट लांग' जैसी कुछ साधारण फिल्मों में कॉमेडी भूमिकाएँ निभाईं। इनकी असफलता ने उनके कैरियर की चमक को धूमिल जरूर किया, किन्तु बारबरा ने फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा साबित कर आलोचकों के मुँह बंद कर दिए। येन्ट/ नट्स (१९८७) और 'प्रिंस ऑफ टाईड्स बारबरा स्ट्रीसेंड द्वारा निर्देशित कामयाब फिल्में थीं। आजकल वे पूरी तरह फिल्म निर्देशन को समर्पित हैं। □



बारबरा स्ट्रीसेंड

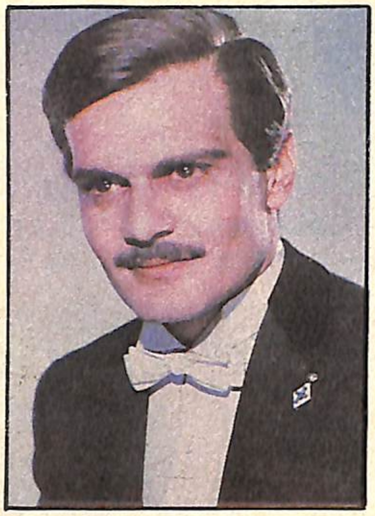


टॉनी कर्टिस

ओमर शरीफ

नायिकाओं के सेक्स सिम्बल बनने में कोई अटपटी बात नहीं है। मगर सिने इतिहास में कुछ पुरुष भी इस छवि में बाँधकर देखे गए हैं। हॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता ओमर शरीफ का नाम भी इसी धरातल से जोड़ा जाता है। इजिप्ट में जन्मे शरीफ की प्रभावशाली आवाज और रौबीला व्यक्तित्व उन्हें महिला फिल्म दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाने के लिए विशेष रूप से उत्तरदायी रहा। न केवल कलात्मक अभिनय, बल्कि लोकप्रियता के संदर्भ में भी अभिनेता ओमर शरीफ अग्रणी माने जाते हैं। मूलतः भौतिक शास्त्र विषय में उपाधि अर्जित करने वाले शरीफ अपने व्यक्तित्व की बदौलत इजिप्ट के मशहूर सिने कलाकार बन गए थे। हॉलीवुड में उनकी पहचान बनी डेविड लीन की विश्व प्रसिद्ध फिल्म 'लॉरेंस ऑफ अरेबिया' से। इस फिल्म के लिए मात्र ३० वर्ष की आयु में शरीफ को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुआ, जो हर लिहाज से एक बड़ी उपलब्धि थी। १९६५ में निर्मित 'डॉ. जिवागो' ओमर शरीफ के कैरियर की दूसरी महत्वपूर्ण फिल्म साबित हुई। इन दो फिल्मों ने उन्हें हॉलीवुड ही नहीं, वरन विश्व के समस्त सिने प्रेमियों के बीच लोकप्रिय बना दिया।

ओमर शरीफ की छवि मुख्यतः एक रोमांटिक नायक की रही है। मोर देन ए मिरेकल/ फनी गर्ल/ द लास्ट वैली/ द एपॉइंटमेंट/ मैकन्नास गोल्ड/ क्राइम एंड पेशन जैसी फिल्मों में



ओमर शरीफ

शरीफ के आकर्षक व्यक्तित्व का जादू दर्शकों के सिर चढ़कर बोला। अभिनेत्रियाँ उनके साथ काम पाने के अवसर को सौभाग्य मानने लगी थीं। रोमांटिक भूमिकाओं के अलावा शरीफ ने कुछ फिल्मों जगरनॉट/ टेनरिंड सीड/ ग्रीन आईस और टॉप सीक्रेट में हास्य रोल भी निभाए। शरीफ की असाधारण लोकप्रियता के कारण उन्हें अमेरिकी दूरदर्शन के लिए निर्मित अनेक टेली फिल्मों में अतिथि कलाकार के बतौर पेश किया गया। निजी जीवन में ओमर शरीफ ताश के खेल 'ब्रिज' के बहुत अच्छे खिलाड़ी रहे हैं। उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व एक पुस्तक भी लिखी थी 'ओमर शरीफ लाइफ इन ब्रिज।' शरीफ की नवीनतम फिल्म 'मिसेस एरिस गोस टू पेरिस (१९९२) टेलीविजन के लिए निर्मित की गई थी। हॉलीवुड और अपनी जन्म भूमि इजिप्ट के बाहर भी शरीफ बेहद सक्रिय रहे हैं। कई मानवाधिकार आंदोलनों के क्रियान्वयन में उन्होंने अहम् भूमिका निभाई है।

डोरिस डे

अमेरिका की डोरिस डे उन गिनी- चुनी अभिनेत्रियों में थीं, जिन्होंने अभिनय के अलावा गायन के क्षेत्र में भी अद्वितीय प्रतिभा दर्शाई। एक व्यावसायिक बैंड के लिए गायिका के बतौर कैरियर आरंभ करने के बाद उन्होंने रजतपट का रुख किया। उनका असली नाम था, डोरिस केपल हॉफ। इस बहुमुखी प्रतिभा संपन्न कलाकार की फिल्मी पहचान 'डोरिस डे' नाम से जुड़ी। 'रोमांस ऑन द हाय सीज' (१९४९) उनकी पहली फिल्म थी, जिसमें उन्होंने अपने मासूम सौंदर्य से दर्शकों को सम्मोहित कर दिया। मुख्य रूप से डोरिस डे को केला मिटी जेन (१९५३)/ पजामा गेम/ द टच ऑफ मिंक जैसी संगीत प्रधान फिल्मों में अवसर मिले। 'द मेनहू न्यू टू मच' (१९५६) उनकी बहुप्रशंसित फिल्म थी। डोरिस ने कुछ कॉमेडी फिल्मों- पिलो टॉक/ लवर कम बैक/ थ्रिल ऑफ इट ऑल और सेंड मी नो फ्लॉवर में नायिका की भूमिकाएँ निभाईं। मूलतः उन्हें सुमधुर कंठ और नैसर्गिक सौंदर्य के लिए जाना जाता है। □

क्रिस्टोफर ली

इटली के एक सामन्त परिवार में जन्मे इस महान ब्रिटिश अभिनेता ने ड्रेकुला के रूप में अपनी अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाई। 'हॉरर आफ ड्रेकुला' (१९५८) तथा काउण्ट ड्रेकुला (१९६९) के अतिरिक्त उन्होंने कई हॉरर एवं सस्पेंस फिल्मों में अभिनय किया। एंथनी नेल्सन कीज के साथ मिलकर ली ने अपनी स्वयं की फिल्म कंपनी बनाई। सबसे पहले 'नथिंग बट नाइट' (१९७२) का निर्माण किया। ली ने शारलॉक होम्स पर बनी कुछ फिल्मों में होम्स की भूमिका भी की। कुछ फिल्मों में वे हास्य कलाकार के रूप में भी परदे पर आए। इनमें नाजी ऑफिसर (१९७१) तथा माइकिल



क्रिस्टोफर ली : ड्रैकुला

राइडिंग गुरु (१९८०) प्रमुख हैं। टेलीविजन के लिए कार्यक्रम तैयार करने एवं छोटे परदे के अभिनेता के रूप में वे अभी भी सक्रिय हैं।

बेट्टी डेविस

शारीरिक सौंदर्य से दर्शकों को अभिभूत करने वाली अभिनेत्रियों में हॉलीवुड की बेट्टी डेविस का नाम अग्रणी है। सैक्स अपील के लिहाज से परदे पर उनके लावण्य का जादू लंबे समय तक बरकरार रहा। रंगमंच से कैरियर की शुरूआत करने वाली डेविस की पहली फिल्म 'बेड सिस्टर' अधिक सफल नहीं रही थी। द मेन हू प्लेड गॉड, द मेनेस और वाटर लू ब्रिज जैसी अल्पचर्चित फिल्मों में काम करने के बाद बेट्टी ने प्रसिद्ध अमेरिकी फिल्म कंपनी 'वार्नर ब्रदर्स' के बैनर से अभिनय का अनुबंध कर लिया। इस सिने संस्था के लिए बेट्टी ने द डार्क हार्स/ थ्री ऑन ए मैच/ एक्स लेडी/ द वर्किंग मेन/ पेराशूट जम्पर/ ब्यूरो ऑफ मिसिंग पर्सन/ फॉग ओवर फ्रिस्को और जिमी द जेंट आदि फिल्मों में भूमिकाएँ अभिनीत कीं। 'ऑफ ह्यूमन बांडेज' डेविस की पहली महत्वपूर्ण फिल्म थी। एक संवेदनशील दासी की भूमिका में उन्होंने काफी प्रभावित किया। १९३५ में प्रदर्शित फिल्म 'डेंजरस' के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का ऑस्कर अवॉर्ड बेट्टी डेविस ने जीता। यह उनके कैरियर की पहली महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसके बाद लगातार पाँच बार बेट्टी को ऑस्कर अवॉर्ड के लिए मनोनीत किया गया। यह फिल्में थीं- जेजेबल (१९३८)/ डार्क विक्ट्री (१९३९)/ द लेटर (१९४०)/ द लिटिल फॉक्सेस (१९४१) और नाऊ वॉयजर (१९४२)। १९४४ में प्रदर्शित 'मि. स्केफिंगटन' के लिए वे एक बार फिर ऑस्कर की हकदार बनीं।

डेविस को ग्लैमरस और संजीदा दोनों किस्म की भूमिकाएँ कुशलतापूर्वक निभाने के लिए जाना जाता है। द पेट्रीफाइड फॉरेस्ट/ मार्क्ड वुमन/ द ग्रेट लाई/ डिसेप्शन/ डिमांड द फॉरेस्ट वार्नर ब्रदर्स के बैनर तले निर्मित उनकी विविध-रंगी फिल्में थीं। १९४० में वार्नर कंपनी से विवाद हो जाने के कारण बेट्टी ने इस प्रतिष्ठान से अपना रिश्ता तोड़ लिया। पचास के दशक में निर्मित डेविस की महत्वपूर्ण फिल्में थीं- ऑल अबाउट इव/ द स्टार/ वर्जिन क्वीन और स्टार्म सेंटर। बेट्टी की असाधारण लोकप्रियता को देखते हुए उन्हें विभिन्न फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों के लिए बतौर नायिका पसंद किया। १९६१ में प्रख्यात अमेरिकी निर्देशक फ्रेंक काप्रा की फिल्म 'पॉकेट फुल ऑफ मिरेकल्स' में बेट्टी अपने भावप्रवण अभिनय के लिए अत्यधिक सराही गई थीं। इस फिल्म के लिए उन्हें अकादमी पुरस्कार दिया गया। ६० और सत्तर के दशक में डेविस की लोकप्रियता का ज्वार निरंतर बना रहा। इस दौरान प्रदर्शित उनकी प्रमुख फिल्में एम्प्टी कैनवास/ व्हेअर लव हैस गोन/ एनिवर्सरी/ कनेक्टिंग रूम्स/ डेथ ऑन द नील और वॉचर इन द वुड थीं। बेट्टी ने कुछ टी.वी. फिल्मों के लिए भी काम किया। द व्हेल्स ऑफ अगस्ट (१९८७) और विकेड स्टेपमदर (१९९०) उनकी ऐसी ही दो लघु फिल्में थीं। व्यक्तिगत जीवन में बेट्टी अधिक खुशियाँ हासिल नहीं कर सकीं। उन्होंने चार बार विवाह किया, मगर सुखी दांपत्य उनकी किस्मत में नहीं था। बेट्टी डेविस को अमेरिकी सिने संस्थान द्वारा दिए जाने वाले प्रतिष्ठित लाइफ एचीवमेंट अवॉर्ड की पहली महिला विजेता होने का गौरव हासिल है। □

गैरी कूपर

लंबे/छरहरे/आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक गैरी उर्फ फ्रेंक जेम्स कूपर की तुलना यदि किसी भारतीय अभिनेता के साथ की जाए, तो देव आनंद की तस्वीर उभर आती है। जिस सौम्य, अभिजात्यरोमांटिक नायक का अक्स देव में मिलता है, उसका आद्य प्रतिरूप विश्व सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में गैरी कूपर के बतौर देखा जा सकता है। ७ मई १९०१ को जन्मे कूपर का फिल्म जगत में आगमन इत्तफाक से हुआ। बेशक यह एक खूबसूरत इत्तफाक था, इसकी बदौलत परदे से रिश्ता जोड़ने वाले गैरी सर्वकालिक, महान अभिनेता के रूप में पहचाने गए। हॉलीवुड की फिल्मों का एक समूचा युग गैरी कूपर की चुंबकीय शख्सियत पर टिका रहा। पश्चिमी अभिनेताओं में कूपर विशुद्ध अमेरिकी संस्कृति और जीवनशैली के प्रतीक माने जाते हैं। इस शीर्ष कलाकार ने अपना चमकीला अभिनय कैरियर एक्स्ट्रा के बतौर शुरू किया था। हॉलीवुड के प्रसिद्ध फिल्म निर्माता हैनरी किंग की नजर जब सेट पर गुमसुम खड़े इसप्रतिभा संपन्न नौजवान पर पड़ी, तो वे इस कदर प्रभावित हुए कि उन्होंने अपनी निर्माणाधीन फिल्म 'विनिंग ऑफ बारबरा वर्थ' के नायक को बदल कर उसकी जगह गैरी कूपर को यह भूमिका सौंप दी। १९२१ में कूपर की हीरो के



गैरी कूपर : गार्डन ऑव इविल

बतौर पहली फिल्म प्रदर्शित हुई। एक आकर्षक सिनेयात्रा का यह उद्गम बिंदु था जिसने एक महानायक को आकार दिया।

गैरी कूपरनेआरंभमें प्रसिद्ध अमेरिकी सिने कंपनी पैरामाउंट के बैनर तले एरिजोना बाउंड/शॉपवोन एंजल/ लिलेक टाइम/ए मेन फ्रॉम व्योमेन और मोरॉको आदि फिल्मों में काम किया। नायक के रूप में जो छवि गैरी कूपर ने अपने लिए गढ़ी, वह एक शर्मीले, मितभाषी, सौम्य युवक की थी। जिसकी नाराजगी में भी शालीनता झलकती है। गैरी इस मिजाज के साथ संभ्रांत दर्शक वर्ग के बीच काफी पसंद किए गए। १९३१ में प्रदर्शित 'सिटी स्ट्रीट' से कूपर अपनी परंपरागत रोमांटिक नायक की छवि को तोड़कर बाहर आए और उन्होंने पहली बार एक्शन भूमिका निभाई। उनकी अगली कुछ फिल्मों टेक दिस वुमन/द डेविल एंड द डीप/डिजायन फॉर लिविंग/ जनरल डायड एट डॉन/लाइव्ज ऑफ बैंगल लेंसर की भूमिकाएँ भी सख्त और आक्रामक तेवर वाली थीं। गैरी कूपर ने प्रसिद्ध लेखक अर्नेस्ट हैमिंग्वे के उपन्यास 'फेयरवेल टू आर्म्स' पर आधारित फिल्म में अपने संजीदा अभिनय से समीक्षकों को काफी प्रभावित किया। इसी उत्कृष्ट श्रेणी की एक अन्य फिल्म थी, 'मि. डीड गोज टू टाउन' (१९३६)। जिसके लिए कूपर पहली बार ऑस्कर अवॉर्ड से पुरस्कृत किए गए। चालीस के दशक में कूपर ने पैरामाउंट बैनर से हटकर एम.जी.एम. और यूनिवर्सल जैसी अन्य प्रतिष्ठित सिने कंपनियों द्वारा निर्मित फिल्मों सोल्स एट सी/वेडिंग नाइट/रियल ग्लोरी/द वेस्टर्नर में भी प्रमुख भूमिकाएँ निभाई।

गैरी कूपर के कैरियर को शिखर तक ले जाने के लिए मुख्य रूप से चार फिल्में जिम्मेदार रहीं प्राइड ऑफ द यांकी/सर्जेंट यार्क/ मीट जॉन डो बॅल ऑफ फायर। इनका निर्देशन फ्रेंककाप्रा/ हॉवर्ड हॉक जैसे दिग्गज फिल्मकारों द्वारा किया गया था। 'सर्जेंट यार्क' में सर्वश्रेष्ठ अभिनय के लिए कूपर को दूसरी बार ऑस्कर सम्मान मिला। उपलब्धियों की इस श्रृंखला की अगली कड़ी थी, 'फॉर हूम द बेल टोल्स' (१९४३)। हैमिंग्वे की एक कहानी पर आधारित यह फिल्म कूपर की ख्याति को काफी दूर तक फैला गई। जिसके लिए वे अकादमी अवॉर्ड के हकदार बने। १९५२ में प्रदर्शित 'हाई नून' कूपर की सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद फिल्म थी। एक गुस्सैल, उद्याम जिजीविषा के हिमायती नौजवान की भूमिका में कूपर बेहद पसंद किए गए। हाई नून के लिए उन्हें चौथी बार ऑस्कर सम्मान मिला। बाइट लीफ/लव इन द ऑफ्टरनून/फ्रेंडली पर्सुएशन/ मेन ऑफ द वेस्ट गैरी कूपर की अन्य प्रमुख फिल्में थीं। अंतिम बार उन्होंने १९६१ में प्रदर्शित फिल्म 'नेकेड एज' के लिए नायक की भूमिका निभाई। इसी वर्ष उन्हें कैरियर की अतुलनीय उपलब्धियों के लिए विशेष अकादमी सम्मान भी मिला। कैंसर की बीमारी से ग्रस्त १३ मई १९६१ को गैरी कूपर चल बसे। □

रॉक हडसन

अमेरिका के इस अभिनेता (१९२५-१९८५) का वास्तविक नाम रॉय फिट्जगेराल्ड था। हरकारे, मैकेनिक तथा ट्रक ड्राइवर के रूप में जीविका अर्जित करने वाले इस खूबसूरत, कद्दावर नौजवान को अभिनय से कतई लगाव नहीं था। वार्नर ब्रदर्स ने अपनी फिल्म 'फाइटर स्क्वेड्रन' (१९४८) में हडसन को मामूली भूमिका दी। इसके बाद यूनिवर्सल इंटरनेशनल ने हडसन को कुशल अभिनेता के रूप में प्रशिक्षित किया। अभिनय के साथ-साथ उसे संवाद अदायगी/घुड़सवारी/तलवारबाजी, और गायकी का प्रशिक्षण दिया गया। मैगनीफिसिएंट ऑबेसन (१९५४) में हडसन के अभिनय की समालोचकों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। 'जाएंट' (१९५६) में उन्हें उत्कृष्ट अभिनय के लिए ऑस्कर हेतु नामांकित किया



रॉक हडसन

गया था। इस फिल्म में उसकी नायिका एलिजाबेथ टेलर थी। इसके बाद हडसन का नाम बॉक्स आफिस सफलता का पर्याय बन गया। 'पिलो टॉक' (१९५९)से हल्के-फुल्के हास्य अभिनय के क्षेत्र में हडसन ने अपने जौहर दिखाए। 'आइस स्टेशन जेब्रा' (१९६८) में हडसन का अभिनय कौशल शीर्ष पर पहुँच गया था। मैकमिलन एंड वाइफ (१९७१-१९७७) उनका सर्वाधिक लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहिक सिद्ध हुआ। 'डायनेस्टी' नामक एक अन्य लोकप्रिय धारावाहिक में भी उन्होंने अभिनय किया। हडसन पर समलैंगिक होने का आरोप लगा। १९८५ में एड्स के भयानक रोग से ग्रस्त होकर उनका निधन हुआ। मृत्यु के पूर्व हडसन ने अपनी जीवन की सच्चाइयों को दुनिया के सामने बेधड़क स्वीकार किया। एड्स की बीमारी का प्रचार भी हडसन की मौत के बाद दुनियाभर में किया जाने लगा।

बस्टर कीटन

मूक फिल्मों के युग (१८९५-१९६६) के इस महान हास्य अभिनेता को 'ग्रेट स्टोन फेस' कहा जाता था। इस हास्य अभिनेता को चार्ली चेप्लिन की श्रेणी में और कहीं उनसे आगे भी रखा गया है। सात वर्ष की आयु से सर्कस के जोकरों की तरह कलाबाजियाँ कर दर्शकों को हँसाने में माहिर कीटन का फिल्मों में प्रवेश १९१७ में हुआ। 'द बूचर बॉय' (१९१७) में

उन्होंने सर्वप्रथम अभिनय किया। इसके बाद अगले दो वर्षों में वे एक दर्जन से ज्यादा फिल्मों में आए। सन् १९२० में वे फेटी के साथ केलिफोर्निया आ गए। उनकी पहली फीचर फिल्म 'द थ्री एजेस' (१९२३) थी। इसके बाद कीटन की कलात्मक क्षमता और लोकप्रियता दोनों बढ़ने लगी। 'शॉरलॉक जूनियर' (१९२४) के एक स्वप्न दृश्य में ट्रिक फोटोग्राफी के क्षेत्र में उनकी कुशलता ने हास्य को नया आयाम दिया। १९२३ और १९२८ के मध्य निर्मित फिल्मों ने एक निर्माता एवं अभिनेता के रूप में उनकी प्रतिष्ठा को नई ऊँचाई दी। द कैमरामेन (१९२८) उनकी श्रेष्ठ फिल्मों में से एक है। स्टुडियो प्रबंधकों के बढ़ते हस्तक्षेप के कारण उनकी पूरी प्रतिभा सामने नहीं आ रही थी। उन्होंने फीचर फिल्मों से संन्यास ले लिया तथा टेलीविजन एवं लघु फिल्मों के निर्माण से जुड़ गए। उन्हें सन् १९५९ में विशेष ऑस्कर से सम्मानित किया गया था। उनकी आखिरी फिल्म 'वार, इटैलियन स्टाइल' १९६७ में प्रदर्शित हुई।

रॉबर्ट रेडफोर्ड

अमेरिकी युवतियों के चहेते खूबसूरत रोमांटिक सितारे की अभिनय प्रतिभा उत्कृष्ट कोटि की है। कोलोराडो विश्वविद्यालय में बेसबॉल के खिलाड़ी के रूप में यशस्वी होने के बाद वे कुछ दिनों के लिए योरप गए तथा वापस लौटकर न्यूयॉर्क में बसे। अभिनेता के रूप में कैरियर शुरू किया। उनकी पहली फिल्म 'वारहण्ट' (१९६२) युद्ध विरोधी कथानक पर आधारित थी। 'इनसाइड डेजी क्लोवर' (१९६५) तथा 'द चेज' (१९६६) से उन्हें प्रतिष्ठा मिली। 'बेअर फूट इन द पार्क' (१९६७) में वे जेन फोण्डा के साथ आए और इस फिल्म में अपने अभिनय की उत्कृष्ट छाप से दर्शकों के चहेते बन गए। 'सन डांस किड' (१९६९) ने उनकी प्रतिभा को पुनः प्रमाणित किया। इसके बाद उन्हें कई फिल्मों में चुनौतीपूर्ण भूमिकाएँ मिलीं। डाउन हिल रेसर (१९६९)/ टेल देम विल्ली बॉय इज हीअर (१९६९) को उनके खूबसूरत चेहरे एवं कुशल अभिनय ने सफल बनाया। 'द केण्डिडेट' (१९७२) अमेरिकन राजनीति पर तीखी व्यंग्यात्मक फिल्म सिद्ध हुई। इसके बाद १९७३ में प्रदर्शित फिल्म 'द स्टिंग' बॉक्स ऑफिस पर हिट रही। ऑल द प्रेसीडेण्ट्स मेन (१९७६) उनके द्वारा निर्मित पहली फिल्म थी इसमें रेडफोर्ड ने एक पत्रकार की भूमिका अदा की। निर्माता के बाद 'आर्डनरी पीपुल' से वे निर्देशक बने। पारिवारिक ड्रामे पर आधारित इस फिल्म ने उनके कैरियर को एक नया मोड़ दिया। इसके बाद वे अपनी राजनीतिक विचारधारा एवं पर्यावरण रक्षा के प्रचार में जुट गए। हवाना (१९९०) से पूर्व की फिल्में 'द लीगल इगल्स' (१९८६), आउट ऑफ अफ्रीका (१९८३) सफल रही। हवाना 'फ्लॉप' रही और इस असफलता ने उन्हें नई शक्ति दी। 'स्नीकर' (१९९२) ने प्रमाणित कर दिया कि वे सुपर स्टार के रूप में कायम हैं। 'इनडीसेंट प्रपोजल' (१९९३) में वे एक ऐसे कामुक करोड़पति हैं, जो एक सुंदरी को रातभर साथ सोने के लिए दस लाख डॉलर देने को तैयार हैं।

पॉल न्यूमेन

अमेरिका में जन्मे इस निर्माता-निर्देशक-अभिनेता ने रंगमंच कलाकार के रूप में अपना कैरिअर शुरू किया। न्यूयार्क के एक्टर्स स्टुडियो में अभिनय का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद ब्रॉडवे में प्रदर्शित नाटक 'पिकनिक' (१९५३) में उनका अभिनय देखकर वार्नर ब्रदर्स ने उन्हें अपनी फिल्मों के लिए अनुबंधित किया। बाइबल पर आधारित फिल्म 'द सिल्वर शौलिस' (१९५५) में ग्रीक गुलाम के रूप में पहली बार परदे पर आए। इसके बाद की फिल्मों द रेक (१९५६) तथा 'विद समबडी अप देअर लाइक्स मी' (१९५५) ने उनकी क्षमता को प्रमाणित किया। उनकी सूरत तथा अभिनय शैली मार्लो ब्राण्डो से इतनी मिलती-जुलती थी कि समालोचकों ने उन्हें ब्राण्डो का उत्तराधिकारी कहना शुरू कर दिया। सन १९५८ में उन्होंने अभिनेत्री जोनी वुडवर्ड से विवाह किया। इसी वर्ष वे अभिनेत्री मार्टिन रिट के साथ 'लांग हॉट समर' में आए। इस जोड़ी को दर्शकों ने पसंद किया। रिट के साथ न्यूमेन की अन्य फिल्मों में 'पेरिस ब्लूज' (१९६१)/ द आउटरेज (१९६४)/ होम्बर (१९६७) प्रमुख हैं। सन १९५८ में निर्मित 'केट ऑन अ हॉट टिन रुफ' में उत्कृष्ट अभिनय के लिए उन्हें ऑस्कर के लिए नामांकित किया गया। इसके बाद पुनः उन्हें 'द हस्टर' (१९६१) तथा 'हड' (१९६३) में उत्कृष्ट अभिनय के लिए ऑस्कर हेतु नामांकित किया गया। निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म 'रैचेल रैचेल' (१९६८) थी। न्यूमेन की अन्य उल्लेखनीय फिल्मों में 'द स्टिंग' (१९७३)/ 'द वरडिक्ट' (१९८२)/ 'द कलर ऑफ मनी' (८६) हैं। अभिनय के प्रति न्यूमेन का लगाव हर स्तर पर रहा। सन् १९९४ में उनकीदो फिल्में प्रदर्शित हुईं 'द हडसकर प्रॉक्सी' तथा 'नो बडीज फूल।'

कर्क डगलस

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद हॉलीवुड के सिने क्षितिज पर उभरे सितारा कलाकारों में कर्क डगलस का नाम प्रमुख है। कद्दावर व्यक्तित्व वाले इस निर्देशक/ अभिनेता ने गरीबी और जहालत में अपना बचपन गुजारने के बाद सिनेमा की पृष्ठभूमि में एक शिखर व्यक्तित्व के बतौर अपनी पहचान बनाई। कर्क डगलस का कैरियर विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकी नौसेना के एक छोटे अधिकारी के रूप में शुरू हुआ था। अपनी छात्र जीवन की सहपाठिनी लॉरेन बैकॉल (जो स्वयं हॉलीवुड की प्रख्यात हीरोइन बनी) की सिफारिश पर उन्हें अमेरिकी निर्माता हॉल वेलिस की फिल्म 'द स्ट्रेंज लव ऑफ मार्था एवर्स' (१९४६) में नायक की भूमिका मिली। पहली ही फिल्म से चर्चा का केंद्रबिंदु बन जाने वाले कर्क डगलस ने फिल्मी दुनिया में अगला कदम निर्देशक के बतौर रखा। 'आउट ऑफ द पास्ट' और 'आई वॉक अलोन' डगलस की आरंभिक निर्देशकीय सिने कृतियाँ थीं। १९४९ में निर्मित फिल्म 'चैंपियन' के लिए कर्क डगलस पहली बार श्रेष्ठ अभिनेता के ऑस्कर सम्मान हेतु मनोनीत किए गए। यह पुरस्कार उन्हें इस फिल्म के लिए



राबर्ट रेडफोर्ड और जेन फोण्डा : बेअर फूट इन द पार्क

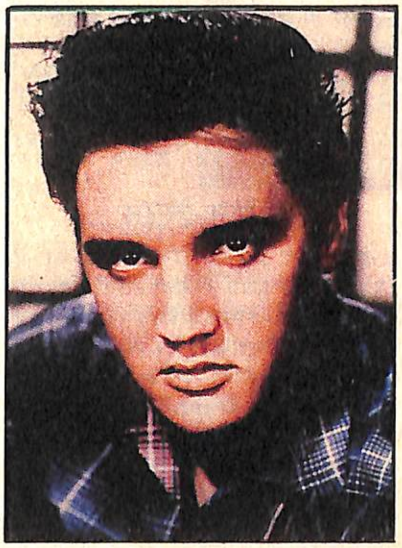
नहीं मिल सका। पचास के दशक में कर्क ने डिटेक्टिव स्टोरी/ एस इन द होल/ बिग स्काय/ लीग अंडर द सी/ यूलिसिस/मेन विदाउट ए स्टार/ लस्ट फॉर लाइफ/ वायकिंग/ डेविल्स डिसायपल जैसी फिल्मों में प्रमुख भूमिकाएँ निभाई। लस्ट फॉर लाइफ फिल्म में डगलस ने प्रसिद्ध चित्रकार वॉन गॉग का चरित्र परदे पर जीवंत किया था।

एक अभिनेता के बतौर कर्क डगलस मुख्यतः ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाली युद्धपरक फिल्मों के लिए याद किए जाते हैं। रोमन साम्राज्य के वैभव और गरिमागान पर केंद्रित फिल्म 'स्पार्टाकस' डगलस के एक्टिंग कैरियर की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। डगलस के अभिनेता जीवन की प्रमुख फिल्में थीं, द लास्ट सनसेट/ लोनली आर द ब्रेव/ द वार वेगन/ ब्रदरहुड/ अरेंजमेंट/ गनफाइट/ फायनल काउंट डाउन। कर्क डगलस के चार बेटे इन दिनों हॉलीवुड के फिल्म जगत से जुड़े हैं, जिनमें मायकल डगलस की प्रतिष्ठा सफल नायक के बतौर स्थापित हो चुकी है।

एल्विस प्रिस्ले

अमेरिका के इस गायक अभिनेता को 'द किंग ऑफ रॉक' कहा जाता है। 'लव मी टेण्डर्स' (१९५६) में पहली बार परदे पर आए। फिल्म के लोकप्रिय शीर्ष गीत के नाम पर ही यह नाम रखा गया था। रातोंरात स्टार बने इस महागायक की अगली फिल्म 'लविंग यू' (१९५७) को श्रेष्ठ फिल्म माना जाता है। 'ज़ेल हाउस रॉक' (१९५७) को समालोचकों ने उनकी सर्वोत्कृष्ट फिल्म माना है। 'फ्लेमिंग स्टार' (१९६०) में उन्होंने योरपीय रेड इंडियन की मिश्रित नस्ल वाले पात्र की भूमिका अदा की थी। प्रिस्ले को प्रायोजक कर्नल टॉम पोकर ने सिर्फ फार्मूला फिल्मों में अभिनय करने के लिए प्रेरित किया, ताकि ज्यादा से ज्यादा धन कमाया जा सके। ऐसा होने पर

एल्विस प्रिस्ले



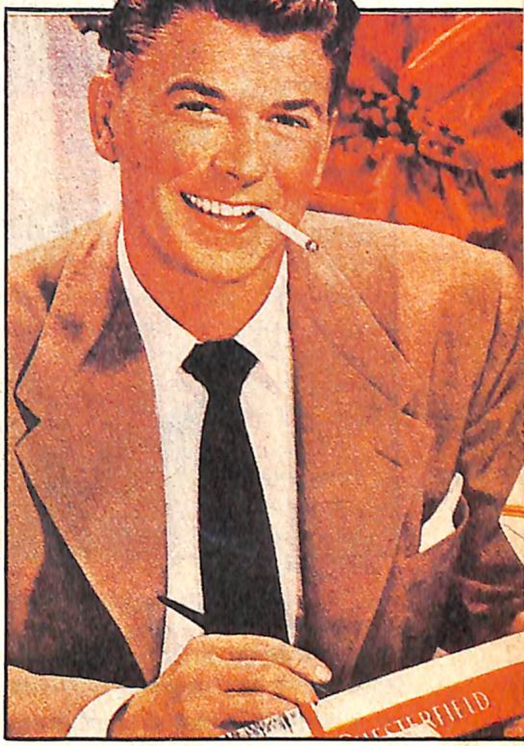
दर्शकों की रुचि प्रिस्ले की फिल्मों के प्रति कम होने लगी। 'चेंज द हेबिट' (१९६९) ज्यादा पसंद नहीं की गई। बारबरा स्ट्रीसेण्ड ने प्रिस्ले के सम्मुख 'ए स्टार इज बार्न' में चुनौतीपूर्ण मुख्य भूमिका करने का प्रस्ताव रखा। कर्नल टॉम ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। यह भूमिका शायद प्रिस्ले को महानायकों की पंक्ति में स्थान दिलवाने में कामयाब हो जाती। मादक पदार्थों के अत्यधिक सेवन के कारण ४२ वर्ष की आयु में ही हृदयाघात से प्रिस्ले की मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद भी अमेरिका की फिल्मी दुनिया में प्रिस्ले छाए रहे। विख्यात निर्माता जॉन कारपेंटर ने एल्विस (१९७९) नामक टेलीफिल्म बनाई थी।

जॉन वेन

जॉन वेन (असली नाम: मेरियन माइकल मॉरिसन) हॉलीवुड की प्रथम पीढ़ी के अभिनेताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले कलाकार थे। अमेरिकी फिल्में विश्व में जिस विशिष्ट फार्मूला श्रेणी के लिए जानी जाती हैं, उसे जॉन वेन जैसे कलाकारों ने ही आकार दिया। योद्धा, जुझारू और दबंग नायक की भूमिका के लिए जॉन वेन पहचाने गए। जॉन ने एक फुटबॉल खिलाड़ी के बतौर कैरियर की शुरूआत की थी। छात्र जीवन के दौरान जेब खर्च जुटाने के लिए वेन ने फिल्मों में एक्स्ट्रा की छुटपुट भूमिकाएँ निभाई। मूक सिनेमा के दौर में द डीप किक/ फोर सन जैसी फिल्में जॉन वेन के अभिनेता कैरियर की धरातल बनी। तीस के दशक में वेन को महत्वहीन भूमिकाओं से ही संतोष करना पड़ा। 'स्टेज कोच' जॉन वेन की पहली कामयाब फिल्म थी, जिसने एक कलाकार के बतौर उनकी पहचान बनाई। जॉन वेन ने मुख्य रूप से लोकप्रिय सिनेमा के ढाँचे में निर्मित फिल्मों में ही काम किया। शी वोर यलो रिबन/ सर्चर्स/ द मेन हू शॉट लिबर्टी/ एल डारडो उनकी हिट फिल्में थीं। १९६९ में निर्मित फिल्म 'टू ग्रिट' के लिए वेन ऑस्कर अवार्ड के हकदार बने। जॉन वेन ने अपनी निजी फिल्म कंपनी भी स्थापित की थी। 'बेट जॉक' नामक इस बैनर के तहत एलामो और ग्रीन बैरेट जैसी चर्चित फिल्मों का निर्माण हुआ। एक्टिंग के अलावा जॉन वेन राजनीति के क्षेत्र में भी समान रूप से सक्रिय रहे हैं। अमेरिका की रिपब्लिकन पार्टी के लिए वेन ने निरंतर चुनाव प्रचार किया। अमेरिकी राष्ट्रपति आयजन हॉवर के साथ जॉन वेन के घनिष्ठ संबंध थे। सिने संसार और राजनीतिक रंगमंच पर गहरी छाप छोड़ने के बाद जॉन वेन की ११ जून १९७९ को फेफड़े के कैंसर से मृत्यु हो गई।

रोनाल्ड रीगन

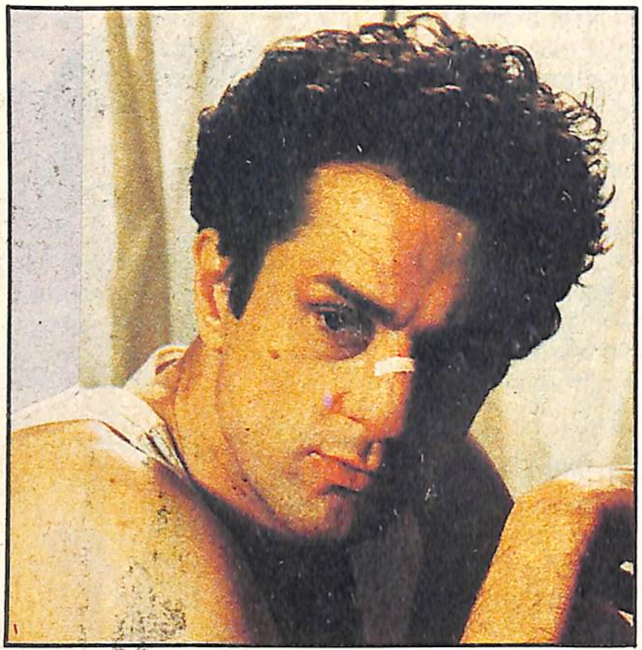
कद्दावर, खूबसूरत, चौड़े कंधों वाले इस महत्वाकांक्षी अभिनेता ने यूरेका कॉलेज से स्नातक होने के बाद खेल पत्रकार के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। इसके बाद वे रेडियो पर उद्घोषक के रूप में काम करने लगे। सन् १९३७ में वे हॉलीवुड पहुँचे। वार्नर ब्रदर्स से



रोनाल्ड रीगन

अनुबंधित होकर 'बी' श्रेणी की फिल्मों में नायक तथा 'ए' वर्ग की फिल्मों में सहायक भूमिकाएँ करने लगे। नायक के रूप में उनकी पहली फिल्म 'लव इज आन द एयर' (१९३७) थी। वार्नर ब्रदर्स के लिए रीगन ने जिन फिल्मों में काम किया उनमें 'डार्क विक्ट्री' (१९३९)/ 'किंग्स रो' (१९४२)/ 'द वायस ऑफ द टर्टल' (१९४८) तथा 'हेस्टी हार्ट' (१९५०) प्रमुख हैं। वायुसेना में कुछ अवधि तक रहने के बाद वे पुनः फिल्मों में लौटे थे। यूनिवर्सल फिल्म कंपनी की कुछ फिल्मों में भी उन्होंने काम किया। हाँगकाँग (१९५१)/ द विनिंग टीम (१९५२) तथा हेल्लकेट्स ऑव नेवी (१९५७) फिल्मों में उनका अभिनय सराहा गया। हेल्लकेट्स ऑव नेवी में उनकी पत्नी नेन्सी नायिका थीं।

राजनीति के प्रति रीगन का लगाव १९४७ से बढ़ने लगा। इसी वर्ष वे स्क्रीन एक्टर्स गिल्ड्स के अध्यक्ष चुने गए। पहले वे लिबरल विचारधारा के थे। बाद में कट्टर कंजरवेटिव बनकर उन्होंने सन् १९६४ में राष्ट्रपति पद के लिए बेरी गोल्डवाटर का समर्थन किया। परदे पर आखिरी बार वे 'द किलर्स' (१९६४) में आए। सन् १९६६ में उनको केलिफोर्निया के गवर्नर पद पर चुना गया। आठ वर्षों तक वे इस पद पर रहे। इसके बाद १९८० तथा १९८४ में अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए। रीगन की पहली पत्नी जेन वायमेन भी अभिनेत्री थीं। १९४० से १९४८ तक के वैवाहिक जीवन में दो संतानों के पिता बने। □





रॉबर्ट डी नीरो

पश्चिमी सिनेमा के दिग्गज अभिनेताओं में रॉबर्ट डी नीरो अपना एक स्थान रखते हैं। विश्व भर के कलाकारों ने रॉबर्ट को आदर्श मानकर उनका अनुसरण किया है। रीतिबद्ध, शास्त्रीय अभिनय के डी नीरो विशेषज्ञ माने जाते हैं। १७ अगस्त १९४७ को न्यूयॉर्क में जन्मे रॉबर्ट ने अंतरराष्ट्रीय सिनेमा में जो चमकीली पहचान बनाई, वह बिरलों को ही हासिल हो पाती है। किसी भी भूमिका में पूरी तरह खुद को समाहित कर लेना डी नीरो की प्रमुख विशेषता है, जिसके लिए वे सर्वत्र सराहना के केंद्रबिंदु बने। एक रंगमंचीय कलाकार की संतान रॉबर्ट नीरो के एक्टिंग कैरियर की शुरूआत थिएटर से हुई। परदे पर उन्होंने पहली बार ग्रीटिंग्स (१९६८) और द वेडिंग पार्टी (१९६९) जैसी अल्प-चर्चित फिल्मों में साधारण भूमिकाएँ निभाईं। बोर्न टु विन/ जेनिफर ऑन माय माइंड/ ब्लडी मॉम डी नीरो की अन्य आरंभिक फिल्में थीं, जिनसे उनके कैरियर को विशेष लाभ नहीं पहुँचा। एक समर्थ और संवेदनशील अभिनेता के रूप में रॉबर्ट की ख्याति १९७३ में निर्मित फिल्म 'बैंग द ड्रम स्लोली' से बनी। इसमें उन्होंने एक मानसिक रूप से अपरिपक्व युवक की भूमिका शानदार ढंग से निभाई थी। इसी फिल्म के बाद उन्होंने मेथड एक्टिंग की शास्त्रीय विधा को अपनाया।

रॉबर्ट डी नीरो अमेरिका के बाहर जिस फिल्म की वजह से पहचाने गए, वह थी- गॉडफादर (भाग- २)। इसमें उन्होंने माफिया सरदार की युवावस्था का पात्र अभिनीत किया था। अपने उम्दा अभिनय के लिए रॉबर्ट सर्वश्रेष्ठ सह- अभिनेता के ऑस्कर सम्मान के हकदार बने। 'द लास्ट टायकून' डी नीरो के कैरियर की एक महत्वपूर्ण फिल्म थी। प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक 'एफ. स्कॉट फिट्ज़ेराल्ड' के उपन्यास पर आधारित इस फिल्म में रॉबर्ट ने एक अर्द्धविक्षिप्त व्यक्ति की भूमिका सशक्त रूप से निभाई थी। न्यूयॉर्क- न्यूयॉर्क/ द डियर हंटर/ रेजिंग बुल/ किंग ऑफ कॉमेडी/ गुड फेलास और केपफियर जैसी फिल्मों ने डी नीरो को हॉलीवुड के शीर्षस्थ अभिनेताओं के बीच प्रतिष्ठित किया। इनमें 'केप फियर' और रेजिंग बुल के लिए वे ऑस्कर अवॉर्ड हेतु मनोनीत किए गए थे। रॉबर्ट डी नीरो हमेशा परंपरागत भूमिकाओं से हट कर किरदार निभाने के लिए जाने जाते हैं। मिडनाइट रन/ ट्रू कन्फेशन/ फालिंग इन लव/ वी आर नो एंजल्स/ अन टचेबल्स/ मिस्ट्रेस और नाइट एंड सिटी आदि फिल्मों की सूची को सामने रखकर देखा जाए, तो रॉबर्ट द्वारा इनमें अभिनीत भूमिकाएँ मिजाज और अंदाज की दृष्टि से सर्वथा विशिष्ट नजर आती हैं। डी नीरो व्यक्ति के मानसिक अंतर्द्वंद्व को परदे पर अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त समझे जाते हैं। एक्टिंग के क्षेत्र में अपनी विलक्षण प्रतिभा का लोहा मनवाने के बाद डी नीरो एक फिल्म का निर्देशन भी कर चुके हैं। रॉबर्ट डी नीरो विश्व सिनेमा की पृष्ठभूमि में क्रियाशील उन चुनिंदा अभिनेताओं में से हैं, जिन्होंने एक कलाकार के बतौर अपने दायित्व को गहराई से समझ कर उसे पूरा किया।

बॉब होप

बॉब होप को पाश्चात्य संस्कृति के इतिहास में सर्वाधिक लोकप्रिय मनोरंजनकर्ता माना जाता है। ब्रिटेन में जन्मे इस महान अभिनेता का मूल नाम लेस्ली टाउन्स होप था। जब वे चार वर्ष के थे तब उनका परिवार अमेरिका आकर बस गया। रंगमंच पर म्युजिकल कॉमेडी के जरिए बॉब ने लोकप्रियता प्राप्त की। रंगमंच पर मशीनगन की गोलियों की तरह चुटकुले दागने

चार्लटन हेस्टन

की उनकी विशिष्ट कला के कारण दर्शक उन्हें 'रेपिड रॉबर्ट' कहते थे। रेडियो पर प्रसारित होने वाले 'पेक्सोडेंट शो' नामक कार्यक्रम ने उन्हें और भी लोकप्रिय बनाया। फिल्मों में उनका प्रवेश 'द बिग ब्राडकास्ट ऑफ १९३८' के जरिए हुआ। इस फिल्म में बॉब ने 'थैंक्स फार द मेमोरी' नामक गीत गाया था। यह गीत और इसकी धुन उनकी पहचान बनी। पैरामाउंट के बैनर तले बॉब ने कई फिल्मों में काम किया। इनमें 'कॉलेज स्विंग' (१९३८), 'थैंक्स फॉर द मेमोरी' (१९३८), 'समलाइक इट हॉट' (१९३९), 'नेवर से डाई' (१९३९) प्रमुख हैं। इसके बाद 'द केट एंड केनेरी' (१९३९) से होप ने अपनी विशिष्ट हास्य शैली तथा कुशल हास्य अभिनेता के रूप में अपनी श्रेष्ठता की छाप छोड़ी। इसके बाद क्रूनर बिंग क्रॉसबी के साथ वे 'रोड टू सिंगापुर' में आए। यह प्रयोग इतना सफल रहा कि १९४० और १९६२ के मध्य 'रोड टू मोरक्को'/ 'रोड टू जंजीबार'/ 'रोड टू रियो'/ 'रोड टू बाली' और 'रोड टू हॉंगकॉंग' में आते रहे। 'द पेल फेस' (१९४८) उनकी अन्य हिट फिल्म है।

चार्लटन हेस्टन

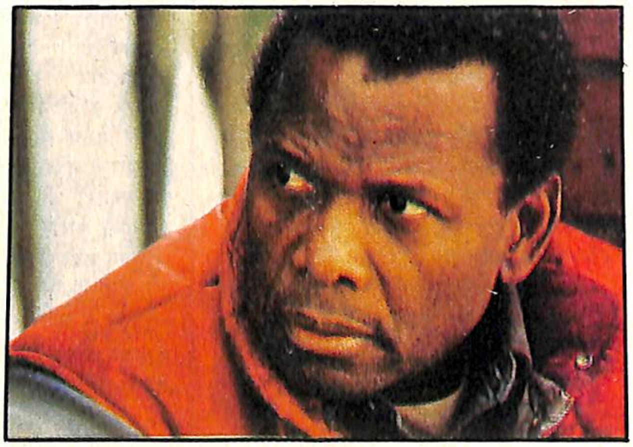
हेस्टन का फिल्मी कैरियर अमेरिका में १९४१ से शुरू हुआ। रंगमंच, टेलीविजन तथा फिल्मों में उनका सशक्त अभिनय दर्शकों का मन बाँधने में सफल रहा। आधुनिक फिल्मी पात्र एवं नाटकों के नायकों की भूमिका के साथ-साथ उन्होंने शेक्सपीयर के नायकों को भी परदे पर जीवित किया है। 'मैकबेथ', 'मार्क एंटनी' तथा सीजर की भूमिकाओं में आने के बाद उन्हें अपने व्यक्तित्व के अनुरूप जो भूमिका मिली वह मोजेज की थी। 'द टेन कमांडमेंट्स' (१९५६)

में अपनी प्रभावशाली आवाज के कारण वे काफी चर्चित हुए। ऐतिहासिक और पौराणिक फिल्मों में प्रमुख भूमिकाओं के लिए वे अपने समय के सर्वाधिक उपयुक्त नायक माने जाते रहे हैं। कालजयी फिल्म 'बेनहर' में उत्कृष्ट अभिनय के कारण उन्हें ऑस्कर से अलंकृत किया गया। जब ऐतिहासिक और पौराणिक फिल्मों की लोकप्रियता कम होने लगी, तो हेस्टन ने विभिन्न मानवीय पक्षों को साकार करने वाले पात्रों में अभिनय प्रतिभा का कमाल दिखाया। 'बिनीथ द प्लेनेट ऑव एप्स' (१९७०)/ 'द ओमेगा मेन' (१९७१) और १९९० में छोटे परदे पर वे शारलाक होम्स के रूप में भी आए। हेस्टन मानवीय अधिकारों से जुड़े आंदोलनों में सक्रिय रहे हैं।

डस्टिन हॉफमन

रंगमंच के माध्यम से फिल्मों में प्रवेश करने वाले इस अमेरिकी अभिनेता को आरंभ में असफलता का सामना करना पड़ा था। ग्रेजुएट (१९६७) उनकी पहली सफल फिल्म रही। हॉफमन की विशेषता यह रही कि हर प्रकार की भूमिका एवं पात्र को वे सहजता से जीवंत बना देते हैं। 'लिटिल बिग मेन' (१९७०) में १२१ साल के वृद्ध के रूप में अपने चमत्कारी अभिनय के कारण वे काफी चर्चित हुए। अभिनय में 'मेथड'तकनीक को उन्होंने दीवानगी की तरह अपनाया। 'मेराथन मेन' (१९७६) में बेहद थके हुए व्यक्ति की भूमिका को जीवंत करने के लिए वे स्वयं कई रातों तक जागते रहे। हर तरह की चुनौतियों को स्वीकार करने वाले इस नायाब अभिनेता ने 'टूटसी' (१९८२) में एक ऐसे अभिनेता की भूमिका की जो असफल, निराश और ठुकराया हुआ है। अपनी प्रतिभा सिद्ध करने के लिए वह स्त्री का वेश धारण करता है तथा टेलीविजन पर बेहद सफल अभिनेत्री के रूप में पहचाना जाता है। हॉफमेन को कई बार 'ऑस्कर' से अलंकृत किया गया है।

सिडनी पॉयटर



सिडनी पॉयटर

अमेरिका के गरीब परिवार में जन्मे पॉयटर ने अपनी किस्मत खुद लिखी। बिना किसी मदद के शिक्षा अर्जित की तथा सड़कों पर अभिनय सीखकर न्यूयार्क के अमेरिकन नीग्रो थिएटर में काम करना शुरू किया। फिल्मों में उनका प्रवेश 'नो वे आउट' (१९५०) से हुआ। 'एज आफ द सिटी (१९५६) से उनको प्रतिष्ठा मिली। 'द डेफिएण्ट वन्स' (१९५८) में उत्कृष्ट अभिनय के कारण बर्लिन के फिल्मोत्सव में उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के रूप में सम्मानित किया गया। लिलीज ऑफ द फील्ड (१९६३) में उनकी असामान्य प्रतिभा ने उन्हें ऑस्कर अवार्ड का हकदार बनाया। हॉलीवुड में उनकी प्रतिभा का शोषण काफी किया गया। फिल्म 'फॉर लव ऑफ आइवी' की पटकथा भी उन्होंने लिखी थी। एक संवेदनशील अभिनेता के रूप में पॉयटर अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाने में सफल हुए।

लारेंस ऑलिवर

इस सदी के सर्वाधिक प्रतिष्ठित अभिनेता के रूप में प्रतिष्ठित लारेंस ऑलिवर ने फिल्मों को सामाजिक प्रतिष्ठा दिलवाने में अहम् भूमिका अदा की है। पादरी परिवार में जन्मे बालक को अपने पैतृक व्यवसाय से कतई लगाव नहीं था। उनका अभिनय कैरिअर १५ वर्ष की आयु में रंगमंच से शुरू हुआ। इसके बाद अभिनय का प्रशिक्षण लेने के लिए उन्होंने लंदन के सेंट्रल स्कूल ऑव स्पीच ट्रेनिंग एंड ड्रामटिक आर्ट में प्रवेश लिया। सन १९२९ से वे अपने अभिनय की प्रतिभा से न्यूयार्क एवं लंदन के रंगमंच प्रेमियों को प्रभावित करने लगे। फिल्मों में प्रवेश के प्रारंभिक वर्षों में वे दर्शकों को ज्यादा प्रभावित नहीं कर पाए। अमेरिका में उन्होंने फ्रेण्ड्स एण्ड लवर्स (१९३१)/ यलो टिकट (१९३१) तथा क्वीन क्रिस्टीना (१९३३) नामक तीन फिल्मों में अभिनय किया।

इंग्लैंड लौटकर जब वे रोमियो एंड जूलियट में रोमियो के रूप में आए तब दर्शक उनके दीवाने बन गए। रोमांटिक नायक के रूप में उनकी छवि स्थापित होने लगी। 'फायर ओवर इंग्लैंड' (१९३७)/ द डाइवोर्स आफ लेडी एक्स (१९३८)/ फ्यू प्लेन्स (१९३९) इंग्लैंड में उनकी हिट फिल्में सिद्ध हुई। इसके बाद वे पुनः हॉलीवुड लौटे। विदरिंग हाइट्स (१९३९) में उत्कृष्ट अभिनय प्रदर्शित कर ऑस्कर अवार्ड हेतु नामांकित हुए। इस फिल्म ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। हिचकॉक की फिल्म 'रेबेका' (१९४०) तथा प्राइड एंड प्रिजुडीस (१९४०) ने उन्हें हॉलीवुड के निर्माताओं का चहेता सितारा बना दिया। दूसरे विश्व युद्ध के बाद जब वे शेक्सपीयर की कृति 'हेनरी फिफ्थ' (१९४५) में मुख्य भूमिका कर रहे थे तब उन्होंने विलियम वायलर को निर्देशन के लिए आमंत्रित किया। वायलर ने इस आमंत्रण को अस्वीकार कर सुझाव दिया कि लारेंस स्वयं ही निर्देशन करें। लारेंस ने सुझाव स्वीकार कर लिया तथा इस फिल्म ने अभिनय के नए मापदंड स्थापित किए। लारेंस को उत्कृष्ट निर्देशन के ऑस्कर अवार्ड हेतु नामांकित किया गया तथा अभिनय में असामान्य उपलब्धि के लिए विशेष ऑस्कर से सम्मानित किया गया। 'हेमलेट' (१९४८) में वे पहले ऐसे अभिनेता थे, जिसे स्वयं के निर्देशन में ऑस्कर अवार्ड मिला। उनकी शेर जैसी आँखें,आवाज में उतार-चढ़ाव लाने की क्षमता ने उन्हें महानायक का दर्जा प्रदान किया।

ऑलिवर को १९४७ में नाइटहूड (सर) की उपाधि से ब्रिटिश सरकार ने अलंकृत किया। सन् १९६३ से १९७३ तक वे नेशनल थिएटर के निर्देशक रहे। विवियन ली से उनकी जोड़ी फिल्मों के अतिरिक्त जीवन संगिनी के रूप में २० वर्षों तक जमी रही। १९७१ में उन्हें लार्ड की उपाधि मिली। उनकी अंतिम कृतियों में 'लॉस्ट अम्पायर' (१९८६) प्रमुख है। □

जॉन फोर्ड

अमेरिका के सर्वाधिक प्रतिष्ठित फिल्म निर्देशकों में शुमार किए जाने वाले जॉन फोर्ड को सिने समीक्षकों द्वारा उनकी काव्यात्मक फिल्मांकन शैली के लिए जाना जाता है। अपनी फिल्मों में फोर्ड ने बेहद खूबसूरती के साथ दृश्यों और बिम्बों का समावेश किया। जॉन फोर्ड ने अपने ज्येष्ठ भाई फ्रांसिस के सान्निध्य में रंगकर्म की शुरूआत की थी। बाद में ये दोनों भाई युनिवर्सल पिक्चर्स के लिए काम करने लगे। जॉन ने पहली बार टेलीविजन के लिए दो रील की लघु फिल्म 'द टॉरनॉडो' (१९१७) का निर्माण किया। इसी वर्ष उनकी पहली फीचर फिल्म भी प्रदर्शित हुई जिसका नाम था- 'स्ट्रेट शूटिंग।' ये फिल्में मोहक फिल्मांकन के लिए विशेष रूप से चर्चित हुईं। उनकी फिल्में अमेरिकी लोकजीवन और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के जीवंत चित्रांकन के लिए सबके आकर्षण का केंद्र बनीं।

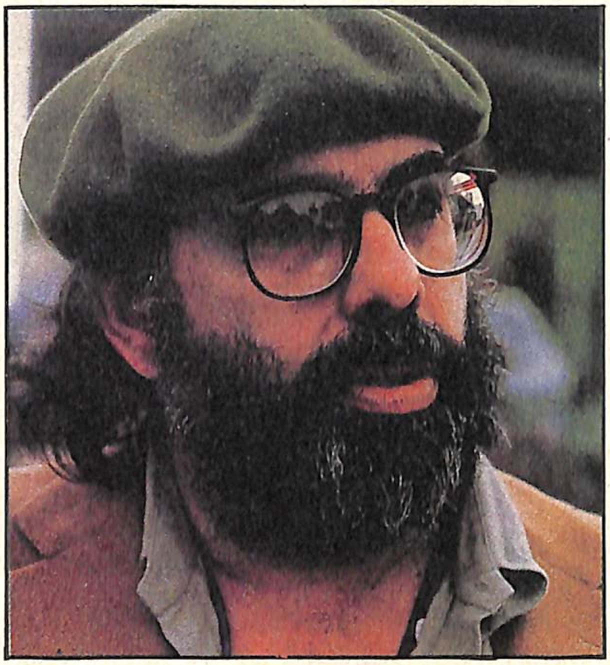
जॉन फोर्ड को एक प्रतिभाशाली निर्देशक के रूप में स्थापित करने वाली फिल्म थी, आयरन हॉर्स (१९२४)। फोर्ड की फिल्मों की लोकेशन बहुत आकर्षक मानी जाती है। 'थ्री बेड मेन' (१९२६) में उन्होंने दुष्कर परिस्थितियों के बीच विश्व प्रसिद्ध ओकलहामा रेगिस्तान की पृष्ठभूमि को कैमरे में कैद किया। मूक सिनेमा के दौर में निर्मित फोर्ड की अन्य कृतियाँ थीं, सेल्यूट/ सी बिनिथ और फोर संस। इन फिल्मों ने जॉन फोर्ड को हॉलीवुड के सर्वश्रेष्ठ फिल्मकारों के बीच स्थापित कर दिया। तीस के दशक में जॉन फोर्ड अपने विस्तृत निर्देशकीय कैनवास पर नए रंग उँड़ेलते नजर आए। उनकी इस दौर की फिल्मों का कथानक अधिक वैयक्तिक और

वक्तव्य- परक था। १९३५ में निर्मित 'द इन्फॉर्मर' (मुखबिर) आयरिश क्रांति के दौरान विचारधारा के द्वंद्व और विश्वासघात की कहानी पर आधारित थी। इस फिल्म के लिए फोर्ड को पहली बार सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुआ। रोजर व्हीकल/ एरोस्मिथ/ पिलग्रिमेज/ वर्ल्ड मूव्स ऑन/ हेरीकेन/ स्टीम बोट आदि फोर्ड द्वारा तीस के दशक में निर्मित प्रमुख फिल्में थीं। इन्होंने जॉन फोर्ड की पहचान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बनाई। १९३९ फोर्ड के कैरियर का सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ष था, जब उनकी अत्यंत सफल फिल्म 'ड्रम्स अलांग द मोहॉक' का प्रदर्शन हुआ। हेनरी फोंडा और क्लॉदे कॉलबर्ट इसके प्रमुख कलाकार थे। व्यावसायिक रूप से इस फिल्म ने फोर्ड की छवि एक कामयाब निर्माता के रूप में निर्मित की। इसके बाद वे महँगे बजट वाली भव्य फिल्में बनाने लगे। द ग्रेप्स ऑफ रेथ/ स्टेज कोच/ हाऊ ग्रीन वाज माय वैली। इनमें ग्रेप्स ऑफ रेथ को ऑस्कर मिला।

१९४२ और १९४३ में लगातार दो वर्ष जॉन फोर्ड को क्रमशः बैटल ऑफ मिडवे और दिसंबर सेवंथ के लिए ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुए। इन फिल्मों का निर्माण फोर्ड ने अमेरिका से बाहर रहकर किया था। हॉलीवुड लौटने पर एक बार फिर 'दे वेअर एक्स्पेंडेबल' और 'माय डॉलिंग क्लेमेंटाइन' जैसी सुपरहिट फिल्मों के सिलसिले की शुरूआत की। प्रसिद्ध अमेरिकी निर्माता मेरियन सी. कूपर के साथ मिलकर जॉन फोर्ड ने एक सिनेत्रयी फोर्ट अपाचे/ शी वोर ए यलो रिबन और रियो ग्रांडे का निर्माण किया था। इन तीनों फिल्मों में केंद्रीय भूमिका प्रख्यात अभिनेता जॉन वेन ने निभाई। १९५२ में फोर्ड द्वारा निर्देशित 'द क्वायट मेन' के लिए उन्हें चौथी बार ऑस्कर से सम्मानित किया गया। फोर्ड के कैरियर की अंतिम फिल्मों मि. रॉबर्ट/ लास्ट हुर्रा/ सेवन वुमन में उनके दुर्बोध व्यक्तित्व की परछाइयाँ महसूस की जा सकती हैं। ३१ अगस्त १९७३ को ८८ वर्ष की भरपूर आयु जीने के बाद जॉन फोर्ड की जब मृत्यु हुई, तो उन्हें अमेरिकी फिल्म संस्था की ओर से लाइफ एचीवमेंट अवॉर्ड दिया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान पाने वाले वे पहले फिल्मकार थे।

फ्रांसिस फोर्ड कोपोला

'गॉड फादर' जैसी विश्व प्रसिद्ध फिल्म बनाने वाले फ्रांसिस फोर्ड कोपोला का नाम अमेरिका के सर्वाधिक प्रतिभाशाली फिल्मकारों में लिया जाता है। ७ अप्रैल १९३९ को डेट्रॉयट में जन्मे कोपोला द्वारा निर्देशित कुछ फिल्में व्यावसायिक दृष्टि से रिकॉर्ड तोड़ सफलता अर्जित करने के अलावा कलात्मक धरातल पर भी सराही गई। दूसरी ओर उनकी कुछ फिल्मों को बुरी तरह असफलता का मुँह देखना पड़ा। एक ही फिल्मकार का सिने कर्म किस प्रकार विरोधाभास का परिचायक हो सकता है, कोपोला इसके उदाहरण हैं। उनकी रचनात्मक प्रतिभा कई मौकों पर विलक्षण रूप से सामने आई। केलीफोर्निया विश्वविद्यालय से सिने कर्म की तालीम लेने के बाद फ्रांसिस कोपोला ने महज तीन दिन की अवधि में अपनी पहली सिनेकृति 'डिमेंशिया -१३' (१९६३) का निर्माण किया था। आरंभिक रूप से वार्नर बंधुओं के साथ मिलकर कोपोला ने मसाला फिल्में 'यू आर ए बिग बॉय नाऊ' (१९६६) और 'फिनियन्स रेनबो' (१९६८) बनाई, जिनका टिकट खिड़की पर बुरा हश्र हुआ। 'द रेनबो पीपुल' (१९६९) कोपोला की अल्पचर्चित व्यक्तिपरक फिल्म थी। जिसके बाद उन्होंने निर्देशन के अलावा कुछ फिल्मों के लिए पटकथा लेखन का काम किया। 'पेटन' (१९७०) फिल्म के लिए कोपोला को सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखक के बतौर ऑस्कर पुरस्कार मिला।



फ्रांसिस फोर्ड कोपोला

निर्देशक के बतौर कोपोला की अंतरराष्ट्रीय पहचान बनाने वाली फिल्म 'गॉडफादर' १९७२ में प्रदर्शित हुई। अपराधजगत की पृष्ठभूमि में रची गई यह फिल्म विश्व सिने इतिहास की सर्वाधिक सफल फिल्मों में गिनी जाती है। इस फिल्म को सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के अलावा सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए भी ऑस्कर अवार्ड दिया गया। 'गॉडफादर' के दूसरे भाग को भी यह दुर्लभ उपलब्धि हासिल हुई। 'द कन्वरसेशन' (१९७४) के प्रदर्शन के बाद कोपोला हॉलीवुड के अग्रणी फिल्मकारों में शुमार होने लगे थे। १९७९ में निर्मित कोपोला की अगली फिल्म 'एपोकेलिप्स -नाऊ एक कलात्मक सिनेकृति के रूप में तो सराही गई, लेकिन टिकट खिड़की पर इससे बेहतर प्रदर्शन नहीं किया। इस फिल्म पर काफी ज्यादा पैसा खर्च करने के कारण कोपोला दीवालिएपन के कगार पर पहुँच गए थे। हालाँकि यह फिल्म एक बार फिर कोपोला को ऑस्कर मनोनयन का सम्मान दिलाने में सफल रही। एपोकेलिप्स नाऊ की असफलता से घबराकर कोपोला ने द ब्लैक स्टालियन/ आउट साइडर्स/ वन फ्राम द हर्ट/ कॉटन क्लब जैसी साधारण विषयवस्तु वाली फिल्मों का निर्माण किया। लेकिन इन्हें भी आंशिक कामयाबी ही मिल सकी। कोपोला को ८० के दशक की शुरूआत तक चुका हुआ फिल्मकार कहा जाने लगा था।

१९८७ में 'गार्डन ऑफ स्टोन' जैसी साहित्यिक धरातल वाली फिल्म के निर्माण के उपरांत कोपोला ने अगले वर्ष 'टकर : द मेन एंड हिस ड्रीम्स' शीर्षक से एक आत्मकथा परक फिल्म बनाई। इसके नायक की आदर्शवादी विचारधारा के जरिए कोपोला के व्यक्तिगत विचार ही अभिव्यक्त हुए हैं। 'न्यूयॉर्क स्टोरीज' (१९८९) कोपोला द्वारा निर्मित फ्लॉप फिल्मों की श्रृंखला की अगली कड़ी थी। १९९० में उन्होंने अपनी सबसे सफल फिल्म 'गॉडफादर' को तुरुप के इक्के की तरह इस्तेमाल करते हुए इसके तीसरे भाग की रचना की। एक बार फिर वे सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के बतौर ऑस्कर पुरस्कार के हकदार बने। कोपोला के रचनाकर्म का दायरा काफी विस्तृत रहा है। गंभीर वक्तव्य परक फिल्म निर्माण के साथ कोपोला विश्व सिनेमा के सचेत प्रतिनिधि रहे हैं। अनेक विदेशी फिल्मकारों की कृतियाँ अमेरिकी दर्शकों को उपलब्ध कराने में उन्होंने व्यक्तिगत रूप से भूमिका अदा की है। जापानी निर्देशक कुरुसोवा की कुछ फिल्मों के प्रदर्शन पर जब अमेरिकी सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया था, तो कोपोला ने स्वयं हस्तक्षेप कर इन्हें परदे तक लाने का प्रयास किया।

पॉल काक्स

ऑस्ट्रेलिया के सबसे प्रतिभाशाली समकालीन फिल्मकार के रूप में पॉल काक्स का नाम लिया जाता है। हॉलैंड में जन्मे और ऑस्ट्रेलिया में शिक्षित काक्स की विश्व सिनेमा में पहचान उनके द्वारा निर्देशित फीचर फिल्म 'कोस्तास' (१९७९) से बनी थी। पॉल काक्स मुख्यतः मानवीय संवेदनाओं और स्त्री- पुरुष संबंधों की गंभीर दास्तान परदे पर प्रस्तुत करने के लिए जाने जाते हैं। आरंभ में उन्होंने 'लोनली हार्ट' और 'मेन ऑफ फ्लावर्स' (१९८३) जैसी कुछ रोमांटिक, हास्यपरक फिल्मों का निर्माण किया था। 'माय फर्स्ट वाइफ' काक्स की वह

फिल्म थी, जिसने उनकी पहचान विचारशील और विवादास्पद फिल्मकार के रूप में अंतराष्ट्रीय स्तर पर कायम की। काक्स ने प्रख्यात चित्रकार 'विंसेंट वॉन गॉग' के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केंद्रित एक वृत्तचित्र 'द लाइफ एंड डेथ ऑफ वॉन गॉग' (१९८७) का निर्माण किया था जिसे अंतरराष्ट्रीय लघु फिल्म समारोहों में काफी सराहा गया। काक्स की अन्य महत्वपूर्ण सिने कृतियाँ हैं- मेन ऑफ फ्लावर/ डेथ एंड डेस्टिनी/ द गोल्डन ब्रेड/ ए वुमन्स टेल और आयलैंड। वुमन्स टेल, पॉल काक्स की अत्यधिक चर्चित फिल्मों में रही है। इसमें उन्होंने कैंसर से जूझती एक स्त्री की दर्दनाक कहानी चौंकाने वाले अंदाज में परदे पर प्रस्तुत की। फिल्म में नायिका का चरित्र वास्तविक जीवन में इस महाव्याधि का सामना कर रही युवती ने निभाया था। 'द नन एंड बैंडिट' काक्स की नवीनतम फिल्म है।

बाँड फिल्मों के निर्देशक

टेरेंस यंग जेम्स बाँड फिल्मों के पहले निर्देशक थे। उन्हें जेम्स बाँड का जनक कहा जाता है। उनका जन्म शंघाई में सन् १९१५ में हुआ था। उन्होंने दुनिया के कई भागों में फिल्में निर्देशित कीं। यहाँ तक कि आर्कटिक सर्कल में भी फिल्मों की शूटिंग की। वे सेना में भी रहे थे। उन्होंने प्रख्यात निर्देशकों अलेक्जेंडर कोर्डा और शेरवुड एंडरसन से बहुत कुछ सीखा। डॉक्टर नो का निर्देशन करने के पहले वे कुछ सफल रोमांचक फिल्में कर चुके थे। जेम्स बाँड की फिल्में ताजा हवा का झोंका था, क्योंकि इसके पहले उबासियाँ लेने वाली फिल्में ही ज्यादा बनती थीं। जेम्स बांड को पेश करने के तरीके भी नए-नए होते थे। फ्रॉम रशिया विद लव देखकर विख्यात निर्देशक डेविड लीन ने कहा था 'मैं इस फिल्म को अपनी फिल्म लॉरेंस ऑव अरेबिया से बदलने को तैयार हूँ।'

गॉय हैमिल्टन ने 'गोल्ड फिंगर' से बाँड फिल्मों की कमान संभाली। उन्होंने इन फिल्मों में फैंटेसी को भी स्थान दिया। उनका जन्म सन् १९२२ में पेरिस में हुआ था। तेरह बरस की उम्र में उन्हें फिल्म निर्माण में रुचि जागी। उन दिनों पश्चिमी देशों में भी फिल्मों में काम करना बुरा माना जाता था। बाद में उन्होंने अवैतनिक काम शुरू किया। क्लैपर बॉय उनकी पहली प्रोन्नति थी। वक्त की माँग पर वे सेना में भर्ती हुए और जासूसी की। वापसी पर फिर फिल्मों से जुड़ गए। बाँड की फिल्में बनाना एक चुनौती थी, जिसे गॉय ने सफलतापूर्वक स्वीकारा। उन्होंने सीन कॉनरी और रॉजर मूर दोनों के साथ काम किया।

लुईस गिल्बर्ट बाँड फिल्मों के तीसरे निर्देशक थे। वे 'यू ओनली लिव ट्वाइस' से बाँड फिल्मों से जुड़े। उनके सामने और भी बड़ी परेशानियाँ थीं। उनका जन्म मार्च १९२० में लंदन में हुआ था। उनके परिवार के सभी लोग नाटकों में लगे थे। लुईस ने भी बचपन में कई फिल्मों में काम किया था। मगर वे एक निर्देशक बनना चाहते थे। वे कोर्डा के तीसरे सहायक हो गए। लुईस की निगाह में बाँड फिल्मों का निर्देशन करना कोई बड़ा काम नहीं है। उनकी पहली बाँड फिल्म थी 'यू ओनली लिव ट्वाइस।' इस फिल्म में उन्होंने चार लाख पौंड की लागत से एक ज्वालामुखी बनाया था। वे आलीशान सेट पर जोर देते थे। 'द स्पाय हू लव्ड मी' का सेट देखने ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधानमंत्री हेरॉल्ड विल्सन भी आए थे। दर्शकों की माँग पर लुईस ने 'द स्पाय हू लव्ड मी' के खलनायक जॉज को 'मून रैकर' में भी रखा। किसी खलनायक को यह पहली बार रिपीट किया गया था।

जॉन ग्लेन ने बाँड फिल्मों की सफलता का सफर जारी रखा। वे लंदनवासी हैं। वहीं उनका जन्म सन् १९३१ में हुआ था। बचपन से ही वे फिल्म दीवाने थे। किशोरावस्था में वे फिल्मी



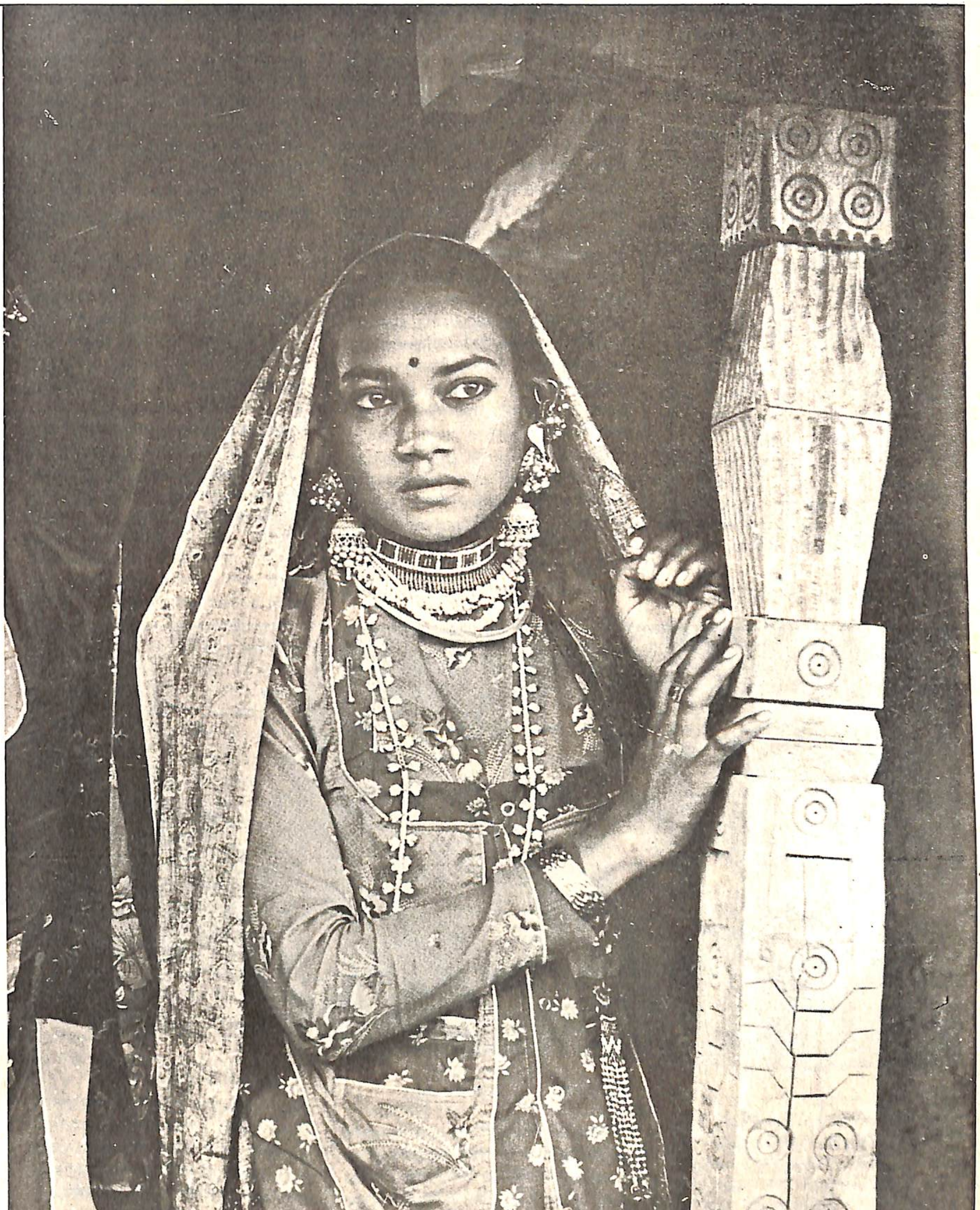
बारबरा कैरेज
नेवर से
नेवर अगेन

दुनिया में आए। वे ऑन हर मैजेस्टीज सीक्रेट सर्विस के निर्माण के दौरान स्विट्जरलैंड में ब्रोकोली मिले। जॉन पैराशूट दृश्यों में माहिर हैं। 'मूनरैकर' में वे सहायक निर्देशक रहे। वे रॉजर मूर के साथ एक गैर जेम्स बाँड फिल्म में काम कर चुके थे। वे फार योर आइज ओनली से बाँड फिल्मों से जुड़े।

लुशिनो विस्कोंती

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद इतालवी सिनेमा को नूतन आकार देने में जिन फिल्मकारों की अहम् भूमिका रही, उनमें लुशिनो विस्कोंती का नाम प्रमुख है। नवयथार्थवाद को अपनी फिल्मों के जरिए रूपायित करने में विस्कोंती अग्रणी थे। इस सिनेमाधारा को रोजेलिनी, दसीका और फ़ेलिनी जैसे विश्वचर्चित इतालवी फिल्मकारों के साथ विस्कोंती ने आगे बढ़ाया। २ नवंबर १९०६ को विस्कोंती की पैदाइश मिलान (इटली) के एक समृद्ध कुलीन परिवार में हुई थी। ऑपेरा और थिएटर की दुनिया में कुछ समय तक सक्रिय रहने के बाद विस्कोंती फ्रांसीसी निर्देशक ज्याँ रैना के सान्निध्य में फिल्म निर्देशन का अनुभव हासिल करने पेरिस चले गए। १९४२ में उन्होंने अपनी पहली फीचर फिल्म 'ओसेशन' निर्देशित की। उनकी अगली फिल्म 'ला टेरा ट्रेमा' (१९४७) नवयथार्थवादी सिने आंदोलन की प्रवर्तक कृतियों में शुमार की जाती है। इसका कथानक सिसली के एक गरीब मजदूर परिवार के परिप्रेक्ष्य में वर्ग-संघर्ष के चित्रण पर केंद्रित था।

विस्कोंती विचारधारा के स्तर पर फासीवाद के प्रबल आलोचक और साम्यवाद के पक्षधर फिल्मकार रहे। उनकी फिल्में नितांत वैयक्तिक और सिद्धांतवादी टिप्पणियों से संपृक्त हैं। बदलते समाज में नैतिकता के ह्रास, आर्थिक/ सामाजिक और राजनीतिक शोषण तथा भौतिकवाद के गहरे मायाजाल में जकड़े समाज के बीच संवेदनशील आदमी का संघर्ष विस्कोंती की फिल्मों के प्रमुख विषय हैं। बेलिसीमा/ सेन्सो/ वाइट नाइट/ रोको एंड हिज ब्रदर उनकी आरंभिक फिल्में थीं। 'द लेपार्ड' (१९६३) विस्कोंती की प्रथम कालजयी कृति मानी जाती है। साम्राज्यवाद के टूटते तिलिस्म पर यह फिल्म विस्तारपूर्वक रोशनी डालती है। इसका एक उत्सव भोज संबंधी दृश्य विश्व सिनेमा के सर्वोत्तम फिल्म दृश्यों में शामिल किया जाता है। १९६७ में विस्कोंती ने अल्बेयर कामू के प्रसिद्ध उपन्यास 'स्ट्रेंजर' का सिने रूपांतरण निर्मित किया। इटली के शीर्षस्थ अभिनेता मार्सिलो मॉस्त्रियोनी ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई थी। हिटलर के नाजीवाद के विरुद्ध तीव्र वक्तव्य पेश करने वाली विस्कोंती की विश्वविख्यात सिने कृति 'द डेम्ड' (१९६९) सर्वश्रेष्ठ पटकथा के लिए अकादमी अवॉर्ड से सम्मानित की गई। कैरियर के उत्तरार्ध में विस्कोंती ने व्यक्ति और समाज के अंतरसंबंधों पर केंद्रित भावप्रधान फिल्में बनाईं। डेथ इन द वेनिस (१९७१) एक समलैंगिक पुरुष द्वारा जीवन में सौंदर्य और अनुभूति के उन्माद की तलाश पर आधारित फिल्म थी। जर्मनी के शासक लुडविग-द्वितीय के जीवन से संबंधित एक फिल्म का निर्माण भी विस्कोंती ने किया था। कन्वर्सेशन पीस (१९७५) लुशिनो की अत्यंत बौद्धिक और गंभीर सिनेकृति थी, जिसमें हॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता बर्ट लैंकस्टार ने मुख्य भूमिका निभाई। अपनी अंतिम फिल्म 'द इनोसेंट' (१९७६) में विस्कोंती ने चिरपरिचित शैली में अपना चिंतन



प्रस्तुत किया है। १७ मार्च १९७६ को मौलिक चिंतन के धनी इस महान फिल्मकार की मृत्यु हो गई।

क्लार्क गेबल

अमिताभ बच्चन के व्यक्तित्व को लेकर एक समय फिल्म निर्माताओं ने खिल्ली उड़ाई थी। हॉलीवुड के सुपरस्टार क्लार्क गेबल के चेहरे पर भी एक निर्माता का व्यंग्यात्मक विश्लेषण था कि इसे किसी चिंपाजी के समकक्ष रखना उचित होगा। बाद में इसी निर्माता की फिल्म क्लार्क गेबल के लाजवाब अभिनय की वजह से विश्व सिनेमा की अविस्मरणीय सिनेकृति साबित हुई। इस फिल्म का नाम था, गोन विद द विन्ड। न केवल इसकी बेशुमार सफलता ने गेबल को सिने समीक्षकों के आकर्षण का केंद्र बनाया, बल्कि उनके प्रशंसकों की अंतहीन श्रृंखला विश्व भर में तैयार की। एक वक्त ऐसा भी आया जब अपनी मुखाकृति व लंबे कानों के लिए उपहास का शिकार बनने वाले गेबल महिलाओं के बीच 'काम्य पुरुष' की छवि गढ़ चुके थे। युवतियाँ उनके स्पर्श हेतु तरसती थीं। जिंदगी का अविश्लेष्य चरित्र इससे साफ जाहिर होता है। गेबल स्वयं एक अबूझ मिजाज व्यक्ति रहे। रजतपट को उन्होंने अपनी वजनदार उपस्थिति से चौंधियाए रखा।

१ फरवरी १९०१ को कार्डिज में जन्मे क्लार्क गेबल जिंदगी की जड़ों से जुड़े कलाकार रहे हैं। एक अकेले व्यक्ति का संघर्ष क्या होता है, यह उन्होंने बहुत करीब से देखा। स्कूल की पढ़ाई उन्हें पारिवारिक परिस्थितियों के कारण अधूरी छोड़नी पड़ी। आजीविका के लिए थिएटर का रुख किया। यहीं से सिनेमा के द्वार उनके लिए खुले। आरंभ में उन्होंने कुछ फिल्मों में एक्स्ट्रा की भूमिकाएँ निभाईं। एम.जी.एम. कंपनी के बैनर तले पहली बार गेबल को फिल्म 'द पेंटेड डेजर्ट' में विलेन की भूमिका मिली। नायक के रूप में ए फ्री सोल/ स्पोर्टिंग ब्लड और डांस फूल डांस उनकी आरंभिक फिल्में थीं। इनमें भी उनका किरदार सर्वथा सौम्य, भोले भाले नायक का नहीं, बल्कि रोबीले, खतरनाक और योद्धा चरित्र वाले व्यक्ति का था। लेकिन महिला दर्शकों को खासतौर पर उनकी यह अदा मोहक लगी। एम.जी.एम. कंपनी की लगभग सभी शीर्षस्थ तारिकाओं ग्रेटा गार्बो, नार्मा शीरर, जीन हार्लो, मिर्ना लॉय के साथ फिल्मों में काम किया है। संवेदनशील भूमिका में गेबल की पहचान बनाने वाली फिल्म थी, फ्रेंक काप्रा कृत 'इट हैपंड वन नाइट।' इसमें प्रभावी अभिनय के लिए क्लार्क गेबल ऑस्कर से सम्मानित किए गए। यही सम्मान दूसरी बार उन्हें डेविड सेल्जनिक की विश्व विख्यात फिल्म 'गोन विद द विंड' के लिए मिला। १९३९ में प्रदर्शित इस फिल्म ने गेबल को हॉलीवुड के सर्वाधिक लोकप्रिय अभिनेताओं के बीच स्थापित कर दिया था।

चालीस के दशक में क्लार्क गेबल अपने कैरियर के शिखर पर थे। कॉमरेड एक्स/ समव्हेयर आय विल फाइंड यू/ होम कमिंग/ की टू द सिटी/ कमांड डिसीजन/ मोगांबो/ एनी नंबर केन प्ले जैसी फिल्मों के जरिए गेबल ने हॉलीवुड के सिने साम्राज्य पर अपना दबदबा कायम किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान गेबल के जीवन में एक अनूठा मोड़ आया था, जबकि उनकी पत्नी केलॉल लोम्बार्ड एक हवाई दुर्घटना में मारी गईं। अवसन्न मन:स्थिति में गेबल फिल्मी दुनिया से दूर होकर अमेरिकी वायुसेना में भर्ती हो गए थे। नाजी सेनाओं के विरुद्ध उन्होंने जमकर गोलीबारी की। युद्ध खत्म होने पर क्लार्क हॉलीवुड लौट आए। उनके पुनरागमन के बाद की प्रमुख फिल्में थीं सोल्जर्स ऑफ फॉर्चून/ बैंड एंड एंजल/ रन सायलेंट, रन डीप/ इट स्टार्टेड इन नेपल्स और टीचर्स पेट। अपने पूरे कैरियर में क्लार्क गेबल रोबीले चरित्र वाली भूमिकाओं के लिए जाने गए। 'द मिसफिट' (१९६०) उनकी अंतिम फिल्म थी। आर्थर मिलर के उपन्यास पर आधारित इस फिल्म को समीक्षकों द्वारा बेहद सराहा गया। मर्लिन मनरो इसमें गेबल की नायिका थीं। फिल्म प्रदर्शन के पूर्व ही क्लार्क गेबल चल बसे थे।



क्लार्क गेबल : इट हेप्पंड वन नाइट

अल्फ्रेड हिचकॉक

इस महान ब्रिटिश निर्देशक ने अपना फिल्मी कैरियर मूक फिल्मों के लिए शीर्षक लिखने के काम से शुरू किया। इसके बाद पटकथा लेखन एवं निर्देशन के क्षेत्र में सहायक के रूप में काम किया। सात वर्ष तक विभिन्न फिल्मी विधाओं में प्रशिक्षण के तौर पर काम करने के बाद १९२७ में हिचकॉक ने 'द लॉजर' का निर्देशन किया। इस पहली फिल्म में ही हिचकॉक की मौलिकता/ नवीन शैली/ विशिष्ट तकनीक एवं रहस्य क्षमता का प्रमाण मिलता है। इस फिल्म में थोड़ी देर के लिए हिचकॉक स्वयं सामान्य पात्र के रूप में परदे पर आते हैं। इसके बाद ब्लैकमेल (१९२९) में हिचकॉक ने ध्वनि एवं सम्पादन के क्षेत्र में अपनी महारत प्रमाणित की। रोमांचक फिल्मों के निर्माण की श्रृंखला में ब्रिटेन में रहते हुए हिचकॉक ने जो फिल्में बनाईं उनमें द मेन हू न्यू टू मच (१९३४), द थर्टी नाइन स्टेप्स (१९३५), सेबोटेज (१९३६), द लेडी वेनिशेज (१९३८) प्रमुख हैं। द लेडी वेनिशेज में हिचकॉक ने सीमित सेटिंग में एक्शन फिल्माने का सफल प्रयोग किया।

द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व डेविड ओ सेल्जनिक के साथ अनुबंधित होकर हिचकॉक हॉलीवुड पहुँचे। यहाँ उन्होंने डेफने मॉरियर की कृति 'रेबेका' (१९४०) का फिल्मांकन किया। जॉन फोंटेन तथा लारेन्स ऑलिवर जैसे अभिनेताओं ने इस फिल्म में सशक्त अभिनय किया। हिचकॉक ने रहस्य और रोमांच की विशिष्टता के साथ मनोवैज्ञानिक गुत्थियों को अपनी फिल्मों का विषय बनाया। हिचकॉक भय और संदेह जैसी भावनाओं को कैमरे के माध्यम से जीवंत करने की विधा में धीरे- धीरे पारंगत होते गए। निर्माताओं के दबाव के कारण उन्हें अपनी फिल्मों का अंत सुखद करने पर बाध्य होना पड़ा। 'शेडो ऑव डाउट' (१९४३) से हिचकॉक और कैटी ग्रांट की जोड़ी बनी। स्पेल बाउंड (१९४५) में हत्या कथा को गहन मनोविश्लेषण का विषय बनाकर प्रस्तुत करने में हिचकॉक को सफलता मिली। इस फिल्म की विशेषता थी सल्वाडार डॉली द्वारा डिजाइन की गई स्वप्न कड़ियों का प्रयोग तथा फ्रायड का प्रतीक। इंग्रिड बर्गमेन का अभिनय इस फिल्म को अविस्मरणीय बनाने में सहयोगी रहा। रोप (१९४८) के साथ हिचकॉक निर्माताओं की श्रेणी में आ गए। यह

फिल्म पूरी तौर पर एक ही कमरे में एक ही शॉट में फिल्माई गई।

इसके बाद हिचकॉक ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का पूर्ण प्रदर्शन करते हुए उत्कृष्ट फिल्मों का लगातार निर्माण किया। स्ट्रेंजर्स ऑन द ट्रेन (१९५७), डायल एम फॉर मर्डर (१९५४), रीअर विंडो (१९५४), टू केच ए थीफ (१९५५), द रॉक मेन (१९५७) फिल्मों में रहस्य/ रोमांच/ भय/ आतंक/ हास्य और मनोविश्लेषण का अद्‌भुत संगम सामने आया।

हिचकॉक ने १९५५ से टेलीविजन पर कार्यक्रम प्रस्तुत करना शुरू किया। अल्फ्रेड हिचकॉक प्रजेंट्स नामक यह साप्ताहिक धारावाहिक लगातार दस वर्षों तक चलता रहा।

हिचकॉक की स्मरणीय कृतियों में वर्टिगो (१९५८)/ सायको (१९६०)/ द बर्ड्स (१९६३)/ टोपाज (१९६९)/ फेमिली प्लॉट (१९७६) प्रमुख हैं। बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण १९७९ से हिचकॉक ने फिल्मी दुनिया को त्याग दिया। इसी वर्ष अमेरिकन फिल्म इंस्टीट्यूट ने इन्हें लाइफ एचीवमेंट अवार्ड देकर सम्मानित किया। सन् १९८० में यह महान निर्माता इस संसार से विदा हो गया।

अल्फ्रेड हिचकॉक



जॉन ग्रियरसन

वृत्तचित्रों के निर्माता जॉन ग्रियरसन ने १९२४ में अमेरिका जाकर जनसंचार और जनमत के परस्पर संबंधों का गहन अध्ययन किया। उन्होंने ही १९२६ में 'मोएना' का रिव्यू लिखते हुए 'डॉक्यूमेण्टरी' शब्द का इस्तेमाल किया। सन् १९२७ में वे स्वदेश (ब्रिटेन) लौटे। ब्रिटेन में 'एम्पायर मार्केटिंग बोर्ड' ने उन्हें फिल्म ऑफिसर के पद पर नियुक्त किया। इस पद पर कार्य करते हुए ग्रियरसन ने जनसाधारण तक सूचनाएँ पहुँचाने के माध्यम के तौर पर फिल्मों की उपयोगिता प्रतिपादित की। प्रजातंत्र के सशक्त उपकरण के तौर पर फिल्मों का महत्व सिद्ध करने के लिए ग्रियरसन ने व्याख्यान मालाओं का आयोजन भी किया। फिल्मी पत्रिकाओं में नियमित लेखन भी किया। कुछ वर्षों तक उन्होंने ब्रिटेन के जनरल पोस्ट ऑफिस के लिए भी फिल्में बनाईं। गैर राजनीतिक वृत्तचित्रों का निर्माण करने की शृंखला में 'सांग ऑफ सीलोन' (१९३४) तथा नाइट मेल (१९३६) बनाकर ग्रियरसन ने वृत्तचित्रों को सौंदर्यबोध से अलंकृत किया। वृत्तचित्रों की अंतरराष्ट्रीय धारणा को विकसित करने के लिए १९४५ में ग्रियरसन ने न्यूयार्क में 'इंटरनेशनल फिल्म एसोसिएट्स' की स्थापना की। डाइरेक्टर ऑव मास कम्युनिकेशन एंड पब्लिक इन्फार्मेशन के पद पर यूनेस्को ने १९४७ में उन्हें पेरिस भेजा। पर्याप्त धनराशि की उपलब्धि न हो पाने के कारण दो वर्ष बाद इस पद को छोड़ वे 'ब्रिटिश सेंट्रल ऑफिस में फिल्म कंट्रोलर बन गए। 'ग्रुप थ्री' के एक्जीक्यूटिव निर्माता के रूप में उन्होंने कुछ कथा फिल्मों का निर्माण भी किया। स्कॉटिश टेलीविजन के लिए उन्होंने 'दिस वण्डरलैण्ड वर्ल्ड' नामक अंतरराष्ट्रीय वृत्तचित्र के चुनिंदा अंश प्रस्तुत किए।

एलिया कजान

अमेरिकन रंगमंच और फिल्मों में अभिनेता/ निर्देशक/ लेखक एवं निर्माता के रूप में विशिष्ट स्थान प्राप्त करने वाले एलिया कजान ने अपना कैरियर न्यूयार्क में रंगमंच अभिनेता के तौर पर शुरू किया। बाद में वे थिएटर में निर्देशक भी बन गए। फिल्मों में वे वृत्तचित्रों के निर्माता राल्फ स्टेनर के सहायक के रूप में आए। कुछ वर्षों तक वे साम्यवादी दल से जुड़े रहे। उनके द्वारा निर्देशित की गई पहली फीचर फिल्म 'ए ट्री ग्रोज इन ब्रुकलीन' (१९४५) थी। यह फिल्म न्यूयार्क के झोपड़पट्टी इलाके के जीवन पर केंद्रित थी। सन् १९४७ में प्रदर्शित फिल्म 'बूमरेंग' के द्वारा उन्होंने अमेरिका की न्यायिक व्यवस्था पर प्रहार किया। 'पिंकी' (१९४९) रंगभेद की समस्या पर आधारित फिल्म थी। 'ऑन द वाटर फ्रण्ट' (१९५४) ने आठ एकेडमी अवार्ड अर्जित किए। 'ईस्ट ऑफ इडन' ने एक बार फिर उन्हें एकेडमी अवार्ड से अलंकृत करवाया। 'अमेरिका-अमेरिका (१९६३) में उन्हें लेखक तथा निर्देशक के रूप में दुहरा ऑस्कर अवार्ड दिया गया। इसके बाद कजान ने केवल तीन फिल्मों का निर्देशन किया 'द अरेंजमेंट' (१९६९), 'द विजिटर्स' (१९७२) तथा 'द लास्ट टायकून' (१९७६) तीनों ही फिल्में असफल रहीं।

कजान की पहली पत्नी मॉली डे का निधन १९६३ में हुआ। उसके बाद उन्होंने अभिनेत्री बारबारा लोडेन से शादी की। उन्होंने कई उपन्यास भी लिखे। अपनी आत्मकथा 'ए लाइफ' भी लिखी जो १९८८ में प्रकाशित हुई। कजान के पुत्र निकोलस लेखक एवं निर्देशक हैं तथा ऑस्कर अवार्ड अर्जित कर चुके हैं।

विवियन ली

रंगमंच और ब्रिटिश फिल्मों की इस महान अभिनेत्री का वास्तविक नाम विवियन हार्टले था। फिल्मों में उनका प्रवेश 'थिंग्स आर लूकिंग अप' (१९३४) से हुआ। 'फायर ओवर इंग्लैंड' (१९३७) ने उन्हें अभिनेत्री के रूप में प्रतिष्ठित एवं चर्चित बनाया। इस फिल्म में उनके नायक लारेन्स ऑलिवर थे। उनसे प्रणय और परिणय सूत्र में बँधी। अभिनेत्री के रूप में ली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'गॉन विद द विण्ड' (१९३९) ने प्रतिष्ठित किया। इस फिल्म में उत्कृष्ट अभिनय के लिए उन्होंने 'ऑस्कर अवार्ड' अर्जित किया। 'सीजर एण्ड क्लीओपेट्रा' (१९४५) तथा 'अन्ना कैरेनिना' (१९४८) उनकी श्रेष्ठ फिल्में रहीं। ए स्ट्रीट कार नेम्ड डिजायर (१९५१) ने उन्हें एक बार फिर ऑस्कर का हकदार बनाया। द शिप ऑव फूल्स (१९६३) उनकी आखिरी फिल्म थी। आलिवर से उनका तलाक १९६० में हुआ। टी.बी. की लंबी बीमारी झेलकर १९६७ में उनका निधन हुआ।

पीटर सेलर्स

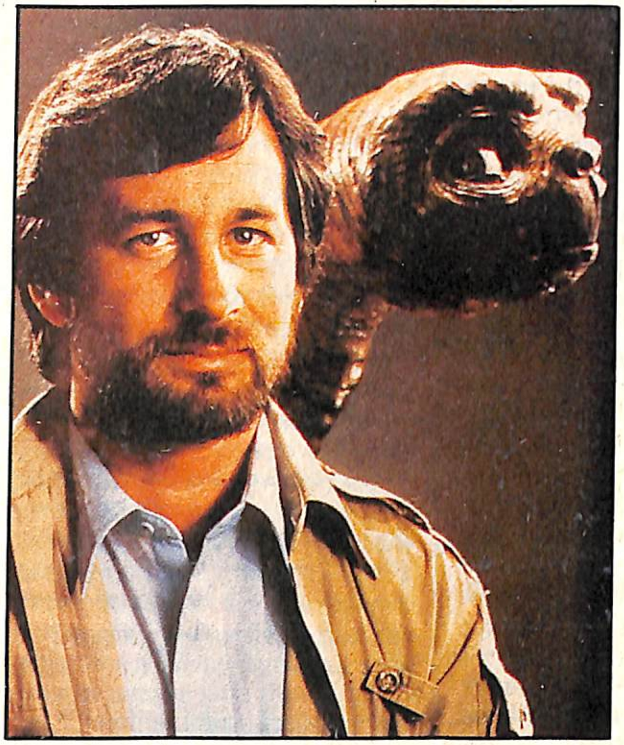
बितानवी सिनेमा का मुख्य आधार रंगमंच रहा है। सभी प्रमुख अँगरेज सिने हस्तियाँ किसी न किसी रूप में रंगमंच से जुड़ी रहीं। विश्व प्रसिद्ध ब्रिटिश अभिनेता पीटर सेलर्स का नाम इसका अपवाद नहीं है। इंग्लैंड के अलावा अमेरिका में बनी कुछ महत्वपूर्ण फिल्मों में भी उन्होंने काम किया। थिएटर की जमीन से जुड़ने के बाद सेलर्स का अभिनय प्रेम उन्हें सिनेमा के परदे तक लाने के लिए जिम्मेदार रहा। 'द लेडी किलर' और ऑल

राइट जैक (१९५९) सेलर्स की आरंभिक फिल्में थीं। उन्हें एक समर्थ अदाकार के रूप में प्रतिष्ठित करने वाली फिल्म रही; 'द मिलियॉनर्स' (१९६०)। इसमें पीटर सेलर्स ने एक कर्त्तव्यनिष्ठ भारतीय चिकित्सक की भूमिका निभाई थी, जो इंग्लैंड में कार्यरत है। सेलर्स के अभिनय कैरियर की एक प्रमुख विशेषता यह है कि उन्होंने अपनी अधिकतर फिल्मों में मानसिक असंतुलन के शिकार व्यक्ति की भूमिकाएँ अभिनीत कीं। डॉ.स्ट्रेंगलोव/ लौलिता/ पिंक पेंथर/ शॉट इन डार्क और पुसी-कैट जैसी फिल्मों में सेलर्स मुख्यतः समाज के बहिष्कृत पात्रों को परदे पर अभिव्यक्त करते नजर आए। १९६१ में पीटर सेलर्स ने एक फिल्म 'मि. टोपाज' का निर्माण किया था, जो दुर्भाग्यवश असफल रही। हृदयाघात की वजह से सेलर्स अभिनय के क्षेत्र में अधिक समय तक सक्रिय नहीं रह सके।

स्टीवन स्पीलबर्ग

विश्व सिनेमा में स्टीवन स्पीलबर्ग का नाम चमत्कारों का पर्याय माना जाता है। नन्हे बच्चों से लगाकर वयोवृद्ध दर्शकों तक उनकी लोकप्रियता की सरहद फैली हुई है। वे जिस ऐंद्रजालिक संसार की सृष्टि अपनी फिल्मों के जरिए पर्दे पर करते हैं, उसे देखकर सहसा मुँह से रामचरित मानस की ये पंक्तियाँ निकल आती हैं- 'कौतुक ताहि कीन्ह अपारा।' स्पीलबर्ग का सिने तकनीक पर जबर्दस्त नियंत्रण उनकी खासियत है। इसी के बूते पर उन्होंने क्लोज एनकाउंटर/ ई.टी./ जॉज और जुरासिक पार्क जैसी चर्चित फिल्मों का निर्माण किया। व्यावसायिक पैमाने पर स्पीलबर्ग दुनिया के सर्वाधिक सफल फिल्म निमार्ताओं में गिने जाते हैं। उनकी फिल्मों का तकनीकी पक्ष दर्शकों को सम्मोहित करने में सर्वथा कामयाब रहा है। पर्दे पर रोमांच, सनसनी और कौतूहल की सृष्टि करने में स्पीलबर्ग का जवाब नहीं। वे उन लोगों में से हैं, जिन्हें सिनेमा का आकर्षण एक जुनून की तरह बहुत छोटी उम्र से अपनी ओर खींच लेता है। १८ दिसंबर १९४७ को सिनिसिनाटे (अमेरिका) में जन्मे स्टीवन स्पीलबर्ग ने मात्र २१ वर्ष की आयु में टेलीविजन के लिए लघु फिल्मों का निर्माण शुरू कर दिया था। नाइट गैलरी /समथिंग एविल/ सैवेज आदि टेलीफिल्मों के जरिए स्पीलबर्ग ने अमेरिकी टेलीविजन पर अपनी पहचान बनाई। 'द शुगरलैंड एक्सप्रेस (१९७४) स्पीलबर्ग की पहली फीचर फिल्म थी। जिसे व्यावसायिक रूप से अधिक कामयाबी नहीं मिल सकी।

फिल्मकारों की आकाशगंगा में अपनी पहचान विशिष्टता के साथ कायम करने की आकांक्षा लेकर स्पीलबर्ग ने अपने रचनाकर्म को तकनीकी दृष्टि से मजबूत और आकर्षक बनाने का फैसला किया। 'जॉज' (१९७५) इस सिलसिले की पहली कड़ी थी। जिस कौशल के साथ स्पीलबर्ग ने इस फिल्म में रोमांच की सृष्टि की, दर्शक उससे चमत्कृत हो उठे। स्पीलबर्ग ने अपनी इसी विशेषता को फिल्म-दर-फिल्म विकसित किया है। 'क्लोज एनकाउंटर्स ऑव द थर्ड काइंड' (१९७७) स्पीलबर्ग की प्रथम विज्ञान कथा आधारित फिल्म थी। उसने साइंस फिक्शन फिल्मों की एक नई श्रेणी को जन्म दिया। 'क्लोजएन-काउंटर' के लिए स्पीलबर्ग अकादमी पुरस्कार हेतु मनोनीत किए गए। यही गौरव उन्हें अपनी अगली महत्वपूर्ण फिल्म 'रेडर्स ऑफ द लास्ट आर्क' (१९८१) के लिए भी मिला। हॉलीवुड की सफलतम फिल्मों में यह शुमार की जाती है। ई.टी. स्पीलबर्ग की अत्यंत प्रशंसनीय सिने कृति के बतौर आँकी गई। बेहद खूबसूरती के साथ इस फिल्म में स्पीलबर्ग ने बाह्य अंतरिक्ष में जीवन के अस्तित्व और बाल अवचेतन की मासूमियत का विषय पर्दे पर रूपांकित किया है। इसी फिल्म के बाद स्पीलबर्ग ने विशेष रूप से बाल दर्शकों को अपना प्रशंसक बनाया।



स्टीवन स्पीलबर्ग

इस फिल्म के लिए स्पीलबर्ग को अकादमी पुरस्कार भी मिला। ई.टी. के बाद स्पीलबर्ग के निर्देशकीय सफर की दिशा कुछ हद तक बदल गई थी। ट्वलाइट जोन्स (१९८३), द कलर पर्पल और एम्पायर ऑफ द सन स्पीलबर्ग की वे फिल्में थीं, जिसमें उन्होंने गंभीर वयस्क विषय उठाए।

सिनेकर्म के विलक्षण प्रयोगों में स्पीलबर्ग सदैव अग्रणी रहे हैं। १९८८ में उन्होंने एनिमेशन और सजीव पात्रों का अद्भुत सम्मिश्रण कर एक फिल्म बनाई थी, 'हू फ्रेम्ड द रॉजर रैबिट।' अमेरिकी टेलीविजन के लिए स्पीलबर्ग अनवरत् श्रेष्ठ कार्यक्रमों का निर्माण करते रहे हैं। एमजिंग स्टोरीज/ फंट पेज/ डलास एस्केप क्लॉज/ गुड लाइफ/ शीर्षकों से उनकी टी.वी. शृंखलाएँ बेहद लोकप्रिय हुई। हाल में स्पीलबर्ग की दो फिल्मों जुरासिक पार्क और शिंडलर्स लिस्ट ने विश्व भर के दर्शकों को आकृष्ट किया। जहाँ जुरासिक पार्क सिने इतिहास में व्यावसायिक सफलता के कीतिमान रचनेवाली फिल्म साबित हुई, वहीं 'शिंडलर्स लिस्ट' को नौ अकादमी अवार्ड पाने का दुर्लभ गौरव हासिल हुआ है। महाकाय प्राणी डायनासोर की रोमांचक दास्तान को स्पीलबर्ग ने अपनी फिल्म 'जुरासिक पार्क' में प्रस्तुत किया, वे स्वयं विश्व सिनेमा की चौखट में इतनी ही विराट शख्सियत का दर्जा रखते हैं।

वाल्ट डिजनी

परदे पर फुदकते-चहकते-ठुमकते कार्टून चरित्रों को देखकर जिस व्यक्ति का नाम याद आता है, वह है 'वाल्ट डिजनी।' उन्होंने एनिमेशन फिल्मों के एक नए युग की शुरुआत की। रेखा चित्रों का एक अद्भुत मायाजाल वाल्ट डिज्नी के निर्देशन में परदे पर रचा गया। उनके जादुई सम्मोहन से कोई भी अछूता नहीं है। बच्चे हों या वयस्क हर किसी को किसी तिलस्मी दुनिया के बाशिंदों की तरह हँसते-मुस्कुराते पशु-पक्षी रंग-बिरंगी शक्ल में चित्रपट की चौखट पर आकर्षित करते रहे हैं। निर्जीव रेखाओं को जिंदगी देकर मिकी माउस और डोनाल्ड डक जैसे लोकप्रिय पात्रों की रचना करने वाले वाल्ट डिजनी का जन्म ५ दिसंबर १९०१ को शिकागो में हुआ था। एक कार्टूनिस्ट के बतौर उन्होंने कैरियर की शुरुआत की। कैन्सास कला संस्थान में चित्रकला का प्रशिक्षण लेने के बाद डिज्नी परिकथाओं के लिए रेखाचित्र तैयार करने लगे। इसी दौरान उन्हें पशु-पक्षियों को जीवंत पात्रों की तरह परदे पर प्रस्तुत करने का ख्याल आया। सबसे पहले उन्होंने ओसवाल्ड द रैबिट नाम से एक कार्टून-कथा की रचना की। एनिमेशन फिल्मों के लिए वाल्ट डिजनी द्वारा इसके बाद रखा

गया चरित्र मिकी माउस रातों-रात बच्चों के बीच बेतहाशा लोकप्रिय हो गया।

स्टीमबोट विली (१९२८) मिकी माउस के काल्पनिक चरित्र को एनिमेशन के जरिए जीवंत बनाने वाली पहली फिल्म थी। इसका निर्माण श्वेत-श्याम वर्ण में होने के बावजूद पूरी दुनिया में इसे खासे उत्साह के साथ देखा गया। फिल्म की सफलता से प्रोत्साहित होकर डिजनी ने मिकी श्रृंखला की प्रथम रंगीन फिल्म 'द फ्लॉवर्स एंड ट्रीज (१९३२) में निर्मित की। डिजनी द्वारा बनाई गई आरंभिक फिल्में छोटे-छोटे सिने अंश थे। एनिमेशन तकनीक को परिष्कृत करते हुए उन्होंने फीचर फिल्म को कार्टून कथा के स्वरूप में ढालने का पहला प्रयास १९३७ में 'स्नो व्हाइट एंड सेवन ड्वॉर्फ्स' के जरिए किया। तकनीकी और कलात्मक रूप से यह एक अद्वितीय उपलब्धि



वाल्ट डिजनी : ऑस्कर अवार्ड तथा मिकी के साथ

थी। डिजनी का रचनाकौशल उनकी अगली एनिमेशन फिल्म 'पिनोशियो' (१९४०) से और अधिक निखर कर सामने आया। इसी वर्ष निर्मित डिजनी की एक अन्य फिल्म 'फैंटेसिया' एनिमेशन कला की लाजवाब कृति मानी जाती है। विश्व युद्ध के दौरान डिजनी कुछ समय के लिए फिल्म निर्माण से विरत् हो गए।

६० के दशक की शुरूआत के कुछ समय पूर्व डिजनी टेलीविजन कर सक्रिय हुए, साथ ही उन्होंने डिजनीलैंड की स्थापना की। उनके द्वारा रचित कार्टून पात्र मिकी माउस/ डोनॉल्ड डक/ गूफी, अंकल स्क्रूज/ प्लूटो तब तक लोकप्रिय हो चुके थे। १९५९ में पहली बार छोटे परदे पर डिजनी द्वारा निर्मित एक हास्य प्रधान कार्टून फिल्म 'द शेगी डॉग' प्रदर्शित हुई। जिसे अमेरिका में काफी पसंद किया गया। इसी बीच डिज्नी ने एक गैर एनिमेशन कॉमेडी फिल्म 'एन एबसेंट माइंडेड प्रोफेसर' बनाई। यह फिल्म अधिक सफलता अर्जित नहीं कर सकी। डिजनी ने इसके बाद पुनः एनिमेशन फिल्मों का निर्माण शुरू कर दिया। सिंड्रेला/ एलिस इन द वंडरलैंड/ लेडी इन द ट्रैप/ स्लीपिंग ब्यूटी/ वन हंड्रेड एंड वन डायमेशन्स, इस श्रृंखला की अगली कड़ियाँ थीं।

१९६४ में वाल्ट डिजनी ने अपने सिने कैरियर की सर्वाधिक प्रशंसित कृति बनाई, मेरी पॉपिंस। इस कार्टून फिल्म में कला, काल्पनिकता, संगीत और एनिमेशन विधा का अद्भुत समावेश था। एनिमेशन फिल्मों में आज कम्प्यूटर की सहायता के बावजूद मेरी पॉपिंस से बेहतर कार्टून फिल्म आज तक नहीं बन सकी है। वाल्ट डिजनी १९६६ में अपनी मृत्यु के समय तक सिने सृजन से संबद्ध रहे। फेफड़े के कैंसर की वजह से जब उनकी मौत हुई, उस वक्त वे एक संगीत प्रधान फीचर फिल्म 'हैपिएस्ट' मिलिऑनर और एक एनिमेशन फिल्म 'जंगल- बुक' पर काम कर रहे थे। यह दोनों फिल्में उनकी मृत्यु के बाद प्रदर्शित हुईं।

रिचर्ड एटनबरो

ब्रितानवी मूल के रिचर्ड एटनबरो को एक प्रतिष्ठित निर्देशक के बतौर विश्व भर में पहचाना जाता है। उनके द्वारा निर्मित फिल्म 'गाँधी' (१९८२) को आठ ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुए थे। इस फिल्म का विश्व सिनेमा में एक विशिष्ट स्थान है। एटनबरो ने एक अभिनेता के रूप में अपने फिल्मी कॅरियर की शुरूआत की थी। नोएल कावर्ड के उपन्यास पर आधारित 'इन विच वी वर्क' (१९४२) में उन्होंने पहली बार एक एक्टर की भूमिका निभाई। करीब दो दशक तक एटनबरो अभिनय की दुनिया में सक्रिय रहे। १९६९ में निर्मित 'ओह्ह वाट ए लवली वार' से उन्होंने निर्देशन की ओर कदम बढ़ाए। यंग विन्स्टन (१९७२) और ए ब्रिज टू फॉर (१९७७) उनकी अगली फिल्में थीं। एटनबरो की अंतरराष्ट्रीय ख्याति बनी फिल्म गाँधी से, जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का ऑस्कर पुरस्कार प्राप्त हुआ। १९८५ में निर्मित कोरस लाइन को अधिक सफलता नहीं मिली। 'क्राय फ्रीडम' (१९८७) एटनबरो द्वारा दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद समस्या पर केंद्रित एक विचारोत्तेजक फिल्म थी, जिसे विश्व भर में सराहा गया। १९९२ में रिचर्ड ने प्रख्यात हास्य अभिनेता चार्ली चैपलिन के जीवन पर एक विश्लेषणात्मक फिल्म 'चैपलिन' का निर्माण किया। 'शेडोलैंड' (१९९३) उनकी ताजातरीन फिल्म थी। स्टीफन स्पीलबर्ग कृत जुरासिक पार्क में रिचर्ड एटनबरो को दर्शकों ने अभिनेता के बतौर देखा है। सत्यजीत रॉय की फिल्म शतरंज के खिलाड़ी में भी उन्होंने अभिनय किया है।

फ्रिट्ज लैंग

ऑस्ट्रिया में जन्मे इस लेखक निर्देशक पेंटर एवं वास्तुविद ने रूस/ उत्तरी अफ्रीका/ चीन और जापान की यात्राएँ घुमक्कड़ के रूप में अपने यौवन के प्रारंभिक वर्षों में ही कर ली थीं। विश्व युद्ध के दौरान वे पेरिस में बंदी बनाए गए। फिर ऑस्ट्रिया की सेना में भरती हो गए। युद्ध में लगे घावों की चिकित्सा के बाद स्वास्थ्य लाभ करते हुए उन्होंने फिल्मी पटकथा लिखी। सन् १९१८ में वे बर्लिन जाकर डेल्का कंपनी में कहानी लेखक के रूप में भर्ती हो गए। कुछ फिल्मों की सफलता और श्रेष्ठ प्रदर्शन के बाद उन्हें निर्देशक बना दिया गया। निर्देशक- लेखक के रूप में उनकी पहली फिल्म हाफ ब्रीड (१९१९) थी। दो भागों वाली रोमांचक फिल्म द स्पाइडर्स के पहले भाग (१९१९) ने ही उन्हें चर्चित बना दिया। वॉन हार्बो के साथ मिलकर उन्होंने द वांडरिंग इमेज (१९२०) की पटकथा लिखी और बाद में हार्बो को जीवसंगिनी बनाया। डेर म्यड टॉड (१९२१) ने लैंग को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। एक लड़की द्वारा अपने प्रेमी को बचाने के लिए मृत्यु से सौदेबाजी के कथानक वाली यह फिल्म 'डेस्टिनी' के नाम से लंदन में

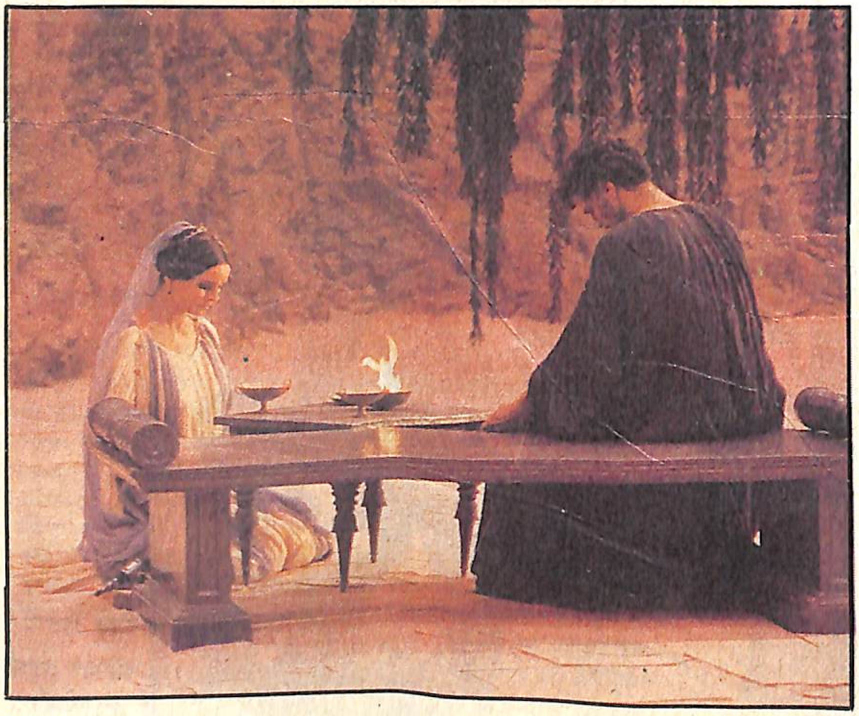
प्रदर्शित हुई। इस फिल्म के स्पेशल इफेक्ट बहुत सराहे गए। प्रथम विश्व युद्ध के बाद के जर्मनी की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति दर्शाने वाली फिल्म ड्रा मेब्यूज द गेम्बलर (१९२२) काफी चर्चित हुई। मेब्यूज सीरीज की कुछ फिल्में बाद में भी बनीं। 'मेट्रोपॉलिस (१९२६) भविष्य की उस काल्पनिक भयावह स्थिति का चित्र थी जिसमें मानव की स्थिति मशीन जैसी हो जाएगी। वुमन इन द मून (१९२९) के बाद अगली वैज्ञानिक कथा आधारित फिल्म एम (१९३१) ने उन्हें शीर्षस्थ निर्देशकों की श्रेणी में ला खड़ा किया। यह एक बाल अपराधी पर केंद्रित मनोवैज्ञानिक कथानक पर आधारित फिल्म थी, जिसमें ध्वनि तथा रहस्य का संतुलित सामंजस्य था। फ्रांस में जाकर लैंग ने 'लिलियम' (१९३४) का निर्माण किया। इसके बाद अमेरिका जाकर वे एम.जी.एम. से अनुबंधित हो गए। यहाँ उनकी पहली फिल्म फ्यूरी (१९३६) थी, जो भीड़ जनित हिंसा के कथानक पर आधारित थी। हॉलीवुड में स्थापित होने के बाद उन्होंने अपराध आधारित कई फिल्मों का निर्माण किया इनमें मेन हंट (१९४१), मिनिस्ट्री ऑव फीअर (१९४४), द बिग हीट (१९५३), बियांड द रीजनेबल डाउट (१९५६) प्रमुख हैं।

हॉलीवुड छोड़कर वे एक बार फिर जर्मनी गए। यहाँ उन्होंने अपने पुराने पात्रों और विचारों को पुनर्जीवित कर द इंडियन टॉम्ब (१९५८) बनाई। उनके द्वारा निर्देशित अंतिम फिल्म द थाउजेंड आइज ऑव डॉक्टर मेब्यूज (१९६०) थी।

फेडरिको फेलिनी

इटली के विश्व विख्यात फिल्मकार फेडरिको फेलिनी के जीवन पर नजर डालें, तो विविध रंगी रश्मियों का आभास होता है। निर्देशक/पटकथा लेखक और फिल्म निर्माता के रूप में विलक्षण प्रतिभा का परिचय फेलिनी ने दिया है। शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जिन फिल्मकारों ने विश्व सिनेमा को अभिनव आयाम प्रदान किए, फेलिनी का नाम प्रमुख है। ला डोल्स विटा, ला स्टारडा, विटेलॉनी, एट एंड हॉफ जैसी फिल्मों के जरिए फेलिनी ने रजतपट के इतिहास में एक अमिट पहचान बनाई। सिनेमा के गंभीर अध्येता फेलिनी को एक युग प्रवर्तक के रूप में देखते हैं। २० जनवरी १९२० को रिमिनी (इटली) में पैदा हुए फेडरिको फेलिनी बचपन में घर छोड़ कर भाग गए थे। कुछ समय तक उन्होंने सर्कस में काम किया। जीवन के इसी अनुभव की व्याख्या फेलिनी ने फिल्मकार बनने के बाद अपनी फिल्म 'द क्लाउन' के जरिए प्रस्तुत की। संघर्ष के दिनों में फेलिनी एक पत्रिका के लिए कार्टून बनाया करते थे। इतनी विविध अनुभूतियों को उन्होंने सिने कृतियों के द्वारा अभिव्यक्त किया। इतालवी अभिनेता एल्डो फाब्रीजी के संपर्क में आने के बाद फेलिनी ने नाटकों के लिए संवाद लेखक और मंच सज्जाकार की भूमिकाएँ निभाईं।

फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में फेलिनी ने पहली बार सह निर्देशक के बतौर प्रसिद्ध इतालवी निर्देशक रोजेलिनी के साथ एक फिल्म निर्देशित की, वेरायटी लाइट्स। फेलिनी की पहली महत्वपूर्ण फिल्म थी, आई विटेलॉनी (१९५३)। एक बेसहारा, विपन्न तरुण के जीवन की मार्मिक कहानी के माध्यम से वस्तुतः फेलिनी ने अपने संघर्षपूर्ण वर्षों का ब्यौरा प्रस्तुत किया है। 'विटेलॉनी' ने फेलिनी को रातों रात विश्व सिनेमा की पृष्ठभूमि में चमकदार हैसियत दिला दी। उनकी अगली फिल्म 'लॉ स्ट्राडा' (१९५४) के प्रस्तुतिकरण को भी समीक्षकों के बीच गंभीरता के साथ लिया गया। इस फिल्म के लिए फेलिनी को पहली बार सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के बतौर ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुआ। स्टारडा में था। सर्वश्रेष्ठ निर्देशन के लिए यह ऑस्कर अवॉर्ड से सम्मानित की गई। स्मृति और यथार्थ का इतना सुंदर समावेश इस फिल्म में है कि यह एकमात्र कृति किसी भी फिल्मकार को अमर बना देती। १९७३ में बनी अमाकोर्ड फेलिनी की चौथी ऑस्कर विजेता फिल्म थी। जिसके बाद उन्होंने अपनी प्रसिद्ध सिनेत्रयी सैटायरिकॉन, द क्लाउन और केसानोवा का निर्माण किया। इन सभी फिल्मों में फेलिनी के जिंदादिल स्वभाव की झलक मिलती है। 'सिटी ऑफ वुमन' (१९८०) फेडरिको फेलिनी के कैरियर की अंतिम फिल्म थी। इस असाधारण फिल्मकार को उनके अद्वितीय रचनाकर्म और सिनेमा को उनकी महती सेवाओं के लिए मरणोपरांत विशेष ऑस्कर से सम्मानित किया गया। ७३ वर्ष की



फेलिनी की फिल्म : सेट्रिकॉन

प्रख्यात इतालवी अभिनेत्री 'गलीटा मसीना' ने नायिका की भूमिका निभाई थी, जो बाद में फेलिनी की जीवन संगिनी बनी। १९५७ में फेलिनी को दूसरी बार ऑस्कर पुरस्कार मिला। उनकी यह फिल्म 'द नाइट्स ऑफ कैबेरिया' एक वेश्या के जीवन की मर्मस्पर्शी दास्तान पर आधारित थी। 'ला डोल्स विटा' (१९६०) फेलिनी की सर्वाधिक प्रशंसित कृतियों में शुमार की जाती है, जिसे गहन भावनात्मक बिम्बों के प्रभावशाली निरूपण के लिए प्रशंसा अर्जित हुई। इटली के ख्यात अभिनेता मार्सिलो मैस्त्रियोनी ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई थी।

फेलिनी की प्रयोगधर्मी कृति 'एट एंड हॉफ' मिथक, वैचारिक गुरुत्व और तकनीकी कौशल के लिए याद की जाती है। १९६३ में निर्मित इस फिल्म का स्वरूप काफी हद तक आत्मकथापरक

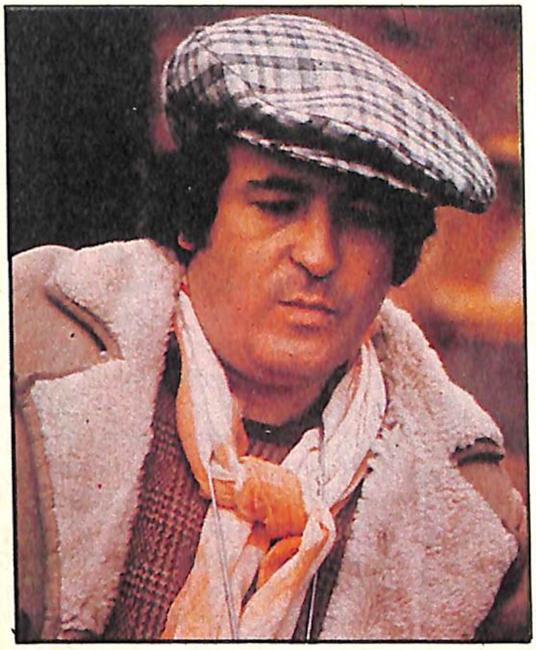
आयु में अपनी मृत्यु के पहले जो प्रतिमान फेलिनी ने सिनेमा की पृष्ठभूमि में स्थापित किए, उन्हें वक्त की गर्द धुँधला नहीं कर सकती।

बर्नार्डो बर्तोलुसी

इटली ने विश्व सिनेमा को अनेक श्रेष्ठ फिल्मकार दिए हैं। रोजेलिनी, द सीका और एंतोनियोनी से जो श्रृंखला शुरू होती है, उसके समकालीन प्रतिनिधि हैं, बर्नार्डो बर्तोलुसी। पिछले तीन दशकों से इस इतालवी निर्देशक ने अपनी प्रतिभा के प्रभावी प्रदर्शन का सिलसिला बरकरार रखा है। बर्तोलुसी की पहली फिल्म 'द ग्रिम रीपर' १९६२ में प्रदर्शित हुई थी, इन दिनों उनकी नवीनतम कृति 'द लिटिल बुद्धा' आकर्षण का केंद्र बिंदु बनी हुई है। एक सुदीर्घ सिने यात्रा को जिस

प्रकार बर्तोलुसी ने पूरा किया है, उसे उपलब्धि समझा जाना चाहिए। एक कलात्मक फिल्मकार का ३०-३५ वर्ष तक विश्व सिनेमा के मंच पर समान क्षमता के साथ बने रहना आसान बात नहीं है। १६ मई १९४० को परमा (इटली) में जन्मे बर्तोलुसी की प्रतिभा का दायरा बहुआयामी रहा है। वे न केवल एक दक्ष फिल्मकार, बल्कि प्रतिभाशाली कवि भी माने जाते हैं। रोम विश्वविद्यालय में अध्ययनरत रहते हुए बर्तोलुसी की कविताओं का संग्रह, 'इन सर्च ऑफ मिस्ट्री' प्रकाशित हुआ था, जिसके लिए वे पुरस्कृत भी किए गए। सिनेमा की ओर आकृष्ट होने के बाद बर्तोलुसी को विधिवत अध्ययन छोड़ना पड़ा। प्रसिद्ध निर्देशक 'पासोलिनी' के साथ वे सहायक की भूमिका निभाने लगे। बर्तोलुसी की पहली फिल्म 'रीपर' बहुत प्रभावशाली कृति नहीं थी, मगर उनके अगले प्रयास 'बिफोर द रिवोल्युशन' (१९६४) को समीक्षकों ने काफी पसंद किया।

बर्तोलुसी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने वाली फिल्में थीं- 'पार्टनर' और 'कन्फ़र्मिस्ट' इन फिल्मों के जरिए बर्तोलुसी ने फासीवाद पर गहरे आक्षेप किए। कन्फर्मिस्ट के लिए उन्हें ऑस्कर हेतु भी मनोनीत किया गया था। १९७३ में निर्मित 'द लास्ट टैंगो इन पेरिस' बर्तोलुसी की सर्वाधिक विवादास्पद फिल्म मानी जाती है। प्रसिद्ध अभिनेता मर्लन ब्रांडो ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई थी। इस फिल्म को ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुआ। बहुतेरे फिल्म समीक्षकों की नजर में यह अनैतिकता को प्रोत्साहित करने वाली सिने कृति थी। बर्तोलुसी ने इटली के सामाजिक/ राजनीतिक इतिहास पर आधारित एक प्रयोगात्मक फिल्म '१९००' का निर्माण किया, जिसका कथानक एक विश्लेषणात्मक टिप्पणी की तरह था। प्रसिद्ध इतालवी अभिनेता रॉबर्टो द नीरो ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई। ८० के दशक की शुरूआत में बर्तोलुसी द्वारा निर्मित फिल्में 'ब्रूना' और 'द ट्रेजेडी ऑफ ए रिडिकुलस मैन' बुरी तरह असफल रहीं। बर्तोलुसी की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया १९८७ में निर्मित विश्व चर्चित फिल्म 'द लास्ट एम्परर' ने। चीन के साम्राज्यवादी इतिहास को रेखांकित करने वाली यह फिल्म शिल्प और प्रस्तुति के लिए बेहद सराही गई थी। बर्तोलुसी को इसके लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का ऑस्कर अवार्ड प्राप्त हुआ। 'लास्ट एम्परर' हाल के वर्षों की सर्वाधिक चर्चित फिल्म रही है।बर्तोलुसी की अन्य फिल्म 'द शेल्टरिंग स्काय' (१९९०) बेहतरीन औपन्यासिक चरित्र चित्रण के लिए सराही गई। इस प्रतिभा संपन्न फिल्मकार की ख्याति का दायरा १९९५ में प्रदर्शित फिल्म 'लिटिल बुद्धा' से काफी विस्तृत हो चुका है।



कैरी ग्रांट

इंग्लैंड में जन्मे अमेरिकी अभिनेता कैरी ग्रांट (वास्तविक नाम अलेकजेंडर आरकीबाल्ड लीच) के साथ एक अद्भुत कीर्तिमान जुड़ा है। वह यह कि इस सितारा अभिनेता ने अपने फिल्मी कैरियर के प्रथम वर्ष १९३२ में ही ७ फिल्मों में काम किया। इनमें ब्लांड वीनस/ दिस इज द नाइट/ शीन हिम रांग के नाम प्रमुख थे। हॉलीवुड की प्रसिद्ध सिने कंपनी पैरामाउंट फिल्म्स के साथ अनुबंध कर कैरी ग्रांट ने अपने कैरियर को मजबूती प्रदान की। हॉलीडे/ द फिलॉडेल्फिया स्टोरी/ ब्रिंगिंग अप बेबी/ यू कांट स्लीप हियर,.ग्रांट के अभिनेता जीवन की आरंभिक फिल्में थीं, जिन्होंने उन्हें पहचान दिलाई। ग्रांट को विशेषतः उन फिल्मों में सर्वाधिक पसंद किया गया, जिनके निर्देशक सस्पेंस फिल्मों के लिए प्रसिद्ध अल्फ्रेड हिचकॉक थे। हिचकॉक के निर्देशन में कैरी ग्रांट द्वारा अभिनीत महत्वपूर्ण फिल्में सस्पीशन/ नोटोरीयस/ टू कैच ए थीफ और नॉर्थ बाय नॉर्थ वेस्ट का निर्माण चालीस के दशक में हुआ, जो ग्रांट के सिने कैरियर का स्वर्ण काल था। इसी दौरान १९४४ में प्रदर्शित फिल्म 'नन बट लोनली हार्ट्स' (निर्देशक विलफोर्ड थ्रोडेट) के लिए कैरी द्वारा निभाई गई केंद्रीय भूमिका उनके जीवन की चुनिंदा संवेदनशील भूमिकाओं में एक थी।

जूडी फॉस्टर

जूडी फॉस्टर उन चुनिंदा प्रतिभाशाली महिला फिल्म शख्सियतों में से हैं, जिन्होंने अभिनय और निर्देशन दोनों क्षेत्रों में समान रूप से ख्याति अर्जित की। बहुत कम उम्र में जूडी ने विश्व के फिल्म समीक्षकों के बीच जो सम्मानजनक पहचान बनाई है, उसे दुर्लभ समझा जाना चाहिए। हॉलीवुड के सिने जगत में फॉस्टर ने एक बाल कलाकार के बतौर कैरियर की शुरूआत की थी। कुछ समय तक उन्होंने मॉडलिंग का भी काम किया। एक हीरोइन के रूप में उनकी पहली फिल्म डिज्नी कैम्प के बैनर तले निर्मित 'नेपोलियन एंड समांथा' थी। वन लिटिल इंडियन/ टॉम सायर/ इकोस ऑफ ए समर/ बगसी मेलून/ एलिस एडवेंचर्स फिल्मों में जूडी एक कमसिन, चंचलतरुणी की भूमिका में परदे पर उपस्थित हुई। परिपक्व भूमिका में उन्हें पहली बार दर्शकों ने प्रख्यात अभिनेता रॉबर्ट डी नीरो के साथ फिल्म 'टैक्सी ड्रायवर' में देखा। इस फिल्म में उन्होंने एक वेश्या की भूमिका बेहद असरदार ढंग से निभाई थी जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री का ऑस्कर अवॉर्ड प्राप्त हुआ।

एक्टिंग के क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ने के बाद जूडी ने रचनात्मक संभावनाओं की तलाश में निर्देशन की ओर कदम बढ़ाए। जूडी ने १९८६ में अपने निर्देशन में फिल्म 'मेस्मराइज्ड' बनाई। इस फिल्म के निर्देशन में उन्होंने सहायक भूमिका निभाई थी। स्वतंत्र रूप से जूडी एक निर्देशिका के बतौर टेलीविजन के लिए निर्मित श्रृंखला 'टेल्स फ्रॉम द डार्कसाइड' लेकर उपस्थित हुई। उनके द्वारा निर्देशित पहली फीचर फिल्म थी, 'लिटिल मेन टेल।' जूडी के अभिनय कैरियर की सर्वाधिक चर्चित फिल्म रही है द एक्युज्ड (१९८८)। इसमें उन्होंने बलात्कार की शिकार एक युवती की भूमिका मार्मिकता के साथ परदे पर रूपायित की। 'एक्युज्ड' के लिए जूडी को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का ऑस्कर सम्मान प्राप्त हुआ था। शैडो एंड फॉग/ समर्सबाय और' सायलेंस ऑव लैम्ब ,जूडी फॉस्टर की प्रमुख फिल्में हैं।

विटोरियो द सीका

इतालवी नवयथार्थवाद के जनक विटोरियो द सीका विश्व सिनेमा के शलाका पुरुष कहे जा सकते हैं। उन्होंने रजत पट को एक नई दिशा प्रदान की। अभिनय और निर्देशन, इन दोनों विधाओं में सिद्धहस्त द सीका ने कैरियर का आरंभ एक गणक के बतौर किया था। रंगमंच के प्रति लगाव के कारण वे एक्टिंग की ओर प्रवृत्त हुए। अभिनेता के रूप में 'ला अफेर क्लेमेंश' (१९२२) उनकी पहली फिल्म थी। मात्र २१ वर्ष की आयु में उन्होंने एक समर्थ फिल्म अभिनेता का दर्जा हासिल कर लिया। करीब एक दशक तक वे अभिनय के क्षेत्र में सक्रिय रहे। १९४० में उन्होंने पहली बार एक फिल्म 'रोज स्कारलेट' निर्देशित की। 'तेरेसा वेनर्दी' और 'गुवार्दानो' उनकी अगली फिल्में थीं। द सीका के

भीतर का प्रतिबद्ध फिल्मकार १९४४ में निर्मित 'ला पोर्ट देल सिएलो' से पूरी शिद्दत के साथ परदे पर उजागर हुआ। इस फिल्म को विश्वयुद्ध की त्रासद पृष्ठभूमि में फिल्माया गया था। जिस प्रामाणिकता और साहस के साथ सीका ने यह फिल्म शूट की, उसने समीक्षकों को बेहद प्रभावित किया।

विटोरियो द सीका को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात करने वाली कालजयी सिनेकृति थी, बायसिकल थीफ। १९४८ में प्रदर्शित इस फिल्म ने विश्व सिनेमा के इतिहास में नव यथार्थवाद का एक नया अध्याय जोड़ा। युद्धोत्तर काल के इटली की दुरावस्था दर्शाने के कारण यह फिल्म बड़ी मुश्किल से सरकार द्वारा प्रदर्शन हेतु स्वीकृत की गई। फिल्म के निर्माण हेतु सीका को कठिन परिस्थितियों में वित्तीय प्रबंध करना पड़ा था। जिस बेबाक और विचारोत्तेजक प्रस्तुतिकरण के लिए सीका जाने गए, 'बायसिकल थीफ' उसका धरातल साबित हुई। इतालवी लेखक और फिल्मकार जवातिनी के साथ द सीका की मैत्री सिनेमा के विचार मंच का एक सुंदर उदाहरण रहा है। जवातिनी और सीका द्वारा निर्मित एक गंभीर फिल्म 'शियुसिया' इतालवी सरकार द्वारा कान फिल्मोत्सव में प्रविष्टि के बतौर भेजने से रोक दी गई थी। अधिकारियों का आरोप था कि इसमें चित्रित स्त्री-पुरुष संबंध न केवल अनैतिक हैं, बल्कि खतरनाक भी। कड़े विरोध और दिक्कतों के बावजूद सीका ने अपने रचनाकर्म की दिशा नहीं बदली। १९५७ में प्रदर्शित फेयरवेल टू आर्म्स के लिए सीका को सर्वश्रेष्ठ सहअभिनेता के ऑस्कर हेतु मनोनीत किया गया था। विपरीत परिस्थितियों से जूझता आदमी सीका की फिल्मों का केंद्रीय पात्र रहा है। कथ्य के प्रस्तुतिकरण में उन्होंने हमेशा तीखे तेवर अपनाए। १९६० में सीका ने अभिनेत्री 'सोफिया लॉरेन' को केंद्रीय भूमिका में लेकर एक फिल्म बनाई, 'टू वुमन'। यह फिल्म लॉरेन के कैरियर की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि मानी जाती है। इसके लिए उन्हें ऑस्कर पुरस्कार प्राप्त हुआ। ग्लैमरस छवि वाली एक अभिनेत्री से संजीदा रोल करवाने में सीका का निर्देशकीय कौशल ही जिम्मेदार था। १३ नवंबर १९७४ को कैंसर से मृत्यु के पूर्व सीका ने गजब के जीवट का प्रदर्शन करते हुए प्रचुरता के साथ फिल्मों का निर्माण किया। मेरिज : इटेलियन स्टाइल/ यस्टर्डे, टुडे एंड टुमारो/ गार्डन ऑफ फिन्ज़ी, सीका के कैरियर की आखिरी फिल्में थी। इनमें यस्टर्डे, टुडे एंड टुमारो को ऑस्कर अवार्ड प्राप्त हुआ।

डेविड लीन

इस महान फिल्मकार ने अपना फिल्मी कैरियर क्लेपर बॉय के रूप में किया था। इसके बाद वे संपादन के क्षेत्र में प्रशिक्षण पाने लगे। उनके द्वारा संपादित फिल्में १९४१ के आसपास प्रदर्शित होने लगीं। 'इन विच वी सर्व' (१९४२) में वे नोएल कोवर्ड के साथ निर्देशक बने। इसके बाद उन्होंने स्वयं की निर्माण संस्था सिने गिल्ड की स्थापना की। उनकी फिल्म 'ब्रीफ एनकाउंटर' (१९४५) ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा अर्जित की तथा वे ऑस्कर के हकदार बने। विख्यात उपन्यासकार चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यासों पर उन्होंने फिल्म निर्माण शुरू किया। 'ग्रेट एक्सपेटेशन' (१९४६) 'आलिवर ट्विस्ट' (१९४८) भव्य पैमाने पर बनी फिल्में हैं। ग्रेट एक्सपेटेशन ने उन्हें दूसरी बार श्रेष्ठ निर्देशक के रूप में ऑस्कर का हकदार बनाया। इसके बाद निर्मित चार फिल्मों 'द ब्रिज ऑन रिवर क्वाई (१९५७), 'लारेंस ऑफ अरेबिया' (१९६२), डॉ. जिवागो (१९६६) तथा रेयान्स डॉटर (१९७१) ने उनको अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा के साथ ८० लाख डॉलर का मालिक भी बना दिया।

लीन को 'ए पैसेज टू इंडिया' (१९८४) के लिए निर्देशन एवं संपादन का दायित्व भी सौंपा गया। ब्रिटिश सरकार ने उनको नाइटहुड (सर) प्रदान किया।

डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ

आधुनिक चलचित्र विधा के पितामह के रूप में प्रतिष्ठित डेविड ग्रिफिथ पहले ऐसे सिने निर्देशक थे जिन्होंने इस विधा की असीम संभावनाओं को पहचाना था। ग्रिफिथ की आकांक्षा थी कि वे अपना कैरियर लेखक के रूप में शुरू करें। सिने संसार में उनका प्रवेश १९०७ में अभिनेता के तौर पर हुआ। रंगमंच से फिल्मों में आने के एक वर्ष बाद ही १९०८ में वे 'बायोग्राफ' कंपनी से जुड़ गए। मानवीय मनोविज्ञान को केंद्र बिंदु बनाकर उन्होंने एक रील वाली कई फिल्में 'बायोग्राफ' के बैनर तले बनाईं। लगभग सभी दर्शकों एवं आलोचकों द्वारा सराही गई। अच्छे अभिनेताओं को चुनने तथा उनकी प्रतिभा का पूर्ण दोहन करने की क्षमता ग्रिफिथ में थी। थिएटर से आने के बावजूद उन्होंने सिनेमा को रंगमंच के ढर्रे से मुक्त करने में अहम् भूमिका अदा की। ग्रिफिथ ने फिल्मों में संपादन की महत्ता को स्थापित करते हुए 'शॉट' को 'दृश्य' की तुलना में अधिक प्रभावोत्पादक निरूपित किया। मेरी पिकफोर्ड/ मॉबेल नारमण्ड/ मे. मार्श/ गिश सिस्टर्स जैसी नायिकाओं और डोनाल्ड क्रिस्प, हेनरी बाल्टहॉल, रॉबर्ट हेरो जैसे अभिनेताओं को शीर्ष पर पहुँचाने का श्रेय ग्रिफिथ को है।

'बायोग्राफ में रहते हुए ग्रिफिथ पूरी आजादी से काम नहीं कर पा रहे थे। इसलिए १९१३ में अलग होकर वे हैरी एटकेन की रिलाएंस मैजेस्टिक कंपनी से जुड़े। कई लंबी फीचर फिल्में बनाने के बाद उन्होंने थामस डिक्सन के मेलोड्रामा पर आधारित 'द बर्थ ऑफ नेशन' का निर्माण किया। इस फिल्म को कालजयी फिल्मों की श्रेणी में रखा गया है। इसे देखकर फिल्मी समालोचकों ने ग्रिफिथ को रजतपट के शेक्सपीयर की उपाधि दी। उनकी अगली फिल्म 'इंटालरेन्स (१९१६) उस जमाने की बड़े बजट की फिल्म थी। आर्थिक रूप से यह फिल्म सफल नहीं रही। ग्रिफिथ को महायुद्ध की विभीषिका पर फिल्में बनाने के लिए योरपीय देशों का आमंत्रण मिला। 'हार्ट्स ऑफ द वर्ल्ड' (१९१८) एक ऐसी ही फिल्म थी जिसमें एक फ्रांसीसी गाँव की विवशता और यंत्रणा का चित्रण था जो जर्मन फौजों के कब्जे में आ जाता है। युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी उनकी एक अन्य फिल्म 'द ग्रेट लव' (१९१८) काफी चर्चित रही। 'ब्रोकन ब्लाम्स' ने व्यावसायिक सफलता पाने के साथ-साथ कलात्मक ऊँचाइयों को भी छुआ।

'ऑर्फन्स ऑव द स्टार्म' (१९२२) फ्रांसीसी राज्य क्रांति पर आधारित फिल्म थी।



डेविड लीन : ए पैसेज टू इण्डिया

समालोचकों ने इस फिल्म को ऐतिहासिक महाकाव्य की संज्ञा दी। 'द सारोज ऑव सेटन' प्रतिबिम्बों के कुशल उपयोग के कारण चर्चित रही। 'अब्राहम लिंकन' (१९३०) ग्रिफिथ की पहली पूरी सवाक् फिल्म थी। इस फिल्म ने सिद्ध कर दिया की मूक फिल्मों का यह प्रतिष्ठित निर्माता बोलती फिल्मों का निर्माण भी कुशलता से कर सकता है। १९३५ में ग्रिफिथ को विशेष 'ऑस्कर' से अलंकृत किया गया।

सिसिल बी डिमिल

भारतीय सिनेमा के इतिहास में जो स्थान दादा साहेब फालके, भालजी पेंढारकर जैसी शख्सियतों का है, अमेरिकी सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में वही हैसियत सिसिल बी डिमिल को दी जा सकती है। हॉलीवुड के सिने जगत की बुनियाद गढ़ने में डिमिल की महत्वपूर्ण भूमिका रही। विश्व सिने इतिहास के वे पहले शोमेन माने जाते हैं। न केवल सिनेमा के शैशवकाल में उन्होंने बड़े पैमाने पर फिल्मों का निर्माण किया, बल्कि फिल्म उद्योग को मजबूत जड़ें भी प्रदान कीं। बहुत छोटी उम्र से मृत्यु पर्यंत वे सिनेमा को समर्पित रहे। हॉलीवुड की पहली पूर्ण अवधि की फिल्म 'द स्क्वॉ मेन' सिसिल डिमिल ने ही बनाई थी। मूक सिनेमा और सवाक सिनेमा के दौर में समान सक्रियता के साथ डिमिल द्वारा श्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण किया गया।

१२ अगस्त १८८१ को मॅसाचुसेट्स (अमेरिका) में जन्मे सिसिल डिमिल की पारिवारिक पृष्ठभूमि थिएटर से जुड़ी थी। रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट (न्यूयॉर्क) से डिमिल ने अभिनय कला का प्रशिक्षण लिया। कुछ वर्ष वे रंगमंच पर सक्रिय रहे। इसके अलावा रेडियो माध्यम के साथ भी उनका करीबी रिश्ता रहा। 'लक्स रेडियो थिएटर' शीर्षक से डिमिल द्वारा प्रस्तुत एक नाट्य श्रृंखला अमेरिकी रेडियो पर प्रसारित हुई थी। १९१४ में सिसिल डिमिल ने सिने निर्देशक ऑस्कर एपफेल के साथ मिलकर हॉलीवुड की प्रथम फीचर फिल्म 'स्क्वॉ मेन' का निर्माण किया। डिमिल ने अपनी आरंभिक सिने कृतियों मारिया रोजा (१९१६)/ व्हिस्परिंग कोरस/ द चीट (१९१५) और द लिटिल अमेरिकन में जो विषय उठाए, वे अपने समय के लिहाज से काफी प्रगतिशील और साहसिक स्वरूप लिए हुए थे। डिमिल द्वारा निर्मित फिल्म 'मेल एंड फीमेल' (१९१९) का एक दृश्य अत्यधिक विवादास्पद रहा था। नायिका ग्लोरिया स्वॉन्सन इसमें एक नौकर के द्वारा स्नान के लिए वस्त्र उतारते हुए दर्शाई गई थीं। डिमिल ने इसी दौरान कुछ कॉमेडी फिल्में डोंट चेंज योर हसबैंड/ अफेयर्स ऑफ एनॉटाल और सेटरडे नाइट (१९२२) का निर्माण किया। मेन स्लॉटर/ टेन कमांडेंट/ किंग ऑफ किंग्स/ रोड टु यस्टर्डे/ साइन ऑफ द क्रॉस/ क्रूसेड्स/ फोर फ्राइटेंड पीपुल एवं दिस डे एंड एज, तीस के दशक में सिसिल द्वारा निर्मित प्रमुख फिल्में थीं। इनमें 'टेन कमांडेंट' विशेष रूप से विश्व सिनेमा की चुनिंदा कृतियों में शुमार की गई। इस फिल्म का दृश्यांकन काफी भव्य पैमाने पर किया गया था। खर्चीले सेट्स और आकर्षक लोकेशन के लिए डिमिल की फिल्में यूनियन पेसी फिक/ सैम्सन एंड डिलाइला बेहद चर्चित रहीं। सिसिल डिमिल सिनेमा के अलावा राजनीति में भी गहरी दखल रखने के लिए याद किए जाते हैं। कुछ आलोचकों द्वारा उन पर सिनेमा का इस्तेमाल राजनीतिक फायदे के लिए करने का आरोप भी लगाया गया। २१ जनवरी १९५९ को हॉलीवुड के सिनेमा के पितृ पुरुष ने अंतिम साँस ली।



सेम्सन एण्ड डिलाइला

मेरी पिकफोर्ड

कनाडा मे जन्मी यह अमरिकन अभिनेत्री, फिल्म निर्मात्री तत्कालीन फिल्म प्रेमियों के बीच स्वीट हार्ट (दिलरूबा) के नाम से विख्यात रही। सौंदर्य, अभिनय प्रतिभा, लोकप्रियता पाने का गुर, व्यवसाय कुशलता तथा सौदेबाजी करने की अपूर्व क्षमता ने इस नायिका को चर्चित बना दिया। पाँच वर्ष की आयु से ही रंगमंच पर अभिनय का अनुभव प्राप्त कर १९०९ तक वे एक सफल स्टेज अभिनेत्री बन चुकी थीं। मेरी का फिल्मी कैरियर बायोग्राफ कंपनी से शुरू हुआ। फिल्मों में आने पर उनका असली नाम ग्लेडेस स्मिथ खो गया। वे मेरी पिकफोर्ड बन गई। एक वर्ष में ही व्यापक लोकप्रियता पाने के बाद उन्होंने बायोग्राफ छोड़ दी। इनडिपेण्डेंट मोशन पिक्चर्स कंपनी में तिगुनी तनख्वाह पर भरती हो गई। 'द गर्ल विद गोल्डन कर्ल' के नाम से रोमांटिक छवि बनाने वाली इस नायिका ने एक वर्ष बाद आइएमपी छोड़कर ज्यादा वेतन पर मैजेस्टिक कंपनी से नाता जोड़ लिया। सन् १९१२ में वे पुनः बायोग्राफ में लौट आईं। इसी वर्ष उनकी फिल्में प्रदर्शित हुई जिनमें द न्यूयॉर्क हेट/ द ओल्ड एक्टर तथा इन्फार्मर प्रमुख हैं। एडोल्फ जुकोर ने पिकफोर्ड को मिल रहा साप्ताहिक वेतन पाँच सौ डॉलर से चार गुना अधिक देकर उन्हें अपनी कंपनी में ले लिया। सन् १९१४ में हुए इस अनुबंध के बाद उनकी फिल्म 'टेस ऑफ द स्टोर्म कंट्री' हिट सिद्ध हुई। अन्य फिल्मों में 'लेस देन डस्ट' (१९१५)/ मैडम बटरफ्लाइ' (१९१५)/ 'रेज' (१९१५)/ 'स्टेलामॉरिस' (१९१८) सफल रहीं। अमेरिकन फिल्म कंपनी ने चार हजार डॉलर प्रति सप्ताह देकर उन्हें अपने साथ अनुबंधित कर लिया। एडोल्फ जुकोर ने अपनी 'फेमस प्लेयर्स' के लिए दो वर्ष की अवधि में दस लाख डॉलर की गारंटी राशि का भुगतान कर मेरी पिकफोर्ड से पुनः अनुबंध कर लिया। इसके बाद मेरी पिकफोर्ड स्टुडियो की स्थापना हुई तथा यह विलक्षण नायिका निर्माण एवं वितरण के क्षेत्र में भी आ गई। इस दौरान बनी फिल्मों में 'द लिटिल अमेरिकन (१९१७), 'रेबेकॉ ऑफ सनी ब्रुक फार्म (१९१७) प्रमुख हैं।

इसके बाद पिकफोर्ड ने १९१९ में डगलस फेयर बेंक्स/ डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ तथा चार्ली चैपलिन के साथ मिलकर 'यूनाइटेड आर्टिस्ट' की स्थापना की। इस बैनर तले निर्मित पहली फिल्म 'पॉलीथेन्ना' (१९२०) हिट रही। इसके बाद अपनी आखिरी मूक फिल्मों, 'स्पेरोज' (१९२६)/ 'माय बेस्ट गर्ल' (१९२७) से दर्शकों को प्रभावित किया। माय बेस्ट गर्ल के नायक चार्ल्स वडी रोजर्स से बाद में पिकफोर्ड ने विवाह कर लिया।

मेरी पिकफोर्ड की पहली बोलती फिल्म 'कॉकेट' (१९२९) औसत रूप से सफल रही,

मगर दूसरी 'टेमिंग ऑफ द श्रू' फ्लॉप हो गई। इसके बाद वे 'किकी' (१९३१) तथा 'सीक्रेट' (१९३३) में परदे पर आईं। १९५५ में उन्हें विशेष ऑस्कर से सम्मानित किया गया। उनकी आत्मकथा 'सनशाइन एंड शेडो' के नाम से १९५५ में प्रकाशित हुई थी। □

जार्ज मेलिस

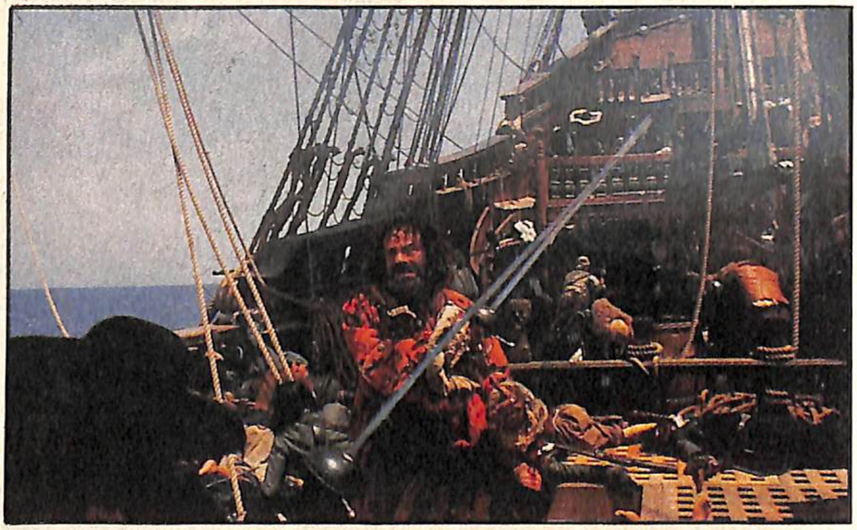
ट्रिक फोटोग्राफी तथा फैंटेसी सिनेमा के पितामह के रूप में अपनी पहचान बनाने वाले इस छायाकार और निर्देशक का जन्म फ्रांस में हुआ था। पिता जूतों का व्यवसाय करते थे। इसी व्यवसाय के सिलसिले में जवान होते ही १८८४ में लंदन जाना पड़ा। यहाँ आकर उन्होंने तत्कालीन लोकप्रिय जादूगर मास्कालेन तथा डेवंट के प्रदर्शन देखे तथा उनसे प्रेरणा लेकर जादू की कला सीखी। फ्रांस लौटकर उन्होंने एक थिएटर खरीदा। रंगमंच पर करतबी प्रदर्शनों के लिए नए प्रयोग किए। लूमिएर बंधुओं की विख्यात सिनेमाटोग्राफ प्रदर्शनी उनके ही थिएटर में लगी थी। वे लूमिएर के उपकरण खरीद कर अपना स्टुडियो बनाना चाहते थे। इसके बाद ४ अप्रैल १८९६ को अपने थिएटर में फिल्मों का निर्माण शुरू किया। इसी वर्ष ७८ फिल्मों का निर्माण कर उन्होंने कीर्तिमान बनाया। पेरिस के पास फ्रांस का पहला फिल्म स्टुडियो स्थापित किया। इसके पश्चात वे ट्रिक फोटोग्राफी में निरंतर प्रयोग करते गए। सन् १८९८ में शूटिंग के दौरान कैमरे का शटर अचानक जाम हो जाने से उन्होंने ट्रिक फोटोग्राफी में स्टॉप मोशन का आयाम जोड़ा।

सन् १९०३ में अमेरिका आकर उन्होंने न्यूयार्क में 'स्टार फिल्म' नाम से स्वयं की संस्था कायम की। उनकी यादगार फिल्मों में 'ए ट्रिप टू द मून' तथा 'एडवेंचर ऑफ रॉबिन्सस क्रूसो' प्रमुख हैं। दोनों ही फिल्मों का निर्माण १९०२ में हुआ था।

इसके बाद सिनेमा की तकनीक और जानकारी में हुए व्यापक बदलाव के कारण मेलिस की फिल्मों के प्रति दर्शकों का आकर्षण घटता गया। सन १९२३ में वे दिवालिया घोषित हो गए। उनकी व्यापक सेवाओं का सम्मान करते हुए १९३१ में फ्रांस सरकार ने उन्हें सम्मानित किया।

ए ट्रिप टू द मून





रोमन पोलांस्की की फिल्म : द पायरेट्स

रोमन पोलांस्की

निर्देशक, पटकथा लेखक एवं अभिनेता के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रोमन पोलांस्की का जन्म पेरिस में हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध में माता-पिता को नाजियों द्वारा बंदी बना लिए जाने के कारण इनका बचपन लावारिस बीता। पोलांस्की स्वयं भी बचपन में जर्मन सैनिकों की आप्राकृतिक यौन वासना के शिकार हुए। माता की कैद के दौरान मृत्यु हो गई। युद्ध के बाद पिता से मिलाप हुआ। इसके बाद उन्होंने अभिनय की विधिवत शिक्षा प्राप्त की। उनकी पहली लघु फिल्म- 'टू मेन एंड ए वार्डरोब' (१९५९) ने कई अंतरराष्ट्रीय अवॉर्ड अर्जित किए। उनकी पहली फीचर फिल्म 'नाइफ इन द वॉटर' (१९६२) एक मनोवैज्ञानिक, विश्लेषणात्मक थ्रिलर थी। इस फिल्म का पोलैंड में स्वागत नहीं हुआ। पश्चिमी देशों ने काफी सराहा।

बेहतर अवसरों की तलाश पोलांस्की को इंग्लैंड खींच ले गई। 'रिपल्शन' (१९६५) एक यौन कुंठा से दमित युवती को केंद्र बनाकर फिल्माई गई मनोविकार दर्शाने वाली फिल्म थी। इंग्लैंड में उनकी अगली फिल्म 'कल-डे-सेक' (१९६६) थी। 'डांस ऑफ द वेम्पायर' (१९६७) एक मजेदार हॉरर कॉमेडी सिद्ध हुई। इसके बाद हॉलीवुड से निमंत्रण पाकर वे अमेरिका आ गए। 'रोजमरीज बेबी' (१९६८) उनके निर्देशन में निर्मित पहली अमेरिकी फिल्म थी। इस फिल्म में शहरी अमेरिका में शैतानी शक्तियों की पूजा साधना का लोमहर्षक वर्णन था। इस फिल्म ने उन्हें उत्कृष्ट कोटि के थ्रिलर फिल्म निर्माता के रूप में स्थापित कर दिया। सन् १९६९ में पोलांस्की को दर्दनाक हादसे का शिकार होना पड़ा। लांस एंजेल्स के उनके निवास में ही उनकी पत्नी शेरॉन टेटे तथा अन्य पारिवारिक मित्रों की हत्या कर दी गई। इसके बाद की कुछ फिल्मों में 'मेकबेथ' (१९७१) तथा वाट (१९७३) में इस भीषण हादसे से परेशान निर्देशक की छवि प्रकट हुई। 'चाइना टाउन' अस्सी के दशक की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में शुमार की गई। इस जासूसी थ्रिलर में हास्य का भरपूर उपयोग किया गया। इस फिल्म में भी पोलांस्की ने अभिनय किया। उन्हें श्रेष्ठ निर्देशक के रूप में

ऑस्कर अवॉर्ड हेतु नामांकित किया गया।

पोलांस्की द्वारा निर्देशित एवं अभिनीत अगली फिल्म ब्लेक कॉमेडी थी, 'द टेनेंट' (१९७६)। सन् १९७७ में एक कम उम्र की मॉडल के साथ यौन संबंध रखने के स्कैंडल में वे फँस गए। अदालती कार्रवाई का सामना करने की बजाए उन्होंने देश से पलायन करना उचित समझा। उनकी अगली फिल्म थॉमस हार्डी के उपन्यास पर आधारित 'टेस ऑफ द डी अर्बरविलीज' (१९७९) थी। इस फिल्म में उत्कृष्ट निर्देशन के कारण उन्हें पुनः ऑस्कर अवॉर्ड हेतु नामांकित किया गया। बड़े बजट पर बनी उनकी फिल्म 'पायरेट्स' बुरी तरह फ्लॉप रही।

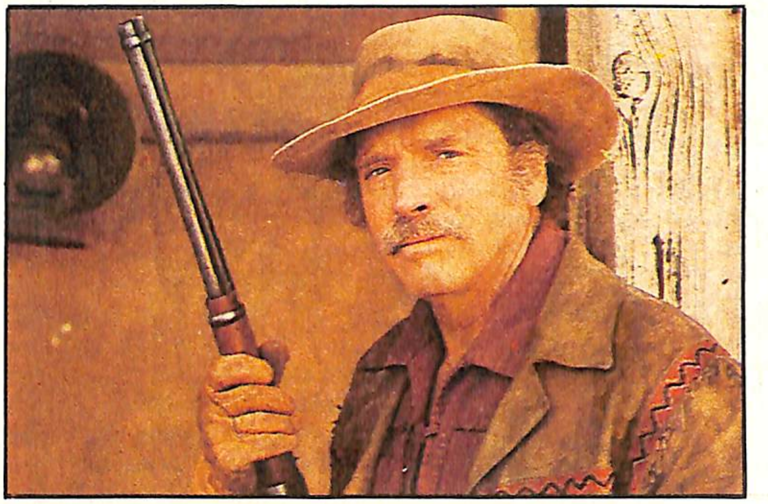
बर्ट लेंकास्टर

निर्देशक- निर्माता और अभिनेता के रूप में अमेरिकी फिल्म संसार में अपनी अमिट छाप रखने वाले बर्ट लेंकास्टर की विशिष्टता उनकी सर्वतोमुखी प्रतिभा है। रंगमंच पर अभिनेता के रूप में असफल रहने के बाद वे सस्पैंस फिल्म 'द किलर्स' (१९४६) में आए और रातोंरात स्टार बन गए। इसके बाद वे कई रोमांचक-सस्पैंस फिल्मों में आए। 'द क्रिमसन पायरेट' (१९५२) में वे गंभीर अभिनय के लिए चर्चित हुए। फ्रॉम हीयर टू इटरनिटी (१९५३) में कड़क फौजी सार्जेन्ट की जीवंत भूमिका के लिए उन्हें ऑस्कर अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। इसके बाद वे 'केंटुकियान' (१९५५) में अभिनेता- निर्माता- एवं निर्देशक के रूप में चर्चित हुए। उनके अभिनय की विविधता बाद की फिल्मों में बरकरार रही। 'एल्मेर जेन्ट्री' (१९६०) में श्रेष्ठ अभिनय के लिए उन्हें ऑस्कर सहित कई अंतरराष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त हुए। 'बर्डमेन ऑफ अलकाटार्ज' (१९६२) में अभिनय के लिए वे पुनः ऑस्कर से अलंकृत हुए। जब वे 'केटल एनी एंड लिटिल ब्रिचेज' (१९८०) का निर्माण कर रहे थे तब उन्हें दिल का दौरा पड़ा। स्वास्थ्य ठीक होने पर वे पुनः फिल्मों के निर्माण-निर्देशन एवं अभिनय से जुड़ गए। 'सेपरेट बट इक्वल' (१९९०) उनकी विख्यात टी.वी. फिल्म है।

लुई एवं ऑगस्ट ल्यूमिएर

फ्रांसीसी आविष्कारक एवं सिनेमा के प्रवर्तक इन दोनों भाइयों ने अपने पिता एंटोनी ल्यूमिएर के साथ फोटोग्राफी व्यवसाय में अपना कैरियर शुरू किया। धीरे-धीरे दोनों भाई इस विधा में जॉर्ज ईस्टमेन के मुकाबले पहुँच गए। जब एडिसन ने १८९४ में काइनेटोस्कोप का आविष्कार किया तब दोनों भाई भी ऐसे ही मगर सस्ते उपकरण के आविष्कार हेतु प्रयास करने लगे। सिनेमाटोग्राफ कैमरा एवं प्रोजेक्टर का पेटेंट दोनों भाइयों ने १३ फरवरी १८९५ को प्राप्त कर लिया। कागज की पट्टियों और ५० फुट क्षमता वाले स्पूल के माध्यम से परदे पर मनोरंजन का महासागर रचने की यह प्रक्रिया शुरू हुई। पेरिस के एक कॉफी हाउस में २८ दिसंबर १८९५ को सिनेमाटोग्राफ का सार्वजनिक प्रदर्शन हुआ। पहले दिन की आय ३३ फ्रैंक थी जो तीन सप्ताह बाद २५०० फ्रैंक प्रतिदिन तक पहुँच गई। बीस-बीस मिनट के बीस शो प्रतिदिन होते थे। प्रदर्शन की अवधि में दो-दो मिनट वाली दस फिल्में दिखाई जाती थीं। इन फिल्मों में विभिन्न व्यवसाय वाले लोगों की दिनचर्या का प्रदर्शन होता था। कथानक वाली फिल्मों का श्री गणेश बाद में कॉमेडी फिल्मों से हुआ।

दोनों भाइयों ने अपने इस आविष्कार को बेचने से इंकार कर दिया तथा छायाकारों को नियुक्त कर विश्व भर में भेज कर भव्य दृश्यों को कैमरे में कैद करने के निर्देश दिए। उन्होंने एक और सिनेमाघर चालू कर लिया तथा उसमें इन आयातित फिल्मों का प्रदर्शन करने लगे। ऐतिहासिक कथानक पर आधारित फिल्म 'पेशन डी जेसस क्राइस्ट' भी उन्होंने १८९७ में बनाई। दोनों भाई अपने आविष्कार में निरंतर सुधार करने के प्रयास में लगे रहे। १९०० में उन्होंने बड़े परदे पर फिल्म दिखाने का प्रयोग किया। इसके बाद रंगीन फोटोग्राफी एवं स्टीरियोस्कोपिक सिनेमा के नए प्रयास करते रहे।



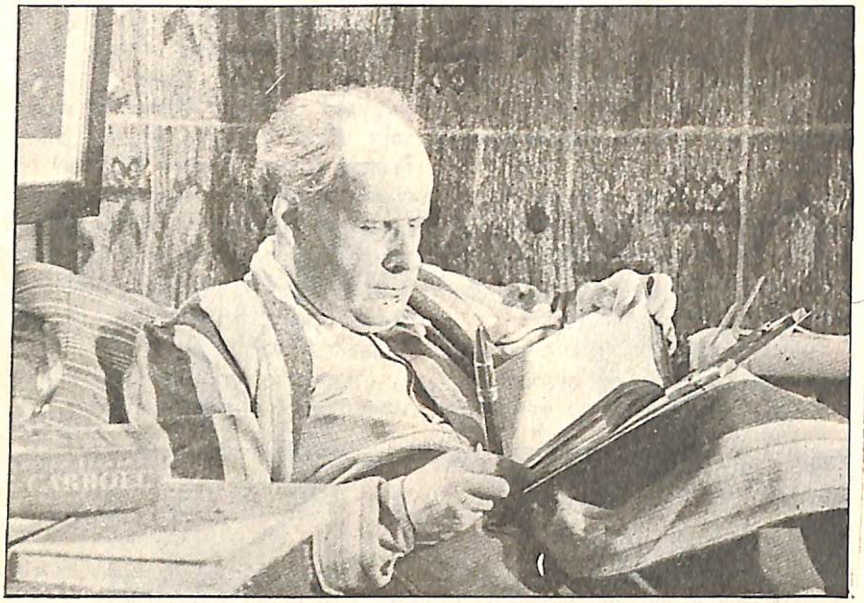
बर्ट लेंकास्टर

सर्गेई आइज़ंस्टाइन

रूस के प्रख्यात फिल्मकार सर्गेई आइज़ंस्टाइन का नाम उन व्यक्तियों में शुमार होता है, जिन्होंने विश्व सिनेमा की बुनियाद गढ़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मूक सिनेमा के दौर में 'बेटलशिप पोटेमकिन' जैसी अतुलनीय फिल्म का निर्माण कर आइसंस्टाइन ने सिनेकर्म को अभिनव आयाम प्रदान किया। विश्व सिनेमा के आद्य-पुरुषों के बीच स्थान रखने वाले आइसंस्टाइन का जन्म २९ जनवरी १८९८ को रूस के छोटे से कस्बे 'रिगा' में हुआ था। पचास वर्ष की आयु में काल-कवलित हो जाने के पूर्व इस महान फिल्मकार ने सिनेमा को अपनी अविस्मरणीय कृतियों से समृद्ध किया। खासतौर पर उनकी फिल्मों में वर्णित सामाजिक/ राजनीतिक परिस्थितियाँ सबका ध्यान खींचती हैं। १९१७ की रूसी क्रांति, विश्वयुद्ध, जारशाही के आतंक जैसे विषयों पर उन्होंने विचारोत्तजक फिल्में बनाईं। सिने तकनीक के धरातल पर उन्हें मोंताज कला के अद्भुत इस्तेमाल की विशेषता के लिए जाना जाता है। चमत्कारिक और चौंकाने वाले अंदाज में फिल्म दृश्यों के सम्मिश्रण की इस विधा के आइसंस्टाइन जनक थे।

आइसंस्टाइन द्वारा निर्मित पहली महत्वपूर्ण फिल्म वर्ग-संघर्ष पर केंद्रित 'स्ट्राइक' (१९२४) थी, जिसे विषय के वक्तव्यपरक चित्रांकन के लिए सराहा गया। १९२५ में उन्होंने अपनी सर्वाधिक चर्चित सिनेकृति 'बैटलशिप पोटेमकिन' का निर्माण किया। शताब्दी की भीषणतम त्रासदी का इसमें इस कदर प्रभावशाली चित्रण था कि मूक फिल्म होने के बावजूद विश्व सिनेमा के इतिहास में आज भी इसका कोई सानी नहीं है। अपने ही दुष्कृत्यों से उत्पन्न भयावह स्थिति का सामना करती मानव जाति का अत्यंत मार्मिक चित्रण पोटेमकिन में है। परदे पर आतंक और यातना से संत्रस्त लोगों के चेहरे दर्शक को सिहरा देते हैं। 'बैटलशिप पोटेमकिन' विश्व सिनेमा की कालजयी कृतियों में शुमार की गई। अपनी अगली फिल्म 'ऑक्टोबर' में प्रसिद्ध रूसी क्रांति का विवेचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। यह फिल्म अपने प्रतीकात्मक प्रस्तुतिकरण के लिए विशेष रूप से चर्चित हुई। इसके एक दृश्य में सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सैन्य अफसर की क्रमिक स्थितियों के जरिए समूची राजनीतिक परिस्थिति का चित्रांकन कर दिया गया था। मोंताज कला की तकनीक आइसंस्टाइन ने विकसित की, ऑक्टोबर उसका चरम उत्कर्ष साबित हुई।

तीस के दशक में आप अमेरिका चले गए, जहाँ प्रसिद्ध फिल्मकार डी.डब्ल्यू. ग्रिफिथ के साथ सिनेकर्म पर उन्होंने गंभीर विश्लेषणात्मक



फिल्म व्याकरण के आचार्य : आइसंस्टाइन

विचारों का आदान-प्रदान किया। एक अग्रणी निर्देशक के अलावा सिनेमा के शोधपरक अध्ययन में भी उन्होंने गहरी दिलचस्पी ली। फिल्म संपादन के क्षेत्र में जिस दक्षता व प्रयोगधर्मिता के लिए वे याद किए जाते हैं, उस पर उन्होंने कई विवेचनात्मक विचार, भाषण, लेखों एवं पुस्तकों के जरिए प्रस्तुत किए। १९३५ में उन्होंने मैक्सिको जाकर एक वृत्तचित्र 'क्यू विवा मैक्सिको' का निर्माण किया। उस समय जबकि सिनेकर्म की यह विधा शैशवकाल में थी, इसका शुमार प्रतिनिधि कृतियों के बीच किया गया। कैरियर के अंतिम वर्षों में आइसंस्टाइन स्टालिन शासनकाल की प्रताड़नाओं के शिकार हुए। उनकी फिल्मों के वित्तीय प्रबंधन में परेशानियाँ खड़ी की गईं, जिसके कारण विश्व इस महान फिल्मकार की अद्वितीय कृतियों से वंचित रहा। स्टालिन सरकार के पतन के बाद १९३८ में एक राजनीतिक फिल्म अलेक्जेंडर नेवस्की बनाई। फिल्म में नाजी सेना के विरुद्ध रूस के साहित्य प्रतिरोध का शौर्यमय वर्णन था, जिसके लिए उन्हें रूस के तत्कालीन सर्वोच्च राजकीय सम्मान 'ऑर्डर ऑफ लेनिन' से पुरस्कृत किया गया। १० फरवरी १९४८ को हृदयाघात के कारण मृत्यु से कुछ समय पूर्व उन्होंने रूस के जार शासक के जीवन पर तीन भागों में एक फिल्म के निर्माण की योजना बनाई थी। इसके केवल दो भाग ही निर्मित किए जा सके।

स्टेन लॉरेन आलिवर हार्डी

मूक फिल्मों के युग से इस जोड़ी ने हास्य अभिनय के कीर्तिमानी मापदंड स्थापित किए तथा विश्व सिनेमा में अपनी महत्वपूर्ण जगह बना ली। स्टेन लॉरेल का जन्म इंग्लैंड में हुआ। संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद म्युजिकल कॉमेडी ट्रुप के साथ अमेरिका आए। यहाँ विभिन्न स्थानों पर शो करने के बाद उन्होंने फिल्मों में भी काम करना शुरू किया। ऐसी ही एक फिल्म 'लकी डॉग' (१९१७) में उन्हें भारी-भरकम हास्य कलाकार हार्डी के साथ काम करने का मौका मिला। अकेले लॉरेल हास्य अभिनेता के रूप में ज्यादा सफल नहीं हो पा रहे थे। कुछ दिनों तक उन्होंने लेखक- निर्देशक के रूप में भी काम किया।

हार्डी का अभिनय कैरियर भी घुमन्तू कॉमेडी ट्रुप में शुरू हुआ। बाद में फिल्मों में अपना भाग्य आजमाने वे हॉलीवुड आए। इस जोड़ी की पहली फिल्म काफी सफल रही। इसके बाद 'पुटिंग पेंट्स ऑन फिलिप' (१९२७), फ्राम सूप टु नट्स (१९२९) फिल्में सफल रहीं।

जब बोलती फिल्मों का जमाना आया तब इस जोड़ी ने विशिष्ट आवाज के अंदाज से हास्य को नया आयाम दिया। सवाक् फिल्मों के युग में उनकी प्रारंभिक फिल्म 'मेन ओ वार'/ 'परफेक्ट डे'/ तथा 'हूज गो' ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर का हास्य कलाकार प्रमाणित कर दिया। इन दोनों कलाकारों ने लघु फिल्मों के साथ फीचर फिल्मों में भी कार्य किया है। 'पार्डन अस' (१९३१), पेक अप युअर ट्रबल्स (१९३२) उनकी चर्चित फिल्में रहीं। सन् १९३३ में दोनों ने दो कॉमिक ऑपेराओं में अविस्मरणीय अभिनय किया। 'द डेविल्स ब्रदर' तथा 'सन्स ऑफ द डेजर्ट' उनकी सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ मानी जाती हैं। अवर बेस्ट (१९३७) भी उनकी श्रेष्ठ फीचर फिल्मों में से एक है। हेल रोश के साथ अनुबंध संबंधी विवाद के कारण यह जोड़ी टूट गई। एम.जी.एम. ने इस जोड़ी को पुनः मिलाया। मगर बाद की फिल्में ज्यादा सफल नहीं रही। इस जोड़ी की आखिरी फिल्म यूटोपिया (१९५२) थी।

ऑर्सन वैलेस

हॉलीवुड के प्रतिष्ठित अभिनेता/ निर्देशक के रूप में ऑर्सन वैलेस का नाम भारतीय दर्शकों के लिए भी अपरिचित नहीं है। विश्व सिनेमा की सर्वाधिक सराहनीय सिनेकृतियों में वैलेस द्वारा निर्देशित 'सिटीजन केन' का नाम शामिल किया जाता है। इस एक फिल्म की बदौलत ऑर्सन दुनिया की चर्चित सिने हस्तियों में शुमार होते हैं। वैलेस ने अपना कैरियर एक फिल्म पत्रकार के बतौर शुरू किया था। कुछ समय थिएटर की दुनिया में सक्रिय रहने के बाद उन्होंने अपनी फिल्म 'सिटीजन केन' निर्देशित की। किसी भी फिल्मकार द्वारा निर्मित प्रथम फिल्म की दृष्टि से वैलेस की यह अद्वितीय उपलब्धि थी। १९४० में प्रदर्शित 'सिटीजन केन' प्रस्तुतिकरण और प्रयोगधर्मिता के धरातल पर एक विलक्षण सिने कृति आँकी गई। वैलेस ने इसके बाद एक वृत्तचित्रनुमा फिल्म 'इट्स ऑल ट्रू' के निर्माण की योजना बनाई थी। इसकी शूटिंग के लिए वे ब्राजील के दुर्गम वन क्षेत्रों में लंबे अरसे तक रहे, किन्तु इस लघु फिल्म का निर्माण संभव नहीं हो सका। इसी दौरान उनकी अगली फीचर फिल्म 'जर्नी इन टू फियर' ने विश्व के सिने-समीक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया। 'द स्ट्रेंजर' और 'लेडी फ्रॉम शंघाई' वैलेस की वे फिल्में थीं, जिनमें नायिका की भूमिकाएँ प्रसिद्ध अभिनेत्री रीता

मसखरों की जोड़ी : लॉरेल-हार्डी



हॉवर्थ ने अभिनीत कीं। इस विख्यात अदाकारा के साथ वैलेस के अंतरंग प्रेम प्रसंग विश्व सिनेमा की चर्चित दास्तानों में रहे हैं। वैलेस ने रीता हॉवर्थ के साथ लंबा दांपत्य जीवन व्यतीत किया।

ऑर्सन वैलेस अपने कैरियर के आरंभिक वर्षों में ऑथेलो, मैकबेथ, जूलियस सीजर जैसे ऐतिहासिक चरित्रों को परदे पर अभिव्यक्त करते रहे। एक अभिनेता के रूप में उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व इन भूमिकाओं के सर्वथा उपयुक्त था। द थर्ड मेन/ जेन आयर/ मोबी डिक/ द लांग हॉट समर/ कम्पल्शन जैसी फिल्मों के जरिए वैलेस ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। पचास के दशक में ऑर्सन की निर्देशकीय प्रतिभा का बोलबाला जोरों पर था। वैलेस अपनी फिल्मों में डीप फोकस और दीर्घ कोणीय कैमरा संचालन के जरिए कथ्य की संप्रेषणीयता बढ़ाने के लिए जाने जाते हैं।

जॉन हस्टन

असीम ऊर्जा तथा अथाह व्यग्रता को अपने व्यक्तित्व में एक साथ समाहित करने वाले इस लेखक-निर्देशक ने विश्व सिनेमा के इतिहास में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। फिल्म उद्योग से जुड़े पिता वाल्टर हस्टन की मदद से उन्हें पटकथा लेखक का पहला अनुबंध १९३२ में मिला। इसी वर्ष उन्होंने अपने पिता की दो फिल्मों में संवाद लेखन का कार्य किया। इसके बाद अचानक सब कुछ छोड़कर हस्टन ने योरप की ओर प्रस्थान किया। लंदन और पेरिस में भटकते रहने के बाद वे पुनः अमेरिका लौटे। अपनी पहली पत्नी को तलाक देकर १९३८ में दूसरा ब्याह रचाया और वार्नर ब्रदर्स के लिए पटकथा लेखन का कार्य करने लगे। डॉ. एहरिल्थ मैजिक ब्रुलेट (१९४०) के लिए उन्हें पहला एकेडमी अवॉर्ड मिला। 'माल्टेस फाल्कन' (१९४१) ने अपार सफलता एवं प्रशंसा पाई। हस्टन शीर्षस्थ लेखकों की श्रेणी में शामिल हो गए। इस फिल्म ने उन्हें दूसरा एकेडमी अवॉर्ड दिलवाया। 'सार्जेंट यार्क' (१९४१) के द्वारा वे तीसरा एकेडमी अवॉर्ड पाने में कामयाब रहे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हस्टन ने फौज पर केंद्रित वृत्तचित्रों का निर्माण किया। उनके द्वारा निर्मित ऐसा ही एक वृत्तचित्र 'लेट देअर बी लाइट' (१९४५) सैनिक की मनोवैज्ञानिक समस्याओं का जीवंत चित्रण था। इसे कटु यथार्थ के कारण प्रतिबंधित कर दिया गया। सन् १९७० में यह प्रदर्शित हो पाया।

इसके बाद वे फीचर फिल्मों की ओर फिर लौटे। 'द ट्रेजर ऑव द सिएरा मेड्रे' (१९४८) का निर्देशन एवं लेखन किया। इस फिल्म ने उन्हें दोनों ही क्षेत्र में 'ऑस्कर' से सम्मानित करवाया।

एम.जी.एम. से अनुबंधित होने के बाद उन्होंने 'द एस्फाल्ट जंगल' का लेखन एवं निर्देशन किया। सन् १९५० में प्रदर्शित यह फिल्म शहरी अपराध कथा पर केंद्रित थी। इस फिल्म ने उन्हें 'ऑस्कर अवॉर्ड' उपलब्ध करवाया। उनकी अगली फिल्म 'द रेड बेज ऑव करेज' (१९५१) बॉक्स आफिस पर फ्लॉप हो गई। समालोचकों ने बाद में इसे हस्टन की श्रेष्ठ कृतियों में शामिल किया। इसके बाद प्रदर्शित हुई 'अफ्रीकन क्वीन' (१९५१) ने सफलता पाई। एक बार फिर हस्टन को ऑस्कर विजेता बनाया। 'हेवन नोज मिस्टर एलिसन' ने पटकथा के लिए उन्हें एक और ऑस्कर दिलवाया। 'ए वाक विद लव एंड डेथ' (१९६९) में उनकी पुत्री एंजेलिका ने भी अभिनय किया।

परदे पर अभिनेता के रूप में हस्टन का प्रवेश १९६३ में हुआ। 'द कार्डिनल' में चरित्र भूमिका के उत्कृष्ट निर्वाह के लिए उन्हें ऑस्कर से सम्मानित किया गया। 'द बाइबल' में उन्होंने नोह की अविस्मरणीय भूमिका की। 'द फेट सिटी' (१९७२) में निर्देशक के रूप में उन्होंने अपनी क्षमता को पुनः प्रमाणित कर दिया। यह एक मुक्केबाज की असफलताओं पर आधारित मनोवैज्ञानिक फिल्म थी। 'द मेन हू वुड बी किंग' (१९७५) किपलिंग की एडवेंचर कथा पर आधारित फिल्म थी। इस फिल्म के जरिए हस्टन को एक और 'ऑस्कर' से अलंकृत किया गया। इसके बाद 'प्रिज्जीस ऑनर (१९८५) ने सफलता की सरहद को फिर छुआ। माफिया पर आधारित इस फिल्म में हस्टन की बेटी 'एंजेलिका' को श्रेष्ठ अभिनय के लिए ऑस्कर अवॉर्ड मिला।

हस्टन का जीवन अपने पात्रों की तरह रंगीन और रोमांटिक रहा। अपनी आत्मकथा 'एन ओपन बुक' (१९८०) में हस्टन ने अपनी जिंदगी के कई यथार्थ ईमानदारी से स्वीकार किए हैं। तीन पीढ़ियों तक 'ऑस्कर' से सम्मानित होने वाले परिवार के रूप में हस्टन खानदान का नाम विश्व सिनेमा में अविस्मरणीय रहेगा।



जॉन हस्टन-एंजेलिका

वुडी एलन

वुडी **एलन** हॉलीवुड की सबसे चर्चित शख्सियतों में गिने जाते हैं। हास्यप्रधान भूमिकाओं के लिए पहचाने जाने वाले वुडी का कैरियर इंद्रधनुषी छवियों का आभास देता है। १ दिसंबर १९३५ को ब्रुकलिन (न्यूयार्क) में जन्मे एलन उन व्यक्तियों में रहे हैं, जिनके साथ हमेशा विवादों की कड़ियाँ जुड़ती गईं। अपने चौंकाने वाले वक्तव्यों के कारण वुडी विश्व सिनेमा के धरातल पर समीक्षकों और दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बिंदु बने रहे। चाहे उनके द्वारा निर्मित फिल्म 'एवरीथिंग यू वांटेड टू नो एबाउट सेक्स बट वेअर अफ्रेड टू आस्क' का अटपटा सा नाम हो, या फिर एक फिल्म पत्रिका में प्रकाशित उनकी यह उद्घोषणा कि 'मस्तिष्क मेरा दूसरा प्रिय अंग है।' इन दिलचस्प हरकतों के लिए एलन को अमेरिका में ही नहीं, बल्कि विश्व भर

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति, विदिशा (म.प्र.)

विज्ञप्ति

(1) समस्त कृषक एवं व्यापारी बंधु कृषि उपज मंडी प्रांगण में ही क्रय-विक्रय करें।

(2) समस्त व्यापारी बंधु कृषकों को कृषि उपज का नगद भुगतान करके मंडी नियमों का पालन करें।

(3) समस्त हम्माल, तुलावट एवं कृत्यकारी भाई कृषकों से निर्धारित से अधिक धनराशि अथवा अवैध कृषि उपज न लेवें।

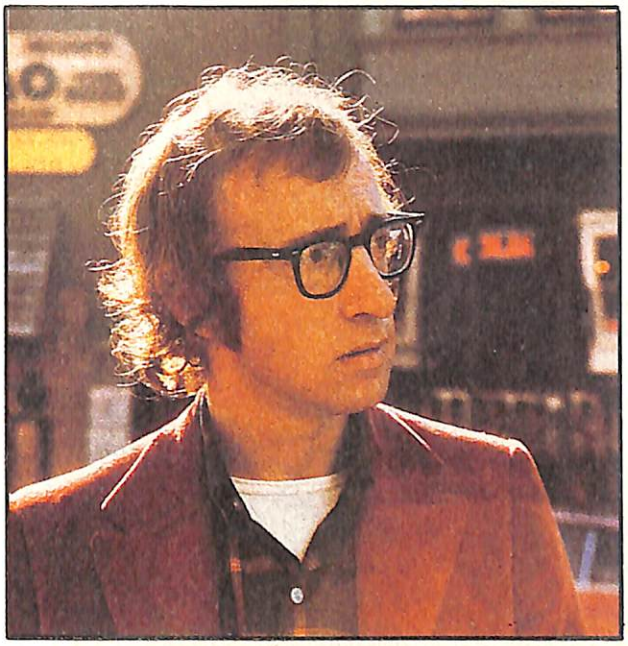
(4) व्यापारीगण मंडी शुल्क एवं निराश्रित शुल्क समय पर जमा कर दाण्डिक ब्याज से बचें।

(5) मंडी अधिनियम के पालन में सभी वर्ग सहयोग प्रदान करें।

(6) मंडी आपकी है, इसके हितों का ध्यान रखें।

(7) कृषक बंधुओं से निवेदन है कि मंडी में सभी प्रकार के उर्वरक उचित मूल्य पर उपलब्ध हैं, कृपया मंडी से ही क्रय कर शासन की नीति को सफल करें।

प्रकाश जांगरे,	**पी. एस. राजपूत,**
भारसाधक अधिकारी,	सचिव,
कृषि उपज मंडी समिति,	**कृषि उपज मंडी समिति,**
विदिशा (म.प्र.)	**विदिशा (म.प्र.)**



वुडी एलन



सूसान हेवर्ड

में जबरदस्त लोकप्रियता अर्जित हुई। वुडी एलन अभिनय के अलावा निर्देशन और फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी समान रूप से सक्रिय रहे हैं। हास्य अभिनेता के बतौर एलन ने अपने कैरियर की शुरूआत १९६६ में निर्मित फिल्म 'व्हाट्स अप टायगर लिली' से की थी। इसके पूर्व वे एक सफल अमेरिकी फिल्म 'व्हाट्स न्यू : पूसीकैट' के लिए पटकथा लेखन का काम कर चुके थे। 'टायगर लिली' में एलन ने एक जापानी जासूस की भूमिका को हास्य के प्रभावी समावेश के साथ प्रस्तुत किया। इस फिल्म में उनकी अभिनेत्री पत्नी लूसी लासर ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। १९६९ में एलन ने अपनी पहली फिल्म 'टेक द मनी एंड रन' निर्देशित की।

सत्तर के दशक में एलन ने सिलसिलेवार श्रेष्ठ कॉमेडी फिल्मों का निर्माण किया। बनाना/ एवरीथिंग यू वांटेड टु नो अबाउट सेक्स/ स्लीपर और लव एंड डेथ एलन की बहुप्रशंसित फिल्में थीं। वुडी एलन ने सामान्य जीवन की दिलचस्प घटनाओं को सहज शैली में परदे पर प्रस्तुत कर व्यंग्य व विनोद प्रधान फिल्में बनाईं। १९७७ में निर्मित एनी हॉल एलन के कैरियर की महत्वपूर्ण फिल्म थी, जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखन और अभिनय का ऑस्कर अवार्ड प्राप्त हुआ। 'इंटीरियर' एलन द्वारा निर्देशित एक अन्य चर्चित फिल्म रही, जिसे विशेष रूप से कथ्य की नाटकीय प्रस्तुतिकरण शैली के लिए सराहा गया। एलन ने अमेरिका के औद्योगिक व महानगरीय जन जीवन पर एक व्यंग्यात्मक फिल्म 'मैनहट्टन' का निर्माण किया था। इस फिल्म के लिए उन्हें दूसरी बार अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। वुडी एलन के आलोचकों ने उनकी आरंभिक हास्य भूमिकाओं के संदर्भ में छीछालेदर की थी। इस आलोचना का जवाब उन्होंने अपनी एक फिल्म 'स्टारडस्ट मेमोरीज (१९८८) के माध्यम से हास्यपरक शैली में दिया। सेप्टेम्बर/ एनॉदर वुमन/ शेडोज एंड फाग/ एलिस और क्राइम एंड मिसडिमेनॉर एलन की अन्य महत्वपूर्ण फिल्में हैं। १९८६ में निर्मित 'हन्ना एंड हर सिस्टर्स' के लिए वुडी विश्व भर के फिल्म समीक्षकों द्वारा सराहे गए थे। टिकट खिड़की पर इस फिल्म ने जबरदस्त कामयाबी अर्जित की। एलन के कैरियर की एक बेहद लोकप्रिय भूमिका फिल्म 'कैसीनो रॉयल' समझी जाती है, जिसमें उन्होंने जेम्स बांड की नकल पर 'जिमी बांड' नामक एक विनोदी पात्र अभिनीत किया था।

सूसान हेवर्ड

अमेरिका की इस अभिनेत्री का वास्तविक नाम एडिथ मेरेनर था। लाल बालों, नुकीली नाक और घनी भौंहों के कारण उसने अमेरिकी फिल्म जगत में अपनी खास जगह बना ली थी। मॉडल के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। सन् १९३७ में हालीवुड में वार्नर ब्रदर्स की 'हॉलीवुड होटल' में उसे भूमिका मिली। इसके बाद १९३९ में वह पैरामाउंट से जुड़ी। 'एमंग द लिविंग' (१९४१) में समालोचकों ने पाया कि इस मादक सुंदरी में प्रतिभा की कमी नहीं है। फिर भी सूसान को नायिका की भूमिका पाने के लिए दो वर्ष तक प्रतीक्षा करना पड़ी। 'हिट परेड' (१९४३) तथा 'द फाइटिंग सी बीज' (१९४४) के पश्चात् सूसान ने यूजीन ओ नील की रचना 'द हेयरी एप' (१९४४) में नायिका की भूमिका कर अपनी प्रतिभा को प्रमाणित कर दिया। धीरे-धीरे हेवार्ड के अभिनय में प्रौढ़ता आने लगी। 'द स्टोरी ऑफ ए वूमन' में शराबी नायिका की उत्कृष्ट भूमिका के कारण उसे 'ऑस्कर' के लिए नामांकित किया गया। 'आई वांट टू लिव' (१९५८) में एक वेश्या और खूनी स्त्री की भूमिका में अपनी उत्कृष्ट अभिनय प्रतिभा का परिचय देकर वे ऑस्कर प्राप्त करने में सफल हुईं।

अकीरा कुरुसोवा

जापान के इस विश्व प्रतिष्ठित निर्देशक ने २६ वर्ष की आयु में तोहो फिल्म कंपनी में सहायक के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। पेंटिंग, पाश्चात्य साहित्य एवं कला का गहन ज्ञान रखने वाले कुरुसोवा ने पटकथाएँ भी लिखीं। उनके द्वारा निर्देशित की गई पहली फिल्म 'सुगाता सानशीरो' (१९४३) की पटकथा उन्होंने स्वयं लिखी थी।' रशोमान (१९५०) ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया। गाँप्रि अवार्ड, अर्जित करने वाली इस फिल्म की कहानी नवीं सदी के सामंतवादी युग में बलात्कार एवं हत्या की विभिन्न परिस्थितियों को प्रदर्शित करने में सफल हुई।

द सेवन समुराई- १९५४ में प्रदर्शित हुई। यह भी रण कौशल पर आधारित फिल्म थी। कुरुसोवा की कुशलता तथा सिनेमा के माध्यम के इतिहास को जीवंत करने की क्षमता निरंतर बढ़ती गई। उनकी फिल्म 'द हिडन फोर्टेस' ने जार्ज लूकास को फिल्म 'स्टार वार्स' के लिए प्रेरणा दी। टोरा-टोरा-टोरा (१९७०) के लिए वे ट्वेंटीएथ सेन्चुरी फॉक्स से अनुबंधित हुए। इस फिल्म के निर्माण के दौरान मानसिक रूप से असंतुलित होने की अफवाहों ने उनके कैरियर पर बुरा प्रभाव डाला। इसके बाद अन्य जापानी निर्देशकों की सहायता से कुरुसोवा ने अपनी पहली रंगीन फिल्म 'डोडेस का डेन' (१९७०) का निर्माण किया। टोकियो में झोपड़पट्टी वालों के जीवन पर आधारित यह फिल्म आर्थिक रूप से असफल रही। कुरुसोवा



थ्रोन ऑव ब्लड : अकीरा कुरुसोवा

ने निराश होकर आत्महत्या का प्रयास किया किंतु बचा लिए गए। इसके बाद उन्होंने रूस में निर्मित फिल्म 'डेरसू उझा' (१९७५) का निर्देशन किया। फिल्म की शूटिंग के लिए उन्होंने दो वर्ष साइबेरिया में बिताए। इस फिल्म ने सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म के रूप में एकेडमी अवॉर्ड अर्जित किया। रैन (१९८५) ने कुरुसोवा की विलक्षण प्रतिभा को प्रमाणित किया। इस फिल्म में सर्वोत्कृष्ट निर्देशन के लिए उन्हें एकेडमी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

विश्व फिल्म निर्माण के क्षेत्र में व्यापक प्रभाव एवं प्रेरणा के केंद्र रहे कुरुसोवा को १९८९ में मानद एकेडमी अवार्ड से सम्मानित किया गया। 'समथिंग लाइक ऑटोबायोग्राफी' (१९८२) उनके जीवन के निजी पहलुओं को उजागर करने वाली पुस्तक है।

जेम्स आइवरी और इस्माईल मर्चेंट

इस्माईल मर्चेंट तथा जेम्स आइवरी की इस अंतरराष्ट्रीय जोड़ी को फिल्म इतिहास में सर्वाधिक टिकाऊ भागीदारी माना जाता है। यह जोड़ी विश्व भर में साहित्यिक सिनेमा की पर्याय बन चुकी है। बौद्धिक तथा विचारोत्तेजक सिनेमा के सृजन में यह जोड़ी दर्शकों के लिए गारंटी मानी जाती है। मर्चेंट ने मुम्बई में अपनी पढ़ाई पूरी कर न्यूयार्क में बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन की पढ़ाई के लिए प्रवेश लिया। इसी दौरान उन्होंने एक लघु फिल्म 'द क्रिएशन ऑफ वुमन' (१९६१) का निर्माण किया। यह फिल्म ऑस्कर हेतु नामांतरित की गई। आइवरी ने 'द सोर्ड एंड द फ्लूट' (१९५९) नामक वृत्तचित्र का निर्माण कर अमेरिका की एशिया सोसाइटी को प्रभावित किया। एशिया सोसाइटी ने आइवरी को दिल्ली पर फिल्म बनाने के लिए अनुबंधित किया। इस फिल्म की शूटिंग के दौरान भारत में आइवरी की मुलाकात मर्चेंट से हुई। सन् १९६१ में दोनों ने मिलकर मर्चेंट-आइवरी प्रॉडक्शन की नींव डाली। ध्येय था भारत में अँगरेजी भाषा की फिल्में बनाकर उनका अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शन करना। आइवरी ने निर्देशन तथा मर्चेंट ने प्रोडक्शन संभाला।



मर्चेण्ट-आइवरी टीम की फिल्म : हीट एण्ड डस्ट

इस जोड़ी की पहली फिल्म रूथ प्रबर झाबवाला के उपन्यास 'द हाउस होल्डर्स' (१९६३) पर आधारित थी। इसके बाद झाबवाला भी इस टीम में पटकथा लेखिका के रूप में शामिल हो गई। 'शेक्सपीयर वाला' (१९६५) सफल रही। मर्चेंट-आइवरी ने भारतीय विषयों की श्रृंखला में 'द गुरु' (१९६९)/, 'बॉम्बे टॉकी' (१९७०)/ 'एडवेंचर्स ऑफ ब्राउन मेन/ इन सर्च ऑफ सिविलाइजेशन' (७०) फिल्म बनाई।

इस जोड़ी ने साहित्यिक कृतियों पर भी फिल्में बनाई। इनमें हेनरी जेम्स के उपन्यास पर आधारित 'द यूरोपीयन' (१९७९)। झाबवाला के उपन्यास पर 'हीट एंड डस्ट' (१९८३) ई.एम. फोस्टर के उपन्यास 'ए रूम विद ए व्यू' (१९८५) तथा बोस्टोनियंस की समालोचकों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। ए रूम विद ए व्यू फिल्म को तीन एकेडमी अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। फोस्टर के उपन्यास पर आधारित अन्य फिल्मों में 'मॉरिस' (१९८७) के बाद हावर्ड्स एंड (१९९२) आई। वर्ग संघर्ष पर आधारित इस फिल्म ने पुनः तीन ऑस्कर प्राप्त किए। १९९४ में इस्माईल मर्चेंट ने भी निर्देशन का भार संभाला। भोपाल में उन्होंने मुहाफिज फिल्म पूरी कर उर्दू भाषा और मुस्लिम तहजीब के समाप्त होने का चित्रण किया है।

इंगमार बर्गमेन

स्वीडन के इंगमार बर्गमेन विश्व सिनेमा के सार्वकालिक महान निर्देशकों में शुमार होते हैं। उनकी फिल्मों का प्रखर स्वर मानवतावादी सिनेमा की दृष्टि से एक मिसाल के बतौर देखा जा सकता है। स्वीडिश सिनेमा को उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान सौंपी। बर्गमेन ने अपनी कलायात्रा की शुरूआत रंगमंच से की थी। बतौर फिल्म निर्देशक उनकी पहली कृति थी, 'क्रायसिस।' इसके बाद उन्होंने १९४७ में एक फिल्म 'ए शिप टू इंडिया' का निर्माण किया। पोर्ट ऑफ काल (१९४८) इतालवी नवयथार्थवाद से प्रभावित कृति थी, जिससें बर्गमेन ने वृत्तचित्रनुमा शैली में फिल्माया। १९४९ में रचित 'द डेविल्स वान्टन' एक तिरस्कृत वेश्या के जीवन की मार्मिक कहानी थी, जो नियति के पदाघात से त्रस्त होकर आत्महत्या कर लेती है।

नारी मन के अंतर्जगत को टटोलने की



बर्गमन की फिल्म : सेवंथ सील

कोशिश बर्गमेन ने पहली बार अपनी फिल्म थ्री स्ट्रेंज लव (१९४९) के जरिए की थी। इसके अलावा समर इंटरल्यूड (१९५०), वेटिंग वुमन (१९५२), मोनिका (१९५३), जर्नी इन टू ऑटम (१९५४), बिक्र ऑफ लाइफ (१९५७) और समर नाइट (१९५५) फिल्मों में भी बर्गमेन का विशिष्ट स्त्री चरित्र चित्रण शिद्दत के साथ अभिव्यक्त हुआ। हैरियट एंडरसन, इन्ग्रिड ट्यूलिन लिव उलमान जैसी अभिनेत्रियों की अंतरराष्ट्रीय पहचान बर्गमेन की फिल्मों के बदौलत बनी। 'सॉडस्ट एंड रिसिल' फिल्म में बर्गमेन ने सर्कस में काम करने वाली युवतियों के शारीरिक शोषण की दर्दनाक तस्वीर प्रस्तुत की थी। १९५७ में निर्मित 'द सेवंथ सील' बर्गमेन की सर्वाधिक प्रशंसनीय कृति मानी जाती है। इसमें उन्होंने मनुष्य की संवेदनाओं का दार्शनिक विवेचन किया है। वाइल्ड स्ट्राबेरी (१९५७) और द वर्जिन स्प्रिंग (१९६०) जैसी फिल्मों के माध्यम से बर्गमेन ने ईश्वर की सत्ता को एक विराट मौन के रूप में परिभाषित करते हुए सिनेमा संबंधी गंभीर बहस की रूपरेखा तैयार की। मानव संबंधों की विशद व्याख्या के लिए बर्गमेन द्वारा प्रयुक्त किए गए प्रतीक सर्वथा विशिष्ट हैं। कैमरे के सांकेतिक इस्तेमाल में उनका जवाब नहीं। थ्रू ए ग्लास डार्कली (१९६१), विंटर लाइट (१९६३) और द साइलेंस (१९६३) जैसी फिल्मों में बर्गमेन ने आधुनिक युग के संत्रास और विडम्बनाओं को विचारोत्तेजक अंदाज में प्रस्तुत किया है। नारी अवचेतन की गहराई में उतरने की सार्थक कोशिश उन्होंने १९६६ में निर्मित अपनी चर्चित फिल्म 'पर्सोना' के जरिए की। अवर ऑफ द वुल्फ (१९६८) समाज में कलासाधकों की दुरावस्था पर केंद्रित फिल्म थी, जबकि शेम (१९६९) में बर्गमेन ने अधिनायकवादी राजसत्ता के खिलाफ सशक्त राजनीतिक वक्तव्य पेश किया।

'ए पेशन' (१९६९) बर्गमेन द्वारा निर्मित सौंदर्य शास्त्रीय फिल्मों की प्रतिनिधि कृति है। क्राइज एंड विस्पर और सीन्स फ्रॉम ए मैरेज भी इसी श्रृंखला की महत्वपूर्ण फिल्में थीं। प्रसिद्ध संगीतकार मोत्जार्ट से प्रभावित होकर बर्गमेन ने १९७५ में 'द मेजिक फ्लूट' का निर्माण किया। मूलतः टेलीविजन के लिए बनाई गई उनकी अगली फिल्म 'फेस टू फेस' अपने प्रयोगधर्मी स्वरूप के लिए बेहद चर्चित हुई थी। 'लिव उलमान' इस फिल्म में लाजवाब अभिनय के लिए जानी गई। 'ऑटम सोनाटा' (१९७८), फ्रॉम द लाइफ ऑफ मेरियानेट्स (१९८०) और फेनी एंड अलेक्जेंडर (१९८३) बर्गमेन द्वारा निर्मित वे फिल्में थीं, जिनमें शताब्दी के ढलते वर्षों की पृष्ठभूमि में स्वीडन की सामाजिक, राजनीतिक व आचारगत परिस्थितियों का आकलन किया गया। आफ्टर द रिहर्सल (१९८४) बर्गमेन के निर्देशकीय कैरियर की आखिरी फिल्म थी। अपने ४ दशकीय सिने सफर के दौरान बर्गमेन पाँच बार अकादमी पुरस्कारों के लिए मनोनीत किए गए। उनके द्वारा निर्मित 'क्राइज एंड व्हिस्पर' सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के बतौर ऑस्कर अवॉर्ड से पुरस्कृत की गई थी। १९७० में उन्हें प्रतिष्ठित इरविंग थेलबर्ग स्मृति अवॉर्ड दिया गया। बर्गमेन की आत्मकथा 'मेजिक लेंटर्न' १९८७ में प्रकाशित हुई थी। जिसमें इस महान फिल्मकार के जीवन के कई दिलचस्प संस्मरण संग्रहीत हैं। मानव मन के गवेषणात्मक अनुसंधान के लिए बर्गमेन विश्व सिनेमा में हमेशा याद किए जाएँगे।

आंद्रेई तारकोवस्की

विश्व सिनेमा के मानचित्र पर रूस को जो प्रभावी पहचान आइसंस्टाइन ने दिलाई थी, उसको निर्देशक आंद्रेई तारकोवस्की ने आगे बढ़ाया। सोवियत सिनेमा जिन फिल्मकारों की वजह से अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा अर्जित कर सका, उनमें तारकोवस्की अग्रणी थे। बहुत कम सिनेकर्मी ऐसे हुए हैं, जिन्होंने सिनेमा को कला के माध्यम और अभिव्यक्ति के सशक्त औजार के रूप में समान कौशल के साथ इस्तेमाल किया। तारकोवस्की इस श्रेणी के बिरले प्रतिनिधियों में शुमार होते हैं। उनकी फिल्में जहाँ चाक्षुष सौंदर्य के लिए सराही गईं, वहीं उनका गहन वैचारिक आधार विवाद और बहस का विषय भी रहा। तारकोवस्की की फिल्मों में मुख्य रूप से मनुष्य के आध्यात्मिक अन्वेषण, आधुनिक समाज में विलुप्त होते मानव मूल्य, तकनीकी विकास के समानांतर घटती संवेदना का खेदजनक परिदृश्य चित्रित हुआ है। निर्देशन के अलावा पटकथा लेखन में भी सिद्धहस्त होने के कारण तारकोवस्की अपनी फिल्मों का कथ्य और प्रस्तुतिकरण समान रूप से प्रभावशाली बनाने में सफल रहे।

तारकोवस्की ने रूस के प्रख्यात सिने संस्थान 'ऑल यूनियन सिनेमेटोग्राफी इंस्टीट्यूट' से निर्देशन का प्रशिक्षण प्राप्त किया। संस्थान में अध्ययनरत रहते हुए उनके द्वारा निर्मित लघु डिप्लोमा फिल्में पुरस्कृत हुई थीं। तारकोवस्की को उनकी पहली ही फीचर फिल्म 'माय नेम इज ईवान (१९६२) से जो अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली, वह किसी भी फिल्मकार के लिए दुर्लभ उपलब्धि कही जानी चाहिए। यह फिल्म एक १२ वर्षीय मासूम बच्चे की कहानी थी, जिसका परिवार द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन सेनाओं के अत्याचार का शिकार बनता है। वेनिस फिल्मोत्सव में इस फिल्म को सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रसिद्ध स्वीडिश निर्देशक इंगमार बर्गमेन ने 'माय नेम इज ईवान' देखने के बाद प्रतिक्रिया व्यक्त की थी कि, 'यह फिल्म नहीं, बल्कि एक चमत्कार है, जो बात मैं शिद्दत के साथ काफी समय से महसूस करता रहा था, मगर अभिव्यक्त नहीं कर पाया, वह बात तारकोवस्की ने निहायत खूबसूरती से कही है। उनकी प्रथम फिल्म वस्तुतः जिंदगी का प्रतिबिंब है। जीवन जो एक सपना भी है और हकीकत भी।'

तारकोवस्की की दूसरी फिल्म 'आंद्रे रुबलेव' विवादास्पद रही थी। १९६६ में निर्मित इस फिल्म को 'कान फिल्मोत्सव' में समीक्षक अवॉर्ड दिया गया। फिल्म, समाज की विस्तीर्ण परिधि के बीच नितांत वैयक्तिक अनुभूतियों के साथ कार्यरत एक कलाकार की कहानी थी। 'आंद्रे रुबलेव' के माध्यम से तारकोवस्की ने कलाकार के सामाजिक उत्तरदायित्व और राजनीतिक प्रतिबद्धता पर प्रकाश डाला है। यह फिल्म सोवियत सरकार द्वारा कड़े सेंसर के बाद प्रदर्शित होने दी गई थी। तारकोवस्की ने १९७२ में विज्ञान कथा की पृष्ठभूमि में एक अत्यंत



सेक्रीफाइस : तारकोवस्की की अंतिम फिल्म

प्रशंसनीय फिल्म 'सोलेरिस' का निर्माण किया। इसे कान फिल्म समारोह में विशेष ज्यूरी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। 'द मिरर' (१९७६) तारकोवस्की द्वारा निर्देशित आत्मकथापरक फिल्म थी, जिसमें उन्होंने अपने जीवन की कड़वी- मीठी झलकियों को बेहद कुशलता के साथ रेखांकित किया। १९७९ में निर्मित 'स्टॉकर' तारकोवस्की की सर्वाधिक प्रशंसित फिल्म मानी जाती है। विशेष रूप से इसका खूबसूरत फिल्मांकन दर्शकों के आकर्षण का केंद्र बना। प्रकृति की अत्यधिक सुरम्य झाँकी इस फिल्म में देखने को मिलती है। 'नॉस्टेल्जिया' शीर्षक से तारकोवस्की ने १९८३ में एक फिल्म रूस से बाहर रह कर बनाई थी, जिसे एक संगीतकार के जीवन पर केंद्रित शोधपरक कृति के बतौर प्रस्तुत किया गया। तारकोवस्की की अंतिम फिल्म 'सेक्रीफाइस' १९८६ में प्रदर्शित हुई। तकनीकी विकास के संभावित खतरों के प्रति आगाह करने वाली यह फिल्म एक दुर्गम ग्रामीण स्थल में आणविक विभीषिका के लोमहर्षक प्रभाव का विचारोत्तेजक चित्रण करती है। 'सेक्रीफाइस' में तारकोवस्की ने १० मिनट अवधि का एक दृश्य अनवरत बगैर 'संपादित किए शूट किया था।

आन्द्रे वाजदा

पूर्वी योरप के फिल्मकार पश्चिमी सार्थक सिनेमा के प्रमुख आधार स्तंभ रहे हैं। जिस निष्ठा और उत्तरदायित्व के साथ इन सिने कर्मियों ने फिल्मों का निर्माण किया, उसे सिनेमा के अस्तित्व के नजरिए से आदर्श माना जाना चाहिए। पोलैंड के प्रसिद्ध निर्देशक आंद्रे वाजदा का नाम ऐसे ही प्रतिबद्ध फिल्मकारों में लिया जाता है। पूर्वी योरप के इस प्रतिनिधि फिल्म निर्देशक ने अपने देश की राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों को बेहद विचारोत्तेजक अंदाज में परदे पर अभिव्यक्त किया। अपनी वैचारिक प्रतिबद्धता के लिए वाजदा न केवल विवादास्पद रहे बल्कि राजकीय उत्पीड़न का भी उन्हें शिकार बनना पड़ा। पोलैंड के चर्चित सॉलिडेरिटी आंदोलन के साथ आंद्रे वाजदा सक्रिय रूप से जुड़े रहे हैं। हंटिंग फाईल्स/ लैंड ऑफ द प्रॉमिसेस/ मैन ऑफ आयरन जैसी प्रखर राजनीतिक फिल्मों के माध्यम से वाजदा ने अपनी विचारधारा सिनेमा की चौखट में प्रस्तुत की। इन सभी फिल्मों का कथ्य एक गंभीर उद्देश्य के सूत्र से संबद्ध था। विश्व के सिने समीक्षकों की नजर में आंद्रे वाजदा एक साहसिक और असाधारण फिल्मकार के बतौर देखे जाते हैं।

योरप के अनेक फिल्मकारों ने विश्व युद्ध की विभीषिका को बहुत करीब से देखा और अपनी फिल्मों में इसके ब्यौरे प्रस्तुत किए। वाजदा स्वयं द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पोलैंड की सेना में शामिल थे। चित्रकला का गहरा शौक उन्हें बचपन से रहा। पोलिश निर्देशक अलेक्जेंडर फोर्ड का सान्निध्य उन्हें सिने विधा की ओर आकृष्ट करने के लिए जिम्मेदार था। १९५४ में वाजदा ने बतौर फिल्मकार अपनी पहली सिने कृति 'ए जनरेशन' निर्देशित की। यह फिल्म विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि में पोलैंड के नागरिकों की व्यथा पर केंद्रित थी। इसी चौखट के अंतर्गत आंद्रे वाजदा ने दो अन्य फिल्मों 'केनाल' और ''एशेजएंड डायमंड' का निर्माण किया। युद्ध के दुष्प्रभावों को रेखांकित करने वाली यह फिल्म त्रयी आंद्रे वाजदा की पहचान बनाने में कामयाब रही।

मानव जाति को युद्ध के खतरों के प्रति आगाह करने हेतु वाजदा अपने रचनाकर्म में सदैव सचेत रहे। 'लोला' इस विषय पर केंद्रित उनकी एक महत्वपूर्ण फिल्म थी। 'लैंड स्केप्स ऑफ्टर बैटल' (१९७०) में वाजदा ने यातना शिविरों में युद्ध के दौरान मानवाधिकार के हनन का मसला उठाया। सत्तर के दशक में आंद्रे वाजदा प्रमुखतः साहित्यिक कृतियों को रजत पट पर चित्रांकित करने की दिशा में प्रयासरत रहे। द बर्चवुड/ द वेडिंग/ ऑरकेस्ट्रा कंडक्टर/ मेन ऑफ मार्बल और मेन ऑफ आयरन इसी धरातल पर बनी फिल्में थीं। इनमें 'मेन ऑफ आयरन (लौह पुरुष) को कान फिल्मोत्सव में गोल्डन पॉम अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। यह फिल्म राजसत्ता के विरुद्ध जूझते एक व्यक्ति की सैद्धांतिक जंग का चित्रण करने वाली विवादास्पद कृति थी। पोलिश सरकार के शत्रुवत व्यवहार से परेशान होकर वाजदा ने अपनी अगली फिल्म दांते (१९८२) फ्रांस में बनाई। १९८९ में आंद्रे वाजदा पोलैंड में कम्युनिस्ट सरकार के पतन के बाद विपक्षी दल के सत्तारूढ़ होने पर संसद के प्रतिनिधि के बतौर चुने गए। लव एट ट्वेंटी/ विदाउट एनस्थेशिया जैसी विश्व चर्चित फिल्मों के लिए वाजदा का नाम न केवल पोलैंड बल्कि पूरी दुनिया में आदर के साथ लिया जाता है।

स्टेनले कुब्रिक

अमेरिका की विख्यात साप्ताहिक पत्रिका 'लाइफ' में काम करते हुए स्टेनले ने निर्देशक के रूप में अपना कैरिअर लघु फिल्मों से शुरू किया। 'डे ऑव द फाइट' (१९४८)/ फीअर एंड डिजायर' (१९५३) के बाद द किलिंग (१९५६) से वे निर्देशक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। 'पाथ्स ऑव ग्लोरी (१९५७) प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फ्रांस में हुए एक कोर्ट मार्शल पर आधारित फिल्म थी। इसमें व्यक्तिगत पीड़ा एवं सामाजिक क्रूरता का जीवन्त चित्रण था। इसके बाद स्पार्टकस (१९६०) के निर्माण के दौरान हुए अप्रिय विवाद से दुःखी होकर उन्होंने हॉलीवुड छोड़ दिया। लंदन आकर उन्होंने नाबोकोव के उपन्यास लोलिता पर इसी नाम से फिल्म बनाई। 'हाउ आई लर्न्ड टू स्टॉप वरीइंग एंड लव द बॉम्ब (१९६४) को वर्ष की श्रेष्ठ फिल्म का ऑस्कर अवार्ड मिला।

उसके बाद कुब्रिक ने चार वर्षों तक अपनी फिल्म २००१ ए स्पेस ओडिसी (१९६८) के लिए काम किया। इस फिल्म में तकनीकी श्रेष्ठता के सम्मुख मानवीय निरीहता को सूक्ष्मता से दर्शाया गया था। कुब्रिक की फिल्मों में विद्रुप हास्य, सिनेमाई विशिष्टता के साथ-साथ गीत एवं संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। क्लॉकवर्क आरेन्ज (१९७१) ,बैरी लिण्डन (१९७५) उनकी अगली फिल्में थीं। युद्ध की विभीषिका को

विवादास्पद फिल्मकार : स्टेनले कुब्रिक

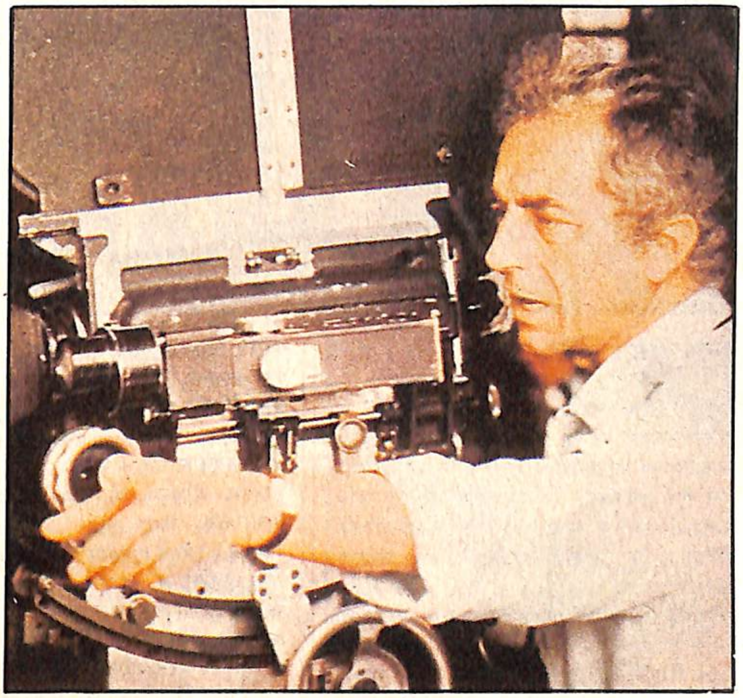


दर्शाने वाली उनकी फिल्म 'फुल मैटल जैकट (१९८७) वियतनाम युद्ध की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

माइकल एंजलो अंतोनियोनी

पचास और साठ के दशक में इतालवी और फ्रेंच निर्देशकों के जिस समूह ने विश्व सिनेमा को अपनी अद्वितीय कृतियों से समृद्ध किया, उनमें इटली के माइकल एंजलो अंतोनियोनी का नाम प्रमुख है। २९ सितंबर १९१२ को इटली के शहर 'फरेरा' में जन्मे अंतोनियोनी का नाम नई धारा के सिनेमा के प्रणेताओं के बीच शुमार किया जाता है। १९६० में उनके द्वारा निर्मित 'ला एवेंचुरा' विश्व सिनेमा की प्रतिनिधि कृति के बतौर प्रतिष्ठित हुई। अंतोनियोनी ने अपने कैरियर की शुरूआत सिनेमा संबंधी लेखन से की थी। बोलॉना विश्वविद्यालय में निर्देशन की तालीम लेने के बाद उन्होंने रोज़ीलिनी और फुत्शीग्नोनी जैसे प्रसिद्ध फिल्मकारों के साथ कुछ अरसे तक काम किया। शुरूआत में अंतोनियोनी ने लघु फिल्में बनाई। १९४७ में निर्मित 'जन्ते देव पो' उनकी पहली फिल्म थी। इसके अगले वर्ष उन्होंने संगीतकार जियोवानी फुस्को के जीवन पर एक वृत्तचित्र का निर्माण किया। फीचर फिल्म के बतौर अंतोनियोनी की पहली कृति १९५० में निर्मित 'क्रोनाका दी ना एमोर' थी। इटली की प्रसिद्ध तारिका लुसिया बेसे ने केंद्रीय भूमिका निभाई। अंतोनियोनी अपनी फिल्मों में जिस जटिल कैमरा संचालन और बिम्ब चित्रण के लिए जाने जाते हैं, उसकी झलक इस फिल्म में दर्शकों ने गहराई से महसूस की। अंतोनियोनी द्वारा १९५२ में निर्मित फिल्म 'आई विन्टी' को लेकर काफी विवाद खड़े हुए। फ्रांस में इसका प्रदर्शन प्रतिबंधित कर दिया गया था।

एमोर इन सिटा (१९५३) अंतोनियोनी की कालखंड आधारित फिल्म थी, जिसमें उन्होंने एक उपेक्षित, वेदनाग्रस्त, एकाकी व्यक्ति की मनःस्थिति का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया। इस फिल्म में खुदकुशी को महिमा मंडित करने के लिए काफी आलोचना भी हुई थी। १९५५ में निर्मित 'ला एमिशे' की विषयवस्तु के बतौर अंतोनियोनी ने 'पावेसे' की एक साहित्यिक रचना का चयन किया। फिल्म नारी पात्रों के सशक्त चरित्र चित्रण की वजह से सराही गई। अंतोनियोनी की निर्देशकीय प्रतिभा का सर्वाधिक प्रखर स्वरूप १९६० में निर्मित 'ला एवेंचुरा' के माध्यम से परदे पर अभिव्यक्त हुआ। इस फिल्म ने अंतोनियोनी को विश्व स्तर पर अभूतपूर्व ख्याति प्रदान की। कान फिल्मोत्सव में इसे सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि के बतौर पुरस्कृत किया गया था। 'ला एवेंचुरा' को अंतोनियोनी द्वारा रचित दो अन्य फिल्मों ल नोत्ते (१९६१) और लॉ एक्लेसी (१९६२) के साथ ६० के दशक की सुप्रसिद्ध सिने त्रयी की बुनियाद के रूप में याद किया जाता है। इन फिल्मों की दृश्यावली और कथ्य प्रस्तुतिकरण विश्व सिनेमा में अंतोनियोनी की विशिष्ट निर्देशकीय शैली के प्रतीक समझे गए। एवेंचुरा और एक्लेसी में शानदार भूमिकाओं के लिए इटली की अभिनेत्री मोनिका बेटी दुनिया के फिल्म समीक्षकों के बीच कलात्मक बहस का केंद्रबिंदु बन गई थीं। द रेड डेजर्ट अंतोनियोनी द्वारा १९६४ में निर्मित व्यावसायिक दृष्टि से सर्वाधिक सफल फिल्म साबित हुई। इसका कथानक औद्योगिक युग में मानव के एकाकीपन पर आधारित था।



माइकल एंजलो अंतोनियोनी

अंतोनियोनी ने इटली से बाहर जाकर अमेरिका की एम.जी.एम. फिल्म कंपनी के लिए भी कुछ फिल्मों का निर्माण किया। आई ट्राय वोल्टी (१९६५) और ब्लो अप (१९६७) दो ऐसी ही प्रयोगवादी फिल्में थीं। इनके बाद अंतोनियोनी ने कैलीफोर्निया में ज़ुबरेस्की पाइंट (१९७०) और लंदन में रहकर द पैसेंजर (१९७५) जैसी चर्चित फिल्में बनाई। अपनी समस्त फिल्मों में अंतोनियोनी ने जिस कुशलता के साथ सिनेमा की भाषा का अभिव्यक्ति के हथियार के बतौर इस्तेमाल किया, उसे अपने आप में एक विलक्षण फिल्मकार की अद्वितीय रचना शैली के बतौर याद किया जाएगा।

कार्लो पोन्ती

कार्लो पोन्ती ने अपना कैरियर १९४० से मिलान (इटली) से शुरू किया। १९४५ से १९४९ तक वे रोम में लक्स फिल्म्स के साथ संबद्ध रहे। सन् १९५० में वे डाइनो डी लारेन्टिस से जुड़े तथा उनके लिए कई फिल्में बनाई। अमेरिका की कई हिट फिल्मों के निर्माण का श्रेय भी उन्हें है। इनमें 'यूलेसिस' (१९५४), वार एंड पीस (१९५६) प्रमुख हैं। सोफिया लॉरेन भी उनकी ही खोज है। बाद में पोन्ती ने सोफिया से विवाह कर लिया था। पोन्ती ने पेरिस तथा हॉलीवुड दोनों ही स्थानों में अपना व्यवसाय जारी रखा तथा कारोबार की एक शाखा इटली में भी स्थापित की। इसके साथ ही वे चेक फिल्म उद्योग से भी सक्रिय जुड़े रहे। उनकी कृतियों में डॉ. जिवागो (१९६६) प्रमुख है।

रॉबर्टो रोजिलीनी

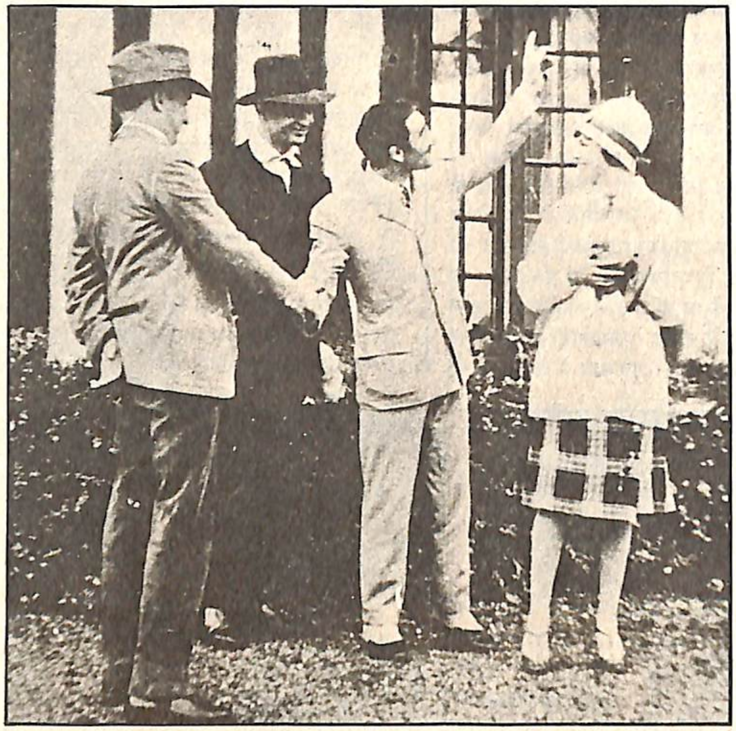
नव यथार्थवादी सिनेमा की लहर के प्रवर्तक के रूप में विख्यात इटैलियन निर्देशक रॉबर्टो रोजिलीनी ने कम बजट में उत्कृष्ट फिल्में बनाने के कई सफल प्रयोग किए। वास्तुविद् पिता के इस पुत्र ने सन् १९३८ में लघु फिल्मों के निर्माण से अपना कैरिअर शुरू किया। इटली की फासिस्ट सरकार द्वारा प्रायोजित कुछ फीचर फिल्मों का भी उन्होंने निर्देशन किया। द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों को दर्शाने वाली उनकी फिल्म 'ओपन सिटी' (१९४५) ने नव-यथार्थवादी सिनेमा के क्षेत्र में उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलवाई। इस फिल्म का लगभग पूरा फिल्मांकन वास्तविक लोकेशनों पर किया गया था। अन्ना मग्नानी के अभिनय ने इस फिल्म को कलात्मक ऊँचाई दी। हॉलीवुड की विख्यात तारिका इंग्रिड बर्गमैन से उनका प्रणय प्रसंग तथा दूसरे की पत्नी के रूप में रहने के बावजूद बर्गमैन के बेटे का बाप बनने का स्कैण्डल हॉलीवुड में काफी चर्चित हुआ था। इस स्कैण्डल के कारण बर्गमैन को हॉलीवुड में बहिष्कार झेलना पड़ा। प्रेमी युगल ने मिलकर कुछ फिल्मों का निर्माण किया। इनमें स्ट्रॉमबॉली (१९४९)

प्रमुख है। सिने क्षेत्रों के विशेषज्ञों द्वारा इस फिल्म को काफी सराहना मिली। आम दर्शकों ने इसे नकार दिया। बाद में बर्गमैन तथा रोजिलीनी ने विवाह कर लिया तथा वे जुड़वा बच्चों के पिता बने। इन जुड़वा संतानों में से एक आइजाबेला रोजिलीनी अभिनेत्री एवं मॉडल के रूप में विख्यात हुई। सन् १९५७ में यह विवाह टूट गया जब बर्गमैन ने एक इंडियन पटकथा लेखक से शारीरिक संपर्क कर गर्भ धारण कर लिया। सन् १९५९ में निर्मित 'जनरल डेला रोवर' ने इस निर्देशक को आम दर्शकों के बीच प्रशंसा दिलवाई।

फ्रांसिस त्रूफाँ

विश्व के सर्वाधिक प्रतिभाशाली फिल्मकारों की यदि सूची बनाई जाए, तो उसमें फ्रांस के प्रसिद्ध निर्देशक फ्रांसिस त्रूफाँ का नाम अवश्य ही शामिल होगा। सिनेमा की चौखट में साहसिक प्रयोगों और वैचारिक अंतरदृष्टि के लिए वे सदैव याद किए जाएँगे। सिने आंदोलनों के विकास और अभिकल्पन की दिशा में फ्रांस एक अग्रणी राष्ट्र रहा है। त्रूफाँ ऐसे ही महत्वपूर्ण सिने आंदोलन के प्रमुख आधार स्तंभ थे। 'कॅहियर दे सिनेमा' नाम से जिस वैचारिक सिने मंच की पहचान फ्रांस में बनी, उसको आकार देने में त्रूफाँ की अहम् भूमिका रही। एक सिने समीक्षक के रूप में चर्चित होने के पूर्व त्रूफाँ कई जटिल परिस्थितियों का सामना कर चुके थे। कुछ समय सेना में नौकरी करने के बाद उन्हें एक युद्ध बंदी के बतौर कारागृह में सजा झेलनी पड़ी। सिने मंच 'कॅहियर' के साथ जुड़ने के बाद त्रूफाँ ने फिल्म निर्माण को अपना कार्य क्षेत्र बनाने का फैसला किया। उनकी पहली सिने कृति 'उने विसिटे' (१९५५) एक लघु फिल्म थी, जिसके बाद १९५६ में उन्होंने अपनी निजी फिल्म कंपनी की स्थापना कर फीचर फिल्मों का निर्माण आरंभ किया। उनकी पहली ही फीचर फिल्म 'लेस क्वार्तेसेंट कॉप' को कान फिल्मोत्सव के प्रतिस्पर्धा खंड में पुरस्कार मिला। नई धारा के सिने आंदोलन की यह चर्चित कृति थी। १९५९ में त्रूफाँ ने प्रसिद्ध निर्देशक 'गोदार्द' के साथ मिलकर एक प्रयोगवादी लघु फिल्म 'टिस्टोरे देयु' बनाई। फिल्मकारों की सहधर्मिता का यह उत्कृष्ट उदाहरण थी। इसके अगले ही वर्ष त्रूफाँ ने गोदार्द की प्रथम सिने कृति 'ए बॉउट दे सोफेल' (१९६०) के निर्माण में सहयोग दिया।

समाज की रूढ़िगत, परंपरावादी मान्यताओं के त्रूफाँ कड़े विरोधी रहे हैं। 'शूट द पियानिस्ट' (१९६०)/लव एट् ट्वेंटी और 'जूल्स एट जिम' जैसी फिल्मों के जरिए त्रूफाँ ने दर्शकों को चौंकाने का काम किया। इनके सशक्त कथ्य और सिनेमाई बुनावट की दक्ष कारीगरी को नई धारा के सिनेमा की सौगात के बतौर देखा गया। १९६६ में त्रूफाँ ने रे बेडबरी के उपन्यास पर आधारित एक विज्ञान कथा फिल्म बनाई, 'फैरनहाइट-४५१।' इस महँगे बजट की फिल्म को व्यावसायिक सफलता तो अधिक नहीं मिली, किंतु फिल्मांकन के अद्भुत कौशल के लिए इसे सर्वत्र सराहा गया। द ब्राइड वोर ब्लैक/ स्टोलन किसेस व बेल्मांडो मिसिसिपी त्रूफाँ की वे फिल्में थीं, जिन्होंने इस प्रतिभा संपन्न फिल्मकार की अंतरराष्ट्रीय छवि बनाई। त्रूफाँ अपनी फिल्मों में नितांत वैयक्तिक टिप्पणियों के लिए चर्चा का केंद्र बिंदु रहे हैं। 'ला इन्फेंट सॉवेज' (१९७०)



फिल्म जूल्स एट जिम

उनकी विचारधारा को आक्रामक शैली में प्रस्तुत करने वाली पहली फिल्म थी। इसमें उन्होंने एक महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत भी की। एने एंड मॉरियल/ बेड एंड बोर्ड और डे फॉर नाइट फिल्मों के माध्यम से त्रूफाँ ने सामाजिक परिदृश्य पर अपना विश्लेषणात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किया। 'डे फॉर नाइट' (१९७३) फिल्म में त्रूफाँ ने एक फिल्म निर्देशक की कहानी को परदे पर प्रस्तुत किया। यह पात्र उन्होंने स्वयं अभिनीत किया था। त्रूफाँ सिनेमा संबंधी गंभीर लेखन के लिए भी जाने जाते हैं। ब्रिटिश फिल्मकार अल्फ्रेड हिचकॉक पर उनकी एक शोधपरक पुस्तक काफी चर्चित रही है। २१ अक्टूबर १९८४ को मात्र ५२ वर्ष की आयु में त्रूफाँ का निधन हो गया।

मार्सिलो मैस्ट्रोइनी

विश्व के सर्वाधिक प्रशंसा प्राप्त इस इटैलियन अभिनेता ने तीन दशकों से भी अधिक समय तक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वयं को लोकप्रिय बनाए रखा। समालोचकों का कहना है कि जितना वह ओठों से कहता है उससे कहीं ज्यादा अपनी भावपूर्ण आँखों से कह देता है। 'ल मिजरेबल' (१९४७) से उनकी पहचान बनने लगी। 'क्रॉनिकल ऑव पूअर लवर्स' (१९५४) में नायक की भूमिका पाने के बाद उसने अपने चयन को सही प्रमाणित कर दिया। इसके बाद तो वह इटली के शीर्षस्थ सितारों में शुमार हो गया। ला डोल्सा विटा (१९६०) में एक पत्रकार की जीवन्त भूमिका ने उसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई। 'बेल एंटोनियो' (१९६७) में एक नामर्द पति की भूमिका में उन्होंने समालोचकों की प्रशंसा प्राप्त की। 'डाइवोर्स इन इटालियन स्टॉइल' (१९६२) में वे एक सिसेलियन सामंत के रूप में आए। इस फिल्म में उत्कृष्ट अभिनय के लिए वे ऑस्कर हेतु नामांकित किए गए। 'द आर्गनाइजर' (१९६३) में वे एक ऐसे प्रोफेसर की भूमिका के लिए प्रशंसा के हकदार बने, जो कारखाने में कामगारों को एकजुट करने का प्रयास करता है। अभिनय की बारीकियों को समझने और आत्मसात करने की उनकी क्षमता विलक्षण थी। हर प्रकार की भूमिका को सहज, स्वाभाविक ढंग से कर लेते थे। 'ए स्पेशल डे' (१९७७) में समलैंगिक यौन संबंधों के शौकीन रेडियो उद्घोषक की सशक्त भूमिका के लिए वे ऑस्कर के लिए नामांकित किए गए। 'डार्क आइज' (१९८७) में उन्हें कान एवं ऑस्कर दोनों अवॉर्ड के लिए नामांकित किया गया।

इस महान अभिनेता के साथ कई रंगीन चटपटी गाथाएँ भी जुड़ी हैं। कैथरीन डैन्यू जैसी सुंदरियों के साथ उनके प्रणय प्रसंग काफी चर्चित हुए। कैथरीन से विवाह किए बिना ही वे उसकी संतान के पिता बने। एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा था- 'मैं बेशर्मी की सीमा तक भाग्यवान

रहा। सुंदर स्त्रियों को प्यार करता रहा। ३९ वर्षों तक अभिनय किया, मगर किसी ने मुझे गोली नहीं मारी।'

अन अफेयर
डी फेम्मीज : क्लॉड शेब्रोल की फिल्म



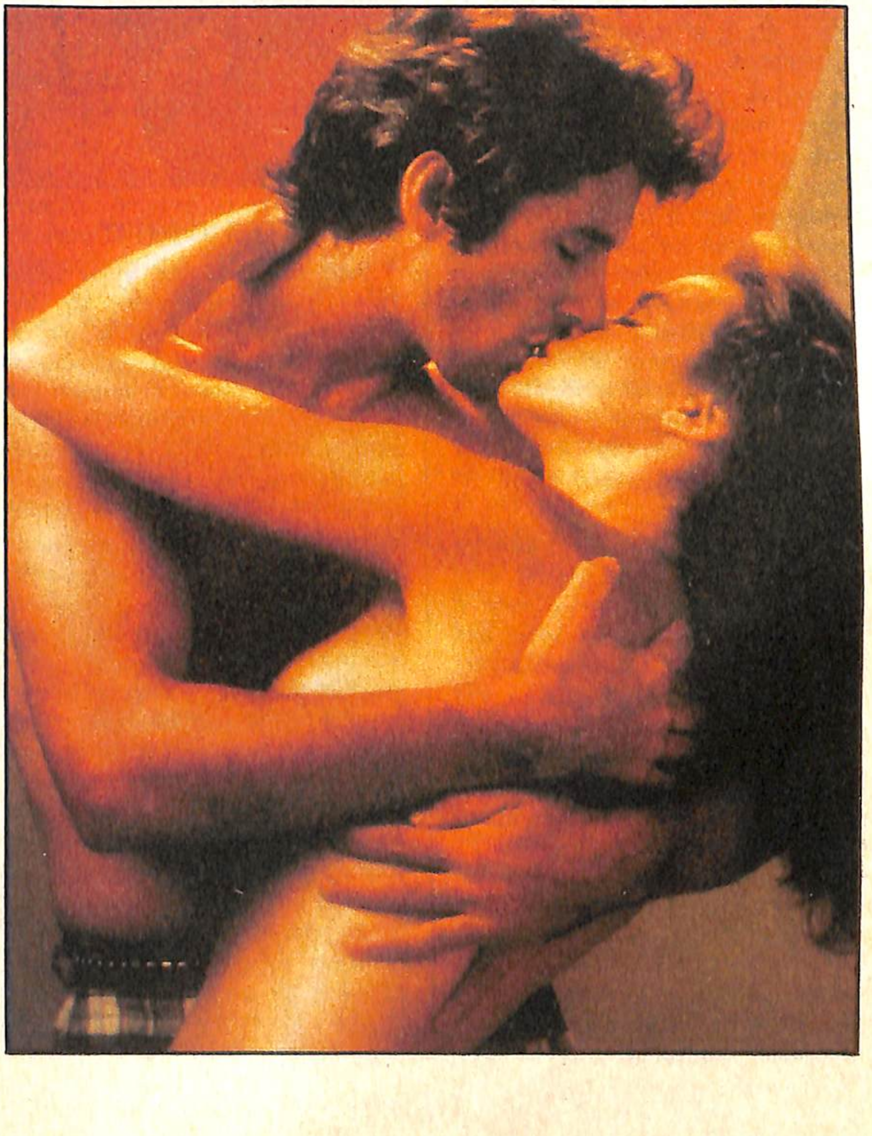
क्लॉड शेब्रोल

क्लॉड शेब्रोल फ्रांसीसी नई धारा के सिनेमा की बुनियाद रखने वाले निर्देशक माने जाते हैं। १९५९ में प्रदर्शित उनकी पहली फीचर फिल्म 'ल बूचर्स' से नई धारा के सिने आंदोलन की शुरूआत हुई। सामाजिक और नैतिक विषयों को अपनी फिल्मों के माध्यम से प्रखर स्वरूप में उठाने वाले शेब्रोल का जन्म २४ जून १९३० को पेरिस में हुआ था। एक लम्बे अरसे तक उन्होंने फ्रांसीसी सिनेमा को अपने चमकीले रचनाकर्म के प्रभावक्षेत्र में रखा। मूल रूप से शेब्रोल ने भैषज विज्ञान की शिक्षा ली थी। बाद में वे सिनेमा संबंधी लेखन से संलग्न हो गए। १९५७ में उन्होंने प्रसिद्ध फिल्मकार अल्फ्रेड हिचकॉक पर एक विवेचनात्मक पुस्तक प्रकाशित की। एक निर्देशक के बतौर शेब्रोल की आरंभिक फिल्में ल बूचर्स और लेस क्रजिन (१९५९) समीक्षकों द्वारा सराही गई थी। शेब्रोल ने समाज की विद्रूपताओं और कुंठाग्रस्त मानसिकता को अपनी फिल्मों की विषयवस्तु बनाया। कलात्मक धरातल पर कठिन होने के बावजूद उनकी दूसरी कृति 'कजिन' व्यावसायिक रूप से सफल रही। इस फिल्म की नायिका स्टीफन ऑड्रिन आगे चलकर शेब्रोल की जीवनसंगिनी बनी। ऑड्रिन ने करीब २० फिल्मों में काम किया। शेब्रोल निर्देशन के अलावा पटकथा लेखन में भी दक्ष रहे। १९६० में प्रदर्शित उनकी फिल्म 'बेस बोन्स फेमॅस' सशक्त पटकथा और कसावटभरे निर्देशन के लिए चर्चित हुई थी। चार कामकाजी युवतियों के जीवन पर आधारित इस फिल्म को लेकर काफी बावेला भी मचा। हिसा के अतिरंजित प्रस्तुतिकरण के लिए यह फिल्म आलोचना का शिकार हुई। किन्तु वे अपनी इस पैनी, स्पष्टवादी निर्देशकीय शैली के लिए जाने गए। 'ले फ्रेम इन्फिडेल' (१९६८) से शेब्रोल गंभीर कथानकों की ओर लौटे। 'इन्फिडेल' एक अधेड़ व्यक्ति की कहानी थी, जो अपनी पत्नी के प्रेमी की हत्या कर देता है। इस फिल्म के जरिए शेब्रोल ने समाज की परंपरावादी मानसिकता पर आक्षेप किया। दिस मेन मस्ट डाय (१९७०), जस्ट बिफोर नाइटफॉल (१९७१) और वेडिंग इन ब्लड (१९७३) जैसी फिल्मों में शेब्रोल ने अपनी विशिष्ट रोमांचक शैली में समाज और मनुष्य के जज्बाती संबंधों की दास्तान प्रस्तुत की। वे उन फिल्मकारों में गिने जाते हैं, जिनकी फिल्में व्यावसायिक एवं कलात्मक दोनों क्षेत्रों में समान रूप से कामयाब हुई। इसी आधार पर उन्हें 'फ्रांसीसी हिचकॉक' भी कहा गया। 'फिल्म' 'वॉयलेट' में अभिनय के लिए नायिका इसाबेला हॅपर्ट कान फिल्मोत्सव में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के बतौर पुरस्कृत की गई। द प्राइड वन/ इंस्पेक्टर लेवार्डिन/ द स्टोरी ऑफ वुमन और क्वॉयट डेज इन क्लिशी अस्सी के दशक की वे फिल्में थीं, जिन्होंने एक वेटरन निर्देशक के बतौर शेब्रोल की ख्याति को ऊँचाई पर पहुँचाया। १९९१ में उन्होंने उपन्यास 'मदाम बोवरी' का फिल्म रूपांतरण किया था। शेब्रोल अपनी कुछ फिल्मों में अभिनेता के बतौर उपस्थित भी हुए। यह विशेषता उन्हें अल्फ्रेड हिचकॉक के और भी करीब ले जाती है।

ज्याँ लुक गोदार्द

फ्रांस की समृद्ध सिने परंपरा के तहत जिन फिल्मकारों ने अपने रचनाकौशल से रजतपट को श्रृंगारित किया, ज्याँ लुक गोदार्द उनमें अग्रणी हैं। स्विट्जरलैंड में पले-बढ़े गोदार्द ने फ्रेंच सिनेमा में अपनी पहचान एक आधारस्तंभ के रूप में बनाई। उनकी आक्रामक, प्रभावशाली निर्देशकीय शैली ने विश्व के फिल्म समीक्षकों को चमत्कृत कर दिया था। मात्र २० वर्ष की आयु में उनके द्वारा निर्मित लघु फिल्मों को

वेलेरी कॉप्रिस्की : ब्रेथलेस (गोदार्द)



उनकी विशिष्ट फिल्मांकन शैली के लिए सर्वत्र सराहा गया। १९५९ में प्रदर्शित गोदार्द की पहली फीचर फिल्म 'ब्रेथलेस' अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का केन्द्र बनी। हॉलीवुड की फिल्मों के परंपरागत ढाँचे के विपरीत यह सिनेकृति प्रयोगधर्मिता का एक नायाब नमूना थी। खासतौर पर इसके कैमरा संचालन और संपादन तकनीक को बेहद सराहा गया। अपनी समस्त कृतियों में सृजन का वैशिष्ट्य उन्होंने कायम रखा है।

गोदार्द की फिल्में सांकेतिकता और प्रयोगवाद के कारण हमेशा विवादों का शिकार रहीं। लेस कैरेबिनेयर्स, कंटेम्प्ट और द लिटिल सोल्जर उनकी आरंभिक विवादास्पद कृतियाँ थीं। इनमें सोल्जर को फ्रांसीसी सरकार द्वारा आपत्तिजनक मानते हुए प्रतिबंधित किया गया। गोदार्द ने अपनी अभिनेत्री पत्नी 'एना कैरिना' को अपनी दो फिल्मों 'ए वुमन इज ए वुमन' (१९६१) और 'माय लाइफ टू लिव' (१९६२) में जिन भूमिकाओं में परदे पर पेश किया, उसे लेकर भी काफी विवाद खड़े हुए थे। 'माय लाइफ टू लिव' देह व्यापार से संलग्न एक युवती की कहानी थी। 'ए मेरिड वुमन' और 'बैंड ऑफ आउटसाइडर्स' का निर्माण गोदार्द ने व्यावसायिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर किया। 'एल्फाविले' (१९६५) शीर्षक से उनके द्वारा उस समय एक विज्ञान फंतासी फिल्म की रचना की गई, जबकि विश्व सिनेमा इस विधा से लगभग अपरिचित था। प्रयोगधर्मिता के प्रति उनकी दिलचस्पी इस फिल्म की प्रेरणा साबित हुई। १९६५ में निर्मित 'पिएरोट ले फोऊ' से उनकी राजनीतिक विचारधारा दर्शकों के समक्ष आई। मेड इन यू.एस.ए. और मेस्क्युलाइन फेमिनाइन इस श्रृंखला की अगली कड़ियाँ थीं। इनमें गोदार्द का वामपंथी चिन्तन कथानक का धरातल बना। 'वीक एंड' (१९६८) के जरिए उन्होंने उपभोक्तावादी संस्कृति पर प्रहार किए।

गोदार्द की प्रतिबद्धता महज सिनेकर्म तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनका निजी जीवन भी सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से सक्रियतापूर्ण था। १९६८ की पेरिस छात्र क्रांति को उन्होंने अपना नैतिक समर्थन प्रदान किया। इसी वर्ष उनकी विश्व चर्चित कृति 'ला गेई सेवॉयर' प्रदर्शित हुई। यह पूरी फिल्म महज दो व्यक्तियों के बीच राजनीतिक वार्तालाप से संबंधित थी। चर्चा के साथ ही फिल्म भी खत्म हो जाती है। 'प्रावदा' (१९६९) के जरिए गोदार्द ने चेक क्रांति पर अपनी राजनीतिक टिप्पणी पेश की। १९७२ में गोदार्द का चौंकाने वाला चरित्र एक बार फिर फिल्म 'ए लेटर टू जेन' के रूप में सामने आया।इस पूरी फिल्म में अभिनेत्री जेन फोन्डा के एक छायाचित्र को लेकर बहस की जाती है। अस्सी के दशक में वे कुछ हद तक अपनी प्रयोगवादी सिनेकृतियों से हटकर व्यावसायिक फिल्मों की ओर लौटे। 'एवरीमेन फॉर हिमसेल्फ' (१९८०) उनके इस नए मिजाज की प्रस्तुति थी। हाल के वर्षों में गोदार्द का सर्वाधिक प्रशंसित कार्य नोवेल वॉग और किंगलियर (१९८७) जैसी फिल्मों में देखने को मिला। किंगलियर में पीटर सेलर्स/वुडी एलन/ ब्रेट पेकर जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों के साथ उन्होंने भी प्रमुख भूमिका निभाई थी।

वेरा चितिलोवा की फिल्म 'द जेस्टर एण्ड द क्वीन'



वेरा चितिलोवा

विश्व सिनेमा में जिन चुनिंदा महिला फिल्मकारों ने पहचान अर्जित की, वेरा चितिलोवा का नाम उनमें से एक है। चेकोस्लोवाकिया में जन्मी चितिलोवा ने दर्शनशास्त्र और वास्तुकला की पढ़ाई पूरी करने के बाद प्राग के विश्व प्रसिद्ध सिने स्कूल में अध्ययन किया। 'स्ट्रॉप' (१९६२) उनकी पहली फिल्म थी, जिसका निर्माण नई धारा के सिने आंदोलन की पृष्ठभूमि में हुआ। फिल्म की नायिका एक फैशन मॉडल है। तड़क- भड़क की तिलस्मी दुनिया से बाहर निकल कर जब असली जिंदगी से उसका साबका पड़ता है, तो वह ठगी-सी रह जाती है। वेरा की अगली सिनेकृति कपड़े के कारखाने में काम करने वाले मजदूरों पर आधारित थी। फिल्म में कलाकारों के बतौर वास्तविक श्रमिकों से अभिनय करवाया गया। मिल मालिकों के विरोध के कारण यह फिल्म काफी दिक्कतों के बाद प्रदर्शित हो पाई।

'एनॉदर वे ऑव लाइफ ऑर अबाउट समथिंग एल्स' (१९६३) चितिलोवा की सर्वाधिक चर्चित फिल्म मानी जाती है। निर्देशन के अलावा इसकी पटकथा भी उन्होंने ही लिखी थी। इस फिल्म में दर्शनशास्त्र के गंभीर प्रश्नों को सैल्युलाइड की भाषा में टटोला गया है। चितिलोवा की अगली फिल्म 'सेडमिरास्की' (१९६६) ने उन्हें विवादास्पद फिल्मकारों की श्रेणी में खड़ा किया। बेबाक राजनीतिक टिप्पणियों के लिए चितिलोवा अपने देश में सरकार की आँख की किरकिरी बन गई थी। उन्हें अपनी अगली फिल्म 'फ्रूट ऑव द ट्रीज ऑव पेराडाइज' (१९७०) के लिए बेल्जियम से वित्तीय सहायता जुटानी पड़ी। इस फिल्म को कान फिल्मोत्सव में काफी सराहा गया था। राजनीतिक उत्पीड़न के बावजूद चितिलोवा ने चेकोस्लोवाकिया में रह कर ही सिने- सृजन जारी रखा।

अलेक्जेण्डर कोर्डा

हंगरी में जन्मे इस अद्‌भुत निर्माता- निर्देशक ने फिल्मी दुनिया में १९१२ में पत्रकार के रूप में प्रवेश किया था। सन् १९१४ से वे निर्माण के क्षेत्र में उतरे। १९१९ तक २० फीचर फिल्मों के निर्माता- निर्देशक के रूप में चर्चित हो गए। राजनीतिक अस्थिरता के कारण १९१९ में ही वे अपनी अभिनेत्री पत्नी मारिया कोर्डा के साथ विएना, बर्लिन होते हुए हॉलीवुड पहुँचे। 'द प्राइवेट लाइफ ऑव हेलेन ऑव ट्राय' (१९२७) हॉलीवुड में निर्मित उनकी पहली फिल्म थी। हॉलीवुड में उन्होंने कुछ और फिल्में भी बनाईं। यहाँ उनका मन नहीं रमा। वे पेरिस आ गए। फिल्म मॉरियस (१९३१) का निर्माण किया। बाद में वे लंदन आकर बसे। यहाँ उनकी पहली फिल्म थी 'वेडिंग रिहर्सल (१९३२)। कुछ अन्य फिल्मों के निर्माण के बाद आई द प्राइवेट लाइफ ऑव हेनरी एट (१९३३) ने सारा परिदृश्य बदल दिया। इस फिल्म ने अमेरिकन एकेडमी अवार्ड पाया तथा हेनरी अष्टम के अभिनय के लिए चार्ल्स लाफटन को ऑस्कर अवार्ड मिला। इस फिल्म की सफलता ने कोर्डा को अपना स्टुडियो प्रारंभ करने की प्रेरणा दी। इसके बाद कोर्डा द्वारा निर्मित फिल्मों में कैथरीन द ग्रेट

(१९३४)/ साण्डर्स ऑव द रिवर (१९३५)/ द घोस्ट गोज वेस्ट (१९३३)/ द ड्रम (१९३८) प्रमुख हैं।

सन् १९३९ में आर्थिक कारणों से स्टुडियो उनके हाथों से जाता रहा। थीफ ऑव बगदाद (१९४०)/ लीडिया (१९४१) एवं जंगल बुक (१९४२) के निर्माण के लिए उन्हें हॉलीवुड जाना पड़ा। सन् १९४२ में वे ब्रिटेन लौटे तथा नाइटहुड की उपाधि से सम्मानित किए गए। उनके द्वारा निर्देशित आखिरी फिल्म 'एन आइडिअल हस्बैंड (१९४७) थी। सन् १९५६ में उनका निधन हुआ।

ज्याँ रैनां

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महानतम फिल्मकार के रूप में प्रतिष्ठित ज्याँ रैनां की प्रतिभा निर्देशक/ पटकथा लेखक/ अभिनेता तीनों ही रूप में उत्कृष्ट प्रमाणित हुई। फ्रांस के विख्यात चित्रकार अगस्टे रैनां के इस महान प्रतिभाशाली पुत्र का बचपन देहात में बीता। सुरम्य प्रकृति में पलने के कारण प्रकृति के प्रति उनका आकर्षण बाद में फिल्मों में प्रतिबिंबित होता रहा। यौवन की दहलीज में कदम रखते ही वे फ्रांसीसी सेना की घुड़सवार पलटन में भर्ती हो गए। बाद में विमान चालक बने। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान कई बार घायल भी हुए। पिता की मृत्यु के बाद १९१९ में उन्होंने एक मॉडल एंड्री हेडाशीलिंग से विवाह कर लिया। दोनों ने चार वर्षों तक मूर्ति शिल्प के क्षेत्र में कार्य किया। सिनेमा के प्रति पति-पत्नी दोनों का ही लगाव था। अमेरिकन फिल्मों एवं चैप्लीन का अभिनय देखकर उन्होंने फिल्म निर्माण में आने का फैसला किया।

रैनां की फिल्म 'नाना' भव्य पैमाने पर बनी तथा काफी खर्चीली सिद्ध हुई। व्यावसायिक स्तर पर फिल्म असफल रही। रैनां को अन्य निर्माता के लिए 'मारक्विहा' (१९२७) का निर्माण करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इसके बाद उन्होंने 'द लिटिल मैच गर्ल' तथा 'टायर-औ-फ्लांस' का निर्माण १९२८ में किया। रैनां की पहली बोलती (सवाक) फिल्म 'ऑन पर्ज बेबे' (१९३१) थी। इसी वर्ष उनकी महान फिल्मों में से एक 'लॉ चेइन्ने' प्रदर्शित हुई। इसके बाद उनकी यादगार फिल्मों की श्रृंखला में बनी 'बोदू सेव्हड फ्राम द ड्राउनिंग' (१९३२)। इस फिल्म के नायक माइकेल साइमन ने अपनी चमत्कारिक अभिनय शैली का परिचय दिया। कहानी एक आवारागर्दी करने वाले युवक की है जिसे एक व्यक्ति आत्महत्या करने से रोकता है। अहसान मानने की बजाए आवारागर्द इस बचाने वाले पर मुसीबतों का ज्वालामुखी बनकर टूट पड़ता है।

रैनां को नए-नए प्रयोग करने का नशा था। इस विशिष्टता का उल्लेख करते हुए विख्यात समालोचक डेविड थाम्सन ने लिखा है 'रैनां की महानता उनकी उस लालसा में निहित है जो हर बार उन्हें जोखिम उठा कर नए किस्म की प्रयोगात्मक फिल्मों का निर्माण करने के लिए प्रेरित करती थी।' सन् १९३० से १९४० के दौरान उन्होंने बिना कृत्रिम रोशनी के सिर्फ सूर्य के प्रकाश वाली लोकेशन में कैमरे के ऐसे सफल चमत्कारिक प्रयोग किए जो फिल्म निर्माण के इतिहास में मील का पत्थर माने जाते हैं। मैडम बॉवेरी (१९३४) में उन्होंने वास्तविक घटनास्थलों तथा गैर व्यावसायिक कलाकारों का उपयोग किया। 'टोनी' (१९३३) में राजनीति की ओर मुड़े तथा श्रमिक वर्ग का सूक्ष्म अध्ययन किया। 'ग्रांड इल्युजन' (१९३७) की कहानी तीन फ्रांसीसी युद्ध बंदियों तथा उस कमांडर की भावनाओं पर आधारित है, जो युद्धबंदियों के कैम्प का प्रभारी है। इस फिल्म को महानतम युद्ध विरोधी फिल्म माना गया है। सन् १९३९ में रैनां ने 'रूल्स ऑव द गेम' का निर्माण किया। इस फिल्म को सिनेमा इतिहास की सर्वोत्कृष्ट कृति कहा जाता है।

इसके बाद रैनां अमेरिका चले गए। ट्वेंटीएथ सेंचुरी फॉक्स के लिए फिल्में बनाने लगे। 'दिस लैंड इज माइन' (१९४३) डायरी ऑफ ए चेंबर मेड (१९४६), द वुमन आन द बीच (१९४७) उनकी प्रमुख फिल्में थीं। 'द सदर्नर' (१९४५) में उत्कृष्ट निर्देशन हेतु उन्हें ऑस्कर अवार्ड के लिए नामांकित किया गया। एक उपन्यास पर रंगीन फिल्म बनाने के लिए १९५०-५१ में रैनां भारत आए। 'द रिवर' नामक इस फिल्म की कहानी ऐसे ब्रिटिश परिवार पर केंद्रित थी, जो भारत में रहा था। इस फिल्म में रंगों का बहुत खूबी के साथ इस्तेमाल किया गया। द रिवर की शूटिंग के समय भारतीय फिल्मकार सत्यजीत राय नजदीक से सब देखा करते थे।

फिल्मकार ज्याँ रैनां



रैने वर्नर फासबिंडर

जर्मनी के अर्वाचीन सिने परिदृश्य में निर्देशक/ अभिनेता फासबिंडर का नाम सर्वाधिक विवादास्पद और प्रतिभासंपन्न शख्सियतों में लिया जाता है। सत्तर के दशक में जर्मन सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फासबिंडर की कृतियों के लिए जाना गया। ३१ जनवरी १९४६ को जन्मे फासबिंडर ने अपनी फिल्मों में प्रमुख रूप से सामाजिक विषमता, मिथ्याचार और राजनीतिक दोगलेपन पर आक्षेप किए। इसके अलावा भावनात्मक मानव संबंध भी उनकी फिल्मों के धरातल रहे हैं। युद्धोत्तर जर्मन समाज की विद्रूपताओं को फासबिंडर ने जिस तीक्ष्णता के साथ उजागर किया, उसके लिए कई विवादों का सामना उन्हें करना पड़ा। फियर ईट्स द सोल/ डेस्पेयर/ लिली मर्लीन/ मैरिज ऑव मारिया ब्राऊन/ एफी ब्रीस्ट और टियर्स ऑव पेट्रा वॉन कान्ट फासबिंडर की प्रमुख चर्चित फिल्में थीं। सिनेमा के क्षेत्र में पहचान बनाने के पूर्व फासबिंडर रंगकर्म की दुनिया में भी सक्रिय रहे। अधिक मदिरापान और कोकीन के सेवन की वजह से हुई अपनी मृत्यु के पूर्व फासबिंडर ने एक द्विभाषी (अँगरेजी/ जर्मन) फिल्म का निर्माण किया था। 'क्वारेल' नाम से यह फिल्म उनकी मृत्यु के कुछ वर्ष बाद प्रदर्शित हुई।

रॉबर्ट ब्रेसाँ

सिनेमा को विचारधारा संबंधी आंदोलनों से जोड़ने और नई दिशा सौंपने में फ्रांस अन्य देशों की अपेक्षा काफी आगे रहा है। नई धारा के सिनेमंच को आकार देने में फ्रांसीसी निर्देशक रॉबर्ट ब्रेसाँ की महत्वपूर्ण भूमिका थी। प्रयोगवादी सिनेमा के वे अग्रदूतों में शुमार होते हैं। ब्रेसाँ ने दर्शन शास्त्र में उपाधि लेने के बाद एक चित्रकार के रूप में कैरियर की शुरूआत की थी। १९३४ में उन्होंने अपनी पहली फिल्म 'लेस अफेयर्स पब्लिक' का निर्माण किया। इस फिल्म की कोई प्रतिलिपि उपलब्ध नहीं है। फिल्म के नायक गिलेस मार्गरेटिस के अनुसार यह एक बौद्धिक व्यंग्यात्मक कृति थी। फ्रांसीसी युद्ध के दौरान ब्रेसाँ ने १८ माह युद्धबंदी के रूप में गुजारे। १९४३ में उनकी पहली फीचर फिल्म प्रदर्शित हुई, जिसका नाम था- 'लेस एंजेस ट्यू पेश।' उनकी अगली फिल्म 'बेस बोलॉन (१९४५) को समीक्षकों ने काफी सराहा। व्यावसायिक रूप से उसे सफलता नहीं मिल पाई।

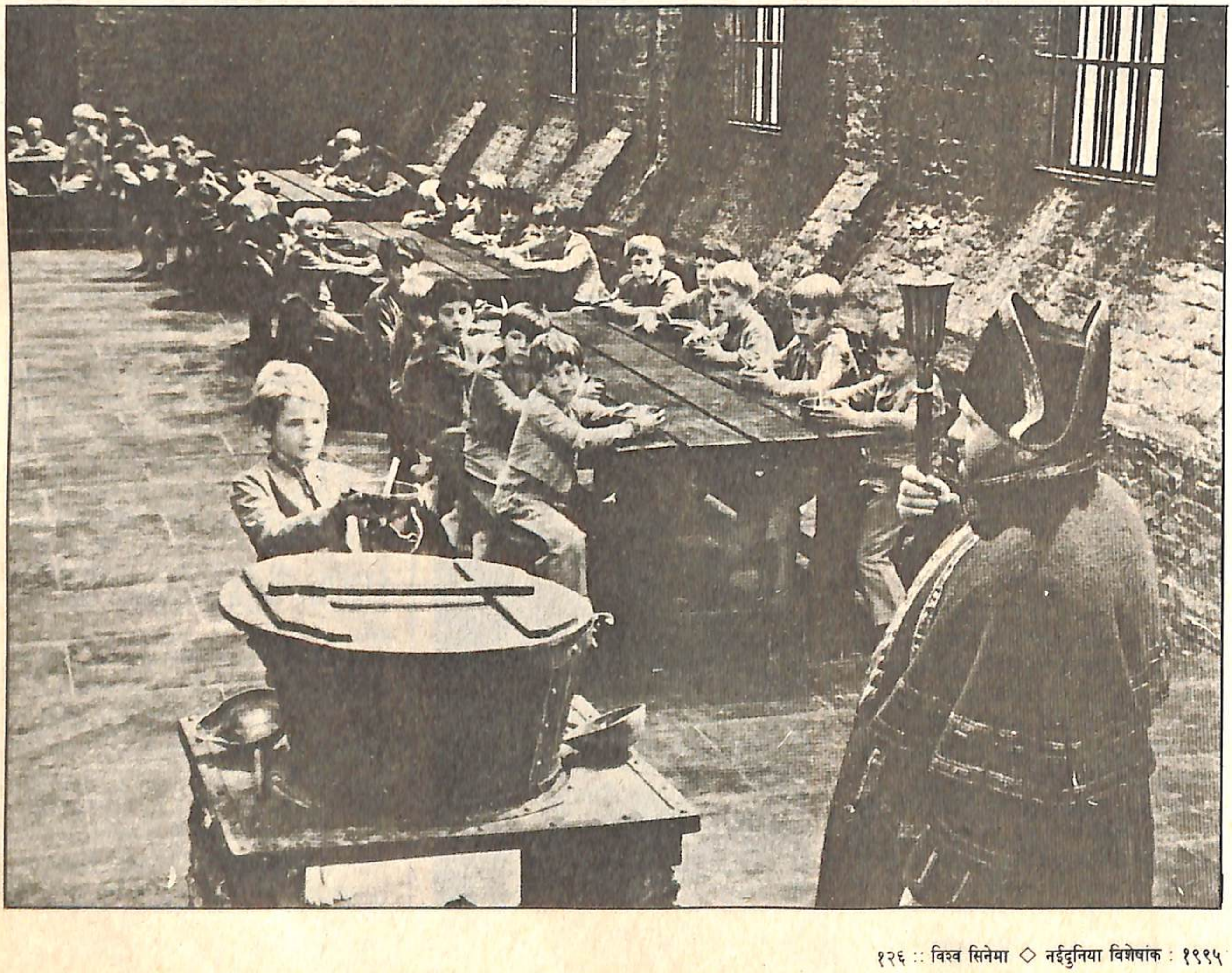
कुछ अरसे तक सिनेकर्म से अलग रहने के बाद १९५६ में अपनी फिल्म 'युन कन्दामे सेस्ट एशेप' के जरिए ब्रेसाँ ने पहली बार मनुष्य के मनोजगत की छवियों को परदे पर चित्रित किया। इसकी आंशिक सफलता ने ब्रेसाँ को पुनः फिल्म निर्माण की दिशा में सक्रिय बनाया। 'पिक पॉकेट' उनकी अगली फिल्म थी, जिसका कथानक काफी हद तक दास्तोवस्की के उपन्यास 'क्राइम एंड पनिशमेंट' से प्रभावित था। 'ओ

हेजार्ड बाल्थाजर' (१९६६) में ब्रेसाँ कथानक को काव्यात्मक स्वरूप में परदे पर प्रस्तुत करते नजर आए। 'बाल्थाजर' एक गधे की कहानी है, जिसे मनुष्यों की एहसानफरामोश दुनिया में बुरी तरह उत्पीड़ित किया जाता है। इस फिल्म का निर्माण फ्रांस और स्वीडन के सहयोग से किया गया था। १९६९ में ब्रेसाँ ने अपनी पहली रंगीन फिल्म बनाई, ए जेंटल क्रीचर। उनकी श्वेत- श्याम फिल्में अद्भुत शेड्स के इस्तेमाल की वजह से बेहद सराही गई थीं। दास्तोवस्की की लघुकथाओं पर उन्होंने 'फोर नाइट्स ऑव ए ड्रीमर' (एक स्वप्नदर्शी की चार निशाएँ) नाम से एक चर्चित फिल्म का निर्माण किया। साहित्य को सैल्युलाइड पर रूपांतरण की दृष्टि से यह एक मानक कृति मानी जाती है। ब्रेसाँ ने अपनी धार्मिक मान्यताओं को फिल्मों के जरिए विचारोत्तेजक तरीके से प्रस्तुत किया है। समाज में नैतिक मूल्यों के प्रतिष्ठापन हेतु सिनेमा के समुचित इस्तेमाल हेतु वे सदैव प्रयत्नशील रहे। समाजशास्त्रियों के बीच उनकी फिल्में चर्चा का विषय रही हैं। अपनी फिल्मों में ब्रेसाँ ने साधारण और कई बार गैर कलात्मक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों से कमाल का अभिनय करवाया। साठ और सत्तर के दशक में ब्रेसाँ अकेले विश्व स्तर पर फ्रांसीसी सिनेमा की नुमाइंदगी करते रहे। १९८३ में उनकी फिल्म 'ला आरजेंट' कान फिल्मोत्सव में पुरस्कृत की गई थी। अपनी अति आदर्शवादी विचारधारा के कारण ब्रेसाँ कुछ फिल्म समीक्षकों द्वारा स्वप्नदर्शी फिल्मकार के संबोधन से पुकारे गए।

सर कैरोल रीड

इस ब्रिटिश अभिनेता/ निर्देशक/ निर्माता ने एडगर वैलेस के साथ उनकी कृतियों की रंगमंच प्रस्तुतियों में सहायक के रूप में काम करते हुए अपना कैरियर शुरू किया। फिल्मों में उनका प्रवेश १९३२ में संवाद निर्देशक के रूप में हुआ। स्वतंत्र रूप से निर्देशक के रूप में काम करने का अवसर उन्हें 'मिड शिपमेन इजी' (१९३४) में मिला। इसके बाद उन्हें लगातार फिल्में मिलती गईं-बैंक हॉली डे (१९३८) 'द स्टार्स लुक डाउन' (१९३९)। वे प्रतिष्ठित एवं सफल निर्देशक माने जाने लगे। हिचकॉक के थ्रिलर 'नाइट ट्रेन टू म्युनिख' (१९४०) तथा एच.जी. वेल्स की कहानी 'किप्स' (१९४१) ने उन्हें शीर्ष के निर्देशकों में पहुँचाया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना ने उन्हें युद्ध फिल्में बनाने के लिए नियुक्त किया। यहाँ उन्होंने फौजी प्रशिक्षण पर आधारित कई फिल्मों का निर्माण किया। फ्रंट पर लड़ रहे फौजियों पर उनके द्वारा निर्मित वृत्तचित्र 'द टू ग्लोरी' (१९४५) को व्यापक सराहना मिली तथा ऑस्कर अवॉर्ड भी। इसके बाद एक अनुबंध के अंतर्गत उन्होंने निर्माता अलेक्जेंडर कोर्डा के लिए पाँच फिल्में बनाईं। पाँचों ही उनकी उत्कृष्ट कृतियों में गिनी जाती हैं। इनमें से दो के लिए वे सर्वश्रेष्ठ निर्देशक के रूप में ऑस्कर अवॉर्ड हेतु नामांकित किए गए। ये दो फ़िल्में थीं 'द फॉलन आयडियल' (१९४८) तथा 'थर्ड मैन' (१९४९)। दोनों फिल्में ग्राहम ग्रीन की कहानियों पर आधारित थीं। अन्य तीन फिल्में थीं, द आइलैण्ड (१९५१), द मेन बिटवीन (१९५३) तथा ए किड फॉर टू फार्दिंग्स (१९५५)।

रीड ने सर्कस कलाकारों के जीवन पर आधारित ट्रेपीज (१९५६) बनाई। इसके बाद, म्युटिनी एंड बाउण्टी (१९६२), द एगोनी एंड द एक्सटेसी (१९६५) और ऑलिवर (१९६८) के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का एकेडमी अवॉर्ड मिला। यह फिल्म चार्ल्स डिकेन्स के उपन्यास ऑलिवर ट्विस्ट का संगीतमय संस्करण थी। फिल्म उद्योग के लिए अपनी सेवाओं के लिए ब्रिटिश सरकार ने १९५२ में नाइट हुड से सम्मानित किया।



ऑस्कर से सम्मानित फिल्म : ऑलिवर

रिवर ऑव नो रिटर्न : सिनेमा का इतिहास-विकास





रिचर्ड ग्रीन
रॉबिनहुड



जॉन पाइने-ग्रेबल :
स्प्रिंगटाइम इन द रॉकीज (१९४२)

विश्व सिनेमा के इतिहास को जानना दरअसल मानव-सभ्यता के इतिहास से साक्षात्कार करने जैसा है। यदि सिनेमा का आविष्कार नहीं होता, तो दृष्टिहीन धृतराष्ट्र की तरह मनुष्य अपने इतिहास को टटोल रहा होता। सिनेमा का मनुष्य सभ्यता पर यह बहुत बड़ा कर्ज है कि उसने पिछले सौ सालों के महापुरुषों/ घटनाओं/ सभ्यताओं/ संस्कृतियों/ जीवन मूल्यों/ क्रांतियों और विरासत के रूप में संजोकर रखे जाने वाले हर 'दृश्य' को जीवंत बनाकर रखा है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अतीत को जानकर वर्तमान को सँवारें और अपने सुनहरे भविष्य का निर्माण करें। इस खंड के मुख्य प्रस्तुतकर्ता हैं- □ चरणसिंह अमी। सहयोगी हैं □ राहुल ब्रजमोहन और □ श्रीराम ताम्रकर

फ्रांस का सिनेमा नई लहर का प्रवर्तक

□ मनमोहन चड्ढा

विश्व सिनेमा के सौ वर्षों (१८९५-१९९५) के इतिहास के पहले पचास वर्षों में केवल दो व्यक्ति ऐसे हुए, जिन्हें सिनेमा का सिद्धांतकार माना जाता है। पहले थे सर्गेई मिखायलोविच आइसंस्टाइन और दूसरे आंद्रे वाजदा। जहाँ आइसंस्टाइन के सिद्धांत सिनेमा रचने की व्यावहारिक पद्धति पर आधारित थे, वहीं आंद्रे वाजदा के सिद्धांत सिनेमा को देखने, समझने की ऐतिहासिक समझ पर आधारित थे। आंद्रे वाजदा मानते थे कि सिनेमा हमारे यथार्थ का गहन रूप है। हम जिस कमरे में रहते हैं, उसमें से विश्व को देखने के लिए जो खिड़की खुलती है, वहाँ से जिस ऊँचाई, गहनता और विस्तार से हम बाहरी दुनिया के दर्शन कर पाते हैं, उसका प्रामाणिक चित्रण सिनेमा है। आंद्रे वाजदा के प्रिय निर्देशक थे फ्रांस के ज्याँ रेनुआर और ठेठ अमेरिकी आर्सन वैलेस। जिस प्रकार पुडोवकिन और आइसंस्टाइन ने सन् १९२० में डेविड वार्क ग्रिफिथ की फिल्म 'इंटालरेंस' की एक प्रति चोरी से रूस में मँगाकर उसकी चीर-फाड़ की व सिनेमा की सर्जरी कर नस-नस का अध्ययन किया और अपने सिद्धांत रचे थे, उसी प्रकार आंद्रे वाजदा ने भी अमेरिकी सिनेमा का गहरा अध्ययन किया था। सन् १९३० से १९४५ के वर्ष अमेरिकी सिनेमा के सर्वश्रेष्ठ वर्ष रहे हैं। उस समय अमेरिका भी विचारधाराओं के स्तर पर उथल-पुथल के दौर से गुजर रहा था। अमेरिका के दो बड़े स्टुडियो वार्नर ब्रदर्स तथा एम.जी.एम. दो वैचारिक धरातल पर रहकर फिल्मों का सृजन कर रहे थे। जहाँ एम.जी.एम. भव्यता, बड़े-बड़े सेटों और सैकड़ों नर्तकियों को लेकर म्युजिकल्स बनाता था, वहीं वार्नर ब्रदर्स की फिल्मों में मध्यवर्ग की व्यथा, पूँजीपतियों द्वारा मजदूरों के शोषण की कथाएँ कही गई हैं।

आंद्रे वाजदा ने इस सिनेमा का गहन अध्ययन किया। उनका विचार था कि १९३० से १९४० तक का अमेरिकी सिनेमा इतनी सशक्त फिल्में निर्मित कर चुका है कि उसकी सीमा से बाहर निकल पाना कठिन है। उन्होंने इस काल की अमेरिकी फिल्मों को सात श्रेणियों से विभाजित किया- (१) अमेरिकी हास्य फिल्म (मिस्टर स्मिथ गोज टू वाशिंगटन), (२) प्रहसन (मार्क्स बंधुओं की फिल्में), (३) संगीत प्रधान तथा नृत्य आधारित फिल्में म्युजिकल्स (फ्रेड एस्टेयर्स जिंजर/रोजर्स ओरजिगफील्ड), (४) अपराध फिल्में तथा गैंगस्टर फिल्में (स्कारफेस/ आई एम ए फ्युजिटिव फ्रॉम द चेन गैंग/ द इन्फार्मर), (५) सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक नाट्य प्रकार (बैक स्ट्रीट, जेजबाल) (६) हॉरर तथा रोमांचकारी काल्पनिक- फैंटेसी फिल्में (डॉक्टर जैकल एंड मिस्टर हाइड, द इनविजिबल मैन, फ्रेंकेंस्टाइन), (७) वेस्टर्न (स्टेज कोच १९३९)।

इसलिए आंद्रे वाजदा ने इस दायरे से बाहर निकलकर नए प्रयोग कर सकने वाले फिल्मकारों की खोज की। युवा अमेरिकी फिल्म निर्देशक आॅर्सन वैलेस ने २६ वर्ष की आयु में ही 'सिटीजन केन' जैसी फिल्म का निर्देशन किया था। वाजदा ने इस फिल्म को वास्तविक सिनेमा का दर्जा दिया था। रॉबर्टो रोसेलीनी की फिल्मों को वे शुद्ध सिनेमा का श्रेष्ठ उदाहरण मानते थे।

फ्रांस के एंजर्स नामक स्थान में जन्मे सिनेमा के इस अनोखे सिद्धांतकार ने द्वितीय महायुद्ध के दौरान ही तेईस वर्ष की आयु में (जन्म १८ अप्रैल १९१८) १९४१ में फिल्म सोसायटी संगठित की। सन् १९४७ में वाजदा ने पंद्रह वर्ष की आयु में बालक फ्रांसुआ त्रूफो के लालन-पालन की जिम्मेदारी संभाल ली थी। तीस वर्ष की आयु के वाजदा को फ्रांस का श्रेष्ठ फिल्म आलोचक और युवा आलोचकों में फादर फिगर की संज्ञा से जाना जाता था। सन् १९५१ में 'काईयेर ड्यू सिनेमा' (सिनेमा की अभ्यास पोथी) का प्रकाशन आरंभ हुआ। इस पत्रिका ने विश्व सिनेमा को नई दिशा प्रदान की। इस पत्रिका के जरिए फ्रांसुआ त्रूफो, क्लॉद शाबरोल, एरिक रोहमर, जॉक रिवेत और ज्याँ लुक गोदार्द साथ-साथ आए। सन् १९५४ में इस पत्रिका में फ्रांसुआ त्रूफो का लेख 'ए सर्टेन टेंडेंसी इन फ्रैंच सिनेमा' छपा। त्रूफो ने इस लेख में तत्कालीन फ्रांसीसी सिनेमा की आलोचना की थी। खासतौर पर साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों की। बाईस वर्षीय इस युवक के लेख ने फ्रांसीसी फिल्मकारों की जैसे पोल खोल दी। वे बहुत नाराज हो गए। उन्होंने माँग की कि इस युवक को किसी भी फिल्म समारोह में प्रवेश नहीं करने दिया जाए।

इन पाँचों युवकों की विशेषता यह रही कि वे इस पत्रिका में लगातार लेख लिखते समय, फिल्मों का विश्लेषण करते समय यह मानते रहे कि उन्हें एक दिन फिल्में बनानी हैं। उनकी फिल्में निश्चित रूप से उनसे बेहतर होनी चाहिए, जिनकी वे आलोचना कर रहे हैं। 'काईयेर ड्यू सिनेमा' के इस ग्रुप ने अमेरिकी सिनेमा के गहन अध्ययन के बाद पाया कि कुछ फिल्मकार ऐसे हैं, जो हॉलीवुड स्टुडियो की फैक्टरी व्यवस्था में रहकर भी ऐसे निर्देशक तैयार कर सके, जिन्होंने अपनी विशिष्ट व्यक्तिगत पहचान बनाए रखी। इनमें जॉन फोर्ड/ हावर्ड हॉक्स/ अल्फ्रेड हिचकॉक प्रमुख लगे। कहा जा सकता है कि आज अल्फ्रेड हिचकॉक के प्रति जिस आदर और सम्मान का भाव विश्व भर के फिल्म प्रेमियों में है, उसकी रचना क्लॉद शाबरोल, एरिक रोहमर और फ्रांसुआ त्रूफो ने की। शाबरोल और रोहमर ने हिचकॉक की फिल्मों का अध्ययन कर एक पुस्तक लिखी। त्रूफो ने हिचकॉक का लंबा साक्षात्कार 'त्रूफो ऑन हिचकॉक' प्रस्तुत किया।

यह एक नई और अछूती अवधारणा थी कि फिल्म को कैमरे द्वारा बिल्कुल इस प्रकार लिखा जाए जैसे एक लेखक कलम का इस्तेमाल करता है। जहाँ फिल्म निर्माण को अलग-अलग खानों में बाँटकर रचनाकर्म की तोड़-फोड़ न की जाए। यानी निर्देशक ही रचयिता है उसी की कल्पना फिल्म में मूर्तरूप में ढलती है।

इन रचनाकारों की दूसरी विशेषता यह थी, जो उन्हें अपनी

हम जिस कमरे में रहते हैं, उसमें से विश्व को देखने के लिए जो खिड़की खुलती है, वहाँ से जिस ऊँचाई, गहनता और विस्तार से हम बाहरी दुनिया के दर्शन कर पाते हैं, उसका प्रामाणिक चित्रण है सिनेमा। सिनेमा के सौ साल के इतिहास में केवल दो फिल्मकार ऐसे हुए हैं, जिन्हें सिनेमा का सिद्धांतकार कहा जा सकता है- सर्गेई मिखायलोविच आइसंस्टाइन और आंद्रे वाजदा।

पूर्ववर्ती पीढ़ी से बिल्कुल अलग कर देती है कि ये सब फिल्मी पीढ़ी के युवा थे। इन पात्रों की मित्रता का आधार ही फिल्में थीं। ये सब फिल्म देखते समय कागज-कलम लेकर बैठते थे। सोलह-सत्रह वर्ष की आयु से ये लगभग तीन फिल्में प्रतिदिन देख रहे थे। बीस वर्ष की आयु से फ्रांस की श्रेष्ठ पत्रिकाओं में फिल्मों पर लेख लिख रहे थे। इसलिए जब गोदार्द ने फिल्में बनाना शुरू कीं, तो उनके सभी संदर्भ फिल्मों से आए थे। उनकी पहली फिल्म 'ब्रैथलेस' अमेरिकी मोनोग्राम फिल्म को समर्पित है। यदि इस फिल्म में एक कहानी है, तो वह गैंगस्टर फिल्म से उड़ाई गई है। इस फिल्म का मुख्य पात्र 'हंफरी बोगार्ट' का फैन है। वह उसी की नकल करना चाहता है। उसके पोस्टर के सामने खड़े होकर वह होठों पर अँगूठा फिराता है और उसी ढंग की भारी आवाज में कहता है 'बोगी।' (यह बात दीगर है कि लोग हंफरी बोगार्ट को भूल गए और ज्याँ पाल बेलमेंडो सुपर स्टार बन गया) परंपरावादी फिल्म में अभिनेता को पहली सलाह यही दी जाती है कि वह कैमरे में भूल कर भी न झाँके। भूल जाए कि कैमरा कहीं है। उसे कैमरे के दाएँ या बाएँ पात्र से बात करनी है। गोदार्द ने जैसे कहा कि मेरा पात्र फिल्म के पहले शॉट में ही कैमरे में सीधे देखकर कहेगा, 'यदि उसे मेरी परवाह नहीं है तो न सही, भाड़ में जाओ तुम।' परंपरावादी फिल्म में एक शॉट से दूसरे शॉट को जोड़ने में बहुत मेहनत की जाती है जिसे स्मूथ कट कहा जाता है यानी दर्शक कभी यह न जान पाए कि वह छोटे-छोटे टुकड़ों का जोड़ देख रहा है। गोदार्द ने कहा कि क्यों न दर्शक को यह पता लगने दिया जाए कि उसने कहाँ कैमरा बंद



गोदार्द की फिल्म ब्रेथलेस

किया और कहाँ उसे फिर चलाया। यानी वह एक फिल्म देख रहा है इसे वह कभी भूलने न पाए। तात्पर्य यह कि सिनेमा जिन सतही तकनीकों में बँधकर पंगु हो गया था उन बेड़ियों को तोड़ने का पहला, अत्यंत सशक्त और सार्थक प्रयास ज्याँ लुक गोदार्द ने ही किया और इसके साथ ही फिल्म की भाषा में अत्यंत सार्थक विचारों को कह सकने की शुरूआत की।

सौ वर्ष के सिनेमा के इतिहास में केवल तीन फिल्मों की अद्वितीयता निर्विवाद रही। १९२५ में बनी 'बैटलशिपपोटेमकिन' के निर्देशक सर्गेई मिखायलोविन आइसंस्टाइन तब सत्ताईस वर्ष के थे। छब्बीस वर्ष की आयु में ऑर्सन वैलेस ने 'सिटीजन केन' (१९४१) बनाई थी। और ज्याँ लुक गोदार्द की 'ब्रैथलेस' सन १९५९ में बनी तब गोदार्द की उम्र उनतीस वर्ष थी। 'ब्रैथलेस' अमेरिकियों का दिया नाम है जो इस फिल्म के प्रभाव को व्यंजित करता है यानी इस फिल्म को देखकर अमेरिकियों की ऊपर की साँस ऊपर और नीचे की साँस नीचे रह गई। फिल्मों के बड़े-बड़े मठाधीश धराशायी हो गए। इस फिल्म का मूल फ्रांसीसी नाम है-'अ बूत ट सूफ्ल' जिसका हिंदी अनुवाद हो सकता है- 'ताजा हवा का झोंका' यानी ठेठ हिंदुस्तानी में 'बादे सबा।'

अगले तीस वर्षों १९६०-१९९० में ज्याँ लुक गोदार्द ने तीस फिल्में बनाई। प्रत्येक फिल्म में उन्होंने सिनेमा के व्याकरण के क्षेत्र में नए प्रयोग किए और अपना विशिष्ट दर्शन विकसित किया।

गोदार्द की फिल्मों की संपूर्ण सूची अक्सर उपलब्ध नहीं हो पाती इसलिए इन फिल्मों के प्रचलित नाम तथा प्रदर्शन वर्ष हम यहाँ दे रहे हैं। ब्रैथलेस (१९५९)/ ए वुमैन इज ए वुमैन (१९६१)/ माई लाइफ टू



फिल्म ब्रेथलेस में मिशेल पॉयकार्ड और पैट्रिशिया

लिव (१९६२)/ सैविज कैपिटल सिंस (१९६२)/ कॉन्टेंक्ट (१९६३)/ ले कैरेबिनियर्स (१९६३)/ बैंड ऑव आउटसाइडर्स (१९६४)/ द मैरिड वुमैन (६४)/ आल्फाविलै (६५)/ ल पतीत सोल्दात (६५)/ पिरो ल फू (६५)/ मेड इन यू.एस. ए. (६६)/ मैस्कुलिन फेमिनिन (६६)/ टू ऑर थ्री थिंग्स आई नो अबाउट हर (६६)/ ल चिनुआ (६७)/ ल गे सेवुआर (६८)/ द ओल्डेस्ट प्रोफेशन (६८)/ सिक्स इन पेरिस (६८)/ वीक एंड (६८)/ वन प्लस वन (६९)/ विड फ्राम द ईस्ट (७०)/ तू वा बियाँ यानी सब कुछ ठीक-ठाक है (७३)/ नंबर टू (७५)/ एवरीमैन फॉर हिमसेल्फ (८०)/ पैशन (८३)/ फर्स्ट नेम : कारमैन (८४)/ डिटेक्टिव (८५)/ हेल मेरी (८५)/ एरिया (८७)/ किंग लियर (८८)/ नुवेल वाग (९०)।

त्रूफो की पहली पूरी लंबाई की फिल्म 'ले कात्र सौं कू' (फोर हंड्रेड ब्लोज) चार सौ घूँसे,एक बारह वर्षीय बालक आंतुआ दवानेल की कथा है। फिल्म उसके मित्र रेने के शब्दों से आरंभ होती है- 'बचपन का खो जाना स्वर्ग को खो देना है शायद बुढ़ापे में सोची गई कल्पना मात्र है। हमारी उम्र का तेरहवाँ और चौदहवाँ वर्ष अन्याय और अत्याचार की दुनिया से गुजरने जैसा था।' त्रूफो की पहली लघु फिल्म 'ले मिस्तों' (शरारती बच्चे) में भी कथा एक कमेंट्री की भाँति चलती है और बाद की फिल्मों 'जूल और जिम' में भी। लेकिन 'फोर हंड्रेड ब्लोज' में कथाक्रम और आंतुआ का चरित्र मुख्य स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

'फोर हंड्रेड ब्लोज' की कथा (जो इसके बाद की चार फिल्मों में भी चलती है) फिल्मकार फ्रांसुआ त्रूफो की ही कलात्मक आत्मकथा है। जैसा बचपन त्रूफो ने गुजारा और उससे अपने समय की समझ ग्रहण की वह सब तीखेपन और प्यार के साथ 'फोर हंड्रेड ब्लोज' में उकेर दी है। इसलिए क्यों न फिल्मकार और फिल्म को एक साथ समझने का प्रयत्न किया जाए।

फ्रांसुआ त्रूफो का जन्म ६ फरवरी १९३२ को पेरिस में हुआ था। जन्म लेते ही उसे दादी की गोद में सौंप दिया गया। जब फ्रांसुआ आठ वर्ष का था तब उसकी दादी का देहांत हो गया। मजबूरन उसे अपने माता-पिता के पास जाना पड़ा जो आरंभ से ही उसका पालन-पोषण करने से कतरा रहे थे। ग्यारह वर्ष की आयु में फ्रांसुआ ने घर छोड़ दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। फ्रांसुआ बमबारी में नष्ट हो गए मकानों में जाकर दरवाजों पर लगे पीतल के हत्थे उखाड़ लेता और बाजार में बेच देता था। एक दिन पुलिस ने उसे पकड़ लिया और उसकी शरारतों

की पूरी रिपोर्ट देकर फिर से उसके पिता को सौंप दिया। फ्रांसुआ को सुधारने की गरज से उसे स्कूल में भर्ती करा दिया गया। स्कूल में फ्रांसुआ से कोई बात नहीं करता था इसलिए वह शहर की म्युनिसिपल लायब्रेरी में चला जाता था और बालजाक के उपन्यास पढ़ता था। चौदह वर्ष की आयु में फ्रांसुआ ने एक फिल्म समाज गठित किया। उद्घाटन फिल्म के तौर पर जर्मन फिल्मकार फ्रिट्ज लैंग की १९२६ में बनी फिल्म 'मैट्रोपोलिज' दिखाने की तैयारी की गई थी। 'मैट्रोपोलिज' भविष्य के शहर की परिकल्पना है जहाँ शासक गगनचुंबी इमारतों में रहते हैं। धरातल पर कारखाने हैं और मजदूर जैसे कहीं नीचे पाताल में रहते हैं। वे दिन-रात मशीनों की तरह काम करते हैं। लैंग की १९३२ में बनी 'एम' बच्चों के हत्यारे और उसकी खोज की कथा है। ये फिल्में जर्मनी के आने वाले दिनों की खबर दे रही थी। जिस दिन और समय को फ्रांसुआ ने 'मैट्रोपोलिज' दिखाने की व्यवस्था की थी उसे पता लगा कि उसी समय पेरिस का एक दूसरा फिल्म समाज वही फिल्म दिखा रहा है। फ्रांसुआ उस समाज के लोगों से मिला। जहाँ उसकी भेंट आंद्रे वाज़दा से हुई। आंद्रे वाजदा से मिलने के बाद फ्रांसुआ को कहीं भटकने की जरूरत नहीं रही। सन १९४८ में फ्रांसुआ जब सोलह वर्ष का था तब से ही उसके पालन पोषण का उत्तरदायित्व आंद्रे वाजदा ने स्वीकार कर लिया था।

बीस वर्ष की आयु से ही फ्रांसुआ त्रूफो की लिखी समीक्षाएँ फ्रांसीसी पत्रिकाओं में छपने लगी थी। उसने अपने तोपखाने का निशाना तत्कालीन फ्रांसीसी सिनेमा को बनाया था। फ्रांसीसी फिल्मकार उससे डरते थे। सन १९५७ में फ्रांसुआ का विवाह एक फिल्म निर्माता-निर्देशक की पुत्री से हुआ। त्रूफो इस फिल्मकार की फिल्मों की खिचाई अपने लेखों में कर चुका था। ससुर ने चुनौती दी कि यदि फ्रांसुआ फिल्मों के बारे में इतना कुछ जानता है तो स्वयं फिल्म क्यों नहीं बनाता। उत्तर में फ्रांसुआ ने 'ले कात्र सौं कू' फिल्म बनाई। सन् १९५९ में इस फिल्म का बजट सात लाख रुपए था। इस राशि का एक तिहाई भाग फ्रांसुआ के ससुर ने, एक तिहाई फ्रांस की सरकार ने और एक तिहाई फ्रांसुआ के मित्रों ने दिया। कान फिल्म समारोह में 'फोर हंड्रेड ब्लोज' को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का सम्मान मिला।

तब ज्याँ लुक गोदार्द ने लिखा था, 'यह महत्वपूर्ण है कि सत्ताधीशों द्वारा पहली बार एक नई फिल्म को आधिकारिक स्तर पर पूरे विश्व के समक्ष फ्रांसीसी सिनेमा की प्रतिनिधि फिल्म के रूप में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया है। आज जो कुछ त्रूफो के बारे में सही है वही समान स्तर पर अलाँ रेने और क्लॉद शेबरोल के बारे में भी सही है।

हम उसी दिन यह लड़ाई जीत गए थे जिस दिन हमने सिद्धांततः यह मान लिया था कि अल्फ्रेड हिचकॉक की फिल्म उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी की लुई आरांगा की पुस्तक। आज के फिल्मकार को कला के इतिहास में प्रवेश दिलवाने का श्रेय हमें दिया जा सकता है। लेकिन हम जिनकीआलोचना करते हैं वे स्वयं हमारी इस सफलता से लाभान्वित हुए हैं, क्योंकि हम इनकी आँखें खोलते रहे हैं। जबकि ये अपनी आँखें बंद ही रखे हुए हैं। जब भी हमने इनकी फिल्में देखीं, उन्हें बुरा पाया।

'हम तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे, क्योंकि तुमने युवतियों को कभी उस तरह नहीं फिल्माया जिस तरह हम उन्हें प्यार करते थे या युवकों को जिस तरह हम उन्हें रोज देखते थे। माता-पिता को जिस तरह हम उनकी अवमानना या आदर करते थे या बच्चों को जिस तरह वे हमें विस्मित कर देते थे या उदास छोड़ देते थे। जब हमारी फिल्में कान फिल्म समारोह में प्रतिवर्ष आएँगी तब लोग देखेंगे कि फ्रांस, सिनेमा की भाषा में, अब अधिक सुंदर दिखता है। निश्चय जानिए कि पंद्रह नई साहसिक, ईमानदार, सहज और सुंदर फिल्में प्रतिवर्ष रूढ़िवादी फिल्मों का प्रवेश रोकेंगी। हम लड़ाई तो जीत चुके हैं पर युद्ध अभी बाकी है।'

गोदार्द के इन शब्दों में भविष्य का पूरा और सही ब्यौरा था। फ्रांस के नई लहर के सिनेमा के आगमन के उपरांत, विश्व भर के सिनेमा में सार्थक परिवर्तन का एक जोश जाग उठा।

त्रूफो की 'फोर हंड्रेड ब्लोज' में ऐसे अनेक दृश्य हैं, जो इससे पहले सिनेमा में कभी देखे ही नहीं गए थे। जैसे बारह वर्षीय बालक की कथा इस प्रकार कही जाए, जहाँ प्रेम कथा, हास्य या मधुर दृश्य के लिए स्थान ही न हो। यह बारह वर्षीय बालक न केवल बालजाक की पुस्तकें पढ़ता है बल्कि उसका भक्त है। अपने इस एक कमरे में, दस गुणा दस फुट के कमरे में, जहाँ उसके माता-पिता रहते हैं और उसे भी दया करके या मजबूरी में रहने देते हैं, उसने बालजाक की तस्वीर लगा रखी है, जिसके सामने वह शाम को मोमबत्ती जला देता है। एक दिन आग लग जाती है। आग तो जल्दी ही बुझा दी जाती है, लेकिन पिता उसकी अच्छी खासी पिटाई कर देता है।

जब अतुआ पुलिस हिरासत में है, तो उसका मित्र रेने उससे मिलने आता है। रेने सोलह वर्ष का है। वह शहर से बाहर के इस बाल सुधार गृह में बीस मील साइकल चलाकर आया है। लेकिन सिपाही दोनों मित्रों को मिलने नहीं देता। रेने की दोनों बाँहें फैलाकर व्यक्त की गई हताशा की मुद्रा में दर्द तथा अभिव्यक्ति का पूर्णत्व एक साथ है।

फ्रांसुआ त्रूफो मूलतः साहित्यिक फिल्मकार रहे हैं। उनकी अनेक फिल्में साहित्यिक कृतियों पर आधारित हैं। त्रूफो की पहली लघु फिल्म 'ले मिस्तो' (द मिस्त्रीफ मेकर्स) मॉरिस पोंस के कहानी संग्रह 'वर्जिनेल्स' की कहानियों पर आधारित थी। 'फोर हंड्रेड ब्लोज' (१९५९) के बाद अगली फिल्म 'शूट द पियानो प्लेयर' (१९६०) डेविड गुडीस के उपन्यास 'डाउन देयर' पर आधारित थी। 'द ब्राइड वोर ब्लैक' (१९६८) विलियम आइरिश के उपन्यास पर आधारित थी। त्रूफो की अत्यंत प्रसिद्ध फिल्म 'जूल और जिम' हेनरी पिएट रोश के उपन्यास पर आधारित थी।

जूल और जिम दो दोस्त हैं। उपन्यास के आरंभ में जिम अपने मित्र को एक पुस्तक में से कुछ वाक्य पढ़कर सुनाता है।

'मेरा विश्वास है कि प्रत्येक पुरुष के लिए केवल एक स्त्री ही जीवन साथी हो सकने के लिए बनी होती है। वैसे वह कितने ही विकल्पों के साथ सुखी या खुश जीवन बिता सकता है। लेकिन केवल एक स्त्री होती है जो पूर्णत्व दे सकती है। शायद उस स्त्री की मृत्यु हो गई हो, शायद उसे पाना संभव ही न हो पाए या शायद उसका विवाह किसी और से हो गया हो। इस स्थिति में यही उचित होगा कि पुरुष कभी विवाह न करे। इसी प्रकार स्त्री का सच्चा जीवन साथी हो पाने के लिए केवल एक पुरुष ही बना होता है।'

जूल और जिम दोनों लेखक हैं। जूल मूलतः जर्मन है और जिम मूलतः पेरिस निवासी। यह भी बताया गया है कि यह कहानी सन् १९१२ के आसपास पेरिस में घटी थी। दोनों मित्र एक पुरानी प्रस्तर प्रतिमा देखकर अभिभूत हैं। तभी उन्हें कैथरीन मिलती है। दोनों उस पर मोहित हो जाते हैं। जूल इस स्त्री से प्रेम करने लगता है, लेकिन जिम से पूछे बिना नहीं। इन तीनों की यह प्रेमकथा सिनेमा की एक अमर प्रेम कविता बन

हम तुम्हें कभी माफ नहीं करेंगे, क्योंकि तुमने युवतियों को कभी उस तरह नहीं फिल्माया, जिस तरह हम उन्हें प्यार करते थे या युवकों को जिस तरह हम रोज देखते थे। जब हमारी फिल्में कान फिल्म समारोह में प्रतिवर्ष आएँगी, तब लोग देखेंगे कि फ्रांस, सिनेमा की भाषा में अब अधिक सुंदर दिखता है।

गई है। तीनों बहुत अच्छे मित्र बन जाते हैं, जबकि कैथरीन का स्वभाव अक्सर उन्हें भी चौंका देता है। एक दिन दोनों मित्र स्ट्रिंडबर्ग के नाटकों पर बहस में मशगूल हैं। कैथरीन को लगता है कि वे उसकी अनदेखी कर रहे हैं। अपनी ओर उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए वह सिएन नदी में कूद पड़ती है। कैथरीन अपने प्रेम के प्रतिदान-स्वरूप जूल को एक वस्तु देती है और अब वह जिम से प्यार करने लगती है। वह जूल से अनुरोध करती है कि वह वहाँ से चला जाए। परंतु जूल अपने मित्र और प्रेमिका के बिना नहीं रह सकता। सतही दृष्टि से देखने पर यह कहानी अत्यंत क्रूर, उटपटांग लग सकती है, परंतु अपने छायांकन द्वारा त्रूफो पूरे परिदृश्य को जिस गतिशीलता से बाँध देते हैं वह इन फिल्मों को महान काव्यकथाओं का दर्जा दिला देती है। हॉलीवुड या पुराने सिनेमा की सबसे बड़ी बुराई यह थी कि कैमरा एक जगह स्थिर खड़ा रहता था और फिल्म का प्रत्येक आयोजन/ कथा/ अभिनेता/ प्रकाश योजना/ सैटिंग इत्यादि जैसे इन

देवता के लिए चढ़ावा मात्र बनकर संपन्न हो जाते थे। नए सिनेमा ने कैमरे को इस सीमा से स्वतंत्र किया।

त्रूफो की फिल्मों की दूसरी महत्ती विशेषता है कि इन सब मधुर प्रेमकथाओं का अंत त्रासदी में होता है।

'द सॉफ्ट स्किन' त्रूफो की एक कमजोर फिल्म मानी जाती है, परंतु किस प्रकार एक महान फिल्मकार साधारण दृश्यों को भी जीवंत और सार्थक बना देता है, वह इस सीधी- सादी फिल्म में देखा जा सकता है। एक साहित्यिक आलोचक, पिएर लैनेने को अक्सर विविध गोष्ठियों में भाषण हेतु बुलाया जाता है। पिएर विवाहित है। उसके दो बच्चे हैं। लिस्बन में अपने एक दौरे के दौरान वह एक युवती निकोल से प्यार करने लगता है। घर लौटकर वह अपनी पत्नी फ्रांका के समक्ष घोषणा कर देता है कि वह अब तलाक लेना चाहता है। पत्नी उससे अनुरोध करती है कि वह इतना बड़ा कदम न उठाए। पिएर की यह कहानी लगभग हास्य कथा- सी बन जाती है। जब वह निकोल से बार- बार मिलना चाहता है और हर जगह लोग उसे पहचान रहे हैं और वह उनसे छुपना चाहता है। एक प्रसंग में पिएर ने एक फ्लैट खरीद लिया है। वह निकोल को वहाँ लेकर जाता है फ्लैट का अभी खाँचा ही तैयार हुआ है। वह उसे बता रहा है कि ड्राइंग रूम यहाँ होगा और बेडरूम वहाँ, जबकि निकोल उसे समझाने का प्रयत्न कर रही है कि वे दोनों किसी भी प्रकार से एक- दूसरे के साथ रहने के लिए अनुकूल नहीं हैं। इस प्रेम संबंध को यहीं समाप्त कर देना चाहिए। दरअसल पिएर शायद जीवन के इस मोड़ पर चालीस की उम्र पार करने के बाद युवाचर्म की स्निग्धता चाहता है। वह अपनी खुरदरी प्रगाढ़ प्रेम करने वाली पत्नी से दूर भागना चाहता है। निकोल यह देख पा रही है कि पिएर केवल पलायन कर रहा है। पिएर इस तिरस्कार से निराश होकर अपने चिर- परिचित कैफे में बैठा है। इस बीच पिएर के घर पर एक धोबी कुछ तस्वीरें दे जाता है जहाँ पिएर ने अपने कपड़े दिए थे। कुछ फोटोग्राफ्स उसकी जेब में रह गए थे। फ्रैंका इन फोटोग्राफ्स को देखती है जिनमें पिएर और निकोल रंगरेलियाँ मना रहे हैं। वह बंदूक उठाती है और कैफे में आकर पिएर को गोली मार देती है।

गोदार्द और त्रूफो के बारे में जान लेने के बाद यह प्रश्न उठ सकता है कि इन फिल्मकारों की इतनी प्रशंसा क्यों की जाए? बहुत से लोग हैं जो इन्हें पसंद नहीं करते। उनका कहना है कि इन फिल्मकारों ने सिनेमा को

फ्रांस :

सिनेमा यहाँ से आरम्भ होता है...

विश्व सिनेमा की शुरूआत का श्रेय फ्रांस को दिया जाता है। जाहिर है फ्रेंच सिनेमा का इतिहास और सिनेमा का इतिहास समानांतर बातें हैं। आरंभिक वर्षों में विभिन्न देशों में जो फिल्म- प्रदर्शन हुए या उपकरण जुटाए गए- उन सब पर फ्रेंच प्रभाव है। फ्रेंच सिनेमा के आरंभिक वर्षों को विश्व सिनेमा के विकास से अलग नहीं किया जा सकता। इसलिए यहाँ केवल प्रथम- विश्व युद्ध के बाद के फ्रेंच सिनेमा पर नजर डाली जा रही है। प्रथम विश्वयुद्ध के बाद से विभिन्न देशों का सिनेमा एक निश्चित आकार लेने लगा था। कहा जा सकता है कि विश्व सिनेमा में विविधता के दर्शन इसी काल से शुरू होते हैं। फ्रेंच सिनेमा निश्चित रूप से आरंभिक वर्षों में आकर्षण और कौतूहल का विषय बना हुआ था। नए माध्यम के जितने साधन उपलब्ध थे- फ्रेंच सिनेमा उनका प्रयोग करते हुए अपने स्वरूप को निखार रहा था। उधर अमेरिका भी इस दिशा में धीरे-धीरे सक्रिय हो रहा था। फ्रेंच सिनेमा के उज्ज्वल रूप पर आघात अमेरिकी फिल्मों के एकाएक बढ़ जाने वाले आयात से होता है। फ्रांस में सिनेमा अब तक अर्थात् १९१६-१७ तक मनोरंजन का एक लोकप्रिय माध्यम था। लेकिन आर्थिक मंदी के कारण सर्वव्यापी नहीं हो पाया था। ऐसी स्थिति में बीस के दशक में रिचिओत्ते कानूदो और लुई देलुक ने उत्कृष्ट फिल्में बनाकर फ्रेंच सिनेमा को नई दिशा दी। इनके इर्द-गिर्द जुटी युवा फिल्मकारों की मंडली मार्सेल हर्बियर/ ज्याँ एप्स्टीन/ अबेल गांस/ जे़र्माइन दुलाक के नाम उल्लेखनीय हैं। इनकी फिल्मों पर विदेशी प्रभाव स्पष्ट था। इन लोगों को इम्प्रेशनिस्ट नाम दिया गया। यह आंदोलन १९२४ में लुई देलुक की मृत्यु के बाद लगभग समाप्त हो गया। इस आंदोलन को प्रथम अवाँ- गार्द की संज्ञा दी जाती है ताकि २० के दशक के ही दूसरे अवाँ गार्द से इसे अलग किया जा सके। यह दूसरा अवाँ-गार्द क्यूबिज्म और फ्यूचरिज्म से प्रेरित था। सरियलिस्ट धारा का सीधा प्रभाव भी इस पर पड़ा था। लुई बुन्वेल और ज्याँ कॉक्ट्यू की फिल्मों में यह प्रमुखता से उभरा।

अवाँगार्द की इन फिल्मों में प्रमुख थी- 'ला बैले मेकेनिक' (१९२४)। ले रिट्रूर ए ला रायसन' (१९२३)/ एन्त्राले (१९२४)/ ले सांग दुन पोयते (१९३०) और खासतौर से लुई बुन्वेक की 'उन चियेन आंदोलन' (१९२८) तथा 'ला एज दोर' (१९३०)। ये सब व्यावसायिक प्रयास थे। इसलिए इस धारा की फिल्मों को सिने क्लबों में देखा और सराहा गया। इनसे व्यावसायिक निर्माता भी काफी प्रभावित हुए। इस समय सोवियत संघ से जो डॉक्यूमेंट्री फिल्में फ्रांस पहुँचीं, उनके प्रभाव में फ्रेंच फिल्मकारों ने वास्तविक जिंदगी और सामान्यजन की छवि अंकित करने का प्रयास किया जैसे ब्राजीली फिल्मकार अल्वेर्तो कावालकांती ने पेरिस की एक दिन की जिन्दगी को फिल्माया। डॉक्यूमेंट्री फिल्मों के इस दौर में दो सार्वकालिक महान फिल्में आईं। एक ज्याँ विगो की 'ए प्रोपोस द नाइस' (१९३०) और इसकी लुई बुन्वेल की 'ला हर्ड्स' (१९३२)।

दरअसल इस दौर में अपर्याप्त वित्तीय साधनों के कारण इन सिनेमाई प्रयोगों का विश्व सिनेमा पर असमान प्रभाव पड़ा। यही मुख्य वजह रही कि अनेक फिल्मकार या तो व्यावसायिकता की तरफ झुके या साहित्य रूपांतरण की तरफ। अपवादतः अबेल गांस/ जेक फेदर/ रेने क्लायर मूलधारा में ही सक्रिय रहे।

१९२७-२९ के समय को फ्रेंच मूक- युग का क्लासिक दौर कहा जा सकता है। अनेक निर्देशकों ने फिल्म तकनीक में उच्चता हासिल कर ली थी जैसे अल्बर्ट प्रेज्याँ/रिने ब्लायर/ जीना मेन्स। अबेल गांस की सार्वकालिक महान फिल्म 'नेपोलियन' (१९२७) विशेष उल्लेखनीय है। आगे के वर्षों में ध्वनि की सुविधा के कारण बहुभाषी फिल्में भी बनी। कुछ निर्देशकों ने लोकप्रिय नाटकों का फिल्मांकन किया। १९३६ के करीब आकर फ्रेंच सिनेमा का एक सर्वाधिक सम्पन्न दौर शुरू हुआ जिसने ज्याँ रेनॉअर, सहित मार्सेल कार्ने/ ज्याँ ग्रेमिलान और दुविविअर जैसे निर्देशकों की फिल्में देखीं। इसी वर्ष-हैनरी लैंगलुई/ ज्याँ मिट्री/ और ज्यार्ज फ्रांजु ने 'सिनेमाथेक फ्रेंचाइस' की स्थापना की। फिल्म निर्माण भी बढ़कर १३० फिल्में प्रतिवर्ष हो गया था। किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के कारण और १९४० में जर्मन आधिपत्य के कारण फ्रेंच सिनेमा के विकास को गहरा धक्का लगा। १९४२ में 'कमिरी दि आर्गेनाइजेशन दे ल इंदुस्त्रिए सिनेमाटोग्राफिक' की स्थापना की गई, किन्तु १९३९ से १९४५ के बीच निर्मित फिल्मों का आँकड़ा साढ़े तीन सौ से आगे नहीं बढ़ सका। दरअसल सेंसरशिप के सख्त चंगुल से बचने के लिए फिल्मकारों ने अराजनीतिक और दूरस्थ अतीत को विषय रूप में चुना, जिसमें निर्माण संख्या प्रभावित होना थी। लेकिन यह उपलब्धि ही है कि युद्ध के दौरान विश्व में फ्रांस ऐसा अकेला देश था जहाँ फिल्म-निर्माण निरंतर जारी रहा। रेने क्लेमेंट की 'ला वैटालिए दु रेल (१९४०) उल्लेखनीय युद्ध फिल्म है। जर्मन फिल्में भी इस समय थोपी गईं- किन्तु

क्लिष्ट बनाया है, गोदार्द की फिल्मों को तो आम आदमी समझ ही नहीं पाता। ये सब शिकायतें सामान्य मनःस्थिति की प्रतीक हैं। यहाँ यह भाव प्रबल है कि एक परिवार जब पच्चीस- तीस रुपए परिवहन पर और पचास रुपए टिकटों पर खर्च कर फिल्म देखता है, तो प्रत्येक सदस्य को यह समझ आ जाना चाहिए कि 'हम आपके हैं कौन!' यानी फिल्म को एक शुद्ध, स्वस्थ मनोरंजनवादी होना चाहिए। दूसरे संदर्भ में प्रत्येक युग का एक हीरो होता है कभी दिलीप, तो कभी देव, कभी धर्मेन्द्र- जीतेंद्र या फिर मिथुन और जैकी। आजकल शाहरुख का जमाना है।

विश्व सिनेमा में भी यह स्थिति हमेशा बनी रही। हॉलीवुड भी बीसियों एक्टरों के दम पर अपनी फिल्मों को बाजार में चलाता रहा। गाहे- बगाहे कहीं- कहीं टूटी- फूटी, छोटी- मोटी यह बहस भी चलती रही, सिनेमा व्यवसाय है या कला। सिनेमा व्यवसाय है। शुद्ध मनोरंजन है। फिल्म देखने के बाद उसे आधे घंटे बाद भूल जाना चाहिए। यह कहने वाले हमेशा अधिक भारी पड़ते रहे हैं।

थोड़े गंभीर स्तर पर यह बात उठी कि चलो आप कहते हैं तो हम मान लेते हैं कि सिनेमा कला है। अब यदि सिनेमा कला है, तो इसका कलाकार कौन है। किसी एक फिल्म का रचयिता कौन है। अभिनेता जो प्रत्येक पात्र को मूर्त रूप प्रदान कर देता है, उसमें जान फूँक देता है? या फिर छायाकार? आखिर फिल्म में होता क्या है- कुछ संवाद, जिन्हें एक अभिनेता बोलता है। एक छायाकर उन्हें छायांकित करता है। अभिनेता के बाद सबसे महत्वपूर्ण हुआ, फोटोग्राफर। जब धर्मेन्द्र और आशा पारेख मैदान में नाच रहे होते हैं, तो पचास फुट दूर की झाड़ी की एक- एक पत्ती मैं देख पाता हूँ। या विलेन किस पेड़ के पीछे छुपा है यह मैं दूर से ही जान लेता हूँ। जब 'अनुपमा' में धर्मेन्द्र और शर्मिला टैगोर बतियाते हैं, तो श्वेत परिधान, बादलों की श्वेत धुंध, दूर तक फैली पर्वत श्रृंखला हमें कौन दिखाता है? छायाकार। उसके बाद साउंड रिकॉर्डिस्ट का महत्व भी कम नहीं। आजकल तो सबसे पहले गाने ही रिकॉर्ड किए जाते हैं। फिल्म बाजार में आने से वर्ष भर पूर्व से ही गाने धूम मचा देते हैं, बल्कि फिल्म में तो कुछ होता ही नहीं। लोग गाने सुनने के लिए ही फिल्म देखने जाते हैं।

विश्व सिनेमा के पहले सौ वर्ष के सत्तर वर्ष (१८९५- १९६५) इस दुविधा में निकल गए कि यदि फिल्म कलाकृति है या रचना है, तो रचनाकार कौन है? सन् १९६५ पूर्व सिनेमा पर जो पुस्तकें छपती थीं वे

उन्हें बॉक्स ऑफिस पर असफलता मिली। इस समय की फ्रेंच फिल्मों में काव्यात्मक यथार्थवाद के बदले काव्यात्मक रोमांसवाद और फंतासी का असर ज्यादा दिखाई दिया। यही वह समय था जब राबर्ट ब्रेसाँ की बेहतरीन फंतासी फिल्म आई थी- ले दामेस दु बोई दे बोलोन्ये (१९४५)।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान शुरू हुए 'फिल्म नोअर' (रहस्य रोमांचपूर्ण फिल्में) का फैशन बाद में भी जारी रहा। येस एलीग्रेट/आंद्रे कायाते और ज्याँ पियरे मेलविल्ले इनमें प्रमुख हैं। एक अन्य निर्देशक जैक बैकर ने कॉमेडी और अंडरवर्ल्ड की फिल्में बनाईं। साहित्यिक परंपरा की झलक अंटान्टबेसाँ की फिल्म 'डायरी ऑफ कन्ट्री प्रीस्ट' १९५१ में आई। कॉमेडी फिल्मों का प्रतिनिधित्व प्रिवर्ट बंधुओं की फिल्मों में होता है। जैक ताती ने भी अच्छी कॉमेडी फिल्में प्रस्तुत की।

इस समय तक फ्रांसीसी सिनेमा औपचारिक रूप से व्यावसायिक सिनेमा के रूप में स्थापित हो चुका था। ज्याँ रिनाअर ने इस समय महत्वपूर्ण फिल्में बनाईं। फ्रेंच कैन-कैन (१९५५) और एलेना एटलेस होम (१९५६) में रंगों का बड़ा प्रभावशाली प्रयोग उन्होंने किया। मैक्स

विश्व सिनेमा की गंगोत्री है फ्रांस। २८ दिसंबर १८९५ को पेरिस के इण्डिया-कैफे में पहली बार ल्युमिएर ब्रदर्स ने अपनी फिल्मों का प्रदर्शन कर एक चमत्कार को जन्म दिया था। सिनेमा को सार्थक और बौद्धिक आधार देने में फ्रांस के फिल्मकारों का महत्वपूर्ण योगदान है।

ऑफुल्स ने 'ला शेन्दे (१९५०) और 'लोला मान्सेस' (१९५५) बनाकर अंतरराष्ट्रीय ख्याति पाई। इस दौर की एक पीढ़ी नॉवेल्ले वेग नाम से पहचानी गई, जिसमें पिएरे, ब्रॉनबर्गर/क्लॉद शाबरोल/त्रूफो और ज्याँ लुक गोदार्द के नाम उल्लेखनीय हैं। इस पीढ़ी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी काफी सम्मान और प्रोत्साहन मिला।

सातवें दशक में बेझिन द्वारा आरंभ की गई फिल्म पत्रिका 'केहिअर टु सिनेमा' ने फ्रेंच सिनेमा के विकास को वैचारिक स्तर पर प्रभावित किया। जिन फिल्म समीक्षकों ने इसमें नियमित लिखा उनमें से अधिकांश ख्यातनाम फिल्मकार के रूप में पहचाने गए जैसे क्लॉद शाबरोल/ फ्रांको त्रूफाँ/ ज्याँ लुक गोदार्द/ एरिक रोमर/ जैक देनियल वाल क्रोम/ रोज्र वदीम। स्वाभाविक ही इनकी फिल्मों में गंभीर वैचारिक, बौद्धिकता और आलोचनात्मक दृष्टि का प्राधान्य है। १९५९ के कॉन फिल्म समारोह में एक आश्चर्यजनक बात हुई। लगभग सभी पुरस्कार नए फ्रेंच निर्देशकों को गए। इससे उनका हौंसला बढ़ा। यही कारण रहा कि १९५९-६१ के दौरान ७० के करीब नए निर्देशकों की पहली फिल्में आईं। इन्होंने व्यावसायिक सिनेमा के पुराने प्रतिमानों को ध्वस्त किया और गलियों में आकर फिल्मांकन किया। लगभग सभी ने रेखांकित किया कि फिल्म 'लेखक' का माध्यम है। इस दौर में 'सिनेमा वेरिते' आंदोलन ने ज्याँ राउच के नेतृत्व में फिल्म विधा का सैद्धांतिक पक्ष आगे बढ़ाते हुए डाक्यूमेंट्री फिल्मों का नया क्षितिज खोला। एक उपलब्धि और हुई साहित्य और सिनेमा के पुनर्मेल के रूप में आलें रॉब्ब ग्रिए की 'ल इम्मोरतेले' १९६३/ ट्रांस यूरोप एक्सप्रेस (१९६६) मारुएरिते दुरास (१९६९) में यह सामंजस्य उत्कृष्ट रूप में दिखाई देता है।

पिछले ढाई-तीन दशक में सिनेमा को देखते हुए कहा जा सकता है कि विश्व-सिनेमा में अपनी परंपरागत पहचान को कायम रखने के साथ-साथ नवीनता का सूत्रपात करने में फ्रेंच सिनेमा अग्रणी रहा है। आज भी फ्रेंच सिनेमा में वरिष्ठ व नई पीढ़ी एक साथ सक्रिय रहकर अपनी इस विशेषता को बनाए हुए है। अनेक नए निर्देशक फ्रेंच सिनेमा में उभर कर आए हैं, जिनके कृतित्व में परंपरागत उच्चता के दर्शन होते हैं। इन निर्देशकों में आलियो/मारिस पिआलेत/ ज्याँ लुई वेर्तुचेली/वालेरियन बोरोवाच्युक/ एलेन जेसुआ और क्लॉद सॉटेट के नाम उल्लेखनीय हैं। फिल्म को व्यावसायिकता से दूर रखने वाले 'अल्टरनेटिव, सिनेमा' के निर्देशकों में दुरास/लुक मॉलेट/ ज्याँ युस्ताके और फिलिप गारेल के नाम लिए जा सकते हैं।

☐ ***प्रमुख फिल्में-*** *रोज फ्रांस १९१९/ डॉन जुआन एंड फाउस्ट १९२३/ ले लाइसेंस एस्न दि आँर १९४७/ ले पेरेन्ट्स टेरिबल १९४८/ लैटर फ्रॉम एन अननॉन वुमेन १९४८/ ला ब्यूटी टायबल १९५०/ ला रोन्दे १९५०/ ले मिस्ताँ १९५८/ ले क्वात्रे सेंट्स कूप १९५९/ ए बाउट द सॉफल १९५९/ ले कराविनिएरे १९६३/ अल्फाविले १९६५/ योयो १९६५/ चॉकलेट १९८८/ ला पेशन बीट्रिस १९८८/ ले मारिस, ले फेम्मेस, ले अमन्तस १९८९/ 'स्मोकिंग' तथा 'नो स्मोकिंग' १९९४/ ज्याँ ला पुकेले १९९४। १९६२ से १९८७ के बीच की दस महत्वपूर्ण फिल्में ऊ हसर्द बाल्थाजर/ बान्दे ए पार्ट/ ले बाउचर/ ले डोजियर ५१/ ला गुएल्ले ओवर्ते/ ले जज एट ला असेसिन/ ला ममन एट ला पुटेन/ मा नुत चेज माउद/ मैक्स एट लेम फेर्रेल्युर्स/ म्युरेल।*

☐ **चरणसिंह अमी**

अभिनेताओं की चित्र – प्रधान जीवन – परिचय या आत्मकथाएँ ही होती थीं।

आज भारत में भी स्थिति में मामूली बदलाव आया है। हाल ही में छपी कुछ पुस्तकों में से महबूब खान, बिमल राय, दो- तीन पुस्तकें राजकपूर तथा दो पुस्तकें लता मंगेशकर पर हैं। यही स्थिति अमेरिका तथा पूरे विश्व में सन् १९६० से पूर्व थी। सन् १९५५ के बाद फ्रांसीसी नई लहर के इन पाँच युवकों द्वारा किए गए निरंतर प्रयासों ने सिनेमा की ओर देखने की नई क्रांतिकारी दृष्टि प्रदान की। अमेरिकी स्वयं अपने फिल्म निर्देशकों हावर्ड फॉक्स/ जॉन फोर्ड/ औरसन वैलेस/ अल्फ्रेड हिचकॉक को मात्र तकनीशियन ही मान रहे थे। एक फिल्मकार कलाकार भी हो सकता है यह समझने की दृष्टि ही उनके पास नहीं थी। (जैसे आज भारत में हम मनमोहन देसाई/ प्रकाश मेहरा/ बी.आर. और यश चोपड़ा/ बासु चटर्जी/ सई परांजपे आदि का महत्व समझ पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं। सिनेमा की भाषा को न समझ पाने के कारण भारतीय बुद्धिजीवी की स्थिति 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा' जैसी हो गई है। वह फिल्मों पर साहित्य के मानदंड थोपकर फिल्मों की आलोचना करना चाहता है।)

क्लॉद शाबरोल और एरिक रोहमर ने अल्फ्रेड हिचकॉक के सिनेमा का विश्लेषण किया और एक पूरी पुस्तक लिखी। इनमें उन्होंने बताया कि हिचकॉक अपनी फिल्मों में अपराध के कारणों का नहीं अपराधी की मनःस्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। वह भी अपराध से पूर्व की नहीं, अपराध करने के बाद की। इसलिए हिचकॉक की फिल्मों को सस्पेंस फिल्में या अपराध फिल्में नहीं कहा जा सकता। वे 'डू डन इट' नहीं है। वहाँ हत्यारा कौन है, यह आरंभ में ही बता दिया जाता है। इसके बाद अपराधी में आत्म- साक्षात्कार की एक प्रक्रिया आरंभ होती है। हिचकॉक इसका अध्ययन प्रस्तुत करते हैं। एरिक रोहमर और क्लॉद शाबरोल ने बताया कि हिचकॉक का अपराधी आत्मग्लानि और प्रायश्चित के दौर से गुजर कर आत्म- साक्षात्कार के क्षण तक पहुँचता है।

अमेरिकियों को जल्दी ही यह बात अपने ढंग से समझ में आ गई। वे समझ गए कि उनके उत्पादन के लिए नया विश्व बाजार विकसित हो रहा है जिस फिल्म को वे एक पखवाड़े में हिट या फ्लॉप घोषित कर डालते थे। एक फ्लॉप फिल्म की दो वर्ष बाद एक प्रति खोजना भी कठिन हो जाता था। किसी फिल्मी पत्रिका में छपी शूटिंग की रिपोर्ट के सहारे ही यह सिद्ध किया जा सकता था कि अमुक फिल्म कभी बनी भी या नहीं।

अमेरिकियों के आला दिमाग ने समझ लिया कि उनकी फिल्में मनोरंजन का साधन मात्र नहीं 'कलाकृतियाँ' हैं। अमेरिकी स्टुडियो ने अपने खर्च से पूरे तामझाम के साथ नई लहर के युवा फिल्म आलोचक फ्रांसुआ त्रूफो को अमेरिका बुलाया। और हिचकॉक के साथ बैठकर एक अत्यंत दीर्घ साक्षात्कार का आयोजन किया गया। विश्व सिनेमा की इन दो महान हस्तियों की बातचीत के समय एक चोटी का स्थिर छाया चित्रकार फिलिप्स हाल्समैन भी उपस्थित था। 'त्रूफो ऑन हिचकॉक' नाम की यह पुस्तक आज एक अमूल्य धरोहर बनी है।

क्लॉद शाबरोल ने अल्फ्रेड हिचकॉक की फिल्मों का गहन अभ्यास किया और एक पुस्तक लिखी। यही नहीं उन्होंने इन सिद्धांतों का प्रयोग फिल्में बनाने में किया और अपने सिनेमा को 'हिचकॉक से कहीं अधिक प्रामाणिक हिचकॉक' साबित किया।

शाबरोल की पहली दो फिल्में गाँव तथा नगर के अंतर्द्वंद्व पर आधारित हैं। गाँव में पला बड़ा हुआ फ्रांसुआ शहर चला जाता है। शहर में वह दस- बारह वर्ष रहता है और गाँव में यह खबर मिलती रहती है कि फ्रांसुआ शहर में सफल रहा है। एक दिन फ्रांसुआ गाँव में रहने के लिए लौट आता है। दरअसल फ्रांसुआ गाँव में असफल होकर स्वास्थ्य लाभ के लिए लौटा है। उसे तपेदिक है। वह पाता है कि उसका बचपन का मित्र सर्ज 'एक अच्छा, भला, प्यारा सर्ज है' ' ल बो सर्ज' उससे कतराता है। बीते वर्षों में फ्रांसुआ की सफलता के समाचारों का ग्रामीण सर्ज के जीवन पर अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता रहा है। वह अधिक अंतरमुखी और शराबी हो गया है। इस बीच सर्ज की पत्नी ने एक बेडौल बच्चे को जन्म दिया है जिससे सर्ज का आत्मविश्वास टूट गया है। फ्रांसुआ अपने मित्र की मदद करने का भरसक प्रयत्न करता है। वह उसके घर जाता है। लेकिन सर्ज



उससे कतराता है। इस बीच सर्ज की पत्नी पुनः गर्भवती है। सर्ज को इस भय ने घेर लिया है कि कहीं दूसरा बच्चा भी पहले जैसा न हो जाए। वह शराब पीता रहता है और घर से दूर रहता है। इधर जन्म की घड़ी समीप आ जाती है। सर्ज का कहीं अता- पता नहीं है। फ्रांसुआ अपने मित्र को खोजने निकलता है। सर्ज उसे जंगल के बीच बर्फ में दबा मिलता है। फ्रांसुआ उसे बर्फ से निकालता है और अपने कंधों पर लादकर घर लाता है। सर्ज की पत्नी ने एक सामान्य- स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया है। पहली बार सर्ज का आत्मविश्वास लौटता है। लेकिन अब फ्रांसुआ को महसूस हो रहा है कि रोग के आक्रमण के कारण वह बहुत अशक्त हो गया है और उसका अंतिम समय समीप है।

क्रिश्चियन पुनर्जन्म विषय पर आधारित यह फिल्म फ्रांस में बहुत सराही गई। इसी वर्ष सन् १९५९ में शाबरोल की दूसरी फिल्म 'ल कजिंस' भी आई। पॉल का चचेरा भाई चार्ल्स भी गाँव से शहर पढ़ने आ गया है। पॉल और चार्ल्स दोनों ही कॉलेज में जाने से पूर्व की अंतिम परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। पंद्रह- सोलह वर्ष के यह युवक बचपन से जवानी की संक्रांति के समय को भी झेल रहे हैं। पॉल बचपन से ही शहर में रह रहा है। वह शहरी हो गया है। चार्ल्स में अभी भी ग्रामीण अंतरमुखता है। चार्ल्स जिस लड़की से प्रेम करता है, उसे भी पॉल ले उड़ता है। चार्ल्स स्वयं को पुस्तकों में उलझा लेता है, लेकिन शहरी जीवन की दुविधाएँ उस पर भारी पड़ रही हैं। चार्ल्स परीक्षा में भी अनुत्तीर्ण हो जाता है।

प्रश्न यह है कि पूर्णतया पारंपरिक कथानकों पर आधारित ये फिल्में फ्रांस में क्यों सराही जा रही थीं। फ्रांस की फिल्म निर्माण की अत्यंत समृद्ध परंपरा रही है। उस समय भी वहाँ कई बड़े- बड़े फिल्मकार फिल्में बना रहे थे। ऐसे समय में इन तीस वर्षीय युवाओं की फिल्मों की समाचारपत्रों में प्रशंसा हो रही थी और बॉक्स ऑफिस पर शाबरोल की ये दोनों फिल्में इतनी सफल रही थीं कि उनके द्वार पर निर्माता पैसे लेकर आने लगे थे।



द प्रिस्ट एंड सेराफिता

शायद इसका उत्तर वही है विषय और उसका निर्वाह। कहा जा सकता है कि इन युवकों ने सिनेमा का व्याकरण बदल दिया। शाबरोल एक उदाहरण देते हैं- मान लीजिए हम इसी शाश्वत कथानक को लें दो पुरुष एक ही स्त्री के प्रेम में हैं। और एक- दूसरे की जान लेने- देने को उतारू हैं। इस पर एक कहानी बनेगी- पॉल और चार्ल्स दोनों किसान हैं। गाँव में खेती करते हैं। पॉल अमीर है। उसके पास जमीन ज्यादा है। उसका रहने का रंग- ढंग एरिस्टोक्रेट है। चार्ल्स की खेती अच्छी है। वह भी कम सुखी नहीं है। पॉल की तुलना में अधिक स्वस्थ- सुंदर है। दोनों दोस्त हैं। सब कुछ ठीक- ठाक है। तभी शहर से एक स्त्री गाँव में आ जाती है। वह हाल ही में विधवा हुई है। इसी गाँव में उसके पति की काफी जमीन है। पैसा भी है। उसने निर्णय लिया है कि वह अब गाँव में ही रहेगी। पहले वह पॉल से मित्रता करती है। पॉल उसकी सहायता करता है। गाँव में जमने- जमाने में। लेकिन खेती की रोजमर्रा समस्याओं को हल करने में चार्ल्स अधिक उपयोगी है। चार्ल्स का स्वस्थ- शक्तिशाली शरीर और अच्छी आदतें इस विधवा को पसंद आती हैं। अब पॉल और चार्ल्स शत्रु बन चुके हैं। दोनों मर्द तथा सिनेमाघर में बैठे दर्शक की मर्दानगी इसी प्रतीक्षा में है कि देखें दोनों की भिड़ंत में कौन जीतता है। शाबरोल कहते हैं कि यह एक कथा है, गाँव की, सीधे- सादे लोगों की। भला इसमें किसी की भी कितनी रुचि हो सकती है।

अब यदि हम इसी कथा को एक नया मोड़ दे दें। तृतीय या चतुर्थ महायुद्ध हो चुका है। पूरी पृथ्वी से प्राणीमात्र का नामोनिशान मिट चुका है। इस पूरी विनाशलीला को दर्शाते हुए, हम दर्शकों को युद्ध की विभीषिका से परिचित कराते चलते हैं। सभ्यता के इस महाविनाश को आधुनिक कैमरों द्वारा भव्य रूप में चित्रित किया जा सकता है। तभी हमें एक पुरुष दिखाई देता है। दर्शकों में कुछ बच जाने की उत्सुकता जागृत होती है। कुछ देर बाद इसी पुरुष को एक दूसरा मनुष्य मिलता है। दोनों अतिप्रसन्न हैं। पूरी दुनिया में केवल वे ही दो जीवित बचे हैं। दोनों आराम से रहने लगते हैं। वहाँ एक दिन एक स्त्री भी आ जाती है। वही कथा। वही दो पुरुष आमने- सामने। एक- दूसरे के प्राणों के प्यासे। लेकिन इस बार प्रश्न पूर्ण मानव जाति के अस्तित्व का है। क्या मानव जाति इस विनाश के बाद बची रहेगी? क्या सृष्टि का फिर आरंभ हो सकेगा? या दोनों पुरुष आपस में लड़कर अपने प्राण दे देंगे?

शाबरोल ने कहा था कि पहले प्रकार की फिल्में योरप में बनती हैं और दूसरे विषय पर फिल्में बनाना अमेरिका का एकाधिकार है। यदि आप विश्व स्तर के फिल्मकार बनना चाहते हैं तो पूरी मानव जाति के अस्तित्व का प्रश्न उठाइए। आज हम देख पाते हैं कि स्टार वार्स/ एलियन/ रेडर्स ऑव द लॉस्ट आर्क/ द डे आफ्टर आदि विश्व के विनाश की कल्पना के भव्य चित्रण को भुनाने के प्रयत्न हैं।

जाहिर है शाबरोल ने पहला रास्ता ही चुना। अपने छत्तीस वर्ष के रचनात्मक जीवन में चालीस से अधिक सशक्त फिल्में बनाने वाले क्लॉद शाबरोल की प्रत्येक फिल्म की कथा इतनी ही है- एक पुरुष व दो स्त्रियाँ। या दो पुरुष और एक स्त्री। तीसरा तत्व है हत्या। इस विषय पर शाबरोल का काम अतुलनीय है।

नई लहर के इन पाँच पांडवों के पहले तीन महारथियों के बाद के नकुल और सहदेव एरिक रोहमर और जॉक रिवेत कम प्रतिभावान नहीं थे। लेकिन इन्हें व्यावसायिक सफलता देरी से मिली। जहाँ ज्याँ लुक गोदार्द की प्रथम फिल्म 'ब्रेथलेस' ने झंडे गाड़ दिए और त्रूफो की 'फोर हंड्रेड ब्लोज' और 'शूट द पियानो प्लेयर' ने नई लहर को पूर्णतया स्थापित कर दिया, वहीं शाबरोल की 'ल बो सर्ज' और 'ले कजिंस' भी सराही गई।

एरिक रोहमर की प्रथम फिल्म 'द साइन ऑफ लिओ' (१९५९) को भी आलोचकों ने सराहा और सभी ने इसे एक स्तरीय फिल्म का दर्जा दिया, लेकिन व्यावसायिक दृष्टि से यह फिल्म सफल नहीं रही। इसलिए सन् १९६६ तक रोहमर की व्यावसायिक स्तर पर फिल्म प्रदर्शित नहीं हो पाई।

रोहमर की विकास कथा भी अन्यों से भिन्न है। सन् १९२० में जन्मे रोहमर सन् १९५२ से ही 'काहीएर ड्यू सिनेमा' पत्रिका में उपसंपादक के रूप में काम करने लगे थे। उनकी आलोचकीय प्रतिभा प्रखर रही। आंद्रे बाजदा की मृत्यु के बाद १९५८ से १९६३ तक वे ही इस पत्रिका के मुख्य संपादक रहे।

इन्हीं वर्षों में रोहमर ने अपनी रचनात्मकता हेतु सही दिशा निर्धारित की। उन्होंने छह फिल्में बनाने की बड़ी योजना तैयार की। एक ही थीम पर आधारित, लेकिन अलग- अलग स्थानों तथा पात्रों के माध्यम से कही गई कथाएँ एरिक रोहमर की विशिष्ट पहचान बन गईं।

इस एक नैतिक कथा के विविध आयाम ही रोहमर की शोध का आधार बने। एक व्यक्ति जो एक स्त्री के प्रति समर्पित हो चुका है अपने प्रेम के प्रति आश्वस्त है। अचानक एक दूसरी स्त्री के संपर्क में आता है, जिसकी स्वतंत्र अभिरुचि के प्रति वह आकर्षित होता है। उसके भीतर एक नैतिक द्वंद्व उठ खड़ा होता है। अक्सर वह अपने प्रथम प्रेम की ओर वापस लौटता है।

रोहमर की फिल्मों में पात्रों का परिवेश अधिक महत्वपूर्ण बन कर उभरता है। उनका विचार है कि पात्र की मानसिकता उसके वातावरण का ही प्रतिबिंब होती है। माई नाइट एट मोड में यह वातावरण है क्रिसमस का।इस त्योहार के अवसर पर लोग घुलते- मिलते हैं। घर से रात भर गायब रह सकते हैं। पूरी फिल्म में कैथोलिक विचारधारा और कम्युनिस्ट सिद्धांतों पर लंबी बहसें हैं। यानी न तो रोहमर और न उनके पात्र जल्दीबाजी में हैं। माई नाइट एट मोड की शूटिंग सन् १९६७ के क्रिसमस के मौसम में आरंभ हुई। मुख्य अभिनेता के न आ पाने के कारण शूटिंग स्थगित कर दी गई। अगले वर्ष पुनः उसी स्थान पर उसी समय शूटिंग आरंभ हुई। सन् १९६९ में फिल्म बनकर तैयार हुई। माई नाइट एट मोड का पुरुष अपनी पत्नी को तलाक देने की तैयारी कर चुका है और मोड से विवाह करने का मन बना रहा है। इसी दौरान उसे एक मार्क्सवादी मित्र मिल जाता है। दोनों लंबी बहस में उलझ जाते हैं। इसी बीच प्रेम की दुविधाएँ इस बहस के समांतर चलती रहती हैं। सन् १९७०

में माई नाइट एट मोड का प्रदर्शन जब कान फिल्म समारोह में हुआ उस समय रोहमर अपना पचासवाँ जन्मदिन मना रहे थे।

अपनी अगली फिल्में 'क्लेअर्स नी' (क्लेअर का घुटना) में रोहमर ने परिवेश की प्राथमिकता को नवीन आयाम दिया। यह एक महिला उपन्यासकार की कथा है। इस फिल्म के लिए मुख्य अभिनेत्री के रूप में रोहमर ने एक महिला लेखिका का ही चुनाव किया। इसी प्रकार 'क्लो इन द आफ्टरनून' पति- पत्नी की कथा है। इसलिए पात्रों और अभिनेताओं को एक रूप रखने के लिए रोहमर के अभिनेता और अभिनेत्री वास्तविक जीवन में पति- पत्नी ही थे। अपने पात्रों के बहिर्मन और अंतर्मन को एक रूप कर देने, पात्र की केवल आंतरिक मनःस्थिति को ही न उभार कर उसे परिवेश का एक अंग बना देने की कला के अभ्यास ने रोहमर की फिल्मों को अतिरिक्त शक्ति प्रदान की। १९७६ में उन्होंने हाइनरिख बॉन क्लीस्ट के उपन्यास पर आधारित 'द मार्क्स ऑव ओ' तथा १९७८ में 'परसीवल' प्रस्तुत की।

एरिक रोहमर जहाँ शांत, धीमी, परिवेश का गहन परिचय देने वाली फिल्में बनाते रहे, वहीं जाक रिवेल की फिल्मों में उद्वेग, उत्तेजना, बेचैनी, गहरी उथल- पुथल का प्राधान्य रहा है। उनकी प्रथम फिल्म 'पेरिस हमारा है' ने खास तहलका मचाया। इस फिल्म के शीर्षक में यह अंतर्द्वंद्व है कि क्या पेरिस हमारा है? या उनका जो सारी दुनिया के दिमाग पर कब्जा करते जा रहे हैं। इस फिल्म का मुख्य पात्र पूछता है या तो मैं पागल होता जा रहा हूँ या फिर सारी दुनिया पागल होती जा रही है।

'पेरिस हमारा है' नई लहर की सभी फिल्मों से अलग ठीक अपने समय की समस्याओं से आमना- सामना करने वाली फिल्म है। इस फिल्म का प्रत्येक पात्र अपने इतिहास और भविष्य से छूटने का प्रयत्न कर रहा है। सन् १९५८- ६० के दौरान महायुद्ध की समाप्ति के तेरह वर्ष बाद विश्व का प्रत्येक शक्तिशाली देश परमाणु शक्ति के विकास में लगा था। अमेरिका और रूस का शीतयुद्ध अपने चरम पर था। आज हम जब भारत और पाकिस्तान के बीच शीतयुद्ध की स्थिति को देखते हैं, तो पाते है कि किस प्रकार युद्ध की छाया हथियारों की होड़ को बढ़ावा देती है। उस समय फ्रांस भी अपनी परमाणु शक्ति विकसित कर रहा था और देश के बजट का बड़ा भाग युद्ध की तैयारियों में व्यय हो रहा था। 'पेरिस हमारा है' इन सब समस्याओं से सीधा साक्षात्कार है। फिल्म का प्रत्येक पात्र जैसे झूठ बोल रहा है। मूलतः यह कलाकारों की दुनिया है। मुख्य



त्रूफाँ की फिल्म फोर हण्ड्रेड ब्लोज

पात्र ऐसे चित्र बनाता रहता है, जिनमें मुँह के बड़े हिस्से में जबड़ा ही प्रधान हो गया है। दाँत ही व्यक्ति की सत्ता को चरितार्थ करते हैं। अन्य युवक अपनी प्रेमिका से बार- बार वादा कर चुके हैं कि वे उसे ही अपने नाटक की नायिका बनाएँगे, परंतु ठीक समय पर व्यावसायिक दबावों के चलते उसे एक प्रसिद्ध अभिनेत्री को लेना पड़ता है।

'पेरिस हमारा है' हमारे समय के केऑस को अत्यंत सूक्ष्मता और कुशलता से प्रतिबिंबित करती है। संवादहीनता की स्थिति, मित्र या प्रेमिका के समक्ष अपनी सफाई दे सकने की अक्षमता, लोगों के झूठ जैसे आलमारियों में बंद कंकाल उधड़ते जाते हैं। इस युग सत्य को जब एक- दो घंटे की फिल्म में समेटने का काम जाक रिवेल करते हैं तो खुद भी इस झंझट में फँस जाते हैं और दर्शकों को भी उलझा लेते हैं।

कठिनता या असंभव को संभव कर सकने की इच्छा और उसके लिए उतना ही बड़ा जी- तोड़ प्रयत्न करने वाले पात्रों की कथा कह पाना जाक रिवेल के प्रिय विषय रहे हैं। सन् १९८८ में अब तक की ताजातरीन कृति में वे एक पेंटर के कलात्मक संघर्ष का चित्रण करते हैं। यह कलाकार साठ की उम्र पार कर चुका है। एक समय वह अतिप्रसिद्ध था। अब लोग उसे भूल चुके हैं। पेरिस से दूर फ्रांस के एक गाँव में, जो अपनी पुरानी भव्य इमारतों के कारण अमेरिकी टूरिस्टों की सैरगाह बन गया है, 'ल बैले दैनस्यूस' दो अमेरिकी स्त्रियों से आरंभ होती है। ये दोनों टूरिस्ट एक रेस्तराँ में बैठी हैं। इनकी कल्पना में कलाकार का रोमांटिक रूप बसा है। एक कलाकार दुनिया की निगाहों से बचना चाहता है। एक महिला छायाकार- पत्रकार चोरी- छुपे उसकी तस्वीरें ले रही है। यह कलाकार इस महिला को लाखों रुपए देकर अपने फोटोग्राफ का नेगेटिव वापस लेने का सौदा करता है। दोनों अमेरिकी महिला टूरिस्ट इस घटना में रुचि ले रही हैं। ये दोनों स्त्री-पुरुष अपने कमरे में आते हैं। दोनों फ्रांसीसी हैं। वास्तव में पुरुष स्वयं छायाकार है। स्त्री उसकी मॉडल तथा प्रेमिका है। ये दोनों अमेरिकी स्त्रियों को दिखाने के लिए, अमेरिकी प्रवृत्ति का मजाक उड़ाने के लिए यह नाटक कर रहे थे।

फ्रांसीसी नई लहर ने सिनेमा को एक नया व्याकरण दिया। इस लहर के बाद सिनेमा की संरचना पूर्णतया बदल गई। यह आंदोलन सन् १९६० से १९७० तक जीवंत बना रहा। ■

फिल्म : थ्री कलर्स-ब्ल्यू



जर्मनी में सिनेमा की शुरूआत फ्रांस से भी पहले हो चुकी थी। लेकिन दो युद्धों में उलझ जाने से जर्मन-सिनेमा के समीकरण जटिल हो गए। पूर्वी-पश्चिमी जर्मनी के सिनेमा में हवाई-मुक्केबाजी के बाद अब एकीकरण से ताजी हवा का झोंका आया है।

एक से दो और दो से एक जर्मन सिनेमा

विश्व व्यवस्था में साम्यवाद के अंत के साथ जहाँ साम्यवादी देशों के विभाजन का दुःखद अवसर आया वहीं एकीकरण की सुखद हवा भी आई। पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी एक राष्ट्र के रूप में विश्व परिदृश्य पर उभरे। एकीकरण के बाद पूर्वी-जर्मनी का साम्यवाद समर्थक/ प्रेरित सिनेमा और पश्चिमी जर्मनी का पूँजीवादी सिनेमा अब किस तरह के सिनेमा से विश्व का परिचय कराते हैं- इसे अंतिम रूप से नहीं कहा जा सकता। फिलहाल पिछले दो-तीन वर्ष के आँकड़े बताते हैं कि जर्मनी के सिनेमा की भूमिका विश्व सिनेमा में निर्णायक हो सकती है।

इतिहास की दृष्टि से जर्मनी का औपचारिक विभाजन चालीस के उत्तरार्द्ध में हुआ था। इस तरह जर्मनी में सिनेमा के विकास के तीन चरण स्पष्ट दिखाई देते हैं- विभाजन से पूर्व का जर्मन सिनेमा/ विभाजित राष्ट्रों पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी का सिनेमा/ और एकीकरण के बाद का जर्मन सिनेमा।

ऐतिहासिक दृष्टि से विश्व सिनेमा की शुरूआत का सेहरा फ्रांस को बाँधा जाता है। एक तथ्य यह भी है कि जर्मनी में सिनेमा की शुरूआत फ्रांस से भी पहले हो चुकी थी। पेरिस में पहला फिल्म-प्रदर्शन (दिसंबर १८९५) से पहले बर्लिन के विंटरगार्टन में १ नवंबर १८९५ को स्क्लादानोव्स्की बंधुओं द्वारा हो चुका था। लेकिन विधिवत् फिल्म निर्माण ऑस्कर मेस्टर ने शुरू किया। १८९७ तक उनकी ८४ फिल्में बाजार में आ चुकी थीं। इस समय तक तेजी से बढ़ीं फिल्म कंपनियों, वितरकों और सिनेमाघरों की संख्या के कारण बाजार फ्रेंच/इतालवी/ अमेरिकी फिल्मों से भर गया था। १९१० के करीब पॉल डेविडसन की कंपनी ने फिल्म निर्माण शुरू किया। पहली जर्मन फिल्म बाजार में आई १९१३ में। फिल्म थी 'देर आंदेरो।

प्रथम विश्व युद्ध के कारण आयात पर असर पड़ा तो घरेलू फिल्मों की माँग बढ़ी। करीब २००० सिनेमाघर खुले। कई फिल्म कंपनियाँ प्रारंभ हुईं। १९१३ में २५ थीं जो बढ़कर १९१९ में २५० हो गईं। १९१८ में सेंसरशिप खत्म कर दी गई। दो साल बाद फिर लागू हो गई। इसी बीच नए प्रकार की फिल्में उभरकर आईं जिनमें शैक्षिक स्तर पर सैक्स को हल्की पोर्नोग्राफी द्वारा स्पष्ट किया जाता था। जैसे ओसवाल्ड की दो भाग में बनी फिल्म 'प्रॉस्टिट्यूट' में हुआ। इसी समय बनी दो फिल्मों 'पेशन' (निर्देशक लुबिट्श) और 'द कैबिनेट ऑव डॉ. कैलिगरी' (नि. वियने)ने विश्वख्याति प्राप्त की। दूसरी फिल्म आज भी अभिव्यंजनावाद के प्रथम और पूर्ण उदाहरण के रूप में चुनी जाती है। मुरनो/ लैंग/लेनी/पिक/ डुपांट/ ग्रुने/ रॉबिन्सन और वॉन गेर्लक जैसे निर्देशकों ने 'मोन्सटर' फिल्मों के इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। वह समय ऐसा था जब हॉलीवुड से बाहर सबसे ज्यादा फिल्में (प्रतिवर्ष २००-३००) जर्मनी में बनती थीं। इनकी गुणवत्ता कमजोर थी। यही कारण रहा कि जर्मनी के सिनेमाघर हॉलीवुड की फिल्मों से भर गए।



पश्चिम जर्मनी की फिल्म सिएरा लिओन

१९२९ में जर्मन लीग फॉर इंडिपेंडेंट फिल्म की स्थापना होने के बाद सेंसरशिप सख्त हो गई। यही वह समय था जब राजनीतिक कारणों से लुबिट्श/ नेग्री/ बुकोवत्स्की/ डुपांट/ पिक/ लेनी/ मुरनो/ जेनिंग्स/ पोमर ने जर्मनी छोड़ दिया। इससे जर्मन सिनेमा को बड़ा धक्का लगा।

१९२९ में ही पहली बोलती जर्मन फिल्म बनी 'आई किस योर हैंड मैडम।' ध्वनि की उपलब्धता से गीति-नाटिकाओं से मुक्त फिल्में काफी लोकप्रिय हुईं। अनेक फिल्में विदेशी भाषाओं खासकर फ्रेंच और अँग्रेजी में बनीं। इस काल में सामाजिक राजनीतिक रूप से जागरूक और ध्वनि के कल्पनात्मक प्रयोग की दृष्टि से अनेक उल्लेखनीय फिल्में बनीं। इनमें स्टर्नबर्ग की 'द ब्ल्यू एंजेल (१९३०)/ पाब्स्ट की 'कांग्रेस डांसेस वेस्ट फ्रंट १९१८' (१९३१)। ओसवाल्ड की 'द केप्टन फ्रॉम केपेनिक' १९३१/ लैंग की 'एम' १९३१ उल्लेखनीय है। वामपंथी सहानुभूति वाली ये फिल्में राष्ट्रीयतावादी फिल्मों से हर दृष्टि में श्रेष्ठ थीं।

नाजी पार्टी ने १९२७ के आसपास से सिनेमा में अपने पाँव जमाना शुरू कर दिया था। अनेक चुनावी और प्रोपेगैंडा फिल्में उसने बनवाईं, जिनके सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए सिनेमा मालिकों को रिश्वत तक दी जाती थी। १९३३ में नाजी पार्टी ने ऐसी फिल्मों की जिम्मेदारी फिल्मकार गोबेल को सौंप दी। लेकिन इस तरह की फिल्में संख्या में कम बनीं। ज्यादातर हल्की मनोरंजक फिल्में बन रही थीं, जिन्हें स्क्रिप्ट से स्क्रीन तक सख्त सेंसरशिप से गुजरना होता था। प्रचारात्मक न्यूजरीलों का यह हाल था कि वे कभी-कभी घंटे भर लंबी होती थीं।

१९३३ में कुटूर कॉमेर के एक भाग के रूप में स्थापित राइंक फिल्म कामेर ने इंडस्ट्री पर कब्जा कर लिया। दस वर्ष तक इसी का आधिपत्य रहा। १९४२ में जब सिनेमा का राष्ट्रीयकरण हुआ तो १९३३ से पूर्व बनी अनेक फिल्में जब्त कर फिल्म आलोचना पर सेंसरशिप लगा दी गई। फिल्मोद्योग से यहूदियों का सफाया करने का अभियान छेड़ा गया। अनेक फिल्मकार देश छोड़कर चले गए।

द्वितीय विश्वयुद्ध खत्म होने के बाद अनेक फिल्में व फिल्मकार काली सूची में डाल दिए गए। सिनेमाघरों में नाजी-विरोधी अमेरिकी फिल्मों की बहुतायत थी।

१९४९ में जर्मनी का औपचारिक रूप से पूर्वी और पश्चिमी में विभाजन हो गया। यू.एफ.ए. और स्टुडियो सहित सभी प्रकार की सुविधाएँ रूसी झोन में चली गईं। फिल्म निर्माण राज्य के नियंत्रण में हो गया। पूर्वी जर्मनी में बनी फिल्मों में फासीवाद विरोधी और कामगार वर्ग समर्थित फिल्में बनने लगीं। इनका स्वर समाजवादी यथार्थवाद का था। इसके विपरीत पश्चिमी जर्मनी में स्वतंत्र निर्देशकों ने जो फिल्में बनाईं उनका चरित्र पूँजीवादी था। व्यावसायिकता और वैचारिक स्वतंत्रता के चलते पश्चिम जर्मनी में शिक्षाप्रद सेक्स फिल्में लौट आईं। साठ के दशक में दूरदर्शन से प्रतियोगिता बढ़ने के कारण भी सेक्स और सनसनी को प्रमुख थीम बना दिया। इसी दशक में शामोट बंधु/ सेंफ/ श्लॉन्डोर्फ/ स्त्रॉब/ क्लूगे/ फॉसबिंडर/ हर्जोग/ शॉफ/ विम वेंडर्स जैसे निर्देशक उभरकर आए।

अगले चार दशक तक पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी में खासकर पश्चिमी जर्मनी में अनेक ऐसी फिल्में बनीं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय ख्याति पाई। एकीकरण के बाद बदले हुए समाज और भूगोल के साथ फिल्म निर्माण जारी है।

● *प्रमुख फिल्में- देर स्तुदेन्ति वॉन प्राग १९१३/ देर गोलेम १९१४/ होमुनकुलस १९१६/ दे लेट्जे मान १९२४/ सिंड्रेला १९२३/ जॉयलेस स्ट्रीट १९२५/ ऑल क्वाइट ऑन द वेस्टर्न फ्रंट १९३०/ यॉर्क १९३१/ देर रिबेल १९३२/ ट्रम्फ ऑव द विल १९३४/ द एटर्नल ज्यू १९४०/ मैरिज इन द शेडो १९४७/ अफेयर ब्लूम १९४८/ द ब्रिज १९५९/ सिल्वर सिटी १९६८/ स्केटर्ड पिक्चर्स १९६९/ द कौंसिल ऑव लव १९८२/ द डे ऑव द इडियट १९८२/ मोटिफ्स एंड मोटिव्ज १९८९/ यूनाइटेड जर्मनी १९९२/ फारअवे, सो क्लोज १९९४/ द हाउस ऑफ द स्पिरिट १९९४।*□

■

नवयथार्थवाद का अगुवा इतालवी सिनेमा



इटली की फिल्म : इट इज हैप्निंग टूमारो

विश्व सिनेमा में विशेष स्थान का अधिकारी इतालवी सिनेमा अपने वैचारिक स्तर और बहुलता के कारण अग्रणी है। नव-यथार्थवाद के रूप में इतालवी सिनेमा ने उत्कृष्ट फिल्में दीं। दूसरे छोर पर हॉरर रहस्य फिल्में बनाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित की। रोजेलिनी/ वितोरियो द सिका/ फेलिनी/ अंतोनियोनी से लगाकर इधर विश्व भर में चर्चित बर्नार्डो बर्तो लूसी तक आने से इटली के फिल्मोद्योग को विभिन्न उतार-चढ़ाव से गुजरना पड़ा है।

इटली में सिनेमा की शुरुआत होती है ११ नवंबर १८९५ से। इस दिन एक इतालवी सज्जन फिलोतेओ अलबेरिनि ने अपने 'काइनेमाटोग्राफी अलबेरिनी' नामक यंत्र को फिल्में खींचने, प्रिंट करने और प्रोजेक्टिंग के लिए पेटेन्ट करवाया था। दस साल बाद उन्होंने अपने एक सहकर्मी सान्तोनी के साथ १९०५ में पहला इतालवी स्टुडियो स्थापित किया। इसके ठीक एक वर्ष पूर्व १९०४/५ में रोबेर्तो ओमेन्या द्वारा पहली इतालवी न्यूज रील तूरिन में बनाई जा चुकी थी। इसी समय भव्य वेशभूषा और सेट वाली पहली कास्ट्यूम फिल्म 'ला प्रेसा दि रोमा' अलबेरिनि ने रोम में बनाई। १९०६ में अलबेरिनि की कंपनी का नाम 'सिनेस' हो गया। उधर तूरिन में अम्ब्रोजियो ने भी एक कंपनी खोली। उसके दो साल बाद १९०८ में शॉमेन्यो और पास्त्रोने ने तूरिन में ही 'इताला' फिल्म कंपनी शुरू की।

इतालवी फिल्मों के ये आरंभिक वर्ष ऐतिहासिक और साहित्यिक विषयों के क्लॉसिक के रूपांतरण थे। शेक्सपीयर/ दांते/ तास्सो/ मान्जोनी सर्वप्रिय लेखक थे। ट्रॉय का पतन, ओडेस्सी पोम्पेई का ध्वंस, कॉमेडी, ड्रामा आदि लोकप्रिय विषय थे। लेकिन यह दौर कॉस्ट्यूम फिल्मों के नाम पर दर्ज है।

इतालवी सिनेमा के प्रारंभिक विकास में अलबेरिनी की 'सिनेस' कंपनी का बड़ा योगदान है। सिनेस के बैनर तले बनी गुआज्जोनी की 'कुओ वादीस' को इस समय की सर्वश्रेष्ठ कॉस्ट्यूम फिल्म मान सकते हैं। अगले ही वर्ष पास्त्रोने की सार्वकालिक फिल्म आई 'काबिरिया' जिसने

सिनेमा को वैचारिक धरातल प्रदान करने और महान फिल्मकारों की परम्परा का पोषक देश रहा है इटली। यहाँ की कालजयी फिल्मों से दुनिया भर के फिल्मकारों ने प्रेरणा ली है।

डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ को बड़े स्तर की फिल्में बनाने के लिए प्रेरित किया था। श्रेष्ठ कॉस्ट्यूम फिल्म के इस दौर में फ्रांचेस्का बेर्तिनि और लिडा बोरेल्ली ऐसी अभिनेत्रियाँ थीं, जिन्हें, गॉडेसेस की पदवी प्राप्त थी। दुर्भाग्य से कॉस्ट्यूम फिल्मों की व्यापक सफलता ने सितारों के सिर चढ़ा दिए और वे अनाप-शनाप फीस मांगने लगे। इसलिए कुछ ही वर्षों में फिल्मोद्योग दिवालिया हो गया।

१९१४ के आसपास 'लाइट कॉमेडी' का चलन बढ़ा। लूचियो द' आम्ब्रो की फिल्में काफी पसंद की गईं, जिन्होंने ऑपेरा परंपरा में संगीत का बेहतरीन इस्तेमाल किया था। 'वेरिस्मो' और १९वीं सदी के सिसिलियन साहित्य का भी पर्याप्त इस्तेमाल हुआ। 'वेरिस्मो' शैली की प्राकृतिक, सेटिंग्स, वेशभूषा और प्लॉट में इतालवी नव यथार्थवाद के



फिल्म : बॉटलनैक

बीज मिलते हैं। युद्ध के कारण आर्थिक संकट गहराने से फिल्मोद्योग की स्थिति इतनी खराब हुई कि १९२१ तक वह दिवालिया घोषित हो गया। एक ही वर्ष के भीतर कई स्टुडियो बंद हो गए। जो बचे, वहाँ विदेशी सहयोग से थोड़ा काम होता रहा। इस संकट से छुटकारा ध्वनि के आने के बाद तब मिलता है जब सरकार फिल्मोद्योग को अपने हाथ में लेती है। फिल्म निर्माण बढ़कर १९३० की सात फिल्मों के मुकाबले १९३९ में ८७ फिल्में हो जाता है। किन्तु सख्त सेंसरशिप के कारण इस समय की फिल्मों का कैनवास व्यापक नहीं हो सका। सफेद टेलीफोन और श्वेत गाऊन पहनने वाली सुसज्जित अभिनेत्रियों के कारण 'व्हाइट टेलीफोन' संज्ञा वाली फिल्में काफी बनीं। इनमें समकालीन वास्तविकता वाले विषयों के प्रति उपेक्षा भाव बरता गया था।

चेन्त्रो स्पेरिमेंताले दि सिनेमाटोग्राफिया (१९३५) और चिनेचिता (१९३७) इन दोनों की स्थापना मुसोलिनी द्वारा की गई। इसी समय उन्नीसवीं सदी के साहित्य की तरफ भी कुछ निर्देशक मुड़े जिनमें मारियो सोल्दाती/ रेनातो कास्तेल्लानी/ अल्बेर्तो लात्तूदा को अपनी विशिष्ट शैली के कारण 'कैलीग्रॉफिस्ट' विशेषण मिला था। इनकी फिल्में वेरिस्मो और नव यथार्थवाद के बीच सेतु की तरह थी जिनमें 'सच्चा इटली' प्रकट हुआ था।

१९४२ में इतालवी फिल्मों में महत्वपूर्ण मोड़ आता है। विस्कोंती की फिल्म 'ओसेसिओने' सेंसर द्वारा कटी-पिटी होने के बावजूद इसकी अगुवा बनती है।" इस समय आर्थिक कारणों से फिल्मकार गलियों में निकल आए। सामान्यजन से अभिनय करवाया। उन्हीं के विषय लिए, जैसा कि रोजेलिनी की फिल्मों 'रोमा, चिता अपेर्ता (१९४५), पाइसा (१९४७) में हुआ। इसके बाद वित्तोरियो द सिका की बायसिकल थीव्ज (१९४८), गुसेपे दे सान्तिस की काक्चिया ट्रेजिका (१९४७) बीटर राइस जैसी उत्कृष्ट फिल्में आती है। उधर सेजारे जावातिनी ने पत्रकारिता के माध्यम से नवयथार्थवादी सिद्धांतों का प्रचार किया।

विश्व का ध्यान आकर्षित करने के बावजूद नवयथार्थवादी फिल्में व्यावसायिक रूप से लाभदायक नहीं रहीं। इतालवी दर्शक भी हल्की-फुल्की मनोरंजक फिल्में चाहने लगे थे। यही कारण रहा कि १९५० आने तक नवयथार्थवाद का अंत दिखाने देने लगा। इसके फिल्मकारों ने धन की प्राप्ति के कई समझौते भी किए। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से निर्माताओं ने कॉमेडी/मिलोड्रामा/ कॉस्ट्यूम फिल्मों पर पैसा लगाया। अमेरिकी प्रतिस्पर्धा से जूझने के लिए योरपीय कंपनियों के साथ अनुबंध किए। इन विपरीत परिस्थितियों में भी नवयथार्थवाद के अगुवा रोजेलिनी/ दसिका/ विस्कोंती सक्रिय थे। दूसरी तरफ केलिनी और अंतोनियोनी स्थापित होने की प्रक्रिया में थे। जेर्मी/कार्लो लिज्जानी/ फ्रांको रोसी/ कूजियो मालापार्ते की बेहतरीन फिल्में भी इस समय आ रही थीं। इस दौर में सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ जीतकर फिल्मों में आने वाली सुन्दरियाँ इतालवी फिल्मों में छा गई थीं जैसे सिल्वाना मान्गानो/ जीना लोलोब्रिगिडा/ क्लाउदिया कार्दिनाले/ सोफिया लॉरेन। एपिसोड फिल्में भी बनीं जिन्हें विभिन्न निर्देशकों को निर्देशित करने का दायित्व सौंपा जाता था।

केलिनी और अंतोनियोनी के साथ साठ के दशक में इतालवी सिनेमा अपना पुनरुत्थान देखता है। इसका पहला संकेत कान फिल्म समारोह (१९६०) में मिलता है। जहाँ 'ला अवेन्तूरा' और 'ला दोल्चेविता' प्रस्तुत होती है। अंतोनियोनी की फिल्म पर नाक-भौं सिकोड़ी जाती है और फेलिनी को बहिष्कार की धमकी मिलती है, किन्तु इन दोनों निर्देशकों की फिल्म कला ने आगामी इतालवी सिनेमा को गहरे तक प्रभावित किया। इसके बाद साठ के इस दौर ने अनेक महत्वपूर्ण फिल्मकारों का उठाव देखा जिनमें ननी लॉय/ जानफ्रांको वोसियो/ फ्रांचेस्को रोजी प्रमुख हैं। नवयथार्थवाद से प्रभावित फिल्मकार भी इस समय सक्रिय थे जैसे एर्मानो/ ओल्मी/ पीयरे पासोलिनी/माऊरो बोलोन्यिनी प्रमुख हैं। औद्योगिक इतालवी समाज पेत्री/ बेलोक्चियो/ बेर्तोलुच्ची/जुलिनी की फिल्मों में व्यक्त हुआ।

सातवें-आठवें दशक में अमेरिकी धन लगने और व्यावसायिक मजबूरी के कारण इतालवी फिल्मों की मौलिकता प्रभावित हुई। अब अधिकांश फिल्में अमेरिकी कलाकारों के साथ हॉलीवुड की पुरानी फैशन की हॉरर या रहस्य फिल्मों का संस्करण बनने लगी। मारियो बावा की ऐसी फिल्मों ने काफी ख्याति बटोरी। दूसरी तरफ वेस्टर्न फिल्मों की तर्ज पर स्पाघेत्ती वेस्टर्न फिल्में बनी जिनमें सेर्जियो लेओने की फिल्में महत्वपूर्ण हैं।

इतालवी फिल्मोद्योग की यह एक विशेषता ही है कि वहाँ रेडियो टेलीविजन द्वारा फिल्म निर्माण में सहकारी भूमिका निभाई जाती है। पिछले वर्षों की अनेक फिल्मों में राई का सहयोग उल्लेखनीय रहा है। इसी कारण इतालवी सिनेमा की अनेक हस्तियों ने टी.वी. के लिए फिल्में बनाना स्वीकार किया। जैसे रोजेलिनी/ बर्तोलुच्ची/ पेत्री/ ओल्मी/रिसी/ लिलियाना काबानी/ आद्रियानो आप्रा।

पिछले ढाई-तीन दशक में सक्रिय रहे इतालवी फिल्मकारों की पीढ़ी आज विश्व सिनेमा की उल्लेखनीय पीढ़ी है। इसमें एक साथ वरिष्ठ फिल्मकारों के साथ नए भी सक्रिय हैं। माइकेल एंजोलो अंतोनियोनी/ फेदेरिको फेलिनी/ वित्तोरियो द सिका/ पासोलिनी/ विस्कोंती/ फ्रांचेस्को रोजी/ बर्नार्दो बर्तोलुच्ची आज इतालवी सिनेमा के अपरिहार्य अंग हो गए हैं।

● ***प्रमुख इतालवी फिल्म :*** *मा ल अमोरे मियो नॉन मुओरे १९१३/ सोले १९२९/ रोताइये १९२९/ कामिचा नेरा १९३५/ शिपिओने ल अफ्रीकानो १९३७/ बेंगासी १९४२/ इल क्रिस्तो प्रोइबितो १९५०/ अक्कातोने १९६१/ माम्मा रोमा १९६२/ क्वात्रो जोनति दि नेपोली १९६२/ आई फिदानजाती १९६३/ इट विल हैप्पन टुमारो १९८८/ थ्री सिस्टर्स १९८९/ द लीजेण्ड ऑव द होली ड्रिंकर १९८९/ चाइल्डहुड फ्रेण्ड १९९३/ डियर डायरी १९९४।*

□ हंगरी

पहाड़ी की तलहटी में हरी घास पर सुनहरी फिल्में

हंगरी के फिल्मकारों ने विश्व सिनेमा को कई अजीब मुहावरे दिए हैं। मसलन कैमरा और कलाकार लेकर किसी पहाड़ी की तलहटी में एक सेट लगा कर कम से कम शॉट में पूरी फिल्म बनाइए और सबको चौंकाइए।

विश्व सिनेमा परिदृश्य पर हंगरी-सिनेमा की पहचान उसकी कतिपय उन विशिष्टताओं की देन रही है जो उसे अन्य देशों से आसानी से अलग कर देती है। हंगरी के फिल्मकारों का समर्पण इसमें प्रमुख कारक है। यहाँ के फिल्मकारों ने स्टुडियो-संस्कृति का लोभ नहीं पाला। बुदापेस्ट में स्टुडियो सुविधा रही है। फिल्मकारों ने स्टुडियो के बजाए मैदानों-पहाड़ों में जाकर जीवंत पृष्ठभूमि में फिल्मांकन किए। इस तरह उन्होंने ध्वनि और छाया के खेल सिनेमा को वास्तविक धरातल दिया। दूसरी तरफ संसाधनों में मितव्ययी रहे। एक स्थान विशेष पर सेट खड़ा कर पूरी फिल्म कम से कम दृश्यों व साधनों में फिल्माने में वे माहिर हैं। थीम भी लगभग आधे से ज्यादा फिल्मों में युद्ध और उसके प्रभाव के इर्द-गिर्द केंद्रित रही है।

इसके बावजूद आर्थिक कमजोरी एक ऐसा कारण रही है जिसने यहाँ के फिल्मकारों के हाथ बाँधे। इसके समाधान के लिए या तो उन्हें विदेशों में जाकर फिल्में बनाना पड़ी या विदेशी सहायता लेनी पड़ी। इससे उनकी प्रतिबद्धता प्रभावित नहीं हुई। प्रतिबद्धता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पिछले ढाई-तीन दशक में विश्व सिनेमा के नक्शे पर आए उतार-चढ़ाव से नितांत अविचलित रहकर हंगरी में निरंतर २० के करीब फिल्में प्रतिवर्ष बनती जा रही हैं। इन फिल्मों ने विभिन्न समारोहों में अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। प्रशंसित और पुरस्कृत भी हुई हैं। यह भी रोचक तथ्य है कि लंबे समय तक यहाँ की फिल्में, हंगरी के मुकाबले बाहरी देशों में ज्यादा पसंद की गई हैं। इसी के साथ हंगरी फिल्मों का एक ऋणात्मक बिंदु भी उभरकर सामने आया है। वह है उनकी फिल्मों के विषयों का पुरानापन और विश्व सिनेमा की व्यावसायिक दौड़ से अपने को बचाए रखना। फिल्म वितरण व्यवस्था पर भी विदेशी कंपनियाँ प्रभावशाली रही हैं। इसी तरह दूरदर्शन ने भी अपने ढंग से फिल्मोद्योग को प्रभावित किया है। इन सब कमजोरियों के बावजूद योरपीय देशों में हंगरी फिल्मों का स्थान निर्विवाद है।

हंगरी में सिनेमा की शुरूआत १८९६ से होती है। इस वर्ष यहाँ एक कैफे 'वैलेंस' में पहला फिल्म प्रदर्शन हुआ था। दो वर्ष बाद इस कैफे के मालिक द्वारा हंगरी की पहली फिल्म कंपनी प्रोजेक्टोग्राफ स्थापित की जाती है। यह कंपनी फिल्म निर्माण के साथ-साथ सिनेमागृह संचालन, प्रोजेक्टर-कैमरा-विदेशी फिल्में आदि किराए पर देती थी। १९१२ से १९१७ तक हंगरी में २७० स्थाई सिनेमाघर बन चुके थे। लेकिन इसके बाद भी फिल्म निर्माण गति नहीं पकड़ पाया।

हंगरी सिनेमा को सैद्धांतिक आधार देकर समृद्ध बनाने का पहली बार स्थाई काम किया अलेक्जांदेर कोर्दा ने। उन्होंने दैनिक विलाग में नियमित फिल्म समीक्षा लिखी। १९१९ में फिल्मोद्योग में कुकुरमुत्ते की तरह अनेक फिल्म कंपनियाँ अस्तित्व में आई। कोर्दा उनमें से एक प्रमुख कंपनी कोर्विन के निर्देशक बने। कोर्दा बाद में योरप/हॉलीवुड जाकर फिल्में बनाने लगे। वहाँ उनके नाम अनेक फिल्में दर्ज हैं।

बीस के दशक की अधिकांश फिल्में बुदापेस्ट स्टुडियो में बनीं।



हंगेरियन फिल्म डायरी फार माय लव

डी. डब्ल्यू. ग्रिफिथ को बड़े स्तर की फिल्में बनाने के लिए प्रेरित किया था। श्रेष्ठ कॉस्ट्यूम फिल्म के इस दौर में फ्रांचेस्का बेतिनि और लिडा बोरेल्ली ऐसी अभिनेत्रियाँ थीं, जिन्हें, गॉडेसेस की पदवी प्राप्त थी। दुर्भाग्य से कॉस्ट्यूम फिल्मों की व्यापक सफलता ने सितारों के सिर चढ़ा दिए और वे अनाप-शनाप फीस मांगने लगे। इसलिए कुछ ही वर्षों में फिल्मोद्योग दिवालिया हो गया।

१९१४ के आसपास 'लाइट कॉमेडी' का चलन बढ़ा। लूचियो द' आम्ब्रो की फिल्में काफी पसंद की गईं, जिन्होंने ऑपेरा परंपरा में संगीत का बेहतरीन इस्तेमाल किया था। 'वेरिस्मो' और १९वीं सदी के सिसिलियन साहित्य का भी पर्याप्त इस्तेमाल हुआ। 'वेरिस्मो' शैली की प्राकृतिक, सेटिंग्स, वेशभूषा और प्लॉट में इतालवी नव यथार्थवाद के



फिल्म : बॉटलनैक

बीज मिलते हैं। युद्ध के कारण आर्थिक संकट गहराने से फिल्मोद्योग की स्थिति इतनी खराब हुई कि १९२१ तक वह दिवालिया घोषित हो गया। एक ही वर्ष के भीतर कई स्टुडियो बंद हो गए। जो बचे, वहाँ विदेशी सहयोग से थोड़ा काम होता रहा। इस संकट से छुटकारा ध्वनि के आने के बाद तब मिलता है जब सरकार फिल्मोद्योग को अपने हाथ में लेती है। फिल्म निर्माण बढ़कर १९३० की सात फिल्मों के मुकाबले १९३९ में ८७ फिल्में हो जाता है। किन्तु सख्त सेंसरशिप के कारण इस समय की फिल्मों का कैनवास व्यापक नहीं हो सका। सफेद टेलीफोन और श्वेत गाऊन पहनने वाली सुसज्जित अभिनेत्रियों के कारण 'व्हाइट टेलीफोन' संज्ञा वाली फिल्में काफी बनीं। इनमें समकालीन वास्तविकता वाले विषयों के प्रति उपेक्षा भाव बरता गया था।

चेन्त्रो स्पेरिमेंताले दि सिनेमाटोग्राफिया (१९३५) और चिनेचिता (१९३७) इन दोनों की स्थापना मुसोलिनी द्वारा की गई। इसी समय उन्नीसवीं सदी के साहित्य की तरफ भी कुछ निर्देशक मुड़े जिनमें मारियो सोल्दाती/ रेनातो कास्तेल्लानी/ अल्बेर्तो लात्तूदा को अपनी विशिष्ट शैली के कारण 'कैलीग्रॉफिस्ट' विशेषण मिला था। इनकी फिल्में वेरिस्मो और नव यथार्थवाद के बीच सेतु की तरह थी जिनमें 'सच्चा इटली' प्रकट हुआ था।

१९४२ में इतालवी फिल्मों में महत्वपूर्ण मोड़ आता है। विस्कोंती की फिल्म 'ओसेसिओने' सेंसर द्वारा कटी-पिटी होने के बावजूद इसकी अगुवा बनती है। इस समय आर्थिक कारणों से फिल्मकार गलियों में निकल आए। सामान्यजन से अभिनय करवाया। उन्हीं के विषय लिए, जैसा कि रोजेलिनी की फिल्मों 'रोमा, चिता अपेर्ता (१९४५), पाइसा (१९४७) में हुआ। इसके बाद वित्तोरियो द सिका की बायसिकल थीव्ज (१९४८), गुसेपे दे सान्तिस की काक्विया ट्रेजिका (१९४७) बीटर राइस जैसी उत्कृष्ट फिल्में आती है। उधर सेजारे जावातिनी ने पत्रकारिता के माध्यम से नवयथार्थवादी सिद्धांतों का प्रचार किया।

विश्व का ध्यान आकर्षित करने के बावजूद नवयथार्थवादी फिल्में व्यावसायिक रूप से लाभदायक नहीं रहीं। इतालवी दर्शक भी हल्की-फुल्की मनोरंजक फिल्में चाहने लगे थे। यही कारण रहा कि १९५० आने तक नवयथार्थवाद का अंत दिखाने देने लगा। इसके फिल्मकारों ने धन की प्राप्ति के कई समझौते भी किए। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से निर्माताओं ने कॉमेडी/मिलोड्रामा/ कॉस्ट्यूम फिल्मों पर पैसा लगाया। अमेरिकी प्रतिस्पर्धा से जूझने के लिए योरपीय कंपनियों के साथ अनुबंध किए। इन विपरीत परिस्थितियों में भी नवयथार्थवाद के अगुवा रोजेलिनी/ दसिका/ विस्कोंती सक्रिय थे। दूसरी तरफ फेलिनी और अंतोनियोनी स्थापित होने की प्रक्रिया में थे। जेर्मी/कार्लो लिज्जानी/ फ्रांको रोसी/ कूजियो मालापार्ते की बेहतरीन फिल्में भी इस समय आ रही थीं। इस दौर में सौन्दर्य प्रतियोगिताएँ जीतकर फिल्मों में आने वाली सुन्दरियाँ इतालवी फिल्मों में छा गई थीं जैसे सिल्वाना मान्गानो/ जीना लोलोब्रिगिडा/ क्लाउदिया कार्दिनाले/ सोफिया लॉरेन। एपिसोड फिल्में भी बनीं जिन्हें विभिन्न निर्देशकों को निर्देशित करने का दायित्व सौंपा जाता था।

फेलिनी और अंतोनियोनी के साथ साठ के दशक में इतालवी सिनेमा अपना पुनरुत्थान देखता है। इसका पहला संकेत कान फिल्म समारोह (१९६०) में मिलता है। जहाँ 'ला अवेन्तूरा' और 'ला दोल्चेविता' प्रस्तुत होती है। अंतोनियोनी की फिल्म पर नाक-भौं सिकोड़ी जाती है और फेलिनी को बहिष्कार की धमकी मिलती है, किन्तु इन दोनों निर्देशकों की फिल्म कला ने आगामी इतालवी सिनेमा को गहरे तक प्रभावित किया। इसके बाद साठ के इस दौर ने अनेक महत्वपूर्ण फिल्मकारों का उठाव देखा जिनमें ननी लॉय/ जानफ्रांको बोसियो/ फ्रांचेस्को रोजी प्रमुख हैं। नवयथार्थवाद से प्रभावित फिल्मकार भी इस समय सक्रिय थे जैसे एर्मानो/ ओल्मी/ पीयरे पासोलिनी/माऊरो बोलोन्यिनी प्रमुख हैं। औद्योगिक इतालवी समाज पेत्री/ बेलोक्वियो/ बेर्तोलुच्ची/जुलिनी की फिल्मों में व्यक्त हुआ।

सातवें-आठवें दशक में अमेरिकी धन लगने और व्यावसायिक मजबूरी के कारण इतालवी फिल्मों की मौलिकता प्रभावित हुई। अब अधिकांश फिल्में अमेरिकी कलाकारों के साथ हॉलीवुड की पुरानी फैशन की हॉरर या रहस्य फिल्मों का संस्करण बनने लगी। मारियो बावा की ऐसी फिल्मों ने काफी ख्याति बटोरी। दूसरी तरफ वेस्टर्न फिल्मों की तर्ज पर स्पाघेत्ती वेस्टर्न फिल्में बनी जिनमें सेर्जियो लेओने की फिल्में महत्वपूर्ण हैं।

इतालवी फिल्मोद्योग की यह एक विशेषता ही है कि वहाँ रेडियो टेलीविजन द्वारा फिल्म निर्माण में सहकारी भूमिका निभाई जाती है। पिछले वर्षों की अनेक फिल्मों में राई का सहयोग उल्लेखनीय रहा है। इसी कारण इतालवी सिनेमा की अनेक हस्तियों ने टी.वी. के लिए फिल्में बनाना स्वीकार किया। जैसे रोजेलिनी/ बर्तोलुच्ची/ पेत्री/ ओल्मी/रिसी/ लिलियाना काबानी/ आद्रियानो आप्रा।

पिछले ढाई-तीन दशक में सक्रिय रहे इतालवी फिल्मकारों की पीढ़ी आज विश्व सिनेमा की उल्लेखनीय पीढ़ी है। इसमें एक साथ वरिष्ठ फिल्मकारों के साथ नए भी सक्रिय हैं। माइकेल एंजोलो अंतोनियोनी/ फेदेरिको फेलिनी/ वित्तोरियो द सिका/ पासोलिनी/ विस्कोंती/ फ्रांचेस्को रोजी/ बर्नार्दो बर्तोलुच्ची आज इतालवी सिनेमा के अपरिहार्य अंग हो गए हैं।

● ***प्रमुख इतालवी फिल्म :*** *मा ल अमोरे मियो नॉन मुओरे १९१३/ सोले १९२९/ रोताइये १९२९/ कामिचा नेरा १९३५/ शिपिओने ल अफ्रीकानो १९३७/ बेंगासी १९४२/ इल क्रिस्तो प्रोइबितो १९५०/ अक्कातोने १९६१/ माम्मा रोमा १९६२/ क्वात्रो जोर्नाति दि नेपोली १९६२/ आई फिदानजाती १९६३/ इट विल हैप्पन टुमारो १९८८/ थ्री सिस्टर्स १९८९/ द लीजेण्ड ऑव द होली ड्रिंकर १९८९/ चाइल्डहुड फ्रेण्ड १९९३/ डियर डायरी १९९४।*

□ हंगरी

पहाड़ी की तलहटी में हरी घास पर सुनहरी फिल्में

हंगरी के फिल्मकारों ने विश्व सिनेमा को कई अजीब मुहावरे दिए हैं। मसलन कैमरा और कलाकार लेकर किसी पहाड़ी की तलहटी में एक सेट लगा कर कम से कम शॉट में पूरी फिल्म बनाइए और सबको चौंकाइए।

विश्व सिनेमा परिदृश्य पर हंगरी-सिनेमा की पहचान उसकी कतिपय उन विशिष्टताओं की देन रही है जो उसे अन्य देशों से आसानी से अलग कर देती है। हंगरी के फिल्मकारों का समर्पण इसमें प्रमुख कारक है। यहाँ के फिल्मकारों ने स्टुडियो-संस्कृति का लोभ नहीं पाला। बुदापेस्ट में स्टुडियो सुविधा रही है। फिल्मकारों ने स्टुडियो के बजाए मैदानों-पहाड़ों में जाकर जीवंत पृष्ठभूमि में फिल्मांकन किए। इस तरह उन्होंने ध्वनि और छाया के खेल सिनेमा को वास्तविक धरातल दिया। दूसरी तरफ संसाधनों में मितव्ययी रहे। एक स्थान विशेष पर सेट खड़ा कर पूरी फिल्म कम से कम दृश्यों व साधनों में फिल्माने में वे माहिर हैं। थीम भी लगभग आधे से ज्यादा फिल्मों में युद्ध और उसके प्रभाव के इर्द-गिर्द केंद्रित रही है।

इसके बावजूद आर्थिक कमजोरी एक ऐसा कारण रही है जिसने यहाँ के फिल्मकारों के हाथ बाँधे। इसके समाधान के लिए या तो उन्हें विदेशों में जाकर फिल्में बनाना पड़ी या विदेशी सहायता लेनी पड़ी। इससे उनकी प्रतिबद्धता प्रभावित नहीं हुई। प्रतिबद्धता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पिछले ढाई-तीन दशक में विश्व सिनेमा के नक्शे पर आए उतार-चढ़ाव से नितांत अविचलित रहकर हंगरी में निरंतर २० के करीब फिल्में प्रतिवर्ष बनती जा रही हैं। इन फिल्मों ने विभिन्न समारोहों में अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। प्रशंसित और पुरस्कृत भी हुई हैं। यह भी रोचक तथ्य है कि लंबे समय तक यहाँ की फिल्में, हंगरी के मुकाबले बाहरी देशों में ज्यादा पसंद की गई हैं। इसी के साथ हंगरी फिल्मों का एक ऋणात्मक बिंदु भी उभरकर सामने आया है। वह है उनकी फिल्मों के विषयों का पुरानापन और विश्व सिनेमा की व्यावसायिक दौड़ से अपने को बचाए रखना। फिल्म वितरण व्यवस्था पर भी विदेशी कंपनियाँ प्रभावशाली रही हैं। इसी तरह दूरदर्शन ने भी अपने ढंग से फिल्मोद्योग को प्रभावित किया है। इन सब कमजोरियों के बावजूद योरपीय देशों में हंगरी फिल्मों का स्थान निर्विवाद है।

हंगरी में सिनेमा की शुरूआत १८९६ से होती है। इस वर्ष यहाँ एक कैफे 'वैलेंस' में पहला फिल्म प्रदर्शन हुआ था। दो वर्ष बाद इस कैफे के मालिक द्वारा हंगरी की पहली फिल्म कंपनी प्रोजेक्टोग्राफ स्थापित की जाती है। यह कंपनी फिल्म निर्माण के साथ-साथ सिनेमागृह संचालन, प्रोजेक्टर-कैमरा-विदेशी फिल्में आदि किराए पर देती थी। १९१२ से १९१७ तक हंगरी में २७० स्थाई सिनेमाघर बन चुके थे। लेकिन इसके बाद भी फिल्म निर्माण गति नहीं पकड़ पाया।

हंगरी सिनेमा को सैद्धांतिक आधार देकर समृद्ध बनाने का पहली बार स्थाई काम किया अलेक्जांदेर कोर्दा ने। उन्होंने दैनिक विलाग में नियमित फिल्म समीक्षा लिखी। १९१९ में फिल्मोद्योग में कुकुरमुत्ते की तरह अनेक फिल्म कंपनियाँ अस्तित्व में आईं। कोर्दा उनमें से एक प्रमुख कंपनी कोर्विन के निर्देशक बने। कोर्दा बाद में योरप/हॉलीवुड जाकर फिल्में बनाने लगे। वहाँ उनके नाम अनेक फिल्में दर्ज हैं।

बीस के दशक की अधिकांश फिल्में बुदापेस्ट स्टुडियो में बनीं।



हंगेरियन फिल्म
डायरी
फार माय लव

१९२०-३० के बीच अनेक हंगरी फिल्मकारों ने दूसरे देशों में जाकर काम किया। लेकिन विपरीत राजनीतिक परिस्थितियों से हंगरी फिल्मोद्योग उबर नही पाया। १९२९ तक फिल्मोद्योग पूरी तरह बंद हो गया। लगभग सारे महत्वपूर्ण फिल्मकार दूसरे देशों को जा चुके थे। इन फिल्मकारों ने बाहर, खासकर हॉलीवुड में बेहतरीन फिल्में बनाईं। कोर्दा तो विश्वविख्यात हैं ही, साथ ही माइकेल कर्टिज ने कासाब्लांका बनाकर ख्याति अर्जित की। अन्य निर्देशकों में आंद्रे दे टोथ (हाउस ऑफ वैक्स १९५३), एंड्रू मार्टन (किंग सोलोमन्स माइंस १९५०) भी उल्लेखनीय है।

हंगरी सिनेमा के इस कठिन दौर में देश में ही रहकर बेला बालाजास/ इवान वेरेसे/ लाजोस कसाक ने प्रकाशन-लेखन के माध्यम से हंगरी सिनेमा को सैद्धांतिक स्तर पर जिंदा रखा।

ध्वनि युग आने के बाद १९३१ में बनी हिप्पोलिट द बटलर सफल फिल्म सिद्ध हुई। तीसरे दशक की फिल्मों पर इसका शैलीगत प्रभाव बना रहा। १९३४ से ३९ के दौरान अमेरिका में प्रवासी हंगरियों के लिए अनेक फिल्में निर्यात की गईं। इससे घरेलू फिल्मोद्योग को आर्थिक लाभ पहुँचा। दूसरी तरफ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान विदेशी फिल्मों का आगमन हतोत्साहित होने से भी घरेलू फिल्मोद्योग पनपा। फिल्म निर्माण संख्या अब ४०-५० फिल्में प्रतिवर्ष हो गई। राज्य समिति ने फिल्मोद्योग पर राजनीतिक नियंत्रण भी बढ़ा दिया। १९४७ में कम्युनिस्टों के सत्ता में आने से फिल्मोद्योग का राष्ट्रीयकरण हो गया। इस कारण फिल्म निर्माण संख्या गिरकर सात-आठ फिल्में प्रतिवर्ष हो गई।

हंगरी में पहली रंगीन फिल्म १९४९ में बनी। मातिए द मूज बॉय। इसके बाद हंगरी की फिल्मों में नया मोड़ आया। फिल्म निर्माण में हर दृष्टि से सुधार हुआ। एक नई पीढ़ी उभरी जिसके प्रतिनिधियों ने हंगरी को विश्व सिनेमा में स्थापित किया। इस पीढ़ी का नेतृत्व निश्चित रूप से सोल्तान फाबरी की फिल्मों में दिखाई देता है। उनकी पहली फिल्म १९५२ में आई थी। उसके बाद हंगरी सिनेमा का यह नया चेहरा अधिक स्पष्ट हो जाता है। स्तालिनवाद के बाद का यह चेहरा इन फिल्मकारों की फिल्मों में दिखाई देता है- कारोली मैक (लास्लो रेनॉदी/ जानोस हेस्कों/ इम्रे फेहर/ सोल्तान वार्कोनी/ फेलिक्स मारियासे।

१९६२-६३ के दौरान हंगरी फिल्मों का पुनर्जन्म होने लगता है। इसके राजनीतिक और दार्शनिक कारण हैं। इन फिल्मों का विषय ताजा इतिहास होता है- किंतु सोवियत संघ के दबाव से मुक्त। इस तरह समाजवादी यथार्थवाद से अलग हटने की प्रक्रिया दिखाई देने लगती है। इस तरह के प्रयास करने वाले फिल्मकारों में मिक्लॉस जांक्सो (कैनटाटा)/ हेस्कों (डायलाग))/ इस्त्वान गाल (करेंट)/ अंद्रास कोवाक्स (डिफिकल्ट पीपुल) उल्लेखनीय है।

पिछले ढाई-तीन दशक की हंगरी फिल्मों में श्रेष्ठता के मानदंड स्थापित करने वाले वे ही फिल्मकार हैं जो पचास-साठ के दशक में उभरकर आए थे। आज हंगरी सिनेमा की विश्व छवि उभारने वाले निर्देशकों में सोल्तान फाबरी तथा मिक्लॉस जांक्सो के नाम अग्रणी हैं। फाबरी ने अपनी पहली फिल्म १९५२ में बना ली थी किंतु ख्याति पाई मेरी गो राउंड (१९५५) से। उनकी फिल्मों में हंगरी का राष्ट्रीय जीवन और लोगों की संवेदनात्मक खोज हुई है।

जांक्सो ने कुछ न्यूजरीलें और वृत्तचित्र बनाने के बाद १९५८ से फिल्म निर्देशन शुरू कर दिया था। उनकी पहली बार अंतरराष्ट्रीय ख्याति फैली द राउंड अप (१९६५) से, जिसने कान फिल्म समारोह में सनसनी फैला दी थी।

●प्रमुख फिल्में- *समव्हेयर इन योरप १९४७/ द सॉल विनीथ योर फीट १९४८/ ए वूमेन मेक्स ए न्यू स्टार्ट १९४९/ प्रोफेसर हन्नीबाल १९५६/ ए ग्लास ऑव बीयर १९५५/ संडे रोमांस १९५६-५७/ द गर्ल १९६८/ नाइन मन्थ्स १९७६/ जस्ट लाइक एट होम १९७८/ माय फादर्स हैप्पी इयर्स १९७८/ बनाना स्किन वाल्ट्ज १९८७/ सीजंस ऑफ मोंस्टर १९८७/ डायरी ऑव माय लव्ज़ १९८८/ मि. यूनिवर्स १९८८/ व्हाय वाज़न्ट ही देयर १९९४/*

समर्पण और गुणवत्ता पोलिश सिनेमा का पर्याय

हर साल विश्व सिनेमा में टॉप टेन की जो सूची बनती है, उसमें एक या दो पोलिश फिल्में निश्चित रूप से रहती आई हैं। ग्यारह अकादमी अवार्ड पाने वाली फिल्म 'शिंडलर्स लिस्ट' का निर्माण भी स्पीलबर्ग ने पोलैण्ड में ही किया था।

स्टीवन स्पीलबर्ग के लिए १९९४ का वर्ष अविस्मरणीय रहा। इस वर्ष उन्हें श्वेत-श्याम फिल्म शिंडलर्स लिस्ट के लिए श्रेष्ठ निर्देशक के ऑस्कर पुरस्कार से नवाजा गया। शिंडलर्स लिस्ट को कुल ग्यारह पुरस्कार मिले। इसका फिल्मांकन पोलिश फिल्मकारों की टीम के साथ पोलैण्ड की लोकेशन में हुआ था। पोलिश सिनेमा के लिए यह उल्लेखनीय उपलब्धि रही कि इन ग्यारह पुरस्कारों में दो पुरस्कार उसके खाते में गए- प्रोडक्शन डिजायनर का एलन स्तार्स्की को और दूसरा सेट डिजायनर इवा बॉन को। एक टी.वी. भेंट में स्पीलबर्ग ने पोलिश फिल्मकारों और तकनीशियनों की गुणात्मकता और सिनेमा के प्रति समर्पण को बेहतरीन बताया था। जाहिर है पोलैण्ड में फिल्म निर्माण गुणात्मकता और समर्पण का पर्याय रहा है। इसी कारण छोटे से लेकर बड़ा पोलिश फिल्मकार दुनिया के किसी भी महान फिल्मकार के साथ काम करने में समर्थ है। पोलिश फिल्मकार इस पर गर्व करते हैं। इस विशिष्टता तक पहुँचने में पोलिश फिल्मों की एक लंबी परम्परा का हाथ रहा है।

१९१४ तक पोलिश सिनेमा रूस के आधिपत्य में था। जिन्हें पोलिश फिल्में कह सकते हैं, वे अधिकांशतः अलेक्जेंडर हेर्ट्ज द्वारा बनाई गईं, जो पाँच से १२ फिल्में प्रतिवर्ष बनाते थे। प्रसिद्ध पोलिश अभिनेत्री पोला नेग्री इन्हीं की खोज थी। इस समय की फिल्में ज़्यादातर राष्ट्रीय साहित्य से प्रेरित होती थीं। १९१८ के बाद इनका रुख जारशाही के विरोध का हो गया था।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद के दशक में एक उल्लेखनीय काम १९२९ में हुआ। इस वर्ष कुछ युवाओं ने मिलकर अवाँ-गार्द सोसायटी 'स्टार' की स्थापना की। जिसमें वांदा जाकुबोवस्का/युगेनिस्ज चेकाल्स्की/ जेरी बोसाक/ अलेक्जांदेर फोर्ड/ और जेर्ज टोपलिट्ज थे। 'स्टार' ने पोलिश सिनेमा के विकास को प्रभावित किया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दिनों में पोलिश आर्मी फिल्म यूनिट द्वारा फिल्म निर्माण जारी रहा। १९४४ में ल्यूबिन के एक छोटे से स्टुडियो में लघु फिल्मों का बनना जारी था। १९४५ में राज्य संचालित 'फिल्म पोलस्की' ने भी फिल्म निर्माण शुरू कर उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।

छठे दशक की आंद्रे वाजदा की ट्रायोलाजी जेनरेशन (१९५४)/ कनाल (१९५७) और एशेस एंड डायमंड (१९५८) ने विश्व का ध्यान गंभीरता से पोलैण्ड की ओर खींचा। ये फिल्में इस दशक की उपलब्धि रहीं। १९६० के करीब राजनीतिक स्थिरता से तात्कालिक समस्याएँ समाप्त होने लगी थीं। अगले दशक में पुनः राजनीतिक संकट गहराने के कारण फिल्मोद्योग को सख्त सेंसरशिप का सामना करना पड़ा। इससे अनेक फिल्मकार हतोत्साहित होकर देश छोड़ गए। यहूदी होने के कारण भी कुछ को विभिन्न स्कूल या फिल्म यूनिटों से निकाल दिया गया। इस दरम्यान केवल वाजदा की दो

फिल्मों लैण्डस्केप आफ्टर द बैटल (१९७०) और द वेडिंग (१९७२) ने पोलिश सिनेमा को सुकून दिया।

सत्तर के दशक में नैतिक चिंता की जो लहर उठी उसमें आध्यात्मिकता के साथ-साथ अन्याय का विरोध भी था। इसके अगुवा थे वाजदा की 'एक्स' में सहयोगी रहे किस्तौफ जानुसी। इस धारा के अन्य फिल्मकारों में फेलिक्स फाक/ अग्नेश्का हॉलैण्ड/ जानुस किजोवस्की/ एडवर्ड जेबोस्की आदि महत्वपूर्ण हैं। इनसे अलग जिन्होंने अपनी पहचान बनाकर हॉलीवुड से भी अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया, उनमें रोमन पोलांस्की/जेर्जी स्कोलिमोत्स्की/ मेकेक पिवोवस्की/आंद्रे जुलाव्स्की के नाम लिए जा सकते हैं।

जून १९८९ के चुनाव में सॉलिडेरिटी पार्टी की भारी विजय के बाद पोलैण्ड में भी उत्तर साम्यवादी युग शुरू हुआ। प्रशासनिक प्रबंधन और वित्तीय प्रणाली में आमूलचूल परिवर्तन हुआ। कुछ ही वर्षों में उल्लेखनीय रूप से १८० फिल्म कंपनियाँ स्थापित हुईं। एक क्रांतिकारी परिवर्तन यह हुआ कि जून १९९० में सेंसरशिप खत्म कर



इसा बेले एडजानी : रोमन पोलांस्की की फिल्म द टेनेंट

दी गई। आज राज्य नियंत्रित और निजी स्टुडियो, समान रूप से फिल्म निर्माण में संलग्न हैं। पोलिश सिनेमा में इन दिनों ३०-४० प्रतिशत फिल्में या तो टी.वी. का निर्माण होती हैं या उसका सह निर्माण। यदि बॉक्स ऑफिस पर सुपरहिट फिल्मों के आँकड़े देखे जाएँ तो टॉप-टेन में पोलिश फिल्में अवश्य होती हैं। जैसे १९९४ में तीन फिल्में इस सूची : में थीं जबकि नंबर एक पर थी शिंडलर्स लिस्ट। इस तरह कह सकते हैं कि पोलिश सिनेमा ः को विश्व सिनेमा के भीतर सम्मानजनक स्थान प्राप्त है।

●***प्रमुख निर्देशक-*** *अलेक्जांदेर फोर्ड/ आंद्रे वाजदा/ मुंक/वोज्तेक हेज/ रोमन पोलांस्की/ जेरी स्कोलिमोव्स्की/ जेर्जी कावालेरोविक्ज/ क्रिस्तोफ जानुसी/ फेलिक्स फाक/ अग्न्येश्का हॉलेण्ड/ जानुस किजोवस्की/ एडवर्ड जेब्रोवस्की/ आंद्रे जुलास्की* ●***प्रमुख फिल्में-*** *लेजॅन आफ द स्ट्रीट १९३२/ अवेकनिंग १९३४/ इरोइका १९५७/ मैन ऑन द ट्रेक १९५७/ बैड लक १९६०/ फेअरवेल १९५८/ ईव वांट्स टू स्लीप १९५८/ इनोसेंट सोरसेरेस १९५९/ लोटना १९५९/ सैमसन १९६१/ नाइफ इन द वाटर १९६२/ आइडेंटिफिकेशन मार्क्स नन १९६४/ वॉक ओवर १९६५/ बैरियर १९६६/ द सरगोसा मैनुस्क्रिप्ट १९६४/ एवरीथिंग फॉर सेल १९६८/ द डॉग १९७७/ द मदर ऑफ किंग्स १९८२/ हीरो ऑव द इयर १९८६/ द वेव १९८६/ ३०० माइल्स टू हेवन १९८९/ ओनली दिस फॉरेस्ट १९९१/ थ्री कलर्स १९९३/ एक्वेरियम १९९४/क्रॉज् १९९४।*

विश्व के भौगोलिक नक्शे से सोवियत संघ जैसे विशाल गणराज्य की समाप्ति के साथ ही आधिकारिक रूप से जिसे हम सोवियत सिनेमा की संज्ञा देते हैं- उसका अंत हो जाता है। अब विभाजित पंद्रह गणराज्यों का अपना स्वतंत्र अस्तित्व और फिल्मोद्योग है।

सोवियत सिनेमा

टूटे आईने में बिम्ब-प्रतिबिम्ब

उनका स्वरूप आकार लेने की प्रक्रिया में है। बहरहाल, वैचारिक रूप से समाजवादी यथार्थवाद की समृद्धतम फिल्में देने वाले सोवियत संघ में फिल्मों का मिजाज तेजी से व्यावसायिक स्पर्धा के लिए पूंजीवादी होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में सोवियत सिनेमा का लेखा-जोखा उसके ऐतिहासिक विकास को जानने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

सोवियत संघ में प्रारंभिक वर्षों में विदेशी फिल्मों का कब्जा रहा। घरेलू निर्माण के लिए १९१७ तक लगभग २० रूसी कंपनियाँ स्थापित हो चुकी थीं। सोवियत या रूसी फिल्म नाम का कोई स्वरूप प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने तक उभरकर नहीं आया था। १९१७ में हुई अक्टोबर क्रांति सोवियत सिनेमा के इतिहास में निर्णायक घटना साबित हुई। इस समय तक बनी फिल्मों में ज्यादातर साहित्य का रूपांतरण होता था। पुश्किन और टॉल्सतोय सर्वप्रिय लेखक थे। स्तारेविच / मेयरहोल्ड/ येल्गेनी/ बुएर/ इर्मोलिएव/ खान्झाकोव ने कई महत्वपूर्ण फिल्में बनाईं। लेकिन अक्टोबर क्रांति के बाद फिल्मोद्योग के प्रति सरकारी नीतियाँ बदलीं। राजनीतिक दबाव बढ़ने के कारण बुकोवस्की/ ग्रानोवस्की/प्रोतोझोनोव/ तोरझान्स्की जैसे निर्देशक पेरिस, बर्लिन या हॉलीवुड चले गए।

बोल्शेविक सरकार द्वारा राज्य शिक्षा कमीशन के अंतर्गत फिल्म विभाग स्थापित किया गया। इसके द्वारा प्रायोजित १९१८ में क्रांति की पहली वर्षगाँठ पर जो तीन फिल्में जारी हुईं उनसे फिल्मोद्योग पर सरकारी दृष्टिकोण के हावी रहने का संकेत मिलता है। ये फिल्में थीं- सिग्नल (ए. अर्कातोव)/ अंडरग्राउंड (कास्यानोव)/ अपराइजिंग (राझुम्नी)।

राजनीतिक रूप से जनता को अपने सिद्धांतों और विचारों की सूचना देने और उन्हें शिक्षित करने के उद्देश्य से इस समय जो फिल्में बनीं, उन्हें 'एजित्की' या 'एजित प्रोपेगैंडा' कहा गया। डेअर डेविल और फॉर द रेड नंबर उल्लेखनीय एजित्की फिल्में हैं।

जनवरी १९२० में फिल्मोद्योग का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। इन्हीं वर्षों में सोवियत संघ की विभिन्न राष्ट्रों द्वारा नाकाबंदी की गई तो फिल्मोद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ। १९२१ में गृहयुद्ध समाप्त होने तक अर्थव्यवस्था की भांति फिल्मोद्योग भी पूरी तरह नष्ट हो चुका था। स्थिति तब जाकर सुधरी जब लेनिन की नई नीतियाँ और विदेश व्यापार की ताजी संभावनाएँ स्पष्ट हुईं। इससे एकाएक फिल्मों का आयात बढ़ा और आर्थिक स्थिति में भी सुधार हुए। १९२५ में सावकिनो ट्रस्ट के द्वारा सरकार ने फिल्मोद्योग पर राजनीतिक नियंत्रण जारी रखा। दरअसल सोवियत सिनेमा के लिए ये पाँच-सात वर्ष कलात्मक संक्रमण, शक्ति संचय और आर्थिक पुनर्रचना के रहे। आँकड़े बताते हैं कि १९२१ में जहाँ ११ फिल्में बनी थीं- वहीं १९२४ में १५७ फिल्में बनीं। इनमें वेर्तोव की १९२२-२५ के दौरान २३ भागों में निर्देशित किनोप्रावदा न्यूज रीलें भी हैं जिन्हें २४ कैमरामैनों की यूनिट ने देशभर में फैलकर सोवियत जीवन को फिल्माया था। इसकी प्रयोगमूलक शूटिंग और मोंताज

सोवियत सिनेमा अब इतिहास की गुफा में जा बैठा है। साम्यवादी समाज की नव रचना और अपने नागरिकों में सत्ता के प्रति वफादारी विकसित करने में फिल्म माध्यम का सबसे शक्तिशाली उपयोग इस देश में हुआ है। सोवियत संघ के फिल्मकार आइसंस्टाइन ने सिनेमाई शैली को कई मुहावरे देकर समृद्ध किया है।

शैली ने आगामी सोवियत फिल्मों को गहरे तक प्रभावित किया था। इस शैली का प्रथम सफल प्रयोग १९२४ में कुलेशोव ने द एक्स्ट्राऑर्डिनरी एडवेंचर्स ऑफ मि. वेस्ट इन द लैंड ऑव द बोल्शेविक्स में कर दिखाया। मोंताज शैली में दो विश्वविख्यात फिल्में आइसंस्टाइन ने भी बनाई- स्ट्राइक और बैटलशिप पोटेमकिन, जिन्होंने सोवियत सिनेमा में एक नए युग का सूत्रपात किया। इस समय पारम्परिक फिल्में भी बन रही थीं। प्रकृतिवादी और राष्ट्रवादी फिल्मों का दौर भी चल रहा था।

वैचारिक स्तर पर इस समय जो फिल्मकार समाजवादी यथार्थवाद के उद्देश्य से हटकर फिल्में बना रहे थे- उनकी तीखी आलोचना की गई। इन लोगों की फिल्में अतिशय सौंदर्यशास्त्रीय, बौद्धिकता के कारण सामान्य बहुसंख्यक या सर्वहारा को मंजूर नहीं थी। इनमें सीधे-सीधे राजनीतिक संदेश भी नहीं था। जिन फिल्मकारों की आलोचना हुई उनमें आइसंस्टाइन/ पुदोवकिन/ दोव्झेंको और वेर्तोव प्रमुख हैं। दरअसल इस दौर की सोवियत सिनेमा का चेहरा समाजवादी, यथार्थवाद या साम्यवादी विचारधारा से ओतप्रोत था। कलावादियों या रूपवादियों के प्रयास भी निरंतर होते रहे। इन प्रयासों में १९३२ में अभिव्यक्ति की आजादी समाप्त होने के बाद और कमी आ गई। उनकी फिल्में अब गहरी आलोचना का विषय बनी। जैसे १९३५ के मास्को फिल्म समारोह के पूर्व आयोजित किनो कान्फ्रेंस में वेर्तोव की थ्री सांग्स ऑव लेनिन (१९३४), दोव्झेंको की इवान (१९३२), पुदोवकिन की ए सिंपल केस (१९३२) और आइसंस्टाइन की ओल्ड एंड न्यू (१९२९) की कड़ी आलोचना हुई। जबकि वासीलियेव की चापायेव (१९३५), एर्मलर की काउंटर प्लान (१९३२) और एलेक्जेंडर माचेरेट की मेन एंड जॉब्स (१९३२) को उत्कृष्ट शैली का



आन्द्रेई तारकोवस्की की अंतिम कालजयी फिल्म : द सेक्रीफ़ाइस

उदाहरण माना गया। इस दृष्टिकोण और सरकारी व्यवस्था से नाखुश होने के पर्याप्त उदाहरण हैं, जैसे आइसंस्टाइन ने विरोधस्वरूप १९२८ से १९३८ के बीच कोई फिल्म नहीं बनाई।

सोवियत सिनेमा में राजनेताओं पर भी उत्कृष्ट फिल्में बनीं। लेनिन और स्टालिन फिल्मकारों के पसंदीदा नायक थे। लेनिन पर बनी मिखाइल रोम और सेर्गेई युत्केविच, की फिल्मों को तथा स्टालिन पर चाउरेली, कुलेशोव, वासीलिएव की फिल्मों को ख्याति मिली।

स्टालिन के अंतिम दिनों में फिल्म निर्माण कम होता गया। १९४५ में १९ फिल्में बनी थीं, जबकि १९५० में मात्र छः। १९५६ की बीसवीं कांग्रेस में ख्रुश्चेव की सीक्रेट स्पीच के बाद फिल्मोद्योग में पुनर्जागरण दिखाई देने लगा। अब फिल्मों में उपेक्षित वैयक्तिक विषय भी लौटे। चुकराई की फिल्म द फोर्टीफर्स्ट (१९५६) में ऐसा पहली बार हुआ। यह फिल्म युवावर्ग में रातोंरात लोकप्रिय हो गई। इन वर्षों में सोवियत सिनेमा को विश्व स्तर पर एक विशिष्ट पहचान प्राप्त हो चुकी थी। इसके पीछे समृद्धतम फिल्मकारों की परंपरा का हाथ रहा है जिसमें आइसंस्टाइन/ पुदोवकिन/ मेयरहोल्ड/ येल्गेनी/ तारकोवस्की/ कुलेशोव/ झेलिया बुझस्की/ दोव्झेंको/ वेर्तोव/ वासीलिएव/ माचेरेट/ चुकराई/ खुत्सिएव/ झारखी अनेक निर्देशकों का योगदान है। इस समृद्ध परंपरा को आगे बढ़ाने वाली युवा पीढ़ी भी सोवियत संघ में शामिल हुई जिनमें महिला निर्देशिकाओं जैसे लारिस्सा शेपिलको, पाराद्जानोव के नाम सर्वोपरि हैं।



बीस बरसों तक प्रतिबंधित फिल्म : कॉमिसार

सोवियत सिनेमा में इधर व्यापक परिवर्तन आया है। ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका का असर १९८५-८६ से दिखाई देने लगा था- जो १९८९ के बाद अधिक स्पष्ट हो गया। इस वैचारिक परिवर्तन- साम्यवाद के अंत के बाद जो फिल्में बनी हैं उनमें वैचारिक और गुणात्मक बदलाव के साथ तकनीकी सुधार भी आया है। आश्चर्यजनक रूप से विश्व स्तर पर सोवियत फिल्मों को प्रशंसा और पुरस्कार मिले हैं। इनमें ऐसी फिल्मों की बहुतायत है जिनके विषय और निर्देशक युवा ही है। इन सबमें समकालीन सोवियत समाज के भ्रष्टाचार और नैतिक पतन के प्रति आक्रोश प्रकट हुआ है। यह दृष्टिकोण सोवियत सिनेमा के भावी गंतव्य की तरफ संकेत के लिए पर्याप्त हैं।

●**प्रमुख फिल्में-** *ब्रेड (१९१८)/ कंजेशन (१९१८)/ स्ट्राइक (१९२५)/ बैटलशिप पोटेमकिन (१९२५)/ द डेथ रे (१९२५)/ बीअर्स वेडिंग (१९२६)/ स्टेशन मास्टर (१९२६)/ वूमेन ऑफ र्याझान (१९२७)/ द डेज़ (१९२७)/ लेनिन इन अक्टोबर (१९३७)/ लेनिन इन १९१८ (१९३८)/ द मैन विथ द गन (१९३८)/ ग्रेट डाउन (१९३८)/ सायबेरियंस (१९४०)/ द डिफेंस ऑव जारीन्सिन (१९४२)/ द क्रेंस आर फ्लाइंग (१९५७)/ द रोलर एंड द वायलिन (१९६०)/ इवांस चाइल्डहुड (१९६२)/ हीट (१९६३)/ आय.एम. ट्वेंटी (१९६१)/ आंद्रेई रूब्लेव (१९६८)/ सोलारिस (१९७२)/ द मिरर (१९७४)/*

●**साम्यवाद के अंत के बाद की प्रमुख फिल्में-** *द थीम/ द रिपेंटांस/ कम एंड सी/ द कमीसार/ द स्विमर/ ए ट्रिप टू द सन/ लिटिल वेरा/ चैलेंज टू द लॉजिक ऑव थिंग्स/ बर्गलर/ प्लेग्राउंड/ एनीमिक/ क्लिनिक।*

स्पेनिश सिनेमा की कदम ताल

स्पेनिश सिनेमा का विश्व सिनेमा के विकास में योगदान अन्य देशों के मुकाबले साधारण रहा है। १८९६ में फिल्म निर्माण शुरू होने और लुई बुन्वेल जैसा विश्वविख्यात फिल्मकार होने के बावजूद स्पेनिश सिनेमा की भूमिका उल्लेखनीय नहीं रही। स्पेनिश सिनेमा के विकास के आरंभिक छह दशक लगभग सामान्य फिल्मों के रहे। केवल लुई बुन्वेल की फिल्में और सिविल वार पीरियड की कुछ ही फिल्मों ने बेहतर प्रदर्शन किया। किंतु इतने कम प्रतिशत से स्पेनिश सिनेमा की स्पष्ट छवि नहीं उभरती। बहरहाल छठे-सातवें दशक में युवा फिल्मकारों की एक पीढ़ी उभरकर आई, जिसने स्पेनिश सिनेमा को विश्व पटल पर महत्वपूर्ण स्थान का अधिकारी बनाया है। इस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व लुई बुन्वेल के अलावा जुआन अंतोनियो बार्देम और लुई बेर्लांगा की फिल्मों में होता है। ये तीन स्पेन में 'तीन बी' नाम से प्रसिद्ध हैं। आज अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्पेनिश सिनेमा की सम्मानजनक स्थिति इन्हीं की देन है।

स्पेनिश सिनेमा की शुरूआत १८९६ से होती है। फिल्म-निर्माण और प्रदर्शन, दोनों इसी समय शुरू हुए। आरंभिक दौर के फिल्मकारों में एक अत्यंत प्रतिष्ठित फिल्मकार सेगुंदो दे चोमोन की फिल्मों को देशभर

जनरल फ्रांको की तानाशाही के कारण स्पेन का सिनेमा विकास की दौड़ में पिछड़ गया। अब युवा फिल्मकारों की टोली ने फिल्म निर्माण की बागडोर सम्हाली है।



वुमन ऑन दि वर्ज ऑव नर्वस ब्रेकडाउन : विक्टोरिया एब्रिल

में देखा और सराहा गया। आरंभिक वर्षों में अनेक फिल्में बनीं, लेकिन इनमें से कई फिल्में विषयों की नवीनता या मौलिकता के बजाए साहित्यिक/ ऐतिहासिक कृतियों का मीडियाकर रूपांतरण होती थीं। यही स्थिति मूक युग के दौर में भी बनी रही। एक तरह से सिनेमा का आरंभिक समय स्पेन में सामान्य उपलब्धि का रहा।

स्पेन में बोलती फिल्मों की शुरूआत १९३१ में हुई। इन दिनों अनेक नए स्टुडियो निर्मित हुए।पहली बड़ी फिल्म निर्माण और वितरण कंपनी सी.आई.एफ. ई.एस.ए. की स्थापना १९३४ में हुई। इन सुविधाओं के बावजूद अनेक प्रतिभाशाली फिल्मकार अमेरिकन फिल्मों के स्पेनिश भाषा संस्करण बनाने के काम हेतु हॉलीवुड चले गए। इसका विपरीत प्रभाव पड़ा। घरेलू फिल्मोद्योग अपेक्षित रूप से विकसित होने में असफल रहा। गृहयुद्ध की स्थिति ने भी फिल्म निर्माण को प्रभावित किया। डाक्यूमेंट्री फिल्मों में कुछ अच्छे निर्माण जरूर हुए। महत्वपूर्ण फिल्मों में लुई बुन्वेल की 'लास हर्डस (१९३२) का जिक्र किया जा सकता है। इसे तीस के दशक की सार्वकालिक महान फिल्म का दर्जा प्राप्त है। इसे रिलीज होने के तत्काल बाद प्रतिबंधित कर दिया गया था। जोरिस इवेन्स की 'स्पेनिश अर्थ' भी इसी समय (१९३७) आई। यह युद्ध-फिल्मों में उत्कृष्ट फिल्म मानी जाती है।

१९४१ में राष्ट्रवादी विचारधारा की सरकार बनी। इसने तुरंत फिल्मोद्योग को सरकारी नियंत्रण में ले लिया। इसके तत्काल बाद राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार शुरू हुए। सबसिडी देना शुरू की गई। कोटा (प्रणाली) अधिनियम भी लागू किया गया। न्यूजरील और फीचर फिल्मों के विषय पर निगरानी रखने के लिए 'निर्देश' जारी कर अप्रत्यक्ष रूप से सेंसरशिप को मजबूत किया गया।

इस पूरे दशक में नैतिक व राजनीतिक दमन के कारण फिल्मोद्योग बेजान-सा बन गया। पचास के दशक में स्पेनिश सिनेमा एक विशेष रूप उभरने लगता है। इस समय सहयोगी- निर्माण के माध्यम से फिल्मोद्योग की आर्थिक स्थिति थोड़ी सुधरी। युवा निर्देशकों की एक ऐसी पीढ़ी उभरकर आई, जिसमें पर्याप्त समर्पण और उत्साह था। इसका नेतृत्व बुन्वेल, बार्देम, बेर्लांगा के साथ ही मैड्रिड फिल्म स्कूल के ग्रेजुएट निर्देशकों ने किया। इन पर इतालवी नव यथार्थवाद का गहरा प्रभाव पड़ा था। इन्होंने अपनी सामर्थ्यभर जनरल फ्रांको के तानाशाही शासन के मूल्यों का विरोध किया और बेहतरीन फिल्में दीं- जैसे बेर्लांगा की वेलकम मि. मार्शल (१९५३) और बार्देम की डेथ ऑव ए सायक्लिस्ट (१९५५) ने कान समारोह में पुरस्कार जीतने के साथ ही बाहरी देशों में भी उल्लेखनीय सफलता पाई।

अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने के कारण फिल्मोद्योग को व्यापक स्तर पर पुनर्गठित करने की प्रेरणा मिली। साठ के दशक में फिल्मोद्योग का पर्याप्त विस्तार हुआ। अगले दशक में, १९७५ में जनरल फ्रांको की मृत्यु के बाद स्पेनिश सिनेमा में काफी बदलाव आया। सेंसरशिप में थोड़ी नमाई के संकेत मिलते हैं। स्क्रिप्ट की कड़ी जाँच के बजाए फिल्म का ट्रीटमेंट गौर से जाँचा जाने लगा। दूसरी तरफ विदेशी फिल्मों का प्रदर्शन भी अब बंधनकारी नहीं रहा। इससे अनेक नए प्रतिभाशाली फिल्मकार उभरकर आए। इस दौर की प्रतिनिधि फिल्मों में कार्लोस साउरा की 'पेप्परमिंट फ्राप्पे' (१९६७) व 'ला प्रिमा एंजेलिका (१९७४) तथा विक्टर इरिस की 'द स्पिरिट ऑव द बीहाइव' (१९७३) महत्वपूर्ण हैं। पिछले तीन दशकों में स्पेनिश सिनेमा ने बेहतर फिल्में बनाकर विश्व सिनेमा को समृद्ध बनाया है। साठ के दशक में 'स्कूल ऑव बार्सीलोना' नाम से युवा फिल्मकारों के एक दल ने सक्रियता से फिल्में बनाईं। यह दल जिसमें साउरा/ पाटिनो/ पिकाजो/ सुमर्स/ कामू निर्देशक प्रमुख हैं। फ्रांको युग की समाप्ति के बाद पेद्रो अल्मोदोवार/ पिलार मिरो/ कोलोमो/ बेलमुंट/ फेर्नांदो फेर्नान गोमेज/ विसेंते अरांदा/ जोस लुई बोरा/ मैनुअल

एक छोटा और गरीब राष्ट्र होने के कारण ग्रीस में संगठित फिल्मोद्योग का विकास काफी समय तक अवरुद्ध रहा। युद्ध के कारण विध्वंस और राजनीतिक अस्थिरता ने भी विकास को प्रभावित किया। अस्थिरता की यह हालत थी कि १९२२ के बाद के दस वर्षों में चौदह बार सरकारें बदलीं। इन स्थितियों में फिल्म-निर्माण केवल दो या तीन फिल्में प्रतिवर्ष से ज्यादा नहीं रहा। ध्वनि युग आने के बाद भी समस्याएँ हल नहीं हुई, क्योंकि ध्वनि उपकरणों के लिए पर्याप्त धन की कमी थी। इन समस्याओं से जूझते राष्ट्र पर जब जर्मन आधिपत्य हुआ, तो फिल्म-निर्माण निम्नतम बिन्दु तक पहुँच गया। १९४० और १९४२ के बीच केवल एक ही फिल्म निर्मित हुई। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद स्टुडियो पहली बार साधन युक्त बने। परिणामतः अगले दशकों में फिल्म निर्माण बढ़ता गया। १९४७ में छह फिल्में बनीं। १९५७ में २८ और १९६७ में ७० से अधिक फिल्में प्रतिवर्ष बनने लगीं। सरकारी सहायता की कमी इस समय भी थी, किंतु राजनीतिक स्थिरता की वजह से ग्रीक-सिनेमा को अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर मिला। बाहरी विश्व से संपर्क होने के कारण भी ग्रीक सिनेमा समृद्ध हुआ, जैसे वैचारिक स्तर पर इतालवी नव-यथार्थवाद को यथातथ्य ग्रहण करके उसे गहरा राष्ट्रीय रंग दिया। इस तरह की फिल्मों को 'एथेनियन स्कूल' की संज्ञा मिली।

अस्थिरता और सेंसरशिप ने ग्रीक फिल्मकारों को क्लॉसिक साहित्य के फिल्मांतरण और समकालीन इतिहास के विषयों से दूर

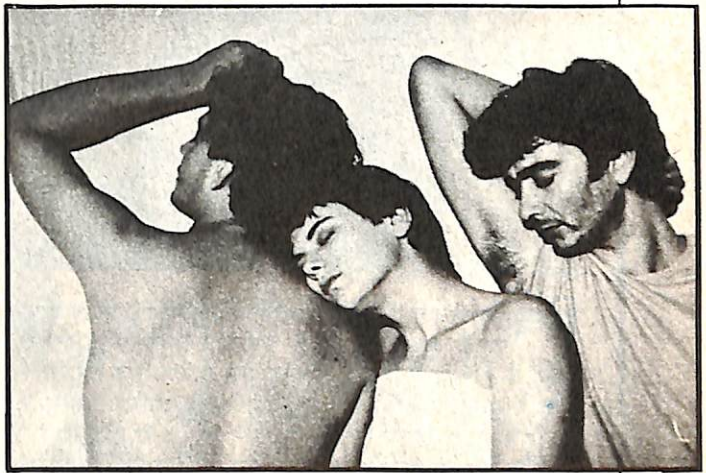
ग्रीक सिनेमा

बँधे हाथ और खुले पाँव

रहने पर मजबूर किया। कुछ उल्लेखनीय अपवाद इस क्षेत्र में रहे, जैसे—कानेल्लोपोलस की फिल्म 'स्काई' (१९६२) जिसमें इतालवी आक्रमण का चित्रण था. या फिर अदो कायरॉन की 'ब्लोको' (१९६५) जो कि जर्मन आधिपत्य की पृष्ठभूमि में घटित फिल्म है। साठ के दशक में व्यावसायिक फिल्मों का स्तर निम्न होने के बावजूद ज्यादातर निर्माता इनके लिए ही धन लगाते थे। ये फिल्में मेलोड्रामा या पश्चिमी फिल्मों का रूपान्तरण होती थी, जो अर्द्ध-शिक्षित गाँवों-कस्बों में बहुत ज्यादा लोकप्रिय थीं। स्वाभाविक ही गंभीर फिल्मों की तरफ निर्माताओं ने ध्यान नहीं दिया।

सरकारी स्तर पर फिल्मोद्योग में १९६० में पहली बार रुचि ली गई। जल्दी ही राष्ट्रीय फिल्म-निर्माण और विदेशी-निवेश के बारे में एक अधिनियम पास किया गया। इससे प्रेरित होकर विदेशी-निर्माता सहयोगी-निर्माण के लिए आगे आए। विदेशी सह-निर्माणों में ग्रीक फिल्मों का विश्वस्तरीय प्रभाव केवल छोटे स्तर पर ही रेखांकित हो पाया। फायदा एकमात्र यही हुआ कि ग्रीक फिल्मों के प्रति विश्व-सिनेमा का ध्यान आकर्षित हुआ। साठ-सत्तर के दशक में ग्रीक फिल्मकारों की एक नई पीढ़ी उभरकर आई। जार्ज जावेल्लास, ग्रेग टालास, निकोस, कोन्डोरस, माइकल केकोयानिस, थेओ एंजेलोपोलस के नाम उल्लेखनीय हैं। साठ-सत्तर के दशक में सौ या अधिक फिल्में प्रतिवर्ष बनने लगी थीं। भारी मात्रा में बनने वाली ये फिल्में मुख्यतः व्यावसायिक, लोकप्रिय और मनोरंजन प्रधान होती थीं। पूर्ववर्ती फिल्मों के मुकाबले इस समय तकनीकी गुणवत्ता में सुधार हुआ और 'न्यू ग्रीक सिनेमा' का स्वरूप निश्चित हो गया था।

ग्रीस की फिल्मः रिवेंची



१९६८ में टी.वी. का आगमन हुआ। सिनेमा के दर्शक तेजी से घटे। इस कारण १९७६-७७ तक फिल्म-निर्माण घटकर मात्र १७ फिल्में प्रतिवर्ष हो गया। दूसरी तरफ विदेशी, खासकर अमेरिकी फिल्मों का प्रभाव लगातार बढ़ता गया। इन विपरीत स्थितियों में ग्रीक फिल्मों को प्रोत्साहित करने की दिशा में ग्रीक फिल्म सेंटर की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। नवें दशक में विभिन्न अंतरराष्ट्रीय समारोह में प्रदर्शित होकर प्रशंसित होने वाली फिल्मों का निर्माण इसी के सहयोग से संपन्न हो सका है। जिनमें प्रमुख हैं कारवाँ सेराई/ए क्वायट डेथ/नॉक आउट/द फोटोग्राफ/विलकम होम कामरेड। इन फिल्मों की उपलब्धि देखते हुए ग्रीक फिल्मों के प्रति आशा बंधती है।

● ***प्रमुख ग्रीक फिल्में:***—*विडफाल इन एथेन्स १९५३/स्टेल्ला, १९५४/द ट्रेवेलिंग प्लेयर्स १९५७/ द गन्स ऑव नेवरोन १९६१/इट हेप्पन्ड इन एथेन्स १९६१/जोर्बा द ग्रीक १९६५/डेज़ ऑफ '३६; १९७१/द हंटर्स १९७७/बी कीपर १९८७/लव मी नॉट १९८९/इन द शेडो ऑव फीअर १९९०/फ्रॉम द स्नो १९९४/आई ड्रीम माय फ्रेंड्स १९९४/द स्टैरी डोग। (१९९४)।*

अरॉगोन/ बिगास लुना/ अगुस्तिन/ वेन्चुरा पोरा उल्लेखनीय हैं। कहा जा सकता है कि स्पेनिश सिनेमा, अपने आरंभिक दशकों में पिछड़ने के बावजूद आज सक्रियता से फिल्म निर्माण में संलग्न है।

● ***प्रमुख स्पेनिश फिल्म :*** *एस्पाना लील एन आर्म्स १९३७/ फुरॉ १९५१/ द रेडफिश १९५५/ मार्सेल्लिनो पान वाय विनो १९५५/ काले मेयर १९५६/ द टीनेंट १९५८/ विरिदियाना १९६१/ प्लेसिदो १९६२/ एल वेर्दुगो १९६४/ पोचर्स १९७५/ पेंडिंग एक्जाम१९७७/ नेशनल शॉटगन १९७७/ द कुएंका क्राइम १९७९/ कार्मेन १९८३/ ब्लडवेडिंग १९८१/ द हॉली इनोसेंट १९८४/ हॉफ ऑव हैवन १९८६/ एल दोरादो १९८७/ वूमेन ऑन द वर्ज ऑव ए नर्वस ब्रेकडाउन १९८८/ अगेन्स्ट द विंड १९९०/ बैले इपोके १९९२/ ऑल ऑफ टु जेल १९९३/ किका १९९४।*



स्विट्ज़रलैंड का बहुभाषी सिनेमा

हर्मन की फिल्म 'इनोसेंजा'

स्विट्ज़रलैंड में फिल्मोद्योग वर्षों तक विदेशी फिल्मों के प्रदर्शन पर ही अवलंबित रहा है। इसीलिए स्विस-फिल्में योरपीय राष्ट्रों में आँकड़ों के हिसाब से बहुत पीछे हैं। दरअसल इस छोटे से राष्ट्र में भाषाई समस्या एक बड़ा अवरोध है। आर्थिक समस्या तो अपनी जगह है। फिल्म निर्माण के लिए १९५८ से प्रोड्यूसरों को राज्य से सहायता मिलने लगी है, लेकिन उसे पर्याप्त नहीं कहा जा सकता। 'ले रितूर द अफ्रीकूए' (१९७३) तथा गोरेत्ता की 'ला इन्विटेशन' (१९७३) फिल्में स्विस सिनेमा की निधि कही जा सकती हैं।

स्विट्ज़रलैंड में सिनेमा बहुभाषी रहा है। यहाँ स्विस/जर्मन/फ्रेंच/इतालवी भाषाओं में फिल्में बनती रही हैं। भाषाई बहुलता के कारण ही स्विस-फिल्मों को दर्शक वर्ग की कमी का खामियाजा भुगतना पड़ा है। यहाँ हर भाषा का अपना दर्शक वर्ग और उसकी फिल्में हैं।

जर्मन-स्विस सिनेमा का विकास धीरे-धीरे हुआ। सत्तर के दशक के अंत तक अनेक निर्देशकों ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा अर्जित कर ली थी। इनमें उल्लेख्य हैं—डेनियल शिमिड, रॉल्फ लिस्सी, थॉमस कोरफर आदि। इस सफलता के बावजूद जर्मन-स्विस सिनेमा के लिए भाषा समस्या का गंभीर अवरोध पूरी तरह हटा नहीं है। दरअसल बाहरी देशों में बाजार सुनिश्चित करने के लिए अधिकांश फिल्में 'उच्च जर्मन' में बनती हैं। इस कारण सामान्य स्विस वर्ग पीछे छूट जाता है। स्विस बाजार में अमेरिका और अन्य देशों की फिल्में ही लोकप्रिय हैं। आँकड़ों के अनुसार देखें तो हाल के वर्षों में स्विस फिल्मों का दर्शक वर्ग मात्र २.६ प्रतिशत रहा, जबकि अमेरिकी फिल्में ५५ प्रतिशत देखी जाती हैं।

कुछ अच्छी डॉक्यूमेंटरी फिल्में भी इधर के वर्षों में बनी हैं, जैसे रिचर्ड डिन्डो की चार युवाओं की मृत्यु पर केंद्रित 'दानी, मिचि, रेनातो एंड मैक्स' या श्रीलंका के तमिलों द्वारा स्विटज़रलैंड में राजनीतिक शरण लेने की थीम पर रेमो लेन्याज्जी और जिर्ग न्यूनश्वांदेर की 'माय मदर इज इन श्रीलंका'।

स्विट्ज़रलैंड के महत्वपूर्ण फिल्म समारोह सोलोर्थन फिल्म फेस्टिवल ने महिला-निर्देशकों की एक प्रतिभाशाली पीढ़ी सामने रखी है, जिनमें जून कोवाक/जैकलिन/अन्ना मेरी मेविल्ले/तानिया स्तालिन/आंका शिमिड उल्लेखनीय हैं। स्विस सिनेमा के विकास के लिए एक स्विस फिल्म सेंटर १९८७से ज्यूरिख में शुरू हो चुका है। स्विस सिनेमा विकास में उसकी आर्थिक भूमिका सराहनीय रही है।

स्विस-सिनेमा का एक दौर जिसे हम आधुनिक दौर कह सकते हैं, १९८९ में अपना एक दशक पूरा कर लेता है। इस दौरान बॉक्स-ऑफिस पर सुपरहिट रही फिल्मों में अमेरिकी के साथ-साथ स्विस फिल्में भी रही हैं, चाहे प्रतिशत कम रहा हो। अपनी गुणवत्ता के कारण स्विस फिल्में विश्वव्यापी छवि स्थापित करने में समर्थ रही हैं। अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि स्विस फिल्में १९८८ में साठ फिल्म-महोत्सवों में शामिल और प्रशंसित हुईं।

इधर स्विस-फिल्मों का चरित्र अधिक से अधिक अंतरराष्ट्रीय या कहें 'ग्लोबल' होता जा रहा है। हांस-उलरिक श्लुम्फ की फीचर लंबाई की डॉक्यूमेंटरी 'द कांग्रेस ऑफ द पेग्विन्स' (१९९४) इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसे अंटार्कटिका जाकर चार यात्राओं में शूट किया गया। इसमें मानव-पात्र पेग्विन पक्षी की भाषा आसानी से समझ लेते हैं। यह न केवल विश्वभर में सराही जा रही है, बल्कि उसे स्विस के साथ ही विश्व डॉक्यूमेंटरी इतिहास की सफल फिल्म के रूप में भी देखा जा रहा है। इन उपलब्धियों के बावजूद आज भी यह दुखद स्थिति है कि स्विस फिल्मों का बाजार लोकप्रिय नहीं हो पाया है, या कहें अमेरिकी फिल्मों ने उसके बाजार पर कब्जा कर रखा है।

अमेरिकी फिल्मों के दबाव के बावजूद स्विस सिनेमा अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में अपनी विशिष्टता बनाए रखने में सफल रहा है।

● ***प्रमुख फिल्में : फ्रेंच/इतालवी/जर्मन :*** *लापलोमा १९७४/द जज़ १९७४/ द सिटी एंड द डेथ १९७४/वायोलांता १९७८/मैन विदाउट मेमोरी १९८४/डेबॉरेन्स १९८५/कन्सर्ट फॉर ऐलिस १९८५/इफ द सन फेल्स टू राइज १९८७/ला मेरिदिएन्रे १९८८/ प्रूफ टाइम १९८७/ अंडरवे १९८७/द वूमेन रोज हिल्स १९८९/ लुडविग-१८८१, १९९४/ बेबीलोन-२, १९९४।*

नीदरलैंड अर्थात हॉलैंड अर्थात डच में फिल्म का आरंभ १९०२ में हुआ। इसके बावजूद प्रथम विश्व युद्ध तक डच सिनेमा स्पष्ट स्वरूप प्राप्त नहीं कर पाया। प्रथम विश्व युद्ध के बाद भी अमेरिकी प्रतियोगिता के मुकाबले डच फिल्मोद्योग लड़खड़ाता रहा। डच फिल्मों के विकास में सबसे पहली और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई डच फिल्म 'लीग' ने। इसकी स्थापना १९२७ में की गई थी। इसके संस्थापक जोरिस इवेन्स बाद में विश्व के एक महान वृत्तचित्र फिल्मकार के रूप में उभरे। युवा फिल्मकारों पर उनके कृतित्व का गहरा प्रभाव पड़ा।

आरंभिक वर्षों में डच दर्शकों की रुचि और धन की कमी के कारण वृत्तचित्र निर्माण अधिक प्रोत्साहित हुआ। फीचर फिल्में कम पसंद की गईं। यह सिलसिला दूसरे विश्व युद्ध के समाप्त होने तक चला। इस तरह विश्व-सिनेमा के क्षितिज पर डच सिनेमा की ख्याति लघु और वृत्त फिल्म निर्माता देश के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी थी।

लेकिन फीचर फिल्मों की तरफ से डच सिनेमा उदासीन रहा, ऐसी बात नहीं है। फीचर फिल्मों को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से ही १९५८ में नीदरलैंड फिल्म अकादमी की स्थापना की गई। यहाँ युवा फिल्मकारों को सैद्धांतिक रूप से प्रशिक्षण मिला। वृत्तचित्र निर्माण के अतिरिक्त लगभग चार-पाँच फिल्में प्रति वर्ष बन रही थीं। डच फिल्मकारों में साठ के आरंभ में फान्सरेडमेकर्स अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो चुके थे। उनकी 'डॉक्टर इन द विलेज' पर इंगमार बर्गमैन का प्रभाव था। यह फिल्म १९५८ में ऑस्कर के लिए नामांकित हुई थी। परवर्ती वर्षों में फ्रेंच 'न्यू वेव' के प्रभाव में जब डच फिल्मकार नवीन प्रयोगों की तरफ मुड़े तो एक नए तरह का जोश, नई ऊर्जा युवा फिल्मकारों जैसे पिन दे ला पारा, विम वेर्स्टापनल निकोलाई हायदे, एड्रियान ने महसूस की। यह आश्चर्यजनक रहा कि इन दिनों फिल्मों पर होने वाली बहसों में कोई भी रेडमेकर्स को या डॉक्यूमेंटरी निर्देशकों जैसे इवेन्स, हांस्त्रा और वान हॉर्स्ट का उल्लेख तक नहीं करता था। ऐसी स्थिति में फॉन्स रेडमेकर्स ने 'मीरा' बनाकर दर्शकों को आकर्षित करके अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी। व्यावसायिक रूप में सफल इस फिल्म ने एक नया ट्रेंड स्थापित कर दिया। अब हर कोई लोकप्रिय बाजार के लिए फिल्म-निर्माण करने लगा। यह दौर डच सिनेमा का सफलतम व्यावसायिक सिनेमा का युग था। स्वाभाविकतया इसमें सेक्स चित्रण काफी खुले रूप में दिखाया गया था। थोड़े समय बाद १९७४ में फॉन्स रेडमेकर्स ने 'मैक्स हवैल्लर' बनाकर एक बार फिर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी। यह फिल्म डच-फिल्म इतिहास में अब तक बनी फिल्मों में 'बेस्ट फिल्म' मानी जाती है।

सत्तर के दशक में निर्देशकों की एक नई पीढ़ी उभरी, जिसने साहित्य के फिल्मांतरण की परंपरा कायम रखी। १९८० के आसपास कुछ फिल्मकारों ने बिना सरकारी सहायता के अपनी फिल्में बनाईं।

नीदरलैंड :

वन्स वेयर वारियर्स

१९८३-८४ में साधारणतः महसूस किया जाने लगा था कि डच फिल्में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर छा जाएँगी। किंतु ऐसा नहीं हुआ। पॉल वेरहोवेन की 'द फोर्थ मैन' ने तो अंतरराष्ट्रीय ख्याति पाई, किंतु उन्हीं की 'फ्लेश एंड ब्लड' बुरी तरह पिट गई। इसी तरह अन्य फिल्में हॉलैंड में फ्लॉप रहीं।



वंस वेयर वारियर्सः न्यूजीलैण्ड

आँकड़ों के अनुसार १९८२ से ८५ के दौरान डच फिल्मों का दर्शक वर्ग २६ प्रतिशत कम हुआ। ऐसी स्थिति में १९८७ में फॉन्स रेडमेकर्स की 'द असॉल्ट' को ऑस्कर मिलने के साथ कुछ आशा बँधी। इसी समय उनकी 'फ्लाडर' दिसंबर १९८६ में रिलीज हुई, जिसने डच सिनेमा के पिछले १५ वर्षों के बॉक्स ऑफिस रिकॉर्ड तोड़ डाले। इस तरह देखा जाए तो डच सिनेमा दरअसल घरेलू दर्शकों की रुचि के कारण समस्याग्रस्त रहा है। उदाहरण के लिए जॉस स्टेलिंग की फिल्म 'द पॉइंट्समेन' ने वेनिस/ साओ पोलो/ ब्रुसेल्स/ लंदन/ अवोरियाज/ मैड्रिड/ वियेना और मेलबोर्न के महोत्सवों में पर्याप्त प्रशंसा, दर्शक और पुरस्कार पाए। साथ ही अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और लगभग सभी पश्चिमी योरपीय देशों में सफल रही- किंतु हॉलैंड में पिट गई। स्टेलिंग ऋणग्रस्त हो गए। इस आधार पर यह कहना मुश्किल है कि डच दर्शकों की मूल रुचि क्या रही है।

बहरहाल योरपीय देशों के बीच डच सिनेमा की अपनी एक पहचान कायम है और वह निरंतर इस दिशा में धीमे ही सही, सक्रिय है।

● **प्रमुख डच फिल्में:-** फनफेअर *१९५८/ विलेज ऑन द रिवर १९५९/ द एम.पी. अफेअर १९६०/ द नाइफ १९६१/ एन झोंदाग ओप हेट इलैंड वान दे ग्रांदे जात्ते १९६५/ डॉन्स ऑफ द हेरॉन १९६६/ पैरोनिया १९६८/ मोनस्यूर हावार्डन १९६८/ टर्किश डिलाइट १९७०/ सोल्जर ऑफ ओराग १९७०/ द गर्ल विद रेड हेअर १९८०/ द गुड होप १९८७/ ब्लॉन्डे डॉली १९८७/ डायरी ऑफ ए मेड ओल्ड मैन १९८७/ लॉस्ट इन एम्सटर्डम १९८९/ इवनिंग्स १९८९/ वन्स वेअर वॉरियर्स १९९३/ हैवनली क्रिएचर्स १९९४।*

चीन के सिनेमा में उदारीकरण के अक्स

चीन दुनिया का एकमात्र देश है, जहाँ सरकार द्वारा गाँव-गाँव और गली-गली फिल्में दिखाई जाती हैं। वहाँ के सत्तासीनों की मान्यता है कि सिनेमा से पहले उपदेश दिया जाए बाद में मनोरंजन। उदारीकरण की हवा के झोंके चीनी फिल्मों के कथानक में बदलाव के संकेत देते हैं।

पूर्वी योरपीय देशों से साम्यवाद की समाप्ति के तत्काल बाद कयास लगाए जा रहे थे कि चीन में भी साम्यवाद का अंत हो जाएगा। ऐसा नहीं हुआ। केवल उदारीकरण के संकेत मिलने लगे हैं। इस तरह हम कह सकते हैं कि एशिया महाद्वीप के सबसे बड़े राष्ट्र चीन की फिल्मों से साम्यवाद के स्वर अभी लुप्त नहीं हुए हैं, बदले जरूर हैं।

अपने आरंभिक वर्षों में चीनी बाजार भी अमेरिकी और योरपीय फिल्मों से भरा पड़ा था। पहला फिल्म निर्माण और पहली कंपनी की स्थापना भी विदेशी पूँजी से हुई थी। चीनी प्रयास से पहली फिक्शन फिल्म १९०८ में बनी-'तिंगचुन माउंटेन।' लेकिन इस समय ज्यादातर स्लेपस्टिक कॉमेडी फिल्में बनती थीं। ऐसे में इसी वर्ष स्थापित एशिया मोशन पिक्चर कंपनी ने १९०९ में दो उत्कृष्ट फिल्में बनाई- 'द अनफिलियल सन' और 'द विडोव्ड एक्सप्रेस'। घरेलू सिनेमाघरों के लिए अब नियमित फिल्में बनने लगी थीं।

१९१७ में शंघाई की कमर्शियल प्रेस के फिल्म- विभाग ने जनशिक्षा और साक्षरता कार्यक्रम के तहत मनोरंजनार्थ फिल्में, न्यूजरील और वृत्तचित्रों का निर्माण शुरू कर दिया था। इसके बाद १९२२ में शंघाई में पहली पूर्णतः चीनी फिल्म कंपनी 'स्टार' स्थापित हुई। इसने मूक युग की उत्कृष्ट फिल्में बनाईं जैसे चेंग चेन-चिन द्वारा निर्देशित 'आर्फन रिस्क्यूज ग्रैंड फादर' (१९२३)।

ध्वनि युग आने के बाद, आरंभिक बोलती फिल्में 'मंदारिन' (या पीकिंग) भाषा में बनने लगीं। इस कारण बड़ा दर्शक वर्ग उन्हें नहीं मिला। तीसरे दशक के आरंभ में शंघाई, मांचुरिया तथा मध्य एशिया पर जापानी आक्रमण होने से चीनी सिनेमा ने

परम्पराओं की चौखट में चेक सिनेमा

पूर्वी योरप में साम्यवाद का गढ़ ढहने के साथ ही चेकोस्लोवाकिया भी दो भागों में विभाजित हो गया- चेक रिपब्लिक और स्लोवाकिया। स्वतंत्र रूप से इनमें फिल्म निर्माण शुरू हुए तीन-चार वर्ष हुए हैं। आँकड़ों के अनुसार चेक गणराज्य अभी भी योरप के सर्वाधिक फिल्म-निर्माता देशों में गिना जाता है। दूसरी तरफ स्लोवाकिया में आर्थिक दृष्टि से कमजोर होने और बार-बार वैधानिक एवं राजनीतिक स्थितियाँ बदलने के कारण अब तक फिल्म निर्माण में तेजी नहीं आ पाई है। एकमात्र स्लोवाक फिल्म स्टुडियो 'कोलिबा' भी अधिक सक्रिय नहीं हो पाया है। कुछ युवा निर्देशकों ने विश्व का ध्यान खींचा है। मार्टिन सुलिक की फिल्म 'एवरीथिंग आई लाइक' ने १९९३ में अंतरराष्ट्रीय प्रशंसा और पुरस्कार पाए।

बहरहाल विश्व सिनेमा में चेकोस्लोवाकिया का अपना विशिष्ट स्थान रहा है और उसकी एक विशिष्ट परंपरा भी रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से चेकोस्लोवाकिया, सिनेमा के तकनीकी विकास के आधारस्तंभ देशों में से एक होने का दावा कर सकता है। १८४०-५० के दौरान चेक फिजियोलॉजिस्ट पुर्किन्स ने अपने शोध के दौरान विभिन्न चलती छायाओं का प्रयोग कर सिनेमा के भविष्य की ओर देख लिया था। लेकिन इस उपलब्धि के बावजूद पहली चेक फिल्म १८९८ में जाकर बनी। चेक सिनेमा के महत्वपूर्ण आधार-स्तंभों में गिने जाने वाले मैक्स अर्बन और उनकी पत्नी अन्ना सेदलाकोवा ने 'असूम- फिल्म' कंपनी के माध्यम से इस कार्य को आगे बढ़ाया। किंतु यह कंपनी १९१७ में बंद हो गई। १९१८ में स्वतंत्र चेकोस्लोवाक रिपब्लिक स्थापित होने के बाद फिल्मों को राष्ट्रीय संस्कृति की तरह विकसित करने के प्रयास हुए। लेकिन जर्मन और अमेरिकी फिल्मों से कड़ी प्रतियोगिता के कारण चेक फिल्मोद्योग संकट में रहा। एक दूसरे रूप में जर्मन और अमेरिकी फिल्मों की सफलता से उत्साहित होकर चेक फिल्मकारों ने उनका अनुसरण किया। यह प्रभाव गुस्ताव माचेती की 'इरोतिकोन' (१९२९) और कर्ट जुंगहांस की 'सच इज लाइफ' (१९३०) में साफ दिखाई देता है। माचेती की फिल्म ने अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा पाई किंतु जुंगहांस की मूक फिल्म ध्वनियुग में सफल नहीं रही।

ध्वनियुग के आगमन के बाद दो तरह की फिल्में बनने लगीं एक तरफ विदेशी बाजार के उद्देश्य के लिए हल्की कॉमेडी फिल्में तो दूसरी तरफ अवॉ-गार्द से प्रभावित गंभीर फिल्में बनी। विकसित होती रुचि से प्रेरित होकर सरकार ने सबसिडी देने का फैसला किया। किसी सरकार द्वारा फिल्मों को सबसिडी देने का यह विश्व में पहला प्रयास था, साथ ही कोटा प्रणाली लागू कर एक सिनेमाघर के लिए प्रतिवर्ष कम से कम आठ चेक फिल्मों का प्रदर्शन भी अनिवार्य कर दिया गया। तकनीकी दृष्टि से चेक स्टुडियो चौथे दशक में मध्य योरप में अत्यधिक एडवांस हो चुके थे। कई विदेशी फिल्मकार इनकी तरफ आकर्षित हुए। चेक फिल्मोद्योग इस दशक में योरप का सर्वाधिक 'उर्वर केंद्र' बन गया था। फीचर फिल्मों के अलावा इस दशक में बेहतरीन वृत्त फिल्में भी बनी, खासकर कारेल प्लिका/ अलेक्सांदेर हम्मिड/ जीरी वीस और एल्मार क्लॉस।

१९४५ में सोशल चेक डेमोक्रेटिक रिपब्लिक की पुनर्स्थापना के बाद सबसे पहले फिल्मोद्योग के राष्ट्रीयकरण की डिक्री जारी

> चेकोस्लोवाकिया में बच्चों और किशोरों की फिल्मों का विशिष्ट स्थान रहा है। एक अनुमान के अनुसार हर वर्ष करीब ५० में से एक तिहाई फिल्में बच्चों और किशोरों की होती हैं। दरअसल तीन प्रमुख चेक फिल्म स्टुडियो में से एक गोट्टालदोव स्टुडियो बच्चों और युवाओं की फिल्में बनाने में विशेषज्ञता हासिल कर चुका है। इस स्टुडियो की विश्वप्रसिद्ध फिल्में हैं 'द फाईव' और ड्रग समस्या पर पहली चेक फिल्म 'कोबवेब'। अन्य प्रमुख बाल-फिल्मों में प्रमुख हैं-फेयरी टेल्स/ फ्राड होल/ माहुलेन्नी द गोल्डन मैडन।

वास्तविकताओं की ओर देखना शुरू किया। मौजूदा स्थितियाँ कठिन थीं। अब वे फिल्में भी बनने लगीं जिनमें जमींदारों और अधिकारियों द्वारा किसानों का दमन या ऐसे ही दबे-कुचले लोगों की कष्टप्रद स्थिति दिखाई जाती थी। दूसरी तरफ थिएटर आधारित कॉस्ट्यूम फिल्में, ड्रामा फिल्में या फिर तलवारबाजी की हिंसक फिल्में भी बनीं, जिनमें शेन शि-लिंग की 'क्रासरोड्स' (१९३७) उल्लेखनीय है। इस वर्ष जापानी कब्जे के कारण ही अनेक फिल्मकार हाँगकाँग या ताइवान चले गए। जापानियों ने सारे स्टुडियो पर अधिकार कर लिया। जो फिल्मकार रह गए, उन्हें लेकर ज्यादातर प्रोपेगैंडा फिल्में बनीं। इस स्थिति में चीनी फिल्मों की मूल-धारा को येनान प्रांत में कम्युनिस्ट फोर्स का अनुगमन कर रहे एक छोटे दल ने जीवित रखा। वहाँ पहली चीनी फिल्म बनी 'येनान एंड द एट्थ रूट आर्मी' (१९३९)। कम्युनिस्ट गतिविधियों पर कुछ वृत्त फिल्में भी इस दौरान बनीं।

अक्टूबर १९४९ में चीनी समाजवादी गणराज्य की स्थापना के बाद फिल्मोद्योग का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया। संस्कृति मंत्रालय के नियंत्रण में स्थापित किए गए फिल्म ब्यूरो को छह-सात मुख्य स्टुडियो की जिम्मेदारी सौंपी गई। इनमें न्यूजरील, वृत्त फिल्में, शिक्षाप्रद फिल्में और लघु फिल्मों का निर्माण होता था। नए चीन की फिल्मों का दृष्टिकोण ज्यादातर प्रचारात्मक था। अधिकांश की थीम कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में किसानों का सशस्त्र संघर्ष या खेत-मजदूरों की स्थिति और उनका शोषण था। इनमें ज्यादातर 'नव' या



ए गुड वुमनः चीन



...टवीन द रैन ड्राप्स

वि...
लिए अर्की...
ओजू जिम...
लिए जापा...

... नई व्यवस्था के तीन उल्लेखनीय अंग थे-पहला ... और एनिमेशन फिल्मों के स्टुडियो का निर्माण। दूसरा ...ल्मों के लिए ग्रुप प्रोडक्शन को बढ़ावा देना और फिल्म ... स्थापना। १९४८ में कम्युनिस्ट शासन आने के बाद ... में समाजवादी व्यवस्था के अंतर्गत फिल्म निर्माण का ... चेक फिल्मों को ही मिला। राष्ट्रीयकरण के लाभ के ...क विश्व स्तरीय फिल्में बनी वावरा/ वीस/ क्लॉस/ ...ा/ कारेल/ जामेन आदि ने बेहतरीन फिल्में बनाई, ...स समय स्तालिनवाद और समाजवादी व्यवस्था ने ... पैदा कर रखी थीं। पचास के पूरे दशक में आदर्श स्थिति ...फल्म निर्माण घटता-बढ़ता रहा। वृत्त और एनीमेशन ... भी बनीं।

...न्यू वेव, नामक नए निर्देशकों की एक पीढ़ी ने समकालीन ...ों पर भी फिल्में बनाई। राजनीतिक रूप से १९५६ के बाद मॉस्को की बीसवीं कांग्रेस के बाद जो उदारता आई, उसका पूरा लाभ इस पीढ़ी ने उठाया और योरपीय सिनेमा का एक महत्वपूर्ण दौर देखा। वोज्तेक जास्नी की फिल्म 'सेप्टेम्बर नाइट्स' (१९५७) और 'डिजायर' (१९५८) में इसके भावी रूप की झलक मिलती है। १९६२ से १९६८ के बीच लगभग साठ नए निर्देशकों को फिल्में बनाने का अवसर मिला। इन वर्षों में चेक फिल्मों को अनेक अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी मिले। इस दशक की सफलता में प्राग अकादमी से प्रशिक्षित अभिनेताओं का भी पर्याप्त योगदान रहा। दूरदर्शन और सिनेमा के सामंजस्य से फिल्म कार्य संपन्न हुआ-खासकर लोकप्रिय संगीत के क्षेत्र में।

पिछले दो-तीन दशकों में विश्व स्तर पर चेक फिल्में बराबर चर्चित होती रही हैं। १९८६ में जीरी मेंजेल की कॉमेडी 'माय स्वीट विलेज' को मांट्रियल में स्पेशल जूरी अवॉर्ड मिला था। इसी वर्ष ऑस्कर के लिए फॉरेन लेंग्वेज श्रेणी में नामांकित भी हुई थी। वेरा चेतिलोवा इस दौर की अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा प्राप्त चेक फिल्मकार के रूप में उभरी हैं। उनकी फिल्मों में 'वोल्फ्स होल'/ 'द जेस्टर एंड द क्वीन'/ 'कैलेमिटी' प्रमुख रूप से चर्चित रही है। कारेल स्मिचेक/ जारोस्लाव सॉकुप/ मिलोस्लाव लूथर भी चर्चित निर्देशक रहे हैं।

१९८९ में वामपंथी विचारधारा की परिवर्तित स्थितियों के बाद चेकोस्लोवाकिया में वे फिल्में भी रिलीज हुई जो पहले प्रतिबंधित थीं। इन फिल्मों की लंबी लिस्ट है जिनमें कुछ प्रमुख है- जीरी मेंजेल की 'लवर्स ऑन ए स्ट्रिंग/ इवान बालादा की पेविलियन नं. ६/ रांगेल वुल्चानोव की 'एसप'/ वोज्तेक जास्नी की 'आल मॉय कंट्रीमैन/ शोर्म की 'रिटर्न ऑव द प्रोडिगल सन।

● *प्रमुख फिल्में- द आर्गेनिस्ट ऑव सेंट वितुस कैथेड्रल १९२९/फ्रॉम सेटर्डे टू मंडे १९३१/ एक्सटेज १९३३/ जानोसिक १९३५/ द गुड सोल्जर/ तोनिश्का/ द रिवर १९३३/ द स्ट्राइक १९५२/ द चेक ईयर १९५२/ वालेरी एंड हर वीक ऑफ वंडर्स १९७०/ एंड माय लव टू द स्वेलॉज् १९७२/ पीपुल्स ऑव द मेट्रो १९७१/ ऑयल लैम्प्स १९७१/ आय एम जंम्पिंग ओवर पडल्स अगेन १९७०/ डेज ऑफ बेट्रयल १९७३/ विभाजन के बाद प्रमुख चेक एवं स्लोवाक फिल्में-* **चेक-** *द एक्यूमुलेटर/ द इम्मोरटल आंट/ बिग बीट/ द रेजर्स एज/ द फोर्ट्रेस।*

स्लोवाक-द *गार्डन/ ऑन द वंडरफुल ब्ल्यू डेन्यूब/ ए किस/ लेडी एलिजाबेथ/ एंजेल्स ऑफ मेर्सी/ फाउंटेन फॉर सुसान्ना।*

'परिवर्तित' पीकिंग ऑपेरा से ग्रहण की गई थी। साहित्यिक कृतियों का रूपांतरण भी काफी हुआ। लेकिन चीनी सिनेमा में सबसे बड़ा बदलाव आता है १९६६ की सांस्कृतिक क्रांति के बाद से। इस क्रांति के प्रभाववश समाजवादी विचारधारा के साथ पारिवारिक और वैयक्तिक विषय भी फिल्मों में आने लगे।

सातवें-आठवें दशक में जो फिल्मकार उभरकर आए उन्होंने चीनी सिनेमा की परंपरागत छवि से हटकर अधिक प्रखर और निर्भय फिल्में बनाई हैं। फिल्मकारों की समकालीन पीढ़ी जिसे फिफ्थ जनरेशन कहा जाता है- ने इस तरह की फिल्में बनाकर विश्व का ध्यान चीनी फिल्मों की ओर खींचा है। इस पीढ़ी का आरंभ येंग यिआन्जिन की 'ट्रबल्ड लॉफ्टर' (१९६९) से होता है।

दरअसल चीन ने लंबे समय के अनुभव से सिद्ध कर दिखाया है कि सिनेमा भी जन-प्रचार और शिक्षा का उत्कृष्ट माध्यम हो सकता है। इसी कारण चीन में शिक्षाप्रद लघु फिल्में और वृत्तचित्र सर्वाधिक मात्रा में बने हैं। कुछ फिल्में पार्टी लाइन का सीधे उपदेश देती हैं। अधिकांश चीन की सांस्कृतिक संपदा पर गर्व के लिए प्रेरित करती हैं या विभिन्न विषयों पर, खासकर कृषि पर मार्गदर्शन देती हैं।

चीन में फिल्म प्रदर्शन की भी अपनी विशिष्टता रही है। सिनेमाघरों, क्लबों, फैक्टरियों, ग्रामीण क्षेत्रों और लगभग ८००० मोबाईल यूनिटों द्वारा दूर-दूर तक फिल्म प्रदर्शन होता है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि चीन में फिल्मों को उत्कृष्ट रूप देने और उन्हें जन-जन तक फैलाने में सरकारी भूमिका है।

प्रमुख फिल्में: वाइल्ड टोरेंट १९३३/ द सांग ऑव द फिशरमैन १९३४/ सांग ऑव द व्हाइट आर्किड १९३९/ स्टॉर्म ऑन द बॉर्डर १९४०/ सॉरो लेफ्ट एट स्प्रिंग रिवर १९४४/ स्प्रिंग रिवर फ़ॉलोज ईस्ट १९४७/ द ब्रिज १९४९/ विक्टरी ऑफ द चाइनीज पीपुल १९५०/ ट्रबल लॉफ्टर १९६९/ सर्फ़्स/ टू स्टेज सिस्टर्स/ वन एंड द एट १९८६/ द ब्लैक कैनन इंसीडेंट १९८७/ ए गर्ल ऑव गुड फैमिली १९८७/ रेड शोरगुम १९९२/ द ब्लू काइट १९९३/ बीजिंग बास्टर्ड्स १९९४/ रेड बीडस १९९४।

सेक्रिफाइस्ड यूथ: चीन की फिल्म



समुराई शैली में

टेक्नालॉजी के क्षेत्र में जापान विश्व का नेतृत्व करने वाले देशों में अग्रणी है। आश्चर्यजनक रूप से फिल्म निर्माण प्रतिशत अधिक होने के बावजूद गुणवत्ता के हिसाब से उसकी फिल्में विश्व सिनेमा में उल्लेखनीय योगदान नहीं दे पाई हैं। इस मामले में उसकी स्थिति भारत की तरह है। जापानी फिल्मों ने अब अंतरराष्ट्रीय छवि निर्मित करने में सफलता पाई है, किन्तु यह नगण्य है। परंपरागत शैलियों पर निर्भरता के कारण जापान की फिल्में व्यापक नहीं बन पाई हैं। काबुकी तथा समुराई शैलियों की फिल्में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना विशेष दर्शक वर्ग बनाए हुए है।

जापान में फिल्म निर्माण १८९६-९७ के आसपास से शुरू होता है। इस समय लुमिएर फिल्मों और एडिसन के विटास्कोप की सफलता से प्रोत्साहित होकर सुनेकिचि शिबाता ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में प्रयास किए थे। उन्होंने १८९८ में पहली बार काबुकी नाटकों के कुछ दृश्यों का टोकियो की गलियों में फिल्मांकन कर अपने प्रयास को आगे बढ़ाया। एक दशक बाद १९१२ में निकात्सु ट्रस्ट के संरक्षण में कुछ स्टुडियो फिल्म निर्माण में सक्रिय हो चुके थे। यहाँ **जेदाई-गेकी** (अर्थात् आधुनिक शैली की फिल्में) बनती थीं। क्योटो में भी कुछ स्टुडियो सक्रिय थे जहाँ जेदाई-गेकी (अर्थात् तोगुकावा- युग केंद्रित ऐतिहासिक फिल्में)बनती थीं। जापानी सिनेमा के विकास में इन दो शैलियों की फिल्मों ने आधार- स्तंभ का काम किया। एक तीसरे प्रकार की शैली भी चलन में थी- शोमिन-गेकी (अर्थात् मध्यवर्ग से संबंधित फिल्में)। ये फिल्में १९२३ के विध्वंसकारी भूकंप की आपदा से उबरने के बाद तब बनी थीं, जबकि फिल्मोद्योग का पुनर्निर्माण हुआ था। मिनोरू मिनाता अपनी फिल्म 'सीसाकुजु वाइफ' (१९२४) के साथ इस आंदोलन के अगुआ बने। इस धारा के फिल्मकारों ने रोजमर्रा की जिंदगी का चित्रण करने के साथ ही पूँजीवादी उच्च मध्य वर्ग के भ्रष्टाचार और दक्षिण-पंथी राजनीति का विरोध भी किया।

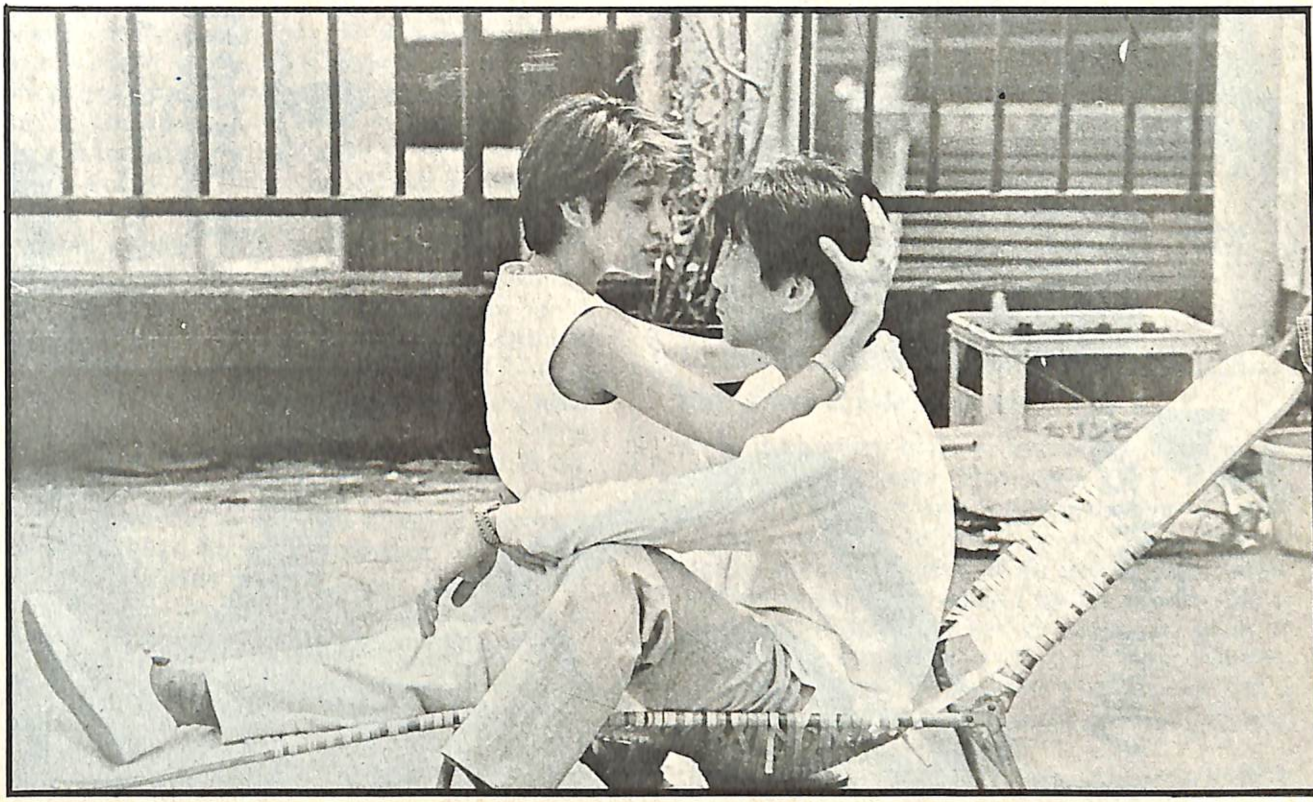
ध्वनि-युग का आरंभिक दौर जापानी फिल्मों के लिए विशेष उत्साह का नहीं बेन्शी (पर्दे के पीछे से संवाद बोलने के संवाद सुनने के आदी दर्शकों को आविष्कार से विशेष फर्क नहीं पड़ा तरफ आर्थिक संकट में फँसी कंपनियां ध्वनि उपकरणों की तुलना में वे हुए। उपलब्ध हो जाते थे। इन्हीं कारण' बन मध्य तक मूक फिल्में ही बहुतायत वृत्त रहीं। जापान से बाहर केवल्हम्मिड/ तिनोशिकु किनुगासा ने थोड़ा ख्या।।त ५।२ थी। १९३१ में हुए चीनी-जापानी युद्ध का भी असर पड़ा। अब जापानी समाज की तरह ही फिल्मों में भी पारंपरिक मूल्यों की आलोचना का स्वर तेज हुआ। मिजोगुची की 'सिस्टर्स ऑव द जिऑन' (१९३६) में यह प्रखरता से उभर कर आया। इसके बाद युद्ध मानसिकता और मानवीयता पर केंद्रित अनेक उल्लेखनीय फिल्में आईं। इन फिल्मों से भयभीत होकर अधिकारियों द्वारा ऐसी फिल्मों को प्रोत्साहित किया जाने लगा जिनमें सैन्यवाद के प्रति अपेक्षित दृष्टिकोण अपनाया गया था। इन्हीं दिनों कांजीरो यामामोतो की 'जनरल काटोज फाल्कन फाइटर्स' (१९४४) ने डॉक्यूमेंटरी की तकनीकी का बेहतरीन उदाहरण सामने रखा।

रंगी जापानी फिल्में

युद्ध के बाद जापानी बाजार एक बार फिर अमेरिकी फिल्मों से पट गया। अनेक छोटी कंपनियाँ संरक्षक संगठनों के अभाव में बंद हो गई। फिल्म निर्माण में भी कमी आ गई। फायदा एकमात्र यह हुआ कि ज़ापानियों को आधुनिक और लोकतांत्रिक जीवन-शैली की ओर प्रेरित किया। साठ के दशक में दो प्रमुख फिल्मकार अपनी धाक जमा चुके थे-

अपराध/ हिंसा/ कामुकता होते थे। इनोशिरो होंडा ऐसी 'मोन्सटर' फिल्मों के विशेषज्ञ हो गए थे। उनकी गोडजिला (१९५४) विश्व भर में सुपरहिट रही।

टीवी आने से जापानी फिल्मों को फायदा हुआ। अब छोटी कंपनियों के लिए भी फिल्म निर्माण सुगम हो गया। इन्होंने ज्यादातर गैंगस्टर फिल्में बनाई। इनमें भी जब दर्शकों की रुचि घटने लगी तो सेक्स- फिल्मों का दौर चल पड़ा। हार्ड कोर/ सॉफ्ट कोर- हर तरह की सेक्स फिल्में बनीं, जिनका एकमात्र लक्ष्य था 'बाजार।' कुछ फिल्मों में सेक्स को राजनीतिक विरोध के साधन की तरह भी इस्तेमाल किया गया, जैसे कानेतो शिंदो



विश्व सिनेमा में जापानी फिल्मों की पहचान के लिए अकीरा कुरुसोवा/ नागीसा ओशिमा और योसुजीरो ओजू जिम्मेदार हैं। 'पीरियड' और समुराई फिल्मों के लिए जापान आज भी लाजवाब है।

एक किसुके किनोशिता और दूसरे अकीरा कुरोसावा। कुरोसावा की फिल्मों के कारण ही पश्चिमी दर्शक जापानी फिल्मों की तरफ आकर्षित हुए थे। उनकी 'रशोमान' (१९५०) को १९५१ के वेनिस फिल्म समारोह में ग्राँ- प्री अवॉर्ड मिला था। इसकी सफलता ने सामाजिक चेतना संपन्न फिल्मों का नया क्षितिज खोला। अब फिल्मों में वैयक्तिकता की खोज विशेष ढंग से की जाने लगी थी।

पचास के दशक में पीरियड फिल्मों की लोकप्रियता काफी बढ़ी। इन फिल्मों ने जापानी फिल्मोद्योग को विश्व स्तर पर फैलाने में व्यापक भूमिका निभाई।

हाल के वर्षों में सामाजिक परिवर्तन के साथ जापान में उपभोक्तावाद की जो अहमियत तेजी से बढ़ी है, फिल्में भी उसका एक साधन बनी हैं। दर्शकों का एक ऐसा वर्ग उभरा जिसे तत्काल नई फिल्में चाहिए। एक समय ऐसा आया कि विश्व में सर्वाधिक फिल्म (भारत से भी ज्यादा) जापान में बनने लगी। लेकिन ऐसी फिल्मों के विषय

जापानः ऑल अण्डर द मून

की 'हीट वेव आइलैंड (१९६९) और योशीशिगा योशीदा की 'इरोस मैसाकर' (१९६९)।

जापानी फिल्मों के उत्थान, विकास और स्तर को भारत के उदाहरण से आसानी से समझा जा सकता है। दोनों देशों में ऐसी फिल्मों का निर्माण अधिक हुआ जिनमें गंभीरता से ज्यादा सस्ता मनोरंजन प्रबल रहा। इसी कारण यहाँ के फिल्मोद्योग को आकार की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

● ***प्रमुख निर्देशक***- *कानेतो सुजिये/ केंजी मिजोगुची/ योसुजीरो ओजु/ तिनोसुके किनुगासा/ तोमोताका तासाका/ किमिसाबुरो योशिमुरा/ तादाशी इमाई/ कोन इचिकावा/ मासाकी कोबायाशी/ नागीसा ओशिमा।*

● ***प्रमुख फिल्में***-*सोल्स ऑन द रोड (१९२१)/ सर्वेंट (१९२७)/ क्रासवेज़ (१९२९)/ द लव ऑफ मित्सु (१९३७)/ डॉटर ऑफ समुराई (१९३७)/ सुसाइड ट्रूप्स ऑव द वॉच टॉवर (१९४२)/ द डेली बैटल (१९४४)/ द बर्मीज हार्प (१९५६)/ द गेट ऑव हेल (१९५३)/ थ्रोन ऑव ब्लड/ रशोमान/ सेवेन समुराई/ पेल फ्लॉवर/ एडवेंचर्स ऑव ए किटी (१९८६)/ बुदरिंग हाइट्स (१९८८)/ रैम्पो (१९९४)/ मैन हू किल्ड ए डॉन (१९९४)।*


Very Refreshing Very Legend
Long drives in high spirits.
The wind in your hair and sun on your face.
Heady days filled with sparkling cheer
and foaming fun. Fizzy excitement
and bubbling energy flowing through your veins.
Cheers to Legend.
Legend®
Premium Beer Mugs
ATULPERCEPT
som

उत्तरी-दक्षिणी कोरिया का संयुक्त सिनेमा

विश्व सिनेमा में कोरियाई फिल्मों ने अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है। आर्थिक धरातल पर फिल्म उद्योग की स्थिति सुदृढ़ न होने के बावजूद कोरिया में कलात्मक दृष्टि से श्रेष्ठ फिल्मों का निर्माण निरंतर होता रहा है। दक्षिणी और उत्तरी कोरिया की फिल्में समीक्षकों द्वारा सराही गई हैं। सिनेमा की आधारशिला कोरिया में अक्टूबर १८९८ में रखी गई, जबकि सीओल के एक तमाशाघर में अमेरिकी तम्बाकू निर्माता कंपनी की एक विज्ञापन फिल्म का प्रदर्शन आयोजित हुआ था। १९२६ में कोरिया की पहली फिल्म कंपनी 'चोसन किनेमा' अस्तित्व में आई। दक्षिण कोरिया के सिनेमा को विकसित करने का श्रेय 'ना उन ग्यू' को जाता है। उन्होंने मूक फिल्मों के दौर में 'ए बोट विदाउट बोटमेन' और 'द बर्ड इन हर केज' जैसी बहुप्रशंसित फ़िल्मों का निर्माण कर विश्व के सिने अध्येताओं का ध्यान कोरिया की ओर आकृष्ट किया। कोरिया की पहली सवाक फिल्म १९३५ में निर्मित हुई, जिसका नाम था- 'द स्टोरी ऑफ चुन ह्यांग।' द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान कोरिया में जापानी प्रोपेगेंडा फिल्में जनता के विरोध के बावजूद बड़े पैमाने पर प्रदर्शित की गईं। एक प्रकार से यह कोरियाई सिनेमा के लिए आतंक का दौर था।

कोरियाई युद्ध के डेढ़ दशक बाद कोरिया में सिनेमा की जड़ें सही अर्थों में मजबूत हुईं। जबकि मिन क्योंग सिन/ चोंग चेंग त्वा/ ली गैंगचोन/ शिन सैंग ओक/ सी मेंगह्यूई जैसे प्रतिभाशाली मिर्देशक वहाँ तेजी से उभरे। १९६१ में यू ह्यूमोक द्वारा निर्देशित 'द स्ट्रे बुलेट' इस दौर की सर्वाधिक चर्चित फिल्म थी। जिसका मनोविश्लेषणात्मक प्रस्तुतिकरण सर्वत्र सराहना का केंद्र बिंदु बना। इसी फिल्म के निर्माण वर्ष में कोरिया ने नवम् एशियाई फिल्मोत्सव आयोजित



उत्तरी कोरिया की फिल्मः अडाडा

किया। जिसमें कोरियाई प्रविष्टि के बतौर 'माय मदर एंड द बॉर्डर' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। कोरियाई सरकार ने अपने देश में सिनेमा के विकास हेतु यथेष्ट प्रयत्न किए हैं। १९६९ में गठित चलचित्र विकास निगम (एम.पी.पी.सी.) द्वारा कोरियाई फिल्मों के लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध की जाती हैं। फिल्मों में अवांछित चित्रण पर नियंत्रण के लिए कोरियाई चलचित्र



दक्षिण कोरिया की फिल्मः लाइफ लाइन

प्रदर्शन संबंधी आचरण समिति का गठन १९७८ में किया गया था। दक्षिण कोरिया का लोकप्रिय सिनेमा प्रमुखतः निर्देशक 'व्हे चिंग हो' की फिल्मों के लिए जाना जाता है। उनके द्वारा निर्मित 'व्हेल हंटिंग' (१९८४) और डीप ब्लू नाइट (१९८५) पिछले दशक की सर्वाधिक कामयाब कोरियाई फिल्में थीं। अन्य समकालीन निर्देशकों में दक्षिणी कोरिया को इम क्वॉन्टीक/ चुंग जिन वाँग और किम ह्यू याँग की बदौलत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त हुई है। इम क्वॉन्टीक कृत द डॉटर ऑव फायर/ मिस्ट और मंदाला अपने गंभीर कथानक और चित्रांकन के लिए सर्वत्र सराही गईं। नई पीढ़ी के अनेक कोरियाई निर्देशक राष्ट्रीय संस्कृति को सिनेमा के जरिए रूपायित करने में दिलचस्पी ले रहे हैं।

उत्तरी कोरिया में सिनेमा का इतिहास अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। वहाँ ५० के दशक के दौरान राष्ट्रीय फिल्म स्टुडियो की स्थापना के साथ सिनेमा की शुरूआत हुई। इस बैनर के अंतर्गत बनी पहली फिल्म थी, 'माय नेटिव प्लेस' (मेरी जन्मभूमि)। कोरियाई युद्ध के समय उत्तरी कोरिया में निर्मित फिल्मों अगेंस्ट द फ्रंट/ बॉय पार्टीसन और स्काउट ने विश्व स्तर पर प्रसिद्धि अर्जित की थी। अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कार्लोवी वेरी फिल्म समारोह में 'बॉय पार्टीसन' को सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का अवॉर्ड दिया गया। उत्तरी और दक्षिण कोरिया के बीच राजनयिक स्तर पर कटुतापूर्ण संबंध रहे हैं किंतु फिल्म माध्यम के विकास हेतु दोनों राष्ट्रों ने सम्मिलित प्रयास किए। उत्तरी कोरिया में राजकीय प्रयत्नों से १९५३ में सिनेमा संबंधी शोधपरक अध्ययनों के लिए प्योंगयांग विश्वविद्यालय में एक विशिष्ट प्रभाग शुरू किया गया। उत्तरी कोरिया के सर्वाधिक प्रतिभाशाली निर्देशक 'ओम गिल सोन' और 'रू हो सुन' इसी विश्वविद्यालय के छात्र रहे हैं। कोरियाई फिल्मों को मुख्यतः खूबसूरत प्रकृति चित्रण और छायांकन के कमाल के लिए प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। उत्तरी कोरिया में निर्मित पिछले दशक की फिल्में अननोन हीरो/ फ्लेम्स स्प्रेडिंग ओवर द लैंड/ द रोड ऑव हैपीनेस/ आरेंज दिवेज उत्कृष्ट चित्रांकन की मिसाल हैं। दृश्यांकन के अलावा कोरियाई सिनेमा विचारधारा के धरातल पर भी सक्रिय रहा है। अमेरिकी सांस्कृतिक नव-साम्राज्यवाद के विरुद्ध कोरिया ने कुछ वर्ष पूर्व फिल्म पृष्ठभूमि में जबर्दस्त प्रतिक्रया दर्शाई थी।

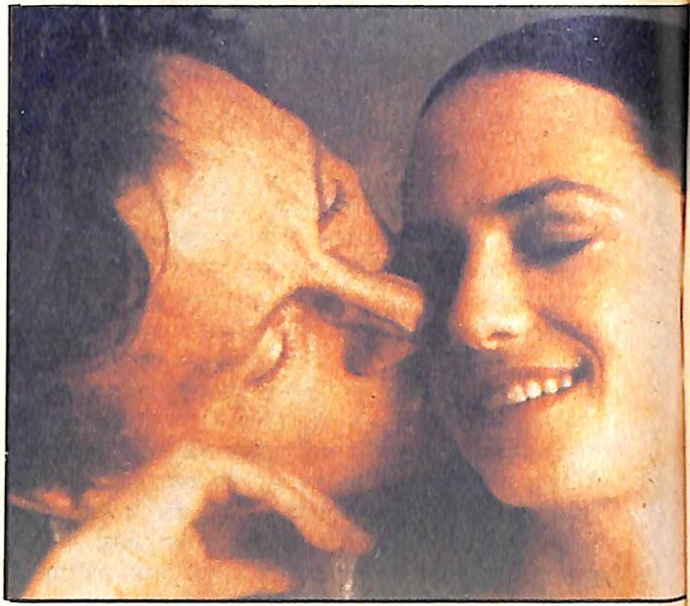
आॅस्ट्रेलियाई फिल्मों की चमक-दमक

विश्व में आॅस्ट्रेलियाई फिल्मों की पहचान उनके वृत्त चित्रात्मक होने से अलग रेखांकित की जा सकती है। आॅस्ट्रेलिया में फिल्म- निर्माण का सिलसिला रिपोर्टिंग, वृत्तचित्र और नृजाति फिल्मों की समृद्ध परंपरा का रहा है। आॅस्ट्रेलिया में सिनेमा की शुरूआत १८९६ में हो चुकी थी। कुछ न्यूजरीलें बनाने के बाद १९०१ में सर विलियम बाल्डविन स्पेन्सर ने मध्य आॅस्ट्रेलिया के आदिवासियों पर ६६ मिनट की एक वृत्त-कथा फिल्म बनाई- 'द स्टोरी आॅव द केली गैंग।' इसे विश्व की पहली फीचर फिल्म का श्रेय दिया जाता है।

आॅस्ट्रेलियाई फिल्मों के पितामह कहलाने वाले रेमण्ड लैंगफोर्ड १९२० तक लगभग १९ फिल्में बना चुके थे। उनकी एक फिल्म 'द सेन्टीमेन्टल ब्लोक' को उस विपरीत परिस्थिति में अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली जबकि आॅस्ट्रेलिया में हॉलीवुड की फिल्मों का बाजार था। आॅस्ट्रेलिया की पहली सवाक् फिल्म १९३० में बनी 'आऊट आॅव द शैडोज'। इस समय तक अनेक स्टुडियो खुल चुके थे-किंतु नियमित रूप से फिल्म- निर्माण केवल एक स्टुडियो 'सिनेसाउंड' में ही होता था। यह स्टुडियो भी द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद बंद हो गया।

चालीस के उत्तरार्ध में अमेरिकी तथा ब्रिटिश प्रवेश से फिल्म निर्माण और ज्यादा हतोत्साहित हुआ। कॉमनवेल्थ फिल्म यूनिट द्वारा संचालित नेशनल फिल्म बोर्ड (१९४५ में स्थापित) ने वृत्तचित्रों का निर्माण और शिक्षाप्रद फिल्मों का आयात करने का उद्देश्य रखा पर उसे अपेक्षित सफलता नहीं मिली।

सही अर्थों में आॅस्ट्रेलियाई फिल्मोद्योग में जीवन- संचार साठ के दशक में जाकर तब होता है जबकि माईकल पॉवेल की कॉमेडी फिल्म 'दे आर ए वीर्ड मॉब' (१९६६) जारी होती है।



आॅस्ट्रेलिया की चर्चित फिल्म: 'द पियानो'

इसी के बाद बर्गमेन से प्रभावित होकर टिम बर्स्टाल ने '२००० वीक्स' (१९६८) बनाई थी। १९७० में बनी दो फिल्में भी उल्लेखनीय रहीं- 'वॉक अबाउट' और 'वेक इन फ्राइट'। इन फिल्मों ने आॅस्ट्रेलियाई फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आॅस्ट्रेलियाई फिल्मों में अगला मोड़ आता है दो विश्व-स्तरीय फिल्मों के साथ- 'संडे टू फार अवे' और 'पिकनिक एट हेंगिंग रॉक'। दोनों फिल्में साउथ आॅस्ट्रेलियन फिल्म कारपोरेशन ने बनाई थीं। दरअसल आॅस्ट्रेलियाई फिल्मों की जो छवि विश्व स्तर पर अंकित हुई उसके निर्माण में साठ-सत्तर के

बैसाखी के सहारे इंडोनेशिया का सिनेमा

सिनेमा को इंडोनेशिया में जड़ें पकड़ने के पूर्व काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। अपेक्षित परिवेश के अभाव में वहाँ फिल्मकारों ने खासी परेशानियों के बीच फिल्में बनाई। साठ के दशक से पहले इंडोनेशियाई फिल्मों के लिए बाहर के देशों से कलाकार जुटाने पड़ते थे। सुकर्णो सरकार के सत्ता संभालने के उपरांत इंडोनेशिया में सिनेमा का विकास संभव हो सका। १९५७ में इंडोनेशियाई फिल्म इंडस्ट्री की स्थिति काफी खराब हो गई थी, जबकि वहाँ विदेशी फिल्मों के प्रसार की वजह से स्थानीय फिल्में असफलता का शिकार बनीं। इंडोनेशिया में निर्मित पहली फीचर फिल्म थी, 'लुटंग कसारूंग।' इसका कथानक एक लोककथा पर आधारित था। इंडोनेशियाई सिनेमा की आरंभिक अवस्था में इसे आकार देने वाले हॉलैंड के दो व्यक्ति थे, अल्बर्ट बालिंक और मानस फ्रैंकन। इन दोनों ने १९३७ में मलय भाषा की पहली फिल्म 'मून लाइट' का निर्माण किया। पचास के दशक में 'उस मार' नामक एक उद्योगपति द्वारा इंडोनेशिया में प्रतिष्ठित फिल्म स्टुडियो 'पेराफिनी' की स्थापना की गई। इस बैनर में बनी प्रमुख फिल्में थीं- 'दराह दान दोआ' (विराट यात्रा)/ क्राइसिस और आॅनरेबल गेस्ट (सम्माननीय अतिथि)। १९६९ से १९७८ का समय इंडोनेशियाई सिनेमा के लिए समृद्ध फिल्म निर्माणकाल रहा, जबकि इस दौरान करीब ६०० फिल्में निर्मित हुईं। १९७९ में सरकार द्वारा राष्ट्रीय फिल्म समिति एवं शासकीय फिल्म यूनिट की स्थापना के बाद इंडोनेशियाई सिनेमा के विकास की रफ्तार तेज हुई।

इंडोनेशियाई सरकार ने पिछले वर्षों में सिनेमा के प्रसार की दिशा में सक्रियतापूर्वक कदम उठाए हैं। विदेशी फिल्मों के आधिपत्य को समाप्त करने के लिए हर छविगृह में प्रतिमाह कम से कम दो इंडोनेशियाई फिल्मों के प्रदर्शन का नियम लागू किया गया। फिल्मकारों और सरकार के सम्मिलित प्रयासों की वजह से इंडोनेशिया में सिनेमा आज उन्नत अवस्था में है। राजधानी जकार्ता के २८१ छविगृहों को मिलाकर इंडोनेशिया में सिनेमाघरों की संख्या २,५०० तक पहुँच चुकी है।

समकालीन इंडोनेशियाई सिनेमा का परिदृश्य फिल्मकार 'तेगुह कार्या' के आसपास केंद्रित है। मॉस्को सिने संस्थान के छात्र रह चुके 'तेगुह' की पहली फिल्म वाजाह सियोरंग लेलाकी, (एक व्यक्ति का चेहरा) दो दशक पूर्व प्रदर्शित हुई थी। उनकी अन्य फिल्में मेमंटोस/ कादिन लारी/ सिन्ता पेर्टामा/ नवंबर १९२८ इंडोनेशिया के सिनेमा की प्रतिनिधि कृतियाँ समझी जाती हैं। मेमंटोस (१९८६) को एशियाई फिल्मोत्सव में सर्वश्रेष्ठ फिल्म के रूप में पुरस्कृत किया गया था। इंडोनेशिया के प्रमुख चर्चित निर्देशकों में उमबोह/ एरिफन नॉयर और स्थुमंद जाजा के नाम लिए जाते हैं। युवा निर्देशक इरोस जेरॉट को नई पीढ़ी का सबसे प्रतिभाशाली फिल्मकार समझा जा रहा है जिनकी कृति बुलेट एंड वुमन (१९८९) समीक्षकों द्वारा सराही गई थी।

फिल्मकार पॉल कॉक्स ने ऑस्ट्रेलियाई सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय छवि प्रदान की है। इस छवि को दूसरे फिल्मकारों ने बरकरार रखा है।

दशक की फिल्मों की ही मुख्य भूमिका है। संभवतः फिल्मोद्योग के महत्व को रेखांकित किए जाने के बाद से ही सरकारी स्तर पर फिल्म निर्माण के लिए वित्तीय सहयोग मिलना भी शुरू हुआ। इस वित्त का पहला लाभ उठाया युवा निर्देशक पीटर वीयर ने अपनी फिल्म 'होम स्दाले' (१९७१) के लिए।

सातवें, आठवें दशक में ऑस्ट्रेलियाई फिल्मों के विश्व बाजार में अच्छी तरह पाँव जम चुके थे। नवें दशक के उत्तरार्ध (१९८६-८७) में ऑस्ट्रेलियाई फिल्मोद्योग पर एक बार फिर संकट के बादल गहराए। १९८८ में फिल्म फाइनान्स कार्पोरेशन की सक्रियता से कला और अर्थव्यवस्था का उत्कृष्ट तालमेल भी इसी समय दिखाई दिया। अब कम बजट में व्यक्तिगत साधनों से अनेक सफलतम फिल्में बनने लगीं। पॉल होगन ने १९८६ में विश्वभर में सुपरहिट रही फिल्म 'क्रोकोडाइल डंडी' का दूसरा भाग इसी वर्ष बनाया। लेकिन यह भाग पहले भाग की तरह सुपरहिट नहीं रहा।

ऑस्ट्रेलियाई फिल्मों में इधर थ्रिलर और हॉरर फिल्मों का बोलबाला बढ़ा है लेकिन व्यावसायिक दृष्टि से ये फिल्में बॉक्स ऑफिस पर असफल सिद्ध हुई हैं। कई फिल्में तो विज्ञापन और प्रिंट खर्च भी जुटा पाने में असमर्थ रहीं। आर्थिक कारणों से कई महत्वपूर्ण फिल्मकार बाहरी देशों में जाकर फिल्में बनाने लगे। फिर भी कुछ उल्लेखनीय फिल्में बनी हैं जैसे १९९२ का वर्ष विश्व-विख्यात फिल्म **द पियानो** के लिए उल्लेखनीय रहा। १९९३-९४ का वर्ष भी ऑस्ट्रेलियाई फिल्मों के लिए उपलब्धि का रहा। कुल मिलाकर ऑस्ट्रेलियाई फिल्मोद्योग की अपनी एक पृथक पहचान रही है। निर्माण प्रतिशत अपेक्षित रूप से ऊपर उठा नहीं है किंतु ऑस्ट्रेलियाई फिल्मों की अंतरराष्ट्रीय छवि बरकरार है।

ऑस्ट्रेलियाई फिल्में अनेक अंतरराष्ट्रीय समारोहों में प्रशंसित/ पुरस्कृत भी हुई हैं। उसने तेजी से विश्व-समुदाय का ध्यान अपनी ओर खींचा है। ऑस्ट्रेलियाई सिनेमा को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाले कुछ प्रमुख निर्देशकों का उल्लेख आवश्यक है। ऑस्ट्रेलियन सिनेमा के अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त निर्देशक पॉल कॉक्स नीदरलैंडवासी हैं जो १९६३ में एक छात्र के रूप में आए थे। उनकी उल्लेखनीय फिल्मों में ये नाम हैं- इल्युमिनेशन (१९७७), इनसाइड लुकिंग आउट (१९७८), लोनली हार्ट्स (१९८२), मैन ऑफ फ्लॉवर्स (१९८३), माय फर्स्ट वाइफ (१९८४), कैक्टस (१९८५), द नन एंड द बैंडिट (१९९२)।

कार्ल शुल्ज ने शुरूआत दूरदर्शन धारावाहिकों से की। बाद में अनेक ख्यातनाम फिल्में बनाई जैसे गुडबाय पैरोडाइज (१९८२), माइट हियर यू (१९८३)।

ऑस्ट्रेलिया की पहली महिला निर्देशिका गिलियन आर्मस्ट्रांग की फिल्मों ने भी अंतरराष्ट्रीय ख्याति बटोरी है। उनकी 'द सिंगर एंड द डांसर' (१९७६) ने सिडनी फिल्मोत्सव में ग्रेटर यूनियन अवार्ड जीता था। पीटर वीयर १९७१ में फिल्म निर्देशन में आए। उनकी सर्वाधिक प्रशंसित फिल्मों में है-पिकनिक एट हैंगिग रॉक (१९७५), द प्लम्बर (१९७८), विटनेस (१९८५)। जार्ज मिलर की मैड मैक्स श्रृंखला की फिल्में आज भी दर्शकों को खींचने में समर्थ हैं।

● ***प्रमुख फिल्में:*** *वॉक अबाउट (१९७०)/वेक इन फ्राइट (१९७०)/ स्टॉर्क (१९७१)/ एल्बिन पर्पल (१९७१)/ द एडवेंचर्स ऑफ बेरी मेकेंजी (१९७२)/ द कार्स दैट एट पेरिस (१९७४)/ पिकनिक एट हैंगिंग रॉक (१९७६)/ द लास्ट वेव (१९७७)/ द पिक्चर शो मैन (१९७७/ कैड्डी (१९७६)/ द आयरिश मैन (१९७८)/ द ईयर माय वॉयस ब्रोक (१९८७)/ शेम (१९८८)/ फोबिया (१९९०)/ जिल्टेड (१९९२)/ बैड बॉय बबजी (१९९४)।*

फिलीपीन्स का सिनेमा



फिल्म हिमालाः फिलीपीन्स

सिनेमा को विश्व में जिस प्रकार राजकीय नियंत्रण की गिरफ्त में रहना पड़ा है, उसकी एक मिसाल फिलीपींस के संदर्भ में दी जा सकती है। मार्कोस सरकार के दौरान फिलीपीनी सिनेमा पर कड़े नियंत्रण लागू किए गए थे। इसके बावजूद फिल्मकारों ने वहाँ सार्थक सिनेमा की जड़ें उखड़ने नहीं दी। दक्षिण- पश्चिमी एशिया के देशों में फिलीपींस ने सिनेमा को विकसित करने में प्रतिबद्धता का परिचय दिया है। फिलीपींस में स्थापित होने वाला पहला फिल्म स्टुडियो था, मलयन मूवीज। उसके नियंता की भूमिका एक अभियांत्रिकी विशेषज्ञ जोस नेपोमुसेन ने निभाई। इसके बैनर में पहली फिलीपीनी फिल्म का निर्माण हुआ, जिसका नाम था उलांगग बुकिड (ग्रामीण बाला)। तीस के दशक में बहुत तेजी के साथ फिलीपींस की फिल्म कंपनियाँ अस्तित्व में आई। इनमें प्रमुख थीं- पॉर्लेटोन हिस्पेनो/ एल.वी.एन./ क्लेऑटिक/ सोलम्बॉइड फिल्म्स और सेम्पेगुटा। एल.वी.एन. कंपनी के द्वारा सर्वाधिक १५० फिल्मों का निर्माण मात्र २३ वर्षों के अंतराल में किया गया। शताब्दी के मध्यकाल में फिलीपीनी सिनेमा ने अधिक सक्रियता नहीं दर्शाई। सत्तर के दशक में फिलीपींस के सर्वाधिक चर्चित निर्देशक लाइनो ब्रोका के आगमन के साथ विश्व स्तर पर फिलीपीनी सिनेमा की पहचान बनी।

नई पीढ़ी के फिल्मकारों ने फिलीपींस की राष्ट्रीय अस्मिता और सामाजिक संदर्भो को परदे पर अभिव्यक्त करने के गंभीर प्रयास किए। सत्तर और अस्सी के दशक में निर्मित प्रमुख फिलीपीनी फिल्में थीं- ब्रोका की इन्सिएंग/ बेल सर्वेन्टाइस की सकाडा/ लुपिता कोन्सिओ कृत वन्स देअर वाज ए मोथ/ इस्माइल बर्नेल कृत मनीला बाय नाइट और माइक देओन की बेंच- ८१। इन फिल्मों ने फिलीपींस में सार्थक सिनेमा के लिए आवश्यक परिवेश तैयार किया। ८० के दशक के दौरान फिलीपींस विश्व

दक्षेस देशों का सिनेमा

सार्क संगठन के सभी देशों को यदि सिनेमा की पृष्ठभूमि में देखा जाए, तो इन पर भारतीय प्रभुत्व साफ नजर आता है। पाकिस्तान/ श्रीलंका/ बांग्लादेश/ नेपाल राष्ट्रों की फिल्म इंडस्ट्री बहुत अधिक उन्नत नहीं कही जा सकती। कुल मिलाकर यहाँ का सिनेमा हिंदुस्तानी फिल्मों के प्रभावक्षेत्र में रहा है। विभाजन पूर्व पाकिस्तान के शहर लाहौर की छवि एक सक्रिय



पाकिस्तान की फिल्मःबंदिश

फिल्म निर्माण केंद्र के रूप में बन चुकी थी। १९२० में वहाँ मूक फिल्मों का निर्माण आरंभ हुआ। लाहौर में फिल्म उद्योग की आधारशिला रखने वाले व्यक्ति थे, डी.एन. पंचोली। उनके मुम्बई चले जाने के उपरांत दीवान सरदारीलाल नाम के एक फिल्म निर्माता ने १९४८ में लाहौर में एक फिल्म 'तेरी याद' का निर्माण किया। जो आजाद पाकिस्तान की पहली फिल्म थी। लाहौर के बाद कराची में प्रतिष्ठित फिल्म स्टुडियो अस्तित्व में आए। ६० के दशक में क्लर्क/ फिरंगी/ शहीद (निर्देशक : खलील कैसर), कातिल (खुर्शीद अनवर), गुमनाम (अनवर कमाल) जैसी चर्चित फिल्में पाकिस्तान में निर्मित हुईं। आमतौर पर पाकिस्तानी दर्शक हिंदी फिल्में पसंद करते आए हैं। पाकिस्तान के शासक इसके विरुद्ध तरह-तरह की अड़चनें पैदा करते रहे। १९६२ में पहली बार पाकिस्तान में भारतीय फिल्मों के प्रदर्शन पर रोक लगाई गई थी। राजकीय स्तर पर कटुतापूर्ण संबंधों के बावजूद आज भी पाकिस्तान में हिंदी फिल्में लोकप्रिय हैं। नई पीढ़ी के फिल्मकारों में जमील देहलवी (इमेक्युलेट कंसेप्शन फेम) और आसिफ निजामी ने विश्व स्तर पर अपनी पहचान कायम की है।

श्रीलंकाई सिनेमा की आधारशिला भारतीय सहयोग से रखी गई थी। श्रीलंका की राजधानी कोलंबो में पहली बार १९०१ में एक भारतीय फिल्म कंपनी 'मदान थिएटर' द्वारा छविगृह स्थापित किए गए। १९२८ में श्रीलंका के प्रथम सिने प्रतिष्ठान 'सीलोन थिएटर' की स्थापना भारत के आर्थिक सहयोग से हुई। 'बेस्टर जे पेख' श्रीलंका के सर्वाधिक प्रतिष्ठित फिल्मकार माने जाते हैं। जिनकी कृति रेकावा (१९५६) सिंहली सिनेमा की प्रतिनिधिकृति के रूप में चर्चा का विषय बनी। एम.एस. नायकम और एस. विमलवीरा श्रीलंका की पुरानी पीढ़ी के प्रतिष्ठित फिल्म निर्देशक थे। अस्सी के दशक में 'जेमिनी फोनसेका' जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त निर्देशक सिंहली सिनेमा के क्षितिज पर उभरे। उनके द्वारा निर्मित 'सागरमेक मडा (१९८१) हाल के दौर की सर्वाधिक विवादास्पद सिंहली फिल्म रही थी। उसे तीक्ष्ण राजनीतिक टिप्पणियों के कारण श्रीलंका सरकार द्वारा प्रतिबंधित कर दिया गया था।

बांग्लादेश के सिनेमा की विरासत भी समृद्ध कही जा सकती है। ढाका में फिल्म प्रदर्शन की शुरूआत १८९८ से हो चुकी थी। १९४६ में बांग्लादेश की जमीन पर पहली फीचर फिल्म का निर्माण अब्दुल्ला नामक एक सज्जन द्वारा किया गया। जिसका नाम था, 'दुःखे जादेर जिबॉन गोमा।' साठ के दशक की सर्वाधिक चर्चित बंगलादेशी फिल्म 'मुख ओ मुखोश' थी। उसका कथानक जब्बार खान के लिखे एक नाटक पर आधारित था। फिल्म के संदर्भ में खास बात यह थी कि इसके छायांकन हेतु साधारण टेप रिकॉर्डर प्रयुक्त किया गया। १९७१ में बांग्लादेश की आजादी के बाद बनी प्रथम महत्वपूर्ण फिल्म 'जिबॉन थेके नैया' (निर्देशक : जाहिर रहमान) थी। बांग्लादेश के समकक्ष **नेपाल** का सिनेमा कमोबेश भारत के क्षेत्रीय सिनेमा का ही एक रूप कहा जा सकता है। □

के १० सर्वाधिक फिल्म निर्माता राष्ट्रों में शुमार होता रहा। इसका श्रेय वहाँ की तत्कालीन प्रमुख तीन फिल्म कंपनियों रीगल/ सी को और वी वा को जाता है। पिछले कुछ वर्षों में फिलीपींस में सिनेमाघरों की संख्या रफ्तार से बढ़ी है। आज वहाँ करीब १२०० छबिगृह हैं। उनमें मसाला फिल्मों का प्रदर्शन किया जाता है। फिलीपींस को गंभीर सिनेमा के धरातल पर प्रतिष्ठा दिलाने वाले निर्देशक लाइनो ब्रोका ही कहे जाएँगे। उनकी कृति 'माय कंट्री' को १९८४ में कान फिल्मोत्सव की सर्वश्रेष्ठ फिल्म के बतौर पुरस्कृत किया गया था। ब्रोका के अलावा इस्माइल बर्नेल और पेक गलागा भी फिलीपीन के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चित निर्देशकों में गिने जाते हैं। बर्नेल ने फिलीपीनी जनता की गरीबी और दुरावस्था पर केंद्रित फिल्में बनाईं। उनके द्वारा निर्मित प्रतिनिधि कृतियाँ एट द टॉप/ निरेकल/ योल इन द वाटर और मनीला बॉय नाइट विश्व के फिल्म समीक्षकों के बीच सराही गई हैं। गलागा कृत स्कॉरपियो नाइट (१९८५) व्यावसायिक दृष्टि से फिलीपींस की सर्वाधिक सफल फिल्म मानी जाती है।

फिलीपींस में सिनेमा को विकसित करने में फिलीपीन एजुकेशनल थिएटर एसोसिएशन (पेटा) का महत्वपूर्ण योगदान है। इस प्रशिक्षण संस्थान ने फिलीपींस को कई ख्याति प्राप्त फिल्मकार दिए हैं। फिलीपींस के सबसे चर्चित निर्देशक लाइनो ब्रोका इसी संस्था के छात्र थे। यहाँ प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद उन्होंने १९७० में अपनी पहली फिल्म वान्टेड : ए परफेक्ट मँदर का निर्माण किया। फिल्म निर्माताओं के अधिकारों की सुरक्षा के लिए फिलीपींस में एक संगठन 'कामास' कार्यरत है। सरकारी दबावों के विरुद्ध इसने मुखर भूमिका अदा की है। फिलीपींस में सेंसरशिप नियमों के अनुपालन हेतु एम.टी.आर.सी.बी. (मूवीज एंड टेलीविजन रिव्यू एंड क्लासिफिकेशन बोर्ड) नामक आचार समिति का गठन १९८५ में किया गया था। मार्च १९८६ में अकीनो सरकार के सत्ता संभालने के बाद राष्ट्र के समस्त फिल्म निकायों का नियंत्रण राजकीय स्तर पर किया जाने लगा। प्रधानमंत्री कोराजीनो अकीनो ने फिल्मों पर मार्कोस सरकार द्वारा लागू नियंत्रण बरकरार रखने के बावजूद देश में सिनेमा के उन्नयन हेतु सकारात्मक प्रयास भी किए। उनके प्रयासों से स्थापित फिलीपींस कमीशन ऑन कल्चर एंड आर्ट (पी.सी.सी.ए.) समिति के तहत फिल्मों को राष्ट्रीय संस्कृति के बतौर विकसित करने के महत्वपूर्ण प्रयास हुए हैं। ■

अफ्रीकी सिनेमा

फिल्मों की दौड़ में पीछे

धनाभाव/ अपर्याप्त साधन/ प्रशिक्षण का अभाव/ तकनीकी अक्षमता/ वितरण नेटवर्क की कमी- ऐसे मूलभूत कारण हैं जिनसे **अफ्रीकी सिनेमा** का विकास अवरुद्ध हुआ है। साथ ही अपने आका राष्ट्रों की नीति और उनके वितरण- एकाधिकारवाद भी प्रमुख घटक रहे। यही कारण रहा कि अफ्रीकी सिनेमा भी उपनिवेशवादी ढंग से विकसित संचालित होकर दो हिस्सों में बँटा दिखाई देता है। फ्रेंच उपनिवेशवादी राष्ट्र (फ्रांकोफोन) और ब्रिटिश उपनिवेशवादी राष्ट्र (एंग्लोफोन)।

फ्रांकोफोन देशों में १९३४-३५ के करीब फ्रेंच सरकार ने डिक्री जारी करके विद्रोही दृष्टिकोण वाली फिल्में जब्त करना शुरू कर दिया था। फिल्म निर्माण को यह गहरा धक्का था। लेकिन पचास के दशक में पहली बार इस डिक्री की अवज्ञा करके फ्रांसीसी फिल्मकार ज्याँ राउच ने नाइजीरिया के ओउमारोऊ गांदा और मोस्तका अलासाने को प्रशिक्षित किया जो बाद में महत्वपूर्ण फिल्मकार के रूप में उभरे। छटे दशक में मिनिस्ट्री ऑफ को-ऑपरेशन के वित्तीय और तकनीकी सहयोग कार्यक्रम का लाभ उठाते हुए सेनेगल के सेम्बेने ओउस्माने ने 'बोरोम सारीत' बनाई। लेकिन सेम्बेने ने ही जब फ्रांस में प्रवासी अफ्रीकियों के शोषण पर 'ला नोइरे दे...' (१९६४) बनाई तो इसे प्रतिबंधित कर दिया गया। बावजूद दोहरी नीति के, इस कॉरपोरेशन के सहयोग से १९६२-७८ के बीच २०० फीचर/लघु फिल्में बनीं। अगले दशक में २०० फिल्में और बनीं, किंतु तानाशाही रवैए के कारण ४०० फिल्मों में से



घाना की फिल्म: लव ब्रिव्हड इन द अफ्रीकन पॉट

केवल ४० फिल्में ही अफ्रीका के पाँच-सात देशों में प्रदर्शित हो सकीं।

उधर एंग्लोफोन देशों में १९३५ के करीब 'बांटू एजूकेशनल सिनेमा एक्सपेरिमेंट' के रूप में ब्रिटिश उपनिवेश ऑफिस ने फिल्म-निर्माण संभाला। मेजर नॉटकट ने 'पोस्ट ऑफिस सेविंग्स बैंक,' 'काफी अंडर बनाना शेडो', 'इन्फेंट मलेरिया' जैसी लगभग ३५ फिल्में बनाईं। १९३९ में केन्या, घाना और नाइजीरिया में कॉलोनियल फिल्म यूनिट की स्थापना हुई जिसने करीब २८० लघु व न्यूजरील फिल्में बनाईं।

जाहिर है, संपन्न राष्ट्रों ने फिल्म निर्माण की जगह अफ्रीका में अपनी फिल्मों का बाजार बनाने में ज्यादा रुचि ली इनमें अमेरिकी फिल्मों का बोलबाला रहा। हाल के आँकड़ों के अनुसार ४०० मिलियन अफ्रीकी जनता हेतु अब तक २५०० फिल्में निर्मित हुई जबकि प्रदर्शित फिल्म संख्या ९०० रही।

अपने आका राष्ट्रों के इस एकाधिकारवाद से मुक्ति पाने का पहला प्रयास फ्रांकोफोन देशों में हुआ। गुनीया और बुर्कीना फासो ने फिल्म के आयात और राष्ट्रीयकरण का संकल्प लिया। फ्रांसीसी कंपनियों ने बाधा पैदा की जिससे सालभर सिनेमाघर बंद रहे। समझौता हुआ कि इन देशों को भी अन्य स्रोतों से फिल्में खरीदने की छूट रहेगी। इन देशों का अनुसरण माली, सेनेगल, बेनिन, मेडागास्कर, अल्जीरिया, ट्यूनिशिया ने भी किया। एक बड़ी उपलब्धि के रूप में १९७४ में 'द कन्सोर्टियम इंटर अफ्रीकाइने दे डिस्ट्रीब्यूशन' अस्तित्व में आया, लेकिन तमाम वादों के, अफ्रीकी राष्ट्रों की सरकारों ने वित्तीय सहयोग नहीं दिया। यह अफ्रीकी सिनेमा के लिए एक बड़ा धक्का था।

इन विपरीत औपनिवेशिक स्थितियों में अपनी जर्जर आर्थिक स्थिति के बावजूद अफ्रीकी फिल्मकारों ने रेखांकित प्रयास किए जैसे नक्रूमाट (घाना) ने सर्वसुविधायुक्त स्टुडियो वाला प्रथम अफ्रीकन स्कूल स्थापित किया। क्वाव अनसाह (घाना) ने 'लव ब्रिव्हड इन द अफ्रीकन पॉट' और 'हेरिटेज अफ्रीकी' जैसी फिल्मों का निर्माण व वितरण किया। सेनेगल, माली, गाबोन, अल्जीरिया,ट्यूनिशिया आदि ने राष्ट्रीय फिल्म कंपनियाँ स्थापित कीं।

यदि देशों के अनुसार देखें तो आज अफ्रीका के सबसे गरीब देशों में एक बुर्कीना फासो अफ्रीकी फिल्मों का केंद्र बना हुआ है। १९८४ में आजादी के बाद बुर्कीना फासो में फिल्मोद्योग के लिए सरकारी प्रयास सराहनीय ढंग से आरंभ हुए। राजधानी ओउगाडोउगोउ में हर दो वर्ष के अंतराल में फिल्म समारोह आयोजित होता है। बीच के वर्ष में यह ट्यूनिशिया में होता है। इस समय बुर्कीना फासो में लगभग ४० फिल्मकार सक्रिय हैं। यहाँ आधुनिक साधन भी हैं। 'मोबाइल टेक्नीकल टीम' भी है। अपनी गतिशील नीति के कारण ही फ्रांस और अफ्रीका के बीच फिल्मोद्योग की संधि का सर्वाधिक लाभ भी इसी देश ने उठाया है।

अफ्रीका में सिनेमा पहली बार १८९५ में एडिसन के काइनेटोस्कोप के साथ जोहांसबर्ग पहुँचा। जहाँ साउथ अफ्रीका बाइस्कोप और म्यूटोस्कोप कंपनी (१८९९) ने बड़े स्तर पर फिल्म निर्माण शुरू किया। १९०८ में पहला सिनेमाघर खुला। आरंभ में अमेरिकी फिल्मों की बहुतायत रही। १९२७ से ब्रिटिश फिल्में भी प्रदर्शित हुईं। फिल्म निर्माण अत्यंत धीमा रहा। सख्त सेंसरशिप ने स्थानीय फिल्मोद्योग को दबाए रखा। तब की एकमात्र केपटाउन फिल्म सोसायटी को सेंसरशिप के दबाव में १९३४ में बंद कर देना पड़ा। १९५४ तक फिर कोई फिल्म सोसायटी शुरू नहीं हुई। पिछले तीन-चार दशकों में जो छुटपुट प्रयास हुए उनमें उल्लेखनीय हैं- कमबैक अफ्रीका/ टैक्सी टू सोवेटो/ द रोड टू मक्का/ द गुड फासिस्ट। इन उपलब्धियों और राजनीतिक आजादी के बावजूद, दक्षिण अफ्रीकी फिल्मोद्योग आर्थिक संकट से उबर नहीं पाया है। ■

लातीनी सिनेमा आरंभिक दिनों से आज तक अमेरिकी फिल्मों का बाजार रहा है। निरंतर राजनीतिक प्रतिकूलताओं के कारण यहाँ के फिल्मकार अन्य देशों (खासकर मैक्सिको) या हॉलीवुड चले गए। मैक्सिको, लातीनी फिल्मों के लिए सुगम देश है। क्यूबा लातीनी फिल्मों का निकटवर्ती केंद्र है। राजनीतिक और आर्थिक विषमता से निरंतर जूझने के बाद आज लातीनी सिनेमा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित है। खासकर ब्राजील/ अर्जेन्टीना/ चिली/ कोलंबिया/ उरुग्वे देशों की फिल्में। विश्व में राजनीतिक सिनेमा के क्षेत्र में अग्रणी लातीनी फिल्में सख्त सेंसरशिप से गुजरती हैं। इसीलिए यहाँ अनेक फिल्मकार अंडरग्राउंड रूप से फिल्में बनाते हैं। निरंतर प्रताड़ना के कारण कई फिल्मकार देश छोड़कर चले गए। ब्राजील के उदाहरण से सेंसरशिप के बारे में यहाँ जानना रोचक होगा कि सेंसर बोर्ड फिल्मों में राजनीतिक व्यंजना पर सख्त रवैया अपनाता है, जबकि सेक्स और हिंसा की तरफ से आँखें मूँदे रहता है। यही कारण है कि ब्राजीली आँकड़े चौंकाते हैं।

ब्राजील में फिल्म निर्माण का आरंभ पुर्तगाली/ इतालवी फिल्मकारों ने किया। वास्तविक ब्राजीली सिनेमा की शुरूआत हुम्बेर्तो माडरो की फिल्मों से होती है। जिनमें 'ना प्रिमावेरा दा विदा' (१९२५) और 'गांगा ब्रूता' (१९३३) उल्लेखनीय हैं। मारियो पिक्जोतो की एकमात्र फिल्म 'लिमिते' (१९२९) ने पहली बार ब्राजील से बाहर ख्याति पाई है। बाद में ध्वनि युग में ब्राजील सिनेमा की एकमात्र उपलब्धि रही कार्मेन मिरांदा की पहली संगीतमय फिल्म 'अलो-अलो ब्राजील?' (१९३४)।



अर्जेंटीना-कनाडा की फिल्मः द डार्क साइड ऑव द हार्ट

१९५३ में लिमा बेरेटो की फिल्म 'बेन्डिट' ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सनसनी फैलाई। ५० के दौर में स्वतंत्र फिल्मकारों ने महत्वपूर्ण फिल्में बनाई जैसे नेल्सन परेरा सान्तोस की रियो। क्वारान्ता ग्राउस १९५३ में आई। सान्तोस,उनके भाई राबर्ड सान्तोस, रुय गुएरा और ग्लॉबर रोका ने 'सिनेमा नोवो' स्थापित किया, जिसने ब्राजीली सिनेमा के विकास में मुख्य भूमिका निभाने के साथ ही लातीनी राजनीतिक सिनेमा को गहरे प्रभावित किया। १९६४ में सैन्य विद्रोह के बाद शासन तंत्र ने सिनेमा नोवो की राजनीतिक आवाज को कुचल दिया। १९६९ में रोका ने ब्राजील छोड़ दिया। उनके जाने से ब्राजीली सिनेमा काफी प्रभावित हुआ।

पिछले ढाई-तीन दशक में ब्राजीली सिनेमा में व्यापक परिवर्तन आए हैं। राजनीतिक सेंसरशिप समाप्त हो गई। किंतु पोर्नोग्राफी अब भी फिल्मों पर हावी है। ब्राजील की फिल्में भारतीय समारोहों में जब कभी प्रदर्शित होती हैं, दर्शक टूट पड़ते हैं। इनमें सेक्स इतने उजागर रूप में दर्शाया जाता है कि वह विकृति में बदल जाता है।

अर्जेंटीना

इस देश में १८९० में फिल्म निर्माण शुरू हो जाने के बावजूद अगले दो दशक तक कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। अमेरिकी फिल्म ही हावी रहीं। तीस के दशक में दो प्रमुख फिल्म कंपनियाँ अर्जेन्टाइन सोनो फिल्म्स और लूमिटन स्थापित हुई जिन्होंने सराहनीय भूमिका निभाई। इस पूरे दशक में लोकप्रिय सिनेमा हावी रहा। प्रिजियोनेरोसदे ला तिएरा और

लातिनी देशों में सिनेमा पर सेंसर का शिकंजा !

● चरणसिंह अमी

'ला गुएरा' गाउचा जैसी बौद्धिक फिल्में भी बनीं। चौथे-पाँचवें दशक में लियोपोल्दो तोरे-निल्सन की फिल्में छाई रहीं। अपनी पहली स्वतंत्र फिल्म 'दायस दे ऑदियो' (१९५४) के पहले उन्होंने अपने पिता लियोपोल्दो तोरे-रियो की फिल्मों का पटकथा- लेखन और सह निर्देशन किया था। उनकी छठी फिल्म हाऊस ऑव द एंजेल (१९५७) उनके और अर्जेन्टीनी फिल्मों के इतिहास में मोड़ साबित हुई। तोरे को योरप के कलात्मक फिल्मकारों बुन्वेल और बर्गमेन की श्रेणी का दर्जा मिला। उनकी प्रमुख फिल्में हैं- द फॉल (१९५९), द हैन्ड इन द ट्रेप (१९६१), पेन्टेड लिप्स (१९७४)।

इस दशक में आर्थिक कमजोरी से फिल्मोद्योग डाँवाडोल रहा। राजनीतिक फिल्मकारों द्वारा गठित सिने लिबरेशन ने कुछ अच्छी फिल्में बनाई, जैसे फेर्नान्दो सोलानास (द अवर ऑव द फर्नेसा) (१९६९), जेरार्दो वालेजो हुम्बेर्तो रिओस (एल ग्रितो दे एस्ते पिब्लो-१९७२)। तोरे निल्सन की दूसरी पीढ़ी ने अगले ढाई-तीन दशक तक न्यू वेव के रूप में अर्जेन्टीनी फिल्मों को व्यापकता दी। १९६२ में अर्जेन्टीनी फिल्मों को बढ़ावा देने वाला कानून बनने के बावजूद सैन्य शासन और आम अधिकारी वर्ग के चरम भ्रष्टाचार, अस्थिरता, हिंसा ने फिल्म निर्माण को हतोत्साहित किया। स्थिति अस्सी के दशक में लोकतंत्र की स्थापना के साथ बदली। विख्यात फिल्मकार मान्युएल आंतिन को राष्ट्रीय फिल्म संस्थान का प्रमुख बनाया गया, जिन्होंने फिल्म विकास के लिए हरसंभव प्रयास किए। यह अर्जेन्टीनी सिनेमा को विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाने में समर्थ हुआ।

कोलंबिया

कोलंबिया में फिल्म निर्माण १९१४ से शुरू हुआ। छठे दशक में आकर पहचान बनी। राष्ट्रीय भावनाओं में व्यक्त करने वाली आरंभिक फिल्मों से राजनीतिक फिल्मों की शुरूआत होती है। इसी समय उभरे कार्लोस अल्वारेज की फिल्मों को सरकार ने 'सत्तासीन राजनीतिज्ञों की बेइज्जती' निरूपित कर दिया। उनकी पत्नी जूलियाद अल्वारेज की फिल्म अन डिया यो प्रेगन्ते चर्चित रही। १९७१ में तीन दिग्गज फिल्मकारों कार्लोस अल्वारेज, जूलिया अल्वारेज और ग्राबिएला साम्पेर को गैरिल्ला ग्रुप से तथाकथित संबंधों के कारण गिरफ्तार कर लिया गया। दूसरी तरफ व्यावसायिक फिल्में फार्मूलाबद्ध थीं और उनका एक बड़ा वर्ग सक्रिय था।

सरकार ने फिल्म निर्माण प्रोत्साहन हेतु बॉक्स ऑफिस पर सरचार्ज लगाना शुरू किया। इससे फिल्म निर्माण में वृद्धि जरूर हुई। इस कानून ने धन कमाने पर जोर दिया। इसी कारण अनेक दोयम दर्जे की फिल्में भी बनीं। १९९० में सत्ता परिवर्तन के बाद कोलंबियन सिनेमा में सुधार शुरू हुआ।

चिली

लातीनी सिनेमा में चिली का महत्वपूर्ण योगदान है। यहाँ भी १९१६ में लघुवृत्त चित्र से फिल्म निर्माण शुरू हुआ। धनाभाव, तकनीकी अक्षमता और अमेरिकी प्रतिस्पर्धा ने विकास रोक दिया। १९२९ तक यहाँ पहले दशक में कुल ७८ फिल्में बनी थीं। ज़ोर्ज दे'लानो ने घर पर ही स्टुडियो खोलकर कुछ फिल्में बनाईं। जिनमें एक ला'काले काले देल एनसुए (१९२९) को सेविल्ले फिल्म समारोह में पुरस्कार मिला था। १९३४ में ध्वनियुग आने के बाद हॉलीवुड ऐस्सी (१९४४) विशेष चर्चित हुई। इसी वर्ष चिली फिल्म्स की स्थापना सरकारी सहायता से हुई। सत्तर के दशक में चिली सिनेमा का राष्ट्रीयकरण हुआ। राष्ट्रीयकरण का कदम फिल्मकार राष्ट्रपति अलेन्दे ने उठाया था। जब वे राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार थे, तब उनके समर्थन में कुछ उल्लेखनीय राजनीतिक फिल्में बनी थीं। उसके बाद १९६९ में एक स्वतंत्र संगठन सिनेमातो ग्राफिया तेरकार मुंदो द्वारा निर्मित दो फिल्में काफी चर्चित हुईं। वालपाराइसो मी अमोर और द जेकाल आफ नाहुएत्तेरो।

चिली सिनेमा में फिल्मकार अलेन्दे के राष्ट्रपति बनने के बाद हालाँकि सुधार हुआ, किंतु चिली सिनेमा के अनेक अनुभवी फिल्मकार अभी भी निर्वासित जीवन जी रहे हैं। यहाँ के फिल्मकार बाहरी सहयोग पर निर्भर हैं जैसे गोंजालो जस्टिनियानो ने 'चिल्ड्रेन ऑव द कोल्ड वार' फ्रांस में बनाई। १९७३ से स्वीडन में निर्वासित जीवन जी रहे लुई वेर्जा ने 'नथिंग फॉर इट'स्वीडन में बनाई। क्रिश्चियन लोर्का ने'नेमेसियो' फ्रांस में बनाई। हाल की कुछ फिल्में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी चर्चित रहीं। जैसे स्पेनिश सहयोग से निर्मित रिकार्दो लाराइन धी ला फ्रोन्तेरा (१९९२) को बर्लिन फिल्म समारोह में सिल्वर बीअर पुरस्कार मिला। रूसी सहयोग से निर्मित 'इवन केजीनी एजेंट्स फाल इन लव' तथा स्पेनिश सहयोग से निर्मित 'सार्दिनो' अन्य उल्लेखनीय फिल्में हैं।

■ ■

स्वीडन की पताका :

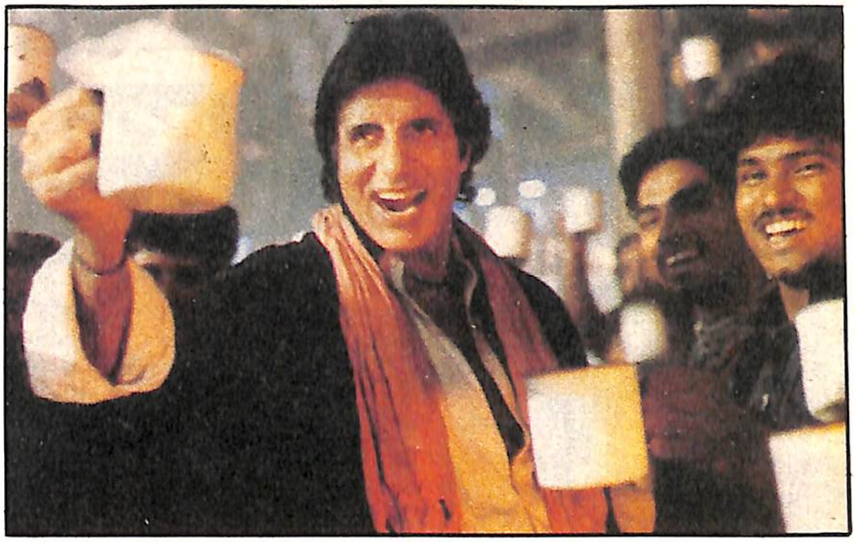
स्वीडन का सिनेमा बर्गमन और ग्रेटा गार्बो जैसी हस्तियों के परिप्रेक्ष्य में जाना जाता है। हॉलीवुड स्वीडिश सिनेमा का सदैव ऋणी रहेगा। स्वीडन की अभिनेत्रियों ने अपने ग्लैमर और सौंदर्य के जरिए हॉलीवुड के शैशवकाल में बनी फिल्मों को अतुलनीय लोकप्रियता की दुर्लभ जमीन प्रदान की। यह और बात है कि इस एहसान के बदले अमेरिका ने स्वीडन का सिनेमा निगल लिया। उसे बाद में इंगमार बर्गमन जैसे प्रतिष्ठित निर्देशक ने मुक्ति दिलाई। पश्चिमी गोलार्द्ध पर स्वीडिश सिनेमा एक अलग पहचान बनाने में सफल रहा। स्वीडन के सिनेमा की आधारशिला रखने का श्रेय 'चार्ल्स मॉग्नूसन' को प्राप्त है।



फिल्म सोफी में लिव उलमान

उन्होंने १९०९ में 'स्वेंस्का बॉयो' नाम से एक फिल्म कंपनी की शुरूआत की थी। मूक सिनेमा के दौर में स्वीडिश सिनेमा को आकार देने वाले अन्य व्यक्ति थे, विक्टर जोरत्रॉम, मॉरिस स्टीलर और जूलियस जेन्जॉन। इन सभी ने कैमरा संचालन में दक्षता हासिल करते हुए फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अहम् भूमिका अदा की। स्वेंस्का बॉयो कंपनी के लिए जोस्त्राम और स्टीलर ने चार्ल्स मॉग्नूसन के मार्गदर्शन में विक्ट्री ऑव लव/ द गार्डनर/ ब्रोकन स्प्रिंग रोज आदि फिल्मों का निर्माण किया। अमेरिका में जिस वक्त 'बर्थ ऑव ए नेशन' जैसी कालजयी कृतियाँ बन रही थीं, स्वीडन के फिल्मकारों द्वारा उन्हीं दिनों कुछ कलात्मक फिल्में तैयार की गईं।इनमें जोस्त्राम कृत द आउट ला एंड हिज वाइफ/ इंगबोर्ग होम/ गर्ल फ्रॉम मार्शक्रॉफ्ट उल्लेखनीय थीं। जोस्त्राम द्वारा निर्मित 'दाय सोल शैल बीयर विटनेस' को गंभीर और बिम्बात्मक कथ्य प्रस्तुति के लिए अपने समय की चुनिंदा फिल्म कृतियों में शुमार किया गया। मॉरिस स्टीलर ने स्वीडन के सिनेमा की व्यावसायिकता धरातल पर जड़ें मजबूत कीं। विश्व की प्रख्यात अभिनेत्री ग्रेटा गार्बो को सामने लाने वाले वही व्यक्ति थे। उनकी 'सर आर्नेस ट्रेजर' और 'कोस्ता बर्लिस सागा' मूक फिल्मों की दौर की चर्चित कृतियाँ साबित हुईं। गुस्ताव मोलेन्डर नामक एक स्वीडिश फिल्मकार ने अपनी फिल्मों में ध्वनि प्रभावों के सुंदर समावेश के जरिए सवाक सिनेमा की शुरूआत के समय कुछ यादगार फिल्में तैयार कीं। तीस के दशक में स्वीडिश सिनेमा को नए आयाम सौंपने वाले निर्देशक थे कोस्ता एकमेन। उनके द्वारा निर्मित 'स्वीडन हेल्म' और 'इंटरमेज्जो' जैसी फिल्में विश्व सिनेमा में स्वीडन की पहचान बनाने वाली कृतियों के बतौर जानी जाती हैं। 'इंटरमेज्जो' अपने समय की सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्मों में गिनी गई। इसी फिल्म की बदौलत इंग्रिड बर्गमन जैसी तारिका को दुनिया में शोहरत मिली। तीस और चालीस का दशक स्वीडिश सिनेमा के लिए सामाजिक, राजनीतिक विषयों पर केंद्रित फिल्मों का दौर रहा, जबकि एल्बिन हैन्सां और फॉस्टमेन जैसे प्रतिबद्ध निर्देशक स्वीडन में उभरे। इन्होंने बड़े उत्साह के साथ प्रयोगवादी सिनेमा को जड़ें सौंपीं। इस अभिनव सिनेकर्म की जमीन से जुड़ने वाले अन्य फिल्मकार थे, एर्न लक्सडोर्फ/ कार्ल डिमलिंग/ हॉस एकमेन और एल्फ जोबर्ग। द रोड टू हैवन इसी दौर की एक महत्वपूर्ण फिल्म थी जिसे स्वीडिश सिनेमा की कालजयी कृति माना जाता है। समीक्षकों की नजर में यह फिल्म बर्गमन की सेवन्थ सीव के समकक्ष रखी गई। जोबर्ग कृत एक अन्य फिल्म 'फ्रेंजी' को भी काफी सराहा गया था। शताब्दी के मध्यकाल में स्वीडिश सिनेमा कलात्मक और आर्थिक दृष्टि से रुग्णावस्था से गुजरने के बाद इंगमार बर्गमन् के हाथों एक नया और आकर्षक चेहरा गढ़ने में सफल रहा। बर्गमन ने न केवल सिनेमा के परदे पर अभिनव शिल्प की रूपरेखा तैयार की, बल्कि स्वीडिश सिनेमा की असामयिक रूप से डूबती नौका को किनारे लगाया। थर्स्ट/ प्रिजन/ समर इंटरल्यूड जैसी फिल्मों में चमत्कारिक दृश्य चित्रण के लिए बर्गमन विश्व भर में सराहे गए। स्वीडन का सिनेमा जिस प्रखर मानववाद और आत्मिक अन्वेषण की छवियों के लिए जाना जाता है, उसके रचनाकार बर्गमन ही थे। उनसे नए दौर के फिल्मकारों ने दुनिया भर में प्रेरणा प्राप्त

विश्व सिनेमा पर केंद्रित इस विशेषांक में भारतीय सिनेमा पर विहंगम नजर दौड़ाते हुए अति संक्षिप्त जानकारी यहाँ दी जा रही है। इससे भारत में सिनेमा आगमन के सौ सालों की विकास यात्रा का परिचय पाठकों को मिल सकेगा। भारतीय सिनेमा के विविध विषयों को आधार बनाकर 'नईदुनिया' इसके पूर्व छः विशेषांकों का प्रकाशन कर चुका है। इसलिए भी भारतीय सिनेमा पर सिर्फ एक आलेख दिया गया है, ताकि शेष विश्व पर विस्तार से जानकारी पाठकों को मिल सके। **-सम्पादक**



अमिताभ बच्चन : डोंट वरी, बी हेप्पी!

इंगमार बर्गमन

की। 'साइलेंस' और 'शेम' बर्गमन की अत्यंत विवादास्पद कृतियाँ थीं, जिन्होंने परंपरावादियों के बीच खलबली मचाई। इन फिल्मों का कथ्य सीधे- सीधे समाज के विकृत चेहरे पर आक्षेप करने वाला था। फ्रांस तथा इटली में प्रखर वक्तव्य वाली फिल्मों के निर्माण का जो सिलसिला आरंभ हुआ, उसके समानांतर बर्गमन की फिल्में स्वीडन में रचनात्मक सवालों से जूझ रही थीं।

साठ के दशक में स्वीडिश सिनेमा ने दो विपरीत धाराओं का परिचय दिया। एक ओर जहाँ स्वीडन में सेक्स और हिंसा से परिपूर्ण फिल्मों की श्रृंखला शुरू हुई, वहीं जोमॉर्न, फ्रांसिस्को रोजी और पेर रॅग्नार जैसे युवा निर्देशकों ने सामाजिक विषयों पर गंभीर फिल्मों का निर्माण किया। द असॉल्ट/ यू आर लाइंग/ द ग्राफ्टर जैसी फिल्में गहन कलाबोध और वैचारिक परिपक्वता के धरातल पर संश्लिष्ट थीं। इसी दौरान स्वीडन में वृत्तचित्र आंदोलन ने भी जड़ें पकड़ीं। स्वीडिश सिनेमा के लिए यह क्रांति का दौर था। इसी अवधि में जोनास कर्नेल जेल ग्रेडे जैसे फिल्मकारों ने सिनेमा के परदे पर यथार्थवादी बिम्ब चित्रित किए। सत्तर का दशक स्वीडन के सिनेमा के लिए सौभाग्यशाली साबित हुआ, जबकि हैरी शीन द्वारा स्थापित 'फिल्म हाउस' जैसे प्रतिष्ठित बैनर की स्थापना के साथ श्रेष्ठ फिल्मों के निर्माण की शुरूआत हुई। 'इमिग्रेंट' और 'द न्यू लैंड' जैसी कृतियाँ विश्व सिनेमा में स्वीडन को सम्मान दिलाने में सफल रहीं। 'द इमिग्रेंट' को हॉलीवुड में सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म के अकादमी अवॉर्ड से पुरस्कृत किया गया था। स्टिग जोर्कमेन और स्टीफन जार्ल इस दौरान उभरने वाले प्रतिभाशाली निर्देशक थे। उन्होंने इंसानी जज्बातों और अंतरसंबंधों के धरातल पर फिल्में बनाईं। प्रयोगवादी सिने आंदोलन के तहत स्वीडन में गंभीर कला फिल्मों के साथ कॉमेडी फिल्मों का भी निर्माण हुआ है। जिनका कथ्य मुख्यत: राजनीतिक व्यंग्य पर केंद्रित था। पिछले दो दशक की स्वीडिश फिल्में मूल रूप से राजनीतिक विसंगतियों का विश्लेषण करती रही हैं। स्वीडन की ऑफ बीट फिल्मों में आधुनिक युग में जी रहे मानव की यंत्रणा अभिव्यक्त हुई है। लार्स फोसबर्ग कृत 'द असॉल्ट' को ७० के दशक की सर्वाधिक साहसिक कथ्य वाली फिल्म निरूपित किया गया था। स्वीडन में आज सक्रियतापूर्वक समसामयिक विषयों से जुड़ी फिल्मों का निर्माण हो रहा है। स्कैन्डेनिवियाई राष्ट्रों में स्वीडन ने अकेले अपने कंधों पर सिनेमा का झंडा बुलंदी के साथ फहरा रखा है।

● **राहुल ब्रजमोहन**

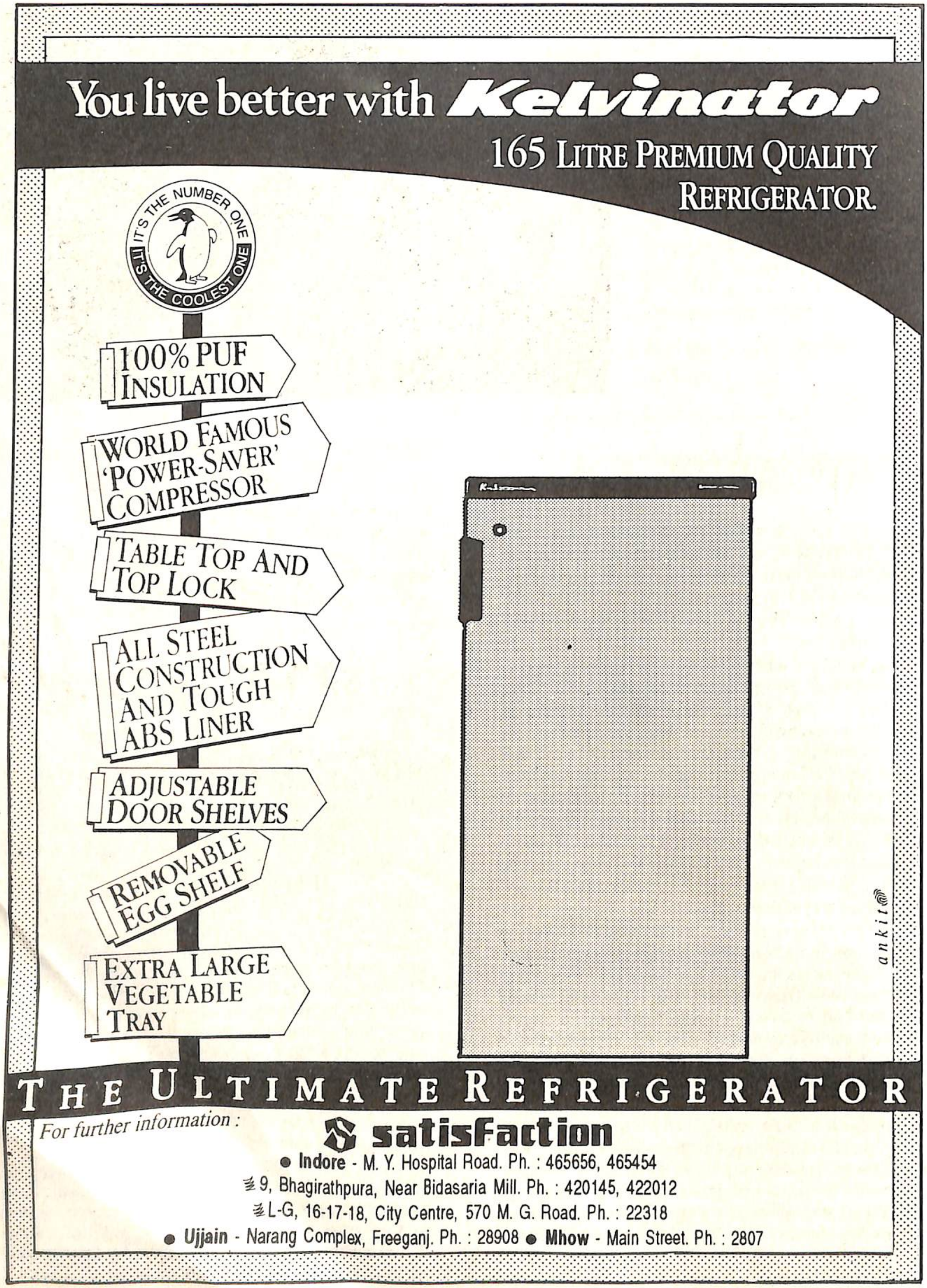
भारत में सिनेमा आगमन के सौ साल

□ **श्रीराम ताम्रकर**

आगामी ७ जुलाई १९९५ को भारत में सिनेमा आगमन के सौ साल पूरे हो जाएँगे। ७ जुलाई १८९६ मंगलवार की शाम बम्बई की वॉटसन होटल में दो सौ दर्शकों की उपस्थिति में ल्युमिएर ब्रदर्स की फिल्मों का पहली बार प्रदर्शन हुआ था। पहली बार लोगों ने परदे पर चलती-फिरती तस्वीरों का चमत्कार देखा और चकित रह गए। आधे घंटे के इस प्रदर्शन की टिकट-दर थी एक रुपया। इस प्रदर्शन में कुल आठ फिल्में थी- रेलगाड़ी का स्टेशन पर आगमन। बगीचे में पानी देता माली। बच्चे को नाश्ता कराते अभिभावक। समुद्र में नहाते लोग। एक दीवार का गिराया जाना। कारखाने से बाहर आते मजदूर। इसी दिन पहली बार टाइम्स ऑव इंडिया में इस फिल्म-शो का विज्ञापन भी छपा था।

इस प्रथम प्रदर्शन को देखने वाले दर्शकों में हरिश्चन्द्र सखाराम भाटवड़ेकर भी थे। सावे दादा के नाम से पुकारे जाने वाले भाटवड़ेकर स्थिर छायांकन कला से परिचित थे। उन्होंने इक्कीस गिन्नी खर्च कर ल्युमिएर का सिनेमाटोग्राफ यंत्र मँगाया। बम्बई के हैंगिंग गार्डन में कुश्ती आयोजित कर उसे फिल्माया। एक सर्कस के बंदरों का प्रशिक्षण कैमरे में कैद कर फिल्म को लंदन भिजवा दिया। १८९९ में विदेशी फिल्मों के साथ इन दो भारतीय फिल्मों का भी प्रदर्शन नियमित किया जाने लगा। विश्व में सिनेमा आगमन के तीन साल बाद भारत ने भी अपनी फिल्में बना लीं, यह तथ्य महत्वपूर्ण है। सावे दादा ने ही १९०१ में लंदन से लौटे विद्यार्थी परांजपे के स्वागत के दृश्यों की फिल्म बनाकर पहली न्यूजरील अथवा वृत्तचित्र निर्माण का श्रेय अपने खाते में दर्ज किया।

उधर कलकत्ता में हीरालाल सेन ने फिल्म निर्माण का कार्य आरंभ किया। वह स्वयं फोटोग्राफर थे। उन्हें इस नए चमत्कार में अपार संभावनाएँ दिखाई दीं। वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने फ्रांस की पाथे कंपनी का कैमरा खरीदा था। १९०४ में उन्होंने दो घंटे अवधि की 'अलीबाबा और चालीस चोर' नामक फिल्म बनाई थी। लेकिन यह तमाम प्रयास नाटकों के फिल्मांकन तक सीमित रहे।



You live better with Kelvinator
165 LITRE PREMIUM QUALITY REFRIGERATOR.
IT'S THE NUMBER ONE
IT'S THE COOLEST ONE
100% PUF INSULATION
WORLD FAMOUS 'POWER-SAVER' COMPRESSOR
TABLE TOP AND TOP LOCK
ALL STEEL CONSTRUCTION AND TOUGH ABS LINER
ADJUSTABLE DOOR SHELVES
REMOVABLE EGG SHELF
EXTRA LARGE VEGETABLE TRAY
ankit
THE ULTIMATE REFRIGERATOR
For further information :
satisFaction
Indore - M. Y. Hospital Road. Ph. : 465656, 465454
9, Bhagirathpura, Near Bidasaria Mill. Ph. : 420145, 422012
L-G, 16-17-18, City Centre, 570 M. G. Road. Ph. : 22318
Ujjain - Narang Complex, Freeganj. Ph. : 28908 Mhow - Main Street. Ph. : 2807

दादा फालके और राजा हरिश्चन्द्र

भारत में पहली कथा फिल्म बनाने में सफलता पाई घुण्डिराज गोविंद फालके ने, जिनका जन्म ३० अप्रैल १८७० को त्र्यम्बकेश्वर गाँव (नासिक जिला) में हुआ था। दादा फालके के नाम से मशहूर दादा ने १९१० में क्रिसमस के दिनों में 'लाइफ ऑव क्राइस्ट' फिल्म देखी, तो वे सारी रात सो नहीं सके। अपनी पत्नी सरस्वती देवी (काकी) के साथ उसी फिल्म को उन्होंने दोबारा देखा और तय किया कि भारतीय महापुरुष के जीवन पर कथा- फिल्म बनाई जाना चाहिए। चित्रकार/ जादूगर/ अभिनेता/ छायाकार और मुद्रण कला के जानकार दादा फालके को अपनी इच्छा पूरी करने में अधिक समय नहीं लगा। १९१२ में उन्होंने 'राजा हरिश्चन्द्र' की शूटिंग आरंभ की। तारामती के रोल के लिए वेश्याएँ तक राजी नहीं हुईं क्योंकि वे सिनेमा को अपने धंधे से घटिया मानती थीं। बड़ी मुश्किल से एक रेस्तराँ के बैरे सालुंके ने हामी भरी। इस तरह भारत की प्रथम फिल्म राजा हरिश्चन्द्र की नायिका की भूमिका एक पुरुष द्वारा अभिनीत की गई।

२१ अप्रैल १९१३ को बम्बई के ओलिम्पिया सिनेमाघर में आमंत्रितों तथा प्रेस के लिए राजा हरिश्चन्द्र का प्रथम प्रदर्शन किया गया। इसके बाद ३ मई से कोरोनेशन सिनेमा में राजा हरिश्चन्द्र के नियमित प्रदर्शन आम जनता के लिए होने लगे। दादा फालके को अपनी पहली फिल्म निर्माण में गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। उनकी पत्नी के गहने तक बेचना पड़े थे। इस बात ने एक इतिहास रचकर भारतीय नारी के आदर्श तथा त्याग को गहराई से रेखांकित किया है। दादा फालके से प्रेरणा लेकर अनेक लोग फिल्म निर्माण की ओर आकर्षित हुए। इनमें बाबूराव पेंटर की सैरन्ध्री, धीरेन गांगुली की विलायत पलट और हिमांशु राय की लाइट ऑव एशिया प्रमुख फिल्में हैं।

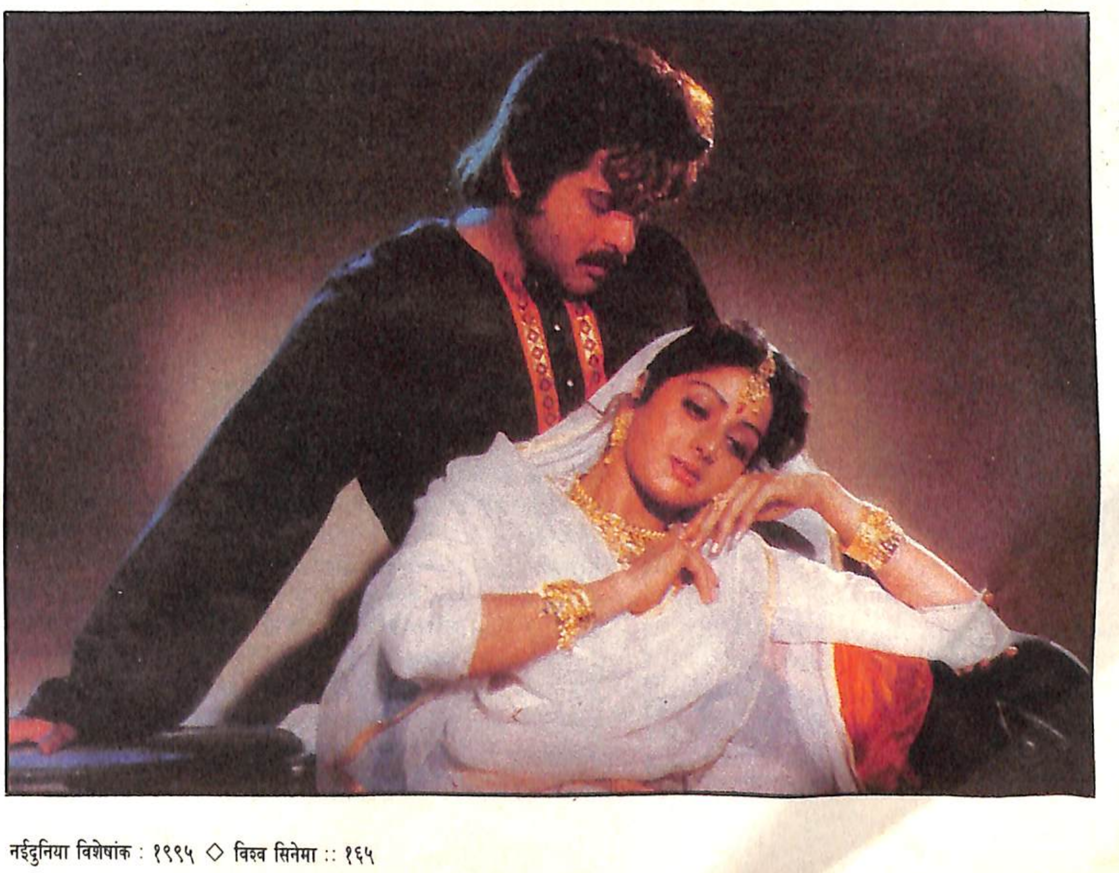
बाबूराव पेंटर ने ग्रामीण ऋणग्रस्तता पर 'सावकारी पाश' की रचना कर सबका ध्यान यथार्थ की ओर आकर्षित किया। १९२० में जहाँ १८ फिल्में बनी थीं, वहाँ १९३१ में उनकी संख्या बढ़कर २०७ हो गई। १९१३ से १९३० तक का समय मूक फिल्मों का था और इनके विषय पौराणिक तथा ऐतिहासिक हुआ करते थे। इसी कार्यकाल में भारतीय राजनीति के क्षितिज पर महात्मा गाँधी का उदय हुआ। उनके स्वाधीनता आंदोलनों के प्रभाव और चरित्र फिल्मों में दिखाई देने लगे। इससे अँगरेजी हुकूमत हरकत में आई और उसने 'वंदे मातरम्' फिल्म का नाम बदलवा दिया। फिल्मों में आजादी के दीवानों और झंडा दिखाने पर बंदिश लगा दी गई। फिल्म 'कीचक वधम्' में कीचक की गर्दन उखाड़ने का दृश्य इतना डरावना था कि अनेक दर्शक सिनेमाघरों में बेहोश होने लगे। इन सब कारणों से फिल्मों पर सेंसरशिप के विचार ने जन्म लिया।

गूँगा बोलने और गाने लगा

१९३१ में भारतीय सिनेमा बोलने लगा। आर्देशिर ईरानी ने अपनी पहली बोलती फिल्म 'आलम आरा' प्रस्तुत कर सबको चौंकाया। सवाक

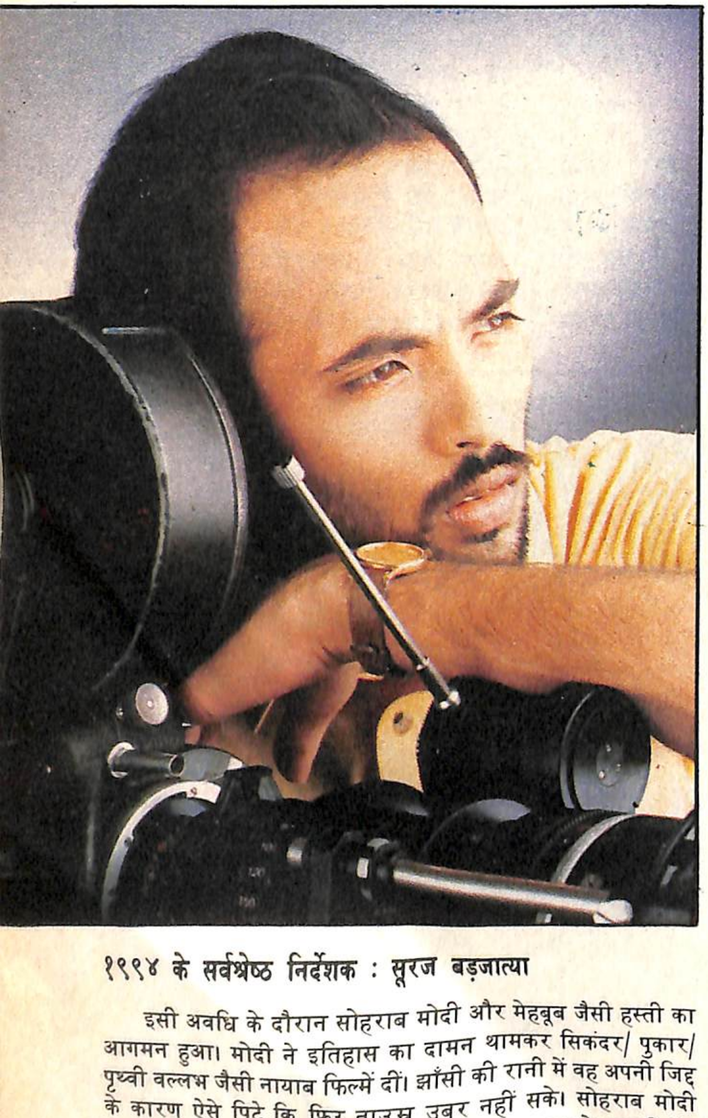
सेंसर-सेंसर कितना पानी?

भारतीय फिल्मों को सेंसर की धारदार कैंची शुरू से भयभीत करती रही है। इसीलिए मीठे चुम्बन का कड़ुआ शोर हमेशा होता रहा। और चुम्बन के बहाने दो पक्षियों की चोंच लड़ाने या दो फूलों के आपस में टकराने के दृश्य दिखाए जाते रहे। एक सदी होने में आई हिन्दी सिनेमा का नायक अपनी नायिका को पाने के लिए पेड़ का चक्कर लगाकर गाने गा रहा है, मगर नायिका का आँचल हर बार छूट जाता है। जब से चुम्बन-दृश्यों के मामले में सेंसर थोड़ा उदार हुआ और ओंठ पास- पास आने लगे, तो 'एड्स' का शोर होने लगा। आज के नायक- नायिका चुम्बन से कतराने लगे हैं, क्योंकि 'एड्स' जैसी महामारी का खतरा कोई नहीं लेना चाहता। वैसे भी सैटेलाइट चैनलों की भीड़ जब से बढ़ी है, सेंसर बोर्ड की सार्थकता समाप्त हो गई है। स्वयं भारतीय दूरदर्शन 'वयस्कों वाली फिल्में' दिन- दहाड़े दिखा कर सेंसर को अँगूठा दिखाने लगा है।



लव-लीजैण्ड हीर-राँझा- बने अनिल कपूर और श्रीदेवी

युग के आते ही मूक युग के कई सितारे अस्त हो गए। लेकिन फिल्माकाश में पृथ्वीराज कपूर/ जयराज/ ललिता पवार/ दुर्गा खोटे/ मेहताब/ नसीम/ शांता आप्टे/ शोभना समर्थ/ कानन बाला/ के.एल. सहगल/ सुरेन्द्र/ चंद्र मोहन/ देविकारानी/ अशोक कुमार/ लीला चिटणीस/ के.सी. डे/ पहाड़ी सांन्याल/ जमुना जैसे सितारे जगमगाने लगे। १९३१ से १९५० तक की अवधि हिंदी सिनेमा के इतिहास में अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस दौरान बॉम्बे टॉकीज, न्यू थियेटर्स, प्रभात फिल्म कंपनी जैसे बैनर का दबदबा बना रहा और दर्शक कंपनी का नाम जानकर फिल्म देखने का निर्णय करते थे। स्टार सिस्टम आरंभ नहीं होने से मासिक वेतन पर कलाकार नौकर रखे जाते थे और निर्देशक के इशारों पर सब काम करते थे। हिमांशु राय जर्मनी से फ्रांज आस्टिन को लाए, जिन्होंने बॉम्बे टॉकीज के लिए अछूत कन्या/ जन्मभूमि/ जवानी की हवा/ झूला/ जीवन नैया का निर्देशन किया था। प्रभात की फिल्मों का नियंत्रण वी. शांताराम के हाथों में था। उन्होंने सिनेमा का संबंध सामाजिक सरोकारों से जोड़कर आदमी/ पड़ोसी/ दुनिया न माने जैसी कालजयी फिल्में रचीं। उन्होंने अमृत मंथन और अमर ज्योति में कई प्रयोग किए। न्यू थियेटर जब जीवन से पलायन की बात फिल्म देवदास के माध्यम से दे रहा था, तब 'आदमी' फिल्म द्वारा वी. शांताराम ने जीवन जीने के लिए निरूपित किया।



१९९४ के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक : सूरज बड़जात्या

इसी अवधि के दौरान सोहराब मोदी और मेहबूब जैसी हस्ती का आगमन हुआ। मोदी ने इतिहास का दामन थामकर सिकंदर/ पुकार/ पृथ्वी वल्लभ जैसी नायाब फिल्में दीं। झाँसी की रानी में वह अपनी जिद्द के कारण ऐसे पिटे कि फिर ताउम्र उबर नहीं सके। सोहराब मोदी पारसी थियेटर की परंपरा के अभिनेता और फिल्मकार थे। उनकी शेर जैसी दहाड़ती आवाज में संवाद अदायगी का मुकाबला सिर्फ पृथ्वीराज कर पाते थे। मेहबूब ने रोटी और औरत फिल्म के जरिए अपनी कुशलता का परिचय दिया। यही फिल्म औरत १९५७ में मदर इंडिया के नाम से बनी और ऑल टाइम ग्रेट फिल्मों की श्रेणी में शुमार हुई। इसमें नरगिस की लाजवाब भूमिका थी। दक्षिण भारत से जेमिनी स्टुडियो से निकली फिल्म 'चंद्रलेखा' ने उत्तर भारत के हिंदी बाजार में अपनी सफलता के नगाड़े बजाए। इसके बाद हिंदी फिल्म निर्माण का दक्षिण भारत गढ़ बन गया।

गाए जा गीत मिलन के

चालीस के दशक की फिल्मों पर गीत-संगीत हावी रहा। अधिकांश अभिनेता- अभिनेत्रियाँ अपने गीत स्वयं गाते थे। के.एल. सहगल की लोकप्रियता का मूल रहस्य उनकी आवाज है। धूपछाँव फिल्म से जब पार्श्व गायन का सिलसिला शुरू हुआ, तो सुरैया, मोहम्मद रफी, मुकेश, नूरजहाँ, तलत मेहमूद, लता मंगेशकर, आशा भोसले, गीता दत्त, मन्नाडे, हेमंत कुमार, किशोर कुमार फिल्मों पर छा गए और १९४५ से १९६५ तक इनका वर्चस्व फिल्मों पर बना रहा। फिल्म गीत-संगीत के इतिहास में यह बीस साल स्वर्णिम रहे हैं। फिल्मों के कथन रोमांटिक हुआ करते थे और गीत-संगीत के ताने-बाने से उन्हें सँवारा जाता था। इसी अवधि में दिलीप कुमार, राजकपूर, देवआनंद जैसे रोमांटिक हीरो की त्रयी ने पूरे हिंदुस्तान के युवावर्ग को अपने सम्मोहन में जकड़ लिया। दरअसल ये तीन महानायक फिल्म अभिनय के तीन स्कूल हैं, जिनसे प्रभावित होकर दूसरी, तीसरी और चौथी पीढ़ी के नायक आगे चलकर सामने आए। इन नायकों के लिए पार्श्व गायक तक बँट गए थे। मसलन राजकपूर के लिए मुकेश, दिलीप के लिए तलत और देवआनंद के लिए किशोर। नायिकाओं में यह युग सुरैया, नूरजहाँ, नरगिस, मधुबाला, निम्मी, नूतन और गीताबाली का रहा, जिन्होंने दर्शकों के दिलों पर बरसों तक राज किया। इस पीढ़ी ने अपनी विरासत आगे चलकर वैजयंती माला, वहीदा रहमान, शर्मिला टैगोर, सुचित्रा सेन, माला सिन्हा, तनूजा, सायरा बानो, आशा पारिख, मुमताज और हेमा मालिनी को सौंपी। शशिकपूर, राजेन्द्र कुमार, शम्मी कपूर, मनोज कुमार, प्रेमनाथ, जयराज, महिपाल, भारत भूषण, प्रदीप कुमार, किशोर कुमार दूसरी पंक्ति के नायक के रूप में दर्शकों के चहेते बने रहे।

जीवन से जुड़ा सिनेमा

आजादी के बाद भारत के नव-निर्माण और सामुदायिक विकास के अंतर्गत प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के आह्वान पर फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों में नए समाज की रचना और मानवीय रिश्तों में मधुरता के कथानक शामिल किए। ख्वाजा अहमद अब्बास और बिमल रॉय ने इटली के विटोरियो द सीका के नव-यथार्थवाद से प्रभावित होकर धरती के लाल तथा दो बीघा जमीन जैसी फिल्में बनाईं। अब्बास का रुझान वामपंथी विचारधारा की तरफ था। राजकपूर के लिए उन्होंने आवारा और श्री ४२० की पटकथा लिखी। ये दोनों फिल्में सोवियत संघ और अरब देशों में खूब सराही गईं। इसके बाद राजकपूर ने जागते रहो, बूट पॉलिश का निर्माण किया।'जिस देश में गंगा बहती है'से उनका फिल्मकार कथानक से फिसलकर नारी देह के सौंदर्य में उलझ गया। मेरा नाम जोकर और प्रेमरोग को छोड़कर राजकपूर की बाद की फिल्में उन्हें उतनी ऊँचाई नहीं देतीं, जो उन्होंने आवारा/ श्री ४२०/ जागते रहो में अर्जित की थी। इसके बावजूद राजकपूर भारत के अलावा शेष विश्व के लिए भी अपने को महानायक साबित करने में सफल रहे।

देवआनंद ने अपने मैनरिज्म के द्वारा अपनी छवि रोमांटिक हीरो की बरकरार रखी। आर्थिक अपराधों के ताने-बाने में गीत-संगीत की मेलोडी उनकी फिल्मों की विशेषता है– नौ दो ग्यारह/ तेरे घर के सामने/ फंटूश/ पेइंग गेस्ट/ टैक्सी ड्राइवर/ गाइड/ प्रेम पुजारी/ ज्वेल थीफ/ हरे राम हरे कृष्ण/ गेम्बलर इसी श्रृंखला में चली आ रही हैं। दिलीप कुमार ने अपने ट्रेजेडी किंग रूप से दर्शकों को अपना प्रशंसक बनाया है। उनकी अभिनय शैली की छाप आज के कई अभिनेताओं में स्पष्ट देखी जा सकती है। मुगले आजम उनके अभिनय जीवन की श्रेष्ठतम प्रस्तुति है। गंगा- जमुना एकमात्र फिल्म है, जिसका निर्माण दिलीप कुमार ने किया था। शम्मीकपूर ने 'या हू' शैली लेकर कपूर-परिवार की



परंपराओं से बगावत की और अपने को स्थापित किया। उनके छोटे भाई शशिकपूर का मिजाज आरंभ से ही 'अंतरराष्ट्रीय' रहा, जो आज भी जारी है। शशि कपूर ने कलियुग, जुनून, विजेता, ३६ चौरंगी लेन और उत्सव के रूप में उम्दा फिल्में उपहार में दी हैं। मनोज कुमार को देश भक्ति का रोग मार गया, वरना उनमें काफी संभावनाएँ थीं।

इन कलाकारों को एक ओर जहाँ पार्श्व गायकों का अपरोक्ष सहयोग मिलता रहा, वहीं अनिल विश्वास/ नौशाद/ गुलाम हैदर/ गुलाम मोहम्मद/ एस.डी. बर्मन/ हेमंत कुमार/ शंकर- जयकिशन/ कल्याणजी-आनंदजी/ लक्ष्मीकांत प्यारेलाल/ आर.डी. बर्मन/ जयदेव/ खय्याम/ जैसे संगीतकारों ने अपनी मधुर एवं मादक धुनों से फिल्मों को समृद्ध बनाया। निर्माता- निर्देशकों में बी.आर. चोपड़ा, रामानंद सागर, मोहन सहगल, अमिय चक्रवर्ती, सत्येन बोस, सुभाष घई, रमेश सिप्पी, जी.पी. सिप्पी, विजय भट्ट मुख्यधारा की फिल्मों की संख्या में वृद्धि करते रहे। केवल बिमल रॉय और गुरुदत्त की गणना विश्व स्तर के फिल्मकारों में इसलिए की जाती है कि उनकी फिल्मों का ट्रीटमेंट, वर्ल्ड-क्लास रहा है। सुजाता, बंदिनी, मधुमति के लिए बिमल रॉय और प्यासा, कागज के फूल, साहब बीवी और गुलाम के लिए गुरुदत्त हमेशा याद किए जाएँगे। ऋषिकेश मुखर्जी, गुलजार और बासु चटर्जी मध्य-मार्गी फिल्मकार हैं। इन्होंने कला और व्यावसायिक सिनेमा के बीच सफल संतुलन बनाए रखा है।

ताजी हवा का झोंका

सन् १९६९ से हिंदी सिनेमा दो स्पष्ट धाराओं में विभाजित हो गया। फिल्म फायनेंस कार्पोरेशन की आर्थिक सहायता से मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन शोम' ताजी हवा के झोंके की तरह आई। इसकी

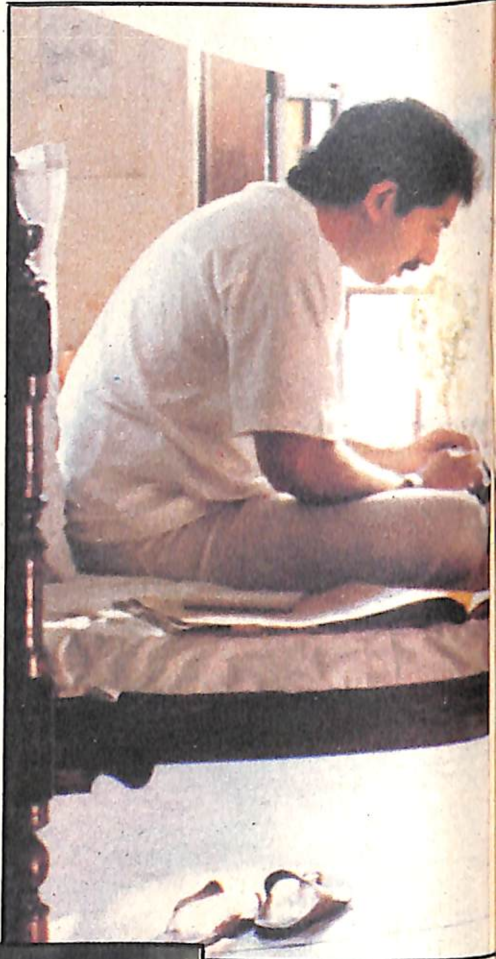
जर्मनी के लिए निर्मित मणि कौल की फिल्म द क्लॉउड डोर (बादल द्वार) में अनु अग्रवाल की मादक मुद्रा

सफलता से उत्साहित होकर नए फिल्मकारों और कलाकारों की एक पूरी जमात परिदृश्य पर उभरती है। फिल्मकारों में बासु भट्टाचार्य/ श्याम बेनेगल/ गोविंद निहलानी/ सईद अख्तर मिर्जा/ केतन मेहता/ सई परांजपे/ विजया मेहता/ कुमार शाहनी/ मणि कौल/ एम.एस. सथ्यू/ उत्पलेंदु चक्रवर्ती/ गौतम घोष/ मुजफ्फर अली/ कल्पना लाजमी/ अपर्णा सेन/ प्रकाश झा और उनकी विशिष्ट फिल्मों की एक पूरी फसल हमारे सामने विरासत की तरह मौजूद है। सारा आकाश/ अंकुर/ मंथन/ मंडी भूमिका/ सूरज का सातवाँ घोड़ा/ आक्रोश/ अर्द्ध सत्य/ द्रोहकाल/ अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है और सलीम लँगड़े पे मत रोओ/ होली/ हीरो हीरालाल/ मिर्च मसाला/ कथा/ दिशा/ स्पर्श/ राव साहब/ माया दर्पण/ तरंग/ उसकी रोटी/ गरम हवा/ देव शिशु/ पार/ पतंग/ उमराव जान/ एक पल/ रुदाली/ दामुल/३६ चौरंगी लेन और परमा जैसी फिल्मों को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली और पुरस्कार भी प्राप्त हुए। इन्हीं फिल्मों में हमें ओमपुरी/ शबाना आजमी/ स्मिता पाटिल/ दीप्ति नवल/ नसीरुद्दीन शाह जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति के समृद्ध कलाकार मिले, जिन्होंने परंपरागत अभिनय ढाँचे को तोड़कर अपनी शैली विकसित की।

समांतर या कला सिनेमा का यह आंदोलन १९६९ से १९८८ तक ठीकठाक चला। बाद में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा सहायता कम करने और फिल्मों की लागत बढ़ जाने से सारे समीकरण टूट गए। आज इस आंदोलन के कलाकार व्यावसायिक सिनेमा में खड़े होकर

मानवीय मूल्यों का दस्तावेज

भारतीय सिनेमा का अर्थ है हिन्दी के अलावा तमाम भारतीय भाषाओं और बोलियों का सिनेमा। हिन्दी सिनेमा के विकास के समानांतर अन्य भारतीय भाषाओं में भी सिनेमा का विकास हुआ। और सच्चे अर्थों में भाषाई- सिनेमा ही भारत का प्रतिनिधित्व करता है। इस संदर्भ में **सत्यजीत राय** का नाम सर्वोपरि है। १९५५ में 'पाथेर पांचाली' के माध्यम से राय मोशाय ने भारतीय सिनेमा को अंतरराष्ट्रीय जगत से परिचित कराया और प्रतिष्ठा दिलाई। पाथेर पांचाली/ अपूर संसार और अपराजितो की त्रयी को सारा संसार देख कर प्रशंसा कर चुका है। इसके अलावा चारूलता/ शतरंज के खिलाड़ी/ सद्‌गति और आगंतुक सत्यजीत राय की विश्व प्रसिद्ध फिल्में हैं। उनकी फिल्में 'मानवीय मूल्यों का दस्तावेज' मानी जाती हैं। सत्यजीत राय की फिल्मों से भारतीय फिल्मकारों की एक पूरी पीढ़ी प्रभावित है। उत्पलेंदु चक्रवर्ती/ गौतम घोष/ अडूर गोपालकृष्णन्/ जी. अरविंदन्/ मृणाल सेन/ ऋत्विक घटक/ गिरीश कर्नाड/ गिरीश कासरवल्ली/ शाजी एन. करुण/ श्याम बेनेगल/ सईद मिर्जा/ केतन मेहता के सिनेमा का इतना प्रभावी होने का कारण है कि ये तमाम फिल्मकार सत्यजीत राय के देश और जमीन से जुड़े हैं।



पूरे देश में विरोध का तूफान खड़ा करने वाली मणि रत्नम् की फिल्म बॉम्बे में मनीषा कोइराला अरविंद स्वामी

'ओए-ओए' कर रहे हैं। फिल्मकार टीवी की ओर मुड़ गए हैं।

राम से बड़ा रावण

मुख्यधारा का सिनेमा 'शोले' (१९७५) के आगमन के बाद से हिंसक ही नहीं महा-हिंसक हो गया है। हर फिल्म में खून से परदा लाल है। कलाकार लथपथ हैं। अब पिस्तौल से गोली नहीं चलती, मशीनगन से गोलियाँ बरसती हैं। नायक के बजाए खलनायक यानी राम से बड़ा रावण हो गया है। अंडरवर्ल्ड के सरगनाओं द्वारा फिल्म निर्माण के लिए नालियों में पैसा पानी की तरह बहाया जा रहा है। नतीजे में डॉन/ डाकू, स्मगलर तथा भ्रष्टाचारियों के चरित्र ग्लैमर से भरे दर्शाए जाते हैं। एक



ढाई आखर के 'प्रेम' का अर्थ समझते संजय कपूर और तब्बू



मनोरंजन के बहाने सजा

दूरदर्शन के विस्तार और विदेशी चैनलों की भरमार का परिणाम यह हुआ है कि भारतीय फिल्म दर्शक फिल्मों की अति से अपच का शिकार हो गया है। पहले सप्ताह में एक फिल्म प्रसारित होती थी, तो सड़कों पर सन्नाटा फैल जाता था। अब टीवी पर फिल्म की घोषणा होते ही दर्शक शटर बंद करने लगे हैं। दूरदर्शन मूवी क्लब, जी. सिनेमा, जैन टीवी, स्टार टीवी, और एटीएन ने यह स्थिति पैदा कर दी है कि एक टॉयटिल वाली फिल्म को दर्शक सुबह/ मध्यान्ह/ अपरान्ह/ संध्या/ रात या देर रात जब चाहे तब और कितनी ही बार देख सकता है। इसके अलावा फिल्मी गीतों और उन पर आधारित कार्यक्रमों की बाढ़ ने पूरी हवा में फिल्में घोल दी हैं। इस स्थिति का दुःखद पहलू यह है कि अच्छी, बेहतर और विश्व सिनेमा की श्रेष्ठ फिल्में भी कूड़ा-करकट के साथ दिखा दी जाती हैं। पहले फिल्म मनोरंजन करती थीं, अब सजा देने लगी हैं।

अदना-सा पुलिस इंसपेक्टर आखिर अपनी ईमानदारी के बलबूते पर कब तक बहन का बलात्कार, पत्नी और बच्चों की हत्या का दुख झेलता रहेगा। दरअसल **अमिताभ बच्चन** की फिल्मों में 'लार्जर देन लाइफ' और 'एंग्री यंग मेन' की जो छवि बनी उसने तमाम कानून/ कचहरी और न्याय प्रणाली को ध्वस्त कर अपनी मर्ज़ी से फैसला करने का अधिकार अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया। अमिताभ एक महान् अभिनेता हो सकते हैं। उनके परिवार के प्रधानमंत्री परिवार से गहरे संबंधों के कारण देश की पूरी नौजवान पीढ़ी ने उनका अनुसरण किया है। आज स्वयं अमिताभ के सामने यह समस्या है कि वे अपनी छवि के विपरीत जाकर कुछ कर पाने में समर्थ नहीं हैं। यही वजह है कि वे एबीसी लि. (अमिताभ बच्चन कारपोरेशन लि.) की स्थापना कर शुद्ध व्यवसायी बनने जा रहे हैं।

पिछले बीस बरसों में अधिकांश फिल्मों का सामाजिक सरोकार टूट गया। जलाकर राख कर दूँगा/ माँ कसम बदला लूँगा/ कानून मेरी मुट्ठी में/ पुलिस वाला गुंडा/ जैसे नामधारी फिल्मों की बाढ़ आई हुई है। हर फिल्म के कथानक एक जैसे हैं। ऐसे हिंसक दौर में कभी-कभार कोयल की कूक सुनाई दे जाती है। राजश्री पिक्चर्स के युवा फिल्मकार **सूरज बड़जात्या** की दो फिल्मों- मैंने प्यार किया (१९८९) और हम आपके हैं कौन! (१९९४) ने प्यार का अलख जगाकर फिल्मों को पारिवारिकता प्रदान की है। हम आपके हैं कौन! के प्रदर्शन की सूझबूझ की कायल पूरी फिल्म इंडस्ट्री है। महेश भट्ट जैसे फिल्मकार सारांश/ जनम/ आशिकी/ दिल है कि मानता नहीं और नाजायज जैसी अच्छी फिल्में कभी-कभी दे पाते हैं, जिनसे दर्शक को सुकून मिलता है। इधर विधु विनोद चोपड़ा ने १९४२ : ए लव स्टोरी के माध्यम से दर्शकों में एक खास फिल्म की उत्सुकता जगाई है।

अभिनय के क्षेत्र में शुद्ध रूप से भाई-भतीजा/ माँ-बेटी/ पिता-पुत्रवाद चल रहा है। सब अपने-अपनों को रेवड़ियाँ बाँट रहे हैं। पहले एक अभिनेता या अभिनेत्री बीस-पच्चीस साल तक टिकाऊ और बिकाऊ होते थे। अब तो चोली को 'धक-धक' करते हुए उसके पीछे तक झाँकना जरूरी हो गया है। खटिया सरकाने वाली करिश्माओं की भीड़ बढ़ती जा रही है। संगीतकार नक्काल हो गए हैं और गीतकार अटरिया पर बैठकर कबूतरों के साथ गुटर-गूँ करने लगे हैं। फिल्मी दुनिया का पूरा माहौल 'अंडरवर्ल्ड' के सरगनाओं द्वारा संचालित हो रहा है। यही वजह है कि भारत में आज तक फिल्म को उद्योग का दरजा नहीं मिल पाया है। नई पीढ़ी के नए कलाकारों में उल्लेखनीय नाम हैं- अनिल कपूर/ जैकी श्राफ/ सलमान खान/ आमिर खान/ शाहरुख खान/ अजय देवगन/ सुनील शेट्टी/ अतुल अग्निहोत्री/ अक्षय कुमार/ अनुपम खेर/ संजय कपूर/ करिश्मा कपूर/ काजोल/ प्रतिभा सिन्हा/ ममता कुलकर्णी/ सोनाली बेन्द्रे/ शिल्पा शेट्टी/ वर्षा उसगाँवकर/ अश्विनी भावे/ आयशा जुल्का/ रविना टंडन/ तब्बू और भी अनेक। यह नई पीढ़ी फिलहाल कुछ दे पाने में असमर्थ है। अंग-प्रदर्शन इनकी एकमात्र पूँजी है, जो एक फिल्म के बाद खत्म हो जाती है। श्रीदेवी/ जूही/ दीप्ति/ शबाना को चलन में कम करने के लिए यही जिम्मेदार हैं।

लेकिन बहुत निराश होने की जरूरत भी नहीं है। अभी हिंदी सिनेमा के आँगन में डिम्पल, माधुरी दीक्षित और मनीषा कोइराला जैसी संभावना भरी अभिनेत्रियाँ मौजूद हैं। कमल हासन और नाना पाटेकर जैसे सशक्त अभिनेता हैं और मणि रत्नम् तथा विधु विनोद चोपड़ा जैसे फिल्मकार हैं, जो रोजा, बॉम्बे तथा १९४२ : ए लव स्टोरी फिल्मों के जरिए सामयिक समस्याओं पर सीधे उँगली रखने का साहस करते हैं और तमाम समाज विरोधी ताकतों के खिलाफ मैदान में डटकर खड़े हो जाते हैं। ■





द अफ्रीकन क्वीन



द सीक्रेट ऑव माय सक्सेस

लव बिटविन रेन ड्राप्स

सिनेमा अजर अमर है

कला की सातवीं विधा के रूप में सिनेमा की उम्र सौ साल की हो गई है। इस अवसर पर भी सिनेमा को 'यूनिवर्सल-लैंग्वेज' कहना मधुमक्खियों की नींद में खलल डालने वाली बात होगी। सृजन एवं अभिव्यक्ति के इस सबसे अधिक शक्तिशाली माध्यम को आज भी कला का दर्जा प्राप्त नहीं है। इससे अधिक अफसोस की बात और क्या होगी कि सूरज के इस सातवें घोड़े को रथ के पीछे बाँधकर उपेक्षा का शिकार बना दिया गया है। इसके बावजूद उत्साहजनक स्थिति यह है कि विश्व सिनेमा के फिल्मकारों ने इसे स्वप्न-सृष्टा तक सीमित न रखकर जीवन की वास्तविकताओं और उच्चादर्शों का धरातल बनाया है।

कितना वैश्विक है विश्व सिनेमा?

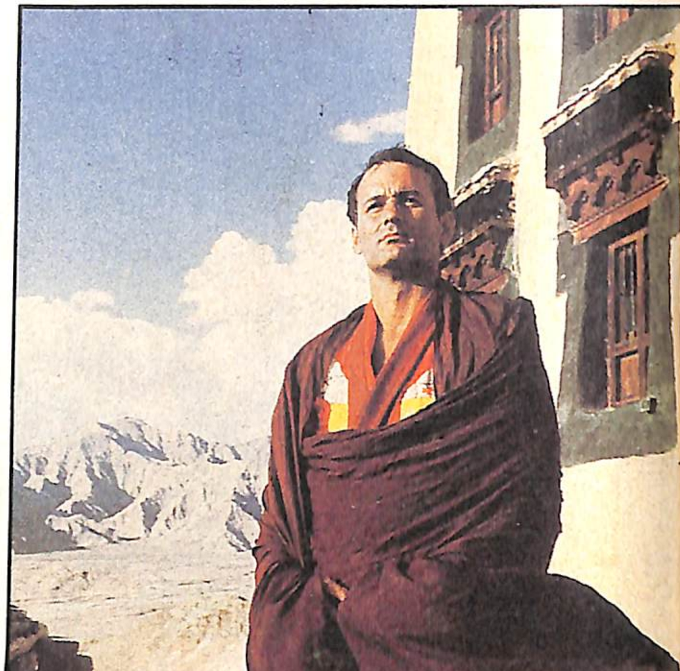
● राहुल ब्रजमोहन

दमन और उपेक्षा के प्रहार लगातार सिनेमा पर किए गए, लेकिन उसकी सृजन यात्रा कभी नहीं ठहरी। फिल्मकारों ने जीवट के साथ तमाम चुनौतियों का सामना किया। आज सिनेमा की भाषा सृजन की तमाम विधाओं से आगे है।

अव्वल तो हम इस पर एकमत हो लें, कि सिनेमा को 'यूनिवर्सल लैंग्वेज' कहना मधुमक्खियों की नींद में खलल डालने वाली बात होगी। कला जगत के दुर्गम वन प्रांतर से एक साथ कई पंजे निकलेंगे और इस विचार की गर्दन मरोड़ देंगे। कला की सातवीं विधा के रूप में सिनेमा की पैदाइश को सौ बरस बीत चुके हैं। आज भी इसके गुरुत्व का समुचित आकलन हो नहीं पाया। सृजन के सर्वाधिक सशक्त माध्यम के बतौर पहचान मिलना तो दूर, हम इसे कला का हिस्सा मानने से परहेज करते हैं। इससे ज्यादा अफसोस की बात क्या होगी, कि अगड़ी जमात के तमाम अश्वों से अधिक काबिल सूरज का यह सातवाँ घोड़ा रथ के पीछे बाँधकर घसीटा जाता रहा है। एक प्रभावोत्पादक, विश्वव्यापी, सर्वजनीन भाषा बनने की जितनी क्षमता सिनेमा के पास है, उतनी कला के किसी अन्य माध्यम के पास नहीं। तमाम दुश्वारियों और उपेक्षा के बावजूद सवाल उठता है, कि अपनी अंतर्भूत ऊर्जा के निष्कर्षण में सैल्युलाइड कहाँ तक सफल हो पाया अथवा दूसरे शब्दों में विश्व सिनेमा कितना वैश्विक कहा जा सकता है?

ऐतिहासिक विवेचन की दृष्टि से देखें, तो सिनेमा का उद्भव और विकास एक सामासिक संस्कृति की तरह हुआ। कला एवं तकनीक के इस अद्भुत आविष्कार को आकार देने में किसी एक भौगोलिक खंड का नहीं, बल्कि दुनिया के अनेक देशों का समान योगदान था। सिनेमा की जन्मभूमि फ्रांस के समानांतर इटली/ हंगरी/ जर्मनी/ ब्रिटेन और अमेरिका ने चलचित्र जगत की बुनियाद निर्मित करने में अहम् भूमिका निभाई। एक लिहाज से यह सिनेमा का वैश्विक प्रादुर्भाव था। शताब्दी के पूर्वार्ध में बनी फिल्में कथ्य के धरातल पर वृहद् मानवीय संदर्भों से रहित नहीं थीं। यह कालखंड राजनीतिक व सामाजिक गतिविधियों के लिहाज से सर्वाधिक उथल- पुथल से भरा रहा है। तीस के दशक की महत्वपूर्ण घटनाएँ- स्पेन का गृहयुद्ध/ चीनी क्रांति/ फासीवाद के उदय का चित्रांकन अंशतः ही सही, लेकिन फिल्मों के जरिए हुआ जरूर। प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत जर्मनी में जहाँ एक ओर राजकीय संरक्षण में कुछ फिल्म संस्थाएँ नाजी विचारधारा का प्रचार कर रही थीं, वहीं 'कॅमरस्पीयल' और न्यू सेखलीखेत' जैसे सिने स्कूल गजब का साहस दर्शाते हुए एक समानांतर सिनेमा को आकार देने में जुटे हुए थे। उन्होंने राजनीतिक उत्पीड़न के खिलाफ सशक्त वक्तव्य वाली फिल्मों का निर्माण किया। सिनेमा के जुझारू चरित्र की यह श्रेष्ठ मिसाल थी।

फ्रांस में गंभीर सिनेमा के लिए प्रतिबद्ध 'सिनेमा चेरिते' आंदोलन की शुरूआत के पूर्व इटली के फिल्मकारों ने 'फिल्म दे आर्ट' के बैनर में अनेक कलात्मक फिल्में बनाईं। दूसरी ओर रूस में अक्टूबर क्रांति के बाद सिनेमा एक असरदार सामाजिक और शैक्षणिक ताकत की शक्ल ले चुका था। लेनिन के यह शब्द फिल्म इतिहास में कभी भुलाए नहीं जाएँगे कि, 'सिनेमा हमारे लिए समस्त कलाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।' लेनिन की पत्नी के व्यक्तिगत प्रयासों से विश्व के पहले फिल्म संस्थान रूस में स्थापित हुए। विद्रोही तेवर वाली फिल्मों के निर्माण में सोवियत संघ



बिल मूरे : द रेजर्स एज

अग्रणी रहा। 'एजिटेकी' मूवमेंट के तहत बनी यह फिल्में जारशाही और अधिनायकवाद के खिलाफ थीं। अमेरिकी सिनेमा को आम तौर पर प्रतिक्रियावादी ताकतों की गिरफ्त का शिकार माना जाता रहा है। यह मान्यता गलत भी नहीं। एक समय वह भी था, जब अमेरिका में फ्रेंक काप्रा जैसे निर्देशक ने सिनेमा के शैशवकाल के दौरान मानव मूल्यों की पृष्ठभूमि में कथ्य संप्रेषण के लोकप्रिय मुहावरे की सफल तलाश की। अपनी फिल्मों के जरिए उन्होंने साबित किया कि क्रांतिकारी सिनेमा हमेशा ध्वंसात्मक नहीं होता। काप्रा की फिल्में वितण्डावाद के बगैर समानता, सौहार्द, स्वस्थ शासन तंत्र जैसे विषयों पर बल देते हुए खुशहाल मानव जाति की खोज हेतु प्रयासरत नजर आती हैं।

द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति के तुरंत बाद पूर्वी योरप के देशों चेकोस्लोवाकिया/ बल्गारिया/ रोमानिया/ यूगोस्लाविया/ अल्बानिया/ पोलैंड ने जिस तरह पूँजीवादी समर्थन के बिना एक स्वतंत्र, समाजवाद आधारित सिनेमा विकसित किया, वह काबिले- तारीफ बात थी। कुछ इसी किस्म की साहसिक प्रतिबद्धता का परिचय ६० के दशक में लातिनी अमेरिकी राष्ट्रों ने दिया जिनके बारे में कहा जाता है कि वे ईश्वर से कम और अमेरिका से अधिक भयभीत रहते हैं। मगर जहाँ तक सिनेमा का प्रश्न है ब्राजील, क्यूबा और अर्जेन्टीना जैसे देशों के फिल्मकार इस आतंक से कतई विचलित नहीं हुए। खास तौर पर ब्राजील का 'सिनेमा नोवो' आंदोलन इस संदर्भ में उल्लेखनीय है, जिसके तहत फिल्मकारों ने जन- सामान्य की वित्तीय मदद से अल्प बजट वाली वैचारिक फिल्में बनाईं और इनसे प्राप्त राशि का उपयोग पुनः फिल्म निर्माण में किया गया। विश्वयुद्ध की त्रासदी का रेखांकन अधिक फिल्मों में भले न हुआ हो, किंतु इस विषय पर बनी फिल्म कृतियों का महत्व सर्वकालिक है। आइसंस्टाइन की मास्टर पीस 'बैटलशिप' ही नहीं, बल्कि चैपलिन की 'शोल्डर्स आर्म' और ग्रिफिथ की 'हर्ट्स ऑव द वर्ल्ड' भी युद्ध विषयक अविस्मरणीय कृतियाँ थीं। रूसी मूल के अमेरिकी नागरिक लेविस माइलस्टोन द्वारा निर्मित 'ऑल क्वॉयट ऑन वेस्टर्न फ्रंट' (१९३०) को विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में रची गई सर्वश्रेष्ठ फिल्म कहा जा सकता है। जिस मर्मस्पर्शी तरीके से यह फिल्म युद्धरत विश्व के मनोविज्ञान और हताश मानसिकता का संवेदनशील चित्रण करती है, उसका सानी यदि कला की किसी अन्य विधा में तलाशें, तो निगाह सिर्फ तॉलस्तॉय के 'वार एंड पीस' पर रुकेगी। विश्वयुद्ध से जुड़े कुछ अन्य पहलू भी सिनेमा मे

अछूते नहीं रहे। मसलन चैपलिन ने गहरे तंज के साथ अपनी फिल्म 'डिक्टेटर' में हत्या और सामूहिक नर- संहार के बीच फर्क को सामने लाने की विचारोत्तेजक कोशिश की है। इसी तरह आइसंस्टाइन कृत 'स्ट्राइक' के विषय में खास बात यह थी कि इसके जरिए पारंपरिक नायकत्व की परिभाषा को बदलते हुए समूचे समाज को नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया। फिल्म कथानक को वृहत्तर मानवीय संदर्भों से जोड़ने का यह अदभुत प्रयास था।

युद्धोत्तरकाल में जहाँ हंगरी और इटली का सिनेमा नई चेतना के साथ विकसित हुआ, वहीं स्वीडिश सिनेमा पर हॉलीवुड के एम.जी.एम. बैनर की छाया गहरी होती गई। जर्मनी व अन्य योरपीय देशों का फिल्म उद्योग भी हॉलीवुड के प्रभुत्व से ग्रस्त रहा। पिछले तीन दशकों में सिनेमा के विश्वव्यापी उत्थान में अवरोध की एक बड़ी वजह हॉलीवुड की उपभोक्तावादी फिल्म इंडस्ट्री की विश्व सिनेजगत पर चौतरफा गिरफ्त रही है। आर्थिक संसाधनों के अभाव में तृतीय विश्व का सिनेमा पूरी तरह जड़ें नहीं पकड़ पाया। १९५१ में कुरुसोवा की रशोमान और १९५५ में राय की पाथेर पांचाली को वेनिस में 'ग्रॉं- प्री' अवॉर्ड मिला, तो एशियाई सिनेमा की पहचान बन पाई। वरना पश्चिमी जगत की नजर में इसके पूर्व हॉलीवुड और योरपीय सिनेमा के अलावा फिल्म का कहीं अस्तित्व ही नहीं था। दुर्भाग्य की बात है कि विश्व सिनेमा के दृश्यपटल पर आज भी कुछ भौगोलिक खंड उपेक्षा के शिकार हैं। मसलन सामाजिक/राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील अफ्रीका अंतरराष्ट्रीय सिनेमा की चौखट में पूरी तरह अभिव्यक्त नहीं हो पाया। इसी तरह खाड़ी के देशों में ईरान के सिवा किसी अन्य राष्ट्र की सिनेमाई पहचान नहीं के बराबर है, जबकि इन राष्ट्रों के समय वित्तीय कठिनाई कभी नहीं रही।



ए काउंटेस फ्राम हाँगकाँग : सोफिया लारॉं और चार्ली चैपलिन

कुवैत में खालिद सिद्दीकी जैसे कर्मठ फिल्मकार के एकल प्रयासों को अपवाद मानें, तो मरुभूमि में सिमटा अरब प्रदेश सैल्युलाइड की जमीन पर भी उदासीनता के रिक्त प्रसार का ही आभास देता है। सर्वांगीण प्रतिनिधित्व की दृष्टि से देखा जाए, तो विश्व सिनेमा फिल्मकारों द्वारा अपने देश के बाहर जाकर विभिन्न स्थलों में रचनाशील रहने से भी समृद्ध हुआ है। मिसाल के तौर पर जर्मनी के मेक्स ओकुलस ने ६ भिन्न राष्ट्रों में रह कर फिल्में बनाईं। इसी प्रकार स्पेन के बुनुएल मेक्सिको, जर्मनी, अमेरिका और ब्राजीली मूल के 'केवल कान्टी' फ्रांस, ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया तथा इटली में क्रियाशील रहे। श्रेष्ठ निर्देशकों के इस खानाबदोश चरित्र से निश्चय ही सिनेमा के वैश्विक प्रतिनिधित्व की दृष्टि से अनुभवों के आदान- प्रदान में मदद मिली। भारत में ऋत्विक घटक और अमेरिका में फलेहार्टी जैसे निर्देशक, जिन्होंने सिनेकर्म की शुरूआत के पूर्व नृतत्व शास्त्र का गहरा अध्ययन किया था, सिनेमा की चौखट में मानव जाति के विवेचन की प्रक्रिया के आधार स्तंभ कहे जा सकते हैं।

एक अत्यंत सशक्त वैचारिक माध्यम होने की वजह से सिनेमा दुनिया के तकरीबन हर हिस्से में राजकीय आतंक और दमन का शिकार हुआ है। स्पेन में फ्रैंको शासन के दौरान सिनेमा पर कड़ी सेंसरशिप लागू की गई। कई फिल्मकारों को अपने देश में प्रताड़ित होने के कारण विदेशी नागरिकता लेनी पड़ी। फ्रांस के एक बेहद प्रतिभाशाली फिल्मकार जीन विगो ने महज २९ वर्ष की आयु में अपनी मृत्यु से पूर्व जो फिल्में तीस के दशक में बनाईं, उन सभी को दर्शकों तक नहीं पहुँचने दिया गया। भीषण प्रताड़ना के बीच उसने क्षय रोग से ग्रस्त होकर दम तोड़ा। फिलीपींस के समकालीन निर्देशक लाइनो ब्रोका की फिल्में जगुआर और मनीला इन द क्लाज ऑव निऑन इसलिए प्रतिबंधित की गई कि उनमें मारकोस शासन के दौरान देश में व्याप्त भुखमरी और जहालत का चित्रण था। चीन की एक बहुचर्चित फिल्म 'वन एंड एट' (निर्देशक : झेन जुन्हो) का अंतिम दृश्य साम्यवादी सरकार की सख्त आपत्ति के कारण प्रदर्शित नहीं किया जा सका। मिथ्या अभियोग के शिकार आठ राजनीतिक बंदी बुरी तरह उत्पीड़ित किए जाते हैं। इनमें से एक कैदी पुलिस द्वारा एक युवा नर्स के साथ बलात्कार की कोशिश किए जाते देख अपनी पिस्तौल की आखिरी गोली से नर्स को मार देता है, ताकि वह शीलभंग की यंत्रणा से बच सके। बदले में उसे पुलिस की गोलियों से छलनी होना पड़ता है। यह मार्मिक दृश्य दर्शक नहीं देख पाए। विश्व सिनेमा के इतिहास में ऐसी कई सच्चाइयाँ दबाई गई हैं। 'लौह आवरण' की वजह से कम्युनिस्ट देशों की फिल्में दुनिया के शेष हिस्सों तक नहीं पहुँच सकी और पश्चिमी राष्ट्र ग्लैमर की भूलभुलैया से बाहर निकल कर गंभीर कथ्य हेतु उत्सुक ही दिखलाई नहीं पड़े। १९४७ में अमेरिकी सरकार ने फिल्मों में साम्यवादी विचारधारा पर रोक लगाने के लिए एक नियंत्रण समिति नियुक्त की थी जिसकी वजह से 'कार्ल फोरमेन' और 'जूल्स देजीन' जैसे निर्देशकों को निर्वासित होना पड़ा। रजतपट पर वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों राजनीतिक अवधारणाएँ वस्तुतः यथार्थ को स्वहित में मोड़ने की कोशिश करती रही हैं।

दमन और उपेक्षा के प्रहार लगातार सिनेमा पर किए गए, पर इसकी सृजन यात्रा अवरुद्ध नहीं हुई। फिल्मकारों ने बड़े जीवट के साथ तमाम चुनौतियों का सामना किया और अपनी रचना प्रक्रिया जारी रखी। विश्वयुद्ध के दिनों में जबकि फिल्म निर्माण संभव नहीं था, इस दौरान वृत्तचित्रों का परिदृश्य काफी उत्साहवर्धक रहा। डेजर्ट विक्ट्री/ लिफ्ट योर हेड/ द हार्वेस्ट शैल कम आदि वृत्तचित्र सिनेमा की मशाल उठाए रहे। ब्रिटेन में वृत्तचित्रों के जरिए ही लिंडसे एंडरसन ने 'फ्री सिनेमा' की बुनियाद रखी। लघु फिल्मों को उन्होंने समस्त पूर्वाग्रहों से मुक्त इस आधार पर माना कि इनका वक्तव्य सर्वथा वैयक्तिक था। यह सिनेकर्म का ओज ही कहा जाना चाहिए कि अमेरिका जैसे पूँजीवादी राष्ट्र में भी अंडरग्राउंड या भूमिगत सिने आंदोलन के अंतर्गत फिल्मकारों ने अपनी फिल्मों में प्रगतिशील विचारधारा को अभिव्यक्ति प्रदान की। चीन के 'फिफ्थ जनरेशन' सिनेकर्मियों ने बतौर मजदूर कारखानों में काम कर फिल्में बनाईं। जाहिर है, उनकी कृतियों में भोगा हुआ यथार्थ रूपायित हुआ। इसके पीछे प्रगतिवाद के साइन बोर्ड नहीं, बल्कि जिंदगी का 'कैट स्कैन' मौजूद था। सिनेमा को आंशिक कला करार देने वालों को चाहिए कि वे एकबारगी अंतोनियोनी, बर्गमैन, रोजेलिनी, तारकोवस्की और ब्रेसाँ जैसे निर्देशकों की कृतियों पर नजर गड़ाएँ। उनमें उन्हें न केवल कला की सूक्ष्म बारीकियाँ, बल्कि एक वैश्विक दर्शन भी महसूस होगा। जहाँ कहीं भी रजतपट की परिधि से कुछ छूटा है, उसकी वजह शायद यही थी कि सिनेमा से उसकी असीमित संभावनाओं के मुताबिक कभी माँग ही नहीं की गई। यह सिनेमा का नहीं, वरन उसके प्रेक्षकों का दृष्टि दोष था। अपने तईं सिनेमा ने एक विश्वजनीन भाषा का दायित्व सफलतापूर्वक निभाया है। उसकी नीयत पर संदेह गलत होगा। मनोरंजन की पृष्ठभूमि से हट कर देखें, तो दुनिया के अनेक सिनेकर्मियों ने चलचित्र को स्वप्न सृष्टा उपकरण तक सीमित न रखकर जीवन के उच्चादर्शों का धरातल बनाया है। सत्य के अनुसंधान में सिनेमा किसी विचार माध्यम से पीछे नहीं। जीवंत छवियों से प्रभावशाली संवाद की कोई शैली विश्व को नहीं मिल सकती। अपनी जन्म शताब्दी के साथ एक स्वर्णिम अध्याय पूरा कर सिनेमा खुद को सृजन के ध्रुवांत पर रख चुका है।

भारत में निर्मित विदेशी फिल्म

● डॉ. नीहार गीते

इतिहास का एक और रंगीन पृष्ठ/ विश्व सिनेमा की स्थापना के सौ वर्ष पूर्ण। सौ वर्ष पूर्व प्रारंभ हुई उस रोमांचक यात्रा का यह हसीन पड़ाव सुर्खियों में है। फिल्म स्थापना ने जहाँ एक ओर देश-विदेश में सामाजिक स्थितियों में क्रांति का सेहरा पहना, तो कई विघटनकारी स्थितियों का आरोप भी उसे सहना पड़ा। इस ऊँच-नीच से गुजरते-चलते आज फिल्म माध्यम निश्चित ही खुद को महत्वपूर्ण स्थान दिला पाने में सफल रहा है। एक आदरणीय स्थान। जिसे एक विषय के रूप में विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा है।

भारतवर्ष ने मूक-युग से लेकर 'थ्री डायमेंशनल' युग तक की यात्रा तय की। एकतारे से लेकर डाल्बी युग तक,तबला पेटी से लेकर ऑर्केस्ट्रा युग तक की यात्राएँ तय की। के.एल. सहगल से लेकर बाबा सहगल तक की यात्रा तय की। फिल्मी इतिहास के चलते देश ने विकास की लंबी दूरियाँ तय कीं, तो अनंत संभावनाएँ भी बनीं। विशुद्ध धार्मिक फिल्मों से प्रारंभ हुई यह यात्रा, स्वतंत्रता आंदोलन का ताप सहती, निखरती सत्यजीत राय की विश्व प्रसिद्ध एवं राजकपूर की 'लोकप्रिय' छवि को विश्व सिनेमा में स्थापित कर पाने में सफल रही। तकनीकी विकास की संपन्नता ने शेखर कपूर जैसे तीखी समझ के निर्देशक को अपनी 'बेंडिट-क्वीन' अंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिचित कराने में मदद दी।

आज विश्व सिनेमा के आईने में हम धुँधली ही सही अपनी छवि उकेर पाए हैं। भारत ने अपनी फिल्मों के निरीक्षण-परीक्षण में लगाए समय का शतांश भी इस सोच में लगाया होता कि जब 'टूरिस्ट-डेस्टीनेशन' बेचा जा सकता है तो 'फिल्म लोकेशन' क्यों नहीं? यदि भारतीय प्रबंधन समूचे विश्व में 'होटल' और 'रेलवे' चला सकता है, तो विदेशी फिल्म निर्माण भारत में क्यों नहीं? सुस्त अर्थव्यवस्था को इससे विदेशी मुद्रा का लचीला तमाचा मारा जा सकता है।

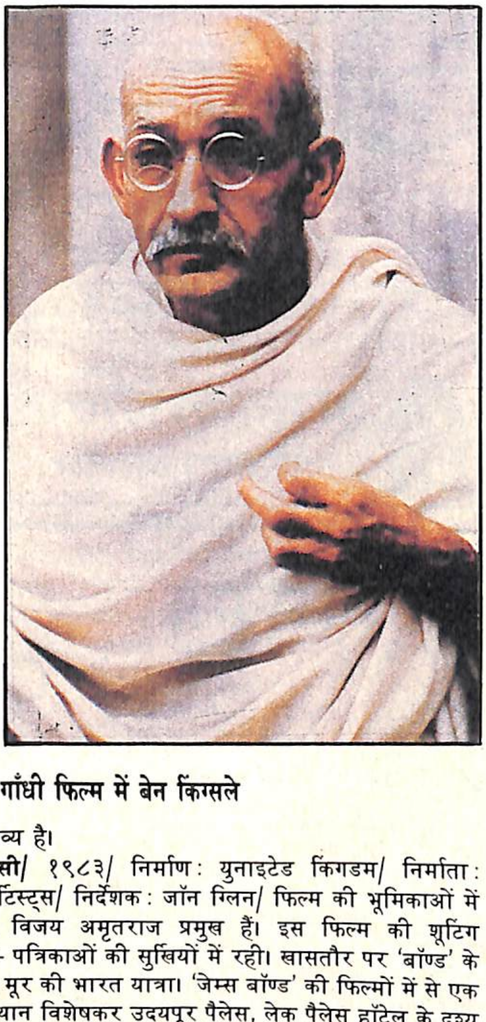
ऐसा नहीं है कि समय ने मौके नहीं दिए। कई विदेशी फिल्मकार यहाँ के देसीपन से अभिभूत होकर यहाँ आए। विदेशियों को भारत भूमि की विविधता/ त्योहार/ मेले/ उत्सव/ अध्यात्म/ विचारधाराएँ/ नृत्य-संगीत/ नाटक की सदियों की परिष्कृत परंपराएँ, सामाजिक ढाँचे की विशेषताएँ/ जातिप्रथा/ पंचायत राज प्रणाली/ संयुक्त परिवारों का अनूठा प्रतिमान हमेशा से आकृष्ट करता रहा है। इसीलिए कई महत्वपूर्ण विदेशी फिल्मों का आंशिक/अधिकांश फिल्मांकन भारत में हुआ। एक प्राचीनतम, महान एवं जीवित सभ्यता के रूप में भारत की विशिष्ट 'छाप' विश्व भर में बनी हुई है। जॉन मास्टर्स/ रुडयार्ड किपलिंग/ रुथ प्रवर झाबवाला/ ई.एम. फास्टर जैसे लेखकों की साहित्यिक कृतियाँ भी फिल्मकारों को आकर्षित करती रही हैं। डेविड लीन से लेकर स्टीवन स्पीलबर्ग तक विश्व के कई नामी निर्देशक भारत में फिल्मांकन के प्रति उत्साही रहे हैं। भारत में विदेशी फिल्में खूब लोकप्रिय रहीं, तो भारत के बारे में भी फिल्में विदेश में बनीं जैसे- क्लाइव इन इंडिया/ लाईफ ऑव ए बेंगाली लांसर/ द रेन्स ऑफ रान्चीपुर। भारत की बनी फिल्में विदेशों में खूब चलीं। सत्यजीत राय की फिल्में तो अब विश्व सिनेमा की मुख्यधारा में न केवल सम्मिलित हैं, बल्कि सर्वोच्च पुरस्कार से पुरस्कृत, सम्मानित एवं सराही गई हैं। आज जबकि सत्यजीत राय, राजकपूर, शेखर कपूर के प्रयासों से भारत ने फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय दृश्य पटल पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा ली है, तबसे विदेशी फिल्मकारों ने कभी अँगरेजी राज और पिछड़े वर्ग पर हुए अत्याचारों पर आधारित साहित्य में विशेष रुचि लेकर उन पर फिल्में बनाना चाही हैं, तो कभी भारत के कुछ 'कल्ट्स' जैसे ठगी/ अध्यात्म ने भी विदेशी फिल्मों के कथानक को आधार दिया। इसी के परिणामस्वरूप सिनेजगत को सर रिचर्ड एटनबरो की फिल्म गाँधी प्राप्त हुई। स्वयं भारत सरकार ने इसके निर्माण में सहयोग दिया। एक महँगी फिल्म होने के बावजूद इस फिल्म ने अपने लिए अनेक ऑस्कर अर्जित कर पूरे विश्व में भारत का ठप्पा लगा दिया। इसमें राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने योगदान किया जिसके परिणामस्वरूप एक सुंदर अतीत को साकार किया जा सका। यही एक अकेला अवसर था, जबकि भारत सरकार ने इतना आगे आकर फिल्म के निर्माण और प्रबंधन में योगदान किया। इससे विदेशी निर्माणों के प्रति भारत सरकार के सकारात्मक रवैए का पता चला। कई विदेशी फिल्मों की पटकथाओं ने भारत भूमि पर आकार लिया है।



फिल्म इंडियाना जोंस एंड द टेम्पल ऑव डूम में हॅरिसन फोर्ड और केट केप्शा

द क्लोज एनकाउन्टर्स ऑव द थर्ड काइण्ड (१९७७) निर्माण: संयुक्त राज्य अमेरिका/ स्टुडिओ: कोलम्बिया/ निर्देशक: स्टीवन स्पीलबर्ग। इस फिल्म में आकाश से आई 'उड़न तश्तरियाँ' भारत में देखी जाने का दृश्य है। पर्दे पर तो 'धरमशाला' आता है, किन्तु हजारों भगवावस्त्रधारी साधुओं के इस दृश्य का फिल्मांकन मुम्बई के पास हुआ था। इस दृश्य में विख्यात फ्रेंच निर्देशक फ्रांकुआ त्रूफाँ भी एक अभिनेता के रूप में सम्मिलित थे। यह फिल्म 'साइंस फिक्शन' श्रेणी की है।

हीट एंड डस्ट/ १९८३/ निर्माण: युनाइटेड किंगडम/ मर्चेन्ट आइवरी प्रॉडक्शन्स/ निर्देशक: जेम्स आइवरी/ प्रमुख भूमिका में शशि कपूर। इस फिल्म में भारत के अतीत/ राजे महाराजों/ राजमहलों के दृश्य हैं। शशि कपूर एवं मर्चेन्ट आइवरी के संयुक्त प्रयासों से बनी फिल्मों में यह फिल्म भव्य है।



गाँधी फिल्म में बेन किंग्सले

ऑक्टोपसी/ १९८३/ निर्माण: युनाइटेड किंगडम/ निर्माता: युनाइटेड आर्टिस्ट्स/ निर्देशक: जॉन ग्लिन/ फिल्म की भूमिकाओं में कबीर बेदी, विजय अमृतराज प्रमुख हैं। इस फिल्म की शूटिंग समाचारपत्रों- पत्रिकाओं की सुर्खियों में रही। खासतौर पर 'बॉण्ड' के रूप में रोजर मूर की भारत यात्रा। 'जेम्स बॉण्ड' की फिल्मों में से एक जिसमें राजस्थान विशेषकर उदयपुर पैलेस, लेक पैलेस हॉटेल के दृश्य मनोहारी रूप में पर्दे पर आते हैं।

इंडियाना जोन्स एंड द टेम्पल ऑव डूम/ (१९८४)/ निर्माण: युना. स्टेट्स ऑव अमेरिका/ निर्माता: लूका फिल्म्स/ निर्देशक: स्टीवन स्पीलबर्ग/ फिल्म की भूमिकाओं में अमरीश पुरी, रोशन सेठ। इस फिल्म की कथावस्तु भारत के 'ठगी' संप्रदाय से सम्बद्ध है। ग्रामीण भारतीय समुदाय के दृश्यों का चित्रण भारत में, दक्षिण में फिल्माया गया है। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर बेहद सफल रही।

सिटी ऑफ ज्वाय/ १९९२/ निर्माण: युनाइटेड किंगडम एवं फ्रांस/ निर्माता: लाइट मोटिव पिक्चर्स/ निर्देशक: रोलाण्ड जोफ/ प्रमुख भूमिकाओं में ओमपुरी, शबाना आजमी, आर. मलिक, आयेशा धारकर। इस फिल्म की अधिकतर शूटिंग कलकत्ता में हुई है। कलकत्ते की तंग बस्तियों में ओमपुरी, शबाना आजमी पर फिल्मांकन। खासकर ओमपुरी का सड़कों पर रिक्शा चलाना। भीड़ का बाढ़ से मुकाबला। बहुत श्रेष्ठ प्रसंग इस फिल्म में है। विदेशी फिल्मों की व्यवस्थित, समयबद्ध कार्यक्षमता की चर्चा इस फिल्म के निर्माण के दौरान सुर्खियों में रही।

ए पैसेज टू इंडिया/ १९८५/ निर्माण: युनाइटेड किंगडम/ निर्माता: कोलम्बिया स्टुडियो/ निर्देशक: डेविड लीन/ प्रमुख भूमिका में विक्टर बैनर्जी। इस फिल्म के लिए भारत में फिल्मांकन की अनुमति को लेकर विवाद बना रहा। अंततः दक्षिण में कर्नाटक राज्य में, बंगलोर के पास तथा कुछ फिल्मांकन काश्मीर में हुआ है।

लिटिल बुद्धा/ (१९९४)/ निर्माण: युनाइटेड किंगडम- फ्रांस/ निर्माता: रेकार्डेड पिक्चर्स एवं सिबी २०००/ निर्देशक: बनार्डो बर्तोलुसी/ फिल्म की भूमिकाओं में भीष्म साहनी, सुरेखा सीकरी, विजय कश्यप/ बालक राजूलाल। इस फिल्म के कुछ ही दृश्यों का फिल्मांकन भारत में हुआ है। काफी अंश नेपाल, भूटान में फिल्मांकित हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत का पृष्ठभूमि में बेहतरीन प्रयोग है।

उनके अलावा फ्रांस की 'गिलेस एवं कैथरीन', इंडो- अरब निर्माण। 'शाहीन', कुवैत के सर्वश्रेष्ठ निर्देशक खालिद सिद्दीकी द्वारा निर्देशित। पश्चिम जर्मनी निर्माण कंपनी द्वारा बनाई गई 'यलो स्प्रिंग/ स्व. डॉ. अल्बर्ट श्विट्जर की जिन्दगी पर आधारित फिल्म। 'द डिसीवर्स'

अचरज के साथ अफसोस होता है कि भारत में लोकेशन की इतनी विविधता के बावजूद विदेशी फिल्मकार अपनी फिल्मों को भारत में नहीं बनाना चाहते। इसके लिए नौकरशाही और लालफीताशाही दोषी है। सिनेमा की इस शताब्दी के अवसर पर यदि सरकार उदारता का परिचय दे, तो लचीली विदेशी मुद्रा से खजाना लबालब भर सकता है।

ईस्माइल मर्चेन्ट द्वारा निर्मित/ कॉनरेड रुक्स के स्क्रीन प्ले पर आधारित 'द मिशनरी'/ रेनहार्ड हॉफ द्वारा भारतीय निर्देशक मृणाल सेन पर बनाई गई एक डॉक्यूमेंट्री भी इन सबका हिस्सा है।

भारत और रूस के सहयोग से भारत में कुछ फिल्में बनी, जो हिंदी/ रूसी भाषा में होकर भारतीय- रूसी कलाकारों की फिल्में थीं। परदेसी/ अलीबाबा, चालीस चोर/ तथा शशि कपूर द्वारा 'अजूबा' फिल्म इनमें से महत्वपूर्ण थीं। देव आनंद एवं पर्लबक के सहयोग से आर.के. नारायणन की कृति 'गाइड' हिंदी/ अँगरेजी में बनी। शशि कपूर, ईस्माइल मर्चेन्ट, जेम्स आयवरी, रुथ प्रवर झाबवाला के सहयोग से कई फिल्में हिंदी/ अँगरेजी में बनकर खूब लोकप्रिय रहीं जैसे- द हाउस होल्डर/ बॉम्बे टॉकीज/ गुरु एवं शेक्सपियरवाला। श्याम बेनेगल 'मेकिंग ऑफ महात्मा' नाम से फिल्म अफ्रीका- भारत के सहयोग से बनाने जा रहे हैं।

निर्माणों की इस संख्या को देखते हुए विदेशी फिल्मकारों का भारत की 'लोकेशन्स' के प्रति आकर्षण सहज है। इस उत्साहजनक माहौल में कुछ कमी है तो वह है सरकार का स्थितियों को भुना सकने का ठंडा रवैया। भारत में बनने वाली विदेशी फिल्मों को हम आज तक उचित सुविधाएँ नहीं दे पाए हैं।

संपूर्ण संयोजन, संगठित योजना और नियमावली विदेशी निर्माता को सुविधाजनक स्थितियाँ प्रदान कर सकती है। सरकार यदि भारत की हसीन वादियों को गर्त में गुम हो जाने देने की बजाए यहाँ की प्रतिभाओं, तकनीकी सुविधाओं और आसान नियमावलियों का पैकेज बनाकर विदेशी फिल्म निर्माता को दे तो दो तरफ फायदे की स्थितियाँ बनेंगी। ऐसे अप्रवासी जो अपने देश में अपने पैसे से कुछ करना चाहते हैं। अमेरिका में रह रहे कृष्णा शाह और जगमोहन मूँदड़ा/ वेस्टइंडीज के हरबंस मिकी कुमार/ मारिशस से रमेश टेकोइट और न्यूयॉर्क में मीरा नायर ये कुछ नाम हैं जो इस ओर प्रयत्नरत हैं। ■

अंकल ऑस्कर : अकादमी पुरस्कार

□ डॉ. वसंत पेंढारकर

विश्व के सारे फिल्म पुरस्कारों में ऑस्कर पुरस्कार सबसे अधिक प्रतिष्ठित माने जाते रहे हैं। प्रतिवर्ष हॉलीवुड इन पुरस्कारों के बहाने अपने को गौरवान्वित करता रहा है। फिल्म विधा से जुड़ा हर कोई चाहे अभिनेता/ अभिनेत्री हो या तंत्रज्ञ, जीवनभर कम से कम एक 'ऑस्कर' पाने की मुराद लिए होते हैं। जब तक 'ऑस्कर' नहीं मिल जाता, तब तक लगता रहता है कि कोई कद्र नहीं हो रही है। भारत में 'ऑस्कर' पुरस्कृत फिल्में दर्शकों को खूब पसंद आती हैं। इन फिल्मों के प्रदर्शनों पर बॉक्स ऑफिस पर भीड़ उमड़ती है। जबसे 'ऑस्कर' पुरस्कार समारोह टेलीविजन पर 'लाइव' होने लगा है, तब से तो ऑस्कर दर्शकों को और लुभाने लगा है। 'ऑस्कर' अकादमी ऑव मोशन पिक्चर, आर्ट्स एंड साइंसेस का अधिकृत, मौलिक पुरस्कार है, जो प्रतिवर्ष प्रदान किया जाता है। ऑस्कर एक सुनहरा पुतला है। लगभग ३० से.मी. ऊँचा, 'गोल्डप्लेटेड' और १९२७ में स्थापित अकादमी प्रतिवर्ष कलात्मक एवं तकनीकी कुशलता/ श्रेष्ठता अर्जन पर इन पुरस्कारों को प्रदान करती है।

'ऑस्कर' नामकरण की कहानी मजेदार है। पहले इस पुरस्कार-पुतले का कोई नाम नहीं था। जब पुरस्कार का प्रतीक 'पुतला' बनकर आया तब एक सेक्रेटरी मार्गारेट हेरीक ने तपाक से कहा-'अरे! ये तो हमारे **अंकल 'ऑस्कर'** जैसा दिखता है।' तभी से इस पुतले को 'ऑस्कर' पुरस्कार कहा जाना तय हुआ। 'ऑस्कर पुरस्कार' वास्तविक अकादमी पुरस्कार है। 'अकादमी' स्थापित करने की कल्पना एम.जी.एम. के प्रमुख लुईस बी. मेयर की थी। जनवरी ११ - १९२७ को अकादमी की विधिवत स्थापना हुई। अकादमी की पाँच शाखाएँ रहीं- अभिनेता/ अभिनेत्रियाँ/ निर्माता/ लेखक/ निर्देशक एवं तंत्रज्ञ। पहले तो पुरस्कारों की कोई बात नहीं थी। किंतु अकादमी के अध्यक्ष डगलस फेअरबैन्क की कल्पना रही कि अकादमी पुरस्कार दे। एक प्रणाली सुझाई गई और फिर सारा झमेला शुरू हुआ। नियम, शर्तें बनी, बारह प्रमुख श्रेणियाँ बनीं। १९३३ तक तो 'अगस्त से जुलाई' तक वर्ष माना जाता रहा। बाद में पुरस्कार कैलेण्डर वर्ष के हो गए। पहला ऑस्कर पुरस्कार



सूसान हेवर्ड: फिल्म आई वांट टू लिव

समारोह मई १६, १९२९ को हॉलीवुड के रुजवेल्ट हॉटेल में संपन्न हुआ था। पुरस्कार, अकादमी-अध्यक्ष डगलस फेअरबैन्क ने प्रदान किए। इस वर्ष मार्च २७-१९९५ को वर्ष १९९४ के 'ऑस्कर' पुरस्कार बँटे हैं। पहले की बारह श्रेणियों में आज वृद्धि हो गई है क्योंकि फिल्म-विधा

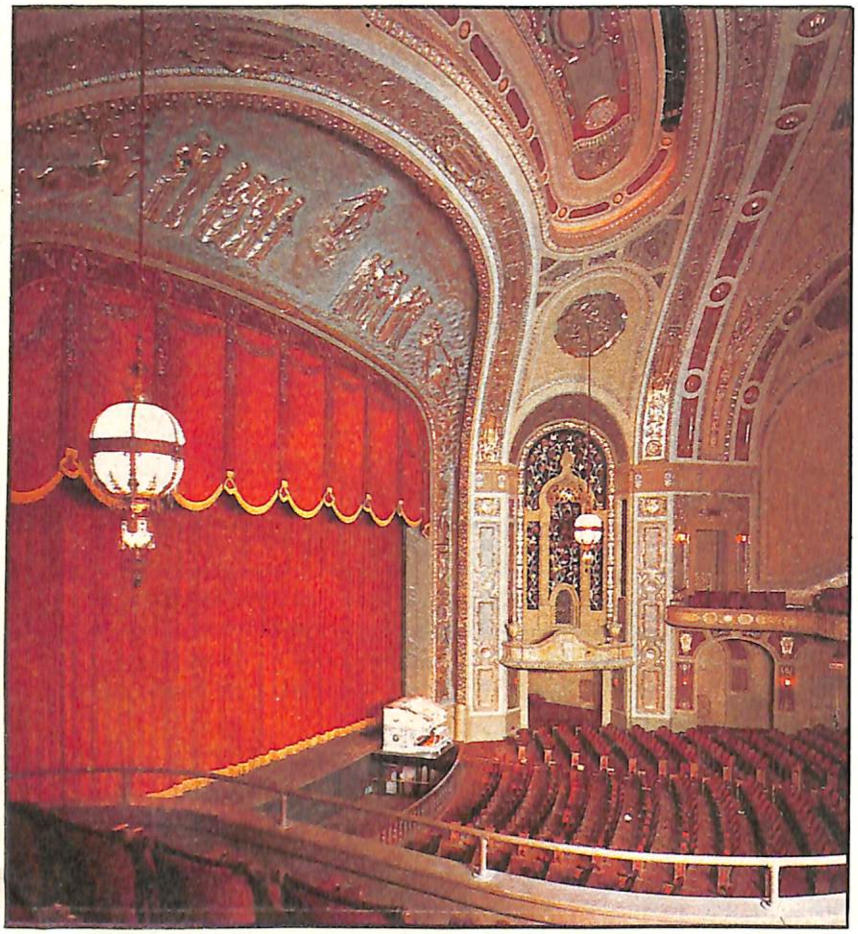
विश्व के फिल्म समारोह

'ऑस्कर' पुरस्कार समारोह के समान ही द ब्रिटिश अकेडेमी ऑव फिल्म एंड टेलीविजन आर्ट्स फिल्म अवार्ड्स समारोह प्रतिवर्ष होते हैं। वेरायटी क्लब ऑव ग्रेट ब्रिटेन भी फिल्में पुरस्कृत करता है। स्टैंडर्ड ब्रिटिश फिल्म अवार्ड्स/ क्रिटिक्स सर्कल अवार्ड्स/डेविड डी डोनाटेलो अवार्ड्स/ अकेडमी ऑव कैनेडियन सिनेमा जिनी अवार्ड्स/ ऑस्ट्रेलियन इंस्टिट्यूट अवार्ड्स/ फ्रेंच सिजर अवार्ड्स आदि कई फिल्म पुरस्कार समारोह विश्वभर में होते हैं। फिर वर्ष भर के फिल्म फेस्टिवल्स में भी फिल्मी जलसे होते हैं। इन फिल्मोत्सवों में प्रदान होने वाले कई पुरस्कार कई बार ऑस्कर पुरस्कारों के समकक्ष स्तर के होते हैं। **वेनिस फिल्म फेस्टिवल** के गोल्डन-लायन, सिल्वर-लायन एवं ज्यूरी ग्रांप्री पुरस्कार/ **कान फिल्म फेस्टिवल** का पाम डी ओर पुरस्कार। **'फेस्टिवल ऑव नेशन्स टाओर्मिना'** के गोल्ड चारिब्दीस, सिल्वर चारिब्दीस, ब्रांज चारिब्दीस के साथ गोल्ड मास्क एवं ब्रांज मास्क पुरस्कार। **शिकागो फिल्म फेस्टिवल** के गोल्ड हयुगो, सिल्वर हयुगो एवं ब्रांज हयुगो पुरस्कार। **सान सबास्टिअन फेस्टिवल** एवं **'बर्लिन फिल्म फेस्टिवल'** के गोल्डन-बेअर, सिल्वर-बेअर पुरस्कार विशेष महत्व रखते रहे हैं।

इनके अलावा अनेसी (फ्रांस)/ अडलेड (ऑस्ट्रेलिया)/ ॲन अर्बर (यूएसए)/ अवोरिआज (फंतासी फिल्में/ फ्रांस)/ ब्रिग्टन (लंदन)/ ब्रुसेल्स (बेल्जियम)/ कैरो (इजिप्त)/ केम्ब्रिज (एनिमेशन)/ कार्थेज (ट्युनिसिया)/ कार्क (आयर)/ एडिनबरा (स्काटलैंड)/ फ्लोरेन्स (इटली)/ हाँगकाँग/ कार्लोवीवारी (चेकोस्लोवाकिया)। लोकार्नो (स्विट्जरलैंड)/ लंदन/ लास एंजेलिस (यूएसए)/ मेलबोर्न (ऑस्ट्रेलिया)/ मिलान (इटली)/ मान्ट्रियल (कनाडा)/ म्युनिख (जर्मनी)/ नई दिल्ली (भारत)/ न्यूयार्क (यूएसए)/ न्यू कैसल अपान टाइन/ ओबरहासन (जर्मनी)/ आक्सफोर्ड (लंदन)/ रोम (इटली)/ रोटेरडैम (हॉलैंड)/ सान फ्रान्सिस्को (यूएसए)/ सिडनी (ऑस्ट्रेलिया)/ येसालोनिकी (ग्रीस)/ टोरेन्टो (एनिमेशन/ कनाडा)/ वर्न (बल्गेरिया)/ विएना (ऑस्ट्रिया) और जैगब्रर्ग (युगोस्लाविया)। कई स्थानों पर फिल्म समारोह प्रतिवर्ष आयोजित होते हैं। इनमें से कई केवल 'प्रदर्शनकारी' होते हैं तो कई 'प्रतियोगी'। □

में नए पुरस्कृत करने योग्य पहलू जुड़ते जा रहे हैं। फिल्म कला एवं फिल्म विधा बहुमुखी हो गई है। अब तो ऑस्कर पुरस्कार विशुद्ध पुरस्कार न रहकर करोड़ों डॉलर्स के दाँवपेंच एवं व्यापार-व्यवसाय से जुड़ गए हैं। व्यावसायिकता इन पुरस्कारों के साथ जुड़ी रही है। समारोह खूब भव्य/ आलीशान/ चमक-दमक के साथ संपन्न होने लगे हैं। ऑस्कर पुरस्कारों को लेकर यह भी देखा गया है कि 'ऑस्कर' पुरस्कृत फिल्में/ अभिनेता/ निर्देशक जरूरी नहीं कि बॉक्स ऑफिस पर भी हिट हों। 'हिट' फिल्में/ अभिनेता/ निर्देशक जरूरी नहीं कि 'ऑस्कर' पुरस्कार जीत लें। चार्ली चैप्लिन और ग्रेटा गार्बो को कभी उनके अभिनय का पुरस्कार ऑस्कर के रूप में नहीं मिला (बाद में 'लाइफ टाइम-अचिवमेंट्स' ग्लोरियस कान्ट्रिब्युशन टू फिल्म इंडस्ट्री, के स्पेशल पुरस्कार मिल भी जाएँ तो क्या है!) अल्फ्रेड हिचकॉक एवं आर्सन वेल्स को कभी श्रेष्ठ निर्देशक का 'ऑस्कर' पुरस्कार नहीं मिला और टॉप-टेन फिल्मों में ऑस्कर पुरस्कारों से अलंकृत फिल्में कम ही होती हैं। 'ऑस्कर' पुरस्कृत कई फिल्में भी बॉक्स ऑफिस पर टिक नहीं पाई हैं।

आजकल 'ऑस्कर' पुरस्कार इतनी अधिक श्रेणियों में प्रदान होने लगे हैं कि इन श्रेणियों की सूची लंबी होगी। प्रमुख श्रेणियाँ संक्षिप्त में हैं- वर्ष की सर्वश्रेष्ठ फिल्म/ सर्वश्रेष्ठ अभिनेता/ अभिनेत्री/ निर्देशक/ कथा/ पटकथा : मौलिक/ अडाप्टेशन/ फिल्मांकन/ कला निर्देशन एवं सेट डेकोरेशन/ 'साउण्ड' रेकार्डिंग/ संगीत : पृष्ठ-भूमि/ स्कोअर/ साँग (गीत)/ रंगभूषा (मेकअप)/वेषभूषा/ संपादन 'शार्ट्स' कॉमेडी नावेल्टी/ कार्टून/ डाक्यूमेंटरी/ साउंड स्पेशल इफेक्ट्स/ दृश्य विज्युअल स्पेशल इफेक्ट्स/ विशेष अवार्डस् तकनीकी/ लाइफ टाइम अचिवमेंट्स/ मानवीय पक्ष। विशेष अवार्डस् अकादमी विशेष रूप से देती है।



विशेष पुरस्कार, पुरस्कार न होकर सम्मान चिन्ह होते हैं। ऐसे पुरस्कार कब से ही दिए जाते रहे हैं- १९३८ में डीएना डर्बिन एवं मिकी रूने को 'स्पेशल अवार्ड' इसलिए प्राप्त हुआ क्योंकि दोनों ने युवकों को पर्दे पर उनकी आकांक्षाओं के साथ साकार किया। पॉल न्यूमन/ डेबारा केर/ कर्क डगलस/ चार्ली चैप्लिन/ सत्यजीत राय विभिन्न क्षेत्रों की विभूतियों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित कर वास्तव में तो अकादमी ही गौरवान्वित हुई है। अभी दो-तीन वर्ष पहले जॉर्ज लुकास का अकादमी ने इसलिए सम्मान किया क्योंकि स्पेशल प्रभावों (इफेक्ट्स) द्वारा पर्दे पर एक 'जादुई दुनिया' निर्मित करने में लुकास ने सबसे अधिक योगदान दिया है।

'ऑस्कर' फिल्म-पुरस्कारों के लिए पहले नामांकन होता है। फिर नामांकित फिल्मों/ नामों में से एक पुरस्कार के लिए चुन लिया जाता है। कभी-कभार ही ऐसा हुआ है किसी पुरस्कार के लिए कोई 'टाई' रही हो। जैसे १९३१-३२ के 'ऑस्कर' पुरस्कारों के समय वर्ष के सर्वश्रेष्ठ अभिनेता को लेकर 'टाई' रही, १९६८ में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के लिए 'टाई' की स्थिति बनी।

इन स्थितियों में पुरस्कार दोनों को मिला है।

आलीशान सिनेमाघर

दर्शक फिल्में देखने के लिए सिनेमागृह जाते हैं या 'सिनेमागृह देखने'? विश्व में कई सिनेमागृह इतने आलीशान बने हैं कि दर्शक इन सिनेमागृहों को देखने जाते हैं। सिनेमा की जब शुरूआत हुई तब ढेर सारे 'चवन्नी छाप (ठाठिया) टॉकीज खुल गए थे, जिन्हें अमेरिका में 'निकलडन' कहा जाता था। जैसे ही सिनेमा लोकप्रिय हुआ और दर्शक संख्या बढ़ी तो थिएटर आलीशान बनने लगे। अमेरिका में तो बीस के दशक में ही ऐसे सिनेमागृह बन गए थे जो किसी 'राजमहल से कम नहीं थे। साठ एवं सत्तर के दशक में दर्शकों की संख्या घटी, तो सिनेमागृहों का वैभव कम हुआ। सत्तर एवं अस्सी के दशकों में तो अमेरिका में कई पुराने सिनेमागृहों का 'कायाकल्प' हुआ।

भारत में भी कई सिनेमागृह ऐसे रहे जो दर्शनीय हैं। जयपुर का 'राजमहल' सिनेमागृह तो अविश्वसनीय रूप से भव्य एवं सुविधापूर्ण है। मुम्बई/दिल्ली/ मद्रास/ कलकत्ता/ बंगलौर/ हैदराबाद/ पूना/ अहमदाबाद/जयपुर में आज भी आलीशान, आरामदेह, विशाल पर्दे वाले, (और 'डालबी' सिस्टम से युक्त) टॉकीज हैं। मुम्बई में **मराठा मंदिर, मिनर्वा**, तो मद्रास में **'देवी'**, दिल्ली का **'चाणक्य'** तो कलकत्ता का **'मेट्रो'**। यहाँ तक कि पूना का **'राहुल'** टॉकीज भी दर्शनीय है। किंतु अमेरिकी टॉकीजों की बात ही और है। अमेरिकी टॉकीज राजमहलों, प्रासादों से भी बढ़कर हैं तो **फंटासी वर्ल्डस्** माने जाते रहे हैं।

आॅस्कर पुरस्कार : १९२७ से १९९४

वर्ष/ सर्वश्रेष्ठ फिल्म	सर्वश्रेष्ठ अभिनेता	सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री	सर्वश्रेष्ठ निर्देशक
१९२७-२८/ *विंग्स*	एमिल जानिंग्स *द लास्ट कमान्ड*	जेनेट गेनॉर *सेवन्थ हेवन*	फ्रैंक बोरजेज *सेवन्थ हेवन*
१९२८-२९/ *ब्राडवे मेलोडी*	वार्नर बैक्स्टर *ओल्ड अरिजोना*	मेरी पिकफोर्ड *कोक्वेटी*	फ्रैंक लॉइड *द डिवाइन लेडी*
१९२९-३०/ *ऑल क्वाएट ऑन द वेस्टर्न फ्रन्ट*	जार्ज अर्लिस *डिजराएली*	नॉर्मा शिअरर *द डायवोर्सी*	लुइस माइलस्टोन *ऑल क्वाएट ऑन द वेस्टर्न फ्रन्ट*
१९३०-३१/ *सिमारॉन*	लिओनेल बैरीमोर *ए फ्री सोल*	मेरी ड्रैसलर *मिन एंड बिल*	नार्मन टॉरॉग *स्किपी*
१९३१-३२/ *ग्रैन्ड हॉटेल*	वैलेस बीरी *द चैम्प* *डॉ. जैकल एंड मि. हाइड*	हेलेन हेस *द सीन ऑव मैडेलान क्लडिट*	फ्रैंक बोरजेज *बैड गर्ल*
१९३२-३३/ *कैवलकेड*	चार्लस् लॉटन *द प्राइवेट लाइफ ऑव हेन्री एडथ*	कैथरिन हेपबर्न *मॉर्निंग ग्लोरी*	फ्रैंक लॉइड *कैवल केड*
१९३४/ *इट हैपन्ड वन नाईट*	क्लार्क गेबल *इट हैपन्ड वन नाइट*	क्लॉडेटी कोलबर्ट *इट हैपन्ड वन नाइट*	फ्रैंक काप्रा *इट हैपन्ड वन नाइट*
१९३५/ *म्युटिनी आन द बाऊन्टी*	विक्टर मैकलाग्लेन *द इन्फारमर*	बेटी डेविस *डेन्जरस*	जॉन फोर्ड *द इन्फारमर*
१९३६/ *द ग्रेट जिगफेल्ड*	पॉल मुनी *द स्टोरी ऑव लुइस पास्चर*	लुइसी रैनर *द ग्रेट जिगफेल्ड*	फ्रैंक काप्रा *मि. डीड्स गोज टु टाउन*
१९३७/ *द लाइफ ऑव एमिल जोला*	स्पेन्सर ट्रेसी *कैप्टन करेजिअस*	लुइसी रैनर *द गुड अर्थ*	लिओ मैककारे *द ऑफुल ट्रुथ*
१९३८/ *यू कान्ट टेक इट विद यू*	स्पेन्सर ट्रेसी *ब्वॉइज टाउन*	बेटी डेविस *जेजबेल*	फ्रैंक काप्रा *यू कान्ट टेक इट विद यू*
१९३९/ *गॉन विद द विण्ड*	रॉबर्ट डोनट *गुडबाइ, मि. चिप्स*	विवियन ले *गॉन विद द विण्ड*	विक्टर फ्लेमिंग *गॉन विद द विण्ड*
१९४०/ *रेबेका*	जेम्स स्टुवर्ट *द फिलाडेल्फिया स्टोरी*	जिंजर रोजर्स *किट्टी फॉयल*	जॉन फोर्ड *द ग्रेप्स् ऑव रैथ*

नामांकन से पुरस्कार संभव होता है। इसलिए फिल्म नामांकित होना चाहिए। लेकिन केवल नामांकन पुरस्कारों को प्रभावित नहीं करते। द टर्निंग प्वाइंट (१९७७) एवं द कलर पर्पल (१९८५) दोनों ही फिल्में ग्यारह पुरस्कारों के लिए नामांकित हुई थीं। दोनों फिल्में एक भी ऑस्कर अर्जित नहीं कर सकीं। 'बेकेट' (१९६४) एवं जानी बेलिण्डा (१९४८) बारह पुरस्कारों के लिए नामांकित रहीं, किंतु केवल एक 'ऑस्कर' प्राप्त कर संतोष करना पड़ा था। ऑस्कर पुरस्कार है भी ऐसा कि एक भी मिल जाए तो जिंदगी सँवर गई।

जिस प्रकार फिल्में वैसे ही अभिनेता/ अभिनेत्रियाँ भी कई बार नामांकित होते रहे हैं। पुरस्कार तो कभी-कभार पल्ले पड़ा। यदि सहायक अभिनेता/ अभिनेत्रियों के पुरस्कारों के साथ देखें तो सबसे अधिक श्रेष्ठ अभिनेत्री/ अभिनेता की सूची भी बन जाएगी। सबसे अधिक नामांकन एवं प्राप्त ऑस्करों की संख्या के अनुसार श्रेष्ठता का क्रम है (कोष्टक में प्राप्त 'ऑस्कर!') : **बारह** नामांकन : कैथरिन हेपबर्न (४)/ **दस** नामांकन : बेटी डेविस (२)/ जैक निकोलसन (५), लारेन्स अलिविए (२)/ **नौ** नामांकन : स्पेन्सर ट्रैसी (२)/ **आठ** नामांकन : मार्लन ब्रन्डो (३), जैक लेमन (२), अल पचिनो (४), गेराल्डिन पेज (२)/ और **सात** नामांकन : इन्ग्रिड बर्गमन (३), रिचर्ड बर्टन (१), जेन फोन्डा (२), ग्रीअर गार्सन (१), पाल न्यूमन (१)। और पीटर ओ टूल (सात नामांकनों के बावजूद एक भी ऑस्कर नहीं!)।

सर्वाधिक 'ऑस्कर' पुरस्कारों से सम्मानित फिल्में-

● *बेनहर, १९५९ (११)/* ● *वेस्ट साइड स्टोरी, १९६१ (१०)/* ● *गिगी, १९५८ (९)/* ● *द लास्ट एम्परर, १९८७ (९)/ गॉन विद द विंड, १९३९ (८)/ .* ● *फ्राम हियर टू इटर्निटी, १९५३ (८)/* ● *ऑन द वॉटर फ्रंट, १९५४ (८)/* ● *माय फेअर लेडी, १९६४ (८)/* ● *कैबरे, १९७२ (८)/* ● *गांधी, १९८२ (८)/* ● *द अमेडियस, १९८४ (८)/* ● *गोइंग माय वे १९४४ (७)/* ● *द बेस्ट ईयर्स ऑव अवर लाइव्ज १९४६ (७)/* ● *द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई, १९५७ (७)/* ● *लारेन्स ऑव अरेबिया, १९६२ (७)/* ● *पैटन, १९७० (७)/* ● *द इस्टिंग, १९७३ (७)/* ● *आऊट ऑव अफ्रीका, १९८५ (७)/* ● *डान्सेस विथ वूल्व्ज, १९९० (७) एवं शिण्डलर्स लिस्ट १९९३ (७), आदि। **गॉन विद द विण्ड** (१९३९)को अतिरिक्त 'स्पेशल' अवार्ड्स भी मिले थे, इसलिए कुल ऑस्कर 'दस' हो गए, किंतु प्रतियोगी श्रेणी के केवल 'आठ' ही तुलनात्मक रूप में लिए गए हैं।*

१९४१/	गेरी कूपर	जोन फोन्टेन	जॉन फोर्ड
हाऊ ग्रीन वाज माइ व्हैली	सार्जेन्ट यॉर्क	सस्पिशियन	हाऊ ग्रीन वाज माइ व्हैली
१९४२/	जेम्स कैग्ने	ग्रीअर गार्सन	विलियम वाइलर
मिसेस मिनिवर	यांकी डूडल डैन्डी	मिसेस मिनिवर	मिसेस मिनिवर
१९४३/	पॉल लुकास	जेनिफर जोन्स	मिशेल कुर्तिज
कासाब्लान्का	वॉच आन द राइन	द स्टोरी ऑव बर्नाडेटी	कासाब्लान्का
१९४४/	बिग क्रास्बी	इन्ग्रिड बर्गमन	लिओ मैककारे
गोइन्ग माइ वे	गोइन्ग माइ वे	गैस लाइट	गोइंग माइ वे
१९४५/	रे मिलन्ड	जोन काफ्रोर्ड	बिल्ली बाइल्डर
द लॉस्ट वीक एंड	द लॉस्ट वीक एंड	मिल्ड्रैड पिअर्स	द लॉस्ट वीक एंड
१९४६/	फ्रैडरिक मार्च	आलिविया डी हैविलैंड	विलियम वाइलर
द बेस्ट इयर्स ऑव	द बेस्ट इअर्स ऑव	टु इच हिज ओन	द बेस्ट इयर्स ऑव
आवर लाइव्ज्	ऑवर लाइव्ज्		आवर लाइव्ज्
१९४७/	रोनाल्ड कोलमन	लोरेटा यंग	एलि कजान
जन्टलमैन्स ॲग्रीमेन्ट	डबल लाइफ	द फार्मर्स डॉटर	जन्टलमैन्स ॲग्रीमेंट
१९४८/	लॉरेन्स आलिविए	जेन वाइमन	जान ह्युस्टन
हैमलेट	हैमलेट	जॉनी बेलिण्डा	ट्रेजर ऑव सिएरा माद्रे
१९४९/	ब्रॉडेरिक क्राफोर्ड	आलिविया डी हैविलैंड	जोसेफ एल. मैन कीविज
ऑल द किंग्स मेन	ऑल द किंग्स मेन	द हेअरेस	ए लेटर टू थ्री वाइव्ज
१९५०/	जोस फेरर	जुडी होली डे	जोसेफ एल. मैन कीविज
ऑल अबाउट इव	साइरानो डी बर्ज रैक	बॉर्न यस्टरडे	ऑल अबाउट इव
१९५१/	हम्फ्री बोगार्ट	विवियन ले	जॉर्ज स्टिवन्स
ॲन अमेरिकन इन पेरिस	द अफ्रीकन क्वीन	ए स्ट्रीट कार नेम्ड डिजायर	ए प्लेस इन द सन
१९५२/	गैरी कूपर	शिर्ले बूथ	जॉन फोर्ड
द ग्रेटेस्ट शो ऑन अर्थ	हाई नून	कम बैक लिटल शेबा	द क्वाएट मॅन
१९५३/	विलियम होल्डन	ऑड्रे हेपबर्न	फ्रैड जिनेमन
फ्रॉम हियर टू इटर्निटी	स्टैलेग-सेवेनटीन	रोमन हॉली डे	फ्रॉम हियर टू इटर्निटी
१९५४/	मार्लन ब्रान्डो	ग्रेस केली	एलि कजान
ऑन द वाटर फ्रन्ट	ऑन द वाटर फ्रन्ट	द कंट्री गर्ल	ऑन द वाटर फ्रन्ट
१९५५/	अर्नेस्ट बोर्गेन	ॲना मैगनानी	डेलबर्ट मान
मार्टी	मार्टी	द रोज टटू	मार्टी
१९५६/	युल ब्राइनर	इन्ग्रिड बर्गमन	जॉर्ज स्टिवन्स
अराउन्ड द वर्ल्ड	द किंग एंड आय	अनास्तासिआ	जायन्ट
इन एटी डेज			
१९५७/	अलेक गिनिस	जोन वूडवर्ड	डेविड लीन
द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई	द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई	द थ्री फेसेस ऑव इव	द ब्रिज ऑन द रिवर क्वाई
१९५८/	डेविड निवेन	सूसन हेवर्ड	विन्सेन्ट मिनेली
गिगि	सेपरेट टेबल्स	आय वान्ट टू लिव	गिगि
१९५९/	चार्लटन हेस्टन	सिमान सिनोरेटी	विलियम वाइलर
बेनहर	बेन हर	रूम ॲट द टॉप	बेन हर
१९६०/	बर्ट लैन्केस्टर	एलिजाबेथ टेलर	बिल्ली वाइल्डर
द अपार्टमेन्ट	एल्मर ग्रान्ट्री	बटर फील्ड एट	द अपार्टमेन्ट
१९६१/	मार्क्स मिलिअन शेल	सोफिया लॉरेन	रॉबर्ट वाइज एवं जेरोमी रॉबिन्स
वेस्ट साइड स्टोरी	जजमेन्ट ॲट नूरेम्बर्ग	टू वूमेन	वेस्ट साइड स्टोरी
१९६२/	ग्रेगरी पेक	ॲने बैन्क्रॉफ्ट	डेविड लीन
लारेन्स ऑव अरेबिया	टू किल ए मॉकिंग बर्ड	द मिरॅकल वर्कर	लारेंस ऑव अरेबिया
१९६३/	सिडनी पॉईशर	पैट्रिशिया नील	टोनी रिचर्डसन्
टॉम जोन्स	लिलिज् ऑव द फील्ड	हड	टॉम जोन्स
१९६४/	रेक्स हैरिसन	जुली एन्ड्रूज	जॉर्ज कुकोर
माइ फेअर लेडी	माइ फेअर लेडी	मेरी पॉपिन्स	माइ फेअर लेडी
१९६५/	ली मार्विन	जूली क्रिस्टी	रॉबर्ट वाइज
द साउण्ड ऑव म्युजिक	कैट बैलो	डार्लिंग	द साउण्ड ऑव म्युजिक
१९६६/	पॉल स्कॉफील्ड	एलिजाबेथ टेलर	फ्रेड जिनेमन
ए मॅन फॉर ऑल सीजन्स	ए मॅन फॉर ऑल सीजन्स	हू इज अफ्रेड ऑव	ए मॅन फॉर ऑल सीजन्स
		वर्जिनिआ वूल्फ	

१९६७/ *इन द हीट ऑव द नाइट*	रॉड स्टैगर *इन द हीट ऑव द नाइट*	कैथरिन हेपबर्न *गेस हू इज कमिंग टू डिनर*	माइक निकोल्स *द ग्रेजुएट*
१९६८/ *ऑलिवर*	क्लिफ रॉबर्टसन *चार्ली*	कैथरिन हेपबर्न *द लॉयन इन द विन्टर एवं* बार्बरा स्टैसैण्ड *फनी गर्ल*	कैरोल रीड *ऑलिवर*
१९६९/ *मिडनाइट काउब्वाय*	जॉन वेन *टू ग्रिट*	मॅगी स्मिथ *द प्राइम ऑव* *मिस जीन ब्रॉडी*	जॉन शेलेसिंगर *मिड नाइट काउब्वाय*
१९७०/ *पैटन*	जॉर्ज सी स्कॉट *पैटन*	ग्लेन्डा जैकसन *वूमन इन लव*	फ्रैन्कलीन जे *शाफ्नर पैटन*
१९७१/ *द फ्रेन्च कनेक्शन*	जीन हैकमन *द फ्रेंच कनेक्शन*	जेन फोन्डा *क्लुट*	विलियम फ्राइडकिन *द फ्रेंच कनेक्शन*
१९७२/ *द गॉड फादर*	मार्लन ब्रान्डो *द गॉड फादर*	लिजा मिनेली *कैबरे*	बॉब फोस *कैबरे*
१९७३/ *द स्टिन्ग*	जॅक लेमन *सेव द टाइगर*	ग्लेन्डा जैकसन *ए टच ऑव क्लास*	जार्ज रॉय हिल *द स्टिंग*
१९७४/ *द गॉड फादर पार्ट टू*	आर्ट कार्नी *हैरी एंड टोन्टो*	एलीन बर्स्टीन *एलिस डज़्नॉट लिव* *हियर एनीमोर*	फ्रैन्सिस फोर्ड कोपोला *द गॉड फादर पार्ट टू*
१९७५/ *वन फ्लू ओवर द* *कक्कूज नेस्ट*	जैक निकोल्स *वन फ्लू ओवर द* *कक्कूज नेस्ट*	लोइसी फ्लेचर *वन फ्लू ओवर द* *कक्कूज नेस्ट*	मिलोस फोरमन *वन फ्लू ओवर द* *कक्कूज नेस्ट*
१९७६/ *रॉकी*	पिटर फिन्च *नेटवर्क*	फे उनावे *नेटवर्क*	जॉन जी. अविल्ड सेन *रॉकी*
१९७७/ *अॅनी हॉल*	रिचर्ड ड्रेफस *द गुडबाय गर्ल*	डायने कीटन *अॅनी हॉल*	वूडी अलेन *अॅनी हॉल*
१९७८/ *द डीयर हन्टर*	जॉन व्हाइट *कमिंग होम*	जेन फोन्डा *कमिंग होम*	मिशेल सिमिनो *द डीयर हन्टर*
१९७९/ *क्रेमर वर्सेस क्रेमर*	डस्टिन हॉफमन *क्रेमर वर्सेस क्रेमर*	सैली फील्ड *नार्मा री*	रॉबर्ट बेन्टन *क्रेमर वर्सेस क्रेमर*

हू इज अफ्रेड ऑव वर्जिनिया वुल्फ



ए टच ऑव क्लास





वन फ्लू ओवर द
कुक्कू'ज नेस्ट

१९८०/	रॉबर्ट डी निरो	सिस्सी स्पासेक	रॉबर्ट रेडफोर्ड
आर्डिनरी पीपुल	रेजिंग बुल	कोल माइनर्स डॉटर	ऑर्डिनरी पीपुल
१९८१/	हेनरी फोन्डा	कैथरीन हेपबर्न	वारेन बीटी
चैरिऑटस् ऑव फायर	ऑन गोल्डन पॉण्ड	ऑन गोल्डन पॉण्ड	रेड्स
१९८२/	बेन किंगस्ले	मेरील स्ट्रीप	रिचर्ड एटनबरो
गाँधी	गाँधी	सोफीज च्वाइस	गाँधी
१९८३/	रॉबर्ट डुवाल	शिर्ले मॅक्लेन	जेम्स एल. ब्रूक्स
टर्मस ऑव एनडीअरमेन्ट	टेण्डर मर्सीज	टर्मस ऑव एनडीअरमेन्ट	टर्मस ऑव एनडीअरमेन्ट
१९८४/	एफ. मूरे अब्राहम	सैली फील्ड	मिलोस फोरमन
अमेडिअस	अमेडिअस	प्लेसेस इन द हार्ट	अमेडिअस
१९८५/	विलियम हर्ट	गेराल्डिन पेज	सिडनी पोलैक
आउट ऑव अफ्रीका	किस ऑव द स्पाइडर वूमन	द ट्रिप टु बाउंटिफुल	आउट ऑव अफ्रीका
१९८६/	पॉल न्यूमन	मार्ली मैटेलिन	आलिवर स्टोन
प्लेटून	द कलर ऑव मनी	चिल्ड्रेन ऑव ए लेसर गॉड	प्लैटून
१९८७/	माईकेल डगलस	चेर	बर्नाडो बुर्तोलुसी
द लास्ट एम्परर	वॉल स्ट्रीट	मूनस्ट्रक	द लास्ट एम्परर
१९८८/	डस्टिन हॉफमन	जोडी फॉस्टर	बैरी लेविनसन
रेन मॅन	रेन मॅन	द अॅक्युजड	रेन मॅन
१९८९/	डैनिएल डे- लुविस	जेसिका टैन्डी	आलिवर स्टोन
ड्राइविंग मिस डैजी	माइ लेफ्ट फूट	ड्राइविंग मिस डैजी	बॉर्न ऑन द फोर्थ ऑव जुलाई
१९९०/	जेरी जे रॉनस	कैथी बेटस्	केविन कास्टनर
डान्सेस विद वूल्ज	रिवर्सल ऑव फ्यूचर	मिसरी	डान्सेस विद वूल्ज
१९९१/	अन्थोनी हॉफ्किन	जोडी फॉस्टर	जोनाथन डैम्मी
द साइलेंस ऑव द लैम्ब्स	द साइलेंस ऑव द लैम्ब्स्	द साइलेंस ऑव द लैम्ब्स	द साइलेंस ऑव द लैम्बस
१९९२/	अल पचिनो	एम्मी थाम्प्सन	क्लिन्ट ईस्टवूड
अनफरगिवन	द सेन्ट ऑव वूमन	होवर्डस् एंड	अनरफरगिवन
१९९३/	टॉम हैन्क्स	हॉली हन्टर	स्टीवन स्पीलबर्ग
द शिण्डलर्स लिस्ट	फिलाडेल्फिया	द पिआनो	द शिण्डलर्स लिस्ट
१९९४/	टॉम हैन्क्स	जैसिका लैन्गे	
फॉरेस्ट गम्प	फॉरेस्ट गम्प	द ब्ल्यू स्काई	फॉरेस्ट गम्प

फिल्म, निर्देशक का माध्यम होती है और निर्देशन करना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। विश्व सिनेमा में फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में पुरुषों का बाहुल्य रहने से यह मानकर चला गया कि महिलाएँ फिल्म निर्देशन जैसा जटिल कार्य ठीक से संपन्न नहीं कर सकेंगी। इस उम्मीद के खिलाफ भारत ही नहीं, विश्व की महिलाओं ने यह प्रमाणित कर दिया है कि निर्देशन के क्षेत्र में वे लाजवाब हैं। समाज और स्त्री-पुरुष रिश्तों के समीकरण सुलझाने में पुरुष- दृष्टि उतनी सूक्ष्म और गंभीर नहीं हो पाती जितना एक महिला निर्देशक के लिए यह संभव है। विश्व के अन्य देशों की तुलना में भारत में सबसे अधिक महिला निर्देशिकाएँ हैं। आज सूमचे विश्व में महिला फिल्मकारों की फिल्में अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में चर्चित/ प्रशंसित तथा पुरस्कृत हो रही हैं।

विश्व सिनेमा में

महिला फिल्मकारों के अपने धरातल

● निर्मला भुराड़िया

भारत की अपर्णा सेन, विजया मेहता, मीरा नायर, सई परांजपे, अरुणा राजे, पामेला रुक्स, कल्पना लाजमी जैसी निर्देशिकाओं के अलावा अन्य एशियाई- योरपीय देशों और हॉलीवुड की महिलाओं ने फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में अपनी सफलता दर्ज कराई है। सुनहरे पर्दे पर चलती- फिरती कल्पनाएँ साकार करने वाली टीम में वे अब महज कोमलांगी अदाकाराएँ बनकर नहीं, बल्कि हर निर्णयात्मक स्थिति में अपने संपूर्ण सामर्थ्य के साथ उपस्थित हैं।

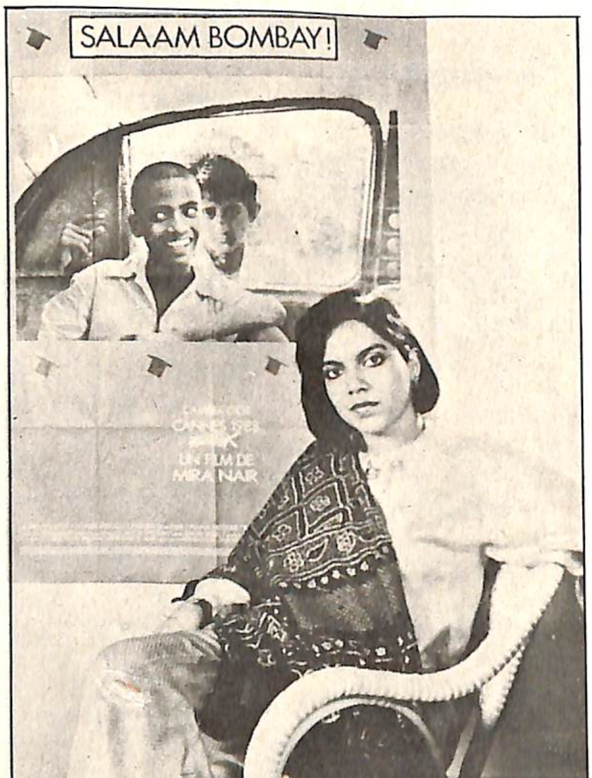
इस संदर्भ में हॉलीवुड की निर्देशिका कैथरिन बिगलो की रोमांचक फिल्म 'पॉइंट ब्रेक' (१९९१) और रेन्डा हेन्स की आश्चर्यजनक रूप से सफल फिल्म 'द डॉक्टर' (१९९१) थी, जो एक अहंकारी सर्जन है। जब उसे कैंसर हो जाता है और वह अपने खुद के ही अस्पताल में भर्ती होता है तब वह व्यवस्था को मानवीय दृष्टिकोण से देखना सीखता है। हेंस जिन्होंने 'चिल्ड्रन ऑफ ए लेसर गॉड (१९८६) भी निर्देशित की है कहती हैं, 'मेरी दिलचस्पी ऐसे विषयों में है, जो मानव मन और जीवन के संघर्षों की व्याख्या करते हों।' वहीं बिगलो, जिन्होंने 'नीयर डार्क' (१९८७) और 'ब्लू स्टील' (१९९०) जैसी फिल्में निर्देशित की हैं कहती हैं, 'मैं ऐसी उकसाने वाली फिल्में बनाना पसंद करती हूँ, जो लोगों को हिलाकर रख दे। हॉलीवुड की निर्देशिकाओं और उनकी फिल्मों में मेरी एग्नेस डोनगो की 'पेराडाइज' (१९९१), जोडी फॉस्टर्स की लिटल मेन टेट (१९९१), जॉन मिकलिन सिल्वर की नाटकीय कॉमेडी 'स्टेप किड्स' (१९९२), बारबरा स्ट्रीसेंड की 'द प्रिंस ऑफ टाइड्स' फिल्में उल्लेखनीय हैं, जो कि अकादमी पुरस्कार के लिए भी नामांकित की गईं। हॉलीवुड की निर्देशिकाओं में लिलि जेनुश की 'रश' (१९९२), नोरा एफ्रॉन की 'दिस इज माइ लाइफ' (१९९२), पेनी मार्शल की 'ए लीग ऑव देअर ऑन' (१९९२), मेरी लेम्बर्ट की 'ग्रैंड इस्ले' (१९९१) भी दर्ज हैं। हॉलीवुड की महिला निर्देशिकाओं की फिल्मों की इस लंबी सूची की खासियत यह है कि ये सब वे आम फिल्में हैं, जिन्हें कोई भी पुरुष निर्देशक बनाता। इन्हें विषयों के आधार पर ऐसे किसी खाने में नहीं डाला जा सकता कि ये 'महिलाओं द्वारा बनाए जाने वाले विषय हैं।'

एक दशक पहले तक भी अमेरिकी महिला निर्देशिकाओं के नाम सिर्फ उँगलियों पर गिने जाने लायक थे, जैसे प्रारंभिक १९०० में लुईस वेबर (वेयर आर माइ चिल्ड्रन), १९३० की डोरोथी आर्जनर, १९५० की इडा लुपिनो (द हिटचिकर)। और ताजा मानें तो १९७५ में जोन निकलिन सिल्वर और उनके निर्माता पति रे ने मिलकर अपनी पहली फीचर फिल्म 'हेस्टर स्ट्रीट' बनाई थी। तब एक स्टुडियो अधिकारी ने उन्हें कहा था, 'पहले ही फिल्म को बनाना और बेचना एक कठिन काम है, ऊपर से एक महिला का इसकी निर्देशक होना एक ऐसी समस्या है जिसे हम मोल लेना नहीं चाहते।'

१९८१ में डायरेक्टर गिल्ड ऑव अमेरिका (डी.जी.ए.) ने महिला निर्देशिकाओं को प्रोत्साहित करने की दिशा में कदम बढ़ाए। तब तक हॉलीवुड में १९३९ से १९७९ के बीच बनने वाली ७,३३२ फीचर फिल्मों में से सिर्फ १४ का निर्देशन महिलाओं ने किया था। लेकिन १९९० तक स्थिति बदल चुकी थीं। अब गिल्ड के कांट्रेक्ट में बनने वाली ४० फीचर फिल्मों में से कम से कम २३ का निर्देशन महिलाएँ कर रही हैं। दूसरे शब्दों में वे अपने ही इतिहास से लड़ रही हैं।

अमेरिका के अलावा एशियाई एवं योरपीय महिलाओं ने भी फिल्मों का निर्देशन किया है। इन्होंने सिनेमा को गहरी मानवीय संवेदनाओं से जोड़ा है। इन्होंने कोमलता से मगर पूरी सावधानी के साथ अपने समय के नाजुक मुद्दों को उकेरा है। एशियाई निर्देशिकाओं में चीन/ जापान/ ईरान/ तुर्की/ फिलीपींस/ श्रीलंका/ पाकिस्तान आदि सभी जगहों की निर्देशिकाओं ने अपने समय के सच को बखूबी पर्दे पर उतारा है। १९५५ में पैदा हुई तुर्की की टोमरिस गिरीन्लियोग्लू ने 'फ्रॉम

मीरा नायर: मिसी सिपी मसाला





विजया मेहता: ए टच ऑव क्लास

केन्टो टू टेंगो (१९८८), द अदर साइड ऑव द वॉटर (१९९१), ए पासिंग समर रेन (१९९४) फिल्में बनाई। पासिंग समर रेन एक ऐसे लेखक की प्रेम कहानी है, जो अपनी लेखकीय कल्पना की नायिका के प्रेम में पड़ जाता है।

श्रीलंका की महिला निर्देशिका सुमित्रा पीरिज श्रीलंका में ही पैदा हुई। फिल्म मेकर के रूप में अपना कैरियर बनाने की इच्छा से वे लंदन स्कूल ऑव फिल्म टेकनिक में प्रशिक्षण प्राप्त करने गई और १९५९ में श्रीलंका लौटीं। वे फिल्म संपादक के रूप में रूपहले पर्दे की दुनिया में आईं। बाद में १९७८ में उन्होंने अपनी पहली फीचर फिल्म 'द गर्ल्स' बनाई। वे श्रीलंका की पहली और अकेली फिल्म निर्देशिका हैं। इनका कहना है कि इन्हें अपने पारंपरिक समाज में कई निषेधों और वर्जनाओं का सामना करना पड़ा। उनकी ताजा फिल्म १९९४ की 'द एलडेस्ट डॉटर' है।

ईरानी निर्देशिका तहमीना मिलानी ने चिल्ड्रन ऑव डिवोर्स (१९९०), लीजेंड ऑव आइ (१९९१), वॉट एल्स इज न्यू (१९९२) नामक फिल्में बनाई। इनकी फिल्म चिल्ड्रन ऑव डिवोर्स को एक अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में निर्देशक की सर्वश्रेष्ठ पहली फिल्म का पुरस्कार भी मिला है।

जापान की योको नरहशी आरंभ में रंगमंच के नाटकों की निर्देशिका रहीं। १९७९ में इन्होंने अच्छी संभावनाओं वाले जापानी अभिनेताओं को अंतरराष्ट्रीय प्रस्तुतियों हेतु तैयार करने के लिए एक ट्रेनिंग स्कूल खोला। १९९३ में बनी जापानी फिल्म 'विन्ड्स ऑव गॉड' इनके द्वारा निर्देशित पहली फीचर फिल्म है।

लेबनान की जोसेलिन सआब, मंगोलिया की योन्दोन्बेलिन, चीन की हांग यू शान, यू.के. की गुरिन्दर चंदा भी एशिया की महत्वपूर्ण फिल्म निर्देशिकाएँ हैं।

पाकिस्तान जैसे पर्दानशीनों के देश में भी महिलाएँ फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में आती रही हैं और सामाजिक जीवन का कठोर अनुशासन लाँघ कर इन्होंने अपना लोहा मनवाया है।

नूरजहाँ के बारे में सभी जानते हैं कि वे लोकप्रिय अभिनेत्री एवं गायिका रही हैं। वे पाकिस्तान की पहली महिला निर्देशिका भी हैं। १९५१ में उन्होंने 'चन्न वे' नामक एक फिल्म बनाई जिसमें उन्होंने नायिका की भूमिका स्वयं अदा की थी।

१९७५ में पाकिस्तान की और भी कई निर्देशिकाओं ने फिल्मी पर्दे की ओर रुख किया। अभिनेत्री सलमा मुमताज ने सबसे पहले पंजाबी फिल्म 'बेऔलाद' बनाई। इसके बाद 'मुलतान खाँ', 'मुलताने' एवं अन्य फिल्में भी बनाईं। ७५ में ही जीनत बेगम नामक अभिनेत्री ने 'बिन बादल बरसात' नामक फिल्म का निर्देशन किया। उन्होंने १९७८ और ८० में भी 'आबशार' और 'आपकी खातिर' नामक फिल्में बनाईं। पाकिस्तानी महिला निर्देशिका संगीता ने तो कई फिल्में बनाईं। उन्होंने प्रशंसा प्राप्त की, पुरस्कार जीते और व्यावसायिक दृष्टि से सफल भी रहीं। इनकी फिल्मों में उल्लेखनीय हैं 'सोसायटी गर्ल', 'मुट्ठी भर चावल', 'लाल आँधी', 'महल मेरे सपनों के', मियाँ बीवी राजी', 'थोड़ी सी बेवफाई', 'नाम बदनाम' आदि। पाकिस्तानी महिला निर्देशिकाओं में अन्य महत्वपूर्ण नाम शमीम आरा, वहीदा खान, यास्मीन आदि के उल्लेखनीय हैं। इन सबके मामले में खास बात यह है कि ये अदाकारी के जरिए फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में आईं।

हंगेरियन सिनेमा में मार्ता मेजारस महिला निर्देशिकाओं में एक महत्वपूर्ण नाम है। मार्ता हंगरी के मशहूर फिल्मकार मिकलोस जैंक्सो की पत्नी हैं। मास्को से फिल्म निर्देशन का प्रशिक्षण लेकर उन्होंने बुडापेस्ट



फेरियल बेहज़ाद



तहमिनेह मिलानी

और रोमानिया में लघु फिल्मों का अनुभव प्राप्त किया। टाउन ऑव पेंटर्स तथा ब्लो बॉन्न युवाओं पर केंद्रित उनकी चर्चित फिल्में हैं। द गर्ल और बाइंडिंग सेंटीमेंट्स जैसी फिल्मों ने हंगरी से बाहर के दर्शकों एवं फिल्मकारों का ध्यान अपनी ओर खींचा था।

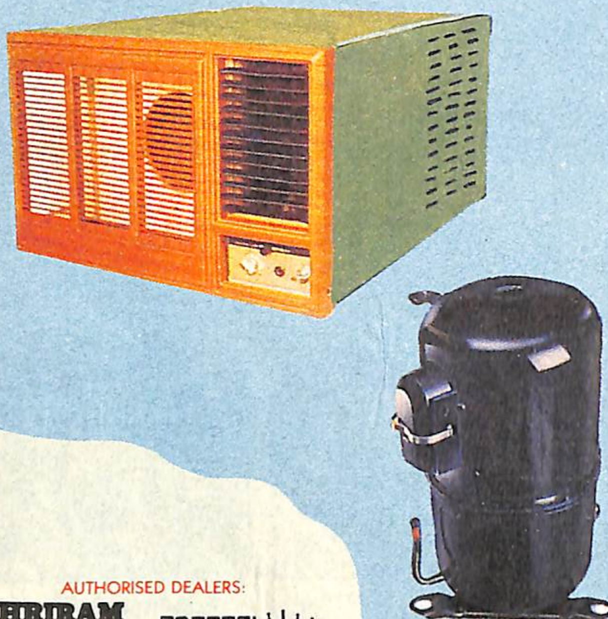
चेकोस्लोवाकिया की फिल्म निर्देशिका वेरा चितिलोवा की फिल्मों ने एकबारगी तो जहाँ- जहाँ प्रदर्शित हुई सनसनी फैला दी थी। दर्शनशास्त्र, वास्तुकला में निपुण चितिलोवा फैशन मॉडल रह चुकी हैं। कंटीन्युटी- गर्ल के रूप में फिल्मों में प्रवेश लेकर 'श्री मेन मिसिंग' फिल्म से सह- निर्देशिका बनी। प्राग के फिल्म स्कूल में प्रशिक्षण लेकर अपनी डिप्लोमा फिल्म सीलिंग (१९६२) के जरिए वह नई लहर के सिनेमा समर्थकों की पहली पंक्ति में शामिल कर ली गईं। कपड़ा मजदूरों की व्यथा पर बनी चितिलोवा की दूसरी फिल्म- ए बेग ऑव फ्लीज- को मिल मालिक ने साल भर तक प्रदर्शित नहीं होने दिया। अनादर वे ऑव लाइफ (१९६३), पर्ल्स ऑव डीप (१९६५), द रिटर्न ऑव द प्रोडीगल सन, द फ्रूट ऑव द ट्रीज ऑव पैराडाइज (१९७०) उनकी उल्लेखनीय फिल्में हैं।

विवादास्पद फिल्मकार मणि रत्नम् की छायाकार पत्नी सुहासिनी भी फिल्म निर्देशिका बन गई है। उनकी दूसरी फिल्म 'इंदिरा' शीघ्र प्रदर्शित होने जा रही है। नई दिल्ली के आगामी २७ वें अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में एशियन सिनेमा को लेकर एक महिला निर्देशिकाओं का प्रतियोगी खंड होगा। इससे निश्चित ही महिला फिल्मकारों की महिमा एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

अपने समय और समाज के समस्त अवरोधों को तोड़ते हुए और पूर्वाग्रहों को झुठलाते हुए इन महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रतिभा व्यक्ति प्रधान होती है स्त्री या पुरुष प्रधान नहीं। ■

'विश्व सिनेमा' के प्रकाशन पर
हार्दिक बधाई एवं
शुभकामनाएँ!

Pioneer in Refrigeration & Airconditioning!



AUTHORISED DEALERS:

SHRIRAM TECUMSEH Compressors — FREEZE KING Compressors
Super Ammonia Compressors & Fittings — AUE Motors
Danfoss Controls — Mafron Gases
Capri Stabilizer — AMOKING Freon Compressors

WE DEAL IN:

INDUSTRIAL CHILLING PLANTS FOR ▷
□ Chemical Industries □ Plastic Industries
□ Engineering Industries □ Milk Chilling Plant

PLANT & MACHINERY FOR ▷
□ Cold Storage □ Ice Plant
□ Ice-Cream Plant □ Ice Candy Plant

PLANTS FOR COMMERCIAL AIR CONDITIONING COMPRESSORS & ACCESSORIES FOR ▷
□ Window Air Conditioners □ Water Coolers
□ Deep Freezers □ Bottle Coolers
□ Refrigerators □ Car Air Conditioners

EQUIPMENTS & CONTROLS FOR ▷
(Cold Storage Ice Plants & Chilling Plants)
□ Insulated Doors □ Ammonia Fittings
□ Temperature Controls □ Pressure Controls
□ Potato Driers □ Air Curtains

For More Details
Write or Contact to :

Jawahar Refrigeration

10, Kalyan Vishranti Grah,
Near Yeshwant Talkies, Indore
Phone : Off. 34856, Resi. 35698
Gram : 'ICE'

Vigilance

'विश्व सिनेमा' के प्रकाशन पर
हार्दिक बधाई!

हार्दिक स्वागत!

शहर के मध्य
सर्वसुविधायुक्त चालीस कमरे

होटल नीलम

मंदसौर, टे. नं. 52922

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

सुरेन्द्रसिंह सिसौदिया

अध्यक्ष

मार्केटिंग सोसायटी,
अफीम गोदाम रोड, मंदसौर

With Best Compliments from

MANDSAUR STEELS PRIVATE LIMITED

INDUSTRIAL ESTATE, MANDSAUR.
—: MANUFACTURERS :—
FOR GUARANTEED QUALITY ROLLING OF STAINLESS STEEL, ALLOY STEEL INGOTS INTO FLATS/BARS & M.S. ANGLES ETC.
—: SPARE CAPACITY AVAILABLE :—
FOR ROLLING M.S./EN-8/EN-9/ROUNDS FROM BILLETS/INGOT OF VARIOUS SIZES BETWEEN 30mm to 90mm.
TELE NOS. Off. 52716, 52353, 45516
Gram : Steel Cast **Resi:** 52766, 52761, 52463.

With Best Compliments

NUTAN

SUITINGS, SHIRTING AND DRESS MATERIALS

MATTY	**FOR READYMADE GARMENTS**
PLAINS	**FOR SCHOOL UNIFORMS**
GABERDIENE	**FOR EXPORTS**
SAFARI	**FOR DIRECT SELLING**

FAULTLESS LENGTHS OUR DESIGNS OR YOUR SPECIFICATION

NUTAN SYNTHETICS

90-B, Industrial Area No. 1, A.B. Road, Dewas-455001.
Phone : 75610, 75608, 75611, (R) 75609.

तारकोवस्की की पाँच फिल्मों ने उन्हें अपने देश सोवियत संघ से बाहर कर दिया। छठी फिल्म उन्होंने इटली और सातवीं स्वीडन में बनाई। उनकी फिल्मों को देखकर दुनिया के दर्शकों ने महसूस किया कि ऐसी फिल्में उन्होंने कभी नहीं देखीं। १९८० से १९९० के दस वर्षों पर तारकोवस्की का नाम अंकित है।

आन्द्रेई तारकोवस्की :

हर सूखे पेड़ को हरा कर देने की इच्छा

● मनमोहन चड्ढा

भारतीय फिल्म प्रेमी तथा भारत के अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोहों में उपस्थित रहने वाले दर्शकों में **आंद्रेई तारकोवस्की** की फिल्में सर्वाधिक सराही जाती रही हैं। २८ दिसंबर १९८६ को तारकोवस्की का स्वीडन में कैंसर से देहांत हो गया। दस जनवरी १९८७ से दिल्ली में भारत का ग्यारहवाँ अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित हुआ था। इस फिल्म समारोह में तारकोवस्की की अंतिम फिल्म (सैक्रीफाइस) सर्वाधिक चर्चित रही थी।

तारकोवस्की विश्व का कम-से-कम एक ऐसा श्रेष्ठतम फिल्मकार तो है जिसके बारे में भारत का सचेत फिल्मप्रेमी यह कह सकता है कि उसने इस फिल्मकार की सभी फिल्में देखी हैं। इस अच्छाई के साथ यह बुराई भी जुड़ी है कि इस महान संघर्षशील फिल्मकार को अपने जीवन में केवल सात फिल्में निर्देशित करने का अवसर मिला। आज हम अनेक रूसी गणराज्य को देखकर आशंकित हो उठते हैं कि पूर्व के इस महान देश का भविष्य क्या होगा। परंतु तारकोवस्की के जीवन और संघर्ष के अध्ययन द्वारा हम जान पाते हैं कि सन् १९८० तक रूस में दमन का जो दौर चल रहा था उनमें न जाने कितनी प्रतिभाएँ कुंठित होकर रह गई होंगी। तारकोवस्की और उनकी फिल्मों का रूस से बाहर आ पाना अपने आप में एक चमत्कार ही है।

आंद्रेई तारकोवस्की के पिता आर्सेनी तारकोवस्की और माँ माया इवानोवना दोनों ही मास्को साहित्य संस्थान के विद्यार्थी थे। वहीं उनका प्रेम पल्लवित हुआ और वे विवाह बंधन में बँधे। ४ अप्रैल १९३२ को वोल्गा नदी के किनारे सावराशम गाँव में आंद्रेई का जन्म हुआ। आज वह गाँव एक बाँध का भाग बनकर जलमय हो चुका है। शायद इसीलिए तारकोवस्की की फिल्मों में सभ्यता के अवशेष पानी के नीचे डूब गए दिखते हैं। सन् १९३५ में ही आंद्रेई के माता-पिता में तनाव हो गया था। आंद्रेई का बचपन माँ-नानी और बहन के सान्निध्य में बीता। सन् १९३९ में पिता सेना में भर्ती हो गए। सन् १९४३ में माँ मास्को के छापाखाने में प्रूफ-पठन और संशोधन-संपादन का काम देखने लगी। बालक आंद्रेई के ये वर्ष अपने अस्तित्व की रक्षा तथा पिता की प्रतीक्षा में बीते। महायुद्ध में वीरता तथा शौर्य के प्रदर्शन के कारण आर्सेनी को कई सम्मान मिले। उनके द्वारा रचित कविताएँ भी प्रशंसित हुईं। परंतु आर्सेनी घर नहीं लौटे। आर्सेनी की कई कविताएँ आंद्रेई की फिल्मों में सम्मिलित हैं।

माँ की प्रेरणा से सन् १९४६ में आंद्रेई ने संगीत का अध्ययन आरंभ किया। दो वर्ष बाद उन्होंने कला विद्यालय में प्रवेश लेकर चित्रकला का अध्ययन किया। सन् १९५१ में आंद्रेई ने पूर्वी भाषाओं के विशिष्ट विद्यालय में प्रवेश लिया। रूस में जापानी भाषा तथा संस्कृति के प्रति सदा प्रशंसा और संदेह का भाव रहा है। रूस, चीन तथा जापान युगों से एक-दूसरे से आशंकित रहे हैं। आंद्रेई के इस विविध अध्ययन ने उन्हें गहरी समझ प्रदान की तथा बाद में अनेक विवादों का केंद्रबिंदु भी बनाया।

सन् १९५४ में आंद्रेई मास्को फिल्म स्कूल में दाखिल हुए। मास्को फिल्म स्कूल का पाठ्यक्रम सात वर्ष का है। भारत में बलराज साहनी के पुत्र परीक्षित साहनी इस विद्यालय के छात्र रह चुके हैं। सन् १९६१ में आंद्रेई ने अपनी स्कूल के अध्ययन की अंतिम फिल्म 'द स्टीमरोलर एंड द वायलिन' बनाकर अपना पाठ्यक्रम पूरा किया। क्या इस नाम में ही तत्कालीन रूसी सत्ता के अंतर्विरोध- की प्रतिध्वनि नहीं सुनाई देती?

फिल्म स्कूल से प्रशिक्षण प्राप्त इस विद्यार्थी को पहली फिल्म बनाने को मिली 'इवान का बचपन'। इस फिल्म को बनाने का काम इससे पूर्व किसी और निर्माता-निर्देशक को दिया गया था। लेकिन यह देखकर कि फिल्म ठीक नहीं बन रही है इसका निर्माण स्थगित कर दिया गया। अब इस फिल्म को 'पूरा करने' का भार आंद्रेई के कंधों पर डाल दिया गया।

इस फिल्म में तोपों के गरजने, बमबारी और गोलीबारी के दृश्य तो हैं ही, मानवीय धैर्य और साहस का परिचय देने वाले अनेक दृश्य हैं। कई दीर्घ प्रसंगों में सैनिकों को प्रतीक्षारत दर्शाया गया है। युद्ध के कारण बाँध और पुल टूट गए हैं। सैनिक एक ऐसे वन में नावों पर बैठे हैं जहाँ वृक्ष सात-आठ फुट तक पानी में डूब गए हैं। इस दृश्य में वृक्ष और मनुष्य एकरूप हो गए हैं। तोप का गोला वृक्षों को झुलसाता हुआ आता है और खतरे का संकेत देता हुआ पानी में समा जाता है। अपने मानवीय स्पर्श से तारकोवस्की ने इस प्रचार फिल्म को युद्ध विरोधी फिल्म में बदल दिया। इस प्रथम फिल्म द्वारा ही उन्हें अंतरराष्ट्रीय ख्याति मिली। 'इवान का बचपन' को वेनिस फिल्म समारोह में 'स्वर्ण सिंह' का सर्वोच्च सम्मान दिया गया।

सन् १९६६ में तारकोवस्की ने 'आंद्रे रुबलोव' पूरी की। 'आंद्रे रुबलोव' महाकाव्यात्मक विस्तार लिए है। सामंती युग, सैनिकों के अत्याचार, चर्च की आंतरिक कलह, स्त्रियों का शोषण और कलाकार रुबलोव की व्यथा के सशक्त चित्रण ने इस फिल्म को महान कृति बना दिया है। यह फिल्म १९६६ में पूरी हो गई थी। लेकिन इसका प्रथम प्रदर्शन १९६९ के कान फिल्म समारोह में ही संभव हो पाया। कान फिल्म समारोह में यह फिल्म अत्यधिक सराही गई और फिल्म प्रेमी तारकोवस्की की नई फिल्म की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगे।

परंतु ज्यों-ज्यों तारकोवस्की विश्व में ख्यात होते चले गए अपने देश सोवियत रूस में उनका निरादर होता चला गया। उन पर कई प्रकार के

'इवान का बचपन' एक ऐसे बालक की कथा है, जो युद्ध के मोर्चे पर जाकर शत्रु सेना की गतिविधियों की सूचनाएँ एकत्र करता है और अपने देश के कमांडर को देता है। इवान के पहले दृश्य में इवान दो रात और दो दिन दलदल और भारी वर्षा में लंबा रास्ता पार कर अपने खेमे तक पहुँचता है। वहाँ एक नया सिपाही है जो इस बालक के महत्व को नहीं समझ पाता। फोन पर जब वह कमांडर से संपर्क कर पाता है तभी इस नन्हें जासूस की ताकत समझ पाता है। तब कमांडर स्वयं आकर इस बालक से सूचनाएँ लेता है। यह बालक प्रतिभावान और साहसी है। वह बहुत उपयोगी है क्या इसीलिए इस युद्ध की आग में धकेल दिया जाए यह चिंता कमांडर को सालती है। यह बच्चा भी जिद्दी हो गया है और युद्ध के इस खेल में इसे मजा आने लगा है। इसलिए वह भी मोर्चे से कहीं और जाना नहीं चाहता। इस भावनात्मक अंतर्द्वंद्व को तारकोवस्की के स्पर्श ने बहुत खूबी से उभारा है। कमांडर इस बालक को सैनिक स्कूल में पढ़ाई के लिए भेज देता है। लेकिन वहाँ से वह अपनी चतुराई से जल्दी ही निकल आता है।

प्रतिबंध लगाए गए। उनकी पटकथाओं को नौकरशाही ने दो-दो वर्ष तक अटकाए रखा। रूस में तब फिल्म केवल सरकारी अनुमति तथा धन से ही बनाई जा सकती थीं। उनकी फिल्मों को अनुमति में देरी की गई और तैयार हो जाने के बाद प्रदर्शन में विलंब किया गया। 'आंद्रे रुबलोव' पूरी हो जाने के छह वर्ष बाद तारकोवस्की की अगली फिल्म 'सोलारिस' १९७२ में आ पाई। हम जानते हैं कि प्रत्येक देश में फिल्मकार को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। परंतु रचनात्मक स्वतंत्रता की स्थिति बनाए रखना ही कलाकार के लिए अत्यंत सहायक हो जाता है। भारत में कई प्रकार की आर्थिक असुविधाओं के होते हुए भी सत्यजीत राय तीस फिल्में बना सके। इटली में माइकेल एंजेलो अंतोनियोनी, स्वीडन जैसे छोटे से देश के फिल्मकार इंगमार बर्गमन तथा जापान के अकीरा कुरोसावा सभी तीस से अधिक फिल्में बना चुके हैं। यदि तारकोवस्की की केवल सात फिल्में ही हैं तो उसके लिए तत्कालीन रूसी सत्ता दोषी है।

'सोलारिस' विज्ञान कथा लेखक स्तानिस्लाव लेक के उपन्यास पर आधारित है। 'सोलारिस' नामक ग्रह गाढ़े द्रव से बना है। इस द्रव में मनुष्य के मस्तिष्क को पढ़ने तथा प्रभावित करने की शक्ति है। इस ग्रह के बारे में जानकारी एकत्रित करने हेतु चौरासी वैज्ञानिकों का एक दल भेजा गया था, जिनमें से केवल तीन बचे हैं। फिल्म के आरंभ में हमारा परिचय केल्विन से होता है। वह जानें से पूर्व अपने माता-पिता से मिलने आया है। सोलारिस पर गया विमान दुर्घटना का प्रतीक बन चुका है इसलिए केल्विन के माता-पिता विशेष चिंतित हैं। केल्विन को आदेश मिला है कि वह सोलारिस पर जाकर परमाणु विकिरण द्वारा उस द्रव की शक्ति नष्ट कर दे। केल्विन का मित्र एक वैज्ञानिक उसे यह सब न करने की सलाह



देता है। केल्विन के पिता का यह घर एक झील के किनारे है। केल्विन सुबह इस झील और जंगल में घूमता है। यहीं हम केल्विन की दृढ़ इच्छाशक्ति से परिचित होते हैं। विदाई देते समय माँ रोने लगती है। केल्विन अपने कई पुराने कागज, जिनमें कई प्रकार की स्मृतियाँ संग्रहीत हैं, जला देता है। यह संकेत भी मिलता है कि दस वर्ष पूर्व केल्विन की पत्नी की मृत्यु हो चुकी है।

केल्विन जब सोलारिस पर मंडरा रहे अपने अंतरिक्ष-स्टेशन पर पहुँचता है तब वहाँ फैली अव्यवस्था देखकर चकित रह जाता है। लेकिन जल्दी ही वह इस दुरावस्था के कारणों से परिचित हो जाता है। सोलारिस पर जो तीन वैज्ञानिक बचे थे उनमें से एक ने आत्महत्या कर ली है। बाकी दो भी अपना मानसिक संतुलन खो देने के कगार पर हैं। उन्हें प्रतिदिन अपने मृत सगे-संबंधी दिखाई देते हैं। इस मतिभ्रम से बचने के लिए उन्होंने अपने चारों ओर संदेह और शंका की दीवारें खड़ी कर ली हैं।

केल्विन जान पाता है कि इस द्रव में न केवल मानव मस्तिष्क में पैठने की शक्ति है बल्कि अतीत, स्वप्न या इच्छा को आकार दे देने की क्षमता भी है। केल्विन किसी प्रकार दोनों वैज्ञानिक साथियों को मनाता है। वे उसे मिलकर बताते हैं वह यहाँ किसी भी प्रकार की दखलंदाजी न करे। वह उस वीडियो टेप को भी देख पाता है जहाँ उसके मृत वैज्ञानिक मित्र ने अपना संदेश छोड़ा है। इसी प्रकार इस अंतरिक्ष-स्टेशन को पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के अनुकूल रिचार्ज करने का दृश्य भी अद्भुत बन पड़ा है।

शीघ्र ही केल्विन का साक्षात्कार इस ग्रह के अद्भुत सत्य से होता है। उसकी मृत पत्नी जीवित होकर उसके समक्ष आ जाती है। केल्विन की स्थिति उस व्यक्ति जैसी है, जो फैंटेसी को रच कर उसी में रम जाता है। न उसे छोड़ पाता है न उसके साथ रह पाता है। केल्विन जानता है कि यह स्त्री रक्त-माँस की न होकर कृत्रिम परमाणुओं से बनी है। वह उसे नष्ट करने का प्रयत्न करता है। कई असफल प्रयत्नों तथा स्वयं भी घायल हो जाने के बाद वह जान पाता है कि इस स्त्री को न आग जला सकती है और न उसे कैद किया जा सकता है।

वह स्त्री केल्विन से प्रार्थना करती है कि उसे कभी भी कोई हानि नहीं पहुँचाएगी। उसके बिना वह एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकती इसलिए वह उसे अकेला नहीं छोड़ती। यह प्रेमालाप या व्यंजना नहीं है वरन कठोर सत्य है कि यह स्त्री वास्तव में केल्विन की स्मृति तथा इच्छा का प्रतिबिंब मात्र है। किसी विडंबना में घिरकर मानव की कल्पना साकार हो जाए, ऐसा ही कुछ सोलारिस पर घट रहा है। अंततः केल्विन इस स्त्री की प्रार्थना स्वीकार कर लेता है। वह मान जाता है कि वह उससे छुटकारा पाने का प्रयत्न नहीं करेगा। केल्विन के दोनों साथी वैज्ञानिक उसे इस तिलिस्म में न फँसने की सलाह देते हैं और बताते हैं कि किस प्रकार उसे प्रयोगों द्वारा कल्पना तथा सत्य के भेद का जानने के प्रयत्न में लगे रहना चाहिए।

केल्विन की यह धारणा पश्चिमी वैज्ञानिक दृष्टि का विरोध करती है। पश्चिमी वैज्ञानिक सोच के अनुसार जिस वस्तु या व्यक्ति का प्रयोग किया जा रहा हो उसके प्रति निर्मम हो जाना आवश्यक है, ममत्व बनाए रख कर सही परीक्षण संभव नहीं है। परंतु तारकोवस्की इस आस्था पर बल देते हैं कि जो जानने योग्य है उसे जानने के लिए, उसमें डूबना, स्वयं को खो देना अनिवार्य शर्त है।

अतः केल्विन पूर्ण समर्पण कर देता है। वह अपना स्व उस व्यवस्था को सौंप देता है। अचानक हम पाते हैं कि वह लौट आया है, अपनी दुनिया में। उसी झील के किनारे बने घर में। क्या केल्विन मुक्त हो चुका है? वह द्रव जो मानवीय अतीत, स्मृति तथा कल्पना को मनचाहा आकार दे सकता है केल्विन के मस्तिष्क से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर नई सृष्टि रच देता है।

'सोलारिस के बाद तारकोवस्की की अगली फिल्म 'दर्पण' आने में तीन वर्ष लग गए। 'दर्पण' आत्मकथात्मक फिल्म है। फिल्म में अपनी कहानी सुनाने वाला व्यक्ति कभी दिखाई नहीं देता। जब वह अपनी पत्नी से बहस में उलझा होता है तब भी हम उसकी पत्नी की ही प्रतिक्रियाएँ देख पाते हैं। इन अर्थों में 'दर्पण' पूर्णतया स्त्री प्रधान फिल्म है। 'दर्पण' में

माँ और पत्नी की भूमिका में एक ही अभिनेत्री मारिया तेरेखोवा ने सन् १९३० से १९७० तक के चालीस वर्ष के अंतराल को जिया है। 'स्टाकर' में तीन पात्र और तीन जोन भिन्न मनःस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 'दर्पण' में श्वेत-श्याम तथा रंग के सार्थक प्रयोग द्वारा अतीत, वर्तमान स्मृति और कल्पना घुलमिल गए हैं। फिल्म के एक प्रसंग में माँ नहा रही है वह अपने बाल पानी में भिगोती है। स्लो-मोशन में हम उसे बाल झटकते हुए देखते हैं और बहुत धीरे-धीरे छत ढहने लगती है। स्लो मोशन तथा रंगों का घनापन इस दृश्य को अनोखा आयाम दे देते हैं। माँ का आह्लाद और उन्मुक्तता, स्त्री की स्वतंत्रता, घर का टूटना और असुरक्षा सब साथ-साथ घटता है।

'दर्पण' एक अर्थ में अभिनेत्री मारिया तेरेखोवा की फिल्म है। अधिकांश समय हम उसे ही पर्दे पर देखते हैं। आंद्रेई की माँ के रूप में वह धैर्य और सहनशीलता की प्रतिरूप है। अपने तथा बच्चों के अस्तित्व की लड़ाई में जूझते समय कठिनतम परिस्थितियों में भी वह शांत बनी रहती है। वहीं एक बिलकुल भिन्न भूमिका में, आंद्रेई की पत्नी के रूप में, वही अभिनेत्री संबंधों के छद्म के रेशे उधेड़ने में तथा प्रत्येक शब्द को कई अर्थों की व्यंजनाएँ भाँप लेने में सक्षम है।

'दर्पण' में स्तालिनयुगीन रूस के दमन, पग-पग पर बाँधने वाले नियमों के दबावों और तनाव में जी रहे समाज की घुटन का सशक्त चित्रण हुआ है। 'दर्पण' के एक दृश्य में माँ वर्षा में मीलों पैदल भागती हुई सिर्फ इसलिए चली जाती है क्योंकि उसे लगता है कि उसके लेख में एक शब्द गलत चला गया है। कार्यालय में पहुँचकर वह जान पाती है कि सामग्री प्रेस में जा चुकी है। वहाँ वह अपनी सहेली को बताती है कि वह शब्द के बजाए दूसरे शब्द का प्रयोग करना चाहती थी। अन्य महिला उसके इस प्रकार के एक लेख को अंतिम स्तर तक सुधारने की आदत से चिढ़ जाती है। और बहुत सी कड़वी बातें कह देती है। एक ऐसे समाज में जहाँ प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को अन्याय का शिकार मान रहा हो इस प्रकार की कर्तव्यनिष्ठा और ऊर्जा को अस्वाभाविक और अनैतिक भी माना जा सकता है। अपनी भिन्न सोच के कारण आंद्रेई तारकोवस्की को भी इस प्रकार के कोप का भाजन बनना पड़ा।

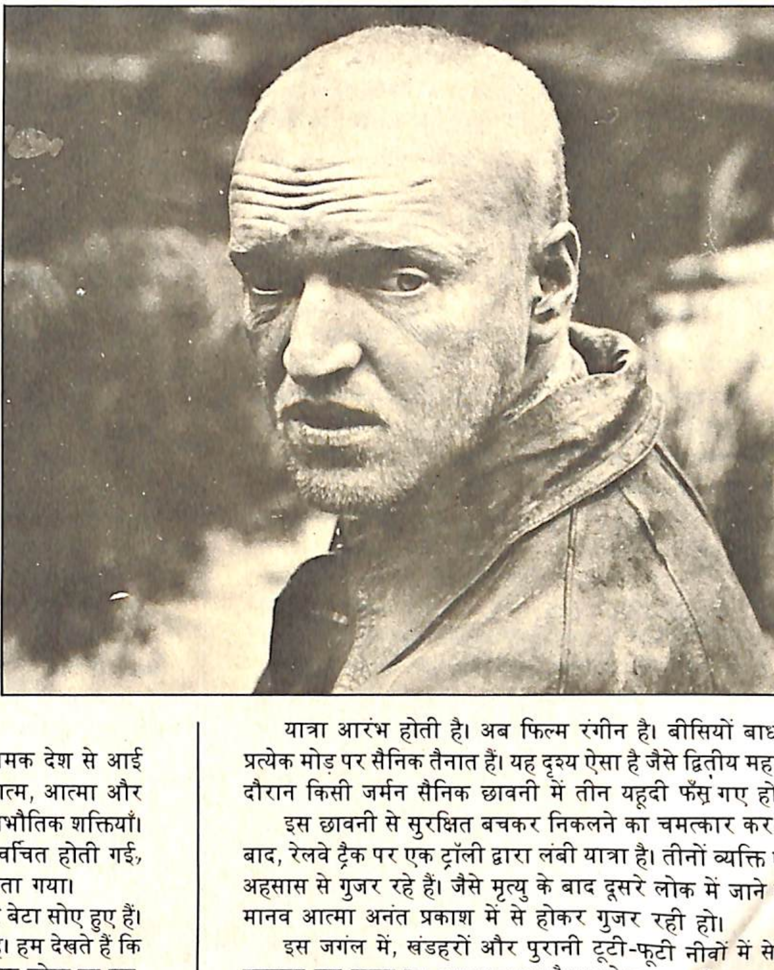
सन् १९८० के कान फिल्म समारोह में रूस नामक देश से आई फिल्म 'स्टाकर' देखकर लोग चकित रह गए। अध्यात्म, आत्मा और पवित्र स्थल पर आस्था का दर्शन। गुप्त कक्ष तथा अधिभौतिक शक्तियाँ। कहना न होगा कि ज्यों-ज्यों फिल्म लोकप्रिय और चर्चित होती गई, तारकोवस्की का रूस में रहना उतना ही कठिन होता गया।

फिल्म आरंभ होती है। स्टाकर, उसकी पत्नी और बेटा सोए हुए हैं। एक ही तख्त पर, एक ही रजाई ओढ़े। स्टाकर उठता है। हम देखते हैं कि यह परिवार बहुत गरीबी का जीवन जी रहा है। उनका छोटा-सा घर, लकड़ी के खंभों पर टिका है। क्योंकि नीचे रेतीली, दलदली जमीन है। दूर, शहर में आधुनिक कारखानों की चिमनियाँ दिखाई देती हैं। यह है द्वितीय महायुद्ध के बाद का समृद्ध रूस।

स्टाकर चुपचाप उठता है और तैयार होकर पत्नी तथा पुत्र के जागने से पहले ही निकल जाना चाहता है। पत्नी जाग जाती है और देखती है कि स्टाकर फिर यात्रा पर जाने की तैयारी कर रहा है। पत्नी उसे हर प्रकार से मनाने का प्रयत्न करती है। उससे निवेदन करने से लेकर लड़ने-झगड़ने और गालियाँ देने तक सब कुछ करती है ताकि स्टाकर इस खतरनाक यात्रा पर न जाए। पत्नी के तानों को अनसुना करता हुआ स्टाकर अपना झोला उठाता है और निकल पड़ता है। उसके 'यात्री' एक अंधेरे से शराब' घर में उससे मिलते हैं। दोनों यात्री उसे अपना परिचय देते हैं। इनमें से एक लेखक है और दूसरा वैज्ञानिक। स्टाकर जल्दी से निकल पड़ना चाहता है। वह इस यात्रा के लिए उत्सुक है। इस गाइड के धंधे में वह दो बार पकड़ा जाकर जेल की सजा भी भुगत चुका है। जाहिर है कि इस समाज में स्टाकर जैसे दुस्साहसी तीर्थयात्रियों के लिए कोई स्थान नहीं है।

यहाँ तक फिल्म उसी ढंग से फिल्माई गई है जैसी पुरानी अमेरिकी गैंगस्टर फिल्में हुआ करती थीं। अंधेरी और संदिग्ध। श्वेत श्याम/ शराबघर में एक ट्यूबलाइट झपकी लेती-सी जल-बुझ रही है और कोई प्रकाश का स्रोत नहीं है। तीन लुटेरे जैसे कोई सरकारी खजाना लूटने जा रहे हों, उनमें से एक को रास्तों के रहस्य का ज्ञान है। दूसरा नशे में धुत्त है। उसको प्रेमिका उसे छोड़ने आई है। और तीसरे के झोले में चाय रखने के थर्मस में एक बम है।

तारकोवस्की की रहस्यमय फिल्म 'स्टाकर'



यात्रा आरंभ होती है। अब फिल्म रंगीन है। बीसियों बाधाएँ हैं। प्रत्येक मोड़ पर सैनिक तैनात हैं। यह दृश्य ऐसा है जैसे द्वितीय महायुद्ध के दौरान किसी जर्मन सैनिक छावनी में तीन यहूदी फँस गए हों।

इस छावनी से सुरक्षित बचकर निकलने का चमत्कार कर लेने के बाद, रेलवे ट्रैक पर एक ट्रॉली द्वारा लंबी यात्रा है। तीनों व्यक्ति एक नए अहसास से गुजर रहे हैं। जैसे मृत्यु के बाद दूसरे लोक में जाने के बीच मानव आत्मा अनंत प्रकाश में से होकर गुजर रही हो।

इस जगल में, खंडहरों और पुरानी टूटी-फूटी नीवों में से होकर गुजरना इस यात्रा का दूसरा चरण है। पहले चरण की यात्रा में यदि सैनिकों द्वारा पकड़े जाने या मार दिए जाने का भय था तो यहाँ अब खुलापन है। परंतु स्टाकर यहाँ अतिरिक्त सावधान है। उसका मानना है वहाँ पकड़ने वाले दिखाई देते थे उनसे बच निकलना अपेक्षाकृत आसान था। अब यह यात्रा कठिन है क्योंकि यहाँ बाधाएँ अदृश्य हैं। कथा के अनुसार कभी इस क्षेत्र में एक उल्का पिंड टकराया था, तब से यह निषिद्ध क्षेत्र है। यह एक चुंबकीय क्षेत्र बन गया है, जिसे फिल्म मे 'जोन' कहा गया है। पुरानी जंग लगी तोपों, सैनिक गाड़ियों और मनुष्यों के अवशेष यहाँ बिखरे दिखाई देते हैं। जैसे एक सेना यहाँ आई हो और गुरुत्व चुंबकीय प्रभाव से जड़ीभूत हो गई हो।

'स्टाकर' फिल्म दो स्तरों पर चलती है पहले स्तर पर जो आपको दिखाई देता है और दूसरे स्तर पर वह जो खोजना पड़ता है। फिल्म का प्रत्येक बिंब, दृश्य रूप, भूमि के एक निर्जन टुकड़े पर तीन व्यक्तियों की

यात्रा का वर्णन है। दूसरे स्तर पर वह मानव मनोजगत के भीतर विचरण कर रही तीन प्रकार की वृत्तियों की कथा है। इन तीन व्यक्तियों में पहला है स्टाकर, एक आस्थावान जिज्ञासु, ब्रह्म की खोज की यात्रा ही उसकी मंजिल है। उसका पूरा सुख यात्रा में ही है। दूसरा सुख है कुछ और लोगों को भी इस खतरनाक यात्रा में साथ ले आना। दूसरा व्यक्ति है-लेखक। वह अपने धर्म-संदेह, निराशा तथा विस्मय का पालन करता है। विश्वास और अविश्वास के बीच झूलते हुए वह हताश हो चुका है, वह नशे में धुत्त है। हर बार जब कोई खतरा उपस्थित होता है, तो वह सबसे पहले तैयार हो जाता है।तीसरा है वैज्ञानिक,आस्थाहीन और अविश्वासी। वह उस स्थान को ही नष्ट कर देना चाहता है ,जिसके बारे में किंवदंती है कि वहाँ जाकर माँगने से इच्छा पूर्ण हो जाती है।

इसलिए यात्रा के दौरान कई बार स्टाकर अपने सहयात्रियों को डाँट देता है, जब वे शॉर्ट-कट अपनाते हैं 'तुम अपनी असावधानी से इस क्षेत्र की पवित्रता नष्ट कर दोगे।' वह बार बार भुनभुनाता है कि , यात्रा पर दुबारा नहीं आएगा। एक बार तो वैज्ञानिक पूछ ही लेता है, 'क्या इस स्थल तक लोगों को लाने के पीछे तुम्हारा कोई स्वार्थ नहीं है।' जाहिर है कि स्टाकर का स्वार्थ इतना ही है कि वह इस यात्रा पर बार-बार आना चाहता है। क्योंकि रास्ते तय नहीं हैं। हर बार नियम और ट्रैप्स बदल जाते हैं। वह नियमों से परिचित है और ट्रैप्स पहचान सकता है। इसलिए यात्रा हर बार नई खोज का सुख देती है।

यात्रा के तीसरे चरण में ये यात्री एक भव्य, पुरातन भवन के समीप पहुँचते हैं। भवन से चेतावनी का स्वर सुनाई देता है - 'लौट जाओ। तुम्हें सलाह दी जाती है इस इमारत में प्रवेश न करना।' यात्रियों को यह स्वर चौंका देता है। इसे अपना भ्रम मानकर वे सावधानीपूर्वक भवन में प्रवेश करते हैं। यहाँ गुरुत्वाकर्षण अत्यंत अल्प है। कई कुएँ हैं जिनकी गहराई अनंत है सुरंगें हैं जिनकी लंबाई की थाह नहीं। यात्रा पूरी होने पर वे उस स्थल पर पहुँचते हैं, जहाँ स्टाकर यात्रा समाप्त होने की घोषणा करता है। वैज्ञानिक इस स्थान को बम लगाकर उड़ा देना चाहता है। स्टाकर उसे रोकता है। दोनों भिड़ पड़ते हैं।

अंतिम दृश्य में स्टाकर अपने घर में क्षुब्ध और उदास।

सन् १९८० में 'स्टाकर' के कान फिल्म समारोह में प्रदर्शन के उपरांत तारकोवस्की की ख्याति जंगल की आग की तरह फैल गई। जहाँ कहीं भी उनकी फिल्में प्रदर्शित हुई लोगों ने महसूस किया कि ऐसा सिनेमा पहले देखा ही नहीं गया। उन पर दो चार लेख नहीं, पुस्तकें लिखी जाने लगीं। 'सोलारिस' का मानवीय फैंटेसी का 'दर्पण' जब मनुष्य की प्रत्येक इच्छा साकार रूप धारण कर लेती है और मानव को लगता है कि इससे भयंकर कारागृह दूसरा नहीं है। 'स्टाकर' में अवचेतन परत-दर-परत खुलता चला जाता है। तारकोवस्की की पाँच फिल्मों ने उन्हें देश निकाला दिलवा दिया। अपनी छठी फिल्म 'नास्टाल्जिया' बनाने के लिए उन्हें इटली जाना पड़ा। 'नास्टाल्जिया' एक ऐसे वैज्ञानिक की कथा है जो शोध हेतु इटली आता है और रूस वापस नहीं लौट पाता। इटली में ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

सन् १९८६ में अपनी सातवीं फिल्म 'बलिदान' तारकोवस्की ने स्वीडन में बनाई। तारकोवस्की की फिल्मों में एक आत्मकथात्मक लय, निरंतरता और पुनरावृत्ति को महसूस किया जा सकता है। सभी फिल्मों में असंतुष्ट पत्नी और टूटता बिखरता घर है। 'दर्पण' में बच्चे और माँ घर को जलता हुआ देखते हैं। 'स्टाकर' में काठ की खप्पचियों से बना घर है। कलह से भरा-पूरा। लेकिन 'स्टाकर' जिस घर में बार-बार जाना चाहता है वह इस धरती के एक शांत कोने में है, जहाँ सुख-दुख मिट जाते हैं। 'बलिदान' में मानों वही शांत कोना सभी सुविधाओं से युक्त, रहने को मिल जाता है। वहाँ तनावों में उलझा संयुक्त परिवार है। संबंधों की जटिलताओं ने सबको तोड़ दिया है। स्वीडन में बनी इस फिल्म पर इंगमार बर्गमन का स्पष्ट प्रभाव है। परंतु इसके सरोकार तारकोवस्की हैं। प्रत्येक सूखे पेड़ को हरा कर देने की इच्छा, अपना घर फूँक देने की शर्त पर दुनिया के अस्तित्व को नष्ट होने से बचा लेने की कामना, यही सरोकार तारकोवस्की को महान बनाते हैं।

सिनेमा के सौ वर्ष के इतिहास में, सन् १९८० से १९९० के दस वर्षों पर तारकोवस्की का नाम लिखा है। ■

शैक्षिक फिल्मों का अनूठा भंडार

● डॉ. वसंत पेंढारकर

विदेशी फिल्मों में मनोरंजन प्रधान, सामान्य फिल्मों के साथ-साथ ही शिक्षाप्रद फिल्मों का निर्माण भी होता रहा है। विशुद्ध रूप से शिक्षाप्रद या शैक्षिक फिल्मों के कैटलाग अलग से आते हैं। शैक्षिक फिल्में भारत में बाकायदा वैधानिक रूप से उपलब्ध हैं। मुम्बई के संस्थान नेशनल एज्युकेशन एंड इनफरमेशन फिल्म्स द्वारा ऐसी शैक्षिक फिल्मों की सूची प्रकाशित की जाती है। ऐसी फिल्में भारत में हजारों की संख्या में आज उपलब्ध हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्कूल, कॉलेज और शिक्षा संस्थान न तो इन फिल्मों के बारे में विशेष जानकारी रखते हैं- और न इन फिल्मों को खरीदने की आर्थिक क्षमता रखते हैं।

सभी शिक्षा संस्थान इन फिल्मों को खरीदने की और अपने छात्र-छात्राओं को इन फिल्मों के प्रदर्शन से लाभान्वित करने की हैसियत न भी रखते हों, किन्तु कई संस्थान सम्मिलित रूप से तो ऐसी पहल कर सकते हैं। सहकारिता के आधार पर! कुछ जागरूक शिक्षा संस्थान तो आर्थिक रूप से इन फिल्मों को खरीद भी सकते हैं। इन फिल्मों का उपयोग शिक्षा, जानकारी एवं प्रशिक्षण प्रदान करने में कर सकते हैं। भारत के भावी नागरिकों का निर्माण, विशेष रूप से बच्चों को भविष्य के लिए तैयार करने में, गुणात्मक-शिक्षा को प्रदान करने में इस 'दृश्य- श्रव्य' साधन का उपयोग आवश्यक ही नहीं, लगभग अनिवार्य सा हो गया है। **'ज्ञान के विस्फोट'** के साथ **'दृश्य-क्रांति'** भी तो शिक्षा के क्षेत्र में प्रखर हो रही है। 'दृश्य- श्रव्य' माध्यमों से, इन शैक्षिक फिल्मों से बच्चों में **सीखने की प्रक्रिया** इतनी सार्थक एवं गतिशील होगी- जितनी किसी और विधा से नहीं। 'शुष्क' पाठ्य पुस्तकों का ज्ञान, जब जीवित अनुभवों से, प्रदर्शित प्रयोगों से, और सहज आकलन की प्रक्रिया से पर्दे पर प्रकट होगा, तब शिक्षा ग्रहण करना एक आनंद कार्य बनेगा।

शैक्षिक फिल्मों के निर्माण में (जिनकी फिल्में भारत में वैधानिक रूप से उपलब्ध हैं) प्रमुख रूप से योगदान देने वाली कंपनियाँ/ स्टुडियो हैं- बी.बी.सी./ वाल्ट डिजने/ कोरोनेट/ एम.टी.आई./ ए.आई.एम.एस. मीडिया/ बी.एफ.ए./ फीनिक्स/ इनटेलीकाम/ लंदन टेलीविजन/ यॉर्क

के.जी. तथा नर्सरी

शैक्षिक फिल्मों में एक विशेष श्रेणी नन्हें बच्चों के लिए, विशेष रूप से स्कूलों में के.जी. एवं नर्सरी की कक्षाओं के बच्चों के लिए है। इनके लिए बनी फिल्में बच्चों को ज्ञान, शिक्षा एवं मनोरंजन प्रदान करती हैं। चार मिनट से लेकर चौबीस मिनट तक कि ये फिल्में 'वीएचएस' फार्मेट में कैसेट के रूप में एवं कुछ परंपरागत सैलुलाइड फिल्म के रूप में उपलब्ध हैं। छोटे बच्चों को फिल्मों की यह शैक्षिक विधा फिल्म माध्यम से परिचित कराती है। साथ में शिक्षा को सुगम बनाती है।

के.जी. एवं नर्सरी के बच्चों के लिए **इसप की नीतिकथाएँ** उपलब्ध हैं। वाल्ट डिज़ने द्वारा निर्मित इन नीति कथाओं में प्रमुख हैं- 'द कंट्री कज़िन/ द ग्रॉसहापर एण्ड द अंट/ द टॉरटाईज एण्ड द हेअर/ द अंट एण्ड द डोव/ द कंट्री माऊस एण्ड द सिटी माऊस/ द

शायर/ ग्रेनेडा/ पिरामिड/ फिल्म ऑस्ट्रेलिया आदि। कई शैक्षिक फिल्में अब 'वीएचएस' फार्मेट में उपलब्ध हैं। वैसे आठ/ सोलह/ पैंतीस एम.एम.की परंपरागत सैलुलाइड फिल्में भी उपलब्ध हैं। प्रोजेक्टर्स/ स्क्रीन, अँधेरे हॉल आदि साधन-सुविधाओं को जुटाने की कठिनाइयों के कारण परम्परागत फिल्म प्रदर्शनों का स्थान अधिकतर शिक्षा संस्थानों में अब 'वीडियो' ले रहा है। केबल टेलीविजन/ वीडियो कैसेट प्लेयर एवं 'वीएचएस' कैसेट्स से शैक्षिक फिल्मों का प्रदर्शन अधिक सुविधाजनक है। छोटे-बड़े लगभग सभी शैक्षिक संस्थान 'दृश्य श्रव्य' साधन के रूप में इनका उपयोग कर सकते हैं।

उपलब्ध फिल्मों में प्रमुख रूप से विज्ञान (सामान्य विज्ञान/ भौतिकी/ रसायन शास्त्र/ जीवशास्त्र-प्रकृतिशास्त्र/ पारिस्थितिकी/ पर्यावरण प्रदूषण/ गणित/ अवकाश-विज्ञान/ भूगर्भशास्त्र, धरती - विज्ञान, आदि), सामाजिक विज्ञान (भूगोल/ समाजशास्त्र/ मनोविज्ञान/ इतिहास/ पुरातत्व शास्त्र/ मानव शास्त्र/ संचार/ यौन एवं जनसंख्या विज्ञान/ शिक्षा/ स्वास्थ्य), ललित कलाएँ, भाषा एवं साहित्य, आदि के साथ इलेक्ट्रॉनिकी कम्प्यूटर-विज्ञान, डाटा-प्रोसेसिंग, आदि विविध विषयों पर आज वीडियो कैसेट्स एवं फिल्में उपलब्ध हैं। मार्गदर्शन (गाइडन्स)/ व्यापार शिक्षा/ तंदुरुस्ती/ 'ट्रॉफिक' सुरक्षा एवं वयस्क शिक्षा (एडल्ट एजुकेशन), विषयों पर भी फिल्में उपलब्ध हैं।

शैक्षिक फिल्मों की कई सीरिज (श्रृंखलाएँ) उपलब्ध हैं- बी.बी.सी. की **'एक्स्प्लोअरिंग साइंस'** श्रृंखला में २० मिनट की कुल दस कैसेट्स हैं। महाविद्यालयीन स्तर पर भौतिकी में **"द मैकेनिकल युनिवर्स" एवं "बियांड द मैकेनिकल युनिवर्स"** श्रृंखला में क्रमशः छब्बीस कैसेट्स उपलब्ध हैं। हाईस्कूल के छात्रों के लिए इसी श्रृंखला का संक्षिप्त एवं सरल संस्करण सात कैसेट्स में हैं। कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑव टेक्नालॉजी एवं सदर्न कैलिफोर्निया कन्सोर्टियम द्वारा निर्मित ये श्रृंखलाएँ प्रतिष्ठित हैं। भौतिकी एवं रसायन शास्त्र के प्रयोगों को लेकर **"एक्सपरीमेंट : फिजिक्स"** एवं **"एक्सपरीमेंट : केमिस्ट्री"** श्रृंखला में (ग्रेनडा द्वारा निर्मित) क्रमशः दस कैसेट्स हैं। **"इंट्राडयुसिंग बॉयोलाजी"** श्रृंखला में तो ३० मिनट की एक ऐसी ३७ कैसेट्स हैं।

विश्व भर में विख्यात डेविड एटनबरो की **"लाइफ ऑव अर्थ"** (बी.बी.सी.) श्रृंखला में बारह/. **"द लिविंग प्लेनेट"** (बी.बी.सी.) में तेरह कैसेट्स हैं। डॉ. डेविड बेलामी की **'बोटॅनिक मॅन'** (थेम्स टीवी) में दस कैसेट्स हैं। डॉ. जेकब ब्रोनोवस्की की **"द असेन्ट ऑव मॅन"** (बीबीसी) में तेरह कैसेट्स हैं। पचास मिनट की हर एक कैसेट का मूल्य है सत्रह सौ पचास रुपए। द्वितीय विश्वयुद्ध पर छब्बीस कैसेट्स हैं। बावन मिनट की कैसेट का मूल्य है सात सौ पचास रुपए।

कम्प्यूटर्स एवं बिजनेस मैनेजमेंट जैसे भारत में खूब आकर्षण रखने वाले नए अध्ययन क्षेत्रों में भी कई फिल्में उपलब्ध हैं- **कम्प्यूटर वर्क्स** श्रृंखला में दस कैसेट्स हैं। "द न्यू लिटरसी" श्रृंखला में लगभग छब्बीस कैसेट्स उपलब्ध हैं। **"बिजनेस ऑव मैनेजमेंट"** श्रृंखला में (सदर्न कैलिफोर्निया कन्सोर्टियम द्वारा निर्मित) छब्बीस कैसेट्स हैं। पूरे सेट का मूल्य है बयालिस हजार पाँच सौ रुपए। मनोविज्ञान के क्षेत्र में प्रस्तावनात्मक **"सायकॉलाजी : द स्टडी आव ह्यूमन बिहेवीअर** श्रृंखला में भी छब्बीस कैसेट्स हैं। इनके अलावा परिवार कल्याण/ अभियांत्रिकी/ औद्योगिक प्रशिक्षण आदि विविध विषयों पर भी शैक्षिक फिल्में उपलब्ध हैं। ये फिल्में अधिकतर रंगीन हैं, फिल्म निर्माण तकनीकी कुशलता से किया गया है। और कई हिन्दी/अन्य भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध हैं।



शिक्षा के नाम पर भारत में 'क्रांति' की बातें तब तक खोखली ही रहेंगी, जब तक शिक्षा के क्षेत्र में भारत में 'दृश्य श्रव्य' साधन के रूप में फिल्मों को महत्व नहीं मिलेगा। भारत में फिल्मों की केवल 'मनोरंजन' प्रधानता (विदेशी फिल्मों की भी!) शिक्षा प्रधानता में भी परिणत होना जरूरी है। फिल्म विधा अधिक सार्थक होगी। रूपहले पर्दे का शैक्षिक संदर्भों में उपयोग तो अभी होना बाकी है। ■

कक्षाओं की फिल्में

नार्थ विण्ड एण्ड द सन। इन नीति कथाओं के द्वारा ऐसी शिक्षा दी जाती है कि प्रवास करना मजेदार होता है किंतु घर जैसी और कोई जगह नहीं। सुख शांति से शक्ति पर विजय प्राप्त की जा सकती है। **हैंस क्रिश्चियन एण्डरसन** की तमाम परिकथाएँ भी इन फिल्मों में उपलब्ध हैं। कुछ फिल्में तो कठपुतलियों के खेल का कमाल भी प्रस्तुत करने वाली हैं। **ग्रिम ब्रदर्स** की परिकथाएँ भी इन फिल्मों में ही सम्मिलित हैं। ब्रायर रोज:द स्लीपिंग ब्यूटी (शिकागो के अंतरराष्ट्रीय चिल्ड्रेन्स फिल्म फेस्टिवल में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित) चौदह मिनट की है।

दर्जनों परिकथाओं के अलावा राइम्स एवं पद्य (पोएट्री) में भी नन्हें-मुन्नों के लिए ऐसी गजब की फिल्में हैं कि बच्चे मुग्ध हो जाएँ। 'ए इज फॉर अल्फाबेट/ अल्फाबेट ऑव इनसेक्ट्स/ अल्फाबेट ऑव एनिमल्स / अल्फाबेट ऑव बर्ड्स/ अल्फाबेट्स ऑव लैण्ड्स एण्ड वाटर्स। **टेल मी व्हाई'** श्रृंखला में तो लगभग २२ मिनट की ऐसी दस कैसेट्स उपलब्ध हैं जो प्राकृतिक एवं मानव निर्मित इस विश्व का ज्ञान मनोरंजक तौर पर प्रस्तुत करती है।

भारत में वीडियो पार्लर्स पर भी कई कैसेट्स उपलब्ध हैं जो के.जी. एवं नर्सरी या शिशु वर्ग की कक्षाओं के बच्चों के लिए विविध विषय प्रस्तुत करती हैं जैसे १०१ थिंग्स फॉर किड्स टू डू। बेड टाइम स्टोरीज एण्ड सांग्स फॉर किडस्/ क्लॉसिक नर्सरी राइम्स्/ गोल्डन ट्रेजरी ऑव नर्सरी राइम्स/ लर्न टू रीड/ लर्न विद सुटी सिम्पल साइंस/ लर्निंग अबाउट नंबर्स/ लेट्स ड्रा- ड्राईंग फॉर किड्स/ प्ले अलांग गेम्स एण्ड सांग्स / प्री स्कूल फेवराइट्स/ सिंग अलांग सांग्स / स्टार्टिंग आउट इन मैथस् - रीडिंग एण्ड राइटिंग। सामान्य रुचि के विषयों को लेकर यौन-शिक्षा के प्रारंभिक चरण प्रस्तुत करने वाली फिल्में व्हेअर डिड आई कम फ्राम? एवं व्हाट्ज हैपनिंग टू मी जैसी फिल्में भी उपलब्ध हैं।




बैद्यनाथ
सुन्दरी
कल्प
SUNDARI
KALP


भूख जगाए स्वाद बढ़ाए,
नींबू के गुण भरा
Swad Sip
स्वाद सिप-पाचन शक्ति और स्वाद का अनोखा मेल !
अपने मनपसंद व्यंजनों पर छिड़किये या मिलाइये
स्वाद सिप और पाइये बेहतरीन चटपटा स्वाद।
स्वाद सिप आपकी सुविधा के अनुरुप पैकिंग्ज़ में
उपलब्ध है याने आपकी हर आवश्यकता की सुलभता।
स्वाद सिप-आपका स्वाद भरा हमदम !
चटपटा मजेदार
स्वाद सिप
पाचक
जलजीरा
पेनजॉन उत्पादन

प्रबंध संपादक : बसंतीलाल सेठिया द्वारा नईदुनिया के लिए
नईदुनिया प्रेस, बाबू लाभचंद छजलानी मार्ग, इंदौर ४५२ ००९ से मुद्रित एवं प्रकाशित ◇ संपादकीय सलाहकार : राहुल बारपुते